



बीजक कबीर साहब ।

(कबीरसाहबकीकथा, मूल रमैनी तथा बघेलवंशागम निर्देश)

साकेतवासी श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराज श्रीविश्वनाथ सिंहजूदेव
बहादुर कृत पाखण्डखण्डनी टीका सहित ।



जिसको

बघेल कुल तिलक श्री १०८ श्रीमहाराजाधिराज रीवाँधिपति

बान्धवेश श्री सीतारामकृपापात्राधिकारी श्री सर

वेङ्कटरमण रामानुजप्रसादसिंहजूदेव

बहादुरकी आज्ञानुसार,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष

खेमराज श्रीकृष्णदासने

स्वामि युगलानन्द कबीर पंथी भारत पथिक द्वारा शुद्धकराय,

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

बंबई.

संवत् १९६१, शके १८२६.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार “श्रीवेङ्कटेश्वर” प्रेसाध्यक्षने स्वार्थीन रखवा है



कबीर साहब.



श्रीमहाराजाधिराज सर्वोद्वेष्टरमण रामानुजप्रसादसिंहजूदेव बहादुर
(जी. सी. एस्. आई.) रीवाँनरेश.

श्रीः । अर्पणपत्रिका.

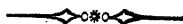


श्रीमान् गो ब्राह्मण प्रतिपालक, बबेलकुलतिलक, अवनीश, बान्धवेश, रीवाँधिपति, प्रजाम्रिय, धर्मपरायण, सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमहाराज श्रीसीताराम कृपापात्राधिकारी श्रीसरवेङ्कटरमण रामानुज प्रसाद सिंहजू देव बहादुर (जी. सी. एस. आई.) के कर कमलोंमें—

श्रीमानकी मुझ अकिञ्चनपर पूर्ण कृपा है । श्रीमान सच्चे देशहितैषी, धर्महितैषी, जातिहितैषी, और हिन्दीहितैषी हैं । श्रीमान्का सनातन धर्म पर अनुराग वंशपरम्परासे चला आता है । श्रीमान्के पूर्वजोंमें अच्छे २ कवि, अच्छे २ शासक, और अच्छे २ धर्मनिष्ठ होगये हैं । इसप्रकारके अनेक सद्गुणोंसे मुग्ध होकर श्रीमान्के पितामह श्रीसाकेतवासी श्रीमन् महाराजाधिराज श्रीमहाराज श्रीविश्वनाथ सिंहजू देव बहादुर विरचित श्री कबीर साहबके बीजककी पाखण्डखण्डनी टीका जो श्रीमान्कीही आज्ञासे छपी गयी है. श्रीमान्हीके करकमलोंमें अत्यन्त नम्रतासे परम सम्मान पूर्वक अर्पण करता हूँ । अर्पण क्या करताहूँ आपकी-ही वस्तु आपकी सेवामें रखकर कृपाकी अभिलाषा करताहूँ ।

श्रीमान्का विनयावनतसेवक—खेमराज श्रीकृष्णदास,
“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष—बम्बई.

भूमिका ।



इस ग्रन्थके प्रथम कबीरकसौटी, सत्यकबीरकी साखी और कबीर उपासना पद्धति नामक पुस्तकें छप चुकी हैं, । सत्य कबीरकी साखीकी भूमिकाकी प्रतिज्ञानुसार बीजककी टीकाओंको छापना आरंभ किया है ।

बीजककी कईटीकाओंमें यह टीका परम प्रसिद्ध और वैष्णवमात्रको मान्य है । मान्य क्यों नहो जबकि साकेतविहारी भगवान् रामचन्द्रजीके अनन्य उपासक, वेद, शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता, सांगीत आदि विद्या कुशल श्रीमन्महाराजाधिराज बाँधवेश, रीवाँधिपति साकेतनिवासी श्रीमहाराज विश्वनाथ सिंहजूदेव बहादुरने स्वयम् इसकी टीका की है । इस परभी सोनामें सुगन्ध यह है कि, यह टीका भी स्वयम् कबीर साहबकी आज्ञासे हुई है और श्री कबीर साहबने इसे पसन्द भी कियाहै जिसका विस्तृत विवरण इस पुस्तकके आदि मंगलकी टीकामें मिलेगा ।

जब कि समयके फेरसे भारत वर्षसे वीरता, लक्ष्मी और विद्या तीनों भारतपर कोप कर सात समुद्र पार जा बसनेकी प्रतिज्ञाली है तब भी पवित्र बघेलवंशीय बाँधवेश, रीवाँधिपतिके वंशमें धर्मके संपूर्ण स्वरूपसे विराजनेके कारण तीनोंही एक स्थानमें पाये जाते हैं ।

जिसका कुछ वर्णन इसी पुस्तकके अन्तमें छपे हुए बघेल वंशागमनिर्देश नामक पुस्तकके बाँचनेसे ज्ञात होगा ।

उसी पवित्र वंशके वर्तमान नृप श्रीमान् गोब्राह्मण प्रतिपालक, बघेल कुल तिलक, अवनीश, बान्धवेश, रीवाँनरेश, प्रजाप्रिय, सिद्धि श्री मन्महाराज धिराज श्री १०८ श्रीमहाराज श्रीसीताराम कृपा पात्राधिकारी सर वेङ्कटरमण रामानुजप्रसाद सिंह जू देव बहादुर जी. सी. एस. आई-की आज्ञानुसार यह पुस्तक छपी गयी है । इतनीही नहीं आपने अपने पूर्वजोंकी बनायी. हुई सर्व

पुस्तकोंके छापने की आज्ञा दी है । केवल आज्ञाही नहीं दी है द्रव्यकी सहायता देकरभी आपने यश लूटा आप वीरता के साथ २ पूर्ण विद्वान हैं; आप पूर्ण रसिक और सत्य शौर्यधारी हैं; आप न्याय और सुविचारके स्वरूप हैं आप स्वयम् सर्व गुण सम्पन्न कवि हैं यही कारण है कि, आप गुणियों और कवियोंके पूर्ण परीक्षक हैं ।

आपकी आज्ञा की हुई साकेतवासी श्री १०८ श्रीमन्महाराजाधिराज बाँधवेश, रीवाँधिपति, श्रीमहाराज रघुराज सिंहजुदेव बहादुरकी बहुतसी पुस्तकें हमारे यहां छप चुकी हैं और यह अबकी बीजक । इसी प्रकार से और भी पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित होती जावेंगी ।

इस पुस्तकको अवलोकन करनेवाले सर्व सज्जनोंसे निवेदन है कि यदि आपके पास कबीरसाहबकी पुस्तकें हों तो अवश्य कृपाकर भेज दीजिये जिससे हमारे यहाँ आयी हुई अनेक पुस्तकें शुद्ध होकर छप जावें ।

इस पुस्तकका कबीरपंथके ग्रन्थोंके जीर्णोद्धारक, कबीरमन्शूरके अनुवादक, मूल बीजक, शब्द कुञ्जी और साखी आदि अनेक ग्रन्थोंके संशोधक और वेदान्तके अनेक पुस्तकोंके संशोधक कबीरोपासनापद्धतिके कर्ता स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी भारतपथिक रसीदपुर (शिवहर) निवासीद्वारा संशोधन कराकर छापा है ।

सर्व सज्जनोंका कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

बीजककी-अनुक्रमणिका ।



विषय.

पृष्ठ.

आदिमंगल ।

प्रथमे समरथ आप रहे १

रमैनी

जीवरूप एक अंतर बासा २७

अंतरज्योति शब्द एक नारी ३४

प्रथम आरम्भ कौन को भयऊ ३८

प्रथम चरन गुरु कीन्ह बिचारा ४०

कहंलो कहौं युगन की बाता ४२

वर्णहु कौन रूप औ रेखा ४६

जहिया होत पवन नहि पानी ४८

तत्वमसी इनके उपदेशा ४९

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता ५२

राही ले पिपराही बही ५४

आंधरी गुष्ट सृष्टि भई बौरी ५६

माटिक कोट पषानक ताला ६०

नहिं प्रतीति जो यहि संसारा ६२

बड़ा सो पापी आहि गुमानी ६७

उनई बदरिया परिगो संज्ञा ७०

चलत चलत अति चरन मिराने ७२

जस जिव आपु मिलै अस कोई ७४

अद्भुत पंथ बरणि नहिं जाई ७७

अनहद अनुभव की करि आशा ७८

अब कहु रामनाम अविनाशी ८०

बहुत दुखै है दुःख की खानी ८२

विषय.

पृष्ठ.

अलख निरंजन लखै न कोई ८३

अल्प सुखहि दुख आदिऊ अंता ८५

चन्द्र चकोर अस बात जनाई ८७

चौतिश अक्षर को यही विशेषा ८९

आपुहि कर्ता भे करतारा ९०

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मंडा ९३

अस जोलहा का मर्म न जाना ९५

बज्रहु ते तृण छनमें होई ९६

औ भूले षट दर्शन भाई ९८

स्मृति आहि गुणनको चीन्हा १००

अन्धको दर्पण वेद पुराना १०१

वेदकी पुत्री स्मृति भाई १०२

पढ़ि पढ़ि पंडित करहु चतुराई १०५

पण्डित भूले पढ़ि गुनि वेदा १०७

जानी चतुर बिचक्षण लोई १०९

एक सयान सयान न होई ११०

यह विधि कहौं कहा नहिं माना ११२

जिन्ह कलमा कलिमाहि पढ़ाया ११३

आदम आदि सुद्धि नहिं पाई ११५

अंबुकी राशि समुद्र की खाई ११६

जब हम रहल रहा नहि कोई ११८

जिन्ह जिव कीन्ह आपुविश्वासा ११९

विषय.	पृष्ठ.
कबहुँ न भये संग औसाथा	१२१
हरिणाकुश रावण गौ कंसा	१२३
विनसे नाग गरुड गलिजाई	१२५
जरासिंध शिशुपाल संहारा	१२६
मानिक पुरहि कबीर बसेरी	१२७
दरकी बात कहो दर्वेशा	१२८
कहते मोहि भयल युगचारी	१२९
नाकर नाम अकहुआ भाई	१३०
मेहिकारण शिव अजहुं वियोगी	१३३
महादेव मुनि अंत न पाया	१३४
मरि गये ब्रह्मा काशीके वासी	१३५
गये राम औ गये लक्ष्मना	१३७
दिन दिन जरे जरल के पाऊ	१३९
कृतिया सूत्र लोक एक अहई	१४०
तै सुत मानु हमारी सेवा	१४२
चढत चढावत भड़हर फोरी	१४३
छाढहु पाति छाढहु लवराई	१४५
धर्म कथा जो कहते रहई	१४६
जो तोहि कर्त्ता वर्ण विचारा	१४८
माना वर्णरूप एक किन्हा	१५०
काया कंचन यतन कराया	१५१
अपने गुणको औगुण कहहु	१५२
सोई हीतु बन्धु मोहि भावै	१५५
देइहलाये भक्ति न होइ	१५६
तेहि वियोग ते भये अनाथा	१५७
ऐसा योग न देखा भाई	१५९
बोलना कासो बोलिये भाई	१६१
सौंग बधावा समकरि माना	१६३

विषय.	पृष्ठ.
नारी एक संसारै आई	१६५
चलीजात देखी एकनारी	१६६
तहिया गुप्त थूलनहि काया	१६८
तेहि साहब के लागहु साथी	१७०
माया मोह कठिन संसारा	१७३
एके काल सकल संसारा	१७४
मानुष जन्म चूके जगमांझी	१७६
बढ़वत बाढ़ि घटावत छोटी	१७८
बहुतक साहस करिजिय अपना	१७९
देव चरित्र सुनौ रे भाई	१८०
सुखक वृक्ष एक जगत उपाया	१८१
क्षत्री करे क्षत्रिया धर्मा	१८३
जो जिय आपन दुखहि संभार	१८४
इति रमैनी ।	

अथ शब्द ।

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी	१८७
सन्तो जागत निन्द न कीजै	१९०
सन्तो धरमें झगरा भारी	१९४
सन्तो देखत जग बौराना	१९६
संतो अजरज एक भौ भाई	२००
सन्तो अचरज एक भौ भारी	२०२
सन्तो कहों तो को पतियाई	२०४
सन्तो आवे जाय सो माया	२०५
सन्तो बोले ते जग मारे	२१३
सन्तो राह दुनों हम दीठा	२१५
सन्तो पांड़े निपुण कसाई	२१७
सन्तो मते मातु जन रंगी	२१९

विषय.	पृष्ठ.
बन्नी यंत्र अनूपम वाजे	३४२
बस मासु नरकी तस मासु पशुकी	३४५
चातुक कहां पुकारै दूरी	३४७
चलहु का टेढो टेढो टेढो	३४८
फिरहु क्या फूले फूले फूले	३४९
योगिया ऐसो है वदकर्मि	३५१
ऐसो भर्म विगुरचन भारी	३५४
आपनपौ आपुहि विसरयो	३५६
आपन आश किये बहुतेरा	३५८
बब हम जानिया हो हरि वाजी	
को खेल	३५९
कहहुहो अम्बर कासों लागा	३६०
बन्दे करले आप निबेरा	३६१
तूतो ररा ममा की भांती हौ	३६२
तुम एहि विधि समझहु लोई	३६५
मूला बे अहमक नादाना	३६७
काजी तुम कौन किताब बखानी	३६८
मूला लोग कहे घर मेरा	३७१
कबिरा तेरो घर कंदलामे या	
जग रहत भुलाना ...	३७२
कबिरा तेरोघर कंदलामें मने	
अहेरा खेले ...	३७७
सावज न होय भाई सावज नहोई	३७९
सुभागे केहिकारन लोभ लागे	३८२
संतमहन्तौ सुमिरो सोई	३८२
नौदेखा सो दुखिया तनधारे सु	
खिया काहु न देखा	३८५
ता मनको चिन्हो रे भाई	३८६

विषय.	पृष्ठ.
बाबू ऐसो है संसार तिहारो	३८९
कहाँ निरंजन कौनी बानी	३९१
को अस करे नगर कोतवलिया	३९२
काकहि रोवोगे बहुतेरा	३९३
अल्लाह राम जिव तेरे नाई	३९४
आब बे आव सुभे हरिको नाम	३९७
अबकह चल्यो अकेले मीता	३९८
देखहु लोगो हरिकी सगाई	३९९
देखि देखि जिय अचरज होई	४००
होदारी कहां लै देउं तोहिंगारी	४०२
लोगो तुमहि मतिके भीरा	४०३
कैसेकै तरों नाथ कैसे कै तरों	४०५
यह भ्रम भूत सकल जग खाया	४०७
भवंर उडे वक बैठे आय	४०८
खसम बिनु तेली के बैल भयो	४०९
अब हम भयल बहिर जग मीना	४११
लोग बोलै दुरिगये कबीर	४१२
आपन कर्म न मेटो जाई	४१४
है कोई पंडित गुरु ज्ञानी	४१५
झगरा एक बढो (जियजान)	४१६
झूठेजन पतियाहु हो संतसुजाना	४१७
सारशब्दसे वाचिहो मानहु-	४१८
यतवाराहो	४१८
संतो ऐसी भूल जग माही	४१८

इति शब्द ॥

अथ चौतीसी ॥ ४२१ ॥

अं कार आदिहि नो जाने ४२४

विषय.	पृष्ठ.
कका कमल किरनि में पावे	४२५
खखा चाहै खोरी मनावे	४२५
गगा गुरुके वचनहि मान	४२६
बघा घट विनशे घट होई	४२६
ढङ्का निरखत निशिदिन जाई	४२७
चचा चित्र रचो बहु भारी	४२७
छछा आहि छत्रपति पासा	४२८
नजा ई तन जियतहि जारो	४२८
झझा अरुझि सरुझि कित जाना	४२९
जजा निखत नगर सनेहू	४२९
टटा विकट बात मन माहीं	४३०
ठठा ठौर दूरी ठग नियरें	४३०
ढढा ढर किन्हे ढर होई	४३१
ढढा दूढ़तही कित जाना	४३१
णणा दूरि बसो रे गाऊं	४३१
तत्ता अति त्रियो नहिं चाये	४३२
थथा थाइ थहो नहिं जाई	४३२
ददा देखहु विनशनि हारा	४३३
धधा अर्ध माहिं अंधिआरी	४३३
नना वो चौथे मह जाई	४३४
पपा पाप करे सब कोई	४३४
फफा फल लागो बड़ दूरी	४३५
बबा बर बर करे देख सब कोई	४३५
भभा भरम रहा भर पूरी	४३५
ममा सेये मर्म न पाई	४३६
यया जगत रहा भर पूरी	४३६
ररा रारि रहा अरुझाई	४३७
लला तुतुरे वात जनाई	४३७

विषय.	पृष्ठ.
ववा वह वह कर सब कोई	४३८
शशा शर नहिं देखै कोई	४३८
षषा षरा कहै सब कोई	४३९
ससा सरा रच्यो बारियाई	४३९
हहा होय होत नहिं जाने	४४०
क्षक्षा क्षण परलय मिटिजाई	४४०

॥ इति चौतीसी ॥

॥ अथ बिप्रमतीसी ॥

सुनहु सबन मिलि बिप्र मतीसी ४४१

॥ अथ कहरा ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु ४४७
 मत सुनु माणिक मत सुनु माणिक ४५५
 राम नाम को सेबहु बीरा ४५९
 ओढ़न मेरो राम नाम ४६०
 रामनाम भजु रामनाम भजु ४६२
 राम नाम बिनु राम नाम बिनु ४६७
 रहहु सम्हारे राम विचारे ४७१
 क्षेम कुशल और सही सलामत ४७३
 ऐसन देह निरापन बैरे ४७४
 हौं सत्रहिन में हौं नाहीं ४७५
 ननदी गे तैं विषम सोहागिन ४७८
 ईमाया रघुनाथ की बौरी ४८०
 ॥ इति कहरा ॥

॥ अथ वसंत ॥

जहं बारहिं मास वसंत होय ४८१
 रसना पढ़ि भूले श्री वसंत ४८३

विषय.

पृष्ठ.

मैं आयो मेहतर मिलन तोहि ४८५
 बुढ़िया हंसि कहै मैं नितही वारि ४८७
 तुमबूझहु पण्डित कौनि नारि ४८९
 माइ मोर मानुष है अति सुजान ४९०
 घरहि में बाबू बढ़ी रारि ४९१
 कर पल्लवके बल खेलै नारि ४९४
 ऐसो दुर्लभ जात शरीर ४९५
 सबही मदमाते कोई न जाग ४९६
 शिव काशी कैसी भई तुम्हारी ४९७
 हमरे कहल के नहिं पतियार ४९९

॥ इति बसंत ॥

॥ अथ चाचर ॥

खेलत माया मोहिनी जेर कियो

संसार ... ५०१

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो ५०५

॥ अथ बेली ॥

हंसा सरवर शरीर मह हो

रमैया राम... ५०९

मन सुस्मृति जह्दायहु हो

रमैया राम.... ५१३

॥ इति बेली ॥

॥ विरहुली ॥

आदि अंत नहिं होत, विरहुली ५१७

॥ हिंडोला ॥

भर्म हिंडोला झूले सब जग आय ५२०

बहुविधि चित्र बनायके हरि

रख्यो कीडा रास ... ५२३

विषय.

पृष्ठ.

जहं लोभ मोहके खंभा दोऊ ५२४

॥ इति हिंडोला ॥

॥ अथ साखी ॥

जहिया जन्म मुक्ताहता ५२५

शब्द हमारा तू शब्द का ५३१

शब्द हमारा आदिका ५३२

शब्द विना श्रुति आंधरी ५३३

शब्द शब्द बहु अंतरहीमें, ५३३

शब्दे मारा गिर गया ५३४

शब्द हमारा आदिका ५३४

जिन जिन सम्बल ना कियो ५३४

ई हई सम्बल करिले ... ५३४

जो जानहु जिय आपना ... ५३५

जो जानहु पिव आपना ५३५

पानी प्यावत क्या फिरो ... ५३५

हंसा मोतो बिकानियां ... ५३६

हंसा तुम सुबरण बरण ... ५३६

हंसा तूतो सबल था ... ५३६

हंसा सरवर तजि चले ५३७

हंसा बक एक रंग लखिये ५३७

काहे हरिणि दूबरी ... ५३७

तीनलोक भौ पीजरा ... ५३८

लोभे जन्म गवांइया ५३८

आधी साखी शिर खंडै ५३८

पांचतत्व का पूतला युक्ति रची-

मै कीय ... ५३९

पांचतत्व का पूतला मानुष-

धरिया नाउँ ... ५३९

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
रंगहिते रंग ऊपजै ...	५३९	मल्यागिरिके बासमें वृक्षरहा-	
जाग्रत रूपी जीवहै ...	५३९	सबगोय ...	५४७
पांचतत्व लै ईतन कीन्हा ५४०		मल्यागिरि के बासमें वेधा-	
पांचतत्व के भीतरे ...	५४०	ढाकपलास ...	५४७
अशुन तरुत अडि आसने ...	५४०	चलते चलते पगु थका ...	५४७
हृदया भीतर आरसी	५४१	झालि परे दिन आथये ...	५४८
ऊंचे गांव पहाड़ पर ...	५४१	मन तो कहै कब जाइये ...	५४८
जेहि मारग गै पंडिता ५४१		गृही तजिके भये उदासी ५४९	
हे कबीर तैं उतरि रहू ५४१		रामनाम जिन चीन्हिया	५४९
घर कबीर का शिखर पर ५४२		जेजन भीगे राम रस ...	५४९
बिन देखे वह देशकी ५४२		काटे आम न मौरसी ...	५५०
शब्द शब्द सब कोई कहे ५४२		पारस रूपी जीव है ...	५५०
पर्वत ऊपर हर बसै ...	५४२	प्रेम पाटका चोलना	५५०
चन्दन बास निवारहु ...	५४३	दर्पण केरी गुफामें ...	५५१
चंदन सर्प लपेटिया... ...	५४३	ज्यों दर्पण प्रति बिम्ब देखिये ५५१	
ज्योंमुदाद स्मसान शिल ...	५४३	जो बन सायर मुज्जते ...	५५१
गही टेक छाडे नहीं	५४४	दोहरा तो नवतन भया ...	५५२
चकोर भरोसे चन्द्रके (नोटमें)* ५४४		कबिरा जात पुकारिया ...	५५२
झिल मिल झगरा झूलते ...	५४४	सबते सांचा है भला ...	५५३
गोरख रसिया योगके ...	५४५	सांचा सौदा कीजिये....	५५३
बन ते भागि विहडे पडा ...	५४५	सुकृत वचन मानै नहीं	५५४
बहुत दिवस ते हीठिया ...	५४५	लागी आग समुद्र में ...	५५४
कबिरा भर्म न भाजिया	५४६	लाई लावन हारन की	५५४
बिनु डांडे जग डांडिया	५४७	बुंद जो परा समुद्र में	५५४
		जहर जिमीं दै रोपिया ...	५५५
		दौ की डाही लाकड़ी ...	५५५
		विरह की ओदी लाकड़ी ...	५५५
		विरह बाण जेहि लागिया	५५६

* यह दूसरी पुस्तकों की ४१ वीं साखी है किन्तु इस टीकामें नहीं लीहै मैंने नोटमें दै दियाहै ।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
साचा शब्द कबीर का ...	५५६	काल खड़ा शिर ऊपरे ...	५६७
जो तू सांचा बानिया ...	५५७	कायाकाठी कालघुन	५६८
कोठी तो है काठ की ...	५५७	मन माया की कोठरी ...	५६८
सावन केरा मेहरा ...	५५७	मन माया तो एक है ...	५६८
ढिग बूड़ा उसला नहीं ...	५५८	बारी दिन्हो खेतमें ...	५६९
साखी कहैं गहैं नहीं ...	५५८	मन सायर मनसा लहरि ...	५६९
कहतो तो बहुते मिला ...	५५९	सायर बुद्धि बनाय कै	५६९
एक एक निरुवारिये ...	५५९	मानुष होके ना मुआ	५७०
जिह्वा को दै बन्धने ...	५५९	मानुष तै बड़ पापिया ...	५७०
नाकी जिह्वा बन्द नहीं ...	५५९	मानुष विचारा क्या करे कहे	
पानी तो जित्ये ढिगे ...	५६०	न खुले कपाट ...	५७०
हिलगौ भाल शरीर में ...	५६०	मानुष विचारा क्या करे जाके	
आगे सीढ़ी साँकरी... ..	५६०	शून्य शरीर	५७०
संसारि समय विचारिया ...	५६०	मानुष जन्महिं पायके ...	५७१
संशय सब जग खंचिया ...	५६१	ज्ञान रतन को यतन कर ...	५७१
बोलना है बहु भांतिका	५६१	मानुष जन्म दुर्लभ अहै ...	५७१
मूल गहेते काम है... ..	५६२	बांह मरोरे जात हौ	५७२
अँवर बिलम्बे बाग में	५६२	*साखी पुलंदर ढह परे	५७२
अँवर जाल बगु जाल है	५६३	बेरा वाधिन सर्प को ...	५७२
तीन लोक टीढ़ी भई	५६३	कर खोरा खोवा भरा ...	५७३
नाना रंग तरंग है ...	५६३	एक कहौं तो है नहीं	५७४
बाजीगर का बांदरा ...	५६४	अमृत केरी पूरिया	५७४
ई मन चंचल चोरई ...	५६४	अमृत केरी मोटरी ...	५७४
विरह भुवंगम तन ढसा ...	५६४	जाको मुनिवर तप करैं	५७५
राम वियोगी विकल तन	५६४	एकते हुआ अनंत*... ..	५७५
विरह भुवंगम पैठिके ...	५६५	एक शब्द गुरु देवका ...	५७५
करक करेजे गड़ि रही ...	५६६	राउर को पिछुआरकै	५७५
काला सर्प शरीर में ...	५६६		

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
चौ गोड़ा के देखते...	... ५७६	जाना नहीं बूझा नहीं	... ५८५
तीन लोक चोरी भई	... ५७६	नाको गुरु है आंधरा	... ५८५
चंकी चलती देखिके	... ५७७	मानस केरी अथाइया	... ५८५
चार चोर चोरी चले ५७७	चारमास घन बरासिया	... ५८५
बलिहारी वहि दूध की ५७८	गुरु के भेला जिव डरै काया	
बलिहारी तेहि पुरुष की ५७८	छीजनहा ५८६
विषके विरवे घर किया	... ५७८	तन संशय मन सोनहा	... ५८६
नोई घर है सर्पका ५७९	शाहुचोर चीन्हे नहीं....	... ५८६
घुघुची भर जो बोइया * ५७९	गुरु सिकलीगर कीजिये	... ५८७
मनभर के बोये कबौं ५७९	मूरखको समुझावते...	... ५८७
आपा तजो हरि भजो	... ५७९	मूढ कर्मिया मानवा...	.. ५८७
पक्षा पक्षी कारने ५८०	सेमर केरा सूवना ५८७
माया त्यागे क्या भ्या	... ५८०	सेमर सुवना वेगितजु	... ५८८
घुघुची भर जो वोइया	... ५८०	सेमर सुवना सेइया ५८८
बडेते मये बडापने... ५८१	लोग भरोसे कौनके...	... ५८८
मायाकी झक जगजैरे ५८१	समुझि बूझ जड़ होइरहे	... ५८९
मायाजग सांपिन भई ५८१	हीरा वही सराहिये...	... ५८९
सांप बीछिको मंत्र है	... ५८२	हरि हीरा जन जौहरी	... ५९०
तामस केरे तीन गुण ५८२	हीरा तहां न खोलिये	... ५९०
मनमतंग गैयर हने...	... ५८३	हीरा परा बजार में...	... ५९०
मन गयंद मानै नहीं	... ५८३	हीराकी ओबरी नहीं ५९१
या माया है चूहरी ५८३	अपने अपने शिश की	... ५९२
कनक कामिनी देखिके ५८३	हाड़ जरे जस लाकड़ी	... ५९२
मायाके वश सब परे	... ५८३	घाट भुलाना बाट बिन ५९२
पीपर एक जो मंहगेमान ५८४	मूरख सो क्या बोलिये	... ५९३
शाहू ते भौ चोरवा ५८४	जैसे गोलि गुमज की	... ५९३
ताकी पूरी क्यों परे...	... ५८४	ऊपर की दोऊ गई	... ५९३
		केते दिन ऐसे गये ५९३

विषय.	पृष्ठ.
मैरोऊं सब जगद को	५९४
साहेब साहेब सब कहें ...	५९४
जिव बिन जिव बांचे नहीं ५९४	
हमतो सबही की कही	५९४
प्रकट कहाँ तो मारिया	५९५
देश विदेशन हैं फिरा ...	५९६
कलि खोटा जग आंधरा	५९६
मसि कागज छूवों नहीं ...	५९६
फहमें आगे फहमें पीछे ...	५९७
हृद चले सो मानवा ...	५९७
समुझे की गति एक है ...	५९७
राह बिचारी क्या करे	५९७
मुआ है मरि जाहुगे बिन शिर-	
थोथा भाल* ...	५९८
बोली हमारी पूर्व की ...	५९८
बेहि चलेतेरवदे परा ...	५९८
पायन पुहुमी नापते	५९९
नव मन दूध बटोर के ...	५९९
केत्यो मनावैं पावपरी	६००
मानुष तेरा गुण बढ़ा	६०१
जो मोहि जानै ताहि मैं जानौं । लोक	
वेदका कहा न मानों । *	

* नोट—यह साखी इस टीकामें छोड़ दी है.

मुआ है मारे जाहुगे मुये की बाजी डोल ।

सुपन सनेही जग भया, सहि दानी रहिगो बोल ॥

विषय.	पृष्ठ.
जौ लागि डोला तौ लागि बोला ६०१	
सबकी उतपत्ती धरणि में ...	६०१
धर्ती जानत आपगुण	६०१
जहिया किरतिम ना हता ...	६०२
जँह बोल अक्षर नहि आया-	
आया ...	६०२
जौ लो तारा जगमगै ...	६०२
नाम न जाने ग्रामको ...	६०३
संगति कीजे साधु की ...	६०३
संगति से सुख उपजे । *	
जैसी लागी ओरकी	६०३
आज काल दिन एक में	६०३
करु बहियाँ बल आपनी	६०३
बहु वन्धन से बांधिया ...	६०४
जीव मत मारहु बापुरा ...	६०४
जीव घात ना कीजिये ...	६०४
तीरथ गये सो तीन जन	६०५
तीरथ गये ते बहि मुये ...	६०५
तीरथ भै बिष बेलरी ...	६०५
हे गुणवंती बेलरी ...	६०५
बेल कुठंगी फल बुरो ...	६०६
पानी ते अति पातला ..	६०६
सतगुरु वचन सुनो हो संतो ६०६	
ऐकरुआई बेलरी ...	६०६
सिद्ध भया तो क्या भया *	
परदे पानी ढारिया ...	६०६

* इस पुस्तकमें यह साखी छोड़ दी है ।

विषय.	पृष्ठ.
अस्ति कहौं तो कोई न पतीजे	६०९
सोना सज्जन साधु जन	... ६१०
काजर केरी कोठरी... ६१०
काजर ही की कोठरी ६१०
अर्ब खर्ब लौ द्रव्य है	... ६१०
मच्छ बिकाने सब चले ६११
पानी भीतर घर किया	... ६११
मछ होय ना बाचिहों	... ६१२
बिनु रसरी गर सब बंध्यो ६१३
समुझाये समुझे नहीं	... ६१३
नित खरसान लोह घन टूटै *	
लोहे केरीनावरी	... ६१३
कृष्ण समीपी पांडवा ६१३
पूरब उगे पश्चिम अथवे	... ६१४
नैनके आगे मन बसे	... ६१४
मनस्वारथी आपै रसिक ६१४
ऐसी गति संसार की ज्यों	
गाढरकी ठाट	... ६१५
वा मारग तो कठिन है	... ६१५
मारी मौर कुसंगकी...	... ६१५
केरा तबही न चेतिया	... ६१५
जीव मरण जानै नहीं	... ६१६
जाको सतगुर ना मिल्यो	... ६१७
अनत वस्तु जो अन्ते खोजै	... ६१७
सुनिये सब की निवेरिये अपनी	६१७
वाजन दे बायंत्री	... ६१८
गावै कथै विचौर नहीं	... ६१८

* यह साखी इस में छोडदी है ।

विषय.	पृष्ठ.
प्रथमै एक जो हौं किया	... ६१८
कबिरन भक्ति बिगारिया ६१९
रही एक की भई अनेक की	६१९
तन बोहित मन काग है ६१९
ज्ञान रतन की कोठरी ६२०
स्वर्ग पताल के बीच में ६२०
सकलो दुर्मति दूरकरु	... ६२०
जैसी कहै करै जो तैसी	... ६२०
द्वारे तेरे रामजी	... ६२१
भर्म परा तिहुं लोक में	... ६२१
रतन अडाइन रेत में	... ६२१
जेते पत्र वनस्पती	... ६२१
हम जान्यो कुल हंस हौ	... ६२२
गुणिया तो गुणको गहै	... ६२२
अहिरहु ताजि खसमहु तज्यो...	६२२
मुखकी मीठी जो कहें	... ६२३
इतते सब तो जात हैं	... ६२३
भक्ति प्यारी रामकी...	... ६२३
नारिकहवै पीवकी	... ६२३
सज्जन तौ दुर्जन भया	... ६२३
विरहिनी साजी आरती ६२४
पलमें प्रलय बीतिया... ६२४
एक समाना सकल में	... ६२४
यकसाधे सब साधिया ६२५
जैहिबन सिंह न संचरे	... ६२५
सांच कहौं तो है नहीं *	

* यह साखी इसमें नहीं है ।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
बोली एक अमोलहै	६२५	दृष्टिहि माँहिं विचार है ...	६३१
करबहियां बल आपनो *		जब लगढोला तब लग बोला	६३२
बोहूतो बैसही भया....	६२६	करु बन्दगी विवेक की ...	६३२
नोमतवारे राम के *		सुरनर मुनि और देवता ...	६३२
साधू होना चाहहु जो ...	६२६	जौलग दिलपर दिल नहीं ...	६३२
सिँहें केरी खोलरी ...	६२६	यंत्र बजावत हौं जुना ...	६३३
ज्यहिखोजत कल्पौगया ...	६२७	जो तुम चाहो मुझको ...	६३३
दश द्वारेका पींजरा...	६२७	साधु भया तो क्या भया ...	६३३
रामहि सुमरहिं रण भिरे ...	६२७	हंसाके घट भीतरे ...	६३३
खेत भला बीजो भला ...	६२७	मधुर वचन है औषधि ...	६३४
गुरु सीढी ते ऊतरे ...	६२७	ई जगतो जहडे गया ...	६३४
आमि नो लागी समुद्रमें ...	६२८	ढाढसदेखुमरजीवको	६३४
नो मोहि जाने त्यहि मैं जानौं	६२८	ऐ मरजीवा अमृत पीवा ...	६३५
बौन मिला सो गुरु मिला	६२८	के तेबुन्दहलफेगये ...	६३५
जहं गाँहक तहँ हौं नहीं ...	६२९	आगि जो लगी समुद्रमें	६३५
शब्द हमारा आदिका	६२९	साँचे शाप न लागई...	६३५
नग पषान जग सकलहै ...	६२९	पूरा साहब सेइये ...	६३६
ताहि न कहिये पारखी ...	६३०	जाहु वैद्य घर आपने ...	६३६
सारि दुनिया विनशती ...	६३०	औरन के समु झावते ...	६३६
सपने सोया मानवा...	६३०	मैं चितवत हौं तोहिको ...	६३६
नष्टेका यह राज्य है	६३१	तकत तकावत तकिरहे ...	६३७
दृष्टमाण सब बीनशै...	६३१	जस कथनी तस करनीजो ...	६३७
		अपनी कहै मेरी सुने ...	६३७
१ इस साखी तक तो साखियोंका		देशदेश महुँ बागिया ...	६३८
कर्म निकटही निकट मिलता जुलता		लोहे चुम्बक प्रीति जस ...	६३८
आया है पूर्ण साहबकी टीकाके साथ,		गुरु बिचारा क्या करे ...	६३८
किन्तु यहाँसे आगे बढ़त गड बड		दादा बाबा भाईके लेखे ...	६३८
होगया है ।		लघुताई सब ते भली ...	६३९

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मरते मरते जग मुवा ...	६३९	सुत नहीं माने बात पिताकी...	६४९
बस्तु औह गाहक नहीं	६३९	सबै आश कर शून्य नगरकी	६५०
सिंह अकेला वन रमें ...	६३९	भक्ति भक्ति सब कोई कहै ...	६५०
मरते मरते जग मुवा ...	६४०	समुझौ भाई ज्ञानियो ...	६५०
पैठा है घट भीतरे...	६४०	धोखे सब जग बीतिया	६५०
बोलतही पहिचानिये ...	६४०	मायाते मन ऊपजे	६५१
दिलका महरम कोइ न मिलिया	६४०	राम कहत जग बीते सिंगरे...	६५१
बना बनाया मानवा ...	६४१	यइ दुनिया भई बावरी ...	६५१
सांच बरोबर तप नहीं	६४१	राजा रैयत होय रहा ...	६५१
करते किया न विधि किया...	६४१	जिसका मंत्र जपै सब सिखिकै	६५२
आगे आगे दब जरे...	६४१	जनि भूलैरे ब्रह्मज्ञानी	६५२
सर हर पेड आगध फल ...	६४२	देव न देखा सेव कही....	६५२
बैठ रहे सो बांनिया ...	६४२	तेरी गति तैं जाने देवा	६५२
युवा जरा बालपन वीत्यो ...	६४२	खाली देखिके भ्रम भा ...	६५३
भूलासो भूला बहुरिकै चेतु ...	६४३	बूझ आपनी थिर रहै ...	६५३
सबही तरुतर नायके ...	६४३	देखा देखी सब जग भरमा...	६५३
श्रोता तो घरही नहीं ...	६४३	ह्वांकी आश लगाइया	६५३
कंचन भो पारस परसि ...	६४४	नेईके बिचले सब घर बिचला	६५३
बेचूने जग राचिया ...	६४४	रामरहे बन भीतरे ...	६५४
साई नूर दिल एक है ...	६४५	बिना रूप बिन रेखको ...	६५४
रेख रूप जेहि है नहीं ...	६४५	डर उपजा जिय है डरा ...	६५४
धन्यो ध्यान वा पुरुषको ...	६४६	सुख को सागर में रचा	६५५
यह मनतो शीतल भया ...	६४६	दुख न हता संसारमें ...	६५५
जासों नाता आदिको ...	६४७	लिखा पढी में परे सब ...	६५५
बूझो शब्द कहां ते आया ...	६४८	धोखे धोखे सब जग बीता ...	६५६
बूझो कर्ता आपना ...	६४९	साखी आंखी ज्ञान की	६५६
हम कर्ता हैं सकल सृष्टिके ...	६४९		

विषय.

पृष्ठ.

फुटकर शब्द ।

(टीकान्नर्गत)

बलि हारी अपने साहब की	१९
ज्यों भुंगी गये कीट के पासा	८१
आसन पवन किये दृढ़ रहुरे	१०३
मन रे जब ते राम कह्योरे....	११०
चारो युग में कबीर साहबका-	
माकट्य	११२
दुलहिन गावो मंगल चार	१४६
दश मुकामी रखता	२३८
राम न जप्यो कहाँ भौ मन्दा	३२९
चलो सखी बैकुण्ठ विष्णु	
माया जहाँ	३५७
जहँ सतगुरु खेलैं ऋतु बसंत	३७७
जागुरे जिव जागुरे	४५०
हम न मरें मरि है संसारा	४५५
जो तै रसना राम न कहि है	४६०
राम कहत चहु राम कहत	
चहु (गो०स्वा०)	४६३
क्या नागे क्या बाँधे चाम	४७२
सदा बसंत होत जेहि ठाऊं	४८२
चेति न देखैरे जग धंधा	५००

पंचदेह निर्णय ।

एक जीव जो स्वतः पद	५२७
संतो षट प्रकार की देही	५२७
संतो सूक्ष्म देह प्रमाना	५२८

विषय.

पृष्ठ.

संतो कारण देह सरेखा	५२८
संतो महा कारण तन जाना	५२८
संतो केवल देह बखाना	५२९
संतो सुना हंस तन व्याना...	५२९
अब तो अनुभव अग्निहि लागी	५५५
संतो राम नाम जो पावे	५६७
जहाँ पुरुष सतभाव तहँ हंसनको	
बासा	५७६
रामको नाम चौमुक्तिका मूल है	५९१
संतो या मन है बड़ जालिम...	५९२
कालके माथे पगधरी	६०४
गगनमंडल दृग महलमें	६०४
यहि औतार चेतो नहीं	६०४
कंचन केवल हरि भजन	६०७
जो रक्षक है जीवको	६०७
जहाँ कालकी गम नहीं	६०८

चौका विधानका शब्द ।

अगर चन्दन घसि चौकपुरावा	६०८
दशौदिशाकर मेटौ धोखा	६०९
अबधू ऐसा योग विचारा	६१२
विन परसन दरशन विनु	६१६
बहुतक लोग चढ़े विन भेदा...	६४२
कलिमां बाँग निमाज गुजारें...	६४४
रूप अखण्डित व्यापी चैतन्य	६४५
सुनुधर्मदास भक्तिपद ऊंचा...	६४७
संतो बीजक मत प्रमाना	६५७

इति अनुक्रमणिका ।

गुरुवे नमः ।

अथ श्रीकबीरजी की कथा ।

दोहा-अब कबीरजी की कथा, श्रोता सुनहु विशाल ॥

जो हिंदू अरु तुर्क को, उपदेश्यो सब काल ॥ १ ॥

हरि विमुखी सब धर्मिन काहीं । कह्यो अधर्म अखंड सदाहीं ॥

योग यज्ञ तप दान अचारा । राम भजन बिन कह्यो असार ॥

कह्यो रमैनी साखी जेती । अटपट अर्थ शास्त्रमय तेती ॥

जो बीजकको ग्रंथ बनायो । तासु तिलक मो पितु निरमायो ॥

आगे कहिहौं मति अनुसार ॥ पूरुव पूरुष वंश विस्तार ॥

श्री कबीरजी को इतिहासू । पूर्व पूरुष मम वर्णन तासू ॥

निज कुल वर्णत लागति लाजू । जनि हैं अस सब सुमति समाजू ॥

निजकुलको महत्व प्रगटायो । गाथा सकल मृषा मुख गायो ॥

पै श्रोता सब यदुपति दासा । ताते लागति कछु नहिं त्रासा ॥

सहि लेहैं सब मोरि टिठाई । मैं न मृषा प्रभुता कछु गाई ॥

जस कबीर वण्यो निजग्रंथा । वणौं निजकुल सोई पंथा ॥

और कबीर कथा सुखदाई । प्रियादास नाभा जस गाई ॥

दोहा-सोई मैं वर्णन करौं, संक्षेपहु विस्तार ॥

प्रथमहि जन्म कबीर को, श्रोता सुनहु उदार ॥ २ ॥

रामानंद रहे जग स्वामी । ध्यावत निशि दिन अंतर्दामी ॥

तिनके ढिग विधवा इक नारी । सेवा करै बड़ो श्रमधारी ॥

प्रभु एक दिन रह ध्यान लगाई । विधवा तिय तिनके ढिग आई ॥

प्रभुहिं कियो वंदन बिन दोषा । प्रभु कह पुत्रवती भारि घोषा ॥

तब तिय अपनो नाम बखाना । यह विपरीत दियो बरदाना ॥

स्वामी कह्यो निकसि मुख आयो । पुत्रवती हरि तोहिं बनायो ॥

है है पुत्र कलंक न लागी । तब सुत है है हरि अनुरागी ॥

तब तिय कर फुलका परि आयो । कछु दिनमें ताते सुत जायो ॥
 जनत पुत्र नभ बजे नगरा । तदपि जननि उर सोच अपारा ॥
 सो सुत लै तिय फेंक्यो दूरी । कढ़ी जोलाहिन तहँ यक रूरी ॥
 सो बालकहि अनाथ निहारी । गोद राखि निम भवन सिधारी ॥
 लालन पालन किय बहुभाँती । सेयो सुतहि नारि दिन राती ॥

दोहा-कछुक सयान कबीर जब, भये भई नभवानि ॥

सो प्रियदास कवित्तको, इक तुक कह्यो बखानि ॥ ३ ॥

(भई नभवानी देह तिलक रमानी करो

करो गुरु रामानंद गरे माला धारिये)

पुनि कबीर बोल्हो अस वानी । मोहिं मलेच्छ लियो गुरु जानी ॥
 रामानंद मंत्र नहिं दैहैं । पै उपाय हम कछु रचि लैहैं ॥
 अस कहि गंगा तीरे आयो । सीढी तर निज वेष छुपायो ॥
 मज्जन हित रामानंद आये । तेहि अँगुरी निज चरण चपाये ॥
 रोय उठ्यो तहँ तुरत कबीरा । रामानंद कह्यो मतिधीरा ॥
 राम राम कहु रौवे नाहीं । गुन्यो कबीर मंत्र सोइ काहीं ॥
 रामानंदी तिलकहि धार्यो । माल पहिरि मुख राम उचार्यो ॥
 मातपिता मान्यो बौराना । रामानंदहि वचन बखाना ॥
 याको प्रभु किमि वैकलवायो । राम कहत सब काज भुलायो ॥
 रामानंद कबीर बोलायो । ताके बिच परदा बँधवायो ॥
 कहौ मंत्र तोको कब दीन्हो । कह्यो कबीर जौन बिधि कीन्हो ॥
 गमनाम सब शास्त्रन सारा । वार तीनि मोहिं कियो उचारा ॥

दोहा-रामानंद कबीरको, गुनि अनन्य हरिदास ॥

परदा टारिसु मिलत भे, दृगन बहावत आँसु ॥ ४ ॥

सुरति राम नामहि महुँ लागी । कछु गृहकाज करहिं बड़भागी ॥
 लै विकनन पट जाहि बजारै । जो मँगै ताही दैदारै ॥
 परखें रहैं मातु पितु ताके । गनैं न कछु दुख क्षुधा तृषाके ॥

आवते कबीर लजाहीं । छूछे हाथ कौन विधि जाहीं ॥
 परचो सोच तब हरिको भारी । मम जनके पितु मातु दुखारी ॥
 धरि व्यापारी रूप मुरारी । भरि बैलन बहु चाउर चारी ॥
 आय कबीर भवन महुँडारे । कह्यो पठायो पूत तिहारे ॥
 माता कह्यो कहां सुत मोरा । कोड्डकी वस्तु लेत नहिं छोरा ॥
 तब कबीर घरमें व्यापारी । डारि अन्न गे अनत सिधारी ॥
 जब कबीर गे भवन सिधारी । देखि अन्न हरि कृपा विचारी ॥
 साधु तुरंत बोलाय लुटायो । एक दिनको घर नाहिं धरायो ॥
 तुरत टोरि निज तानो वानो । राम भरोसा को उर आनो ॥
 दोहा-तब काशीके विप्र सब, बैठ कबीरहिं धेरि ॥

मुडिअनको रोटी दियो, हमहिं बैठ मुख फेरि ॥५॥

कह्यो कबीर न करौ संदेह । मोहिं बजार भर गवननदेह ॥
 भागि गये कबीर मिसि येही । प्रभु कबीर हित भे संदेही ॥
 आये धरि कबीरको रूपा । सबको भोजन दियो अनूपा ॥
 यथा योग दै सबन बिदाई । पुनि लिय अपनो वेष छिपाई ॥
 तब कबीरको बढ्यो प्रभाऊ । मानै रंकहु राजा राऊ ॥
 श्रोता सुनहु पुरान प्रमाना । रागभक्ति है धर्म प्रधाना ॥
 राम विमुख जो कोउ जग होई । मूल सकल पापनको सोई ॥
 लखि कबीर अति निज प्रभुताई । गुन्यौ उपद्रव ताहि महार्ह ॥
 भेटन हेतु महा प्रभुताई । गणिका द्वार गये प्रगटाई ॥
 दै धन गणिकाको गहि हाथा । चले बजार बजारहि साथा ॥
 यह लखि भये संत जन शोकी । लहे अनंद असंत अशोकी ॥
 इक दिन गये भूप दरबारा । उठ्यो न राजा तुच्छविचारा ॥
 दोहा-तब कबीर मनमें गुन्यो, भयो अनादर मोर ।

आदर और अनादरौ, सहि जातौ है थोर ॥ ६ ॥

रहे भरे जल घट बहुतेरे । ढरकायो तिनको कर फेरें ॥
 राजा पूछ्यो का यह कीजै । तब कबीर बोल्यो सुनि लीजै ॥

श्रीजगदीश पुरी यहि काला । गई आगि लागि पाकहि शाला ॥
 पुरी पठायो तुरत सवारा । पुरी लोग सब कियो उचारां ॥
 जो कबीरवह दिन न बुझावत । तौ सिंगरी नगरी जरि जावत ॥
 यह सुनि भूपति बहुतं डेराना । रानी सों अस वचन बखाना ॥
 है कबीर मूरति भगवाना । याको हम कीन्हो आपमाना ॥
 ताते अब अस करहु विधाना । पैदल तेहिं ढिग करहिं पयाना ॥
 त्राहि त्राहि कहि चरणन गिरहीं । जो वह कहै तबै घर फिरहीं ॥
 अस विचारि राजा अरु रानी । राज विभव तहँ तजि डर मानी ॥
 पैदर चले सुलाज विहाई । सचिव प्रजा सबै लिय पछि आई ॥

दोहा—राजा रानीकी विनय, सुनि कबीर मतिधीर ॥

बहत नीर दृग पीर विन, कियो धीर युत भीर ॥ ७ ॥

तहँ कवित्त प्रियदास यह, कीन्हो सुभग बखान ॥

सो मैं इत लिखि देतहाँ, श्रोता सुनहु सुजान ॥ ८ ॥

कवित्त—कही राजा रानी सो जो बात यह सांच भई आंच लागी हिये
 अब कहो कहा कीजिये । चलेही बनत चले शीश तृण बोझ भारी गरे सो
 कुल्हारी बांधि तिया संग भीजिये ॥ निकसे बजार द्वैकै डारि देई लोक लाज
 कियो मैं अकाज छिन छिन तन छीजिये । दूरि ते कबीर देखि द्वै गये अधीर
 महा आये उठि आगे कह्यो डारि मति रीझिये ॥ १ ॥

रह्यो सिकंदर शाह सुजाना । सुनेहु कबीर प्रभाव महाना ॥

तब लिखि पठयो येक खलीता । सुनियत तुम्हें कबीर पुनीता ॥

न्याय व्याकरण शास्त्र अनंता । करै एक जेहि संमत संता ॥

हिंदू मुसलमान दोउ दीना । निज निज मत देखो सुख भीना ॥

ऐसो शास्त्र देहु पठवाई । तो हम जानै अजमत भाई ॥

तब कबीर लिखि उतर पठायो । सहस शकट कागज पठवायो ॥

ऐसो सुनि कबीर खत शाहा । अति विस्मित द्वैकै मनमाहा ॥

सहस शकट भारि कागज कोरा । पठयो दूत कविरकी बोरा ॥

सहस शकट कागज जब आयो । तब कबीर अति आनंद पायो ॥

सबके उपर शकट यक माहीं । लिख्यो राम अक्षर द्वै काहीं ॥
सहसहु शकट साहठिग भेजा । प्रगट्यो राम नाम कर तेजा ॥
सकल शास्त्र सब कागज माहीं । लिखिगे आपहि ते श्रम नाहीं ॥

दोहा—हिंदू और भलेच्छहू, चहैं जो मतके ग्रंथ ॥

सो तेहि ते निकसन लगे, और सकल सतपंथ ॥ ९ ॥

जानि प्रभाव सिकंदर शाहा । काशीको आयो सउछाहा ॥
तब सह पंडित चलि फिरियादा । छूटी दोउ दीन मर्यादा ॥
यक जोलहा चेटक पढ़ि आयो । करि जादू विश्वास बढ़ायो ॥
तब कबीरको शाह बोलायो । जब कबीर दरबारहि आयो ॥
काजी कह करु साह सलामा । तब कबीर बोल्यो सुखधामा ॥
जानहिं राम सलाम न जानै । सुनत शाह कियं कोप महानै ॥
दियो हुकुम करियो नहिं देरी । गंगा बोरहु भरि पग बेरी ॥
सुनि अनुचर पग पाइ जँजीरै । बोरचो गंगा माहँ कबीर ॥
रहिगै बेरी नीर गँभीरा । गंग तीर भो ठाढ़ कबीरा ॥
पुनि लकरी पट अंगणि बांधी । आगि लगायो कोठरि धांधी ॥
भयो भस्म तनुको सब मैला । निकस्यो कंचनरूप उतैला ॥
पुनि इक मत्त मतंग बोलायो । कचरावन हित सौ हँधवायो ॥

दोहा—गजको सिंह स्वरूपसो, देखो परो कबीर ॥

भग्यो चिकारत नाग तब, भरचो महा भय भीर ॥ १० ॥

बादशाह अस देखि प्रभाऊ । पकरचो आय कबीरहि पाऊ ॥
देख्यो करामात मैं तेरी । अब रक्षा करु जगते मेरी ॥
मोसे भयो बडो अपराधा । दीन्हो रामदासको बाधा ॥
देशगाउँ धन जो कहि दीजै । सो याही क्षण प्रभु लैलीजै ॥
कह्यो कबीर रामको चाहैं । ग्राम दामसों काम कहा हैं ॥
तबै विरोधी पंडित जेते । विरचे यह उपाइ तहँ तेते ॥
श्रीवैष्णव दश पांच बनाई । दियो सकल देशन गोहराई ॥
यह कबीरको नेवतो जानो । सबकबीर घर करो पयानो ॥

यह सुनि साधु विप्र समुदाई । लियो कबीरहि को समुदाई ॥
 लाखन विप्र साधु जुरि आए । तब कबीर मन माहँ डेराए ॥
 अपनो भवनत्यागि द्रुत भाग्यो । रघुपतिको यह नीक न लाग्यो ॥
 धरि कबीरको रूप तुरंतै । शत शत मुद्रा दिय प्रति संतै ॥

दोहा-साधुनको सत्कार करि, विदा कियो रघुनाथ ॥

उदर पूर पूजन दियो, सबको गहि गहिहाथ ॥११॥

सब देशन विख्यात भों नामा । कह कबीर अनुकंपा रामा ॥
 येहू विधि पंडित जब हारे । तब गोरखको तुरत हँकारे ॥
 गोरख आय गयो जब कासी । लाखि कबीरको भयो हुलासी ॥
 कूप उपर राखि पांचहि सूता । बैठयो ताहि प्रभाव अकूता ॥
 तुरत कबीरहि लियो बोलाई । मोसो करहु विवाद बनाई ॥
 अन्तरिक्ष तब बैठ कबीरा । देखत गोरख भयो अधीरा ॥
 तेहि दिन गवन्धो गोरख हारी । आयो भोरहि सिंह सवारी ॥
 कह्यो कबीरहिसों गोहराई । आवै वाद करै मन जाई ॥
 तब मृगको रचि सिंह कबीरा । आयो चलो चलावत धीरा ॥
 तब गोरख कह सुनहुँ कबीरा । गंगामें डूबै दोउ वीरा ॥
 को काको हेरै यहि काला । कूदे गोरख प्रथम उताला ॥
 तब गोरख गूलर है गयऊ । जानि कबीर पकरि तेहि लयऊ ॥

दोहा-गोरख सुनहुँ कबीर कह, प्रगटो अबहुं तुरंत ।

नातो कर मलि डारि हाँ, दोषदेहिंगेसंत ॥ १२ ॥

तब प्रसन्न गोरख प्रगटाना । तेहि कबीर अस वचन बखाना ॥
 मैं अब छिपहुँ हेरि तुम लेहू । कह गोरख छिपु विनु संदेहू ॥
 तब डूव्यो मधि गंग कबीरा । है गो तुरत गंगको नीरा ॥
 तब गोरख करि योग प्रभाऊ । जान्यो सकल कबीर दुराऊ ॥
 दोऊ सिद्ध फेरि प्रगटाने । गोरख वंदन किय हुलसाने ॥
 कह्यो सत्य साहब तुम रूपा । संत शिरोमणि शुद्ध अनूपा ॥
 एक समय कबीर लै माता । चले जात कोउ देश विख्याता ॥

तहँ इक मारग मोहर थैली । परी रही अतिशय तहँ मैली ॥
माता थैली दौरि उठाई । तब वारचो कबीर तहँ जाई ॥
परधन ले न मातु दे डारी । परधन दुइ मुहँकी तरवारी ॥
बैठ बृक्षतर देखु तमासा । यह करि है केतेनको नासा ॥
माता पूत बैठ तरु छाहीं । चारि सिपाही कदे तहाँहीं ॥

दोहा-थैली चारि निहारिकै, हर्षित लियो उठाइ ॥

चलत भये तेहि पंथको, लिय कबीर पछिआइ ॥ १३ ॥

जाय सिपाही इक पुरमाहीं । डेरा किये वणिक घर माहीं ॥
सो हैं कियो कबीरहु डेरा । एक सिपाही यक कहँ टेरा ॥
डेरामें तुम दोउ रहि जाहू । द्वै जन जाहिं करन निरवाहू ॥
अस कहि द्वै जन गये सिधाई । लियो हाटमहँ कछुक मिठाई ॥
बैठि कुवाँ लागे जब खाने । तब आपुसमहँ संमत ठाने ॥
माहुर भरैं मिठाई माँहीं । जामें द्वै खातै मरिजाँहीं ॥
नातो हिस्सां द्वैहैं चारी । हम तुम होहिं उभय हिसदारी ॥
अस विचारि भारि माहुर दीन्हे । उत विचारि डेरा दोउ कीन्हे ॥
जब वै आइ खाइ इत सोवैं । तिनके तुरत प्राण हंम खोवैं ॥
इतनेमें दोउ लियो मिठाई । आय गए डेरै श्रमछाई ॥
कह्यो दुहुँनसों खाहु मिठाई । इन कह थके अहैं हम भाई ॥
अस कहि दोउ सिपाही सोये । श्वास बजत तिनको तहँ जोये ॥

दोहा-तबै मिठाई खायकै, दोहुनके गलमाहिं ॥

मारि कटारी पार किय, दोऊ मरे तहाँहिं ॥ १४ ॥

कछुक कालमहँ विष तहँ लाग्यो । ते दोऊ तुरतै तनु त्याग्यो ॥
भोर वणिकलखि शोणितधारा । कोतवालके जाय पुकारा ॥
कोतवाल तेहिं दोष लगायो । ताकी संपति सकल लुटायो ॥
मोहर और वणिक धन जेतो । गयो भूप भंडारहि तेतो ॥
कह कबीर लख मातु तमाजा । ये मोहर दोउ ओर विनाशा ॥
माता कह्यो सुवन चलु अनतै । कह कबीर लख और दगनतै ॥

थैली परी रही जेहि ठौरा । सो थल रहै भूपको औरा ॥
 सो पठयो तुरंत असवरा । कह्यो देउ धन अहै हमारा ॥
 जेहि वह नगर कह्यो सो राजा । हम न देब विनसमर दराजा ॥
 यह सुनि भूप तुरत चढ़ि आयो । उभय भूप अति युद्ध मचायो ॥
 दोऊ लरि मरिगये तहांही । तब कबीर कह माता काहीं ॥
 जो चाहै आपन कल्याना । तौ परधन नहिं लेय सुजाना ॥

दोहा-जो परधन लेतो जननि, तासु हाल यह होय ॥

लगति न हाथ बराटिका, नाहक कलह उदोय ॥ १५ ॥

येक अप्सरा आयकै, मोहन चह्यो कबीर ॥

ताहि मातु कहि किय बिदा, करी न मनसिज पीर १६
 कबित्त ।

येक समै जाय जगदीश पुरी वास कीन्हो भयो तहँ संतन समागम सोहावनो ।
 कोई संत बोल्यो कियो काशीमें चरित्र केते इते कीन्हौ काहे नहिं महिमा देखावनो ॥
 ताहीं समय कौतुक कबीर कीन्हो रघुराज देखि सब संतनको मंडल भो पावनो ।
 एक रूप हाथ चौर हांकते जगतनाथै एक रूप साधुन समाज प्रगटावनो ॥ १ ॥

पुनि जगदीश पुरी ते सोई । चल्यो कबीर महामुद मोई ॥

बांधव गढ मम दुर्ग महाना । शिवसंहिता जासु परमाना ॥

सतयुग वरुणाचल कहवायो । कलि बांधवगढ नाम कहायो ॥

पूरुव पुरुष रहे जे मोरा । रहे ते सब गुजरातहि ठोरा ॥

तेऊ पाइ कबीर निदेशा । विंध्य पृष्ठ आये यहि देशा ॥

तब ते बांधवगढै भुवालै । कीन्हों नृप ववेल निज आलै ॥

आगे तासु कथा मैं गैहाँ । सब श्रोतनको सविधि सुनैहाँ ॥

विरसिंहदेव वधेल भुवाला । सुनि कबीर आवनको हाला ॥

चहुँकित दूत दियो बैठाई । दियो कबीरहि खबरि जनाई ॥

और पंथ है नहिं कटि जाई । सावधान रहियो सब भाई ॥

गुणि विरसिंहदेव अभिलाषा । ताको शिष्य करन चित राखा ॥

बांधवगढै कबीर सिधारे । राजा आगू लेन पधारे ॥

दोहा-सादर लयाइ कबीर को, करि उत्सव हर्षाइ ॥

शिष्य भये परिवारयुत, भवभय दियो मिटाइ ॥ १७ ॥

भक्तमालकी यह कथा, किय संक्षेप बखान ॥

अब कबीर इतिहासको, विस्तर सुनहु सुजान ॥ १८ ॥

देश गहोरा युत परिवाग । भयो शिष्य विरसिंह भुवारा ॥

कछुक काल लगि नृप ढिग माहीं । वस्यो कबीर सुमिरि हरि काहीं ॥

येक समय विरसिंह नरेशै । दियो बोलाई कबीर निदेशै ॥

देहैं तोहिं कछू हम ज्ञाना । ताते कर अस भूप विधाना ॥

यक ब्राह्मणी रचै यक धोती । वरष दिवसमहँ अतिहि उदोती ॥

लेइ पाणिमहँ टोरि कणसू । सूत भूमि परशैनहिं तासू ॥

सो धोतीलै आवहु राजा । तब द्वै हौ तुरंत कृतकाजा ॥

सुनि विरसिंह तुरंत सुखारी । गो ब्राह्मणीसमीप सिधारी ॥

धोती मांग्यो तब दिन नारी । सुनु महीप सो गिरा उचारी ॥

धोती वर्ष प्रयंत बनाऊं । जगन्नाथको जाय चढ़ाऊं ॥

लेहु महीश शीश बरु मोरा । धोती लेब उचित नहिं तोरा ॥

राजा फिरि कबीर ढिग आयो । सकल ब्राह्मणी वचन सुनायो ॥

दोहा-कह कबीर जगन्नाथको, धोती देइ चढ़ाइ ॥

प्रतीहार करि साथ नृप, तियको दियो पठाइ ॥ १९ ॥

जाय ब्राह्मणी वसन चढ़ायो । प्रभु ढिग ते तुरंत फिरि आयो ॥

कियो ब्राह्मणी धरन तहांहीं । स्वप्न कह्यो नाथ तेहिं काहीं ॥

मांग्यो हम बांधवगढ़ काहीं । काहे दिह्यो मोहिं लै नाहीं ॥

जाय कबीरै देइ चढ़ाई । तब जैहै पूरण फल पाई ॥

दिन तिय फिरि बांधवगढ़ आई । दियो कबीरहि वसन चढ़ाई ॥

वसन पहिरि जब बैठि कबीरा । तब आयो विरसिंह मबीरा ॥

महिते यक कर ऊंच निहारा । तब कीन्हो अस वचन उचारा ॥

जो हरिको हरि लोकहु काहीं । दीजै म्वहिं देखाइ सुखमाहीं ॥

तौ प्रतीति मोरे परि जाई । ये तो सत्य कबीरै आई ॥

तब राजहि कबीर बैठायो । ध्यानावस्थित ताहि करायो ॥
 योग मार्ग ते तेहि लै गयऊ । हरि हरि लोक देखावत भयऊ ॥
 तब विरसिंह भूप विश्वासे । लहन विज्ञानहि हिये हुलासे ॥

दोहा-श्रीकबीरजी तहँ कियो, सुभग ज्ञान उपदेश ॥

मिटे सकल संसारके, ताके काय कलेश ॥ २० ॥

कह कबीर लै चलहु शिकारा । भूप कियो तेहिं नाग सवारा ॥
 गनके ऊपर हाथ सवाऊ । बैठ कबीर लखे सब काऊ ॥
 बांधवगढ़के पूरुब ओरा । सदल तृषित भो नृप तेहि ठोरा ॥
 कह्यो कबीरै गुरु भगवाना । जल बिन जात सबैके प्राना ॥
 तब कबीर परभाव देखायो । तुरत सकल तरु सफल बनायो ॥
 प्रगटी वापी निर्मल नीरा । तहँ अंतर्हित भयो कबीरा ॥
 अब बघेल वंशावलि जोई । श्रीकबीर विरचित है सोई ॥
 अरु आगम निदेशहू ग्रंथा । तामें है बघेल सतपंथा ॥
 उक्ति कबीरहि की लै नीकी । बणों मोरि उक्ति नहिं ठीकी ॥
 यदपि वंश महिमा निजवरणत । उपजति लाज तदपि अतिसुखरत ॥
 तेहि अनुसर वरणों कर जोरी । श्रोता दियो मोहिं नहिं खोरी ॥
 करि दरशन जगदीश कबीरा । उत्तर दिशा चलयो मतिधीरा ॥

दोहा-बांधवदुर्ग बघेलको, ताठिग जबहिं कबीर ॥

आए तब नृप रामसिंह, आनंद युत मतिधीर ॥ २१ ॥

लै आगे ल्याए तुरत, बांधवदुर्ग लेवाइ ॥

अति सत्कार कियो तहाँ, मानि रूप यदुराइ ॥ २२ ॥

पुनि कबीर स्थानमें, भूपति गये अकेल ॥

तब कबीर नृपसों कह्यो, मोहिं गुरु कियो बघेल ॥ २३ ॥

तेरे पूरुबके पुरुष, कियो गुरु जस मोहिं ॥

मैं लै आयो हंस द्वै, सकल सुनाऊं तोहिं ॥ २४ ॥

वाराणसी जन्म मैं लीन्हो । जगन्नाथ दरशन मन दीन्हो ॥

तहँ समुद्रको करि मर्यादा । गमन्यो गुजरतै अविषादा ॥

तहँ को भूप पुत्र ते हीना । विनती कियो मोहिं अति दीना ॥
 मैं वरदान दियो नृप काहीं । द्वै सुत द्वैहैं तुव तिय माहीं ॥
 मोर अंश ते जो यक होई । वदन बाव देखी सब कोई ॥
 तब सुलंक नृप आनंद पायो । द्वै सुत निज तिय महँ जनमायो ॥
 व्याघ्रदेव भो जेठ व्याघ्रमुख । अनुज तासु भो सुंदर हरदुख ॥
 व्याघ्रवदन लखि पंडित आये । जानि अशुभ वनमहँ फिकवाये ॥
 तब कबीर धरि पंडित वेशा । जाइ भूपको दियो निदेशा ॥
 ल्याबहु व्याघ्रवदन सुत काहीं । ताते चलिहै वंश सदाहीं ॥
 भूप सुलंकदेव विन शंका । ल्यायो तुरत सुतहि अकलंका ॥
 व्याघ्रदेव तेहि नाम सुहंसा । तिनते चलयो बघेलहि वंसा ॥

दोहा—तब कबीर अस वर दियो, जगमें सहित प्रसंश ॥

अचल राज बांधौ रही, चली बयालिस वंश ॥ २५ ॥

व्याघ्रदेवके सुत नहिं रहेऊ । सो कबीरसों निज दुख कहेऊ ॥
 तब कबीर किय मनमहँ ध्याना । कियो तुरत गिरिनार पयाना ॥
 चंद्र बिजय नृप रह्यो तहाँहीं । रानी इंदुमती रति छाहीं ॥
 तेहि पूरुष कबीर उपदेशा । दंपति किय हरिपुरहि प्रवेशा ॥
 सो कबीर हरिलोक सिधारी । दंपति काहिं योग मति धारी ॥
 ल्यायो द्रुत गुजरातहि देशा । कीन्हो व्याघ्रदेव सुतवेशा ॥
 दियो नाम जैसिद्ध प्रसिद्धा । पूरित वृद्ध ऋद्धि अरु सिद्धा ॥
 युवा बैस जैसिद्धहि आई । निशिमहँ चिंता भई महाई ॥
 केहि विधि नाम चलै चहुँओरा । क्षत्रीधर्म विजय वरजोरा ॥
 व्याघ्रदेवसों कह्यो प्रभाता । सो कह पितामहै कहु बाता ॥
 तबै सुलंक देव ढिग जाई । निज मनकी शंका सब गाई ॥
 सो सादर शासन तेहि दीन्हों । लै कछु सैन्य पयानो कीन्हों ॥

दोहा—गढा देशमहँ सो वर्यौ, भूप नर्मदा तीर ॥

कर्णदेवताके भयो, तासु सारिस रणधीर ॥ २६ ॥

गंगापार हौंडिया खेरा । बैसनको तहँ रहै बसेरा ॥
 तहँ कीन्हो विवाह सुत केरा । डाख्यो चित्रकूट पुनि डेरा ॥
 बीती तहाँ बहुत दिन राती । व्याघ्रदेवके भयो पनाती ॥
 बहुत काल जब बीतत भयऊ । तब जयसिंह छोंडि तनु दयऊ ॥
 कर्ण देव तब भयो नरेशा । तासु पुत्र केशरी सुवेशा ॥
 भयो केशरीसिंह जुमाना । तब कालिंजर कियो पयाना ॥
 कालिंजर भूपति चंदेला । तासों कियो केशरी मेला ॥
 लै चंदेल चतुरंग महाना । कीन्हो देश गहोरा थाना ॥
 बहुत काल लगि वसे गहोरा । चलयो केशरी उत्तर ओरा ॥
 रह नवाब राजा तहँ भारी । कीन्हौं अमल केशरी सारी ॥
 सुनि नवाब दल ले चढि आयो । सुनि केशरी निसान बनायो ॥
 माच्यौ तहाँ महा संग्रामा । विजय लह्यो केशरी ललामा ॥

दोहा-पुनि नवाब तहँ आइक, कियो केशरी मेल ॥

अर्ध राज्य देवे लग्यो, सो न लयो गुणिखेल ॥ २७ ॥

पुनि नवाब केशरी बघेला । गोरखपुर पर कीन्हो हेला ॥
 तब नवाब अति प्रीति देखायो । गोरखपुर महुँ तेहि बैठायो ॥
 कहत भयो रक्षहु अब मोही । मह दल कोश लाज है तोही ॥
 गोरखपुर वस केशरि भूषा । प्रगटायो यक्र पुत्र अनूषा ॥
 इत नृप कर्ण देव मतिधीरा । चित्रकूटमहुँ तज्यो शरीरा ॥
 पुत्र केशरी को जो भयऊ । तेहिमल्लार नाम अस भयऊ ॥
 सुत मल्लारके शारंग देवा । शारंगके भीमल हरि सेवा ॥
 भीमल देव प्रचंड प्रतापी । अतिसुंदर हरि नामहि जापि ॥
 भीमलदेव पुत्र जो भयऊ । ब्रह्मदेव तेहिं नामहि ठयऊ ॥
 सो मगहरमहुँ कीन्हो थाना । तहाँ वसत बहुकाल बिताना ॥
 ब्रह्मदेव लै कटक महाई । मिले गहरवाननसों आई ॥
 पुनि सिरनेतनदेश सिधारा । कीन्हो व्याह उछाह अपारा ॥

दोहा—तहँ कोउ भूपति बंधु इक, कीन्है रहै विरोध ॥

ताहि पकरि लयायो सदल, करि चहुँ दिशि अवरोध २८

ब्रह्मदेवके भो सिध देवा । नरहरि देव तासु सुत भवा ॥
 नरहरिके भइ भेदसुधन्या । व्याहीसो शिरनेतन कन्या ॥
 नरहरि वस्यो कछुक दिनकाशी । भेदचल्यो लै दल अरि नाशी ॥
 भयो शालिवाहन सुभेद सुत । विरसिंहदेव तासु सुत नृप नुत ॥
 भो विरसिंह महान भुवाला । वस्यो प्रयाग आइ तेहि काला ॥
 लियो अमल सब देशन काहीं । लाख सवार रहैं सँगमाहीं ॥
 वीरभानु सुत भो पुनि ताके । राजाराम भये तुम जाके ॥
 जबै प्रयाग देश चहुँओरा । अमल्यो विरसिंह निजभुज जोरा ॥
 तबै प्रजा किय जाय पुकारा । दिल्ली शाह हिंमाऊद्वारा ॥
 आयो कोउ कबीर बघेला । लाख सवार चलै बगमेला ॥
 अमल कियो सो मुलुक तुम्हारा । सो सुनि शाह तुरंतसिधारा ॥
 चित्रकूट आयो जब शाहा । चलन लग्यो विरसिंह नरनाहा ॥

दोहा—वीरभानु तब आयकै, वारन कियो बुझाई ॥

तुम न जाहु म्लेच्छहि मिलै, ऐहै सो इतधाय ॥ २९ ॥

तब पुत्रहि विरसिंह बुझाई । चल्यो तुरंत निशान बनाई ॥
 चित्रकूट विरसिंह सिधारा । सुनत शाह आगू पगधारा ॥
 दोउदल भये बरोबर जबहीं । सादर शाह बोलायो तबहीं ॥
 जब भूपति गो शाह समीपा । बिहँसि शाह कह सुनहु महीपा ॥
 कवन हेतु परजन दुखदीन्हो । काहे मुलुक हमारो लीन्हो ॥
 तब विरसिंह बोल्यो मुसकाई । कोहूसों किय नहीं लड़ाई ॥
 जे हमहीं मारे तेहि मारे । अमल्यो तिनके देश अपारे ॥
 कह्यो शाह कहँ सुवन तुम्हारा । वीरभानु कहँ भूप हँकारा ॥
 वीरभानु तब वाजि उड़ाई । परचोशाह हौदामहँ जाई ॥
 शाह उतर हार्थिते आयो । वीरमानु गोदहि बैठायो ॥

बैठों तख्त माँह जब शाहा । वीरभानु कहँ बहुत सराहा ॥
 पुनि विरसिंहहि कह दिल्लीशा । अब हम तुमको देत अशीशा ॥
 दोहा-बारहिं राजा करि स्ववश, करहु राज्य चहुँओर ।

बांधवगढ़ निज वसनको, लीजै नृपशिरमोर ॥ ३० ॥

असकहि लिखित दियो दिल्लीशा । चल्थो तबै विरसिंह महीशा ॥
 दिल्लीपति प्रयाग लै आयो । करि मेहमानी भवन पठायो ॥
 लै दल पुनि विरसिंह भुवारा । दक्षिण चल्थो सहित परिवारा ॥
 आयो तमस नदीके तीरा । तब लाडिल परिहार सुवीरा ॥
 नरो शैल महुँ दुर्ग बनाई । वसत रहै सो बली महाई ॥
 सो मारग महुँ कियो लड़ाई । तासु नरो गढ़ लियो छड़ाई ॥
 नरो जीति विरसिंह भुवाला । बाँधा नगर रह्यो तेहि काला ॥
 तहाँ कछुक दिन कियो निवासा । पुनि गवनतमो दक्षिण आसा ॥
 रहे रत्नपुर करचुलि राजा । तुव पितुकेर कियो तहुँ काँजा ॥
 सोदायज महुँ बाँधव दीन्ह्यो । तहुँ विरसिंह वास चलि कीन्ह्यो ॥
 वीरभानुको दै पुनि राजू । आय प्रयाग बस्यो कृतकाजू ॥
 कह्यो तोरि वंशावलि ऐसी । जानी रही मोरि यह जैसी ॥

दोहा-सुनि अपनी वंशावली, बहुरि कह्यो शिरनाइ ॥

अब भविष्य यहि वंशकी, दीजै कथा सुनाइ ॥ ३१ ॥

बांधव दुर्ग वसीकी नाहीं । राज्य चली यहि भाँति सदाहीं ॥
 आगे कैसो द्वैहै वंशा । यह सिंगरो अब करहु प्रशंशा ॥
 तब कबीर बोले मुसुकाई । राजाराम सुनहु चित लाई ॥
 तुम्हरे दशये वंशहि माहीं । लेहौ तुमही जन्म तहाँहीं ॥
 सुत समेत बांधवगढ़ ऐहौ । बीजक ग्रंथ मोर तहुँ पैहौ ॥
 ताको अर्थ समर्थन करिहौ । संत समाजनको सुखभरिहौ ॥
 वीरभद्र तुम्हरो सुत होई । करिहौ राज्य सदा सुख मोई ॥
 संवत अष्टादश नवषटमें । ऐहौ बांधव गढ़ अटपटमें ॥
 तबते ताहि विशेष बैसेहौ । अपनो विमल महलरचवैहौ ॥

और भविष्य कबीरजी गायो । वर्णत तेहि में पार न पायो ॥
यक कबीर आगम निर्देशा । मम शासित वर्णित युगलेशा ॥
तामें सकल अहं विस्तारा । जानिलेहु सब संत उदारा ॥

दोहा-और कबीर कथा अमित, वरणि लहाँ किमिपार ॥
संक्षेपैते इत लिख्यो, कीन्ह्यो नहिं विस्तार ॥ ३२ ॥

यथा बघेलवंशकी गाथा । वर्ण्यो भूत भविष्यहु नाथा ॥
तैसेहि अबलों प्रगट देखाती । पलहू बढै न पल घटि जाती ॥
मगहर गे यक समय कबीरा । लौला कीन्ही तजन शरीरा ॥
अतिशय पुष्प तुरंत मँगाई । तामें निजतनु दियो दुँराई ॥
सबके देखत तज्यो शरीरा । हिंदू यमनहुकी भै भीरा ॥
हिंदू यमन शिष्य रहे दोउ । आपस में भाषे सब कोउ ॥
यमन कह्यो माटी हम देहैं । हिंदू कहैं अनलमें लेहैं ॥
तब दोउ जाय पुष्पकँह टारयो । नाहिं कबीर शरीर निहारयो ॥
आधे आधे लै दोउ सुमना । दीह्यो हिंदू गाड़यो यमना ॥
भये कबीर प्रगट मथुरामें । विचरन लगे सकल वसुधामें ॥
यहि विधि अहैं अनेकवगाथा । सति कबीर है वपु जगनाथा ॥
यह लीला करि सकल कबीरा । आयो बांधव पुनि मतिधीरां ॥

दोहा-अबलों गुहा कबीरकी, बांधवदुर्ग मँझार ॥

जगन्नाथको पंथ सो, पावत नहिं कोउ पार ॥ ३३ ॥

इति श्रीभक्तमालान्तर्गत श्रीकबीरजीकी कथा स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी
भारतपथिकद्वारा संशोधित समाप्ता ।

शब्द एकसौ चौदह ॥ ११४ ॥

सार शब्द से बांचि हो मानहु एतवारा हो ।
 आदि पुरुष यक वृक्ष है निरंजन डारा हो ॥
 त्रिदेवा शाखा भये पत्ती संसारा हो ।
 ब्रह्मा वेद सही किये शिव योग पसारा हो ॥
 विष्णु माया उत्पत्ति किया उरला व्यवहारा हो ।
 तीन लोक दशहूँ दिशा यम रोकनि द्वारा हो ॥
 कीर है सब जीयरा लिय विषका चारा हो ।
 ज्योति स्वरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा हो ॥
 कर्मकी बंसी लायके पकरयो जग सारा हो ।
 अमल मिटाऊं तासुका पठऊं भव पारा हो ॥
 कह कबीर निर्भय करें परखो टकसारा हो ।

शब्द एक सौ पन्द्रह ॥ ११५ ॥

सन्तौ ऐसी भूल जगमाहीं जाते जिव मिथ्या में जाहीं ॥
 पहिले भूले ब्रह्म अखण्डित झाई आपुहि मानी ।
 झाई मानत इच्छा कीन्हा इच्छाते अभिमानी ॥
 अभिमानी करता है बैठे नाना पंथ चलाया ।
 वही भूल में सब जग भूले भूलक मर्म नहिं पाया ॥
 लख चौरासी भूल ते कहिये भूलाहि जग विटमाया ।
 जो है सनातन सो भूला अब सोइ भूलाहि खाय ॥
 भूल भिटै गुरु मिलै पारखी पारख देइ लखाई ।
 कहाहि कबीर भूल की औषध पारख सब की भाई ॥११५॥

(श्रीनाभाजीके भक्तमालसे टीकासहित)

॥ मूल ॥ कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रमषट्दरशनी ॥ भक्तिविमुखजोधर्म
सोअधर्मकरिगायो । योगयज्ञव्रतदानभजनविनतुच्छदिखायो ॥ हिंदूतुरकप्रमानर-
मैनी सबदीसाषी । पक्षपातनहिं वचनसबहिकेहितकीभाषी ॥ आरूढ़दशद्वैजगतपर
मुखदेखीनाहिंनभनी । कबीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषट्दरशनी ॥ ६० ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजातिपाँतिसबटारिये ॥
भईनभवाणीदेहतिलक रवानीकरौकरौगुरुरामानंद गरेमालधारिये । देखैनहींमुखमे
रोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडारिये । रजनीकेशशमयआवेश-
सोंचलतआपपरै पगरामकहैंमंत्रसोंविचारिये ॥ २६५ ॥ कीनीवहीबातमालाति-
लकबनाइगातमानिउतपातमातशोर कियोभारिये । पहुँचीपुकाररामानंदजूकेपास-
आइकही कोऊपूछेंतुमनामलैउचारिये । लावोजूपकरिवाकोकबहमकियोशिष्यला-
येकरिपरदामें पूछीकहिडारिये । रामनाममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमें खोलिपटाभिले
सांचोमतउरधारिये ॥ २६६ ॥

बुनैतानोहियराममडरानोकही कैसेकैबखानोवहीरातिकछुन्यारिये । उतनोही-
करै तामेंतनुनिरवाहहोइभोइगइऔरैबातभक्तिलागिप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपटबे-
चनलैजनकोऊआयोमोकोदेहुदेहमेरीहैउधारिये । लग्योदेनआधोफारिआधोसों न
कामहोयदियो सबलबोजोपैयहीउरधारिये ॥ २६७ ॥ तियासुतमातमगदेखेभूखे
आवैं कब दबिरहेहाटनमेंलवैकहाधामको । सांचोभक्तिभावजानीनिपट सुजानवेतो
कृपाकेनिधानगृहशोचपरेउद्यामको । बालदलैधाये दिनतीनियोंबितायेजब आये
धीरडारिदईलहेउहैपरामको । माताकरैशोरकोऊहाकिममरोरिबांधै डारोबिनजाने
सुतनहीलैतदामको ॥ २६८ ॥ गयेजनदोइ चारिदूठिकेलिवाइलायेआयेघरसुनी
बात जानिप्रभूपरको । रहेसुखपाइकृपाकरिघुराईदईक्षणमेंलुटाइसबबोलिभक्तभी-
रको । दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोषधायेसुनिविप्रतजिधीरको ।
कयोंरेतेजुलाहेधनपायोनावुलायेहमें शूद्रनिकोदियोजावोकहैंयोंकबीरको ॥ २६९ ॥

क्योंजुउठिजाऊँकछुचोरीधनलाऊँनितहरिगुणगाऊँकोउराहभैनमारी है । उनको
लैमानकियोयाहीमेंअमान भयो जोपैजाइमाँगा हमेंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोना-
हींमंडीजाँउतुमरहौबैठे नीठिके छूड़ायोपैडोछिपैव्याधिठारीहै । आयेप्रभुआपद्रव्य
लायेसमाधान कियोलियोसुखहोयभक्तिकीरतउजारीहै ॥ २७० ॥ ब्राह्मणकोरू
पधरिआयेछिपिबैठेजहांकाहेकोमरतभूखौजानोजु कबीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदे-

तहैअढ़ाईसेरवेरजिनिलावांचलेजावोयोंबहीरके । आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये
नयेनयेकौतुकसौकैसेरहैंधीरके । वारमुखीलईसंगममानोवाहीरंगरेजानोयहबातक-
रीउरअतिभीरके ॥ २७१ ॥ संतदेखिदुरेसुखभयोईअसंतनिकेतबतौविचारिमन
मांझ औरआयोहै । बैटीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकचीजउठिजलढर
कायो है । राजाजियशोचपरचोकहोहोतबजगन्नाथपंडापाँवजरतबचायोहै ।
सुनिअचरजभारिनुपनेपठयेनरलायेसुधिकहीअजूसंचहीसुनायो है ॥ २७२ ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभईआंचलागीहियेअबकहौकहा कीजिये । चले
हीबनतिचलेशीशतृणबोझभारीगरेसोंकुल्हारीबांधीतियासंगभीजिये । निकसेबजार-
हैकैडारिदईलोकलाजकियो मैं अकानछिनछिनतनुछीजिये । दूरिजेकबीरदेखिहै-
गयोअधीरमहाआयोडठिआगेकह्यौडारिमतिरीझिये ॥ २७३ ॥ देखिकैप्रभावफे-
रिउपज्योअभावद्विजआयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै । विमुखसमूहसंगमाताहू
मिलाइछईनाइकैपुकारे जुदुखायोसबगाँवहै । लावोरेपकरिवाकोदेखौरेमकरकैसो-
अकरमिटाऊंगादेजकरतनावहै । आनिठादेकियेकाजीकहतसलामकरौजनैनसला-
मजामेरांमगादेपावहै ॥ २७४ ॥ बांधिकैजँनीरगंगातीरमांझबोरिदियोजियौतीर
ठाढ़ौकहैयंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिअगिनिप्रजारिदईनईमानोंभई देहकंच-
नलजावहीं । विफलउपाइभयेतऊनहींआइनयेतबमतवारो हाथीआनीकेझुकावहीं ।
आवतनटिगऔंचिबारिहारिभाजिजाइआयआपसिंहरूपबैठेशोभागावहीं ॥ २७५ ॥

देख्यौबादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखिकरामातिमातभयेसब लोक हैं ।
प्रभुपैबचाइलीसैहमैनगजबकीलीजैसोईभावैगांवदेश ना भोग हैं । चाहैंएकरामजा-
कोजपैआठौयामऔरदामसोंनकामजामेंभरेकोटिरोग हैं । आयेघरजीतिसाधुमिले-
करिप्रीतिजिन्हें हरिकी प्रतीतिवेईगायबेकेयोगहैं ॥ २७६ ॥ होइकैखिसानेद्विज
निजचारिविप्रनके मूढ़निमुड़ाइभेषसुंदरबनाये हैं । दूरिदूरिगावनमेंनामनिकोपूछि-
पूछि नामजोकबीरजूकोझूठैन्योतिआये हैं ॥ आयेसबसाधुसुनिये तौदूरिगयेकहूंचहूं
दिशिसंतनिकेफिरैहरिधाये हैं । इनहीकोरूपधरिन्यारेन्यारेठौरबैठैएऊमिलिगयेनीके
पोखिकैरिझायेहैं ॥ २७७ ॥ आईअप्सराछरिबेकेलियेबैसकिये हियेदेखिगाढ़ोफिरि-
गईनहींलागी है । चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोछियोफलनैननिकोबड़ोबड़भागी
है । शीशधैरहाथनसाथमेरेधामआवो गावोगुणरहौजोलौतेरीमतिपागी है । मगमें-
हैजाइभक्तिभावकोदिखाइबहु फूलनिमँगाइपौढ़िमिल्योहरिरागी है ॥ २७८ ॥

मूल रमैनी प्रारम्भ ।

(अक्षर खण्डकी रमैनी)

प्रथमशब्दहैशुन्याकार ॥ पराअव्यक्त सोकहै बिचार॥अंतः
करणउदयजबहोय ॥ पश्यंतिअर्धमात्रासोय ॥ स्वरसोकंठ
मध्यमाजान ॥ चौतिसअक्षरमुखस्थान ॥ अनवनिबानीतेहि-
केमांहि ॥ विनजानेनरभटकाखांहि ॥ बानी अक्षर स्वर संमु-
दाय ॥ अर्धपश्यंतिजातनशाय ॥ शुन्याकारसोप्रथमारहै ॥
अक्षरब्रह्मसनातनकहै ॥ निर्वृति ॥ प्रवृतिहैशब्दाकार ॥ प्रण-
वजानेइहेबिचार ॥ साक्षी ॥ अंकुलाहटकेशब्दजो, भई
चारसोभेष ॥ बहुबानीबहुरूपकै पृथकपृथकसबदेश ॥ १ ॥
रमैनी॥अनवनिबानीचारप्रकार ॥ १ काल २ संधि ३ झांई ४
औ सार॥ हेतुशब्दबूझियेजोय ॥ जानिय यथारथ द्वारासोय॥
भ्रमिकझांईसंधिकऔकाल ॥ सारशब्दकाटेभ्रमजाल ॥ द्वारों
चारअर्थपरमान ॥ पदार्थ व्यंग्यपहिचान भावार्थ १९
ध्वन्यार्थचार ॥ द्वाराशब्दकोइलखेबिचार ॥ परा पराइति
मुखसोजान ॥ मोरे सोरहकला निदान ॥ साक्षी ॥ विन-
जानेसोरहकला, शब्दीशब्द कौआर्य ॥ शब्द सुधारप-

१ इसका स्थान नाभी ॥ २ इसका स्थान हृदय ॥ ३ सोलह स्वर अ
आ इत्यादि ॥ ४ इसका स्थान कंठ ॥ ५ व्यंजन ॥ ६ नाना प्रकारकी ॥
७ एकट्ठा ॥ ८ पश्यंति होय फिर परा अवस्था को प्राप्त होता है ॥ ९ लय॥
१० उत्पत्ति ॥ ११ ओंकार ॥ १२ उबिआहठ ॥ १३ सच्चा ॥ १४
भरमाने ॥ १५ मार्ग, रस्ता ॥ १६ पद, अर्थ, शब्दका जो अर्थ, शब्दार्थ॥
१७ व्यंग, अर्थ, व्यंग भाव से जो कहा जावे ॥ १८ मतलब आशय
वाला जो अर्थ १९ ध्वनिमात्र ॥ २० परा और अपरा दो विद्या कोई शब्द
परा विद्या को वर्णन करता है कोई अपरा को ॥ २१ भटकता है ॥

हिचानिये, कौन कहावौ आय ॥२॥ रमैनी ॥ अक्षरवेदपुराणब
खान ॥ धरमकरमतीरथ अनुमान ॥ अक्षरपूजासेवाजाप ॥ और
महातमजेतेथाप ॥ यही कहावत अक्षरकाल ॥ जाएगडी उर होयके
भालें ॥ ओंहं सोंहं आतमराम ॥ मायामंत्रादिकसब काम ॥
येसब अक्षर संधिकहै ॥ जेहिमानिंशिवासर जिव रहै ॥ नि-
रगुणअलखअकहनिर्वाण ॥ मनबुधि इन्द्रिय जायनजान ॥
विधिनिषेधजहं बैनितादोय ॥ कहैंकबीरपदझाईसोय ॥
साक्षी ॥ प्रथमेझाई झांकते, पैठासंधिककाल ॥ पुनिझाईकी
झाईरही, गुरुविन सकेकोटाल ॥ ३ ॥ रमैनी ॥ प्रथमही
संभैवशब्द अमान ॥ शब्दीशब्दकियोअनुमान ॥ मानमहा
तममानभुलान ॥ मानत मानत बावनठान ॥ फेरा फिरतभ-
यो भ्रमजाल ॥ देहादिकजगभये विशाल ॥ देहभईतेदेहिक-
होय ॥ जगतभईतेकर्ता कोय ॥ कर्ता कारणकर्महिलाम ॥
घरघर लोगकियो अनुराम ॥ छौ दरशनवर्णभ्रमचार ॥ नौ
छौ भए पाखंडबेकार ॥ कोई त्यागी अनुरामीकोय ॥ विधि-
निषेधमावधियादोय ॥ कल्पेउग्रंथपुराणअनेक ॥ भरभिरहै
सबविनाशिवेक ॥ साक्षी ॥ भरभिरहासब शब्दमें, सब्दी-
शब्दनजान ॥ गुरुकृपानिजपखवल, परखोधोखाज्ञान ॥ ४ ॥

२२ तीर ॥ २३ जगत् को निषेधकर और ब्रह्मका प्रतिपादन करना यह
है स्त्री जिसका ॥ २४ होताभया ॥ २५ शब्दका मालिक शब्द कहने वाला ॥
२६ हेतु ॥ २७ योगी २ जंगम ३ सेवड़ा ४ सन्यासी ५ दर्वेश ६ छठांकहिये ब्राह्म
ण छ घर छ है भेश ॥ २८ ब्राह्मण १ क्षत्री २ वैश्य ३ शूद्र ४ वर्ण और
ब्रह्मचर्य्य १ गृहस्थ २ बाणप्रस्थ ३ सन्यास ४ आश्रम ॥ २९-३०=
छ्यानवेपाखण्ड ३१ विरक्त ॥ ३२ गृहस्थ ॥

रमैनी ॥ धोखाप्रथमपरखियेभाई ॥ नामजातिकुलकर्मबड़ाई
क्षितिजैल पाँवक मँरुतअकाश ॥ तामहपंच विषयपरकाश ॥
तत्त्व पांचमेश्वासासार ॥ प्राणअपानसमान उँदार ॥ और-
व्यानबावनसंचार ॥ निजानिज थैलनिज कारजकार ॥ इंग-
ला पिंगलाऔ सुखमनी ॥ इकइस सहस्र छौसत सोगनी ॥
निगमँ अंगम सो सदा बतावे ॥ इवासासारसरोदा गावे ॥
साक्षी ॥ धोखा अँधेरी पायके, याविधिभयाशरीर ॥
कल्पेउकारताएक पुनि, बढीकर्मकी ^{११}पीर ॥ ५ ॥ रमैनी ॥
योग्य जप तपध्यानअलेख ॥ तीरथ फिरतधरेबहुभेख ॥
योगी जंगमासिद्धउदास ॥ घरको त्यागि फिरेबनबास ॥ कँन्द
मूल फँल करतअहार ॥ कोइकोइ जटाधरे शिरभार ॥ मन-
मलीन मुखलायेधूर ॥ आगे पीछेअग्निऔ मूर ॥ नग्नहोयनर
खोरि नफिरे ॥ पीतरपाथरमेंशिरधरे ॥ साक्षी ॥ कालशब्द-
केसोरते, ^{१२}होरपरीसंसार ॥ देखा देखीभागिया, कोईनकरे
विचार ॥ ६ ॥ रमैनी ॥ जब पुँनिआयखसी यह बाँनि ॥
तबपुनिचित्तमाकियो अनुमानि ॥ महीं ब्रह्म कर्त्ताजगकेर ॥

॥ ३४ अग्नि ३३ पृथ्वी ३५ वायु ॥ ३६ शब्द आकाशका विषय स्पर्श
वायुका ॥ रूप अग्नि का रसजलका गंध पृथ्वीका ३७ उदान ॥ ३८ स्थान ॥
३९ शास्त्र ॥ ४० वेद ॥ ४१ अविद्या अज्ञानता ॥ ४२ दुख ॥ ४३ जो
पृथ्वी के नीचे होता है जैसे आलू शकरंद केसउर फर इत्यादि ॥ ४४ जो
मूल से होता है अर्थात् काठ फोड कर जो निकलता है जैसे कट हल; गूलर
इत्यादि ॥ ४५ जो फूल से पैदा है जैसे आंब (केरी) अमरूद(जामफल)
इत्यादि ॥ ४६ सूर्य ॥ ४७ बेशर्म ॥ ४८ शोर हल्ला ॥ ४९ फिर ॥
शब्द ॥ ५० ॥

परेसोजालजगतकेफेर ॥ पाँच तीनगुणजगउपजाया ॥ सोमा-
यामैंब्रह्मनिकाया ॥ उपजे खपेजगविस्तारा ॥ भैंसाक्षीसब
जाननिहारा ॥ मोकह जानिसकेनहिंकोय ॥ जोपैविधिहरिशं-
करहोय ॥ अस सन्धिककीपरी बिकार । बिनुगुरूकृपानहोय-
उवार ॥ मग्न ब्रह्मसंधिककेज्ञान ॥ असजानिअबभयाभ्रमहान
॥ साक्षी ॥ "संधिशब्दहैभर्ममो, भूलिरहा "कितलोग । पर-
खेउधोखाभेवँनहिं, अंतहोतबड़ "सोग ॥ ७ ॥ रमैनी ॥
जोकोइ संधिकधोखाजान ॥ सोपुनिउलटि कियोअनुमान ॥
मनबुद्धिइन्द्रियजायनजान । निरँबचनीसोसदाअमान ॥
अँकल अँनीह अँबाध अँभेद ॥ नेतिनेतिकैगाबेवेद ॥ सोहँ
वृत्ति अखण्डितरहै ॥ एकदोयअबकोतहांकहै ॥ जानिपरी
तब "नित्याकार ॥ झाँई सो भ्रममहाबेकार ॥ साक्षी ॥
संभव शब्दअमानजो, झाँईप्रथम बेकार ॥ परखेउ धोखा-
भेवनिज, गुरुकी दयाउवार ॥ ८ ॥ रमैनी ॥ पहिले एकशब्द-
समुदाय ॥ बाबनरूपधरेछितराय ॥ इच्छा नारिधरेतेहिभेश ॥
तातेब्रह्मा विष्णुमहेश ॥ चारिउ उरपुरबावनजागे ॥ पंच अठ-
रहकंठाहिलागे ॥ तालू पंचशून्यसोआय ॥ दशरसनाके पूत-
कहाय ॥ पांचअधर अधरहीमारहै ॥ शुन्नेकंठसमोधेवहै ॥ ओठकँ-
ठलेप्रगटे ठौर ॥ बोलनलागे औरकेऔर ॥ साक्षी ॥ एक-
शब्द समुदायजो, जामेचार प्रकार ॥ कालशब्द सं-

५१ पांचतत्व ॥ देखो रमैनी ३ । १० इत्यादि ॥ ५३ कहां ॥ ५४ भेद ॥
५५ शोक दुख, ॥ ५६ कहने में जो नहीं आवे ॥ ५७ कला अंश रहित ॥
५८ इच्छा रहित ५९ बाद रहित ॥ ६० भेद रहित ॥ ६१ लगन, ख्याल,
सुरत ॥ ६२ सत्य रूप ॥

घिशब्द, झाँईऔपुनि सार ॥ ९ ॥ रमैनी ॥ पाँच तीनि
नौ छौ औचार ॥ और अठारह करेपुकार ॥ कर्मधर्मतीरथ-
केभाव ॥ ईसवकालशब्दकेदाव ॥ सोहंआत्माब्रह्मलखाव ॥
तत्वमसी मृत्युंजयभाव ॥ पंचकोश नवकोश वखान ॥ सत्य-
झूठ मेंकरे अनुमान ॥ ईश्वरसाक्षी जाननिहार ॥ येसवसंधि-
कहैविचार ॥ कारजकारणजहानहोय ॥ मिथ्याकोमिथ्याकहि-
सोय ॥ बैन चैननहिंमौनरहाय ॥ ईसबझाँईदीनभुलाय ॥ कोइ
काहूका कहानमान ॥ जोजेहिभावेतहंअरुझान ॥ परेजीवतेहि
यमकेधार ॥ जौलौपावेशब्दनसार ॥ जीवहुंसहदुखदेखिदयाल ॥
तवप्रेरीप्रभुपरखरि साल ॥ साक्षी ॥ परखायेप्रभु एक
को, जामे चारप्रकार ॥ काल संधि झाँई लखी लखी शब्द
मत सार ॥ १० ॥ रमैनी ॥ प्रथमेएकशब्दआरूढ ॥ तेहितकि
कर्मकरेवहुमूढ़ ॥ ब्रह्मभरमहोयसब [जग] में पैठा ॥ निरम-
लहोयफिरेवहुएँठा ॥ भरमसनातन गावे पाँच ॥ अटकि रहैन-
रभवकी खाँच ॥ आगेपीछेदहिनेबाँये ॥ भरमरहाहैचहुदिशि
छाये ॥ उठीभर्मनरफिरैउदास ॥ घरकोत्यागिकियोवनवास ॥

६३ पांच तत्व ६४ तीनगुण ॥ ६५ नौ व्याकरण ॥ ६६ छौशास्त्र ॥ ६७
चार वेद ऋग्वेद १ यजुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्ववेद ६८ अठारह पुराण ॥ १ मा -
कंडे पुराण २ मत्स्य पुराण ३ भागवत ४ भविष्यत पुराण ५ ब्रह्म वैवर्तक ६
ब्रह्माण्ड पुराण ७ ब्रह्मपुराण ८ विष्णुपुराण १० वाराहपुराण ११ वायुपुराण
अग्निपुराण १३ नारद पुराण १४ पद्म पुराण १५ कूर्म पुराण १६ स्कंद पुरा
ण १७ लिंग पुराण १८ गरुड़ पुराण ॥ ६९ नाम वायु ७० अन्नमय, प्राणम
य, मनोमय, ज्ञानमय, विज्ञानमय (आनंदमय) ७१ उपरोक्त ५ और शब्दमय
१ प्रकाशमय २ आकाशमय ३ आनंदमय ४ देखो बीजक के ५० वीं साखी
का टीका पृष्ठ ३६१ और कबीर मंशूर बड़ा पृष्ठ ६९६ ॥ ७२ बाणी ॥

७३ फंस गया ॥ ७४ कठिन ॥ ७५ शब्द ॥ ७६ पांचतत्व ७७ कीचड़
पंक, कांदो ॥ ७८ निराकार ॥

भरमबड़ीशिरकेशबढावे ॥ तकेगगन कोइ बांह उठावे ॥ दैता
री करनाशाग है ॥ भरमिकगुरु बतावे लहै ॥ भरम बड़ी अरु
धूमन लागे ॥ विनु गुरु पारख कहु को जागे ॥ साक्षी ॥
कहैं कबीर पुकारके, गहहुशरणतजिमान ॥ परखावे गुरभर-
मको, वानि खानिसहिदान ॥ ११ ॥ रमैनी भरमजीव परमा
तममाया॥भरमदेहऔ भरम निक्काया ॥ अनहदनाद औ ज्यो
ति प्रकास ॥ आदिअन्तलौभरमाहि भास ॥ इत उत करे भरम
निर्रमान ॥ भरम मान औ भरमअमान ॥ कोहं जगतकहांसे भया ॥
ईसबभरम अतीनिरमया ॥ प्रलय चारि भ्रमपुण्य औ पाप ॥
मन्त्रजापपूजाभ्रमथाप ॥ साक्षी ॥ बाट बाट सब भर्म है,
माया रचीबनाय ॥ भेद बिना भरमें सकल, गुरु बिन कहांल-
खाय ॥ १२ (बापपूत दोउ भरमहै, मायारची बनाय ॥ भेद
बिनाभरमे सकल, गुरु बिनकहाँलखाय) ॥ साक्षी ॥
बापपूत दोउ भरम, आधकोश नवपांच ॥ बिन गुरु भरम
नछूटे, कैसे आवैसांच ॥ १३ ॥ रमैनी ॥ कलमा बांग निर्माज
गुजारे ॥ भरमभई अल्लाहपुकारै ॥ अजबभरम एकभईतमासा ॥
लौ मुकाम बेचूँननिबासा ॥ वेनँमूनवहसब केपारा ॥ आखि-
रताको करे दिदौरा ॥ रगडेनाक भँसजिदअचेत ॥ निंदे बुँत

७९ स्थित ॥ ८० नित्य प्रलय १ नैमित्तिक प्रलय २ महाप्रलय ३ आत्यं-
तिक प्रलय ४ ॥ ८१ अधामात्री ॥ मुसलमानो का गुरु मन्त्र ला एला इलि-
ल्लाह मुहम्मदुर्रसू लिल्लाह ॥ ८२ अजान जो निमाज पढ़ने के थोड़ेही पहले
निमाज के समय सूचन करने को कलमा श० पुकारते हैं ॥ ८४ जो खुदा
के प्रार्थना पांच समय दिन और रात्री पढ़ते हैं पश्चिम मुह होकर ॥ ८५
स्थान रहित ॥ ८६ निराकार ॥ ८७ अद्वितीय ॥ ८८ क्यामतके दिन, सृष्टि
के अंत में जब खुदा सबका न्याय करेगा ॥ ८९ दर्शन ॥ ९० मुसलमानों
के नेमान पढ़ने की जगह ॥ ९१ प्रतिमापूजक ॥

परस्ततेहिहेत ॥ बाँवन तीसँबरन निरमान ॥ हिन्दू तुँरक
 दाऊभरमान ॥ साक्षी ॥ भरमिरहेसब भरममहं, हिदू-
 तुरुकबखान ॥ कहहिंकबीरपुकारकै, बिनुगुरुकोपहिचान
 ॥ १४ ॥ रमैनी ॥ भरमत भरमतसबै भरमाने ॥ रामसनेही
 विरलेजाने ॥ तिरदेवा सबखोजतहारे ॥ सुरनरमुनिनहिपा-
 वतपारे ॥ थकितभयातबकहावेअन्ता ॥ विरँहनिनारिरही
 बिनु कैन्ता ॥ कोटिनतरक करें मनमाही ॥ दिलकी दुबिधा
 कतहुँनजाही ॥ कोई नख शिखजटा बढ़ावै ॥ भरमिभरमि-
 सबजहँतहँधावैं ॥ बाटनसूझै भईअँधेरी ॥ होयरहीबानी कीं
 चैरी ॥ नाना पन्थ बरनिनहिंजाई ॥ (जातिकर्म गुन नाग्र
 बड़ाई) जाति वरणकुलनामवड़ाई ॥ रैन दिवसवे ठाँढेरहहीं
 वृक्ष पहारकाहेँनहितरहीं ॥ साक्षी ॥ खँसमनचीन्हे बावरी,
 परपूरुषलौलीन ॥ कहँदिकबीर पुकारके परीनबानीचीन
 ॥ १५ ॥ रमैनी ॥ कैँनरसकी मतवालीनारि ॥ कुँटनीसेखो-
 जे लँगवारि ॥ कुटनीआंखिन काँजरदियऊ । लागिँवँतावन
 ऊपरपीयऊ ॥ काजरलेकेहूँवैगईअंधी ॥ समुझनपरीबाँतँकी
 सँधी ॥ बाजेकुटनीमारे भँटकी ॥ ई सब छिनरोतामहँअ-
 टकी ॥ विरहिनिहोय के देहसुखावै ॥ कोई शिरमह केशव-
 ढावै ॥ मानि मानि सब कीन्ह सिंगारा ॥ बिनपियपरसैस-
 बैअंगारा ॥ साक्षी ॥ अटकीनारिछिनारि सब, हर-
 दम कुटनीद्वार ॥ खसम न चीन्हेबावरी, घरघरफिरतखु-

९२ संस्कृत वर्णमाला के ५२ अक्षर ॥ ९३ मुसलमानीवर्णमाला के
 ३० अक्षर ॥ ९४ मुसलमान ॥ ९५ वियोगिन ॥ ९६ पिया मालिक ॥
 ९७ खड़े ॥ ९८ मालिक ॥ ९९ बाणी ॥ १०० गुरुआ लोग ॥
 १०१ आशना, जार ॥ १०२ झूठा उपदेश ॥ १०३ उपदेश करने
 लगी ॥ १०४ मिलावट ॥ १०५ इशारा ॥

वार ॥ १६ ॥ रमैनी ॥ नवदरवाजाभरमविलास ॥ भरमहि-
 वावनबहेवतास ॥ कै^१नउजवावनभूतसमान ॥ कहं लगिगनो
 सो प्रथमउड़ान ॥ माया ब्रह्मजीवअनुमान ॥ मानतही मालि-
 क बौरान ॥ अकबकभूतवके परचंड ॥ व्यापि रहा सकलो
 ब्रह्मंड ॥ ई भर्म भूत की अकथकहानी ॥ ^{१०}गौत्योजीवजहांन-
 हिंपानी ॥ तनकतनकपरदौरे बौरा ॥ जहांजायेतहंपावेन-
 ठौरा ॥ साक्षी ॥ योगी रोगीभक्तबाबरा, ज्ञानीफिरे
^{१००}निखट्टू ॥ संसारीको चैन नहींहै, ज्योंसरायकाटट्टू ॥ १७
 रमैनी ॥ इत^१उतदौरेसबसंसार ॥ छुटेनभरमकियाउपचार ॥
 जरेजीवकोबहुरिजरावै ॥ काटे ऊपर लोनलगावै ॥ योगी
 ऐसी हालबनाई ॥ उलटी बत्ती नाक चलाई ॥ कोइविभूत्ति-
 मृगछालाडारे ॥ अगमपन्थकी राहनिहारे ॥ काहूको जलमां-
 झसुतावे ॥ कहंरतहीं सबरैनगंवावै ॥ भगती नारी कीन
 शृंगार ॥ बिन प्रिया परचै सबै अंगार ॥ एकगर्भ ज्ञानअनु-
 मान ॥ नारि पुरुषकाभेदनजान ॥ संसारीकहूंकलनहिंपावे
 ॥ कहंरतजगमेंजीविगंवावे ॥ चारिदिशामें मंत्रीझारै ॥
 लियेपलीतामुलनाहारे ॥ जरैनभूतबड़ो वरि^{११}धारा ॥ काजी
 पण्डित [पचिपचि] पढ़िपढ़ि हारा ॥ इन दोनोंपरएकैभूत ॥
 झारेंगे क्यामाकी चूत ॥ साक्षी ॥ भूतनउतरे भूतसों, सन्तो
 करोविचार ॥ कहैंकवीरपुकारिके, बिनुगुरु नहिनिस्तार ॥
 साक्षी॥परमप्रकाश भौंसजो, होत ^{११}प्रौढविशेष॥ तद प्रकाश

१०६ अक्षर १०७ डुबाया ॥ १०८ उदास ॥ १०९ सुख ॥ ११० यहां
 बवां ॥ १११ नेती धोती बाहर कराता है ॥ ११२ हाय २ करते २ ॥
 ११३ पंडित लोग ॥ ११४ मजबूत बलीबलवान ॥ ११५ अध्यास
 ॥ ११६ दृढ़ ॥

संभव भई, महाकाश सो शेष १९ ॥ साक्षी ॥ झाँईसंभवबुद्धि
ले, करीकल्पना अनेक ॥ सोपरकाशक जानिये, ईश्वरसाक्षी
एक ॥ साक्षी ॥ विषमभईशंकल्प जब, तदाकारसोरूप ॥ महा
अंधरीकालसो, परेअविद्या कूप ॥ साक्षी ॥ महातत्व
त्रीगुणपांच तत्व,संमष्टि र्यष्टि परमान ॥ दोय प्रकार होयप्र-
गटे, 'खंड अखंडसोजान ॥ २२ ॥ रमैनी ॥ सदा अस्तिभा
से निजभास ॥ सोईकहियेपरम प्रकाश ॥ परमप्रकाशले झां-
ई होय ॥ महदअकाश होयबरते सोय॥बरतेवर्त मानपरचंड ॥
भोसक तुरियातीतअखंड ॥ कालसंधिहोये उश्वास ॥ आगे
पीछे अनवनि भास ॥ विविधि भावना कल्पित रूप ॥ परका-
शी सोसाक्षि अनूप ॥ शून्य अज्ञान सुषुप्तिहोय ॥ अकुलाहट
ते नादै सोय ॥ (शून्य ज्ञान सुषुप्ति होय ॥ अकुलाहटसे नादी
सोय) ॥ नादवेद अकर्षण जान ॥ तेजनीर प्रगटे तेहिआन ॥
पानी पवन गांठि परिजाय ॥ देही देह धरे जग आय ॥ सो
कौआर शब्द परचंड ॥ बहुव्यवहार खण्डब्रह्माण्ड ॥ साक्षी ॥
जतन भये निज अर्थ को, जेहि छूटे दुख भूरि ॥ धूर परी
जब आंखमें, सूझे किमि निजमूर ॥ २३ ॥ रमैनी ॥ पांजी
परख जबै फरिआवै ॥ तुरतहि सबै विकार नशावै ॥ शब्द
सुधारि के रहे अकरम ॥ स्वाती भक्ति के खोटे भरम ॥ काल
जाल जो लखि नहिं आवै ॥ तौलौ निजपद नहीं पावै ॥
झाँई संधि काल पहिचान ॥ शार शब्द बिनु गुरु नहिं-
जान ॥ परखे रूप अवस्था जाए ॥ आन विचार न ताहि
समाए ॥ झाँई संधिशब्दले परखे जोय ॥ संशय वाकेरहै न कोय ॥

१९७ समूह जैसे बन ॥ ११३ एक जैसे एक वृक्ष ॥ ११९ अंस
॥ १२० पूर्ण ॥ १२१ सत्य ॥ १२२ अध्यास का कराने वाला ॥
१२३ ढेर समूह ॥ १२४ वेदांत ॥

साक्षी ॥ धन्य धन्य तरण तरण, जिन परखा संसार ॥
 बंदी छोरकबीरसों, परगटगुरू विचार ॥ २४ ॥ रमैनी ॥
 शब्द संधि ले जानी मूढ ॥ देह करमजगत आरूढ़ ॥ नौंईसं
 धिलै सपना होय ॥ झांई शून्य सुषोपति सोय ॥ ज्ञान प्रका
 शक साक्षी संधि ॥ तुरियातीत अभास अवंधि ॥ झांई ले
 वरते वर्तमान ॥ सो जो तहां परे पहिचान ॥ काल अस्थिति
 के भासनशाए ॥ परख प्रकाश लक्ष बिलगाए ॥ बिलगेलक्ष
 अपन ^{१२५}पौ जान ॥ आपु अपन पौ भेद न आन ॥ साक्षी
 ॥ आप अपन पौ भेद बिनु, उलटिपलाटि अरझाय ॥ गुरु बि
 न मिटे न दुगडुगी, अनवनियतननशाय ॥ २५ ॥ रमैनी ॥
 निज प्रकाश झांई जो जान ॥ महा संधि माकाश बखान ॥
 सो ई ^{१२६}पांजी ल बुद्धि विशेष ॥ प्रकाशक तुरियातीत अरुशेष ॥
 विविध भावना बुधि ^{१२७}अनुरूप ॥ विद्यामाया सोई स्वरूप ॥
 सो संकल्प बसे जिव आप ॥ ^{१२८}फुंरी अविद्या बहु संताप ॥ त्री
 गुण पांच तत्व विस्तार ॥ तीन लोक तेहि के मंझार ॥ अदंबु
 दकला बरनि नहिं जाई ॥ उपजे ^{१२९}खंपे तोहिमाहि सभाई ॥
 निज झांई जो जानी जाए ॥ सोच मोह सदेह नशाए ॥ अन
 जाने को एही रीति ॥ नाना भांति करे परतीति ॥ सकल
 जगत जाल अरुज्ञान ॥ बिरला और कियो अनुमान ॥ क-
 र्ता ब्रह्म भजे दुःख जाए ॥ कोई आपै आप कहाए ॥ पूरण
 सम्भव दूसरनाहिं ॥ बंधन मोक्ष न एको आहिं ॥ फल आ-
 श्रित स्वर्गहिके भोग ॥ कर्म सुकर्म लहै संयोग ॥ करम हीन
^{१३०}वांता भगवान ॥ ^{१३१}मूत कुंमूत लियो पहिचान ॥ भांतिन भांतिन

१२५ अंतर का जो शब्द ॥ १२६ दाव, स्वरूप ॥ १२७ फरि औता ॥
 १२८ अनुसार मुताबिक ॥ १२९ स्फुण हुआ ॥ १३० नाना रंगका आश्चर्य-
 मय ॥ १३१ नाश होता है ॥ १३२ भेष ॥ १३३ भला ॥ १३४ बुरा ॥

पहिरे चीर॥युग युग नाचे दास कबीर ॥ २१ ॥ रमैनी ॥भासे
जीवरूप सो एक ॥ तेही भास के रूप अनेक ॥ कोई मँगन
रूप लौलीन ॥ कोई अरूप ईश्वर मन दीन ॥ कोई कहै कर्म-
रूप है सोय ॥ शब्द निरूपन करे पुनि कोय ॥ समय रूप
कोई भगवान ॥ कर्ता न्यारा कोई अनुमान ॥ कोई कहै
ईश्वर ज्योतिहिं जान ॥ आत्म को कोई स्वतः बखान ॥
कोई कहै सब पुनि सबते न्यारा ॥ आपै राम विश्व विस्ता-
रा ॥ शब्द भाँव कोई अनुमान ॥ अद्वै रूप भई पहिचान ॥
हुँगुडुग रही को बोलै बात ॥ बोलतही सब तत्व नशात ॥
बोल अबोल लखे पुनि कोय ॥ भास जीव नहिं परखै सोय
॥ साक्षी ॥ निज अध्यास झाँई अहै, सोसंधिक भौभास ॥
प्रथम अनुहारी कल्पना, सदा करे परकास ॥ २६ ॥ रमैनी ॥
लख चौराशी योनि जेते ॥ देही बुद्धि जानिये तेते ॥ जह
जेहि भास सोई सोई रूप ॥ निश्चै किया परा भवकूप ॥ नाना
भांति विषय रस लीन ॥ अरुझि २ जिव मिथ्या दीन ॥
दाँवा विषय जरे सब लोय ॥ बाँचा चहै गहै पुनि सोय ॥ दुष्ट
विश्वास भरोसा राम ॥ कबहुँ तो वे आवैं काम ॥ विषय
विकार माँझ संग्राम ॥ राम खटोला किया अराम ॥ घायल
बिना तीर तरवार ॥ सोई अभरण जेहि रीझे भरतार ॥

१३५ भक्त लोग ॥ १३६ सगुण उपासक ॥ १३७ निर्गुण उपासक ॥
१३८ पूर्व मीमांसक ॥ १३९ व्याकरणी ॥ १४० वैशेषिक ॥ (काल वादी)
१४१ तर्क वादी नैयाइक ॥ १४२ योगी (पातांजल) १४३ सांख्यक ॥
१४४ वेदांती ॥ १४५ बोलता ॥ १४६ अद्भुत रूप ॥ १४७ शंका ॥
१४८ विज्ञानी ॥ १४९ कल्पना ॥ १५० उसके बुद्धि का जो विषय ॥
१५१ अग्नि ॥ १५२ आशा ॥ १५३ ॥ क्षोभ, ऐह ॥ १५४ गहना ॥

कामिनी पहिर पिया सों रींची ॥ कहैं कवीर भव बूढ़त
 बांची ॥ २३ ॥ रमैनी ॥ भव बूढ़त बेडों भगवान ॥ चढे
 धायें लागी लौ ज्ञान ॥ थाह न पावे कहे अथाह ॥
 डोलत करत तराहि तराह ॥ सूझ परे नहिं वार न पार ॥
 कहै अपार रहै मैझधार ॥ मांझधारमें किया विवेक ॥ कहां के
 दूजा कहांके एक ॥ बेरा आपु आपु अवधार ॥ आपै उतरन
 चाहे पार ॥ विन जाने जाने है और ॥ आपै राम रमै सब ठौर ॥
 वार पार ना जाने जोर ॥ कहै कवीर पार है ठौर ॥ २४ ॥
 रमैनी ॥ अक्षर खानी अक्षर वानी ॥ अक्षर ते अक्षर उतपानी
 अक्षर करता आदि प्रकाश ॥ ताते अक्षर जगत विलास ॥
 अक्षर ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ अक्षर रज सत तम उपदेश ॥
 छिति जल पावक मरुत अकाश ॥ ये सब अक्षर मो परकाश ॥
 दश औतार सो अक्षर माया ॥ अक्षर निर्गुण ब्रह्मानिकाया ॥
 अक्षर काल संधि अरु झाँई ॥ अक्षर दीहिने अक्षर बाँई ॥
 अक्षर आगे करे पुकार ॥ अँटके नर नहिं उतरे पार ॥
 गुरु कृपा निर्जै उद्दय विचार ॥ जानि परी तव गुरु मत-
 सार ॥ साक्षी ॥ जहां ओसको लेश नही, बूढे सकल
 जहां न ॥ गुरु कृपानिज परखबल, तव ताको पहि-
 चान ॥ २७ ॥ रमैनी ॥ अक्षर काया अक्षर माया ॥ अक्षर
 सत गुरु भेद बताया ॥ अक्षर यन्त्र मन्त्र अरु पूजा ॥ अक्षर
 ध्यान धरावत दूजा ॥ अक्षर पढि २ जगत भुलान ॥ अक्षर
 बिनु नहिं पावै ज्ञान ॥ विन अक्षर नहिं पावै गँती ॥ अक्षर

१५५ लगी ॥ १५६ गुरु ॥ १५७ नाव किशती ॥ १५८ बीच
 धारमें ॥ १५९ दक्षिण पंथ ॥ १६० वाम मार्ग ॥ १६१ अपना ॥ १६२ प्रकाश ॥
 १६३ मुक्ति ॥

बिन नहिं पावे रँती ॥ अक्षर भए अनेक उपाय ॥ अक्षर
 मुनि २ शून्य समाय ॥ अक्षर से भव आवै जाय ॥ अक्षर
 काल सबनको खाय ॥ अक्षर सबका भाषे लेखा ॥ अक्षर
 उत्पत्ति प्रलय विशेषा ॥ अक्षरकी पावै सहिदानी ॥ कहैं क-
 बीर तब उतरे प्रानी ॥ साक्षी ॥ परखावे गुरुकृपा
 करि, अक्षर की सहिदानि ॥ निज बल उदय विचारते,
 तब होवे भ्रम हानि ॥ २८ ॥ रमैनी ॥ बावन के बहु बने
 तरंग ॥ ताते भासत नाना रंग ॥ उपजे औ पालै अनुसरे ॥
 बावन अक्षर आखिर करे ॥ राम कृष्ण दोउ लहर अपार ॥
 जेहिपद गहि नर उतरे पार ॥ महादेव लोमश नहिं बांचे ॥
 अक्षर त्रास सबै मुनि नाचे ॥ ब्रह्मा विष्णु नाचै
 अधिकाई ॥ जाको धर्म जगत सब गाई ॥ नाचै गण गंधर्व
 मुनि देवा ॥ नाचै सनकादिक बहु भेवा ॥ अक्षर त्रास सबन
 को होई ॥ साधक सिद्ध बचे नहिं कोई ॥ अक्षर त्रास लखे
 नहिं कोई ॥ आदि भूल बंछे सब लोई ॥ अक्षर सागर अक्षर
 नाव ॥ करणधार अक्षर समुदाव ॥ अक्षर सबका भेद
 बखान ॥ बिन अक्षर नहिं अक्षर जान ॥ अक्षर आसते फंदा
 परे ॥ अक्षर लखे ते फंदा टरे ॥ गुरु शिष अक्षर लखेलखावे ॥
 चौराशी फंदा मुक्तावै ॥ विनु गुरु अक्षर कौन छोडावे ॥
 अक्षर जाल ते कौन बचावै ॥ संचित क्रिया उदय जब होय ॥
 मानुष जन्म पावे तब सोय ॥ गुरुपारख बल उदय विचार ॥
 परख लेहु जगत गुरुमुख सार ॥ अस्ति हंसप्रकाश अपार ॥

१६४ प्रवृत्ति ॥ १६५ चिह्न, पारख, पहिचान, ॥ १६६ भय ॥
 १६७ जन्मांतरोंमें संचित किया हुआ कर्म ॥

गुरुमुख सुख निज अति दातार २७ ॥ साक्षी ॥ अक्षर है
 तिहु भर्मका, विनु अक्षर नहि जान ॥ गुरु कृपानिज बुद्धिबल,
 तब होवे पहिचान २९ ॥ साक्षी ॥ जैहवां से सब प्रगटे, सो
 हम समझत नाहि ॥ यह अज्ञान है मानुषा, सो गुरु ब्रह्म
 कहि ताहि ॥ ३० ॥ साक्षी ॥ ब्रह्म विचारे ब्रह्मको, पारख
 गुरु प्रसाद ॥ १०० रहित रहै पद परखिके, जिव से होय
 अवाद् ॥ ३१ ॥ मूल रमैनी सम्पूर्णा ॥ कठिन शब्द जेते रहे,
 टिप्पणी करि बनाय ॥ बाकी अब कह्यु होय जो दीजो संत
 जनाय ॥ १ ॥ गुरुथल हाँता जानिये, शिवहर जन्म स्थान ॥
 युगलानन्द मम नाम है, जानो संत सुजान ॥ २ ॥

१६८ जहाँसे ॥ १६९ दया, कृपा ॥ १७० अलग ॥ १७१ वाद
 रहित ॥ १७२ जिला सारन डा० घ० कुचाहकोटके इलाकेमें और
 हथुआसे पांच कोस उत्तर पर है ॥ १७४ बिहार प्रान्तके मुजफ्फरपुर जिलेमें
 राजस्थान हैं ।

इति श्रीमूलरमैनी प्रसिद्ध अक्षरखण्डकी रमैनी स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी
 भारतपथिद्वारा संशोधिता समाप्ता ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाणा—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेंकटेश्वर ” (स्टीम्) यन्त्रालय—बम्बई.



बीजक कबीरदास ।

अथ आदिमंगल ।

दोहा—प्रथमै समरथ आप रहे, दूजा रहा न कोइ ॥
 दूजा केहि विधि ऊपजा, पूछत हौं गुरु सोइ ॥ १ ॥
 तवसतगुरु मुखबोलिया, सुकृतसुनोसुजान ॥
 आदि अन्त की पारचै, तोसों कहौं बखान ॥ २ ॥
 प्रथमसुरति समरथ कियो, घटमें सहजउचार ॥
 ताते जामन दीनिया, सात करी विस्तार ॥ ३ ॥
 दूजे घट इच्छा भई, चितमनसातो कीन्ह ॥
 सातरूप निरमाइया, अविगत काहु न चीन्ह ॥ ४ ॥
 तवसमरथ के श्रवणते, मूलसुरति भै सार ॥
 शब्द कला तातेभई, पाँच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥
 पाँचौ पाँचै अंड धारै, एक एकमा कीन्ह ॥
 दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं, सो सुकृत चितचीन्ह ॥ ६ ॥

योगमया यकु, कारणे, ऊजे अक्षर कीन्ह ॥
 याअविगतिसमरथकरी, ताहिगुतकरिदीन्ह ॥ ७ ॥
 श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बंधान ॥
 आठ अंश निरमाइया, चीन्हौ संत सुजान ॥ ८ ॥
 तेज अंड आंचित्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
 अंड शिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥
 ते अचिन्त के प्रेमते, उपजे अक्षर सार ॥
 चारि अंश निरमाइया, चारि वेद विस्तार ॥ १० ॥
 तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
 बेसमरथअविगतिकरी, मर्मकोइनहिंजान ॥ ११ ॥
 जब अक्षरके नींदगै, देवी सुरति निरवान ॥
 श्यामवरण यकअंड है, सो जलमें उतरान ॥ १२ ॥
 अक्षर घटमें ऊपजे, व्याकुल संशय शूल ॥
 किन अंडा निरमाइया, कहा अंडका मूल ॥ १३ ॥
 तेहि अंडके मुखपर, लगी शब्दकी छाप ॥
 अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दशद्वारे कढ़ि वाप ॥ १४ ॥
 तेहिते ज्योति निरञ्जनौ, प्रकटे रूप निधान ॥
 काल अपरबल वीरभा, तीनिलोक परधान ॥ १५ ॥
 ताते तीनों देव भे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
 चारिखानितिनसिरजिया, मायाके उपदेश ॥ १६ ॥
 चारि वेद षट शास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान ॥
 आशादै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान ॥ १७ ॥

लख चौरासी धारमा, तहाँ जीवदिय बास ॥
 चौदह यम रखवारिया, चारिवेद विश्वास ॥१८॥
 आपु आपु सुख सबरमै, एक अंडके माहिं ॥
 उत्पतिपरलयदुःखसुख, फिरिआवहिंफिरिजाहिं १९
 तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्दके हेत ॥
 आदि अन्तकी उत्पती, सो तुमसों कहिदेत ॥२०॥
 सात सुरति सबमूलहै, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
 इनहीं मासे ऊपजे, इनहीं माहँ समाहिं ॥२१॥
 सोई ख्याल समरथकर, रहे सो अछप छपाइ ॥
 सोई संधिलै आइया, सोवत जगहिं जगाइ ॥२२॥
 सात सुरतिके बाहिरे, सोरह संखके पार ॥
 तहँ समरथको बैठका, हंसन केर आधार ॥२३॥
 घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनैँ हमार ॥
 ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार ॥२४॥
 मंगल उत्पत्ति आदिका, सुनियो संत सुजान ॥
 कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान ॥२५॥

वस्तुनिर्देशात्मक मंगल ।

दोहा-प्रथमै समरथ आपरहे, दूजा रहा न कोय ॥
 दूजा केहिविधि ऊपजा, पूँछतहौं गुरुसोय ॥१॥

कबीरजीकी वाणीके अर्थ करिवेकों मोमें सामर्थ्य नहींरही परंतु साहब यह
 विचारिकै कि कबीरजीके बीजकको पाखण्ड अर्थलगाइकै जीवबिगरे जायँहैं सो

साहब तो परमदयालु हैं उन को करुणाभई तब कबीरजीको भेज्यो या कहिकै कि आगे हम तुमको भेज्यो हतो सो तुम ग्रन्थबनाइके बहुत जीवनको उपदेशकरिकै उद्धार कियो सो अब तिहारे ग्रन्थको पाखंड अर्थकरिकै पाखंडी हैं के जीव बिगरे जायँ हैं औ बहुत बिगरिगये सो तुमजाइके जौन अर्थ तुम बीजकमें राख्योहै सो अर्थ विश्वनाथ सों बनवावो जाते सो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पास आवैं सो कबीरजी आयके मोसों कह्यो कि तुम बीजकको अर्थ बनावो हम तुमको बतावेंगे सो उनके हुकुमते में बीजकको अर्थ बनाऊँहों बतावने वाले श्रीकबीरहीजी हैं मोमें ताकत नहीहै जो मैं बनायसकों और नाभाजी भक्तमालमें लिख्योहै कि “कबीर कानि राखी नहीं बरणाश्रम षटदरशनी” सो इहां कबीरजी को सिद्धांत मत मैं कहौंगो औ सर्वसिद्धांतग्रंथ जो मैं बनायोहै तामें सबको सिद्धांत यथार्थ राख्योहै सो यहां बीजकके तिलक में साहबको औ कबीरजीको हुकुम यहीहै कि एक सिद्धांत रहै जो सबतेपरैहै और सिद्धांत सबखंडन है जायँ सो सबके सिद्धांतनको खण्डन करिकै एक सिद्धांत मैं बर्णन करौहों सो सुनिकै साहब के हुकुमी जानिकै साधुलोग पंडितलोग और और मत वाले जेहें ते मेरे ऊपर खफा न होयँ प्रसन्न रहैं ना समुझिपरै तौ प्रसन्नहोइके गुरुसों पूछि-लेइ अब अर्थ लिखैहैं ।

अर्थ—प्रथम समरथ जे श्रीरामचन्द्रहैं ते आपही हैं दूसरा कोई नहीं रह्यो जो कहौ उनके लोक में तौ हंस हंसिनी सब बर्णन करैहैं उनके पार्षद सबहैं ताको बर्णन निर्भय ज्ञानमें विस्तारते हैं सो इहां संक्षेप तें सूचित किये देई हैं ॥ “सत्य पुरुष निर्भय निरवाना । निर्भय हंस तहँ निर्भयज्ञाना ॥” इत्यादिक बहुत बर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी कियोहै तुम एकही कैसे कहौ हौ सो सत्यहै उहांके जीवसनातन पार्षद बने रहैहैं औ साहब औ साहबको लोक सनातन बना रहैहैं परंतु उहांके पार्षदजीव और उहांकी सब बस्तु साहबहीके रूपहै औ सब चिन्मयहै सो वेद कहैहैं ॥ श्लोक॥ “सच्चिदानन्दो भगवान् सच्चिदानन्दात्मिकास्यव्यक्तिः॥” औ वह अयोध्या नगरी ब्रह्मके परैहै ब्रह्म वाको प्रकाशहै औ रघुनाथजी के समीप के जे पार्षद हैं ते साहबके स्वरूपहैं तामें प्रमाण ॥ “अयोध्याचपरंब्रह्म सरयू सगुणःपुमान् ॥ तन्निवासी जगन्नाथः सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ १॥ अयोध्यानगरीनित्यासच्चिदानन्दरूपिणी ॥

यदंशाशनगोलोकः वैकुण्ठस्थःप्रतिष्ठितः ॥ २ ॥” इति वसिष्ठसंहितायाम् ॥
 “ देवानांपुरयोध्यातस्यांहिरण्यः कोशः स्वर्गेलोकाज्योतिषावृतः ” इतिश्रुतेः ॥
 सो इहां कहैहैं कि प्रथमतौ समर्थ साहब वह लोक में आपही आपही दूजा कोई
 नहीं रह्यो दूजा जो रह्यो सो तौ साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें रह्योहैं
 सो कबीरजीते धर्मदास कहे हैं कि हे गुरुजी मैं तुमसे पूछौहैं कि साहबके
 लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें जो समष्टि जीव वह दूजारह्यो सो केहिबिधिते
 उपज्यो संसारी भयो काहेते कि साहबतो दयालुहैं जीवों को संसारते छुड़ाइदे-
 इहैं जीवोंको संसारी नहीं करिदेइहैं औ वह समष्टि जीवके तब मनादिक नहीं
 रहे शुद्धरह्योहैं उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रहीहै औ साहब सामर्थ्य दैकै जीवको
 संसारी करबही नकरैंगे सो दूसरा जो है समष्टिजीव सो उपजिकै ब्यष्टिरूप
 संसारी केहि बिधिते भयो औ जीवके अपने ते उपजिबे की सामर्थ्य नहींरही
 तामेंप्रमाण ॥ “ कर्तृत्वंकरणत्वंचसुभावश्चेतनाधृतिः ॥ तत्प्रसादादिभेसांतिनसं-
 तियदुपेक्षयाइतिपयंगश्रुतेः ” १ ॥

दोहा—तवसतगुरुमुखबोलिया, सुकृत सुनोसुजान ॥

आदि अन्तकी पारचै, तोसोंकहौं बखान ॥ २ ॥

गुरु साहबको कहै हैं काहेते सबते श्रेष्ठहैं औ जे यथार्थ उपदेश करै हैं
 तिनको सतगुरु कहै हैं औ जे अयथार्थ उपदेश करै हैं तिनको गुरुवालोग कहैहैं
 सो यह बीजक ग्रन्थकी औ अनुभवातीत प्रदर्शनी यहटीका की यह सैली है ।
 तब सतगुरु जे कबीरजी हैं ते मुखते बोले कि हेसुजान हेसुकृत जीव समष्टिते
 ब्यष्टि जेहि प्रकार भये हैं सो सुनो मैं तुमसों आदि अन्तकी पारचै कहौ हौं
 जेहिते तुम जानिलेउ ॥ २ ॥

उत्पत्ति ।

दोहा—प्रथम सुरति समर्थ कियो, घटमें सहज उचार ॥

ताते जामन दीनिया, सातकरी बिस्तार ॥ ३ ॥

प्रथम समर्थजे साहब श्रीरामचन्द्रहैं साकेत निवासी दयालु जिनके लोकके प्रकाशमें समष्टिरूपते यह जीव है ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यह जीवको देखिकै कि कछू बस्तुकों याकों ज्ञान नहीं है जब यह जीवपर साहबकी दयाभई तब सुरतिमात्र दैकै अपने जानिबेको वाको समर्थ करतभये कि जब याके सुरति-होयगी तब मोकोजानैगो मैं हंसस्वरूप दैकै अपनेलोक लैआऊंगो । जहां मन-मायां कालकीगतिनहींहै तहां सुखपावैगो अबैतो याको सुखको ज्ञानही नहींहै । यह करुणा करिकै वह समष्टिरूप जीवके घटमें सहजही सुरति को उच्चारकरत भये कोहें अंकुर करतभये । सो साहबतो अपने जानिबेको सुरतिदियो कि मोकोजानै औ यह जीव वही सुरति को पाइकै औ मनादिकन को कारण इनके रहबई करै औ शुद्ध रहै दूधरहै जीव अपनी शुद्धता रूप दूधमें जगत्को कारण बनोई रहै तामें वही सुरति को जामन दैदियो सो बिनशिगयो सो वह सुरति पाइकै साहबकेपास तो न गयो जीव बिनशिकै इच्छादिक जे सात तिनको बिस्तार करत भयो । औ यह चैतन्य जीवको सुरति दैकै साहब चैतन्य करैहै । साहब चैतन्यो को चैतन्यहै तामें प्रमाण इलोक ॥ “नित्योनित्यश्चेतनश्चेतनानां । द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च । यदनुग्रहतः संतिन संति यदुपेक्षया इति भागवते ॥” औ इच्छादिकन को कौन सात बिस्तार करतभयो सो आगेकहैहैं ॥ ३ ॥

दोहा— दूजेघटइच्छाभई, चितमन सातौकीन्ह ॥

सातरूपनि रमाइया, अविगतकाहुनचीन्ह ॥ ४ ॥

जब याको साहब सुरति दीन तब जीवके जगत् को कारणमें रामाज्ञान बनोईरहै तेहिंते सुरति साहबमें न लगायो जगत् मुख लगायो । जब सुरति जगत् मुखलाग्यो तबप्रथम जगत्को कारण पुष्टभयो बिनशिगयो तेहिंते दूसर इच्छा रूप अंकुरभयो तीसर चित्तभयो चौथमनभयो पांचौंबुद्धिभई छठौं अहंकार भयो सातौं अहंब्रह्म कहेअनुभवते भयोजो ब्रह्म ताकोमान्यो कि मैंहीब्रह्महैं सो शुद्धते अशुद्ध हैकै सातबिस्तार करिकै समष्टिरूपजो जीव सो अहंब्रह्मास्मिमान्यो तब याको अनुभव ब्रह्ममाया सबलित भयो, ताहीद्वारा जगत् उत्पन्न भयो, ताहीद्वारा यहजीवौ उत्पन्नभयो अर्थात् समष्टिरूप जीवको अनुमान जो ब्रह्म सो

इच्छा कियो एकते अनेकहोऊं सो वा अनुमान ब्रह्मसमष्टिजीवकोहै यहिहेतु ते वहसमष्टिजीव एकतेअनेकहैगयो । औ फिरि वहसमष्टिरूपजीवको जो अनुमान ब्रह्मसो बिचायो कि ई जे अशुद्धरूपजीवात्मा तिनमें प्रवेश कैकै नामरूपकरो याही अर्थमें प्रमाणश्लोक ॥ “सदैवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षतबहुस्यां अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणिइत्यादिश्रुतयः॥” जो कहो वा सत् ब्रह्मजीवको अनुमानकैसेकहौहैं ब्रह्महीसबभयो ऐसोकाहेनहींकहौहौतौ ॥ “यतो वाचोनिवर्तन्तेअप्राप्यमनसासहं ॥” इत्यादिक श्रुतिनकारिकैमनबचनकेपरेहैं सत्-नाम कहनोवामें नहीं संभवितहै काहेते वो निर्विकारहै सविकार हैकै एकते अनेक हैजैवो नहीं सम्भवै या हेतुते यह समष्टि जीवही अपनो अनुमान रूप धोखा ब्रह्मठाटकैकै माया सबलित हैकै तद द्वारा जगत् उत्पन्नकैकै तदद्वारा आपो उत्पन्नहैकै समष्टिते व्यष्टिहैगये । अविगति समर्थ जे साहब हैं तिनको ना चीन्हत भये । यह संक्षेप सूक्ष्मरीतिते जो उत्पत्ति भई सो कहिदियो । औ जब जीव साहब के जानिबे को समर्थ भयो तब जैसी उत्पत्ति भई है सो कहैहैं साहब जो सुरति दियो सोतौ अपने में लगायबेको दियो यह संसार में लगायो परंतु जो संसारते खिंचिकैअजहूं सुरति सम्हारै साहब मेलगावै तो साहब के हजूर आठौपहर बनोरहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखेपरै संसारदेखिही ना परै तामें प्रमाण कबीर जी को साखी ॥ सुरति फँसी संसार में, तेहिसे परिगा-दूर सुरति बांधि स्थिर करै, आठौपहर हजूर ॥ १ ॥ आगे जौनीतरह ते उत्पत्ति भई साहबको त्यागि संसारीभयो सुरति पाय काजकरिबेको समर्थभयो तबहूं साहब सारशब्दको उपदेश दियोहै ताको साहबमुख अर्थ ना समुझिकै संसारमुख अर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पना कैकै संसार को उत्पन्न कैकै संसारी भयो है यह जीव सो आगे कहैहैं ॥ ४ ॥

दोहा—तब समरथके श्रवणते, मूल सुरति भइसार ॥

शब्द कला ताते भई, पांच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥

साहब को दियो सुरति पाइकै समरथ भयो जो समष्टि जीव ताके श्रवण में मूलसुरति जो साहब अपने जानिबे को दियो है सो सार भई कहे रामनाम

रूपते प्रकटभई साररामनामको कहैहैं तामेंप्रमाणसाखी कबीरजीकी ॥ रामैना-
मअहैनिसारू । औसबझूठसकलसंसारू ॥ १ ॥ साहब जो सुरति दियोहै सो वह
सुरतिके चैतन्यताते नामसुन्यो अर्थात् साहबजो याको गोहरायो कि रामनाम-
को जपिकै बिचारिकै मोकोजानो तो मैं हंसस्वरूप दैकै अपने पास बुलाइलेउं
सो सुनिकै रामनाममें जगत् मुख अर्थ है ताको ग्रहण कियो औ शब्दमें लगाइ
दियो । वही राम नाम लैकै शब्दरूप बाणी उचरीहै सो कबीर जीकी रमैनी
में आगे लिख्योहै ॥ “ रामनामलै उचरी बाणी ” ॥ औ वही रामनाम
ते शब्द कलाबाणी होतभई सो पांच ब्रह्म के अनुहार हैं । पांच ब्रह्म कौनहैं ते
कहै हैं सोहं, ररंकार, ओंकार, अकार, पराशक्तिरूप र परम श्री कबीर
जी के भेदसारग्रन्थ को प्रमाण ॥ “ प्रथम शब्द सोहं जो कीन्हा । सबघट
माहीं ताकर चीन्हा ॥ ररंकार यक शब्द उचारी । ब्रह्मा विष्णू जपैं त्रिपुरा-
री ॥ ओंकार शब्द जो भयऊ । तिनसबही रचना करिलयऊ ॥ शब्दस्वरूप
निरंजन जाना । जिनयह कियो सकलबंधाना ॥ शब्दस्वरूपी शक्ति सो बोले ।
पुरुष अडोल न कबहूं बोलै ॥ ५ ॥

दोहा—पांचौ पांचै अंडधरि, एक एकमा कीन्ह ॥

दुइइच्छा तहँगुतहैं, सो सुकृतचितचीन्ह ॥ ६ ॥

ते पचहुंनको पांचअंडकहे पांचस्वरूप बनाइकै एकएकस्वरूपमें एक एक
अक्षर राखत भये औ दुइ इच्छाजे प्रथमकहिआयेहैं एक वह इच्छा कारणरूपा
जब साहब सुरति दियो है तब जो रहीहै साहब मुख नहीं होनदिया याको
बिनशिकै जगत् मुख कियो औ दूसरी वह सुरति पाइकै जगत्मुख होइकै
अपने अनुभव ब्रह्मको खड़ाकियो वह ब्रह्म मायासबलित हैगई तौन माया
आदिशक्ति गायत्रीरूपा इच्छा । सो ये दोनों इच्छा पचहुंनमें गुप्तहै सो कबीर-
जी कहैहैं कि हे सुकृतचित्तमें चीन्हों मैं वर्णन करौहा बिचारिकै देखो ये पच-
हुंनमेंदोनों इच्छाहैं कि नहीं ? ये सिगरेब्रह्म जे सारशब्द के जगत्मुख अर्थ
ते भये हैं ते माया सबलित हैं कि नहीं ? तुम चीन्हों सो आगे कहै हैं ॥ ६ ॥

दोहा—योग मया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह ॥

या अविगति समरथकरी, ताहि गुप्त करि दीन्ह ॥७॥

कारण रूप सुरति औ योगमाया गायत्री ये जे दुइइच्छा हैं ते वे पांचों ब्रह्मको करती भई सो सर्वत्र तो यह सुनै हैं कि ब्रह्मते सब होइ है औ यहांइन-ते ब्रह्म होइहै पांचौ, यह बड़ो आश्चर्य है । यह अविगति समर्थ जे परमपुरुष श्री रामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियो है तब ये सब भये हैं । तिनको गुप्त करि दियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्ममें औ जीवमें नामको अर्थ लगाय दियो है ते पचहुनको बतावैहै ॥ ७ ॥

दोहा—श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बंधान ॥

आठ अंश निरमाइया, चीन्हों संत सुजान ॥ ८ ॥

यह सोहंशब्द वह परम पुरुष जो है समष्टिजीव ताके श्वासाते उपज्यो सोई बतावैहै कि, “सोहं कहे सः अहं सो जौह अनुभवगम्यब्रह्मसो मेंहों” औ वही आदिपुरुष समष्टि जीव श्वासा ते अमीबंधान करतभयो कि इनकी मिठाई पाइकै लोग लोभायजायँ कौन अमी बंधान करत भयो वही श्वासाते आठअंश बना-वतभये, कहेआठौ सिद्धि निकासतभये आठौ सिद्धिकेनाम ॥ “अणिमामहिमा चैव गरिमालघिमातथा । प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वंवाशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥ ” अथवाआठअंश निरमाइया कहे आठ प्रधान ईश्वर प्रकटकियों तेई परम पुरुष समष्टि जीवके मंत्रीभये । तामेंप्रमाण महातंत्रमें महादेवको वाक्य ॥ “काली-चक्रौशिकीविष्णुः सूर्योहंगणनायकः” ॥ “ब्रह्माचभैश्क्योवई छबराइति कीर्ति-ताः १ यह प्रमाण शतानन्दभाष्य में विस्तार कैहैहै सो हेसंतसुजानौ तुम चीन्हत जाउ वह जोसार शब्द रामनामहै सो साहब समष्टि जीव पुरुषको बतायो सो सुन्यो औ साहबको न जान्यो धोखाब्रह्मरूप आपहैंकै वाको औरई जगद्रूप अर्थ निकासिलियो । औ वह जो सोहं शब्द प्रकटभयो सो संकर्षणहै काहेते कि, सोहंशब्द जीवमें घटित होइहै कि, वह जीव जोहै सोई बिचारकैरे है कि, सो जोहै ब्रह्म सो अहंकहे महीं हों एक और दूसरो कोई नहीं है ।

सो उन्हीं को आदिपुरुष औ बिराटू औ हिरण्यगर्भ कहैहै औ सहस्रशीर्षापुरुष कहैहै । औ ई समष्टिरूपजीव पुरुषहै सोवही समष्टिरूपते संकर्षण स्थूलरूप धारणकारिकै प्रकट भयो । “सबको आकर्षण करिकै एकहैरहै ताकोसंकर्षण-कही समष्टि जीव” काहेते महाप्रलयमें जबजीव समष्टिजीवमें रहे हैं औव्यंजन मकार पचीसौबर्णहैं सोजीव बाचकहै ताको अर्थ समष्टिजीवरूप संकर्षण समुझ्यो औ रामनामकी जो मकार है सोतौ बर्णातीतहै पचीसौ बर्ण नहीं है । रामनामके व्यंजन मकार में संकर्षणके अंशी जे हैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझ्यो वहांपांच ब्रह्म कहि आये हैं सो इहां एकब्रह्मकी औ रामनामके एकमात्राकी प्राकट्य भई ॥ ८ ॥

दोहा—तेजअण्ड आचिन्त्यका, दीन्होसकलपसार ॥

अण्डशिखापर बैठिकै, अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥

अचिन्त्यजो है रामनाम ताकोतेज अण्डजोहै रामनामको रेफ तौने रेफको अर्थलैकै सर्वत्र पसराइ दियो अर्थात् रेफ अर्धमात्रा को अर्थ पराआद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपासमुझ्यो सोसब जगत्मेंपसराइदियो वहीमाया ते संपूर्ण जगत् होत भयो सो वह पराआद्या शक्ति अण्डजोहै ब्रह्मांड ताकी शिखापर बैठिकै अधरदीप कहे नीचे के ब्रह्मांडनको निरधारकहे प्रकाशकारिकै निर्माण करत भई सो वहीको योगीलोग ब्रह्मांडमें प्राण चढाइकै वही ब्रह्म ज्योति को ध्यानकरैं हैं औ वही ज्योति में जीवको मिलावैहैं । औ रेफ पद वाच्य ते श्री जानकी जी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ ६ ॥

दोहा—ते अचिन्त्यके प्रेमते, उपज्यो अक्षर सार ॥

चारिअंशनिरमाइया, चारिवेदविस्तार ॥ १० ॥

तौन जो अचिन्त्यरामनाम ताकेप्रेमते कहे जब वामें प्रेमकियो कि याको समुझै कहा है तब रामनाममें जोहै रकार तेहिमें जोहै लघुअकार तौनेके शक्तिहू अक्षर सार जो है, रामनामसो प्रणवरूपते प्रकटहोतभयो ताहीको शब्दब्रह्मरूप करिकै समुझतभयें तौनेप्रणवकीचारि मात्राहै अकार उकार मकार बिंदुते एकएक मात्रा ते एकएक

वेदभये सो चारि वेदहोत भये औ सबते परे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थ तिनको न समुझतभये सो याहीमें एकाक्षरौ ब्रह्मकी औ शब्दहू ब्रह्मकी प्राकट्यभई सो इहां तीसरे ब्रह्मकी प्राकट्यभई १ वहांरकारके अकार को अर्थकरिआयो यहार-कारार्थ श्रीरामचन्द्रको कहौहौ यहकैसे सोरेफवाच्यते जानकी सो श्रीरामचंद्रते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघुरकारकी जो अकार तौनेके रेफतेसहितैं कह्योहै रकारवाच्य श्रीरामचन्द्र को लिख्यो याही प्रमाणके अनुरोधतें वोहू रकारवाच्य श्रीरामचंद्रको लिखिदियो सीताराम बिलग नहींहोयहैं तामें प्रमाण॥ “अनन्याराघवेणाहं भास्करेण प्रभायथा” वा जानकीको बचनहै ॥ “अनन्याहिं मयासीताभास्करस्यप्रभायथा॥” ये श्रीराम के बचन हैं याही अभिप्राय ते कबीरजी जानकी को वर्णन नहींकियो श्रीरामहीके बणन ते जानकी आईगई काहेतें सीताराम में अभेद है तामें प्रमाण ॥ “रामःसीताजानकीरामचंद्रो नित्याखंडो-येचपश्यतिधीराः इतिश्रुतिः” ॥ १० ॥

दोहा—तव अक्षरका दीनिया, नींद मोहअलसान ॥

वेसमरथअविगतिकरी, मर्मकोइनहिंजान ॥ ११ ॥

तब योगमाया, अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्म प्रणव तत्प्रातिपाद्य जो ईश्वर प्रकट भयो जो जीव, ताको नींद मोह आलस्य दैत भई । औ प्रणव औ वेदनते पृथ्वी अप तेज वायु आकाशादिक सब जगत् प्रकट भयो । औ ताही प्रणव वेद नते सब जीवनके नामरूप शुभाशुभ कर्मादिक सब वस्तु प्रकट भई अर्थात् वेदही में सब वर्णित है औ सब के नाम रूप वेदही ते निकसे हैं सो प्रणव रकारही ते प्रकट भयोहै औ सब अक्षर प्रकट भयेहैं ताही ते सब वेद भये हैं याहीं हेतु ते प्रणव औ वेदहू अविगति समर्थ जे श्री रामचन्द्रहैं तिनकी माहिमा करीकहे कही । जो वेद तात्पर्य करि कै बतौवहैं तौनेको मर्म कोई न जानत भयो औ प्रणव तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को कहैं हैं सो अर्थ तापिनिका प्रमाण दै कै लिख्यो है सो मेरे रहस्यत्रय ग्रन्थ में है सो प्रणवअक्षर वेद सब रामनामही ते निकसे हैं सो मेरे मन्त्रार्थमें प्रकटहै ॥ ११ ॥

दोहा—जब अक्षर के नींद गई, दबी सुरति निर्वान ॥

श्याम वरणयक अण्ड है, सो जल में उतरान ॥ १२ ॥

योगमाया में सोय रहे अक्षर कहे नाशरहित जे नारायण तिनको जब योगमाया जगायो नींद गई तब उनको निर्वाण सुरति देत भई । काहेते ई जे हैं नारायण तिनको निर्वाण रूप कहे निराकार रूप कैकै अंतर्ध्यामी रूपते सबके भीतर दबाइ देत भई अर्थात् चेष्टारहित दिव्यगुणविशिष्ट सर्वत्र-व्यापक अंतर्ध्यामी तत्त्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबके अन्तर दबाइ देत भई कहे सबके अन्तर्ध्यामी करि देत भई तेई प्रकट होत भये । श्यामवर्ण अण्ड कहे चतुर्भुज रूप धारण करिकै जल में उतरान कहे जल में रहत भये । सो इनके शरीरमें शरीर जे हैं निराकार नारायण तिनको नित्य सम्बन्ध होत भयो । सो रकारमें जोहै अकार ताको नारायण अर्थ करत भये औ भरतवाची जो है अकार सो अर्थ न समुझत भये यहां चौथे ब्रह्म की प्राकट्य भई ॥ १२ ॥

दोहा—अक्षर घट में ऊपजै, व्याकुल संशय शूल ॥

किन अण्डा निरमाइया, कहा अण्ड का मूल ॥ १३ ॥

अक्षर जे नारायण हैं तिनके घटते ऊपजे अर्थात् तिनकी नाभि में कमल होइ है तोहिते ब्रह्मा होइ है ते ब्रह्मा सब जगत् करै हैं तब समष्टि जीव शुद्ध ते अशुद्ध है कै ब्रह्मा ते उत्पन्न है कै बहुत शरीरधारण करै हैं ते ब्रह्म जब उत्पन्न भये तब व्याकुल भये औ संशय करत भये कि कहाँ अण्ड का मूल है औ को अंडा को बनायो है औ हम कहाँ ते उत्पन्न भये हैं सो खोज्यो खोजे ना पायो तब तपस्या करत भयो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि तुम जगत् की उत्पत्ति करौ यह कथा पुराणन में प्रसिद्ध है ॥ १३ ॥

दोहा—तेही अण्ड के मुख पर, लगी शब्द की छाप ॥

अक्षर दृष्टि से फूटिया, दश द्वारे कढ़ि बाप ॥ १४ ॥

तौने ब्रह्मरूपी अण्ड के मुख पर शब्द की छाप लगी अर्थात् शब्द ब्रह्म जो वेदसार ताको नारायण बताय दियो । तौने को ब्रह्मा जपत भये तब बाहीते

प्रकटे जे चारोवेद ते ब्रह्मा के चारिउ मुखते निकसतभये । तौने वेदनको अक्षर जो समष्टि जीव है सो जगत्मुख दृष्टि कियो अर्थात् जगत्मुख अर्थ देख्यो तब द्वारे द्वैके “ वह मायाते सबलित जो है ब्रह्म जाको आगे बाप कहि आये हैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवन को कैकै उत्पन्न करै है ” सो दश द्वारेते कहे दशौ इन्द्रिनते कढ़त भयो । तब इन्द्रिन के विषय द्वैके इन्द्री द्वैके चिदंश द्वैके चिदचिदात्मक जगत् होत भयो अर्थात् वेदनको अर्थ जब जगत्मुख देख्यो तब वह जीव चिदचिदात्मक जगत्को धोखा ब्रह्मही देखत भयो । सो जगत् तौ साहब के लोक प्रकाश को शरीरहै, तौने को वेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्मही देखत भयो यही धोखाहै तात्पर्य कैकै वेद जो साहब को कहै है ताको न जानत भये । लघु रकार की अकार ते नारायण भये तिनते ब्रह्मा की उत्पत्ति भई सो कहि आये । अरु वहि ते जेतो जगत् के उत्पन्न को प्रयोजन रह्यो सो कहि गये । अब फेरि सिंहावलोकन करिकै पंचम ब्रह्म की प्राकट्य कहैहैं ॥ १४ ॥

दोहा—तेहिते ज्योति निरंजन, प्रकटे रूप निधान ॥

काल अपरबल वीरभा, तीन लोक परधान ॥ १५ ॥

तेहिते कहे वही रामनामते व्यञ्जन मकारको जो अर्थकरि आये हैं तामें जो अकार रही है ताको महाविष्णु अर्थ करतभये । जे विरजा के पार पर बैकुण्ठ में रहे हैं । जिनके अंशते रमा बैकुण्ठवासी भगवान् भये हैं । सो अंजन जो अविद्या माया ताते वे रहित हैं काहेते कि, अविद्या माया विरजा-के यही पार भर बनतहै । पै पुराणादिक में सो व्यञ्जन मकार की अकार-को महाविष्णु अर्थ करत भये, औ वह अकार शत्रुघ्नबाचक है सो अर्थ न समझत भये । ते अकाररूप महाविष्णु ते महाकाल अपरबल वीरभा कहे जे-हिते प्रबल वीर कोई नहीं है अथवा अकार जे विष्णुहैं तेई हैं परमबल जिनके सो तीनलोक में प्रधान होत भयो । इहांपाँचों ब्रह्मकी प्राकट्य हैगई ॥ १५ ॥

दोहा—ताते तीनों देवभे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

चारि खानि तिन सिरजिया, मायाके उपदेश ॥ १६ ॥

तौने कालते कहे वही कालमें काल पाइकै एकएक ब्रह्माण्डमें तीनतीन देवता ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्नहोतभये सो कोटिन ब्रह्माण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिक भये ते माया के उपदेश ते कहे मायाको ग्रहणकरिकै संसारमें चारिखानि जे जीव हैं तिन को सिरजिया कहे उत्पत्ति करतभये सो उत्पत्तिकों क्रम ब्रह्माते पहिले कहिआये हैं ॥ १६ ॥

दोहा—चारिवेद षट्शास्त्रज, औ दशअष्ट पुरान ॥

आशा है जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान ॥ १७ ॥

चारोंवेद, छवोंशास्त्र औ अठारहौ पुराणमें मायाजो है सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतन में लगाइदियो और संपूर्ण जगत् मुख अर्थकरिकै जगतको बाँधिलियों । साहबको भुलाय दियो ये सब तात्पर्य कैकै साहबको कहैहैं सोसाहबको न जानन पाये । ताते तीनों लोकके जीव भुलायगये ॥ १७ ॥

दोहा—लखचौरासी धारमा, तहां जीव दियवास ॥

चौदह यम रखवारी, चारिवेद विश्वास ॥ १८ ॥

चौरासीलाख जो योनिहैं सोईहैं धारा ताहीमें जीवको बास देतभये कहेवही चौरासीलाख योनिरूपी धारामें सबजीव बहे जाईहैं अर्थात् नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके विश्वासते कहे चारिवेदके मतते नानामतहोतभये ॥ “ शतिलेखं जगन्माता शतिलेखं जगत्पिता ॥ ” इत्यादिक नानादेवतनकी उपासनागुरुवालोग बतावत भये । वेद जो तात्पर्यकरिकै बतावै है साहब को सो अर्थ न जानतभये । औ चौदह यम जीवकी रखवारी करत भये यहजीव निकसिकै साहबके पास न जानपाये । चौदह यमके नाममें प्रमाण ज्ञानसागरको ॥ दुर्गदचित्रगुप्तबरियारा । ईतोयमके हैं सरदारा ॥ मनसा मल्लअपरबल मोहा । कामसैनमकरन्दी सोहा ॥ चितचंचल औ अंधअचेता । मृतकअंधजोर्जातैखेता ॥ सूर सिंह औरो क्रमरेखा । भावीतेजकालकापेखा ॥ अघनिद्रा औ क्रोधितअंधा । जेहिमाजीवजंतुसबबंधा ॥ परमेश्वर परबल धर्मराजा । पाप पुण्यसबते भलछाजा ॥ यह सब यमैं निरंजनकीन्हा । लिखनीकागदरचिकै दीन्हा ॥ १ ॥ ”

अर्थ—“प्रथम दुर्गद कहैं हैं दुर्गकहावै । क जो कोई पुण्यकरैहै ताको स्वर्गदैकै पुण्यभोग करावैहै औ जो पापकरैहै तिनको नरकनमें पापको भुगताइकै किला-रूपी जो है शरीर सो जीवकोदेयहै याते दुर्गद यम एक १ औ दूसर चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखाकरैहै २ तिसर मलिनमन ३ औ चौथ मोह ४ औ पांचौ कामें काल-की सेनाका मकरन्दीकहे बसंतते सहित ५ औ छठौ अंधअचेत जोहै चित्त सो ६ औ सातौ मृत्यु भई जोखेतको जीतैहै कहै सबको मारैहै ७ औ आठौ सूरकहे अंधा अर्थात् अशुभकर्मकी रेखा ८ औ नवौ सिंहकहे समर्थ शुभकर्मकी रेखा ९ औ दशौ यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जो कर्म होनहारहै सो काल करिकै होइहै अर्थात् कालकी अपेक्षा राखैहै १० औ ग्यारहौं अघकहे पापरूपनिद्रा ११ औ बारहौं अंधको देनवारो क्रोध जामें सबजीव जंतु बंधेहैं १२ तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमावै कुण्ठावासी विष्णु जे शुभाशुभ फलके दाताहैं १३ औ चौदहौं धर्मराज यज्ञपुरुष १४ ये चौदहौं यमनिरंजन (जो आगे कहि आयेहैं विरजापार विष्णु) की सत्ता विना ये सब जड़है कार्य नहीं करि सके हैं वोई लिखनी कागद देहहैं ॥ १८ ॥

दोहा—आपु आपु सुखसब रमै, एकअण्डके माहिं ॥

उत्पतिपरलयदुखसुख, फिरि आवैं फिरि जाहिं ॥ १६ ॥

एक अण्ड जोहै ब्रह्मांड तौनेमें जीव अपने अपने सुखकेलिये सबरमैहैं कोई मानैहै कि हम जीवात्मौहैं, कोई मानैहै कि हम ब्रह्महै, कोई मानैहै कि हम ईश्वरहैं, कोई मानैहै कि हम देवताहैं, कोई मानैहै कि हम सेवकहैं, कोई मानैहै कि शरीरभर सबकुछहै, आगेकछू नहीं है सो विषयही सुख करिलेइ, कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्गको सुखचाहै है, औ कोई यज्ञचाहै है कि अपने स्वस्वरूपको प्राप्तहोयँ तौ हमको अक्षयसुखहोय । सो जिन जिन मतन करिकै जौनजौन स्वस्वरूपई मानैहै तेइनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावै तेहिते इनके जनम मरण न छूटत भये, उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्तहोई है औ फिरि आवै है फिरि जाइहै ककार चकार आदिक जे बर्ण हैं तिनमें बुन्दार्थ चंद्रदेइ तब सानुनासिक ताकी एकमात्रा रामनाममें औरैहै सोयाके अर्थ हंसस्वरूपहै सो साहबदेइहै सो नासमुझो प्राकृतनानाजीवरूप आपनेको मानिकै नानामतनमें लागि कै संसारीहै गये औ

रामनाममें छामात्राहै तामें प्रमाण ॥ रामनाममहाविन्धे षड्भिवस्तुभिरावृत-
म् ॥ जीवब्रह्ममहानादैस्त्रिभिरन्यंवदामिते ॥ स्वरेणअर्धमात्रेणदिव्ययामाययापिच
॥ इतिमहारामायणे ॥ और रामनामको जो अर्थ भूलिगये हैं तामें प्रमाण
सब मुनिन को भ्रमभयो श्रुतिनको प्रमाणदै कोई कहै हमारोमत ठीक है
कोई कहै हमारो मत ठीक है । तब सब मुनि वेदन ते पूछ्यो जाइ । वेदहू
विचारेउ कि सबमें तौ हमारही प्रमाण मिलैहै सोवेदहूको भ्रमभयो । तब
सबमुनि औ वेद ब्रह्माके पासगये । तबब्रह्मा ते पूछ्यो तब ब्रह्माके भ्रमभयो
कि, साँच मत साँच साहब कौन है । सो महादेवजी पार्वती जीते कहै हैं
कि, तब सबकोई साहब श्रीरामचन्द्रको ध्यान कियो तब साहब कह्यो कि
यह बात सबके आचार्य जे संकर्षण है ते जानैहैं तिनके पास सबको पैठ
देहुवे समझाय देयेंगे । तब ब्रह्मा की आज्ञाते सब संकर्षण रूप
शेषके इहांगये सो वेद उहां पूछ्यो, संकर्षण ते, तब संकर्षण जी एक सि-
द्धांत जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बतायो है राम नाम को यथार्थ अर्थ
तौन सदाशिवसंहिता के ये श्लोक हैं ॥

“ रामनाम्नोऽथमुख्याथभगवत्स्वेतप्रतिष्ठितम् ॥ विस्मृतंकंठमणिवद्वेदाशृणुततत्त्व
तः १ तात्पर्य्यवृत्त्याविज्ञेय बोधयामिविभागतः ॥ रामनाम्निशुचिर्ज्ञेयाः षण्मात्रांत
त्वबोधकाः २ रामनाम्निस्थितोरेफोजानकीतेनकथ्यते ॥ रकारेणतुविज्ञेयःश्रीरामः
पुरुषोत्तमः ३ आकारेणतथाज्ञेयोभरतोविश्वपालकः ॥ व्यंजनेनमकारेण लक्ष्मणो
ऽत्रनिगद्यते ४ ह्रस्वाकारेणनिगमाःशत्रुघ्नःसमुदाहृतः ॥ मकारार्थोद्विधाज्ञेयःसानु-
नासिकभेदतः ५ प्रोच्यतेतेनहंसावैजीवाश्चैतन्याविग्रहाः ॥ संसारसागरोत्तीर्णापुनरावृ-
त्तिवर्जिताः ६ दास्याधिकारिणःसर्वेश्रीरामस्यमहात्मनः ॥ एतत्तात्पर्य्यमुख्यार्थाद-
न्यार्थोयोनभूपते ७ सोऽनर्थइतिविज्ञेयःसंसारप्राप्तिहेतुकः ॥ इतिसदाशिवसंहितायां-
विंशाध्यायेवेदान्तप्रतिशेषवचनम् ॥ सो जौननाम साहब बतायो ताके औरई औ-
रअर्थकारिकै जीव संसारीहैगयेसाहबकोनजान्यो ॥ १९ ॥

दोहा—तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥

आदिअन्तकीउतपति, सोतुमसोंकहिदेत ॥ २० ॥

इहां कबीर जी कहै हैं कि तेहिपीछे कहे जब संसारकी उत्पत्ति हैगई औ जीव नाना दुःख पावन लगे तब साहिब जे दयालुहैं तिनके दयाभई कि हमत्ते अपने नामको उपदेशकियो कि हमारे रामनाम को जो यह अर्थ लक्ष्मण जानकी हम भरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद तिनको जानिकै हमारेपास आवै औये सबजीव संकर्षण आद्यापराशक्ति शब्दब्रह्म नारायण महाविष्णु जीव इनके पक्षमें रामनामकी छवोमात्रा लगाइकै औरे औरे मतनमें लगिके संसारी है कै नानादुःख पावन लगे । तब रामनाम को यथार्थ अर्थ बतावनको हमको भेज्यो सो हम सारशब्द जो है रामनाम ताको सत्यकहे सांच जो अर्थहै ताके बतावनके हेतु आये सो आदि अंतकी उत्पत्ति हम तुमसे कहे देयहैं । आदिकौन है जोयह उत्पत्ति है आई संसारभयो औअंतकौन है जो हम रामनामको सांचअर्थ बतायो सो अर्थ समुझिलेइ साहबके पासजाय वाको संसारको अंत हेजाइ है । फिरि संसारमें नहीं आवैहै । सो यह आदिअंतकी उत्पत्ति हमतुम सों कहिदियो कि यहिभांतिते जगत्की उत्पत्ति होयहै जीवसंसारी होइहैं औयहि भांतिते जब रामनामको सांचअर्थ जानै है तब संसारको अंत है जाइहै ॥ २० ॥

दोहा—सात सुरति सब मूलहै, प्रलयहु इनहीं माहि ॥

इनहीं मासे ऊपजै, इनहीं माहि समाहि ॥ २१ ॥

इहांमंगलको उपसंहारकैहै सबकीमूल सातसुरतिजे प्रथम वर्णन करि आयेंहैं सो वेतो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूपते प्रकटभईहै सातकौनहै; दुइच्छा एकयोगमाया एकजगत्को अंकुरकारणरूपा औ पांचौब्रह्मरूपा येई सातौसबकेमूलहैं इनहीति उपजैहैं इनहीं ते प्रलय हैजायहै कहे नाशहैजायहै औ इनहींमें पुनिसमाइहै सातो सुरतिमें प्रमाण साखी शंकरगुष्टकी ॥ “निरंजनअक्षर अचित वोहंसोहंजान ॥ औपुनिमूलअंकूरकहि सात सुरति परमान” ॥ २१ ॥

दोहा—सोई ख्याल समरत्थ कर, रहेसो अछप छपाइ ॥

सोई संधिलै आयउ, सोवत जगहि जगाइ ॥ २२ ॥

सो समष्टिजीव अपनेको समर्थ मानिकै साहबको न जानि कै यह ख्याल करतभयो अछपकहे रामनामके अर्थमें साहब न छपे रहे औ सर्वत्र पूर्णरहे सा-

हबके सब सामग्री साहबकोलोक साहिबको रूपवर्णन करिआये हैं । जो साहब-
के लोकको प्रकाश सर्वत्रपूर्णरहा तौसाहब पूर्णईरहे सर्वत्र सो जीव
रामनाम को और और अर्थ करिकै और और मतनमें लग्यो तेहिते साहब
छपायगये साहबको जीव न जानतभये । सो तौनै संधिलैकै में आयों कि
जीवते “संधि कहे बीच” परिगयो है, रामनाम को सांच अर्थ भूलिगयो
सो जौने संसारमें यह सोवै है तौनी जगह में आयो कि में याको सोवत ते
जगाय देहुं कि, जौने २ मतनमें तुम लगेहौ सो रामनाम को अर्थ नहीं है,
येसंसारके देनवारे हैं, तुम संसारी ह्वैगये, सब स्वप्न देखौ हौ, वह अर्थ नाम
को मिथ्या है, तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहब हैं तिनको जानौ ॥ २२ ॥

दोहा—सात सूरतिके बाहिरे, सोरह संख्यके पार ॥

तहँ समर्थको बैठका, हंसनकेर आधार ॥ २३ ॥

साहब कैसेहैं कि सात सूरतिजे कहिआये तिनके बाहिरहैं औ षोडशकला
जीवको छान्दोग्य उपनिषद्में तत्त्वमसिके पूर्वलिख्योहै सोइहां कहे हैं कि
सोरहसंख्यके कहे सोरहसंख्यक जे जीवहैं अर्थात् षोडशकलात्मक जे समष्टि
जीव जे लोकके प्रकाशमें रहैं हैं शुद्धरूप तिन के साहब पार हैं सो जहां
सोरह संख्यकहे षोडशकलात्मक जीवहै तिनके पार वह लोक साहब कोहै
तहां समर्थ जे साहबहैं तिनको बैठकाहै कहे वहीलोक में रहैहैं । समर्थ जो
कह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्हींके किये जीव समर्थ
होइहै यह आपको झूठही समर्थ मानिलियो है याही हेतुते जीव संसारी भयो
है । सो हंसन के आधार तो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीहैं तेहिते जब हंसरूप
पावै तब साहब के पास वह लोकमें बसै जाय ॥ २३ ॥

दो०—घरघर हमसबसों कही, शब्द न सुनै हमार ॥

ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासीधार ॥ २४ ॥

सोकबीरजी कहैहैं कि घर २ हम सब सों बातकही हमारो कह्यो सांच
शब्द को अर्थ कोई नहीं समुझैहै नासुनै है ते संसाररूपी सागरके चौरासी-
लख योनि जो हैं धारा तामें डूबिजायहैं ॥ २४ ॥

दो०—मङ्गलउतपतिआदिका, सुनियो संतसुजान ॥

कह कवीरगुरुजाग्रत, समरथकाफुरमान ॥ २५ ॥

सो आदिकी उत्पत्तिका मङ्गल हमयह कह्योहै सो हेसंतसुजानौ सुनत जाइयो । हम आपनो बनायकै नहीं कह्योहै हम यह मङ्गल गुरुकहे सबते श्रेष्ठ औ तीनों-कालमें जाग्रत कहे ब्रह्ममनमायादिक्लेशभ्रमतेरहित ऐसेजे समर्थ सत्यलोकनिवासी श्रीरामचन्द्रहैं तिनको फुरमान कहे उनके हुकुमते में कह्यो है औ सबके पर साहबहैं औ साहबकोलोकहै तामेंप्रमाणआदिबाणीकोशब्द ॥ “बलिहारी अपने साहबकी जिन यह जुगुति बनाई । उनकी शोभाकेहि बिधि कहिये मोसों कही न जाई ॥ बिनाज्योतिही जहँ उजियारी सो दरशे वहदीपा । “निरते हंसकैरकौतूहलवोहीपुरुषसमीपा ॥ झलकै पदुम नाना विधिवानी माथे छत्रविराजै । कोटिनभानु चन्द्रतारागण एक फुचारियन छाजै ॥ करगहिविहँसि जबैमुखबोलैतबहंसा सुखपावै । वंशअंश जिन बूझ बिचारी सो जीवनमुकतावै । चौदहलोकवेदकामण्डल तहँलगकालदोहाई । लोक वेद जिन फंदाकाटी ते वह लोक सिधायै ॥ सातशिकारी चौदहपारथ भिन्नभिन्ननिरतावै । चारैअंशजिनसमुझि बिचारी सोजीवन मुकतावै ॥ चौदहलोक बसै यम चौदह तहँलगकाल पसारा । ताके आगे ज्योति निरंजन बैठे सुत्रमझारा ॥ सोरहखंड अक्षरभगवाना जिनयह सृष्टिउपाई । अक्षरकला सृष्टिसे उपजी उनही माहँ समाई ॥ सत्रहसंख्यपर अधरदीप जहँ शब्दातीत बिराजै । निरतैसखी बहूबिधि शोभा अनहदबाजाबाजै ॥ ताकेऊपर परमधामहै भरम न कोईपाया । जोहमकहीनहीं कोउमानै ना कोइ दूसरआया ॥ वेदनसाखी सब जिउअरुझेपरमधामठहराया । फिरि फिरि भटकै आपचतुरहै वह घर काहु न पाया ॥ जोकोइहोइ सत्यका किनका सोहमका पतिआई । औरन मिलैकोटि करथाकै बहुरिकालघरजाई ॥ सोरहसंख्यकेआगे समरथ जिनजग मोहिं पठवाया । कहैकवीर आदिकीबाणीवेद भेद नहिंपाया” ॥ २५ ॥

१ सात सुरति । २ चौदह यम । ३ चारखेद । ४ सोरह कलाजीवकी । ५ सत्रहसंख्य सूक्ष्म शरीरके ।

अथ षट् लिंग वर्णन ।

“उपक्रमोपसंहाराभ्यासोपूर्वताफलम् ॥ अर्थवादोपपत्तिश्चलिंगतात्पर्यनिर्णये”
 उपक्रमउपसंहार अभ्यास अपूर्वता फल अर्थवाद उपपत्ति इहांबस्तु तात्पर्यके
 वर्णनमें लिंगकोह बोधकहै ॥ उपक्रम उपसंहार को लक्षण यह है “प्रकरणके
 विषे प्रतिपाद्य जोबस्तु ताको आदिअंतके विषयजोहै वर्णनसो उपक्रम औ उपसंहार
 कहावै” १ औ प्रकरणके विषे प्रतिपाद्य जो है बस्तु ताको फेरि फेरिजोहै
 वर्णन सो अभ्यास कहावैहै २ औ प्रकरणकेविषे प्रतिपाद्य जो है बस्तुसो औरै
 प्रमाणकरिकैवर्णनमें न आवै सोकहावै अपूर्वता ३ प्रकरणके विषे प्रतिपाद्य जो
 है बस्तु ताकेज्ञानैकरिकै ताकी जोहै प्राप्ति सो कहावै फल ४ औ प्रकरणमें प्रति
 पाद्यजोहै बस्तु ताकीजोहै प्रशंसा सो कहावै अर्थवाद ५ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्य
 जो है बस्तु ताकोदृष्टांतकरिकै फेरिजोहै प्रतिपादन सोकहावै उपपत्ति ॥ ६ ॥

इहांकबीरजीके बीजककेप्रकरणकेआदिमें औ आदिमंगल में कहाहै कि
 शुद्ध जीव साहबके लोकके प्रकाशमें पूर्णरहै है जब साहब सुरति देखै तब
 जीव उत्पन्नहोयहै यह जीव शुद्ध है साहब को है मन मायादिक यामें नहीं
 है ये बीचहीते भेयेहैं । मनमायादिकको कारण यामें बनोरह्योहै तातेसाहबमें
 नालगेसंसारमुख हैगये । जब श्रीरामचन्द्रकीप्राप्ति होई तबहीं शुद्धजीवहोई ।
 सो साहब हट्क्यों सो नामान्यो मन माया ब्रह्म में लगिकै संसारीहैं गयो । (जीवरूप
 एक अंतरवासा । अंतर ज्योति कीनपरकासा १ इच्छारूप नारि अवतरी । तासु-
 नाम गायत्रीधरी) २ यहउपक्रम वाक्यहै । औ पदन के अंतमें बिरहुलीहै ॥
 (बिषहरमंत्र न मानबिरहुली । गाडुरी बोलै और बिरहुली ॥ बिषकी
 क्यारीबोयो बिरहुली । जन्म जन्म अवतरे बिरहुली ॥ फल एक कनइल
 डाल बिरहुली । कहैं कबीर सचुपायबिरहुली । जो फलचाखहु मोर
 बिरहुली १) सोबिरहुली में यहलिख्यो है कि तुम तौ प्रथम शुद्ध रह्यो

१ सर्वज्ञ पुरुषोंके लिखे जितने ग्रन्थ हैं सबमें षट्लिंग अवश्य होतेहैं और यह
 ग्रन्थ सर्वज्ञ सत्यगुरु कबीरसाहब विरचितहै इस कारण षट्लिंग का स्वरूप प्रदर्शित
 करते हैं ॥

है तुमहीं मनमायादिकन को बनायकै फँसि गयेहौ यह उपसंहार भयो ।
 औ साखिन के आदिमें यह साखीहै । (जहियाजन्म मुकताहता तहिया
 हता न कोय । छठीतिहारी हैं जगा तू कहँचलबिगोय) १ औ एक पोथीके
 अंतमें यह साखीहै । (जासोंनाताआदिकाबिसरिगयोसोठौर । चौरासीकेबशपरेक-
 हतऔरकेऔर) १ सोयेहूँमेंवहीबातहैऔदूसरी पोथीकेअंतमेंयहसाखीहै ॥
 (धोखे २ सबजगबीता द्वैतअंगकेसाथ । कहै कबीर पेड़ जोबिगरचो अबका
 आवैहाथ १) सोयहूँमेंवही बातहै । औ अट्ठाइस साखी कौनिऊँ पोथीमें
 औरहैं ताते दुइसाखी अंतकी लिख्यो है यह उपक्रम उपसंहारभयो १ ।
 औरप्रकरणमें यहहै कि श्रीरामचन्द्रको जब जीवजानै तबछूट सोग्रन्थभरे-
 मेंबारबार यहीउपदेशहै ॥ (लखचौरासी जीव योनिमें भटकि भटकि दुखपावै
 कहैं कबीर जोरामहिजानै सो मोहिनीकेभावै १ राम बिनानरहैहौ कैसा । बा-
 टमांझ गोंबरौरा जैसे २) इत्यादिक बहुतवाक्यहैं याते अभ्यास भयो ।
 औ सगुण जेहैं ईश्वर परमेश्वर अवतार अवतारीसब निर्गुणजेहै ब्रह्मजौन
 मनबचनकेपरे है ताहूतेपरे नित्यसाकेतरासविहारी रामचन्द्रहैं यह अपूर्वताभई ॥
 “अवधू छोड़हु मन विस्तारा । सोपदगहौजाहिते सद्रति पारब्रह्मेतन्यारा ॥ नहीं
 महादेव नहीं महम्मद हारिहरत तवनाहीं । आदम ब्रह्मनहिं तवहोते नहीं
 धूपनहिं छाहीं ॥ अससिहसपैगम्बर नाहीं सहसअठासीमूनी । चंद्रसूर्यताराग्रण
 नाहीं मच्छ कच्छ नहिंदूनी ॥ वेदकिताबस्मृतिनहिंसंयम नाहिं यमनपर-
 साही । बागनिमाज नहींतवकलमा रामौनहींखोदाही ॥ आदिअंतसन
 मध्य न होते आतश पवन न पानी । लखचौरासी जीव जंतुनहिंसाखी
 शब्द न बानी ॥ कहहिं कबीर सुनैहौअवधू आगेकरहुबिचारा । पूरणब्रह्म
 कहाँते प्रकटेकिरतम किनउपचारा” ॥ १ ॥ यहपद यही बीजकग्रन्थको है
 सोजहां यापदहै तहांअर्थलिख्यो है सो देखिलीजियो याते अपूर्वताभई ।
 औ रामनामहीं के जपेते श्रीरामचन्द्रहीके जानेते मनबचनके परे श्रीरामच-
 न्द्ररूप फल की प्राप्तिहोइहै यह फल है ॥ “छच्छाआहि छत्रपति पासा ।
 छकि किनर है छोड़िसबआसा । मैतोहींक्षणक्षणसमुझाया । खसमछों-
 ड़िकस आपबँधाया ॥ १ ॥ ररारारिरहाअरुझाई । रामकहेदुखदारिद जाई ॥

र्रांकहै सुनौरेभाई । सतगुरुपूछिकैसेवहुआईः॥२॥” इत्यादिक बहुत वाक्यहैं यहफलहै।औ अर्थवाद कबीरजी तो साहबके पासके हैं उनको संसारका कौन डर है यह प्रशंसा करै है याते अर्थवादभयो ॥ “डरपतअहो यहझूलिबेको राखुंयादव राय । कहकबीरं सुनु गोपाल बिनती शरण हरितुवपाय” ॥ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्य जेहि कि रामनामैकोजानैहै सोई छूटिजायहै औजे नहीं जानै हैं औरऔरमतनमें लगेहै तेईसंसारी होयहैं यहबात दृष्टांतदैकै रामनामही को दृढ़ कियो है । “राम नाम बिन मिथ्याजन्म गँवाईहो । सेमरसेइसुवाजोहँडयो ऊनपरेपछिताईहो ॥ ज्यों मदिपगांठि अरथैदै घरहुकी अकिलगँवाईहो । स्वादहुउदरभरैजो कैसे वोसहिप्यास न जाईहो” ॥ इत्यादिककहरामें लिख्यो है यह उत्पत्तिभई। येई षट्लिंगहैं जे इनको देखिकै अर्थकरै हैं सो सत्यहै, जे इनको नहीं जानिकै अर्थकरैहैं वहग्रन्थको तात्पर्य औरहै और अर्थ करैहै सो अनर्थहै । जैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मामें लगावै कोई नये नये खामिन्द बनाइकै अर्थलगावैहै इत्यादि । वेमनमुखी अपने अपने मनते नाना मतनमें अर्थलगावैहैं ते अनर्थ हैं अर्थनहीं हैं । वेगुरुजे हैं सबते गुरु परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके द्रोहीहैं ताते प्रमाण ॥ “गुरुद्रोही औमनमुखी नारिपुरुष अबिचार । तेनरचौरासीभ्रमहिं जबलगिशशिदिनकार” ॥ १ ॥

अरु हम जो बीजकको यह अर्थ करैहैं तामें छइउलझि श्रीरामचन्द्रमें घटितहैं तेहितेजो अर्थ हम करैहैं अनिर्वचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोई ठीकहै काहे तें कि जहांभरिप्रभुहैं तिनहूँके प्रभुहैं तौनेमें प्रमाण बाल्मीकीयको ॥ “सूर्य-स्यापिभवेत्सूर्योह्यमेरग्निःप्रभोःप्रभुः” । अर्थ जोयेईसूर्यमें येईअग्निमेंअर्थलगावै तौ पुनरुक्तिहोयहै काहेते जबबड़ोप्रकाशमान सूर्यको कह्यो तब अग्नि को कहिवे कोहै तातेयहअर्थहै जो कर्मनमें लोकनकी प्रेरणाकरै सोकहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी औसबकेआगेरहतभयो यातेअग्निकहावै ब्रह्मसोसूर्यके सूर्यकहै अंतर्स्यामीके अंतर्स्यामी औअग्निकहै ब्रह्मकेब्रह्मअंतर्स्यामी पारिछिन्नहै तातेबड़ोब्रह्महै जो सर्वत्र पूर्णहै औपरिछिन्नहै ताते बड़ोजाको प्रकाश यह ब्रह्महै जामें सबजीव भरे रहेहैं ऐसोसाहब-कोलोकहै सबकोप्रभुपरब्रह्मस्वरूप ताहूँकेप्रभुवह लोकके मालिक श्रीरामचन्द्रहैं । वहब्रह्मजोहै सोई मनबचनके परेहै पुनिजाको वो प्रकाशहै ब्रह्मसोलोककैसेमन

बचनमें आवै साहब तौदुहुनका मालिकहै उनकी कहबाई कहाकैरै जो कहाँ सबके मालिक श्रीरामचन्द्रहैं यह कहतई जाउहौ औकहौ कि मनबचनमें नहीं आवैहैं यहबड़ो आश्चर्य है सो सत्यहै ये कबीरहूजीकहै हैं “किरामो नहीं खोदाई” काहेते रामो नहीं खोदायहौ कहै हैं “रामै नाम अहै निज सारू । औ सब झूठ सकल संसारू” ॥ इत्यादिक बहुत प्रमाणदैकै बीजक भरेमें रामैनामको सिद्धांतकियेहै ताही में याको समाधानहै औताही में कबीरजीको बीजकलागै है औरीभांति अर्थ किये नहींलागै है । सोसुनो जो साहबको रामनामहै ताके साधनकीन्हे ते वहमनबचनके परेजोरामनाम ताकोसाहब देइ है सो वह नाम याके बचनमें नहीं आवैहै साहिवै क दीन्हेते पावैहै । जब याको संसार छूटयो तब अपने लोकको साहब हंसस्वरूप देइहै तौनेहंसस्वरूप में टिकिकै साहबकोदेखै-हैंनामलेइहैं साहब साहबको नाम साहबको लोक साहबकोदियो हंसस्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन बचनके परे हैं तामेंप्रमाण ॥ “ यतोवाचोनिवर्ततेयत्परम्ब्रह्मणःपरम् ॥ अतःश्रीरामनामादिनभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः ” ॥ औ यह रामनामके जपन की बिधिजैसी २ कबीर जी आपने शब्दनमेंकह्योहै तेहिरीतिते जो जपकरै तौ रामनाममन बचनकेपरे जोआपनो स्वरूप सोयाके अंतःकरणमें अस्फूर्तिकरि देयँ हैं औ साहब को रूपअस्फूर्ति करिदेयँ हैं आर्थात् आपहीअस्फूर्ति द्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ “ नामचिन्तामणीरामश्चैतन्यपरविग्रहः । नित्यशुद्धोनित्ययुक्तोन भिन्नन्नामनामिनः ॥ अतःश्रीरामनामादि नभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः ॥ स्फुरतिस्वयमेवैतज्जिह्वादौश्रवणेमुखे” ॥२॥ सो यही रामनाम जो मनबचनके परेहै ताही को कबीर जानै ॥ “ सो जानै जेहिमहीं जनाऊं । बांह पकरि लोकै लै आऊं ॥ सहज जाप धुनि आपैहोई । यह संधिवूझै बिरला कोई ॥ रग २ बोलै रामजी रोम रोम राकार । सहजै धुनि लागीरहै सोई सुमिरणसार ॥” ओठकंठहलैनहीं जिह्वानाहिंउचार । गुप्तवस्तुको जो लखै सोईहंसहमार ॥ जो हंसरूपमें टिकिकै जपत रहेहैं तौनेमें प्रमाण भक्तमालके टीकामें श्रीप्रियादासजीलिख्योहै ॥ “बिनै तानो बानो हिय राममड़रानो” ॥ श्रीमहाराजाधिराजरामसिंहबाबा पूछ्योहै तब कबीर साहबकह्योहै ॥ “राअक्षरघट रम्योकबीरा ॥ निजघरमेरोसाधुशरीरा” १ तातेरामनामही को परत्व बजिकमें है मुक्ति रामनामहीमें है और साधनमनहा

है यह कबीरजी बीजकभरेमें कह्यो है । और अर्थ जे करै हैं ते बीजक को अर्थ नहीं जानैहैं काहेते भागूदास बीजक लैभागेहैं सो बबेलवंश विस्तार में कबीरहीं जी कहि दियो है कि अर्थ नहीं जानै हैं तामें प्रमाण ॥ “ भागूदासकी खबरिजनाई ॥ लैचरणामृत साधूपियाई ॥ कोउ आयकह कलिअर गयऊ । बीजकग्रन्थचोराइलैगयऊ॥सतगुरु कहैं वहनिगुरापन्थी । काह भयोले बीजकग्रंथी ॥ चेरी करि वह चोरकहाई काह भयो बड़ भक्त कहाई ॥ बीज मूल हम प्रगट चिन्हार् ॥ बीज न चीन्हो दुर्मति ल्यार् ॥ बबेलवंश में प्रगटी हंसा । बीजक ज्ञान को करी प्रशंसा ॥ सबसों पूछी प्रेम हिंताई । आप सुरति आपैमें ल्यार् ॥ बीजकलाय गुफा में राखी । सत्यै कहीं बचन में भाखी ” ॥ सो और २ अर्थ जे कबीरहा करैं हैं ते भागूदास औ भगूदास के शिष्य प्रशिष्य, ते बीजक को बितंडावाद अर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धांत को अर्थ जो राम-नामहै ताते जीवन को बिमुख करिडारयो नरककी राहबताय दियो काहेते दूसरी पोथीतौ रही नहीं वोही पोथी रही तौने को मनमुखी अर्थ करिकै आपबिगरे औ शिष्यन प्रशिष्यनको बिगारयो जे उनके सत्संग किये ते सब याही ते नाम तोरहै भगवानदास पै भागूदास कबीरजी कह्योहै । औ मैं जो तिलक करौहैं बीजक को सो एकतो साहबके हुकुमई ते कियो है सो आगेलिखि आये हैं दूसरे तिलक बनाइ बांधौगढ़में आयो तहां बयालिसवंश विस्तार ग्रंथदेख्यो ताकोप्रमाण तिलकमें लिखिदियोहै पोथी पंद्रहसैयकइसके सालकी धर्मदासके हाथकी लिखीहै औ येहीपोथी में कबीरजी राजारामते आगम कहिदियो है ॥ “तुमसे दशौ बंश जो है हैं । सो तौ शब्द हमारो गहि हैं ॥ परमसनेही अनुभव बानी । कथिहैं शब्द लोक सहिदानी॥२॥तेहिते मैं जो अर्थ करौं हों सोई कबीर जी का सिद्धांत है” अनुबन्ध चतुष्टय-अधिकारी औ यह ग्रंथ में चारि साधन करिकै युक्त जो पुरुष है सो अधिकारी है चारि साधन कौन हैं नित्यानित्य वस्तु विवेक १ औ इहामुत्रार्थफल भोग विराग २ औ दम शम उपरति तितिक्षा औ श्रद्धा समाधान ई षट्संपत्ति ३ औ मुमुक्षुता ४ नित्यानित्यविवेक का कहावै, जीवात्मा नित्य औ देह इन्द्रिय आदि दैकै जो संसार सो अनित्यहै यहै कहावै नित्यानित्यविवेक औ इहामुत्रार्थ फल-

भोग विराग का कहावै यह लोकके औ परलोकके विषे जेहैं सक् चन्दन बनि-
ता यह आदि दैकै जेहैं तिनको अनित्यता बुद्धिकैकै तिनते जो है बैराग्य सो
इहामुन्नार्थफलभोग विराग कहावै औ लौकिक व्यापारते मनकै जो है निवृत्ति
सो कहावै शम औबाह्य जे इन्द्रियहैं तिनकी श्रीरामचन्द्रके संबधते व्यतिरिक्त
जो विषय है तेहिते निवृत्तिहोब जोहै सो कहावै दम औ श्रीरामचन्द्रको जो
ज्ञान है तेहि पूर्वक उपासनाके अर्थ विहितजेहैं नित्यादिक कर्म तिनको जो है
त्याग सो कहावै उपरति औ शीत उष्ण आदि दैकै जेहैं द्वन्द तिनको जो है
साहब सो कहावै तितिक्षा औ निद्रा आलस्य प्रमाद इनको जो है त्याग तेहि
पूर्वक मनकै जोहै स्थिरता सो कहावै समाधान औ गुरु वेदांतवाक्यमें अवि-
चल विश्वास सो कहावै श्रद्धा औ संसारते छूटिबेकी जो है इच्छा सो कहावै
मुमुक्षुता ई साधना चतुष्टय जामें होय सो कहावै अधिकारी ।

१ विषय—औ यह जीव साहबको है औरको नहीं है यह जो है ज्ञान
सो यह ग्रंथमें विषय है २ सम्बन्ध—औ ग्रन्थको, विषय सो संबंध कौन है तात्पर्य
करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव ॥ २ ॥ प्रयोजन—औ यह ग्रंथमें प्रयोजन का है
कि मन माया औ अहंब्रह्म जो है ज्ञान तौनेमें बँधा जोहै जीव सो मन
माया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजीको प्राप्त होय सो प्रयोजन ॥ ४ ॥
जीवको मन माया ब्रह्मते छोड़ायकै श्रीरघुनाथजीके पास प्राप्त करिबेको
कही, अपनी उक्तिते कही, साहबकी उक्तिते कही, मायाकी उक्तिते कही, जी-
वकी उक्तिते कही, ब्रह्मकी उक्तिते कबीरजी उपदेश कियो है । औ उत्पत्ति
प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रंथनमें कबीरजी कह्योहै । सो इहां कबीरजी प्रथम
रमैनी में आदिकी उत्पत्ति कहैहैं । जबकुछ नहीं रह्यो है तब वही साहबको-
लोक रह्यो है ताहीको परम अयोध्या कहे हैं । औ सत्यलोक सांतानकलोक
नापैदलोक आदि दैकै नाना नामहैं तौने लोकमेंजे हंस हंसनी हैं गुल्मलता
तृणआदि दैकै तेसब चिन्मय हैं औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके मालिक हैं
तामें प्रमाण ॥ “राजाधिराजःसर्वेषां रामएव न संशयः ॥ इति श्रुतेः ॥ दूसरो प्रमाण ॥
“यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम् ॥ यत्किंचित्पक्षिभृंगादितत्सर्वभातिचिन्म-
यम् ॥” इति वसिष्ठसंहितायाम् ॥ कबीरजी कह्यो है ॥ “सदा बसंत जहँ फूलहि कुंज

सोहावही । अक्षयवृक्षतरसेज सोहंस बिछावहीं ॥ धरती आकाशजहांनहीं जग
 मगै । बहियां दीनदयाल हंसकेसँगलै ॥ "तौने श्रीअयोध्याजी को जो है प्रकाश
 तामें शुद्ध जीव जे हैं तेभरे हैं तिनको साहबको औ साहबके लोकको ज्ञान
 नहीं है जो साहबको जानै औ साहब के लोक जाय तौ ना उलटि आवै सो
 साहबको तौ जानै नहीं है याही ते माया उनको धारै लै आवै है सो प्रथम साहब
 दयाल उनमें दयाकरिकै आपनी शक्ति दैकै उनके सुरति उत्पत्ति करत भये
 कि हमको जानै हमारे पास आवै तौ मायातें बचि जाय सो आदिमंगलमें
 कहि आये हैं जब उनके सुरति भई तब वे धोखा ब्रह्ममें औ माया में लगिकै
 संसारी भये सो साहब बहुत हटक्यो सो हटको ना मान्यो सो आगे
 बेलिमें कहेंगे ॥ "तू हंसामनमानि कहौ रमैया राम । हटल न मान्यो
 मोर हो रमैया राम । जसकीन्ह्योतसपायोहो रमैया राम । हमरदोषज
 निदेहु हो रमैया राम ॥ " औ साहबके लोकमें मनादिकनको कारण
 नहीं है, तामें प्रमाण ॥ "नयत्रशोकोनजरान मृत्युर्नकालमायाप्रलयादिवि-
 भ्रमः ॥ रमेतरामेतुसतत्रगत्वास्वरूपतांप्राप्यचिरंनिरंतरम् ॥ इति वसिष्ठसं-
 हितायाम् ॥ १ ॥ कबीरौ जीकह्यो है ॥ "तत्त्वभिन्ननिहतत्वनिरक्षरमनौप्रेमसेन्या
 रा । नाद बिंदुअनहदनिरगोचरसत्यशब्दनिरधारा ॥ " औ साहब को लोक सबके
 पार है सो मंगल में कहिआये हैं जो साहब को जानै औ साहबके लोक जाइ
 तौ संसार में ना आवै सो तौने उत्पत्ति श्रीकबीरजी प्रथम रमैनी में संक्षेप ते
 कहै हैं औ सबकी उत्पत्ति साहब के लोकके प्रकाश के बहिरेहीते होइ है तामें
 प्रमाण ज्ञानसागरको ॥ "जानैभेद न दूसरकोई । उतपतिसबकीबाहरहोई ॥ १ ॥ "



अथ बीजक प्रारम्भः ।

अथ रमैनीप्रथम ॥ १ ॥ २ ॥

चौ० जीवरूपयकअन्तरवासा। अन्तरज्योतिकीनपरगासा १
 इच्छारूपनारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी २
 तेहिनारीकेपुत्रतिनभयऊ । ब्रह्माविष्णुमहेशनामधरेऊ ३
 तवब्रह्मापूँछतमहतारी । कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
 तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५
 साखी—बाप पूतकी एकै नारी औ एकै माय बिआय ॥

ऐसापूत सपूत न देख्यो जोबापै चीन्है धाय ॥ १ ॥

चौ० जीवरूपयकअंतरवासा । अंतरज्योतिकीनपरगासा १

श्रीरघुनाथजीके लोकको जो है प्रकाश तेहिकै अन्तर जे हैं जीव एक रूपते कहे समाष्टिरूप ते बास किये रहे, यहां यह भाव प्रगट है कि, जीवनकी सुरति औरई है और वह (जीव) औरई है सो—अंतरज्योति कहे साहबके लोकको जोहै प्रकाश तेहिके अंतरकहे भीतरै आपनई प्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्नकै संसार प्रकटकै संसारी द्वैगये । साहबको न जानत भये या बात मंगलमें विस्तारते कहिआयेहैं याते इहां प्रसङ्गमात्र सूचित कियो है । जब प्रलयहोयहै तबहूं वही ब्रह्ममें लीन होइ है उँहैते पुनि उत्पत्ति होइहै औ अनुभव धोखा ब्रह्ममें ज्ञान करिकै जे मुक्त-

होयहैं ते सनातनज्योति जोहै अयोध्याजीकों प्रकाश बही ब्रह्म जहां पूर्वलीन रहै है तहैं जाय लीनहोयहै औ जे श्रीरामचन्द्रको जानै हैं तेज्योति वह भेदिकै श्रीरामचन्द्रके पास जायहैं तामें प्रमाण ॥ (सिद्धाब्रह्मसुखेमग्न्यादित्या-श्चहरिणाहताः ॥ तज्ज्योतिर्भेदनेशकारसिकाहरिवेदिनः ॥ तामें कबीरजीको प्रमाण (जैसे माया मन मिल्यो ऐसेरामरमाय । तारामंडलभेदकै तबैअमरपुर-जाय) ॥ औ धोखाको अर्थयहैहै जो औरैको और देखे सो कौनहै कि, एक जोहै सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशब्रह्म ताके अंतर कहे भीतर अनुरूप जेजीव ते सम-ष्टिरूपते बास कियेरहे । सो अंतरज्योति प्रकाश कहे जब साहब सुरतिदियो सोई अंतरप्रकाश करतभई तबजीवको जान परनलग्यो चैतन्यता आई तब संकल्प विकल्पकियो कि मैं कौन हों यही मनकी उत्पत्तिभई सो जीवकोरु-पतौ ॥ (बालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्यच । भागोजीवःसर्वज्ञेयः सचानं-त्यायकल्पते) ॥ इतिश्रुतेः ॥ तामें कबीरजीकों प्रमाण-(बहुत बडा ना तनकसा, तनकी भी है नाहि । औरत मरद न कहिसके, औ रह सबही माँहि ॥)इत्या-दिक प्रमाण करिकै वाको स्वरूप तो अणुहै सोतो वाको न देखिपरचो सर्वत्र प्रकाशरूप ब्रह्मदेख्यो सो मान्यो कि महीं ब्रह्महों यही धोखा ब्रह्महै ।

जीव ब्रह्मविषयक शंकासमाधान॥जो कहो जीव ब्रह्मतो बने है जीव कहना यहीयाकी भूलहै । जब याको ज्ञानभयो ज्ञानते बिज्ञानभयो अनुभावानन्द प्राप्त भयो जबभर अनुभवानन्द बनोरहै है तबभर याको जीवत्वको लेश बनोरहैहै जब अनुभवानन्दरूप ही हैगयो तबयाको जीवत्व मिटिगयो संसारऊ मिटिगयो एक आपही आप रहतभयो ? तुमकैसे कहौहौ कि “ जीवको ब्रह्महोना धोखा-है” । जो ऐसो कहौ तौ सुनौ ! जोपदार्थ बीचकोहोय है सो मिटिजायहै औ जो पदार्थ सनातनहै सो नहीं मिटिजायहै कैसे जैसे तुमकहौहौ कि जीवत्व बीचहीको है वही ब्रह्म अनेकरूप धारण कैलियो है, एकते अनेक होइगयोहै, जब जीवत्वको भ्रम मिटिगयो तब ब्रह्मही रहिजायहै, जो प्रथम रह्योहै सोईरहि-जायहै । जो पदार्थ बीचको होयहै सो मिटिजायहै । तैसे हमहूं कहैहैं कि आदि में तो जीवरह्यो है सो जब संसार छूट्यो तब शुद्धजीवको जीवही रहिजायहै । जोकहो ब्रह्मही जीवहैजायहै तौ हम तुमसों या पूछै हैं कि प्रथम तो ब्रह्मही

रहतभयो सो ब्रह्म अकर्ताहै निर्धर्महै, मनमायादिकते रहितहै, देशकाल वस्तु परिच्छेदते शून्यहै सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्वको भ्रम कहातेभयो जो कहो वह ब्रह्म जीवत्वको धारणनहींकियो वाको तो भ्रमही नहींहै काहेते कि ॥ सत्यंज्ञानमनंतब्रह्म ॥ यह श्रुतिलिखै है वाको भ्रमतो संभवितै नहीं है भ्रमतो जीवनको भयो है, जिनको ब्रह्मको विज्ञानहै, तिन को न जीवत्व है न संसार है । जैसे अज्ञानी जीवनको संसारही देखिपै है तैसे ज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखिपै है । तौ सुनौ तुमही दुइजीव कहौहौ एक अज्ञानी जीव एकज्ञानी जीव । सो अज्ञानी जीवको या कह्यो कि संसारही देखाय है सो ब्रह्मके तौ अज्ञान होताहीं नहीं है, जाते आपको जीवत्व मानिकै संसारीहोय । जो कहो मायाते शबलित हैकै ब्रह्मही जीव होइ संसारी है जाय है तौ माया को तौ मिथ्या कहौहौ । जायासामाको अर्थः मिथ्यैव । फिर ब्रह्मको तौ ज्ञान-स्वरूप कहि आयेहौ कि ब्रह्मको मायाको स्पर्श नहीं होयहै, ब्रह्म जीव नहीं होइ सके है, तौ ज्ञानी अज्ञानी जीव औ संसार वह ब्रह्मभ्रम करिकै कैसेभयो । जो कहो जीव औ संसार या हई नहीं है तौ पुराण औ कुरान वेदांतका को उपदेश करै है । तेहिते तुम्हारो समाधान कियो नहीं होयहै । जीव ब्रह्म कबहूँ नहीं होइ है । सनातनते जीव भिन्नहै औ ब्रह्मभिन्न । काहेते साहबके लोकप्रकाश ब्रह्ममें अनादिकालतें समष्टिरूप ते जीवरहै है, ताको साहबदयाल दयांकारिकै सुरतिदियो कि, मोमें सुरति लगावै तौ मैं हंसरूप दैके अपने पास लैआऊँ सो अनादि कालते श्रीरामचन्द्रको जनबई न किये या मनादिक-नको कारण उनके रहबही करै, वही सुरतिपायकै संसारी हैगये । जो साहब-को जानते तौ संसारमें ना आवते । जब मनादिक भये तब अनुभव ब्रह्मको उत्पन्नकियो सो यहतो साहबको है सो साहबको ना जान्यो आपहीको ब्रह्म मान्यो यही धोखाहै । और जीव सनातन है सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहींहोय है वही प्रकाशमें अचल समष्टि रूपतें भरो रहैहै तामें प्रमाण ॥ “नित्यःसर्वगतः स्थाणुरचलोऽयंसनातनः” ॥ इतिगीतायाम् ॥ औ लोकप्रकाश व्यापक ब्रह्मते जीवते भेदहै तामें प्रमाण ॥ “सत्यआत्मासत्योजीवः सत्यं भिदः सत्यंभिदः” ॥ औ अज्ञानहूते ब्रह्ममें लीनहोयहै तबहूँमाया धरिले आवैहै

तामें प्रमाण ॥ “येन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥
 आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतंत्यधोनादृत्युष्मदंघ्रयः” ॥ इतिभागवते ॥ तेहिते
 साहबके लोक प्रकाशमें भरे जे जीवहैं तहैंतेव्यष्टि होतहै औ तहैं समष्टिरूप
 करि लीनहोतहै । अनादिकाल यहीक्रमहै । सो जैसोहम वर्णनकरिआये हैं
 ताही रीतिमें प्रकाशरूप जो ब्रह्महै तांमें निर्विकारत्वनिर्धर्मत्वादि जे वेदांतमें
 विशेषणहैं ब्रह्मके ते बन रहेहैं औरीभांतिनहीं संघटित होयहै औ प्रकाशरूप
 जो ब्रह्महै सो निर्विकारहै निर्धर्म है अकर्ताहै, वाकी करी रक्षा जीवकी नहीं
 होयहै । दूनोंते परे जे साहबहैं तिनको जोजानैहै, जानिकै उनके लोकको
 जाय है सो फेरि नहीं आवैहै वे रक्षाकरिलेयहैं काहेते वहां मन मायादिकन
 की गति नहीं है ॥ तामेंप्रमाण ॥ “यद्गत्वाननिवर्ततेतद्धामपरमं मम” ॥
 औ जगत्की उत्पत्ति जो उपनिषदनमें लिखैहै सो समष्टिरूप जीवही ते लिखैहै
 सोकहैहैं ॥ “सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं” ॥ इतिश्रुतेः ॥ एककहे
 सजातीयभेदशून्य अद्वितीय कहे विजातीयभेदशून्य एवकारते स्वगत
 भेदशून्य यद्यपि सूक्ष्म भेद वामें बने हैं परन्तु समष्टिरूपकरिकै जीव एकही-
 रहै है । प्रलयमें अथवा जीवत्व करिकै एक रहैहै यह श्रुति सतनाम कैकै
 कहैहै ताते अनामा जोब्रह्म है तांमें नहीं लगै है औ दूजी श्रुति है ॥ “सऐ-
 क्षतएकोऽहं बहुस्याम्” ॥ तौनै जो है समष्टि जीव सो सुरति पायकै इच्छा
 करतभो कि, एकते बहुत होउं सो या ब्रह्माख्य जो समष्टि जीव ताहीमें
 लगैहै औ ब्रह्मपद यह समष्टि जीवहीमें घटित होय है काहेते बृहिवृद्धौ यह
 धातु है व्यष्टिते समष्टि हैजायहै समष्टिते व्यष्टिहोइजायैहै । औ वहजो लोकप्र-
 काश ब्रह्मएक रस न घटै न बँटै तांमें एकोऽहंबहुस्याम् या अर्थ नहीं लगै है ।
 औ अनुभव करि आपनेको जो ब्रह्म मान्योहै सो तो धोखैहै नाममित्यैहै । सो एकसो
 समष्टि जीव रूप सगुण ब्रह्म तौन औ एक लोक प्रकाश रूप निर्गुण ब्रह्म तौन ई दूनोंते
 साहब परेहैं । औ मंगलमें पांच ब्रह्मकहिआयेहैं सोनारायणजेहैं साकार ते औ
 तिनके अंतर्गामीजेहैं निराकारतत्त्वरूप नारायणते ई दूनों जे साकार निराकारहैं
 तिनते साहब परेहै औ निराकार साकार ये दोऊ साहबके शरीरहैं तामें प्रमाण
 “यामिच्छसिमहाराज तांतनुंपविशस्वकाम । वैष्णवींतांमहातेजो यद्वाकाशंसनात

नम् ॥ इतिवाल्मीकीये ॥ औ साहब साकारद्विभुजनराकृतिहै । तामें प्रमाण ॥
 स्थूलचाष्टभुजप्रोक्तं सूक्ष्मचैवचतुर्भुजम् । परन्तुद्विभुजरूपतस्मादेतत्त्रयंयजेत् ॥ इतिआ
 नंदसंहितायां ॥ आनन्दोद्विभुजः प्रोक्तोमूर्त्तश्चामूर्त्तएवच । अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तः पर
 मात्मानरकृतिः ॥ इतिआनंदसंहितायां ॥ औ मुसल्माननके जे अच्छे समुझ
 वारेहैं तेसाकारहीमानैहैं, काहेतेकि कुरानमें लिखै है—अल्लाह कहैहै कि “महम्मद
 मोको एकबार जब लड़काईमेंदेखा है औ एक बार मैंने बुलाया मेरे सामने च-
 लाआया दुइकमानते कम फरक रहिगया” सो महम्मद देखा यातौ अल्लाहकेसूरति
 है यह आयो औ महम्मदकीहदीस “खलकलईनसान” अल्लाहके सूरतहीमें बना
 याहै ईनसान अपनी सूरतिका यहिसे यह आयाकि अल्लाह द्विभुजहै ।
 यहिसे या मालूम भया कि अल्लाह कहिके द्विभुज श्रीरामचन्द्रही वर्णन
 करैहै । औ जे अल्लाहकी सुरतिकहतेहैं कि नहीं है, कुरानकी जबानी नहीं
 मानते हैं तिनको काफरकहतेहैं औ वह जो है निर्गुण सगुणके परे साहब
 नराकृति सो जाके ऊपर कृपा करै है. ताको आपनोहंसरूप आपनीइन्द्रा
 देइहै आपै देखिपैरै है तामें प्रमाण ॥ ब्रह्मणैवजिघ्रितिब्रह्मणैव पश्यति ब्रह्मणै-
 वशृणोतिइतिश्रुतेः ॥ औ साहबको रूप साकार निराकारते बिलक्षणहै
 यातेअरूपीरूप कहैहैं औजेसोयहनानामहै तैसोनामनहीं है वहनामविलक्षण मन
 वचनकेपरे है यातेवाको अनामानामकहै हैं तामेंप्रमाण । “अनामासोऽप्रसिद्धत्वाद्
 रूपोभूतिवर्जनाद् ॥ इतिअग्निपुराणे ॥ अमाकृतशरीरत्वादरूपीभगवान्विभुः ॥
 इतिवायुपुराणे ॥ औ साहबके हाथ पांय नहीं हैं निराकार आयो औ चलैहै ग्रह-
 ण करिलेइहै याते साकारआयोतामैंप्रमाण ॥ “अपाणिपादोजवनोग्रहीत्तापश्यत्यच-
 क्षुःसशृणोत्यकर्णः” इतिश्रुतेः ॥ सो ऐसे साहबके लोक प्रकाश है ब्रह्मको यह जी
 वना समुझयो कि साहबको लोकःप्रकाश है मनते अनुभवकरि वह ब्रह्म आपही
 को मानतभयो यही धोखा ब्रह्म है । सो जीवपै कहे एकरूपते औ कहेसमष्टिरूप
 जीवलोक प्रकाशके अंतरमेंबास कियेरहै, सो अंतर ज्योति कहे सुरतिपाय प्रका-
 शकीन कहे मतादिक उत्पन्न करि समष्टिते व्यष्टि होवेकी इच्छाकरत भये सो
 आगे कहै हैं ॥ १ ॥

इच्छारूपनारिअवतरी । तासुनामगायत्रीधरी ॥ २ ॥

आपनेको जो धोखाते ब्रह्म मानिलियो समष्टिरूप जीव, ताके जब इच्छाभई सोई मूल प्रकृति माया है तेहिते शबलित ब्रह्म भयो सो इच्छा माया जबप्रकट भई ताको नामगायत्री धरावत भये । गायत्री तो सूर्यमध्यवर्ती जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको तात्पर्य ते बतावैहै सो अर्थतो न ग्रहण करत भये सूर्यके मध्यमें साहब है तामें प्रमाण॥ “सूर्यमंडलमध्यस्थं रामंसीतासमन्वितम् ”॥ सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये । तेहिते दिन राति संध्या होतभई । औ ब्रह्मादिक देवताभये सो आगे कहैंगे यह संसार मुख अर्थसमुझ्यो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति करतभई जो कहे काहेते जानो कि गायत्रीके द्वैअर्थ हैं तौ सुनो यहबाणी जोहै सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैके प्रथम प्रगटभई है । तामें द्वैअर्थहैं एकसाहब मुख, एक संसारमुख । ऐसे प्रणव निगम आगम इनमें द्वै द्वै अर्थहैं, एक साहबमुख एक संसारमुख।काहेते कि रामनाम ते सब निकसेहैं सो जो कारणमें द्वैअर्थभये तौ कार्यमें द्वैअर्थहोवई चाहैं । सो संसारमुख अर्थलैके जीव संसारी होतभये सो यह उत्पत्ति मंगलमें बिस्तारते लिखिआये हैं ताते संक्षेप इहां उत्पत्ति लिख्यो है ॥ २ ॥

तेहिनारीकेपुत्रतिनिभयऊ।ब्रह्माविष्णुमहेशनामधयऊ ॥३॥

तौने गायत्रीरूप नारीके पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्न होत भये तब वह नौ गायत्रीरूप नारी है ॥ ३ ॥

तबब्रह्मापूछतमहतारी । कोतोरपुरुषकेकरतुमनारी ॥ ४ ॥

तासोंब्रह्मा पूछत भये कि को तोर पुरुष है काकरि तू नारी है औ काके हम पुत्रहैं सो बताउ हम जानो चाहैहैं तब वा नारी कहत भई ॥ ४ ॥

तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैतोरजोई ॥५॥

प्रथम साहब के लोक प्रकाशमें अनादिकालते साहबते विमुखतारूप जो जगत्को कारण तेहिते सहित जीव समष्टिरूप बास कियोरह्यो तिनके ऊपर साहब दया कियो कि “ अबोध सुषुप्ति ऐसे में परैहैं इनको सुखको अनुभव

नहीं है । यह जानि साहब बिचारयो कि हम इनको सुरति देयँ जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हंसरूप दैकै आपने धामको बोलाय लेउँ । सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरणभयो यही चित्तकी उत्पत्तिहै । औ वाको रूपतो अणुहै सोतो आपनोदेखैनहीं है संकल्प विकल्प करैहै कि मैंहीं कि नहींहीं, यही मनकीउत्पत्ति है । फिरि बिचारयो कि मैं हौं तो, पै कौनहीं आपनो रूपतो देखैनहीं है । फिरि निश्चयकियो कि जोमैं होतो न तो यहसंकल्प विकल्प काको होतो याते मैंहीं यहीं बुद्धि की उत्पत्ति भई । जौने लोक प्रकाशमें अपार है ताको देखि मानत भयो कि सत्चित् आनंद स्वरूप सो महींहीं यही अहंब्रह्मरूप अहङ्कारकी उत्पत्ति है । सो जब समष्टिजीव आपनेकों चिद्रूप ब्रह्म मान्यो तब वही पूर्वजगत् कारणरूपा योगमाया अर्थात् साहब तें विमुखता-रूपा सो स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी । तब आपनेको सच्चिदानंद ब्रह्म मानिकै एकते अनेक होबेकी इच्छाकियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होबेकी इच्छा-कियो । तब साहब जान्यो कि समष्टि जीव आपनेको सच्चिदानन्द ब्रह्म मानि संसारी होनचहै है तब सार शब्द जो रामनाम ताको दियो कि, याकोये अर्थ समुझि हमको जानै तौ हम हंसस्वरूपदै आपने धामको लैआवैं । सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगत्मुख अर्थ लगाय राम नामकी जे षट्मात्रा हैं तिनते पांच मात्राते पांच ब्रह्म प्रकट कियो छठों मात्राको अर्थ जीव को हंसस्वरूप है सो न जान्यो वाहीको जीवको अर्थ करि समष्टि ते व्यष्टि बँगयो । सो समष्टि ते व्यष्टि होवेवाली जो इच्छाहै सोई गायत्रीरूपा मायाहै तेहि ते ब्रह्मादिक देवता भये । सो प्रथम शुद्ध जीव आपनेको ब्रह्म मानि अशुद्ध बँगये हैं याही हेतु ब्रह्मको कोई जगत्को निमित्त कारण कहैहैं कोईनि-मित्त उपादान कारण कहैहैं याही ते वा ब्रह्म अशुद्ध जीवनको बाप है सोतों धोखई है । गायत्री कैसे बतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा बाप है । ताते यहकहै हैं कि प्रथम तुमरहे तिनकी इच्छा हमहैं । अबहम तुमकहे हमते तुम-भये और तो कोई हई नहींहै । तुमहीं हमार पुरुषहौ हमेंतुम्हारि जोई हैं अर्थात् जबतुम शुद्धते अशुद्धभयेहौ तब चित अचितरूपा जो माया हमहैं तिनहींते सब लित है उत्पन्न भयो है तबहं हम तुम्हारी नारी रही हैं । औ अबहं सरस्वती आदिक तुमको देयँगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुषहौ हमहीं नारी हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ बाप पूतकी एकै नारी, औ एकै माय विआय ॥

ऐसा पूत सपूत न देखों, जो बापै चीन्है धाय ॥ ६ ॥

बापता धोखा ब्रह्म है जाते शुद्ध जीव अशुद्ध द्वै उत्पन्न भये हैं ते अशुद्ध जीव पूत हैं सो दोऊ माया सबलित भये ताते बाप पूत की एकै नारी भई । औ पूर्व जगत् कारण रूपा जो माया है तौ नेहीं ते (अहं ब्रह्मास्मि) मान्यो है औ तौ नेहीं ते व्यष्टि जीवन की उत्पत्ति भई है याते दोहुन की एकै महतारी है । याते एकै माया बियानी है । सो ऐसा पूत सपूत नहीं देखे हू है कौन सो बाप जो है ब्रह्म ताको धाय कै कहे बहुत बुद्धि दौराय कै चीन्है कि, यह धोखा है । अब जाकी शक्ति करि कै यह जगत् भयो है जौनी भांति ते सो समेटि कै सिंहावलोकन कै पुनि कहै हैं ॥ ६ ॥

इति प्रथम रमैनी समाप्तम् ।

अथ दूसरी रमैनी ॥ २ ॥ १ ॥

चौपाई ।

अंतर ज्योति शब्द यक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ॥ १ ॥
तेतिरिये भगलिंग अनंता । तेउन जानै आदि अंता ॥ २ ॥
बाखरी एक विधा तै कीन्हा । चौदह ठहर पाटि सोलीन्हा ॥ ३ ॥
हरि हर ब्रह्म मंहं तौ नाऊ । ते पुनि तीनि वसाव लगाऊ ॥ ४ ॥
ते पुनि रचिनि खंड ब्रह्मंडा । छादर्शन छानवे पखंडा ॥ ५ ॥
पेटहि काहुन वेद पढ़ाया । सुनति कराय तुरुक नहिं आया ॥ ६ ॥
नारी मोचित गर्भ प्रसूती । स्वांग धरै बहु तै करतूती ॥ ७ ॥
तहिया हम तुम एकै लोहू । एकै प्राण बियाय लमोहू ॥ ८ ॥
एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञान ते भयो निनारा ॥ ९ ॥
भावालक भगद्वारे आया । भगभोगे ते पुरुष कहाया ॥ १० ॥

अविगतिकी गतिका हुन जानी । एकजी भक्ति कहौ बखानी ११
जो मुख होइ जी भद शलाषा । तौ कोइ आयम हंतौ भाषा ॥ १२ ॥
साखी ॥ कहहि कवीर पुकारिकै, ई लेऊ व्यवहार ॥
एक रामनाम जाने विना, भव बूडि सुवा संसार ॥ १३ ॥

अंतर ज्योति शब्द एक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ॥ १ ॥

अन्तरज्योति कहे वह ज्योतिके अन्तर कहे भीतरै नारी जो है गायत्रीरूप बाणी सो शब्द जो है राम नाम ताको लैकै प्रगट भई है सो मङ्गलमें कहि आये हैं । तौने शब्दकी शक्तिते तानारीके हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भये हैं । अर्थात् रामनामको जगत् मुख अर्थ लैकै वहै बाणी रूप नारी वेद शास्त्र औ सब संसार प्रगट कियो रामनाममें ये सब भरे हैं सो मैं अपने मंत्रार्थमें लिख्यो है सो राम नाममें जो साहब मुख अर्थ है ताको छिपाय दियो ॥ १ ॥

तेतिरिये भगलिंग अनंता । तेउ न जानै आदिउ अंता ॥ २ ॥

तौन जो है तिरिया ताते अनंत भग लिंग होत भये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रनमें अनेक वेदनमें विचार करत २ थके तबहुं वह राम नामके अर्थको अन्त न पाये ॥ २ ॥

बखरी एक विधा तैं कीन्हा । चौदह ठहर पाटि सोलीन्हा ॥ ३ ॥

एक बखरी यह ब्रह्मांड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदह ठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेते भये ॥ ३ ॥

हरि हर ब्रह्म मंहतौ नाऊ । ते पुनि तीनि बसाव लगाऊ ॥ ४ ॥

औ हरि हर ब्रह्मा जौन ब्रह्मांड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोही ब्रह्माण्ड में तीनि गांव बसावत भये तहांके मालिक होत भये औ जे प्रथम ब्रह्मादिक देवता भये हैं तेई ब्रह्मादिकनके अंगनके देवता होत भये । सो मङ्गलमें लिखि आये हैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति औ पुनि भगवान्की नाभीमें कमल भयो तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते उत्पत्ति भई है औ ब्रह्मवैवर्तमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति

पुरुषके अंगनते भईहै । औपुनि भगवान्की नाभीमें कमल भयोहै जौ मंगल में कहिआये हैं, तेहिते ब्रह्माभये हैं तिनतें उत्पत्ति भई है । औ तैनै बात या रमैनहिं में कहै हैं कि पहिले इच्छा रूपी नारीते ब्रह्मादिक भये । औ पुनि ब्रह्माण्डांतरानुवर्ती ब्रह्मादिकभये ते सतोगुणाभिमानी जे विष्णुते ऊपर देवलोक बसावतभये ते ताके मालिक । और जो गुणाभिमानी जे ब्रह्माते मध्यके लोक बसाये ते तहांके मालिक । औ तमोगुणाभिमानी जे महादेव ते नीचेके लोक बसाये तहांके मालिकं होतभये । सो येतीनौ तीन लोकके मालिक होत भये सोये तीनों तीन लोकके मालिकैं हैं परंतु तैन तैन लोकनकी प्रधानता देखाई है ॥ ४ ॥

तेपुनिरचिनिखंडब्रह्मांडा । छादर्शनछानवेपखंडा ॥ ५ ॥

पेटहिकाहुनवेदपढ़ाया । सुनतिकरायतुरुकनहिंआया॥६॥

तेतीनों देवता मिलिकै ब्रह्मांड में छा दर्शन छानवे पाखंड बनावत भये ॥ “ योगी जंगम सेवरा संन्यासी दुरवेश । छठ्यें कहिये ब्राह्मण छाघर छाउप-देश ॥ दशसंन्यासी बारहयोगी चौदहशेष दखाना । बौध अठारहि जंगम अठारहि चोबिस सेवरा जाना ॥ ” औ प्रथम उत्पत्तिमें कहि आये हैं ब्रह्मा विष्णु महेश ते यह ब्रह्मांडके ऊपर अपने लोक बसाये फिरि एक २ अंशतें अनंत कोटि ब्रह्मांडन में बसे जाय ५ औ पेटैते कोऊ वेद नहीं पढ़ि आया कहें गायत्री नहीं पढ़्यौ बरुवा नहीं भयो औ न पेटैते सुनति करायकै तुरुक बनिआया है ताते हिन्दू तुरुकको जीव एकईहै सोतो ना जान्यो वेद किताब की वाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेद द्वैगये वेद किताबको भेद न जान्यो ॥ ६ ॥

नारीमोचित गर्भप्रसूती । स्वांगधरै बहुतैकरतूती ॥ ७ ॥

तहियाहमतुमएकैलोहू । एकैप्राणवियापलमोहू ॥ ८ ॥

गर्भबासमें जबतुम रहेहो तब न हिन्दूए रह्योहै नातुरुकरह्यो न वेद पढ्यो न तिहारी सुन्नति भई । जब गर्भते निकसे तब कर्म करिकै हिन्दू मुसलमान द्वैगये । बहै नारी जो है वाणी ताही में चित्त लगायकै कर्म करिकै नाना

स्वाग हिंदू मुसल्मान भये ७ सो कबीरजी कहैं कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहं शुद्ध रहैहौ । जब तुमहीं मन प्रकट कियो है औ इच्छा भई है तब हम तुम एकही लोहू रहे हैं अर्थात् एकई जाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहे हैं । सो एक मोह कहे भ्रम जो है मन सो व्याप्त हैकै नाना भांतिन तुमको कराइ दियो कि हम हिंदू हैं हम तुरुकहैं इत्यादिक सबसों ॥ ८ ॥

एकैजनी जनासंसारा । कौनज्ञानते भयोनिनारा ॥ ९ ॥
भावालकभगद्वारेआया । भगभोगेतेपुरुषकहाया ॥ १० ॥
अविगतिकीगतिकाहुनजानी । एकजीभकेतकहौबखानी ११

एक जनी कहै उत्पत्ति करनहारी माया औ एकै जना कहे उत्पत्ति करनहार मनका अनुभव ब्रह्ममाया सबलित इनहीं ते सब जगत् है तुम कौन जानते हिंदू तुरुक नाना जाति बनाय लिये निनार निनार ९ जब भगके द्वारे आया तब बालक कहाया औ जब भोगन लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जो है धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानै है मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ॥ ११ ॥

जोमुखहोइजीभदशलाषा । तौकोइआयमहतौभाषा ॥ १२ ॥

जो एक मुखमें लाख जीभ होय तौ कोई कहे महन्त वही ब्रह्मको भाषे अर्थात् न भाषे यह याकुअर्थ है काहेते कि वाके तौ कुछ रूप रेखा हई नहीं है धोखही है अथवा महंत जे ब्रह्मादिक अपने २ लोकके मालिक जिन जगत्की उत्पत्ति कियो है तिनके करतव्यताको जो काहूके दशलाख जीभ होय कहै तौ का कहिसकै अर्थात् नहीं कहिसकै ॥ १२ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीर पुकारिके, ई लयऊ व्यवहार ॥
रामनाम जानेबिना; भव बूढ़ि मुवा संसारा ॥ १३ ॥

कबीरजी पुकारिकै कहैं कि या जो उत्पत्ति वर्णन करिआये सो सब लय कहे नाशमानहै । औ ऊ कहे वह धोखा ब्रह्मको जो वर्णन करि आये सो व्यवहा-

रै मात्रहै अर्थात् समुझेते धोखाहीहै कुछ वस्तु नहीं है सो एक विना रामनामके जाने कहे साहबको जो बतवैहै रामनाम सो अर्थ बिनजाने मायाको बताया जो है राम नाममें संसार औ ब्रह्माको अर्थ तौनहै भव कहे भयरूप समुद्र तौनेमें संसार बूडि मुवा इहां लक्षणा है संसार बूडि मुवाकहे संसारी जीव बूडि मुये ॥ १३ ॥

इतिदूजीरमैनीसमाप्तम् ।

अथ तीसरी रमैनी ।

चौपाई ।

प्रथम अरंभ कौनके भाऊ । दूसर प्रकट कीन सोठाऊ ॥१॥
 प्रकटेब्रह्म विष्णु शिव शक्ती । प्रथमैभक्ति कीन जिव उक्ती ॥२॥
 प्रकटेपवन पानी औ छाया । बहुबिस्तारकै प्रकटी माया ३॥
 प्रकटे अंड पिंड ब्रण्हडा । पृथिवी प्रकटकीन नवखंडा ॥४॥
 प्रकटे सिध साधक संन्यासी । ये सब लागिरहे अविनासी ५॥
 प्रकटे सुरनर मुनिसवझारी । तेऊ खोजि परे सबहारी ॥६॥
 साखी ॥ जीउ सीउ सब प्रकटे, वे ठाकुर सब दास ॥
 कविर और जानैनहीं, एक रामनामकी आसा ॥७॥

प्रथम अरंभ कौनके भाऊ । दूसर प्रकटकीनसोठाऊ ॥ १ ॥
 प्रकटेब्रह्मविष्णुशिवशक्ती । प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती ॥२॥

प्रथमअरंभ कौनके भाऊकहे भयो औ दूसर कौन प्रकटकियो जाते ये सब व्यवहारहैं १ प्रथम अनुमान समष्टिजीवकियो मनके अनुभव ते ब्रह्म भयो औ बाणीभिई ताते ब्रह्मा विष्णु महेशादिक देवता प्रकटभये उनकी सब

शक्ति प्रकटभई औप्रथम ही जीव जेहै सो अपनी उक्तिकरिकै उक्तदेवतनकी भक्तिकरत भयो अर्थात् नाना उपासना बांधिलेतभये ॥ २ ॥

प्रकटेपवनपानीऔछाया । बहुविस्तारकैप्रकटीमाया ॥३॥
प्रकटेअंडपिंडब्रह्मण्डा । पृथिवीप्रकटकीननवखण्डा ॥ ४ ॥

वे जे ब्रह्मादिकहैं ते अपनो अपनो ब्रह्माण्ड करतब करतभये तेहिसे पवन पानी औछाया बहुतविस्तारकैकै मायाप्रकटभई । औचारि जे खानिहैं अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज्ज प्रकट भये जे ब्रह्मांडमें हैं औ नवखण्ड पृथ्वी प्रकट भई ॥ ३ ॥ ४ ॥

प्रकटेसिधसाधकसंन्यासी । ईसबलागिरहेअबिनासी॥५॥
प्रकटेसुरनरमुनिसबझारी । तेऊखोजिपरे सबहारी ॥ ६ ॥

औ सिद्धसाधक संन्यासी प्रकटहोतभये ये संपूणजे हैं ते अबिनाशीमें लागिरहे हैं अर्थात् अबिनाशीको खोजैहैं ॥ ५ ॥ औसुरनरमुनिसब झारिकै प्रकटहोत भये तेऊ अबिनाशीको खोजत खोजत हारि परे तिनहूं न पायो ॥ ६ ॥

साखी ॥ जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सबदास ॥
कबिर और जानै नहीं, एकरामनामकी आसा॥७॥

जीव औ सीव कहे ईश्वर सो सब प्रकटे सो ईश्वर तो ठाकुर भयो औ सब जीव दासभये । सोकबीरजी कहै हैं कि हमतो दूसरोकाहूको नहीं जानै हैं न अबिनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानै, न सगुणईश्वरन को जानै । निर्गुण सगुण के परे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके एक रामनामकी हमारे आशहै कि वही हमारो उद्धार करैगो अथवा कबीर कहै काया के बीर जीव ! और को तैनाजानु एक रामनामही को जानु यही संसार ते छोड़वैगो ॥

इति तीसरी रमैनी समाप्तम् ।

अथ चौथीरमैनी ।

चौपाई ।

प्रथम चरणगुरुकीन विचारा । करतागावै सिरजनहारा ॥१॥
 कर्म करिकै जग बौराया । शक्ति भक्तिलै बांधिनिमाया ॥२॥
 अद्भुतरूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ॥३॥
 गुणिअनगुणीअर्थनहिं आया । बहुतकजनेचीन्हिनहिं पाया ॥४॥
 जो चीन्है तेहि निर्मल अंगा । अनचीन्हे नल भयेपतंगा ॥५॥
 साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कह गावहू, बानी परी न चीन्हि ॥
 आदि अंत उत्पति प्रलय, सब आपुहि कहि दीन्हि ॥६॥

प्रथमचरणगुरुकीनविचारा । करतागावैसिरजनहारा ॥१॥
 कर्म करिकैजगबौराया । शक्तिभक्तिलैबांधिनिमाया ॥२॥

प्रथमचरणकहे जगत्की आदिमें गुरुकहे साहब विचारकीन कहेसुरति दीन कि हमको जानै, हम हंसरूपदै आपनेधामकोलै आवैं। सो जीवजेह ते वा चैतन्यता पाय जगत्मुख है जगत्उत्पन्नकरिकै संसारीहैगये सो करता तो साहबहैं जिनकी चैतन्यता पायजीव समष्टिते व्यष्टिभये तौनेसाहबकी करतव्यता तो न जान्योब्रह्मादिक नहीको सिरजनहार मानतभये ॥ १ ॥ तेईब्रह्मादिक नानाकर्मनको प्रतिपादन करिकै जगत् बौरायदियो औशक्ति जो है गायत्री तौने के उपदेशकी विधिकैके ताकी भक्ति आपकैके औजीवनको कराय कै माया में बांधदियो ॥ २ ॥

अद्भुत रूप जातिकीबानी । उपजीप्रीतिरमैनीठानी ॥ ३ ॥
 गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया । बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ॥४॥

अद्भुत रूप औ नाना जातिकी जोहै कर्म प्रतिपादक ब्रह्मादिकनकी बाणी अर्थात् अद्भुतरूपनके हैं ध्यान जिनमें कहेकाहूके बहुत मूढ़ काहूके बहुत हाथ

काहूके बहुतपांय काहूके मूडनहीं (छिन्नमस्ताको ध्यान् लिखै है कि, हाथमें मूँडलीने है गलेमें लोइ चले है सो मुहेमें परैहै ताको पीये है) । और नाना-भांतिकी जो है कर्म-प्रतिपादिका बाणी अर्थात् अद्भुत रूपनकाहै ध्यान तिनमें यहिरीति के देवतनकी उपासना करैहै औनाना जातिकीकहे नाना तरहकी है उपासना बर्णन जिनमें ऐसी उनकी बाणीसुनके तिन तिन देवनपर जीवनकी प्रीति उपजतभई । औ रमैनीठानी जो कह्यो सो अपने अपने उपास्य देव तनकी रमनी कहै कथा सो ब्रह्मादिकन की बाणीको आशयलेके बनाय लेते भये ॥ ३ ॥ गुणीजेहै सगुण उपासनावाले तेजीवको स्वस्वरूप दासरूपता खोजनलगे औअनगुणी जेहैं निर्गुणवाले ते जीवको अनुमान जो ब्रह्मत्वरूपता खोजनलगे सो वा वेदतात्पर्यार्थ दुइमें कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरेजनेबहुत-बिचारकियो परंतु न चीन्हपायो ॥ ३ ॥ ४ ॥

जोचीन्है तेहिनिर्मलअंग । अनचीन्हेनलभयेपतंगा ५

जे यह धोखाको जानैहैं कि यह धोखाहै तिनहीं को जानिये कि इनके पारखहै । यहबात बिनाजाने जगत्के जेजीवहैं ते जैसे दीपकमें पतंग जरिजा-यहै ऐसे वह धोखामेंपारिकै नाना दुःखपावैहै । औ जोकोई साहबको चीन्हैहै जाको नेतिनेति वेदकहैहैं औ पारिख करैहैं ताके निर्मलअंग द्वैजायहै अर्थात् हंसरूप पावै है । काहेते कि वह साहब तो निर्गुण सगुण मनबचनके परैहै सोजब वाको चीन्ह्यौ तब वाहू मनबचनके पर द्वै जायहै ॥ ५ ॥

साखी॥चीन्हि चीन्हि कह, गावहू वाणीपरी न चीन्ह ॥

आदिअंत उत्पत्तिप्रलय,सवआपुहिकहिदीन्ह ॥६॥

चीन्हौ चीन्हौ तुमकहा गावहुहौ अर्थात् कहाकहौहौ वहबाणीतो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते बाणी आपही कहतजाय है कि जाकी उत्पत्तिहोयहै ताकी प्रलयभी होय है; जाकी आदि होयहै ताको अंतहू होयहै, तातेजेते पदार्थ जगत्में बाणी आदिदैकैहैं ते मन बचनके परे नहीं हैं । औ जोचीन्हैहै ताको निर्मल अंग होयजायहै । यहजो कह्यो ताते यहदेखाय दियो कि जब

मनादिक एको नहीं रहिजायहैं, तब मन वचनके परे जो पुरुषहै सो वह मुक्तजीवको हंसरूप देइ है ताको पायकै तेहिहंसरूपके इन्द्रिनते साहबको देखैहैं सो याकोममाण बेदमें है ॥ “मुक्तस्यविग्रहोलाभः” इतिकठशाखायाम् । सो यह बिचारनहीं करै हैं बाणीकेफेरमें ब्रह्म हूं भूलिगये सो आगे कहैहैं ॥ ६ ॥
इतिचौथीरमैनीसमाप्तम् ।

अथ पांचवीं रमैनी ।

चौपाई ।

कहँलौंकहाँयुगनकीवाता । भूलेब्रह्म न चीन्है त्राता ॥ १ ॥
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई । विवि अक्षरलै युगतिबनाई ॥ २ ॥
विविअक्षरकाकीनविधाना । अनहदशब्दज्योतिपरमाना ॥ ३ ॥
अक्षरपढ़िगुनिराहचलाई । सनकसनन्दनकेमनभाई ॥ ४ ॥
वेदकितावकीन्हविस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा ॥ ५ ॥
चहुंयुगभक्तनबांधलवाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ॥ ६ ॥
भैभै पृथ्वीचहुंदिशिधावै । सुस्थिरहोयनऔषधपावै ॥ ७ ॥
होयभिस्तजोचितनडोलावै । खसमैंछोड़िदोजखकोधावै ॥ ८ ॥
पूरुब दिशा हंसगति होई । है समीप सँधि बूझै कोई ॥ ९ ॥
भक्तौभक्तिनकीनशृंगारा । बूढ़िगयेसबमांझहिंधारा ॥ १० ॥
साखी ॥ विनगुरुज्ञानैदुन्दभो, खसमकही मिलिवात ॥
युगयुग कहवैया कहै, काहु न मानीजात ॥ ११ ॥

कहँलौंकहाँयुगनकीवाता । भूलेब्रह्म न चीन्है त्राता ॥ १ ॥
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई । विवि अक्षरलै युगतिबनाई ॥ २ ॥

युगनकी बातमैंकहांलेंकहीं मनबचननकें परेजोहै ताकीबाटब्रह्मो भूलिगयेहैं जो बाट पाठहोयहै तोयह अर्थहै औजोत्राता पाठ होयहै तो यहअर्थ है कि सबके त्राताकहे रक्षक जो साहब ताको ब्रह्मा भूलगयेहैं १ जौन रामनामको अर्थ जग-दमुख लैकै बाणी औसमष्टि जीव आदि जगत् रच्योहै तौनेयुगतिब्रह्मोविष्णु महे-शके मन में भावत भई सो दूनो अक्षर रामनाम को लैकै रचत भये ॥ २ ॥

**विविअक्षरकाकीनविधाना।अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३॥
अक्षरपढ़िगुनिराहचलाई । सनकसनन्दनकेमनभाई ॥ ४ ॥**

ओई जे द्वै अक्षरहैं तिनको विधान करतभये (और जो बंधान पाठहोई नौ बंधान करतभये) । कहांविधानकियो कि ज्योतिरूपी जोहै आदिशक्ति रेफरूप अग्निबीज परा जाकोमंगल में पांचब्रह्ममें लिख्यो है ताहीते अनहद शब्द उठावत भये मनमें जो कुछ कहनेकी बासना आई चित्तमें सो मूलाधारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्यो कहे संकल्पउठ्यो तबवह ज्योति डोली ताते कछु पवनको सं-चारभयो ताते नादकी प्रकटता भई तब वह परावानी उठी सो पश्यंती मध्यमाह्वै त्रिकुटीके ऊपर मकारहै विन्दुरूपसहस्र कमलमें तहां टक्करपाय बैखरी येतीनरूप-ह्वैकैबाहरको आई । सो जहां अग्निको औपवनको संयोग होयहै तहां जोशब्द-होयहै सो अनहद कहवैहै । सो वह बाणी जो बाहर आई सोसम्पूर्ण अक्षर भै । तौने पढ़ि गुणिकै सनक सनंदन जे जीव हैं तिनके मनमें भावत भई अथवा सनकसनंदनादिक जे ब्रह्माकेपुत्र तिनके मनमें भावत भई सो वही राह चलावत भये ॥ ३ ॥ ४ ॥

वेदकिताबकीन्हविस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा ॥५॥

तेई अक्षरनको लेकै वेद किताब कुरान पुरान जेहैं तिनको बिस्तार करतभये । सो सबके मनमें फैलगैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमनमें जौन गैलनीकी लगी सोचलतभये । सोवहगैल तोभूलहीगये बहुतगैल ह्वैगई । अपने अपने मत नकी अपनी अपनी गैलकहैं कि यही सिद्धांतहै । तिहिते नानासिद्धांत ह्वै गये जोसिद्धांतहै ताको तो पावै नहीं । वेदादिकनको कुरानादिकनको कह-

नलगे कि अगमहै अपारहै काहेते कि नानामतहैं तिनमेंवेदकुरानको प्रमाण सब
 मेंहै सो एक सिद्धांतमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो
 धोखा ब्रह्महै सोई सबके सिद्धांतमें फैलगयो कहै ब्रह्मही रहिगयो अर्थात्
 अपने अपने मतनमें सिद्धांत वही ब्रह्महीको करत भये । सो वह धोखा तो
 अगम अपारहै काहूको मिलबइ नहीं कियो ॥ ५ ॥

चहुंयुगभक्तनवांधलवाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ॥ ६ ॥
 भैभै पृथ्वीचहुंदिशिधावै । सुस्थिरहोयनऔषधपावै ॥ ७ ॥

चारिहुयुगके नाना देवतनके जेभक्तहैं ते अपनी अपनी राह संसार छुटवेकी
 बांधत भये तबहू वह सिद्धांत न समुझि परयो काहेते कि बहुत राह द्वैगई
 रामनामके संसार मुख अर्थमेंहै तो सब मतबनेही हैं परंतु साहबमुख जो
 अर्थ है रामनामको ताको भूलही गये । भ्रमकी जो है मोटरी सो फटी कहे
 पण्डित भये पढ़े भ्रम नास्त्रकी उपायकरनलगे अर्थात् शास्त्रनके अर्थ बिचार-
 नलगे यही फटिबो है सो वह राह तो पाई नहीं बहुत राह द्वैगई तब नाना
 प्रकारकी शंकाउठी भ्रम फैलिरह्यो नाना शास्त्रनके सिद्धांतनमें वेदको प्रमाण
 सबहीमें मिलेहैं काको सांच कहैं काको असांच कहैं ताते शास्त्रनमें एको सि-
 द्धांत न करिसके ६ तब जीवजेहैं ते भै भै पृथ्वीमेंचारों ओर भ्रमन लगे खों-
 जनलगे एकहु मतको सिद्धांत नहीं पावैहैं सो यहरोगकी औषध, जो साहब-
 को जानै है ताही, बिरले संतके पासमें है सो तौ पावत न भये औरे और में लगे
 ताते स्थिर न होत भये ॥ ६ ॥ ७ ॥

होयभिस्तजोचितनडोलावै । खसमैंछोड़िदोजखकोधावै ॥
 पूरुबदिशाहंसगतिहोई । है समीप संधि बूझैकोई ॥ ९ ॥

जो चित्त न डोलावै स्वधर्ममें चले तौ भिस्त जो स्वर्ग सो होय है अथवा जौ
 नै जौने देवतनकी उपासना करैहै तिनके लोकजायहै अथवा यज्ञपुरुषकी आरा-
 धना करिकै स्वर्गजायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको

भुंलाइकै सब जीव दौरै हैं मुक्तकहांते होयँ । दोजख जो नरकहै ताहीमें परैहैं । इहांस्वर्गहूको नरकही मानिकै कहैहैं काहेते कि खसमके भूले जो स्वर्गहू जायगो तौ दुःखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ॥ ८ ॥ पूर्व दिशा कहे सबके पूर्व जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्धहैकै अपनेस्वस्वरूपको चीन्है तब साहब हंसस्वरूप देय है । सो वा साहबको बिचार कर्मके बाहिरैहै सो याकी जो संधिहै कहे बिचारहै सो समीपही है । जो अपने स्वरूपको चीन्है तौ साहब हंसरूप देवै करै परन्तु बूझत कोई कोई है ॥ ९ ॥

भक्तौभक्तिनकीनशृंगारा । बूड़िगयेसबमांझहिधारा ॥१०॥

ज्ञान मिश्रावाले जेभक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करतभये कहे बिचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं । वह मनकी धारामें बूड़िगये । कहां बूड़े ? कि यहसब मिथ्याहै यहकहतकहत एक अनुभव सिद्धांतराख्यो सो अनुभवजीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मनकी मांझ धारामें बूड़िगये ॥ अथवा साहबको छोड़िकै जे नाना देवतनके भजन करैहैं ते भक्त भक्तिनि कहावै हैं ते साहबको तो न जान्यो शृंगार करतभये कहे नानावेष बनावतभये कोई छिद्रनांकोकी ओर चंदनदियो कोई मृत्तिका दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानावेष बनावत भये ते सब संसाररूपी संमुद्रकी मांझ धारामें बूड़िगये ॥१०॥

सारखी ॥ विनगुरुज्ञानै द्रन्द्रभो, खसमकही मिलिबात ॥

युगयुग कहवैया कहै, काहू न मानीजात ॥११॥

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलिबात कही कहे अपनो रामनाम बतायो तामें द्वैअर्थ रह्यो एकसाहबमुख एकसंसारमुख सो आदिमङ्गल में लिखिआये हैं । सोसबते श्रेष्ठ गुरुसाहब तिनको ज्ञान तो नहीं भयो संसारमुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्रन्द्रकहे जन्ममरण दुःख सुख स्त्री पुरुष ज्ञान अज्ञान इत्यादिक संसारमें होतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि युगयुगमें कहनहार जो भैंहों कबीर सो कह्यो मेरीकही बात काहूसों नहीं मानी जातहै ॥ ११ ॥

इतिपँचईरमैनीसमाप्तम् ।

अथ छठी रमैनी ।

चौपाई ।

वर्णहुं कौनरूप औ रेखा । दूसर कौन आय जो देखा १
 औ ओंकार आदिनहिंवेदा । ताकर कहौं कौन कुलभेदा २
 नहिंतारागणनहिंरविचंदा । नहिंकछुहोत पिताके विंदा ३
 नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना । कोधरैनामहुकुमकोवरना ४
 नहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकर कहहु कौनकुलजाती ५
 साखी ॥ शून्यसहज मनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥
 बलिहारी तापुरुष छवि, निरालंब जो होति ६॥

वर्णहुंकौनरूपऔरेखा । दूसरकौन आय जो देखा १
 औ ओंकार आदि नहींवेदा । ताकर कहौं कौनकुलभेदा २
 वह जो अनिर्वचनीयहै ताको कौनरूप रेखावर्णनकरौं मैंहीं नहीं वर्णन करि
 सकौंहीं तौ दूसर कौन आयजोदेख्यो ॥ १ ॥ प्रणवको वेदहू नहीं जानेहैं
 काहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्मवेदनको आदि है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो
 ताहूको आदि है उसको कौन कुल भेद कहौं ॥ २ ॥

नहिंतारागणनहिंरविचंदा । नहिंकछुहोतपिताकेविंदा ३
 नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना । कोधरैनामहुकुमकोवरना ४
 नहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकर कहहु कौनकुलजाती ५

न तारागण न सूर्य न चंद्रमा न पिताको बिंदु एकौ नहीं रहे जाते सब
 उत्पत्तिहै ॥ ३ ॥ पृथ्वी अग्नि तेज, वायु आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम
 धरतभये औ काको हुकुम वर्णन करत भये ॥ ४ ॥ औ तहां न दिवस होत
 भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुषछवि, निरालंब जो होति ॥ ६ ॥

सहज शून्य जो (प्रकाश देखिपैरे) ब्रह्मताके मनके स्मरणते एक ज्योति प्रकटहोयहै सो सालंबहै, योगीजन ब्रह्माण्डमें देखै हैं । औ वह जो अनुभव ब्रह्महै सोऊ सालंबहै काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होयहै सो कबीरजी कहै हैं कि ये दोऊ सालंबहै कि तिनकी बलिहारी में कहां जाऊं सबके मालिक निरालंब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छविकी में बलिहारी जाऊँहीं साहब निरालंब काहेतैं कि जीवकी जेती सामग्रीहैं मनादिक इंद्रियनकरिकै ज्ञानकरिकै अनुभव करिकै साहब न देखेजायहैं न जाने जायहैं जब आपही अपना हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजायहैं औ आपही ते जानेजाय हैं तामें प्रमाण ॥ (सो जानै जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हें तुम्हें ह्वैजाई ॥ तुम्हरी कृपा तुम्हें रघुनन्दन । जानहिं भक्त भक्ति उरचंदन १) अर्थ है श्रीरामचन्द्र जाको तुमजनाई देहुहो सो जानै है । जो कहे हमारही जनाये कैसे जानैगो वेदशास्त्रतो सबजनौतैं तौ एकबड़ो अवरोधहै जबतुम्हारे जानवेके लिये शमदमादिक कियो हृदय शुद्ध भयो तब आपहीको मानैहै कि, महीं रामहैं सो तुमको कैसे जानिसकै । या हेतुते तुम्हारीकृपे ते तुमको जानैहै अथवा तुमको जानैहै तब तुमही ह्वैकै जानैहै तुम्हारे लोकको जायहै । अर्थात् । जब तुमने वाको हंसरूप दियो तब वह पांचौ शरीर ते भिन्नह्वैकै हंसरूपमें स्थितभयो तुमको जान्यो वह हंसस्वरूप कैसेहै तुम्हारी अनिर्वचनीयासभक्तिरूप जो चन्दनहै सो वाके उरमें लग्योहै ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमीनहीं आयसकैहै । जिनको कृपाकरिकै तुम हंसरूप देहुहो सो जानैहै तुमको सो ऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालंब तिनको कबीरजी कहैहैं कि मैं बलिहारी जाऊँहीं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ (धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदि । पौरुषोचाप्रतिद्वंद्वःशरैर्नजाहिवाणिम्) ॥ इतिबाल्मीकीये ॥ लक्ष्मण जीने मेघनाद के मारत में शपथ कियो है कि जोपौरुषमें अप्रतिद्वंद्वी श्रीरामहोय कहैपुरुषत्वमें वैसो दूसरो न होय तो हमारो

बाण मेघनाद का शिरकाटि छेड़ सो मेघनादको शिरकाटि लियो औ भागवत
 हूमें हैं ॥ (ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदंशिवविरंचिनुतंशरण्यम् ॥
 भृत्यार्तिहंप्रणतपालभवब्धिपोतंबंदेमहापुरुषतेचरणारविंदम् १) अर्थ हे महापुरुष
 तिहारेचरणारविंदकीहम बंदना करेहैं कैसे तिहारे चरणारविंदहैं कि सब
 कालमें ध्यानकरिबेके योग्यहैं औ परिभव जो तिरस्कार ताकेनाश करने-
 वाले हैं अर्थात् जो कोई ध्यानकरै है ताको तिरस्कार लोकमें कोई नहीं
 करैहै । औ मनोबांछित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रय भूत औ
 शिव विरंचि ते स्तुतिकरेगये शरण्यमकहे रक्षाकरनेमें समर्थ औ दासनके
 पीडा हरणवाले दीननके पालनवाले औ संसार समुद्रके नौकारूप । तामें प्रमाण
 कबीरजीको ॥ (साहब कहियेएक को, दूजा कहा न जाय । दूजासाहब जो
 कहै, बादबितंडैं आय) ॥ ६ ॥

इतिछठवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ सातवींरमैनी ।

(जीवमुख)

जहियाहोतपवनहिंपानी । तहियासृष्टिकौनउतपानी ॥१॥
 तहिया होत कली नहिं फूला । तहिया होत गर्भ नहिंमूला २
 तहिया होत न बिद्या वेदा । तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
 तहिया होत पिंड नहिं वासूनाधर धरणि न गगन अकाशू ४
 तहिया होत गुरू नहिं चेला । गम्य अगम्य न पंथ दुहेला ५
 साखी ॥ अविगति की गति क्याकहौं, जाकेगाँउ न ठाँउ ॥
 गुण बिहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ॥६॥

जहियाहोतपवननहिंपानी । तहियासृष्टिकौनउत्तपानी ॥ १ ॥

तहियाहोतकलीनहिंफूला । तहियाहोतगर्भनहिंमूला ॥ २ ॥

जहिया कहे जेहि समय सृष्टि नहीं रही जेहि समय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौन उत्पन्नकियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बालरह्यो न वृद्धरह्यो न गर्भरह्यो न गर्भको मूलबीज रह्यो ॥ २ ॥

तहियाहोतनविद्यावेदा । तहियाहोतशब्दनहिंखेदा ॥ ३ ॥

तहियाहोतपिंडनहिंवासू । नाधरधरणिनगगनअकासू ॥ ४ ॥

तहियाहोतगुरूनहिंचेला । गम्यअगम्यनपंथदुहेला ॥ ५ ॥

न वेदरह्यो न चौदहौ विद्यारहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःखरह्यो ३ न पिंडरह्यो न पिंडमें जीवको बासरह्यो न अधरकहे पातालरह्यो ना धरणिरहीं न आकाश रह्यो ४ न गुरूरह्यो न चेला रह्यो न गम्यकहे सगुणरह्यो न अगम्य कहे निर्गुणरह्यो औ दुहेला कहे दूनोपंथ नहींरहे ॥ ५ ॥

साखी ॥ अविगतिकीगतिक्याकहौं, जाकेगाँउनठाँउ ॥

गुणविहीना पेखना, काकहिलीजै नाँउ ॥ ६ ॥

वह जो अविगतिकहे अव्यक्त जो नहीं प्रकटहोय, धोखा ब्रह्म है निराकार ताकेगाँउ ठाँउ नहीं है वह गुणकरिके विहीन जो निर्गुणहै ताको पेखना कहे देखिबेको का कहिके नामलीजै कि यहै वातो कुछबस्तुही नहीं है ॥ ७ ॥

इति सातवीं रमैनीसमाप्तम् ।

अथ आठवीं रमैनी ।

(वेदांत विचार)

तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ईउपनिषद कहै सन्देशा ॥ १ ॥

अनिश्चय उनकेवड़भारी । वाहिकिवर्णकरै अधिकारी ॥ २ ॥

परमतत्त्वकानिजपरमाना । सनकादिकनारदसुखमाना ॥ ३ ॥

याज्ञवल्क्यऔजनकसँबादा । दत्तात्रयी वहै रसस्वादा ॥४॥
 वहै वसिष्ठ राममिलि गाई । वहै कृष्णऊधवसमुझाई ॥५॥
 वहै बात जो जनक दृढाई । देह धरे विदेह कहाई ॥ ६ ॥
 साखी ॥ कुल अभिमाना खोयकै, जियत मुवा नहिं होय॥
 देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावै सोय ॥७॥

तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ईउपनिषद् कहै संदेशा ॥ १ ॥

तौने धोखा ब्रह्मको जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिषद्को प्रमाणदैकै प्रतिपन्न
 करै हैं सो, औ सांच जो अर्थहै सो कबीरजी दोऊ तात्पर्य करिकै देखावै हैं ।
 तत्त्वमसी जो श्रुति उपनिषद्को उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसोकहै हैं
 संदेश कौन कहावै है कि बातको पूर्वापर नहीं समुझै बाकी कहनूति वासों कहि
 देई जो संदेशको हेतुपूछै कि कौनेहेतुते कह्यो है तो वह कहै हैं कि संदेश
 कहि दियो यह नहीं जानै हैं कि कौन हेतु ते कह्यो है सो ऐसे गुरुवा लोग
 श्रुति को तो पूर्वापर जानै नहीं हैं अक्षर मात्रको अर्थ करै हैं कि तत्त्वं ब्रह्मत्व
 असि तौन ब्रह्मतूही है सो जीवहीको अनुमान तौ ब्रह्महै जीव ब्रह्मकैसेहोयगो
 ब्रह्मतो ज्ञानस्वरूप है शुद्ध है माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसेहोतो तौ गुरु-
 वालोग कहैहैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो जीवहीको अनुमान तौ ब्रह्महै
 जीव ब्रह्मकैसे होयगो । सो श्रुतिको अर्थ यहहै कि पूर्वषोडश कलात्मकजीवको
 कहिआये हैं ताहीको कहै हैं कि त्वमसिं तौन षोडश कलात्म जीव है षोडश
 कला तोहिंमें हैं तू उनते भिन्न है शुद्ध है यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं
 समुझै हैं सो या बात मेरे तत्त्वमस्यार्थबादमें विस्तारतै ॥ १ ॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी । बाहिकिवरणकरैअधिकारी॥२॥

ऊ कहे वह जो धोखा ब्रह्महै ताहीकी निश्चय उनकेबड़ीभारीहै बाहीकी
 बरण कहे वही धोखा ब्रह्मको अधिकारी जे चेलाहैं तिनको बरणकरै है अर्थात्

अंगीकार करायदेइ है । परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं जानेइ जे ज्ञाने हैं तिनको कहैहैं ॥ २ ॥

परमतत्त्वकानिजपरवाना । सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा । दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको निजते परमानत भये याहीहेतुते सनका-
दिक औ नारदजैहैं ते सुखजानत भये अर्थात् सुखीहोतभये भाव यहहै कि जे
कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अपने ते परमानैहैं तेई सुखीहोयहैं ३ औफिर
कहै हैं याज्ञवल्क्य औ जनकको सम्बाद भयोहै सो याज्ञवल्क्य कह्यो जोपरम
तत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजो जान्योहै औ वही तत्त्व दत्तात्रयी चौबीसगुरुव-
नाय संसारते वैराग्यकैकै तात्पर्य वृत्तितेजान्यो है ॥ ४ ॥

वहैवशिष्ठराममिलिगाई । वहैकृष्णऊधवसमुझाई ॥ ५ ॥
वहैवात जो जनकटढ़ाई । देह धरे बिदेह कहाई ॥ ६ ॥

वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको मिलिकै गायकहे कहिकै वशिष्ठजी
जान्यो है औ वही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश
कियोहै ५ वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको दृढस्मरण कैकै देह धरे
जनकजी बिदेह कहावत भये इहां द्वैजनक जो कह्यो सो वा वंश में एक जनक
नाम करिकै राजा भये है तेहिते बिदेह होत आये और एक रघुनाथ जी के
इवसूर शृध्वज भये हैं तिनको जनक कहत रहे हैं तिनको कहा है सो वे
और जनक हैं । ये और जनक हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियतमुवानहिंहोय ॥
देखत जोनहिंदेखिया, अदृष्टकहावे सोय ॥ ७ ॥

ऐसे जे परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमान खोयके
कहे त्यागिकै जियतै मुवा असनाभये अर्थात् हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीर
ते भिन्न ना भये । देखत जो ना देखै सो अदृष्टि कहावै सो परमतत्त्व जे श्री-

रामचन्द्र हैं तिनको वेद, पुराण, कुरान, शास्त्र, महात्मा इनकेद्वारा देखतऊहैं
औ जिनको बर्णन करिआये सनकादिक महात्मन को उद्धार ह्वैगयो यहौ ज्ञान-
दृष्टि देखतऊ हैं परन्तु ये मूर्ख जीव गुरुवालोग ना जाने तेहिते अदृष्टि कहावैं
हैं कहै आँधरे कहावैं हैं । परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण । (रामएवप
रंतत्त्वं श्रीरामोब्रह्मतारकम् ॥ इतिहनुमदुपनिषद्) जो यह कहौ शुकसनकादिक
येऊ न जान्यो तौ अब को जानैगो नास्तिकपना आवै बस्तु मिथ्या होय है
ताते साधु तौ जानतई हैं जिनको साहब जनाय दियो है कबीरौजी कहै हैं ॥
(ध्रुवमहादउबारिया सोहरिहमरेसाथ । हमको शंकाकछुनहीं, हमसेवैं रघुनाथ)

इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ नवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बांधे अष्ट कष्ट नौ सुता । यमबांधे अंजनिके पूता ॥ १ ॥
यमकेबाहनबांधिनिजनी । बांधेसृष्टिकहालौंगनी ॥ २ ॥
बांधे देव तैंतीस करोरी । सुमिरतबंदि लोहगैतोरी ॥ ३ ॥
राजासुमिरै तुरियाचढ़ी । पंथीसुमिरि नामलैबढ़ी ॥ ४ ॥
अर्थ विहीनासुमिरैनारी । परजासुमिरैपुहुमीझारी ॥ ५ ॥
साखी ॥ बँदि मनाय फल पावहीं, बँदि दिया सो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशि दिन नामहि लेव ॥ ६ ॥

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यमबांधे अंजनीके पूता ॥ १ ॥

अष्ट जे अष्टाङ्ग योगहैं औ कष्ट जो बिज्ञानहै तेहिते बांधिगयो धोखा ब्रह्म-
को बिज्ञानरूपकष्टहै तामें प्रमाण ॥ (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखेदहवद्भिरवाप्यते) ॥
इतिगीतायां ॥ श्रेयःश्रुतिभक्तिमुदस्यते विभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये । तें-

षामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यंयथास्थूलतुषावघातिनाम् ॥ इति भागवते) औ नौ सूतकहे सगुना जो नवधा भक्ति है तेहिकरि कै बांधिगयो औ यमकहे दुई बिद्या औ अबिद्या तेहिकरि कै अंजनी जो माया ताके पुत जे जीव हैं ते सब बांधि गये ॥ १ ॥

यमकेवाहनवाँधिनिजनी । बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी ॥ २ ॥
बाँधे देवतेंतीस करोरी । सुमिरतबंदिलोहगैतोरी ॥ ३ ॥

औ यम जे बिद्या अबिद्या दूनों मायाहैं तिनके सब जीव बाहन भये । काहेतैं कि उनहींको ढोवन लगे उनहींकी चाल चलन लगे औ वै जे दूनों मायाहैं ते बांधिनिजनी कहे फेरिफेरि जीवनको उत्पन्न करि कै संसार दैकै बांधि लियो औ शीशमें चढ़ी रहती हैं सो अनादि कालते बाँधीजो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनको सुमिरतमात्रहीमें बाँधि कहे लोहेकी बेड़ी में परिके तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिर तमात्रहीमें बन्दी कहे लोहेकी बेरी में परिके तोरि कहे मरि गये अथवा तेतीस कोटि देवता बांधे गये तिनके सुमिरत मात्रहीबन्दीकहे लोहेकी बेरीमें परिके तोरि कहे मारेगये अथवा तेतीसकोटि देवता बांधेगये तिनके सुमिरतमात्रमें का बन्दि लोहेकी बेरी जीव तोरिगये ? नहीं तोरिगये ॥ ३ ॥

राजासुमिरै तुरियाचढ़ी । पंथीसुमिरि नामलैवढी ॥ ४ ॥
अर्थबिहीना सुमिरैनारी । परजासुमिरैपुहुमीझारी ॥ ५ ॥

तुरिया अवस्था को नामहै तामें ज्ञानी लोग चढ़ी कहे आरूढ हैंकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहै हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरै हैं औ पंथी जे अनेकपंथ चला वन वालेहैं ते नानामतके पंथमें आरूढ़हैं अपने अपने इष्टदेवनके नामलैकै साधन में बढेहैं सोयहौ बिरही हैं ४ अर्थ बिहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य ते त्यागि बनमें बसिकै अपने इष्टदेवनको सुमिरै हैं ते औ पर जो ब्रह्म है तामें जो जायोचाहै सारी पुहुमी सहित सुमिरैहै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्मही देखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो माया है ताहीको सुमिरैहैं काहेते कि जहांलौं मन जाय है तहां लौं सब माया है ॥ ५ ॥

साखी ॥ बँदिमनायफलपावहीं, बँदिदियासोदेव ॥

कहकबीरतेऊबरे, निशिदिननामहिँलेव ॥ ६ ॥

बंदि कहे विद्या अविद्यारूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौनै फल-
पावै हैं अर्थात् जे स्वर्गादिक की चाह करैहैं ते लोहेकी बेरीमें परे । जे अहं-
ब्रह्मास्मि मानेते सोने की बेरीमें परे । सो जोने इष्टदेवतनको मनाये सोब-
न्दीही फल देतभये अथवा ते फल देवते दियोहै जिन उपासना कियोहै बन्दि-
में नाय कहे बन्दिमें डारिदिये हैं तेई फल पावै हैं । अर्थात् स्वर्गादिक जे
फलहैं तेसब बंदिमें डारनवारे हैं । सो बंदि डारनवारो जे फलदेय हैं तेकादेव
हैं ? नहीं हैं सो कबीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचंद्र को नाम निशिदिन लेयहैं
तेई उबरे हैं ॥ ६ ॥

इति नवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथदशवीं रमैनी ।

चौपाई ।

राही लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही ॥ १ ॥

आई करगी भो अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता ॥ २ ॥

बुतापहिरयमकरै पयाना । तीनलोकमें कीन समाना ॥ ३ ॥

बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू । पार्वती सुत बांध गणेशू ॥ ४ ॥

बांधेपवन पावक नभनीरू । चन्द्र सूर्य बांधे दोउ वीरू ॥ ५ ॥

सांचमन्त्र बांधेसबझारी । अमृत वस्तु न जानै नारी ॥ ६ ॥

साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भये कित लोग ॥

कहहिँ कविर कामोनहीं, जीवह मरण न योग ॥ ७ ॥

राही लैपिपराहीबही । करगीआवतकाहुनकही ॥ १ ॥

राहीकहे सुराहके चलनवाले औ पिपराही कहेपीपरकी बनिका की नाई अनेक
मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं तिनहूं को लैकै संसारसागर में

बहतभये । करगी बूड़ाकोजलनो छिटकैहै ताको कहैहैं। सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूपबूड़ाहै ताकेआवतमें काहुनकही कियाधोखाब्रह्ममेंनपरोबूड़िजाउगे ॥ १ ॥

आईकरगीभोअजगूता । जन्मजन्मयमपहिरेबूता ॥ २ ॥

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि, जन्म जन्म कहे जब जब ब्रह्मांडनकी उत्पत्तिभई तब तब यम पहिरे बूता कहे यमको काल निरंजन जेहैं तिनको बूता कहे पराक्रम काल पहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़है निरंजनै को पराक्रम लैकै जीवनको मारैहै ॥ २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना । तीनिलोकमोकीनसमाना ॥ ३ ॥

बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू । पार्वती सुत बांधगणेशू ॥ ४ ॥

बँधेपवनपावकनभनीरू । चंद्रसूर्य बाँधे दोउबीरू ॥ ५ ॥

वही निरंजन को बुताकहे पराक्रम काललैकै पयान कियो सो छव दिन पक्ष मास वर्ष युग कल्परूप करिकै तीनलोकमें समाइ जातभयो ॥ ३ ॥ जौन काल तीनलोकमें समानो ताहीमें ब्रह्मा विष्णु महेश षण्मुख गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाण रूपते सब बँधतभये ॥ ४ ॥ अरु ताहीमें पवन औ पावक औ पानी औ चन्द्र सूर्य नभ सब बँधत भये ॥ ५ ॥

सांचमंत्र सबबांधे झारी । अमृत वस्तु न जानै नारी ॥ ६ ॥

झारादैकै जे साहबके सांचमंत्रहैं तिनहुंको काल बांधिलियो काहेते कि जो साहबके मंत्रको अर्थप्रभाव सोई आवरण है औ साहबको ज्ञानरूप अमृत वस्तु जानि परत भये नारी जो आवरणकैलियो माया तामेंपरे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तौ हमारेमारे न मरैंगे याही हेतुते बांध्योहै ॥ ६ ॥

साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भये कित लोग ॥

कहैंकविरकामोनहीं, जीवहमरन न योग ॥ ७ ॥

अमृत वस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौने कुत्सित संसारमें तू मगन भयो कौन साहब जो कामोनहीं अर्थात् कामें नहीं है सबहीमें है सो

ऐसो अमृत वस्तु साहब समीपई है वा जीवका जननमरण योगहै अर्थात् नहीं है व्यंग्यते या कहैहैं कि जीव महामूढ़है । काहेते जो साहब को जानि लेइ तो जन्म मरन छूट जाई काहे ते के रक्षक साहबही है । अथवा जिनको सांच मंत्र माने रहे ते तो सब बांधिगये अमृत वस्तु जो रामनामको साहबमुखअर्थ सो जानतही नहींहै याते जनन मरण न छूटतभयो ॥ ७ ॥

अरु जो प्रथम तुकमें लोइ और दूजे तुकमें जीवहिमरन नहोइ ऐसा पाठ होवे तौ यह अर्थ कि, लोइ कही लपट जाइहै प्रकाश तौने ही भै सब लीन भये, जो कहो लीन भये जीव न रहिगये तो जीव बनेहैं काहेते कि, जीवको मरन नहीं होइहै । वह ब्रह्मका मैं नहीं ?

इति रमैनी दशवीं समाप्तम् ।

अथ ग्यारहवीं रमैनी ।

गुरुमुख । चौपाई ।

आँधरगुष्टिसृष्टिभैवौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी ॥ १ ॥
 ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी । देवन सहित ठग्यो त्रिपुरारी ॥ २ ॥
 राज ठगौरी विष्णुहिं परी । चौदह भुवन केर चौधरी ॥ ३ ॥
 आदि अंतजेहि काहु न जानी । ताको डरतुम काहे मानी ॥ ४ ॥
 ऊ उतंग तुम जाति पतंगा । यमघर किहेहु जीव कै संग ॥ ५ ॥
 नीमकीट जस नीमपियारा । विषको अमृत कहै गँवारा ॥ ६ ॥
 विषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूल गो खोई ॥ ७ ॥
 विष अमृतगो एकही सानी । जिन जाना तिनविषकै मानी ८ ॥
 कहा भये नल सुध बेसूझा । विनपरचै जग मूढ़ न बूझा ॥ ९ ॥
 मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशा रहई ॥ १० ॥

साखा ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुये कि वाजीढोल ॥

स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानी रहिगाबोल ॥ ११ ॥

आँधर गुष्टि सृष्टिमै बौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी ॥ १ ॥

साहब कहैहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे आँधरहैं ते माया औ निराकार धोखा ब्रह्मयाहीकी गोष्टीजोवार्ता सो करतेभये । ताहीमें सारीसृष्टिबौरीहै जातभई कोई तौ मैही ब्रह्महौं यहमानि अपने को मुक्तमानत भये, कोई जीवात्मैको मानै कोई शूत्रहिको मानतभये कोई मायामें परि नानादेवत-नकी उपासना करि अपनेको भक्तमानत भये । सो यही ठगौरी जो माया है सो तीनोंलोकमें लागतभई सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

ब्रह्महिंठग्योनागसंहारी । देवनसहितठग्योत्रिपुरारी ॥ २ ॥

राजठगौरी विष्णुहिंपरी । चौदहभुवन केर चौधरी ॥ ३ ॥

मायाब्रह्माकोठग्यो ते संसार की उत्पत्ति करनलगे शेषनागको संहारिकै कहेबांधिकै नागकहजाई जो पाठहोय तौ मायाब्रह्मा को ठगिसि औ शेषनाग कहँजाइकै ठगिसि सौ शेषनाग पृथ्वीको भारशीशमें धरतभये । देवन सहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमेंलगे । देवता अपने अपने काममें लगे २ औ चौदह भुवन को चौधरी विष्णुको करिकै ठग्यो ते संसारको पालन करनलगे । याहीरीतिते मायाते जेगुणाभिमानी रहे तिनको सबकोठग्यो ॥ ३ ॥

आदिअंतज्यहिकाहुनजानी । ताकोडरतुमकाहेनमानी ॥ ४ ॥

फिरिकैसीहै माया जाको आदि अंतकोई जनबई न कियो कोहेते न जान्यो वा कुछबस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्रहै । जेतोपदार्थ देखैहै सुनैहै कहैहै सो सबत्रिगुणमय है । गुण न आत्मईमें है न ब्रह्महीमें है । ताते ये सब मिथ्या-हीहैं । औ धोखा ब्रह्ममिथ्याहै कैसे सो कहै हैं । सबको निराकरण करतकरत जो वा रहिजाय है ताही को मानौहैं कि “ सो ब्रह्महमहैं ” ताहूको मूलअ-

ज्ञान कहाँ सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशमें बिचारिदेखो तुमहीं रहिजा-
उहौ, तुम्हारोई अनुमान ब्रह्महै, ताते मिथ्याही है । जब तुम्हीं रहि गये तब
तुममें तो माया ब्रह्मते छूटनेकी सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्यहोती तौ पहिलेही
ते तुमको काहे को बांधिलेती । याते तुम डेराउहौ कि, हमकैसेकै छूटेंगे ।
सो यामाया औ धोखाब्रह्मका डर तुम काहेको मानतेहौ । मैं जो अनिर्बचनी-
यहौ ताके तुम अंशहौ तुमहूँ अनिर्बचनीय हौ नाहक धोखा ब्रह्म औ माया को
अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ । तुममाया ब्रह्मको भ्रमत्यागि मेरे अनिर्बच-
नीय नाम में लगिकै मेरे पासआवो मैं रक्षाकरि लेउँगो । यह मालिक जे
श्रीरामचन्द्र हैं ते कहै हैं ॥ ४ ॥

उत्तंगतुम जातिपतंगा । यमघर किहेहु जीवकै संग॥५॥
नीमकीटजसनीमपियारा । बिषकोअमृतमानगँवारा ॥६॥

वहजोमाया औ धोखा ब्रह्मअग्निरूपताकी उत्तंगकहे बड़ीऊंची लपेटैहैं तुम-
जातिकेपतंगहैकै वामेंकाहेजरिजरिमरौहौ । सोहेजीव नानाबस्तुनकोसंगकरि
जाहीमेंमनलगायमरचो औ सोई भयो याहीभांतिजनमिकै मरिक्के यमकेपासघर-
बनायेहौ अर्थात् या संग का प्रभावहै जो यमके यहां घरबनायेहैं ५ जैसेनीमके
किरवा को नीमही पियारलगैहै, जो मिष्टान्नौ पावै तौ न खाय, ऐसे बिषरूप
जो बिषय ताको अमृतमानिगँवार जोजीवहैंसो खायहैं ॥ ६ ॥

बिषकेसंगकौनगुण होई । किंचितलाभमूलगो खोई॥ ७ ॥
बिषअमृतगोएकहिसानी । जिनजानातिनबिषकैमानी॥८॥

सोयाबिषरूपी बिषयके संगकौनगुणहै क्षणभरेकोसुखहै औ सबकोमूल जो
मेरोज्ञानसो नशायगो अनेकजन्म दुःखपावनलग्यो ७ साहब कहै हैं कि और
नाना देवतन को जो नामजपिवो औ तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइवो या
तोबिष है औ मेरे नामको जपिवो मेरे लोकमें जायसुख पाइवो यातो अमृतहै
सो ये दूनों बिष अमृत एकैमें सानिगो कैसे जैसे साहबको नामलीन्हे मुक्त
हैजायहै साहबके लोकमें जाय सुखपावै है ऐसे औरहूदेवतनके नामलीन्हेसे

मुक्त है जाय है औ तिनके लोकमें जाय सुख पावै है । वास्तव एकही नाम भेद-
से और और कहै है या भांतिते जे ज्ञान राखै हैं तिनके ज्ञानको मेरे अनिर्बचनीय
नामरूप धामके जे जैन्या हैं तिनके ज्ञानको ते विषयी मानै हैं ॥ ८ ॥

कहा भये नल सुधवे सूझा । विन परचै जग मूढ़ न बूझा ॥ ९ ॥
मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशारहई ॥ १० ॥

ऐसे बे सूझ जीवजिनको नहीं सूझ पारै है ते कहां शुद्ध भये, नहीं भये मैं जो अनिर्ब-
चनीय ताके परचै बिना जगमें मूढ़ जीवो तुम न बूझत भयो सो ऐसे मतिके हीन जे तुम
तिनके कौन गुण कहैं लालच ईमें लागे रहै हैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको
ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषयकी आशा में
फिरै है सांच जो वेद को अर्थ मैं ताको न जानत भये अर्थात् साहब कहै है कि मोको
न जानोगे तो कबहीं बचोगे नहीं, तो वेद पुरान कहै है कि,
सब मरि जाहुगे ॥ ९ ॥ १० ॥

साखी ॥ मुवा अहै मरि जाहुगे, मुयेकी बाजी ढोल ॥

स्वप्न सनेही जग भया, सहिदानी रहि गाबोल ११ ॥

साहब कहै है कि हे जीवो मुवा जो धोखा ब्रह्म नाना देवता तिनमें जो लगौगे
तो मरि जाहुगे अर्थात् जनम ते मरत रहौगे या तुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेद पुराण है
सो बाजै है कहे कहै हैं । तब तुम्हारा इष्ट देवन को स्नेह औ सब सुख जगत्को
स्वप्न ऐसा है जायगा ये सब मुये हैं ये वेद पुराण तात्पर्यते डंका दैके कहै हैं अथवा-
जोगुरुवालोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै है सो सब संसारमें मुये की ढोल बा-
जै है । मरि जाहुगे जो यामें लगौगे तो तुम्हारी सहिदानी बोल रहि जायगा । बोल
कहा है जे तुम अपने इष्ट देवनके ग्रन्थ बनाय जावगे तेई रहि जायेंगे कि फलानेके बना-
ये ग्रन्थ है कालपाय वोहूं न रहि जायेंगे अथवा सहिदानी बोल रहि जायगा कौन
जौन मेरे रामनामको संसारमुख अर्थ करि संसारी भयो है सो जगत्की सहिदा-
नी भरोनाम रहि जायगा ताहीको फेरि संसारमुख अर्थ करि संसारी होउगे जब
नाममें मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे ॥ ११ ॥

इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ बारहवीं रमैनी ।

चौपाई ।

माटिक कोट पषाणकताला । सोई बनसोई रखवाला १
 सो बनदेखत जीवडेराणा । ब्राह्मण विष्णुएक करिजाना २
 जोरि किसान किसानी करई । उपजै खेत बीज नहिंपरई ३
 त्यागि देहु नर झेलिक झेला । बूढ़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
 तीसर बूढ़े पारथ भाई । जिन बन दाह्यो दवा लगाई ॥ ५ ॥
 भूँकि भूँकि कूकुर मरिगयऊ । काज न एकस्यारसों भयऊ ६
 साखी ॥ मूसविलारी एकसँग, कहु कैसे रहिजाय ।

यक अचरज देखौ संतौ, हस्ती सिंहहिखाय ॥ ७ ॥

माटिककोटपषाणकताला । सोईवनसोईरखवाला ॥ १ ॥

माटीका कोट यहशरीरहै मनरूप पाषाणका तालाहै कठिनभ्रमजौनेते माया
 औ धोखा ब्रह्ममें लग्योहै सोई भ्रमके बनको नानाबाणीमाया ताको रक्षक सोई
 भ्रमही है जबभ्रम मिटै तब माया धोखाब्रह्म तबहीमिटै संसारताला खुलै तबमें
 सर्वत्र देखपरो ॥ १ ॥

सोबनदेखतजीवडेराणा । ब्राह्मणविष्णुएककरिजाना ॥ २ ॥

तौन जो भ्रमको वनैहै संसारं नानाशास्त्र तिनके द्वारा देखिकेडरानजाय नाना
 मतनमें तुम सब नहिंपारपाये कि कौनमतलैकै संसार पारहोई ये शास्त्र एक म-
 तनहीं कहैहैं तब डेराय ब्राह्मण भये ॥ ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ सब ब्रह्मको
 जानतभये वैष्णवजेहैं ते एक व्यापक तुमसब विष्णुही को मानतभये व्याप्य
 पदार्थ न मानतभये सो हेजीवो! जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें
 होयगो ताते एक मानिबो धोखई है । अथवा ब्राह्मण जेहैं ब्रह्मज्ञानी ते एक

ब्रह्महमिने औ बैष्णव जेहँ विष्णुके दास तौनेके एकै मानतभये कि दास भाव करत करत जब अंतःकरण शुद्धहोइगो तब अभेदई भावहोइगो आपही विष्णु मानेगो काहेते कि देव हैकै देवताकी पूजा करिबेको होइ है यह शास्त्रमें लिखा है ताते हम विष्णुही हैजाईगे तौने दृष्टांत देइहँ कि वही तौ बनेहै वही रखवार तौ कैसे पूरपरै माया ब्रह्म ईश्वर ई सब मनके कल्पित हैं मनै है औ यही मनको रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वही तौ भ्रम है औ वही को रक्षक मानै है सो कैसे पूरपरैगो ॥ २ ॥

जोरिकिसानकिसानीकरई । उपजैखेतबीजनहिंपरई ॥ ३ ॥

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करै है जौनबीजखेतमें बोवैहै सोई उपजैहै । तैसे हेजीवो तुमसब नानाबाणीको बिस्तार करि नानामतनमें लाग्यो सोईफल भयो मेरो जो रामनाम बीज सोतौखेतमें परबई न कियोमेरो-ज्ञानफल कहाँतेहोय तुम्हारे खेतमेंनानामतनको फल संसार उपज्यो ॥ ३ ॥

छांड़िदेहुनरझेलिकझेला । बूड़ेदोऊगुरू अरु चेला ॥ ४ ॥
तीसरबूड़े पारथ भाई । जिनवन दाह्यो दवालगार्ड ॥ ५ ॥

सो हे नरौ! झेली का झेला तुमछांड़ि देहु। धोखा ब्रह्ममें लागिकै तुममाया को झेला चाहौहौ, माया तुमहींको झेलैहै या नहींजानौहौ कि, धोखा ब्रह्ममाया सबलितहै ताही मायाकी धारमें गुरु जे तुमको उपदेश किये ते औ तुमदोऊ बूड़े ४ पृथु बिस्तारे धातुहै अपने ज्ञान दवाग्निको बिस्तार कैकै अपने सेवकन केजे बन्नरूप कर्म जारि अपनेलोकनको लैगये ऐसे जे इष्टदेवता जिनको गुरुवा लोग उपदेश करैहै सो हे भाई तीसर तेऊ मायाकी धारमें बूड़े काहेते महामलयमें वोऊ नहीं रहिजायँगे ॥ ५ ॥

भूंकिभूंकिककूरमरिगयऊ । काजनएकस्यारसोंभयऊ ॥ ६ ॥

हे नरौ! जैसे कूकुर शीशके महलमें अपना रूप देखि भूंकि भूंकि मरिजायहै तैसे तुम्हारोई अनुभव जो धोखा ब्रह्म तामें लगि भूंकि भूंकिकहे शास्त्रार्थ करिकरि

जन्मत मरतरहौहो अथवा अहंब्रह्म अहंब्रह्म अहंमीश्वरः अहंभोगी अहंसिद्धः
 अहंबलवान् अहंसुखी इहै भूंकैहै तामें प्रमाण॥ (ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहंबल-
 वानसुखी) ॥ इत्यादिक स्यार जो बाणी ताते एकौकाज नहींभयो अर्थात् जौनी
 बाणीकेदेखाये प्रबिंबदेख्यो अनुभव ब्रह्मान्यो तौनेकेकाज न भयो जनन
 मरण न छूट्यो अथवा हे जीवो ! तुम जे कूकुरहौ ते स्यार शिवा भवानी रुद्राणी
 अमरमें लिखैहैं सो हे जीवो ! सोई स्यार रूपजो बाणीहै ताको देखिदेखि भूंकतेहौ
 कहे पढ़तेहौ वा स्यार रूपबाणीके धरिबेकोतौ भूंकिभूंकि तुमहीं मरिगये
 स्यारते कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जोबाणी सोतुम्हारीधरी न धरिगई वाको
 तात्पर्यार्थको न जानतभये वृत्तितौनहीं राखैहौ अपने जानपनीको घमण्डराखौ
 हौ तातेमायाते न छूटे ॥ ६ ॥

सारखी ॥ मूस विलारीएकसँग, कहु कैसे रहिजाय ॥

यक अचरज देखौ संतौ, हस्तीसिंहैखाय ॥७॥

हे नरौ ! मूस जे तुमहौ तिनको बिछारी जो मायाहै सो कैसे न खाय एक
 संग तोरहौहौ सो कैसे बिनाखाये रहिजाय सो हेसंतो एकआश्चर्य और देखो
 तुम जे जीवहौ तेतौ सिंहहौ तिनको जो हाथी धोखाब्रह्महै सो खायलेयहै ।
 जो मोको तुमजानौ तौ तुम सिंहही बनेहौ तुमसब धोखा मिटावन वारेहौ
 हाथीके खानेवारेहौ । साहब स्वामी है जीवदासहै । सो हमारा सिंहरूपी
 नाको अति जो है धोका ब्रह्मसो हमारे सिंहरूपी जो ज्ञान ताकौ खाय है यह
 बड़ा आश्चर्य है ।

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ तेरहवीं रमैनी ।

गुरुमुख । चौपाई ।

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा ॥१॥
 सोतो शेष जाय लुकाई । काहूके परतीति न आई॥२॥
 चले लोक सब भूलगँवाई । यमकी बाढ़िकाटिनहिंजाई॥३॥

आजुकाजजियकालिहअकाजा।चलेलादिदिग्गंतरराजा॥४॥
 सहज विचारत मूल गँवाई । लाभतेहानि होय रे भाई॥५॥
 ओछी मती चन्द्रगो अर्थई । त्रिकुटीसंगमस्वामी वसई॥६॥
 तवहींविष्णु कहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुमजीतहु जाई ॥७॥
 तवसनकादिकतत्त्वविचारा।ज्योंधनपावहिरंकअपारा ॥८॥
 भोमय्याद बहुत सुखलागा । यहिलेखे सबसंशयभागा॥९॥
 देखत उत्पति लागु न वारा । एकमरै यककरै विचारा॥१०॥
 मुये गये की काहु न कही । झूटी आश लागिजवरही॥११॥
 साखी ॥ जरत जरत से वाचहु, काहेन करहु गोहारि ॥

विषविषयाकैखायहु, रातदिवसमिलिझारि॥१२॥

नहिं परतीति जोयहि संसारा।द्रव्यकचोटकठिनकोमारा ॥१॥

साहेब कहैहैं यह तो उपदेश हमकरते हैं तुमसबको परतीति जो नहीं
 आई सोयंहि संसारमें पृथ्वी १ अप २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ दिशा ६
 काल ७ मन ८ आत्माको धोका ब्रह्म ९ ई नवौ द्रव्यकी चोट कठिन कौन मारयो तुमको
 जाते तुम या मारयोकि शरीर मेंहीहैं देवता मेंहीहूं ब्रह्ममेंहीहैं सो तुम भूलगये
 नवौ द्रव्य मेराही शरीर है ताको न जान्यो तुम । तामें प्रमाण ॥ (खंवायु-
 मग्निंसलिलंमहींच ज्योतींषिसत्वानिदिशोद्गमादीन् ॥ सारित्समुद्रादचहरेः शरीरं
 यत्किंचभूतंप्रणमेदनन्यः) ॥ इतिभागवते ॥ (यआत्मनितिष्ठन्त्यमोत्मानवेदय-
 स्यात्माशरीरमितिश्रुतिः ॥ १ ॥)

सोतो शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई ॥ २ ॥

साहेब कहैहै हे जीवौ ! चित् आचिन् जगतरूप जो मेरो शरीर तामें तुम
 द्रव्यबुद्धि किये हौ सो त्यागिदेहु । यह मेराही शरीर कैकै देखौ तो नित्यहै

नहींतो शेषहोतहोत सब लुकाय जायहै एक एक में लीनहैजायहैं कहीं लोप
है जाय है कहीं अलोप है जायहै निषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौ
कि मैं रहिजाउँहों तब मैं तुमको हंसरूपदै आपने धामको लैआवो हों
सो या जगतमरेही शरीरहै या परतीति तुमको काहूको न आई द्रव्यही बुद्धि
मानते भयें ॥ २ ॥

चलैलोगसब मूलगँवाई । यमकीवाढिकाटिनहिंजाई ॥३॥

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवाय कहेभूलिकै हे जीवो! तुम सब ना-
नापन्थमें चलैहौ परन्तु यमकहे दोऊविद्या अविद्यारूप जो घोरनदी तिनकीबा-
ढिजोहै धारा सो न काटीजायगी अर्थात् न पैरी जायगी । वाही में बूड़िजा-
बोगे । अथवा यम जो है काल रूप ब्रह्म ताकी बाढि जो बाणी जो एकते
अनेक भई है सो हे जीवो तुम्हारी काटी न काटिजायगी जो काटि पाठहोय
तौयह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदी बाढी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी
काटि न काटिजायगी अर्थात् वाहीमें परेरहौगे अथवा चौदैहौ जे यमवर्णन
करिआये है तिनकीबाढिबढी है सो तुम बिना मेरी कृपा न छूटौगे । सो तुम्हारी
काटी न कटैगी बिनामोकोजाने ॥ ३ ॥

आजुकाजजियकाल्हिअकाजा । चलेलादिदिग्गंतरराजा ४

हेजीवौ ! अनिर्बचनीय जो मेरोनाम ताको जोआजु समुझौ तौ कार्य्य होयगो
तिहारो औ जोकाल्हि कहे शरीर छूटमें समुझौ चाहौतौ अकाजहै नाजानै कौन
योनिमें परौ फिरि समुझौ धौं ना समुझौ । सो हे जीवो तुमतो राजा हौ मन
मायादिक ये तुम्हारे ही बनाये हैं सोतौ तुम भूलिगये । चले लादि कहेविद्या-
अविद्याके जे नानाकर्म तिनको अंगीकार करि अर्थात् वहै बोझाअपनेमाथे में धरि
दिगंतरमें जाय नानाशरीर धारण करत हौ सो अबहूं मोको जानि तुम सब
यहदुःख त्यागो यह मायारूप धोखावालेनको उपदेश दियो अब सहजस-
माधिवालेनको कहै हैं ॥ ४ ॥

सहज विचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई ॥ ५ ॥

सहजकहे सोहंसअहं यह प्रतिश्वास विचारतविचारत सबको मूल जोमेरो नाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायदियो सो हे जीवौ ! तुमको तौ धोखा ब्रह्मकी लाभभई परन्तु यह लाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हे भाइयो ! हानिहैगई अर्थात् नहा प्राप्तभई ॥ ५ ॥ अवयोगिनको कहै हैं ।

ओछीमती चन्द्रगो अथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीवसई ॥ ६ ॥
तवहींविष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्टतुमजीतहुजाई ॥ ७ ॥

वीर्यकी उलटी गतिकरतकरत ओछीमतिकहे बुद्ध्यादिकसूक्ष्म है थिरहैगई तब चन्द्ररूप जो वीर्य्य सो अथैगयो अर्थात् उलटी गतिहैगई तब दूनौनेत्रकों उलटिकै ध्यानलगाय प्राणके साथ वीर्य्यको चढ़ाय त्रिकुटीमें जहां इड़ा पिंगला गंगा यमुना सरस्वतीको सङ्गमम स्वामीबसैहै जहां पहुंचौहौ तब लक्ष्मीनारायण तुमसों कहै हैं कि अब ऊपर गैवगुफा में जायकै आठौप्रकारकै मैथुन जीति लेहु अबै एकही प्रकार जीत्यो है तब तुम उहां जाउहौ सोआगे कहैहैं ॥ ६ । ७ ॥

तवसनकादिकतत्त्वविचारा । जैसेरंकधनपावअपारा ॥ ८ ॥
भोमर्य्यादबहुतसुखलागा । याहिलेखेसबसंशयभागा ॥ ९ ॥

सो जबगैवगुफामें ध्यान लग्यो ज्योति में मिल्यो तब सनकादिक कहे शुद्ध जीवसो अपनेको अशुद्धमानिकै यही मरणतत्त्वविचारै है की, हम मुक्तहै गये कहौ हे जीवौ ! तुम सब वाहीको सुखदतत्त्व विचारौहौ कैसे जैसेरंक अपारधन पायकै परमतत्त्व मानै है ८ भोमर्य्याद ब्रह्म जो ज्योति तामें जब आत्माको मिलायो ज्योतिही हैगयो यहीं तक मर्य्यादाहै या मान्यों तब तुमको बहुत सुख लागतभयो अर्थात् वाहीमें मग्नहोइ जातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागिगई परंतु संशय नहीं गई सो आगे कहैहैं ॥ ९ ॥

देखतउतपतिलागु न वारा । एकमरैयककरैविचारा ॥ १० ॥

हे जीवौ ! तुम या देखतहौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्नहोत बारनहीं लगैहै तौ संसार कबै छूट्यो औ येहू देखतहौ कि एकैमरैहैं तिनको लायआय गैवगुफा जरिगई औ फिर वही गैवगुफामें प्राणचढ़ाय मुक्तिको विचारौहौ अर्थात् मुक्तिचाहौहौ सो हे जीवौ तुम सब विचारौ ! तौ जो समाधि सुख नित्य हो तो तौ कैसे मिटिजातो ताते नित्य नहीं है ॥ १० ॥

मुयेगयेकी काहु न कही । झूठीआशलागिजगरही ॥ ११ ॥

तुम्हारे गुरुवा लोगंमरे मरिगै कहांगयेकौनी गतिको प्राप्त भये या निकासकी बात तो काहु न कह्यो सो तौ तुम सबनविचारचो धोखा ब्रह्महोवेकी जो झूठी आशा ताहीमें तुमसबलागिरेहैहौ मोको न जानतभये ॥ ११ ॥

साखी ॥ जरतजरतसेवाँचहु, काहे न करहुगोहारि ॥

विषविषयाकैखायहु, रातिदिवसमिलि झारि ॥ १२ ॥

प्रथम तो हेजीवौ ! नानायोनि नरकगर्भ बासके जठराग्नमें जरत जरतसे बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भबास ते निकसे सो गर्भबास को दुःख तौ तुमको भूलिगयो । औ जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो विषरूपा जो विषयताही को रातिवदिन खायहु अर्थात् झारि विषयही भोगकीन्हों मेरी शरण को काहे न गोहरायो । जे मेरी शरणको गोहरावै हैं तेईबचै हैं सो हे जीवौ ! जब मेरी शरणको गोहरावोगे तबहीं बचोगे मेरी या प्रतिज्ञाहै जो कोई मेरी शरणको गोहरावैहै ताको मैं बचायही लेउहीं । गोहारिको अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सो साहब शरणगयेरक्षा करतही हैं तामेंप्रमाण ॥ (सकृदे वषपन्नाय तवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम) ॥ १ ॥ इतिवाल्मीकीये ॥ १२ ॥

इति तेरह्वारमैनी समाप्तम् ।

अथ चौदहवींरमैनी ।

गुरुमुख । चौपाई ।

बड़सो पापीआयगुमानी । पाखँडरूपछलोनरजानी ॥ १ ॥
 वामनरूप छल्योवलिराजा । ब्राह्मणकीन कौनसोकाजा ॥ २ ॥
 ब्राह्मणही सबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणहीको लागीखोरी ॥ ३ ॥
 ब्राह्मण कीन्होग्रंथ पुराना । कैसेहुकैमोहिं मानुषजाना ॥ ४ ॥
 यकसे ब्रह्म पंथ चलाया । यकसेहंस गोपालहिगाया ॥ ५ ॥
 यकसे शंभू पंथ चलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ॥ ६ ॥
 यकसे पूजा जौन विचारा । यकसेनिहुरिनेमाजगुजारा ॥ ७ ॥
 काइ काहूकोहटा न माना । झूठा खसमकबीरन जाना ८ ॥
 तनमनभजिरहु मेरे भक्ता । सत्यकवीर सत्यहै वक्ता ॥ ९ ॥
 आपुहिदेवआपुही पाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती ॥ १० ॥
 सर्वभूतसंसार निवासी । आपुहिकुसुमआपुसुखरासी ॥ ११ ॥
 कहतेमोहिंभये युगचारी । काके आगे कहाँ पुकारी ॥ १२ ॥
 साखी ॥ सांचो कोई न मानई, झूटाके सँगजाय ॥

झूठेझूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय ॥ १३ ॥

बड़ोसोपापीआयगुमानी । पाखँडरूपछलोनरजानी ॥ १ ॥
 वावनरूपछल्योवलिराजा । ब्राह्मणकीनकौनकरकाजा ॥ २ ॥

साहब कहैहैं तै बड़ोपापीहै बड़ोगुमानीहै काहेते कि मैं येतो समझाऊँहैं तैं
 नहीं समझैहै सो मैंजान्यो पाखंडरूप, जो धोखा ब्रह्मताते हेनर ! तुमछलेगये
 और जिनको छल्यो तिनको कहैहैं १ वहीमाया सबलित ब्रह्म वामनरूप करिकै

बलिराजाको छल्यो है सो या ब्राह्मण जोमाया सबलित ब्रह्म सो कौनको काजकीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है ॥ २ ॥

ब्राह्मणहीसबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणहीकोलागीखोरी ॥ ३ ॥

वहीब्रह्म सबकी चोरीकियो है काहेते कि मायातो जड़है यह चैतन्यहै ब्रह्मही माया सबलितहै मायहूको कर्ताके मेरेसांचेज्ञानको संसारमें शंकादिक पदार्थ बनाइ चोराइराख्योहै सो जब व्यापकरूप ते सबपदार्थ ब्रह्महीठहरयो औब्रह्महाके संयोगते मायाकर्ता भई है तब ब्रह्महीको खोरिलगी कि वही सब करैहै ॥ ३ ॥

ब्रह्महि कीन्होंग्रंथपुराना । कैसेहुकैमोहिमानुषजाना ॥ ४ ॥

वहीमाया सबलित जो ब्रह्महै ताहीते सब वेदपुराण निकसेहैं ताहीते नानामतभये कोई निराकार ब्रह्मही कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये । तुम सब बसहु जो निर्गुण के सगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्यताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसेहुकैकहे जसतसकै कोई बिरलेसंत जानै हैं और नहीं जानै हैं अथवा मोको सब बातके जनैया श्रीरामचन्द्रको सांच मनुष्यरूप है तामें प्रमाण ॥ (आत्मानंमानुषमन्ये रामंदशरथात्मजम्) ॥ इति और जे नानापंथ वेदतेनिकसे तिनको आगे कहैं (दशतिसर्पानितिदशः गरुडः सरथोयस्यसः दशरथः विष्णुः सएव आत्मजोयस्यसः दशरथात्मजः तं) ॥ ४ ॥

यकसेब्रह्महिपन्थचलाया । यकसेहंसगोपालहिगाया ॥ ५ ॥

यकसे कहे एकजो माया सबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत ब्रह्मनांना शास्त्रके नानापंथ चलावतभये । औ यकसे कहै एक जो माया सबलित ब्रह्मताहीको बिचारकरत हंसजो जीव सो गोपालहि गावतभये अर्थात् गोजो-इंद्रिताको पालनवारो जो मनताहीको गावतभये अर्थात् मनुखी पंथ चलावतभये औ ब्रह्माने वेदकह्योहै वेदते सबमत निकसेहैं जीवनको जोजुदेकरि कै कह्यो सोमेरे सम्मुखको जो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नानादेवतन-यज्ञादिमें लगायदीन्हे ॥ ५ ॥

यकसे शम्भूपंथचलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ॥ ६ ॥
यकसे पूजाजौनविचारा । यकसे निहुरिनेवाजगुजारा ॥ ७ ॥

यकसेकहे एकजो माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादन करत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजीको तामसमत चलावतभये औ यकसे कहे एक जो-माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादनकरत जीवनको मन भूत प्रेतदेव सब लगायदेतेभये अर्थात् माया में अरुझाय देतेभये ६ यकसे कहे एक जो माया सबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाज गुजारतभये ॥ ७ ॥

कोउकाहूको हटा न माना । झूठाखसमकबीरनजाना ॥ ८ ॥
तनमन भजिरहुमेरेभक्ता । सत्य कबीर सत्यहैवक्ता ॥ ९ ॥

कोऊ काहूको हटको न मानतभये झूठाजो धोखा ब्रह्म ताही को दृढ़करि-कै कायाके बीरजे जीव ते नाना देवतनसोते खसम जानतभये । कोई महीं ब्रह्महैं या मानतभये । खसम जो परमपुरुष मेंहैंताको तुमसब न जानतभये ८ ॥ तनमनते मोहींमें लगो तबही तिहारो उबारहोइगो सोहे कबीर जीवो एकतो तुम सत्यहौ औ एक जो तिहारे समुझावन वाला वक्ता में सो सत्यहौं और सबझूठे हैं वही ब्रह्म चारों ओर द्वैगयो है यह द्वैमत देखायो तामें प्रमाण (सत्यमात्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः) ॥ ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती ॥ १० ॥
सर्वभूतसंसारनिवासी । आपुहिखसमआपुसुखरासी ॥ ११ ॥
कहतेमोहिंभयेयुगचारी । काकेआगेकहौंपुकारी ॥ १२ ॥

औवही माया सबलित ब्रह्म आपुही देवता द्वैगयोहै आपुही फूलपातीहैं आपुही पूजा करनवालो है आपहीकुल जातिहै १० सोयाभांतिते वहीब्रह्म सर्व-भूतमें निवासी हैकै आपुही खसमहै रह्योहै औ जामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसी सुखराशी नारीहै रह्योहै ११ सो यह बात चारों युगमोंको कहतभयो काके आगे पुकारिकै कहा कोई समुझै या धोखा ब्रह्मको नहीं देखोपरै ॥ १२ ॥

साखी ॥ सांचेकोइ न मानई, झूठाकेसँगजाय ॥

झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय ॥ १३ ॥

सांचो मैं सांचे तुम जीव यह मततो कोई नहीं मानैहै झूठानो वहब्रह्मताके संगसब जायहैं अर्थात् वहीको सर्वस्वमानै है सो झूठावह ब्रह्मऔझूठाज्ञानवाला जोजीव सोमिलिकै अहमक खेहा खायहै अर्थात् भरयो तब राख खायहै जनम मरण नहीं छूटै है ॥ १३ ॥

इति चौदहवीरमैनी समाप्तम् ।

अथ पंद्रहवीरमैनी ।

चौपाई ।

उनई बदरिया परिगै साँझा।अगुवा भूले बनखँड माँझा॥१॥

पियअनतैधनअनतैरहई । चौपरि कामरि साथे गहई ॥२॥

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखिन सों रोइ ॥

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होइ॥३॥

उनईबदरियापरिगैसाँझा । अगुवाभलेबनखँडमाँझा ॥ १ ॥

भ्रमकी बदरी ओनई परिगै साँझा कहे जगत्में अधियारी है गई साहबको ज्ञानरूपी रविमूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखँड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलिगये । कोई भैरव कोई भवानीको कोई गणेशको इत्यादि नानादेवतनकी उपासना करतेभये । औशास्त्रहुमें नानामत होतगये कोई कर्मको, कोई ब्रह्मको, कोई प्रकृतिपुरुषको, कोई ईश्वरको, कोईकालको, कोई शब्दको, कोईब्रह्मांडमें ज्योतिको, प्रधानमानतभये । औ तिनहुमें एकएक मतनमें अनेक मतहोतेभये औमुसलमानहुंके मजहबमें तिहत्तरि फिरकें होत भये एकमें तो मुक्ति होतीहै औरनमें नहीं होती । सो जो जौने फिरकेमें

पराई सोताहीको मुक्तिवाळा मानैहै सो या एक सिद्धांत ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेदब्रह्माते पूछ्यो तबब्रह्मै को भ्रम भयो तब आकाशवाणी सुनि के सं-भ्रमपूर्वक सबको शेष के पास पठ्यो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य सिद्धांत सबको समुझायोहै सो आदिमंगलमें लिखि आयैहैं औमरे बनायेरामायणके अंत-हूमें लिख्योहै सो या हेतुते कबीरजी कहैहैं कि अगुवा जेब्रह्मा तिनहीको भ्रमभयो है ॥ १ ॥

पियअनतै धनअनतैरहई । चौपरिकामरिमाथेगहई ॥ २ ॥

पियतो साहबहै औपियके मिलनवारो जोजीवनको ज्ञान सोई धनहै सो दोउ अनतही रहैहैं कोई बिरले संत पावैहैं । चौपरिजो चारों वेद तिनकी का-मरि ऐसी भारी शीशर धरे अपने अपने मनको अर्थ करैहैं वेदको सिद्धांत नहीं पावैहैं । अथवा चौपरि जो चारो खानिकेजीव ते कर्मरूप जोहै कामरि ताको कांधैपैधरेहैं ॥ २ ॥

साखी ॥ फुलवाभार न लै सकै, कहै सखीसोंरोय ॥

ज्योंज्योंभीजैकामरी, त्योंत्यों भारीहोय ॥ ३ ॥

जीवजेहैं ते अल्प हैं कर्मकांडरूप जोफूल ताही को भार नहीं सहिसकै अ-र्थात् सोई नहीं समुझिपै ब्रह्मविचार कैसे समुझिपे सो वेदरूप कामरि कांधे-धरे जब ब्रह्मविचार करनलगे निषेध करतकरत तब विचारमें ब्रह्म न आयो तबसखी जे जीवहैं तिनते रोइकै कहतैहैं नेति नेति यतनै नहीं है अबै और क-छुहै नहीं समुझिपै यही रोइबोहै सो सो गुरुआलोगहैं तिनसे पूछ्यो कि, जो-तुमने बतायोकि, ब्रह्महै सो हमको समझ न परी तब उन गुरुवालोगन ज्यों ज्यों वेदरूप कामरीभीजैहै कहे बिचारत जाइहैं त्यों त्यों भारीहोतजायैहै । सो कामरीमें दोय अर्थ दोयहै एक कर्मविचाररूपहै एक ब्रह्मविचाररूपहै सो दोनोंको तारनाही पावैहै ज्यों ज्यों विचारत जाई है त्यों त्यों कठिनई होते जाइहै अर्थात् गहिरो अर्थ होतजायैहै सो कैसे समुझिपै बातो वेदार्थमें विचार करै है ब्रह्मरूप कामरी सो तो धोखाब्रह्म कुछ बस्तुही नहीं है ॥ ३ ॥

इति पंद्रहवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ सोरहवीरमैनी ।

चोपाई ।

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँअतिखिसिआने१
 गणगन्धर्वमुनिअंतनपाया । हारिअलोपजगधंधे लाया २
 गहनी वंधन बांधन सूझा।थाकि परे तब कछू न बूझा ॥३॥
 भूलिपरे जिय अधिक डेराईरजनी अंधकूप है जाई ॥ ४ ॥
 मायामोह उहां भरि भूरी । दादुर दामिनि पवनहु पूरी ॥५॥
 वरसै तपै अखण्डित धारा।रैनिभयावनि कछुन अहारा॥६॥
 साखी ॥ सवैलोग जहँडाइया, औ अंधा समै भुलान ॥
 कहाकोइ नहिं मानही, सब एकैमाहँ समान ॥ ७ ॥

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँ अतिखिसियाने१

नाना मतमें लगे जीव तिनकेचरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात्
 थकिआये मतिनहीं पहुंचै एकहू शास्त्रके बिचारके पार न गये तामें प्रमाण ॥
 (इन्द्रादयोपियस्यांतनययुः शब्दवारिधेः । प्रक्रियांतस्यकृत्स्नस्यक्षमोवक्तुंनरः
 कथम्) ॥ तब खिसि आईके यह कहते (भये अतिरेसयान पाठ होय तौ अर्थ
 कि बड़ेसयानो रहे तेऊ हारिगे) ॥ १ ॥

गणगंधर्वमुनिअंतनपाया । हरिअलोपजगधंधेलाया ॥२॥

जौने ब्रह्मको अंतगन्धर्व औ मुनिनके गण नहीं पायो ताको हमकैसे जानि-
 सकैं । जो ब्रह्मको साकारकहै हैं तौमध्यम प्रमाणमें आयजाय है, अनित्य
 होयहै । औ जो ब्रह्मको निराकारकहै है तौजगत्की कर्तृत्व कैसे होयगो यही
 संदेह मेरे सिद्धांत न भयो । कबीरजी कहै हैं कि, कैसे होयगी सन्देहमें परे
 जैसे हारि हैं तैसे बिनासदगुरुके बताये तोजानतही नहीं है, यहिते हरि अलोप

कहे हरि अपकट भये तिनके बिना जाने जगत्के धन्धेमें जीव सब अपना मन लगायरख्यो ॥ २ ॥

गहनी बंधन बांधनसूझा । थाकिपरेतवकछूनबूझा ॥ ३ ॥

गहनी बंधन जो मायासबलित ब्रह्म जौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसो जो ब्रह्म ताको बांधजीवनको न सूझिपरयो कौन बांध कि जो कोई मोहिमेंलैगैहै तौमें बांधिकै संसारमें डारिदेउं हैं या मायासबलित ब्रह्मको बांध ना सूझि परयो जो कहो काहेते बांधबांध्यो है तो जगत्की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याही ते जो कोई वामें लैगै है ताको साहबको ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसार में थाकिपरे तब कछु न बूझत भये अर्थात् अनेक मतनको बिचारैहै पै सिद्धांत न पावतभये साहबको ज्ञान भूलिगये ॥ ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराइ । रजनी अंधकूपहैजाइ ॥ ४ ॥

मायामोह उहांभरिभूरी । दादुरदामिनिपवनहुपूरी ॥ ५ ॥

बरसैतपैअखंडितधारा । रैनिभयावनिकछूनअहारा ॥ ६ ॥

सोजब साहबको ज्ञानभूले संसारमेंपरे तबअधिकडर आवत भयो काहेते कि मूलाज्ञानरूप रजनीकी बंडी अधियारीहोत भई कछु न सूझिपरयो काहेते कि अहंब्रह्मास्मिमानिकै लीन हैंकै वही संसारमें परयो जहां मायामोह भूरिभरे हैं तब तो माया कारणरूपारहाहै अब कार्गरूपाभईबहुत मोहादिकहोतभयेतामें परे जैसेदादुर बोलैहैं अर्थकछु नहींहै तैसे उनको वेदकोपदिबो है अर्थनहीं जानैहैं जो काहूकेकहे कछुज्ञानभयो तबदामिनिंकैसी दमकहैजाय है कछु हृदय में नहीं ठहराय है औ पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायकै योगकरिये तौ श्रम करैहै कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखंडधारा अमृतवर्षाई नागिनी उठाइ समाधिकरैहै औ कोई तपै अखंडित धाराकहे पांचहजार कुंभक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनीको जगाय प्राणचढ़ायसमाधिकरैहै तहौं-भयावनिरैनि जोमूला ज्ञानकी अधियारी ताहीमें परयो अर्थात् जबतक ज्योति

देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योतिमें लीनहैगयो तब सुषुप्ति ऐसेमें परयो रह्यो यही भयावनि रैनहै भयावनिको हेतु यह है कि प्राणके उतरिबेकी अवधि बनीहै ॥ ४ । ५ ॥ ६ ॥

साखी ॥ सभैलोगजहँडाइया, औ अन्धासभैभुलान ॥

कहाकोइनहिमानही, सबएकैमाहँसमान ॥ ७ ॥

और जे मायाते सभयरहे डेरते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहेकि कैं औरई और मतनमें लगिगये औ जेअज्ञान आंधेररहें ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपवैना किये भूलिही गये सो कबीरजी कहैहैं कि भेरो कहा कोई नहीं मानैहै सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यर्थ औ साहबको बिनाजाने ब्रह्महूमें लीनहै संसारहीमें आवैहै वाको प्रमाण पीछे लिखिआयेहैं ॥ ७ ॥

इति सोलहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ सत्रहवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुतधर्मसुखहृदयाहोई ॥ १ ॥

जासों वातरामकी कही । प्रीति न काहूसोंनिर्वही ॥ २ ॥

एकैभाव सकलजगदेखी । बाहेरपरैसोहोयबिबेकी ॥ ३ ॥

विषयमोहकेफंदछोड़ाई । जहांजायतहँकाटुकसाई ॥ ४ ॥

आय कसाई छूरी हाथा । कैसहु आवै काटोंमाथा ॥ ५ ॥

मानुष वड़े वड़े ह्वेआये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजिनगोई । नहिंतोनिश्चयजाहुबिगोई ॥ ७ ॥

साखी ॥ सुमिरन करहु सुरामको, औ छांडहु दुखकी आस ॥

तरऊपर धरि चापिहैं जसकोलहूकोटिपचास ॥ ८ ॥

जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुतधर्ममुखहृदयाहोई ॥ १ ॥
 जासोंवात रामकीकही । प्रीति न काहूसों निर्वही ॥ २ ॥

जैसो आपु होइ तैसो जबताको मिलै तबहीं धर्मबँडै है औ हृदयमें बड़ो सुखहोयहै तामें प्रमाण गोसाईंजीको ॥ दोहा ॥ इष्टमिलै अरु मन मिलै, मिलै भजनरसरीति ॥ तुलसिदास तासों मिलै, हठिकै उपजै प्रीति १ सो औरी-भांति सुखनहींहोयहै १ काहे ते कि जासों कहे जौने जीवनसों रामकी बात में कहौहों कि तैं रामचन्द्रकोहै तिनको अपने साहब मानु नाना ईश्वर जो तैंने माने हैं सो येसब मायाके जालमें परैंहैं तोको कहा उबारेंगे सो कबीरजी कहैहैं कि या मेरी बातपै काहू जीवनकी प्रीति न निबहतभई अर्थात् जो मेरीबात प्रीतिते सुनै साहब को जानै अपने अपने मतमें आरुढ़है बादसोकैरैहै बस्तुनहीं ग्रहणकैरै है ॥ २ ॥

एकैभाव सकलजगदेखी । बाहेरपरैं सोहोय विवेकी ॥ ३ ॥
 विषयमोहकेफंदछोड़ाई । जहां जाय तहँकाटुकसाई ॥ ४ ॥

एकैभाव सकल जगदेखी कहे जे एक ब्रह्मैभाव जगत्को देखै हैं तेहिंते बाहेर अपनेको दासमानि सब में चिद्रूपको जो जानै है । सोई विवेकी होयहैं सोऐसे विवेकिनके पासतो नहीं जायहै ३ नाना विषयके मोहके फंद छोड़ायेकै अर्थात् संसारते वैराग्य करिकै अधिकारिहूँहैकै जहांजहांजायहैं तहांतहां कसाई जे गुरुवा लोग ते गलाकाटेहैं अर्थात् साहबको ज्ञानकाटि धोखा ब्रह्ममें लगाय देयें हैं । सो याको गलाकाट्यो गलाकाटे फेरिजन्महोयहै याते गुरुवालोगनको कसाई कह्यो । ऐसे याहूको जनन मरण होय है । व्यंग्य यहहै कि जे जीव साहब को त्यागि औरै औरमें लगै हैं ते पशुहैं उनको ऐसही गलाकाट्यो जायहै ॥ ४ ॥

कसाई तो शरीरको गलाकाटेहैं और—

आय कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटों माथा ॥ ५ ॥

१ स्वार्थी गुरुवालोग जिनको संसारी सुख और क्षणिक मान बड़ाईके अतिरिक्त सत्यका ज्ञानही नहीं है । २ गुरुवालोगोंके जानाप्रकारसे जीवोंको उगनेके उपाय ।

मानुष बड़े बड़े हैं आये । एकै पण्डित सवै पढ़ाये ॥ ६ ॥

कसाई जे गुरुवालोग तिनकी बनाई पोथी सोई छुरीहाथमें लीन्हे यह ताके हैं कि कैसेहुकै कौन्यो मतको आवै तौ ठगिकै अपनेमतमें कैछेई माथ काटिलै कहेमूंडिडारै चेलाकरिलेयँ । सो साहबको छोड़ाइ औरै आरम लगावनवारो हैं सो गुरु कसाई है । यहौ दैन ज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गलाकाटैं हैं जो संसारमें रहतो तो कबहूँ दैवयोगते साधु सङ्गभयो उद्धारहू होतो सो तौने धोखा ब्रह्ममें लगायदियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावेंगे ॥ ५ ॥ मनुष्य जे बड़ेबड़े ज्ञानीलोग हैं ते यही पढ़ावतभये कि एक वही ब्रह्म है जीवनहीहै और कोई या पढ़ाया कि एकजीवही सांच है और सब असांचहै ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई । नाहिंतौनिश्चय जाउबिगोई ॥ ७ ॥

जौनपढ़ना तुम गुरुवालोगनतेपढ़्योहै सोअबजनिगोइराखो औ जो गोइराखोगे तौ कुमतिहिमें परेरहौगे जो गोइ न राखोगे तो संतलोग समुझायकै भ्रम काटिडारेंगे कैसे कि जो एकब्रह्म होतो तौ भ्रम कौनको होतो औ जो एक जीवही साहब होतो तौ बाँधिकैसे जातो सोमायातो बांधनवालीहै औजीव-बंधनवारोहै औ साहब छुड़ावनवालोहै यह बिचारि साहबको जानो साहब छुड़ायेलेईगे नहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमतिमें लागि कै बिगिरिजाहुगे ॥ ७ ॥

साखी॥सुमिरनकरहुसुरामको, औछांडहुदुखकीआस ॥

तरऊपरधरिचापिहै, जसकोलहूकोटिपचास ॥ ८ ॥

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको सुमिरनकरौ धोखा ब्रह्म औमाया इनकी दुःखरूप जो आश सो छांडो जो न छांडेगे तौ तेरे तो मायारूप कोलहू ऊपर ब्रह्मरूपजाठमें तुमको पेरिडारैगो पचासकोटिकोलहूकह्यो सोअगणितब्रह्मा-डहैं तामेंडारिकै ॥ ८ ॥

अथ अठारहवींरमैनी ।

चौपाई ।

अद्भुत पंथ वरणिनहिं जाई । भूले रामभूलिदुनिआई ॥१॥
जो चेतौतौ चेतुरे भाई । नहिंतो जिय जरि मूलै जाई ॥२॥
शब्द न मानै कथै विज्ञाना । तातेयम दीन्ह्यो है थाना ॥३॥
संशय साउज वसै शरीराते खायल अनवेधल हीरा ॥४॥

साखी ॥ संशय साउज देह में, संगहि खेल जुआरि ॥

ऐसा घायल वापुरा, जीवन मारै झारि ॥ ५ ॥

अद्भुत पंथ वरणि नहिं जाई । भूलेराम भूलिदुनिआई ॥१॥
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई । नहिंतो जियजरिमूलैजाई ॥ २॥

अद्भुत पंथ जो ब्रह्म ताको वर्णतकोईने अंतनहींपायो रामजे साहबहैं तिनके
भूलेकहे बिना जानेते सब दुनिया धोखा ब्रह्म मायामेंभूलिगई १ हे भाइउ
चेतौतौ चेतौ नहां तौ मायाब्रह्मकी आगिमें जरिकै भूलतेजाउगे । यह कबीर-
जीकहै हैं । नहिं तौ यम जीव लैजाइ जो यहपाठहोयतौ यहअर्थहै कि चेतौतौ
चेतौ नहीं तौ यम लैजायके नरकमें डारिदेइंगे ॥ २ ॥

शब्द न मानैकथै विज्ञाना । तातेयमदीन्ह्योहैथाना ॥ ३ ॥
संशय साउज वसै शरीरा । तेखायलअनवेधलहीरा ॥४॥

विज्ञानहूको सार जाते सबशब्द निकसे हैं ऐसो जोरामनाम ताको तौ मानै-
नहीं है और और मतिमें लगिकै विज्ञान कथै है ताते यमराज जो जैसो
कर्मकरैहै ताको तैसो नरक स्वर्गकोथान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो
मन सो शरीररूपी बनमें बसिके अनवेधलकहे जाकोयश रामनाममें नहींहै ऐसो
जो हीराजीव ताको खायगयो कौनीरीतिते खायो सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें, संगहिखेलैजुआरि ॥

ऐसाघायलबापुरा, जीवनमारैझारि ॥ ५ ॥

जैसे शिकारी बाघको मारैहै जो बाघ घायलभयो तौ शिकारीको धरिडारैहै तैसे संशयसाउज जो व्याघ्ररूप मन सो देहरूपी बनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलै है जब मनोवासनाछैकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वेबोहै सो व्याघ्ररूप जो मन है सो घायलह्वैकै बापुरे जे सबजीव हैं तिनको झारदैंके मारैहै अर्थात् सबको वही माया धोखा ब्रह्ममें लगायदियो औ जोयह पाठहोय कि (ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै झारि) तो यह अर्थहै कि ऐसा घायलकहे घाती जो मन सो बापुरेजीवनकोझारदैंकैमारैहै जननमरणदेइहै ॥ ५ ॥

इति अठारहवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ उन्नीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अनहदअनुभवकीकरिआशा।देखौ यहविपरीततमाशा॥१॥

यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई ॥ २ ॥

शून्यहिबांछा शून्यहि गयऊ । हाथाछोड़ि बेहाथाभयऊ॥३॥

संशय साउज सब संसारा । कालअहेरी सांझसकारा ॥४॥

साखी ॥ सुमिरन करहु सोरामको, काल गहेहै केश ॥

नाजानौं कब मारि है, क्याघर क्यापरदेश॥५॥

अनहदअनुभवकीकरिआशा । देखौ यह विपरीततमाशा १

अनहद शब्द सुनतसुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू बिचारैहै कि ब्रह्म मैंहीहों या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरहीकोहै वह ब्रह्म मेरही अनुभवहै यह बड़ो तमाशाहैताही की आशाकरै है यह बड़ी बिपरीत है ॥ १ ॥

यहैतमाशादेखहुभाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई ॥ २ ॥
 शून्यहिवांछाशून्यहिगयऊ । हाथाछोड़िवेहाथाभयऊ ॥ ३ ॥

सो हे भाइयो ! हे जीवो ! यह तमाशा तुमहं अनेकन जन्मते देखतैआयेहौ परन्तु जहां शून्यहै तहां जाइकै मुक्ति हैवो चाहौहौ तुम या नहीं बिचारौहौ कि शून्य जो धोखा ब्रह्म तामें जो हम जायँगे तौ हमारी मुक्तिकी बांछहु शून्य हैनायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्यहै आपनेते झूठमें वांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहे धोखा ब्रह्मके हाथमें हैनाउ हो अथवा कबीरजी झूटे जीवनते कहैहैं हे भाइयो ! देखौ तो तमाशा ये जीव जहां शून्यहै धोखाहै तहां सब चलेजायँहै जौने ज्ञानमें साहब भरेपूरे हैं तहां नहीं जायँहैं २ । ३ ॥

संशयसाउजसबसंसार । कालअहेरीसांझसकारा ॥ ४ ॥

संशय कहै मनरूप जो साउज ताहीको सकलकहे सुरति यासंसार है रह्यो है अर्थात् मनरूप जीव है रह्यो है संकल्प विकल्प सबकैरहेहैं संशय सब जीव को लग रही है । सो अहेरी जोकाल शिकारी सो सांझ सकारकहे काहू को जन्मतमें मारैहै काहू का मध्य अवस्थामें और काहूको आयुर्दायके अंतमें मारैहै ॥ ४ ॥

सारखी ॥ सुमिरनकरहुसोरामको, कालगहेहै केश ॥

नाजानोंकबमारिहै, क्याघरक्यापरदेश ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो कालहै सो केश करमें गहेहै या नहीं जानैहौ धों कब मारै या घरमें या परदेशमें अर्थात् साहबकेबिना स्मरण घरभरहोगे तौ न बचोगे जो बनमें जाउगे तोहू न बचौगे ॥ ५ ॥

अथ बीसवीं रमनी ।

चौपाई ।

अबकहुरामनामअविनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी १
 जहांजाहु तहँ होहुपतंगा। अवजनिजरहुसमुझिविषसंगा २
 रामनामलौलायसोलीन्हा । भृङ्गीकीट समुझि मनदीन्हा ३
 भोअतिगरुवा दुखकै भारी। करुजिययतनसोदेखुबिचारी ४
 मनकीवातहैलहरिविकारा । त्वहिंनहिं सूझै वार न पारा ५
 साखी ॥ इच्छाको भवसागरै, वोहित राम अधार ॥
 कहैकविरहरिशरणगहु, गोवछखुरविस्तार ॥६॥

अबकहुरामनामअविनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी १

अविनाशी जो रामनाम ताको अबहूँ कहू । हरिकहे भक्तन के आरति हार-
 णहारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हे जीव औरेमतनमें कतहुँनना आर्थात्चित-
 चित्तते विग्रहकरि सर्वत्रसाहिबकोदेखु ॥ १ ॥

जहांजाहुतहँहोहुपतंगा । अवजनिजरहुसमुझिविषसंगा २

जौनेन मतमें जाहुहौ तहां पतंगहीसे जरिजाउहौ सो ते गुरुवन को संगजो
 बिषाग्नि ताको समुझि अबजनि जरहु अर्थात् जो इनको संगकरहुगे तौ मन इन्द्रिया-
 दिकन को बिषय जो सिद्धांत कीन्हैहै ताही में तुमहूँको लगाइ देयँगे तौ
 ससारही में परेरहुगे ताते इनको संगत्यागि रामनाम जपौ जो कहौ कौनीरीति-
 ते जपै रामनामतौ मन वचनके परेहै सो आगे कहैहैं ॥ २ ॥

रामनामलौलायसोलीन्हा । भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा ३

रामनाममें सो लौ लगाय लीन्है कौनजौन भृङ्गी औ कीट की ऐसीगति
 समुझिकै अपने मनदीन्है अर्थात् जैसे कीटभृङ्गी को देखत देखत वाको शब्द

सुनत सुनत वाको डेरात डेरात तदाकारहै भृङ्गीहीरूप है जाय है तैसे रामनाम नपतजाइहै, वाको सुनतजाइहै, जगत्मुख अर्थते डेरातजायहै; औ साहबमुख अर्थमें साहबकी रूप औ अपनो हंसस्वरूप बिचारत निज हंसरूप में तदाकार हैजायहै, मनादिक मिंटिजायहै शुद्ध रहिजाय है सो अपनेरूप पायजायहै । तब मन वचनके परे जो रामनाम सो आपनेते अस्फूर्तिहोइ है तामें लौलगायकै जैसे कीटभृङ्गी बनिकै औरै कीटको भृङ्गी बनावैहै तैसे यहौ जीव उपदेश करिकै औरैहूको हंसरूप बनावैहै । सो जो भृङ्गीको शब्द कीट न ग्रहणकरै तौ कीट-ही रहिजाय ऐसे जो रामनामको जीव ना ग्रहणकरै तौ असारही रहिजायहै तामें प्रमाण अनुरागसागरको ॥ (ज्यों भृङ्गीगै कीटके पासा । कीटहिगहि गुरग मि परगासा ॥ बिरला कीट होय सुखदाई । प्रथम अवाज गहै चितलाई ॥ कोइ दूजे कोइ तीजे मानै । तन मन रहित शब्दहित जानै ॥ तबलैगे भृङ्गी निजगे-हा । स्वाती दैकर निज समदेहा) ॥ ३ ॥

भो अति गरुवा दुखकै भारी । करुजिय यतन जो देखु बिचारी ४
मनकी बात है लहरि विकारा । त्वहि नहिं सूझै वारनपारा ॥ ५ ॥

यह संसार भारी दुःखकरिकै अति गरुवा बोझाहै जीव तू बिचारि देखु जों तोको बोझालगै तौ रामनामको यतन कर ॥ ४ ॥ मनकी बात कहै मनते गुरुवन को धोखा ब्रह्म तेहिते उठी जो काररूप लहरि माया ताको कौनो मन कहिकै तोको वारपार नहीं सूझै है ॥ ५ ॥

साखी ॥ इच्छाके भवसागरै, वोहितराम आधार ॥

कहै कबीर हरि शरणगहु, गोवछखुर बिस्तार ॥ ६ ॥

यह जो समष्टि जीवको इच्छारूप भवसागर तामें वोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहीं है सो कबीरजी कहै हैं हरि जे साहेब हैं तिनकी शरणगहु यह भवसागर गऊके बछवाके खुरके सम उतारि जायगो यामें संदेह नहीं है ॥ ६ ॥

इति बीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इक्कीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बहुतदुखैहै दुखकी खानी । तबवचिहौजवरामहिजानी १
 रामहि जानियुक्ति जोचलाई । युक्तिहिते फंदा नहिं परई २
 युक्तिहि युक्ति चलत संसारा । निश्चयकहान मानुहमारा ३
 कनक कामिनी घोरपटोरा । संपत्ति बहुत रहे दिनथोरा ४
 थोरेहि संपत्तिगो बौराई । धरमरायकी खबरि न पाई ५
 देखित्रासमुखगोकुम्हिलाई । अमृत धोखे गो विष खाई ६
 साखी ॥ मैं सिरजों मैं मारहुं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥

जलथलमैंहींरमिरह्यो, मोरनिरंजननाउँ ॥ ७ ॥

बहुतदुखैहैदुखकीखानी । तबवचिहौजवरामहिजानी ॥ १ ॥
 रामहिजानियुक्तिजोचलाई । युक्तिहितेफंदानहिपरई ॥ २ ॥
 युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा । निश्चयकहानमानुहमारा ॥ ३ ॥

यह दुःखकी खानि जो संसारसो बहुतदुःखैहै अर्थात् बहुतदुःख देखैहै तुम तबहीं
 यातेवचौगे जब सबकेमालिक रक्षक जे श्रीरामचन्द्रतिनकोजानौगे आनउपाय न
 बचौगे ॥ १ ॥ काहेते जे श्रीरामचंद्र को जानिकै युक्ति सहित चलेहै तेई वही यु-
 क्तिहीते संसारके फंदामें नहीं पड़ेहैं सो कबीरजी कहैहैं सो युक्ति आगे लिखेंगे ॥ २ ॥
 यासंसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चले है कबीरजी कहैहैं मैं जो निश्चय
 बात कहौहों कि, रामन्नामहीते तेरो उद्धार होयगो याकी युक्ति कोई नहीं मानैहै
 अपनेही मनकी युक्ति चलेहै ॥ ३ ॥

कनककामिनी घोरपटोरा । संपत्तिबहुत रहेदिनथोरा ॥ ४ ॥
 थोरेहि संपत्ति गो बौराई । धर्मराजकी खबरि न पाई ॥ ५ ॥

कनक जोहै कामिनी जोहै घोड़े जेहैं हाथी जेहैं पंखर जेहैं ये संपत्ति तो बहुतहै परंतु इनके भोग करिबेको दिनतो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतौ भोगमें बिताबै है साहबको कब जानैगो ॥ ४ ॥ सो तै तो थोग्गी संपत्तिमें बैराय गयो धर्मराज की खबरि तै नहीं पाई कि, जब मोको ६ जाईगे तब सारी संपत्ति हियई परीरहि जायगी तब कौन भोगकरैगो बिचारि साहब को जानो ॥ ५ ॥

देखित्रासमुखगोकुम्हिलाई । अमृतधोखेगोबिषखाई ॥ ६ ॥

औ दैवयोगजो कदाचित् तुम्है धर्मराजको त्रासदेखिकै मुख जब कुम्हिलायगयो कहे संसारते बैराग्यभई तब गुरुवालोगनके निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझौ कि, मैं अमृतहौं मन मायादिक ते भिन्नहौं सो बाततो तू सांचबिचारी ऐसहीहै परंतु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूपमें है सो गुरुवालोग नहीं बतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताही के धोखे ते अहं ब्रह्मास्मि बिषखायगयो भगवत् दास आपनेको न मान्यो साहबको न जान्यो सर्वत्र मैहीहौं या मानि कहनलाग्यो ॥ ६ ॥

साखी ॥ मैसिरजौं मैमारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥

जलथल मैहीरमिरह्यौं, मोरनिरंजननाउँ ॥ ७ ॥

औ मैहीं जगत् को सिरजौ हौं मैहीं मारौहौं मैहीं जारौहौं जौने अग्निते जारौहौं ताको मैहीं खाउँहौं औ जलथलमें मैहीं रमि रह्यौहौं मोर निरंजन नाउँ है कैवल्य महांहौं औ अंजन जो माया ताते सबलितहैंकै मैहीं सबकरौहौं ॥ ७ ॥

इति इक्कीसवीं रमैनीसमाप्ता ।

बाईसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अलखनिरंजन लखैनकोई । जेहिके बंधे बंधा सब कोई ॥ १ ॥

जेहि झूठो सो बंधोअयाना । झूठी बात सांच कै माना ॥ २ ॥

धंधा बंधा कीन्ह व्यवहारा । कर्म विवर्जित बसै निनार ॥३॥
 षट् आश्रम षट् दर्शन कीन्हा । षट् रस वस्तु खोट सब च ॥४॥
 चारि वृक्ष छाशाख बखानै । विद्या अगणित गनै न जानै ॥५॥
 औरौ आगम करै बिचारा । तेहि नहिं सुझै वार न पारा ॥६॥
 जप तीरथ व्रत पूजे भूता । दान पुण्य औ किये बहूता ॥७॥
 साखी ॥ मंदिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥

जो कोइ पैठै धाइ कै, बिन शिर सेंती जाइ ॥ ८ ॥

अलख निरंजन लखै न कोई । जेहि के बंधे बंधा सब कोई ॥ १ ॥
 जेहि झूठो सो बंधो अयाना । झूठी बात सांच कै माना ॥ २ ॥
 धंधा बंधा कीन्ह व्यवहारा । कर्म विवर्जित बसै निनारा ॥ ३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि, हे जीव! तू तो आपने को निरंजन मान्यो सो निरंजन तों
 अलख है वाको कोई नहीं लखै है जाके बंधते कहे मायामें सब कोई बंधे हैं ॥ १ ॥
 हे अजानौ ! जौने झूठे सो तुम बंधे हो सो झूठ ही है तुम सांच मानो हो सो न
 मानौ ॥ २ ॥ धंधा जो साहब की सेवा ताको बंधा कहे बांधन वारे तौने को व्यव-
 हार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्म ते वर्जित ब्रह्म सब ते
 न्यारही रहै है या परमार्थ तुम लोग कहौ हो औ वाहीमें आरुढ़ होत हो साह-
 बको नहीं जानौ हो ॥ ३ ॥

षट् आश्रम षट् दर्शन कीन्हा । षट् रस वस्तु खोट सब कीन्हा ॥४॥
 चारि वृक्ष छाशाख बखानै । विद्या अगणित गनै न जानै ॥ ५ ॥

षट् रसनको खोट मानि त्यागन करिकै औ षट् आश्रम करिकै षट् दर्शन
 करिकै वही धोखा ब्रह्म ही को सिद्धांत मानते भये ॥ ४ ॥ पुनि चारि वेद
 छवो शास्त्र अगणित विद्या वाच्यार्थ करिकै धोखा ब्रह्मको कहै हैं ताको तो तुम
 ग्रहण कियो तात्पर्य वृत्ति ते जो साहबको कहै है सो तुम न जानत भये ॥ ५ ॥

औरो आगम करेविचारा । त्यहिनहिंसूझैवारनपारा ॥ ६ ॥
जपतीरथ ब्रत पूजेभूता । दान पुण्य औ कियेबहूता ॥ ७ ॥

अरु औरौ आगम जेहँ ज्योतिष यंत्र मंत्र आदिदैकै तेऊ तात्पर्य वृत्तिते
जौने साहबको कहैहँ ताको वारपार तो तुमको न सूझिपरयो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य
जो धोखा ब्रह्म और और देवता ताही में लागत भये ॥ ६ ॥ सो यहिप्रकार नाना
मतन करिकै मानते भये कोई नाना देवतन के जपकिये कोई तीर्थ किये कोई
ब्रत किये कोई भूतनकी पूजाकिये कोई दानकिये कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्म
ते किये ॥ ७ ॥

साखी ॥ मंदिरतोहै नेहको, मतिकोइ पैठेधाई ॥

जोकोइपैठेधाइके, विनुशिरसेंती जाई ॥ ८ ॥

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखा ब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो
नेहको मंदिरहै तामें तू धायकै मतिपैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तौ विनु
शिरकहे सबकेशिरे जे साहब तिनके बिना सेंटिही जाईगो कछुहाथ न लगैगो
तेरेसाधन मुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होईंगे अथवा तुझारोमाथा
काटो जायगो वृथा मरेजाउगे ॥ ८ ॥

इति बाईसवींरमैनी समाप्ता ।

अथ तेईसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अरुपसौख्यदुखआदिहुअंता । मन भुलानमैगरमैंमंता ॥ १ ॥
सुख विसराय मुक्तिकहँपावै । परिहरिसांचझूठनिजधावै ॥ २ ॥
अनल ज्योति डाहैयकसंगा । नयन नेह जसजरै पतंगा ॥ ३ ॥
करु बिचारज्यहिसबदुखजाई । परिहरिझूठा केरि सगाई ॥ ४ ॥
लालच लागे जन्म सिराई । जरामरणनियरायलआई ॥ ५ ॥

साखी ॥ भ्रमको बांधल ई जगत, यहिबिधि आवैजाई ॥

मानुष जन्महि पाइनर, काहे को जहँडाइ ॥ ६ ॥

अल्पसौख्यदुखआदिहुअंता । मनभुलानमैगरमैमंता ॥ १ ॥

सुखविसरायमुक्तिकहँपावै।परिहरिसांचझूठनिजधावै ॥ २॥

अनलज्योति डाहै यकसंगा।नयननेह जसजरैपतंगा॥३॥

जौने संसारमें अल्प तो सुखहै औ आदिहूमें अंतहूमें दुःखहै ऐसे संसारमें मैगर मैमंताकहे मतवारो हाथी जो मन सोभुलाईकै मैमंताकहे मेंहां ब्रह्महों या मानिलियो अथवा मेंहां देहहों या मानिलियो॥१॥सुखरूप जे साहब हैं तिनको विसराइ कै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहां पावै सांचको छोड़िकै झूठ जो धोखा ब्रह्महै तामें तो धावैहै यह जीव कैसे सुखपावै ॥ २ ॥ अनलज्योतिजो ब्रह्महै सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहैहै अभि ब्रह्मको नाम है 'अज्ञात्वादग्निनामा सौ' ॥ कैसेदाहैहै जैसे नयननेह कहे देखनके लालचलगे दीपककीज्योतिमें पतंगजरैहैं ॥ ३ ॥

करुबिचारज्यहिसवदुखजाई।परिहरिझूठाकेरिसगाई॥ ४ ॥

लालचलागेजन्मसिराई।जरामरण नियरायलआई॥ ५ ॥

झूठ जो या धोखा ब्रह्महै औ अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागिकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बिचारकरु जाते तेरे सब दुःख आई ॥४॥ धोखा ब्रह्मके लालच में लगे कि, हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याहीमें लगेलगे जन्मसिरायगयो जरा जो बुढ़ाई औ मरण सो नियराय आयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ भ्रमको बांधल ई जगत, यहि बिधिआवैजाय ॥

मानुषजन्महि पायनर, काहेकोजहँडाय ॥ ६ ॥

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै औ जाइहै कहे लीन होइ है 'मानुष जन्महि पायनर काहेको जहँडाय'

कहे काहे जड़वत् होयहै मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि, मनुष्य के मानुष्य होय हैं हाथीके हाथी होय हैं कछू हाथी के मनुष्य नहीं होयहैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्मको हो तो तोहूँ निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्यरूपजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनही को है ॥ ६ ॥

इति तेईसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौवीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

चन्द्रचकोर कसिवातजनाई । मानुषबुद्धिदीन पलटाई ॥१॥
चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई ॥२॥
मिथ्यावात न जानै कोई।यहिविधि सिंगरे गये विगोई ॥३॥
आगेदैदै सबन गँवावा । मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा ॥४॥
चौतिस अक्षरसों निकलै जोई।पापपुण्य जानैगा सोई ॥५॥
साखी । सोइकहते सोइ होउगे,निकालि न वाहेरआउ ॥
होहुजूरठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ॥ ६ ॥

चन्द्रचकोरकसिवातजनाई । मानुषबुद्धिदीनपलटाई ॥१॥

साहब कहैहैं कि, हे जीवो ! तुमको गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टांत जनायकै नानाईश्वरमें लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमा को ताकत ताकत चकोर चन्द्ररूपहै या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरभी नहीं लंगैहै अग्नि खाय-जायहै तैसेअपनोस्वरूप जो ब्रह्म ताको जबजानिलेहुगे तबतुमको दुःखसुख न जानिपैरैगो कोई यह कहैहैं कि, जैसे चन्द्रमा चकोरमें नेहकैरहै ऐसे तुम ईश्वर-नमें प्रीतिकरौगे तौ दुःखसुख न जानिपैरैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि, मैं हंसस्वरूपहौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँगो सो पलटायकै ब्रह्ममें लगायदिये नानादेवतनमें लगायदिये ॥ १ ॥

चारि अवस्था सपनो कहई । झूठैफूरे जानत रहई ॥ २ ॥
मिथ्यावातनजानैकोई । यहिविधिसिगरेगयेविगोई ॥ ३ ॥

चारिअवस्थाजेहैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया ते सपनकहाती हैं तो झूठी फुरि जानत रहै हैं ॥ २ ॥ वह कैवल्य जो है पँचई अवस्था तद्रूप है जाइबो कि, मेंहीं ब्रह्महैं सोमिथ्याहै यहवात कोई नहीं जानै है यहीविधि सिगरे जीव विगरिगये कहे बिगोइगये ॥ ३ ॥

आगे दैदैं सवन गँवावा । मानुषबुद्धि न सपनेहुपावा ॥ ४ ॥
चौतिसअक्षरसोंनिकलैजोई । पापपुण्य जानैगासोई ॥ ५ ॥

वहीधोखा ब्रह्मके आगे और कुछ नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वहीतेहै यही बात आगे दैदैं कहे विचारि कै सिगरे जे ऋषिमुनि हैं ते आजअपने स्वस्वरूपको गँवावतभये मनुष्यरूपजो मैं तिन के जाननेवाली बुद्धि सपन्यो न पावतभये ॥ ४ ॥ चौतिसअक्षरके जो निकरैगा सोई पापपुण्यजानैगा मैं साहबको हों और मैं लागैहैं सो पापई करौहैं या बातमेरो अनिर्वचनीय निर्वाण जो नाम है ताको जपिकै जानैगो औ अपना स्वस्वरूप जानैगो ॥ ५ ॥

साखी ॥ सोइकहते सोइ होउगे, निकलि न बाहेरआउ ॥
हो हुजूरठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ॥ ६ ॥

जोपदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहौगे जो स्मरण करौगे संसारमें सोई होउगे वही धोखामें लागिकै पुनिसंसारी होउगे वा में ते निकरिकै बाहर न होउगे काहेते कि, वहतो अकर्ताहै तुम्हारी रक्षाकौन करैगो सो साहब कहै हैं कि, सर्वत्र पूर्णहैं तेरे हुजूर ठाढ़ कहतई हों कि, तैं मेरो है तू काहे धोखा ब्रह्म में ईश्वरनमें जगत्के नाना पदार्थमें लगिकै जन्मगँवाये देतहै ॥ ६ ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

चौतिस अक्षरकोयहीविशेखा । सहसौ नामयहीमें देखा १
 भूलिभटकि नर फिरिघर आवैं । होतज्ञान सोसवन गवाँवैं २
 खोजहिं ब्रह्मविष्णु शिवशक्ती । अनंतलोकखोजहिं बहुभक्ती ३
 खोजहिं गणगंधर्वमुनिदेवा । अनंतलोकखोजहिं बहुसेवा ४
 साखी ॥ यतीसती सबखोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
 बड़ेबड़े बीरवाचें नहीं, कहाहिं कवीरपुकारि ॥ ५॥

चौतिस अक्षरकोयहीविशेखा । सहसौ नामयहीमें देखा ॥ १॥
 भूलिभटकिनर फिरिघर आवैं । होतज्ञान सोसवन गवाँवैं ॥ २॥

चौतिस अक्षर को विशेष धोखई है काहेते हजारनाम यही चौतिस अक्षरमें देखेहैं अर्थात् जे भरि वचनमें आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखई है मिथ्याही सो चौतिसै अक्षरके भीतर सबहै अनिर्वचनीयपदार्थ तोको कैसे मिले ॥ १॥ चौतिस अक्षरको विस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञानभूलि भटकिकै जब-पार नहीं पावै है तब फिरि थकिकै आपने घटमें आय या कहै है कि एकये-हूनहीं है वेदहू तौ नेतिनेतिकहै हैं तब अपनो स्वरूपमें आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवा लोग भटकाइकै अज्ञानमें डारि दिये जौन यह विचारकियो कि ये सब अनिर्वचनीय नहीं हैं सो गँवायँदियो अनिर्वचनीय धोखाब्रह्महीको मानतभये ॥ २ ॥

खोजहिं ब्रह्मविष्णु शिवशक्ती । अनतलोकखोजहिं बहुभक्ती ३
 खोजहिं गणगंधर्वमुनिदेवा । अनतलोकखोजहिं बहुसेवा ४

अनंत जे लोकहैं । तिनमें अनंत जे ब्रह्मा बिष्णु महेश शक्ति तिनकी भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डनमें अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनंत लोकमें बहुत सेवाकरि गंधर्व मुनि देवता खोजनलगे ॥ ३ ॥ ४ ॥

सारखी ॥ यती सती सबखोजहीं, मनै न मानैहारि ॥

बड़े बड़े वीरवाचेंनहीं, कहहि कबीरपुकारि ॥ ५ ॥

औ यती सती सब मनमें हारि ना मानिकै वही अनिर्वचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजैहै सो कबीरजी कहै हैं कि, मैं पुकारिकै कहाँहों या माया ब्रह्मकेँ धोखाते बड़े बड़े वीर नहीं बाचे हैं जे कोई बिरले संत साहबको जानै हैं तेई बाचे हैं तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ (रसना रामगुणरमिरमि पाँजै । गुणातीत निर्मूलक लंजै । निरगुण ब्रह्मजपौरे भाई । जेहि सुमिरत सुधिबुधि सब पाई ॥ विषतजिराम न जपसि अभागे । काबूड़ेलालचकेलागे ॥ ते सब तरे रामरस स्वादी । कह कबीर बूड़े बकवादी) ॥ ५ ॥

इति पचीसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ छब्बीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

आपुहि करता भे करतारा । बहुविधि वासनगढ़ै कुम्हारा १
विधनासवैकीनयक ठाऊं । अनेक यतनकै बनकवनाऊं २
जठरअग्निमँहँदियपरजाली । तामें आपुभये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहर आया । तब शिवशक्ती नामधराया ४
घरको सुत जो होय अयाना । ताके संग न जायसयाना ५
सांचीवात कहाँ मैं अपनी । भयादेवाना और कि सपनी ६
गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा । काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ॥ ७ ॥
झूठ गर्व भूलै मति कोई । हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिनयह चित्र बनाइया, सांचा सूत्रधारि ॥

कहही कविरते जन भले, चित्रवंतहिंलोहिविचारि॥६॥

आपुहिकरताभेकरतारा । बहुविधिवासनगढ़ैकुम्हारा ॥१॥

विधनासवैकीनयकठाऊं । अनेकयतनकैवनकवनाऊं ॥२॥

बिधि जे ब्रह्महैं ते अपनेको कर्ता मानि सब साजुजोरि अनेक यतन
कै जगत् बनावतभये जैसे कुम्हार दण्ड चक्र सब साज जोरि कै वासन
गढ़ै है सो करतार जो अपनेको कर्ता मान्यो सो वाकी अज्ञानताहै
काहेते कबीरजी कहै है कि सबसाजु आगेही उत्पन्न हैरही है कौन
नईसाज बनाइ करतार अपनेको कर्तामानै साजुतो सब आगेकी उत्पन्न भई है
सो कहै हैं ॥ १ ॥ २ ॥

जठरअग्निमहँदियपरजाली । तामेंआपुभयेप्रतिपाली॥३॥

बहुतयतनकैबाहरआया । तबशिवशक्तीनामधराया ॥४॥

जब महाप्रलय होइ जाइहै तबजौनकाठरहिजायहै सोकाल सदा शिवरूपहै
ताके जठरमें कहे पेटमें अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म तामें समष्टि जीवपर
जालिदिये पराशक्ति को जाल लगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म
सो महीं हौ यह मानि माया सबलित होतभयो तामें तौने माया के प्रति-
पाली अपि ही होतभये अर्थात् जीवनके मानेमात्र मायाहै ॥ ३ ॥ सो माया
सबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनामको संसारमुख अर्थ
करि पांचौ ब्रह्म आदि सब बस्तु उत्पन्नकै समष्टिते व्यष्टिहैकै जगत् उत्पन्न
कियो ताको शिव शक्त्यात्मक नाम धरावतभये ॥ ४ ॥

घरकोसुतजोहोयअयाना । ताकेसंग न जाहिसयाना॥५॥

सोकबीरजी कहैहैं कि, हे 'जीवो! येब्रह्मादिकतुम्हारेही सुत हैं तुमहीं समष्टि
ते व्यष्टि भयेहौ कि, जो घरकोपूत अयान होइ है ताकेसंग सयान नहीं जायहै

ऐसेही ब्रह्मादिक जे अनेकमत करिके आपनेको कर्ता मानि लिये हैं तिनके संग
तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम न परौ तुम साहब को जानो ॥ ५ ॥

साँचीबातकहाँमैंअपनी । भयादेवानाऔरकिसपनी ॥ ६ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, साँचीबात में अपनी कहौहौं अपनी कौनकी में
नाना मतनको छांड़ि साहबको जान्यो है सोतुम नहीं बूझौहौ और की सपनी
कहे स्वप्नवत् झूठी नानामतनकी बाणीमें देवाना कहे बिकल है रहेहौ हैं
जीवो ! सो नातामत त्यागि साहबको जानो कहे और की पुनि जो या पाठहोय
ताको अर्थ या है साँचोबात अपनी में कहताहूं जोमेरे मतमें साहबको जानता
है सोई साँचहै यासुनि पुनि और का जा भया सोई दिवाना ॥ ६ ॥

गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा । काकोकहिये ब्राह्मणशुद्रा ॥ ७ ॥

झूठगर्व भूलै मतिकोई । हिंदू तुरुक झूठ कुल दोई ॥ ८ ॥

सो हेजीवौ ! गुप्तकहे जब समष्टिमें रहे हौ तबहूं औ जबप्रगट कहे व्यष्टिमें रहेहौ
तबहूं एकही मुद्रारहेहौ अर्थात् साहिब के रहेहौ तुम ने नाना मतनमें परि
नाना साहब मानि ब्राह्मण शुद्रकहतेहौ सो झूठहौ जीवत्व तो एकही है ॥ ७ ॥
मैं हिंदूहौं मैं तुरुकहौं यह झूठो गर्वकरिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ
तौ हिंदू तुरुक कुल ये दोऊ झूठे हैं तुमतौ साहबके हौ ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, साचा सो सूत्रधार ॥

कहहिकविरतेइजनभले,चित्रवंतहिलैहिविचार ॥६॥

जिन यह नाना चित्र बनाइया कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत्में
बनायो है तौने को सूत्रधारी साहब साँचो है जौन सबको सुरतिदियो है सो
कबीरजी कहहै चित्रवंत जो या मन नानादेह देनेवालो याको जो कोई बिचा-
रिलियो कि या मिथ्याहै औ साँच साहब को जानिलियो ते जन भले हैं ॥ ६ ॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा । सात द्वीप पुहुमी नौखण्डा ॥ १ ॥
 सत्य सत्यकै विष्णु दृढाई । तीनिलोकमहँ राखिनि जाई ॥ २ ॥
 लिंग रूप तब शंकर कीन्हा । धरती कीलि रसातल दीन्हा ॥ ३ ॥
 तब अष्टांगीरची कुमारी । तीनिलोक मोहनिसवझारी ॥ ४ ॥
 द्वितीयानामपार्वती भयऊ । तपकरता शंकर को दयऊ ॥ ५ ॥
 एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भौ चारी ॥ ६ ॥
 शर्मन वर्मन देवो दासा । रजगुण तत्पुण्य धरनि अकासा ॥ ७ ॥
 साखी ॥ एक अंड अँकार ते, सब जग भयो पसार ॥

कहकवीरसवनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार ८

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा । सात द्वीप पुहुमी नौखण्डा ॥ १ ॥
 सत्य सत्यकै विष्णु दृढाई । तीनिलोकमहँ राखिनि जाई ॥ २ ॥

अष्टांग कौन हैं ॥ (भूमिरापोनलोवयुः संमनो बुद्धिरेव च ॥ अहंकार इतीयं मे भि-
 त्नामकृतिरष्टधा) ॥ ऐसी जो इच्छारूपी नारी अष्टांगी सो ब्रह्मा को ब्रह्मांड देत-
 भई औ सात द्वीप नौखण्ड पृथ्वी विष्णु को दैकै तीनिलोकमें राखिनि कहे
 व्यापक करि देत भई औ विष्णु को नाम सत्य धरावत भई सो आठ नाममें प्रसिद्ध है ॥
 “हरिः सत्यो जनार्दनः” ॥ सो जब ब्रह्मा विष्णु दोऊ अपने अपने को मालिक
 मानि लरे तब महादेवजी कह्यो कि, हम लिंग बड़ावै हैं जोई अंत ले आवै
 सोई बड़ो ॥ १ ॥ २ ॥

लिंग रूप तब शंकर कीन्हा । धरती कीलि रसातल दीन्हा ॥ ३ ॥

तब महादेवजी सातलोक नीचे के सात ऊँचे के तामें कीलवत् लिंग बड़ावत
 भये ब्रह्मा विष्णु दोऊ को पठ्यो कि, जाय अंतल आवो सो विष्णु जायकै या कह्यो

कि, हम अंत नहीं पाये ब्रह्माकह्यो हम अंत लै आये सुरभीके दूधते नहवाय, केतकीके फूलतेपूज्यो है सोसुरभी औ केतकी साखीहैं तब महादेवतीनोंको झूठा-जानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्यहोउ सुरभीको कह्यो तुम्हारोमुख अशुद्धहोइ केतकीको कह्यो हमपर न चढ़ो औ विष्णुको प्रसन्न हैकै या कह्यो कि, तीन लोकमें पूज्य होउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणमें कथा प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

तबअष्टंगीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसवझारी ॥ ४ ॥
द्वितियानामपार्वतिभयऊ । तपकरताशंकरकोदयऊ ॥ ५ ॥

तबअष्टंगी जो कारणरूपाशक्ति सोप्रसन्न हैकै तीनि लोककी मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तपकरता जेदक्षैहैं तिनकेद्वारामहादेवजीको देतभई तौनेही को दूसरो पार्वती नाम भयो ॥ ४ ॥ ५ ॥

एकैपुरुषएकहै नारी । ताते रचिनि खानि भै चारी ॥ ६ ॥
शर्मनबर्मनदेवोदासा । रजगुणतमगुणधरणिअकासा ॥ ७ ॥

एकै पुरुष जोहै ब्रह्म अरु एकै नारी जोहै माया ताते चारिखानिके जीव उत्पत्ति होतभये अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज ॥ ६ ॥ औ शर्मन बर्मन देवो दासा कहे शर्मन ब्राह्मण बर्मन क्षत्री देवो वैश्य दासा शूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता बर्मन कहेवक्ता अरुदेवता औ उत्केदास रजोगुणी तमोगुणी औधरती औआकाश होतभये ॥ ६ ॥ ७ ॥

साखी ॥ यकअंड उँकारते, सब जग भयो पसार ॥

कह कबीर सवनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार८

मंगलमें पांच ब्रह्म पांच अंडमें राख्यो है या कहि आये हैं सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जोहै अंडप्रणव ता प्रतिपाद्य जो ब्रह्म सोमायासबलितहै इच्छा आदि अष्टांगी उत्पन्नकै जगत् पैदाकियो है सो कबीरजी कहै हैं कि, धोखा वही है प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं काहेते रामनामहीके जगत्मुख अर्थते

प्रणव प्रगटभयो है ताते प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनामको साह
बैमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हेजीवो! तुमसब रामचन्द्रहीकी नारीहौ
अविचल कहे न चलायमान निर्विकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी
तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित्शक्ति माया अष्टांगीआदि अचित् शक्ति
ई दूनों शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रही हैं इहां कबीरजी मायामें
सब परे हैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबी-
रजी कि, तुम रामकी नारीहौ और पुरुषकरौगी तौ मारी जाउगी ॥ ८ ॥

इति सत्ताईसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ अट्ठाईसवींरमैनी ।

चौपाई ।

अस जोलहाकामर्म न जाना। जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़वनाई। चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई ॥ २ ॥
सहस तार लै पूरिन पूरी । अजहूं विनै कठिनहैदूरी ॥ ३ ॥
कहहिं कबीर कर्म सों जोरी। सूतकुसूत विनै भलकोरी ॥ ४ ॥

अस जोलहाकामर्मनजाना । जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाशदुइगाड़वनाई । चंद्र सूर्य दुइनरा भराई २

यहि भांतिको जोलहा जो मनहै जौन जगत्में तानपसारयो है कहे बाणी
पसारयोहै ताकोमर्म कोई न जानतभयो भतारश्री रामचन्द्रको भूलिगये धोखा-
ब्रह्म नानापति खोजनलगयो १ महि औ आकाशकहे अधः ऊर्ध्व दुइगाड़वा
बनावतभये तामें चन्द्र सूर्य इडा पिंगलाहै तिनकर नराभरावत भये ॥ २ ॥

सहसतारलै पूरिनपूरी । अजहूं विनैकठिनहै दूरी ॥ ३ ॥
कहहिंकबीरकर्मसोंजोरी । सूतकुसूत विनैभलकोरी ॥ ४ ॥

अरु तार जोहै प्रणव ताको हजारन दोनों कुम्भकमें जपत भये अजहूंलों बाहींमें लगेहैं औ यहकहैहैं कि, कठिन दूरिहै॥३॥ कबीरजी कहैहैं जब तानाको-
ताग टूटिजाइहै तब कोरी भिजै कै जोरिदेइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरिदेइहै सोकर्म को लाठिनमें बांधिकै सूतजोहे जीव कुसूत जोहै वाणी ताको जोलहा जो मनहै सो विनयहै अथवा विद्या अविद्या सूतकुसूत विनय है जब बस्तु तय्यार होइजायहै तब जोलहाको विनिबो छूटे है सो धोखा ब्रह्ममें लागि अनादिकालते बिनतईहै जब साहबको जाँन तब साधनरूप कर्मकरिवो छूटिजाइ हंसरूप साहबदेइ जरामरणमिटिजाइ ॥ ४ ॥

इति अष्टाईसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ उनतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बज्रहु ते तृण क्षणमें होई । तृणते बज्रकरै पुनि सोई ॥ १ ॥
निझरू जानि परिहरई । कर्मकवांधल लालच करई ॥ २ ॥
कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया । झूठानाम सांचलै धरिया ॥ ३ ॥
रजगति त्रिविधकीनपरकाशा । कर्म धर्म बुधिकेर विनाशा ॥ ४ ॥
रविकेउदय ताराभो छोना । चरेवेहर दोनों में लीना ॥ ५ ॥
विषकेखाये विष नहिं जावै । गारुड़सो जो मरतजिआवै ॥ ६ ॥
साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों, पलकहिमोंडसिजाय ॥
विषहर मन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ॥ ७ ॥

बज्रहुते तृण क्षणमें होई । तृणते बज्रकरै पुनि सोई ॥ १ ॥
निझरू नरूजानिपरिहरई । कर्मकवांधललालचकरई ॥ २ ॥

बज्रहुते तृण क्षणमें करिदेइहै अरु तृणते बज्रकरिदेइहै ऐसेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको जानो ॥ १ ॥ निझरूनरूकहे जिनको मायाब्रह्मको धोखा निझरि गयो कहें मिटिगयो ऐसे जे नर हैं ते पूरा गुरुपाइकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै संपूर्ण जगत्के कर्म त्यागिदेइ हैं औ जे कर्ममें बँधे हैं ते अनेक लालचकरै हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्ममिलन की कोईईश्वरनकी ॥ २ ॥

कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया । झूठानामसांचलैधरिया ॥ ३ ॥
रजुगतित्रिविधिकीनपरकाशा । कर्मधर्मबुधिकेरविनाशा ॥ ४ ॥

साहबके मिलनवारो जो कर्मधर्म बुधिहै ताको त्यागिदेतेभये झूठझूठे जे देवताहै तिनको नाम सांचमानिकैजपतभये ॥ ३ ॥ गुरुवालोग रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनप्रकारके मत प्रकाशकैके साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधि है ताको नाशकरि देत भये ॥ ४ ॥

रविकेउदयतारा भोछीना । चरवेहरदोनों में लीना ॥ ५ ॥
विषकेखायेविषनहिंजावै । गारुड़सोजोमरतजिआवै ॥ ६ ॥

हे जीवो ! गुरुवालोग तुमको उपदेश देयें हैं जैसे सूर्यके उदय मो ताराको तेजक्षीण हैजायहै ऐसे जबज्ञानभयो जीवत्वमिटयो तब चर औ वेहर जो अचर ये दोनोंमें लीन है जाय है चरअचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानैहै ॥ ५ ॥ सो साहब कहै हैं कि हेजीवो! ऐसो उपदेश जो गुरुवालोग तुम्हें दियो सो ठीकनहीं है काहेते कि संसार विष उतारिबेको तुम धोखा ब्रह्ममें लगैहौ सो विषके खाये विष नहीं जाइहै यह धोखाब्रह्म विषरूपैहै संसार देनवारोहै गारुड़ सो कहाँवैहै जो मरतमें जिआइलेइ सोमेरोज्ञान धोखा ब्रह्मविषते बचाई कालते बचाइलेइ ताको जानो ॥ ६ ॥

साखी ॥ अलखजोलागीपलकमों, पलकहिमोंडसिजाय ॥
विषहरमंत्र न मानही, गारुड़ काह कराय ॥ ७ ॥

अलख जो वह ब्रह्म है सो सबके पलकमें लाग्यो है अर्थात् पलपलमें ध्यान करै है
औ एक पलही में डसि जाय है अर्थात् जो गुरुवनके मुंहते कढ़्यो सो पलै में वा
ज्ञान लगि जाय है सो साहब कहै हैं कि तैं मेरो है मेरी तरफ आउ यहि विषको
हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानतही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काह करौ ॥७॥

इति उनतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

औ भूले षट्दरशन भाई । पाखँडवेष रहा लपटाई ॥ १ ॥
जीवसीवका आयन सौना । चारो वद्ध चतुरगण मौना ॥ २ ॥
जैनी धर्मकर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ॥ ३ ॥
दवना मरुवा चंपा फूला । मानों जीव कोटि समतूला ॥ ४ ॥
औ पृथिवी को रोम उचारै । देखत जन्म आपनो हारै ॥ ५ ॥
मन्मथ बिन्दुकरै असरारा । कलपै बिन्दुखसै नहिं द्वारा ॥ ६ ॥
ताकर हाल होय अघकूचा । छादरशनमें जैन विगूचा ॥ ७ ॥
साखी ॥ ज्ञान अमर पद बाहिरे, नियरे ते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकट है, रह्यो सकल घटपूरि ॥ ८ ॥

औ भूले षट् दरशन भाई । पाखँडवेष रहा लपटाई ॥ १ ॥
जीवसीवका आयन सौना । चारो वद्ध चतुरगुण मौना ॥ २ ॥

पाखण्ड वेष जो धोखा ब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्यो है ताहीमें षट्दर्शन
जे हैं तेऊ भूलि मये ॥ १ ॥ यह जो धोखा ब्रह्मको ज्ञान है सो जीव जो है ताको
सीव जो कल्याण है सो नशावनवारो है औ चारों प्रकारके जीव जे हैं तेऊ बद्ध हैं
जे चतुर हैं ते गुणमौना कहे गुणातीत हैं परंतु वोऊ धोखा ब्रह्मही में हैं ॥ २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना । पातीतोरि देवघर आना ॥३॥
दवना मरुवा चंपा फूला । मानोंजीवकोटि समतूला ॥४॥

अरुजैनी जे नास्तिकहैं ते धर्मको मर्म नहीं जान्या कांहेते कि बांधे तो मुंहै पट्टीरहैं कि कहां किरवा न धुसिजाय जीवको बचावहैं कि हिंसा हम न करेंगे सो जिन वृक्षनमें जीव हैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जे पारसनाथ देवहैं तिनमें चढ़ावै हैं ॥ ३ ॥ दवना औ मरुवा औचंपाके फूलको तोरिकै कोटिन जेजीवहैं तेसूधिकै अघायहैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्तिमें चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ा! प्रत्यक्ष जे जीव वृक्षहैं तिनका पत्रको तोरिकै जड़ जो पाषाणहै तामें काहेको चढ़ावोहौ तुम तो प्रत्यक्ष प्रमाण मानौहौ कर्म किये फल होय है यह मानतही नहीं हौ पाषाणपूजे कहा फल होइगो ॥ ४ ॥

औ पृथिवीकोरोमउचारै । देखत जन्मआपनोहारै ॥ ५ ॥
मन्मथ बिंदु करै असरारा । कलपैबिन्दुखसैनहिंद्वारा ॥६॥
ताकरहालहोयअघकूचा । छादरशनमेंजैनविगूचा ॥ ७ ॥

औ पृथ्वी के रोमाजेहैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावै हैं औ शिष्यनकी स्त्रिनको देखिकै भोगकारिकै अपनो जन्म हारिदेइहैं कहे नरकको जायहैं ॥ ५ ॥ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दुको असरारा कहे सरलकरै हैं औ कन्यनते भगिनी नाते औ उनकी स्त्रिनते भोग करै हैं तव वह बिन्दु ऊपरते नीचेकोकल्पतहै कहे वदतहै औ पुनि नीचेते मेरु दंडद्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लैजाइहै ॥ ६ ॥ सोजे जैनधर्मी हैं छः दर्शन में विगूचा कहे भूलि गयेहैं तिनकी औ जिनको कहिआये हैं बौर्य बड़ावन वारे तिनको हाल अघ कूचा कहे नरकनमें कूचे जाहि हैं ॥ ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेतेहै दूरि ॥

जो जानै तेहि निकटहै, रह्योसकलघटपूरि ॥ ८ ॥

अमरपद कहे आत्माको जो स्वस्वरूपहै सो साहबकोअंशहै दासहै सोई
अमरहै ताको ज्ञान नियरेते दूरहै औबाहिरहै इहा नियरेते दूरि कह्यो ताते
अपनेको ज्ञाननहीं है औ बाहिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परन्तु जो सतगुरु
भेद बतावै है तौ ज्ञान होइहै आत्माके स्वरूपको जानैहै ताको साहब निकटहीहै
काहे घटघटमें तौ पूर्ण है तौ आत्माके निकटहै ॥ ८ ॥

इति तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इकतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

स्मृतिआहि गुणनकोचीन्हा।पापपुण्यको मारगलीन्हा॥
स्मृति वेद पढ़ैअसरारा । पाखंड रूप करै अहंकारा॥ २ ॥
पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गांठिअजहुंनहिंजाई ॥ ३ ॥
पढ़िकैशास्त्रजीववधकरई । मूढ़ काटि अगमनकै धरई॥४॥
साखी ॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥

अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपुलखाय॥५॥

स्मृति आहिगुणनकोचीन्हा । पापपुण्यकोमारगलीन्हा ॥
स्मृतिवेदपढ़ै असरारा । पाखंडरूप करै अहंकारा ॥ २ ॥

स्मृति गुणनको चीन्हा आहि कहे तीनोंगुण स्मृति में देखिपरै है काहेते
कि पाप पुण्यको मार्ग चीन्हे हैं अर्थात् पापपुण्यके मार्ग वाहीते जानिपरैहैं ॥ १ ॥
रारा जो जीव स्मृति वेदका असपढ़ताहै पाखण्डरूप हैकै या अहंकार करैहै
जानिबेकेलिये नहीं पढ़ैहै अर्थात् हमविद्यामें जीतै कोई विद्यामानजानि हमें
मानै चेलाहोइ इत्यादिकछू आपनै न पढ़ै है ॥ २ ॥

पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गांठि अजहुंनहिंजाई ॥ ३ ॥
पढ़िकैवेदजीववध करई । मूढ़काटिअगमनकै धरई॥ ४ ॥

वेद पढ़ेहैं सब देवतनकी बड़ाईकहे स्तुति करैहै अथवा अपनीबड़ाई करैहै कि मैं महापण्डितहों संशयकी गांठिनो परिगई है सो अजहूं नहीं जाइहै वेदांत शास्त्र आदि पढ़ेहैं आत्मा सर्वत्रहै या कहैहै पै चैतन्य जो जीवहै ताको मूढ़ कष्टिकै पाषाण की मूर्तिहै ताके आगू धरैहै ॥ ३ । ४ ॥

साखी ॥ कहकबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥

अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपुलखाय ॥५॥

कबीरजी कहैहैं कि यहिपाखण्डते बहुत जीवनको सतावत भये उनको अनुभवको भाव नहीं दरशैहै कि जैसे हममारैहैं तैसे येऊ हमको मारेंगे जब भरिजिएहैं तबभर अपनी इच्छानहींकरै हैं जेहिते बचैं ॥ ५ ॥

इति इकतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बत्तीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अंध सो दर्पण वेद पुराना । दरवी कहा महारस जाना ॥१॥
जसखर चन्दनलादेभारा । परिमलवास न जानगँवारा ॥२॥
कहकबीरखोजै असमाना । सोनमिलाजो जाय अभिमाना ॥३॥

जैसे आँधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै औ दरवी जो करछुलीहैसों पाकके रसको कहाजानै ॥१॥ औ गदहा चन्दनकोलादे चन्दनकी सुवास कहा-जानै तैसे गँवारजेहैं ते बेदपुराणको तात्पर्यार्थजे साहबहैं तिनको कहाजानैं जो गरवीपाठहोय तो या अर्थहै अहंकारी लोगमधुर रसको काजानैं २ सो कबीरजी कहैहैं कि आसमान जो निराकार धोखाब्रह्मताको खोजै हैं सोबातो झूठईहै सो पुरुष याको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्म को अभिमान जाय औ साहब को जानिलेय ॥ ३ ॥

इति बत्तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तेंतीसवीं रमैनीं ।

चौपाई ।

वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई ॥१॥
 आपुहि बरी आपु गरवंधा । झूठी मोह कालको धंधा ॥२॥
 बंधवतबंध छोड़िना जाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ॥३॥
 हमरेलखतसकलजगलूटा । दासकबीर रामकहिछूटा ॥४॥
 साखी ॥ रामहि राम पुकारते, जीभ परिगोरोस ॥
 मूधाजल पीवैनहीं, खोदिपियनकी होस ॥ ५ ॥

वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई ॥ १ ॥

यहांकर्मकाण्ड उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड ये तीनोंकी कठिनतादेखाइ तात्पर्य वृत्तितेछुड़ाइ साहबमें लगावैहै । कबीरजी कहै हैं कि हेभाइउजौनीस्मृतिको कर्म प्रतिपादक अर्थकारि कर्मरूप जेवरीमें तुम बांधिगयेहौ स्मार्त भयेहौ सो स्मृति वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको तात्पर्य कर्म के छुड़ाइवेमें है धौंकर्मके बांधिवेमें है तौ स्मृतिको अर्थ कबजानोगे ? सो वेदकों तात्पर्य तौ कर्मते छुड़ायेबेहीमेंहै कैसे जैसेजीवनकी मांसमें आसक्ति स्वभावईते है वैसे छोड़ावै तौ न छूटे ताते वेद नियम बंतावै है कि मांसखाय तौयज्ञमें खाय ताते या आयो कि जब बहुत श्रमकारि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञकरैगो तब थोड़ामांस बिनास्वादका पावैगो तामें या बिचारैगोकि या थोड़ेमांसबिना स्वादके खाये यामें कहाहै या बिचारि मांसछोड़ि देयगो याभांति कर्मकांडको तात्पर्य निवृत्तिहीमेंहै औ स्मृति नाना देवतनकीउपासना कहैहैं सो उन पूजनकी यंत्र मंत्रकी पुरश्चरणकी विधि कठिनहै जोकरतमें सिद्धिभयो तौ उनके लोककों यथो जो कछु बीच परिगयो तौ बैकलाइके मरिजाइ है या भांति उपासना काण्डको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है औ स्मृतिज्ञानकाण्डजोकहैहैं सो मनको साधन

कठिन है काहेते कि जो अहंब्रह्मास्मि मान सर्व कर्मनको त्यागिदियो औ दूसरी बुद्धिन गईतौ पतितहै जाय है । तामें एक इतिहासहै। एकराजाके गोहत्यालगी सो हत्याआई तब राजाकह्यो कि सर्वत्र ब्रह्मही है हमहूँ ब्रह्महैं हमको हत्याकाहेको लगैगी हाथके देवता इन्द्रहैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देत-भयो तब वहहत्या राजाकी बेटीके पासगई सो वो शृंगारकरि रानीके पलंगमें परिरही तहां राजाआये कन्याको परी देखी तब कह्योकि तू कहापरीहै तब कन्याकह्यो जैसेरानी तैसे मैं ब्रह्मतो एकही है तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिरमें चढ़िबैठी । या भांति ज्ञानकाण्डहूको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है कि जौनसरल उपाय वेद तात्पर्य कैकै बतौवैहै कि मनादिकन को छौड़िकै रामनामकोजपै साहबको हैजाय तौमुक्ति हैजाय तामें प्रमाण ॥ (द्वापरान्ते नारदोब्रह्माणं प्रतिजगाम कथं नु भगवन् गांपर्य्यटन्कलिसंतरेयामिति । सहोवाच भगवत आपुरुषस्य नारायणस्य नाम्नेति नारदः पुनः पप्रच्छ भगवतः किं तन्नामेति सहोवाच हरेराम हरेराम राम राम हरे हरे श्रुतिः ॥) आदिपुरुष भगवान् नारायणके नामहैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो औ पूछ्यो कि कौननामहै तब रामनामको बतायो तेहिते उद्धारकर्तारामनामही है पुनि स्मृतिहू कहैहै ॥ “सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एकएवपरोमंत्रौराम इत्यक्षरद्वयम् ॥” ताते वेदको तात्पर्य कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड तीनोंके त्यागमेंहै साहबकेमिलायवेमेंहैतामें प्रमाण ॥ “सर्वेवेदायत्पदः मामनंति इति श्रुतेः” ॥ औ कबीरजीहू कह्यो है कि वेदकोअर्थ उलटिकैकहे तात्पर्यते समुझैतोतौने अर्थ वेदको सांचहैं अपरोक्ष अर्थतौझूठो है तामें प्रमाण “दौड़धूप सबछोड़ो सखिया, छोड़ो कथापुरान । उलटि वेदका भेदलखौ, गहि सारशब्द गुरुज्ञान ॥” दूजोप्रमाण ॥ आसन पवन किये दृढ़रहुरे । मनको मैल छाड़िदेबौरे ॥ काशृंगीमूड़ा चमकाये । क्या बिभूति सब अंगलगाये ॥ क्याहिंदूक्या मूसलमान । जाको साबित रहै इमान ॥ क्याजो पढ़ियावेदपुरान । सोब्राह्मणबूझैब्रह्मज्ञान ॥ कहैकबीर कछुआननकीजे । राम नामजपिलाहालीजे ॥” सोस्मृतिमें जोतुमको नानाअर्थ भासमान होय है सोई बंधनरूपजेवारि करमें लैतै आई है सो वा जेवारि तुम्हारही बरी है ॥ १ ॥

आपुहि बरी आपुगरबंधा । झूठामोह कालकोबंधा ॥ २ ॥

सो आपही स्मृतिको कर्म प्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरीबरिकै आपही
गरबांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठानोमोहहै तामें परिकै कालको
धन्धाबनावतभयो अर्थात् नानादेहधरतभयो कालमारतभयो साहबको जो तात्पर्य
ते स्मृति बतावै है ताको ना संबुझावत भयो ॥ २ ॥

बंधवतबंधछोड़िनाजाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ॥ ३ ॥

हमरेदेखत सबजगलूटा । दासकबीर रामकहि छूटा ॥ ४ ॥

सो बांध तो बांध्यो पै वह बंधते छोड्यो नहीं छूटैहै विषयमें सब दुनियां
भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तौ छागरमारि बलिदानदै खाइलियो औसु-
रापानहू करिबेको चाह्यो औ वेदया राखिबो चाह्यो तौ बाममार्गलियो इत्या-
दिक अर्थ करिकै ॥ ३ ॥ सो कबीरजी कहै हैं कि हमारे देखत देखत यह-
माया संपूर्ण जगको लूटिलियो सो मैतौ रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको
बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ॥ ४ ॥

साखी ॥ रामहिराम पुकारते, जीभपरिगोरोस ॥

सूधाजलपीवैनहीं, खोदिपियनकीहोस ॥ ५ ॥

मोको रामैराम पुकारत पुकारत कि राममें लगौ जीभमें रोस परिगयो
कहे ठहर परिगयो पै जीव न मानत भये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि
सीधे रामकहै तरिजाय वही धोखा ब्रह्ममें लगाइकै नानामत दक्षिण बामा-
दिक करिकै खोदिकै जलपियन की हवस करैहै कहे आशा करैहै सो ये तो सब
धोखाई है मुक्तिकैसे होयगी सीधे रामजपि स्वामी सेवक भावकरि संसार साग-
रते उतरि काहे नहीं जायहे ॥ ५ ॥

इति त्रेतीसवीं रमैनी समाप्त ।

अथ चौंतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

पढ़िपढ़िपंडितकरिचतुराई । निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई १
 कहँवसै पुरुषकवनसोगाऊँ । सोम्वहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ २
 चारिवेद ब्रह्मा निज ठाना । मुक्तिक मर्म उन्हीं नहिंजाना ३
 दानपुण्यउनबहुतबखाना । अपनेमरनकिखबरिनजाना ४
 एकनाम है अगम गँभीरा । तहँवाँ अस्थिर दास कवीरा ५
 साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥

आवागमन कि गमनहीं तहँसकलौ जगजाय ॥ ६ ॥

पढ़िपढ़िपंडितकरिचतुराई । निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई १
 कहँवसैपुरुषकवनसोगाऊँ । सोम्वहिं पंडितसुनावहुनाऊँ २

हे पण्डितौ ! पढ़ि पढ़ि के चतुराई करौहौ सो अपनी मुक्तितौ समुझाई कहौ
 कहां ते तिहारी मुक्तिहोईहै जौने को मुक्ति माने हो सो ब्रह्म धोखाहै ॥ १ ॥
 अरु वह ब्रह्मलोक प्रकाशहै सो जाकेलोक को प्रकाशहै सो वह पुरुष कहां
 बैसैहै ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बतावो
 वह कौनहै ? ॥ २ ॥

चारिवेदब्रह्मानिजठाना । मुक्तिकमर्मउन्हींनहिंजाना ॥ ३ ॥

चारिवेद को हम कियो है औ हमहीं जानैहैं हमहीं पढ़ैहैं यह ब्रह्मा मानत
 भये पै वेदको तात्पर्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते
 कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी हैकै जगदकी उत्पत्ति काहेको करते
 ब्रह्माहूको भ्रम भयोहै सो प्रमाण मंगलमें कहिआये हैं तौ पण्डित कहाजानै

वही धोखामें पण्डित लोग लगावतभये कि वह जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है सो तुहां है अहंब्रह्मास्मि यह भावना करु सो वातो जीवहीको अनुभवहै जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहा बतावै वाको तो अनामाकैहैं अरु वाको बस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देशकाल बस्तुके रहित कहै हैं सो जाके नाम रूप नहीं है देशकाल बस्तुते रहितईहै सो वहहै कि नहीं है जो कहो अनुभवमें तो आवैहै तौतौ अनुभवौ तौ जीवहीको है जो यह विचारियो धोखाई भयो तौ जीवब्रह्म कैसे होइगो ॥ ३ ॥

दानपुण्यउनबहुतबखाना।अपनेमरनकीखबरिनजाना॥४॥
एक नामहैअगमगँभीरा।तहवाँअस्थिरदासकबीरा ॥ ५ ॥

अरुकर्मकांडवारे दानपुण्य बहुतबखान्योहै पै अपनेमरिबेकी खबारी नहीं जान्यो कि यहकाल बहुतदान पुण्यवारेनको खाइ लियोहै हमकैसेबचैमे ॥ ४ ॥
 जोने नाममेंलगे जन्म मरणनहीं होइहै औअगमहै कहे जेसंतलोगहैं तेईपावैं हैं अरु गँभीरपद है कहेगहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाममें मैं स्थिरहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ चीटी जहां न चढिसकै, राई नहिं ठहराय ॥
आवागमन कि गमनहीं,तहँ सकलौजगजाय ॥६॥

वो ब्रह्म कैसो है कि चीटी जो बाणी है सो नहीं पडुँचै औ राई जो बुद्धि है सो नहीं ठहराय अर्थात् मन बचन के परे है औ आवागमनकी गमनहीं है अर्थात् न वहांते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात् मिथ्याहै तहां सिगरो जग जायहै ॥ ६ ॥

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य उपदेशपावै है कहो मुक्तिकेहि की भई है काहेते वाकोता-
त्पर्य तौ यहहै कि जबसाहेब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तौ
मुक्तिहोइ सो साहेबको स्वरूपऔ आपनो स्वरूपतो जानतई नहीं है मुक्ति
कैसे पावै ॥ ३ ॥

और के छुये लेतहौ सींचा।तुमते कहौ कौनहै नीचा ॥ ४॥
यहगुणगर्व करौ अधिकार्इ।अतिकेगर्व न होइभलाई ॥ ५ ॥
जासु नाम है गर्व प्रहारी । सोकसगर्वहिसकैसहारी ॥ ६ ॥

औरको छुबौहौ तौ गंगाजल सींचौहौ कि पवित्रहूँजाय सोकहों
तुमते कौननीचहै ॥ ४ ॥ मलमूत्रादिक तुमहू में भरे हैं औ अपने गुणको
गर्व अधिक तुम करतेहौ सो अतिगर्व किये भलाई नहीं होइहै काहेते कि ॥५॥
जाको नामगर्व प्रहारी है सोकैसे गर्वको संहारि सकै वह जो परमपुरुषहै सो
गर्व प्रहारीहै तिहारोगर्व कैसे संहारो ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनि पदनिर्वाण ॥

अंकुर बीज नशाइकै, भये विदेही थान ॥ ७ ॥

जेकर्मको त्यागकियेहैं तिनको गांठिहूको धर्मगयो आपनीकुलमर्यादा तो
पहिले खोइदियो है औ निर्वाण पदको खोजत भये अंकुर जो है सुरतिबीज
जो है शुद्धजीवआत्माबीजजो है साहेब ताको नशायके बिदेहीजोहै ब्रह्म निरा-
कार ताहीके थानभये कहे आपनेको ब्रह्म मानतभये सो जाको अनुभवहै ब्रह्म
ताको तौ भूलिही गये बिनाअंकुरपाले कैसे होइगो अर्थात् धोखेहीमें परेरहिं
गये वामें कुछनहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजी को (अंकुर बीज जहां
नहीं, नहीं तत्त्व परकाश । तहांजाय का लेउगे, छोड़हु झूठी आश ॥) अर्थात्
चेष्टारहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछ वस्तुही नहीं है मिलिबोई
कहांकैर ॥ ७ ॥

इति पैतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छत्तीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ज्ञानीचतुर विचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई ॥ १ ॥
 दुसरसयानको मर्मनजाना । उत्पतिपरलयरैनिबिहाना ॥ २ ॥
 बाणिजएकसवनमिलिठाना । नेमधर्म संयम भगवाना ॥ ३ ॥
 हरि असठाकुरते जिनजाई । वालनभिस्तगाँवदुलहाई ॥ ४ ॥
 साखी ॥ तेनर मरिकै कहँ गये, जिन दीन्हो गुरु छोट ॥
 राम नाम निज जानिकै, छोड़हु वस्तू खोट ॥ ५ ॥

ज्ञानीचतुरविचक्षण लोई । एक सयानसयाननहोई ॥ १ ॥
 दुसरसयानकोमर्मनजाना । उत्पतिपरलैरैनिबिहाना ॥ २ ॥

ज्ञानीजे हैं चतुरजे हैं विचक्षणजेहैं तिनहींलौ जेई लोगहैं अर्थात् सूक्ष्म ते.सूक्ष्म ताहूतेसूक्ष्मलौबिचारनवारे जे अद्वैतवादी सबलोगहैं ते एक जो ब्रह्म ताहीमें सयानजों भये कि, मैंहीं ब्रह्महौं यही मानतभये तौ वे सयान नहीं हैं ॥ १ ॥ दूसर सयानजे द्वैतवादी हैं जे साहबको औ आपनेहीको मानै हैं ताको तौ मरमई नहीं जानै हैं भूलिकै उत्पति परलै कहे संसारकी जो उत्पत्ति प्रलय होतरहै है ताहीमें रौनि बिहाना कहे दिनराति जनमतमरतरै हैं ॥ २ ॥

बाणिजएकसवनमिलिठाना । नेमधर्मसंयमभगवाना ॥ ३ ॥
 हरिअसठाकुरते जिनजाई । वालनभिस्तगाँवदुलहाई ॥ ४ ॥

एक बाणिज तब मिलि ठानतभये नेम धर्म संयम इत्यादिक जे सब साधनहैं तिनहींको भगकहे ऐश्वर्य मानिकै तिनमें सब लागतभये ॥ ३ ॥ हरिकहे आरतके हरनहारे जे साहबहैं तिनते जिन जाइकहे जेजेफरकहैगयेहैं ते बालनकहे बालककी ऐसीहैं बुद्धि जिनकी ऐसे जेजीवहैं ते भिस्तगाँव दुलहाई कहे भिस्त जोस्वर्गहैं

ताहीको दुआहाइके गावनभये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्ग में जाइ अप्सरन ते भोगकरै यही गावनभये ॥ ४ ॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँगये, जिन्हदीन्होंगुरुछोट ॥

राम नामनिज जानिकै, छोड़हु वस्तू खोट ॥ ५ ॥

जिनको गुरुछोट दियोहै अर्थात् थोरे अक्षरको मंत्रदियो औ जो घोट पाठहोइ तो यह अर्थहै कि, गुरु उनको मूड़घोटि दियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा मुँठप्यालाको धोयदैदियो पियाय दियो ते नर जेहँ हिंदू मुसलमान तेम-रिकै कहांगये अर्थात् कहूँ नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोट वस्तुजो नाना देवतनकी उपासना धोखाब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छोटो अंतमें उचार रामनामही करैगो तामें प्रमाण ॥ (मनरे जवने राम कह्यारे । फिरिकहिबे को कछुनरह्यारे ॥ कामोयोग यज्ञजप-दाना । जेतें रामनामनहिंजाना ॥ १ ॥ कामकोधदोउभारे । गुरुप्रसादसवतारे ॥ कहैकबीरभ्रमनाशी । राजाराम मिले अविनाशी) ॥ ५ ॥

इतिछर्तासर्वीरमैनी समाप्त ।

अथसैंतीसवीरमैनी ।

चौपाई ।

एक सयान सयान न होई।दुसर सयान न जानै कोई॥१॥
तिसर सयान सयानेखाई । चौथ सयान तहां लै जाई॥२॥
पँचये सयान न जानैकोई । छठयें महुँ सव गैल विगोई॥३॥
सतयेंसयानजोजानौभाई । लोक वेद मो देहुदेखाई॥ ४ ॥
साखी ॥ विजक बतावै वित्तको, जोवित गुप्ताहोइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै विरला कोइ ॥ ५ ॥

एकसयान सयान न होई।दुसर सयान न जानै कोई ॥ १ ॥
तिसरसयान सयानैखाई । चौथ सयान तहां लै जाइ॥२॥

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयानहैं अर्थात् वाही को सांचमानै हैं और सब मिथ्याहै ते सयान नहीं हैं औ दूसरमायामें जेसयान हैं वे कहैंहैं कि, मायाको हम जानै हैं सो माया तौ सतअसत ते विलक्षणहै ताको कोई जानतही नहींहै कि, कौन वस्तुहै॥ १ ॥अरु तीसर जो जीव तामें जे सयानहैं कि, जीवात्मै सबका मालिकहै या बिचौरहैं ऐसे जे गुरुवालोगहैं ते सयान जोजीवहै ताकोखा-इहैं कहे पाखण्डमतमें लगाय नरकमें डारिदेइहैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयान हैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपने लोकको लैजाय हैं ॥ २ ॥

पँचयेंसयान न जानैकोई । छठयें महँ सबगयेबिगोई ॥३॥
सतयेंसयान जो जानौभाई । लोक वेद महँदेहुदेखाई॥ ४ ॥

औ पाँचौंइन्द्रिनकी विषय तिनमें जे सयानहैं ते तौ वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठौं है मन ताहीते सबैगैल बिगोइगई है॥ ३ ॥सातवें सयान नों साहब ताको जो जानौ तौ हे भाई ! लोक वेदमें मैं देखाय देउँ कि जेते बर्णन करिआये तिनते साहब परेहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ बिजकवतावै वित्तको, जोवितगुप्ताहोइ ॥

शब्द बतावै जीवको,बूझै विरला कोइ ॥ ५ ॥

श्री कबीरजी कहैंहैं कि जैसे जौन बित्त गुप्तहोयहै कहे गाड़ा होइ तैन धनको बीजक बतावैहै तैसे सारशब्द जोरामनामबीजक सो साहब मुख अर्थमें जीवको बतावै है कि तू साहब को है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरलासाधु बूझैहै ॥ ५ ॥

इति सैंतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ अड़तीसवींरमैनी ।

चौपाई ।

यहिविधिकहौं कहानहिंमाना।मारगमाहिंपसारिनि ताना १
 रातिदिवसमिलिजोरिनितागा।ओटतकाततभर्म न भागा २
 भमैं सवघट रह्यो समाई।भर्मछोड़ि कतहुं नहिं जाई॥३॥
 परैनपूरि दिनोंदिन छीना।जहां जाहु तहँ अंगविहीना ॥४॥
 जोमतआदिअंतचलिआया।सोमतिउनसवप्रगटसुनाया ५
 साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै, लीन्हो शीशचढ़ाय ॥

संतोहै संतोषसुख, रहहु तौ हृदय जुड़ाय ॥ ६ ॥

यहिविधिकहौं कहानहिंमाना।मारगमाहिंपसारिनिताना १॥

कबीरजी कहैहैं कि सतयुगमें सत्यसुकृत नामते, त्रेतामें मुनीन्द्र नामते,
 द्वापरमें करुणामय नामते, कलियुगमें कबीर नामते, मैं चारो युगमें जीवनको
 रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें
 ताना पसारतभये कहे अपने कहे अपने अपने मतमें अर्थ करिलेतेभये ॥ १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा।ओटतकाततभर्मनभागा २॥

औ रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत
 भये अर्थात् जहां, जहां अर्थ नहीं लगैहै तहांतहां अपने मतमें योजित
 करतभये औ ओटत कातत कहै शंकासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां
 ताना प्रथम कह्यो ओटव कातव पीछे कह्यो सो प्रथम शंका समाधान करिकै
 काति ओटि कै ताना तनतभये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेरफेर शंका
 समाधान करि ओटिकाति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक
 सिद्धांत न भयो ॥ २ ॥

भर्मै सबघट रह्यो समाई । भर्मछोड़ि कतहूं नहिं जाई ॥३॥
परैनपूरदिनौदिनछीना । जहां जाहु तहैं अंग विहीना ॥४॥
जोमतआदिअंतचलि आया । सोमतउनसबप्रकटलखाया ॥५॥

वही भर्म घट घटमें समाई रह्यो है भर्म छोड़िकै अनत न जात भये वही संशयमें रहिगये ॥ ३ ॥ पूर नहीं परैहै कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौदिन क्षीण होत जाइहै क्षीणकहां होइहै कि, यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दुःखभयो पै जहां जाइहै तहैं निराकार धोखई मिलैहै हाथ कुछ नहीं लगैहै ॥ ४ ॥ वेदको अर्थ तो परोक्षहैकहै अमगटहै तात्पर्य वृत्तिकरिहै साहबको लखावैहै तौन अनादिमत ताको न समुझतभये वहवेदको अर्थ गुरुवालों मगट करिहै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अंतते चलो आयो है ताको बड़ परिगयो ॥ ५ ॥

सारखी ॥ वहिसंदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीशचढ़ाइ ॥

संतोहै संतोषसुख, रहहुतौहृदय जुड़ाइ ॥ ६ ॥

वही तत्त्वमसि उपनिषत्को संदेश शीश चढ़ाइ लेतेभये वेदनमें वाणीमें तात्पर्य करिहै सांचपदार्थ कह्यो ताको न जानतभये संतपद संतोष सुखहै तौने जो रहौ तौ हृदय जुड़ाइ औरमें तो तापई होइगो काहेते सबते परे है जाको साहब दूसरो नहींहै ऐसे जे चक्रवर्ती श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जबपायोतब उनते कम ब्रह्महोबकी ईश्वरके मिलिवेकी और मायिक जेपदार्थ हैं तिनके मिलिवेकीचाहई न होइगी काहेते कि वहचक्रवर्ती के मिलिवेकेसमसुख नहीं है ब्रह्मानंद विषयानंद आदिकनमें जबलगैगोतहहीं सबते संतोष है याको मन शांतहै जाइगो ॥ ६ ॥

इति अङ्गतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ उन्तालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जिन्हकालिमाकालिमाहँपढ़ाया । कुदरतखोजितिन्हौनहिं पाया
करिसतकर्म करै करतूती । वेद कितावभयासवरीती ॥२॥

करमतसो जो गर्भऔतरिया । करमतसोजोनामहिंधरिया ३
करमत सुन्नति और जनेऊ । हिंदू तुरुक न जानै भेऊ ॥४॥

साखी ॥ पानीपवन संजोयकै, रचिया ई उत्पात ॥

शून्यहिसुरतिसमानिया, कासोकहियेजात ॥५॥

जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हौंनहिंपाया
करिसतकर्मकरैकरतूती । वेदकिताब भया सबरीती ॥ २ ॥

जिन्ह महम्मद सबको कलियुगमें कलिमा पढ़ायेहै तेऊकह्योहै कि हम
अल्लाहके कुदरतिको खोजकहे अंतनहीं पायो ॥ १ ॥ आपन आपन मतकारिकै
करतूति कैकै कर्म करनलगे सो वेदकिताब सबरीति द्वैजातभये ॥ २ ॥

करमतसोजोगर्भऔतरिया । करमतसोजोनामहिंधरिया ३
करमत सुन्नति और जनेऊ । हिंदू तुरुक न जानैभेऊ ॥४॥

कर्महिते गर्भमें आय अवतार लेतेभये अरु कर्महीते नामधरतभये ॥ ३ ॥
औ कर्मते सुन्नति औ जनेऊ चलतभयो ताको भेद हिंदू तुरुक दूनो न
जानत भये ॥ ४ ॥

साखी ॥ पानी पवन संजोयकै, रचिया ई उत्पात ॥

शून्यहिसुरतिसमानिया, कासोकहियेजात ॥५॥

पानी कहेविंदु अरुपवन ये दूनौके संयोग ते गर्भभयो कहे शरीररूपी उत्पात
खड़ाभयो सो कर्म में लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पै कर्म न छोड़
तभये अरु निन कर्म छोड़िबोझकियो तिनकी सुरति शून्यमें समाइ जाती
भई सो वहांकी बात कासों कही जातहै अर्थात् काहूसों नहीं कहिजायहै नेति-
नेतिकहिदेइ हैं अर्थात् उहां तौ शून्यहै कुछहाथ न लग्यो ॥ ५ ॥

इति उन्तालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

आदम आदि सुद्धि नहिं पावा । मामाहौवा कहँ ते आवा ॥ १ ॥
 तव होते न तुरुक औ हिन्दू । मायके रुधिर पिताके बिन्दू ॥ २ ॥
 तव नहिं होते गाय कसाई । कहु विसमिल्लह किन फुरमाई ॥ ३ ॥
 तव नारह्यो है कुल औ जाती । दोजक भिस्त कहाँ उत पाती ॥ ४ ॥
 मनमसले की खवरि न जानै । मति भुलान दुइ दीन बखानै ॥ ५ ॥
 सार्वी ॥ संयोगे का गुनरवै, विनयोगे गुण जाय ॥

जिह्वा स्वादके कारणे, कीन्हे बहुत उपाय ॥ ६ ॥

आदम आदि सुद्धि नहिं पावा । मामाहौवा कहँ ते आवा ॥ १ ॥
 तव होते न तुरुक औ हिंदू । मायके रुधिर पिताके बिंदू ॥ २ ॥

आदि आदम जे ब्रह्मा ते मामाकहे जगत्पिता हौवा नाम ऐसी जो वाणी
 ब्रह्मा की नारी सों ब्रह्मही सुधि ना पायो कि कहाँ ते आई है ॥ १ ॥ तब
 आदिमें न हिंदू रहे न तुरुकरहे औ मायके रुधिरते पिताके बिंदुते गर्भ
 होइ है सोऊ नहीं रह्यो ॥ २ ॥

तव नहिं होते गाय कसाई । कहु विसमिल्लह किन फुरमाई ॥ ३ ॥
 तव नारह्यो है कुल औ जाती । दोजक भिस्त कहाँ उत पाती ॥ ४ ॥
 मनमसले की खवरि न जानै । मति भुलान दुइ दीन बखानै ॥ ५ ॥

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो विसमिल्ला कहिकै हलाल करै है
 सो किन फुरमाई है ॥ ३ ॥ अरु तब न कुल रह्यो औ न जाती रही दोजक
 भिस्त कहाँ रह्यो है ॥ ४ ॥ मनके मसले की सुधि न जान्यो कि ई मेरे मनके
 बनाये हैं दोनों दीन । औ अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न
 हिंदू हैं न मुसलमान है मतिहीन दुइ दीन बखानत भये ॥ ५ ॥

साखी । संयोगेका गुणरवै, विनयोगे गुणजाय ॥

जिह्वास्वादके कारणे, कीन्है बहुत उपाय ॥६॥

जब मनको आत्माको संयोग होइहै तबहीं संकल्प होइहै औ तबहीं गुणहो-
यहै अरुजब मनको आत्माको संयोग नहीं होइ है तबगुण जाइहै कहेगुणौ
नहीं रहैहै अरुसंकल्पौ नहीं रहैहै सोनर जेहैं ते जिह्वा सुखके कारण औ शिश्न
(इन्द्रिय) सुखकेकारण बहुत उपाय करतभये औ मन औ आत्माको संयोग
छोड़ावनको उपाय करतभये औ जे मन आत्माको संयोग छोड़्योहै ते आपने
स्वस्वरूप को प्राप्त भये हैं ॥ ६ ॥

इति चालीसवीं रमैनी समाप्त ।

अथ इकतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अंबुकिराशिसमुद्रकीखाई।रवि शशिकोटि तेंतिसौ भाई॥१॥

भैवरजालमें आसनमाड़ा।चाहतसुखदुखसंग न छाड़ा॥२॥

दुखकामर्म काहुनहिं पाया।बहुतभांतिके जग वौराया॥३॥

आगुहिवाउर आपुसयाना।हृदयावसतरामनहिंजाना॥४॥

साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरिके दास ॥

जामें भया न यामिनी,भाभिनिचलीनिरास॥५॥

अम्बुकिराशिसमुद्रकीखाई । रविशशिकोटितेंतिसौ भाई १

भैवरजालमें आसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसङ्गनछाड़ा॥२॥

अंबुके बिंदु ताकीराशि शरीरहै समुद्र जो है संसारसागर ताकीखाई है
अर्थात् संसारहीमें सबशरीरपरहैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहेहै तैसे ताना जीवनके

शरीर परे रहै हैं औ सूर्य चंद्रमा तैंतीस कोटि देवता ॥ १ ॥ यही संसारसागरके भँवरजालमें परे कबहुं नरकको जायहैं कबहुं स्वर्गको जायहैं याहीभांति सब जीव औ सब देवता चाहत तो सुखको हैं कि हमको सुखहोय पै दुःखरूप जो संसारहै ताको संग नहीं छोड़ै हैं ॥ २ ॥

दुखकामर्मकाहुनहिं पाया । बहुत भांतिके जगबौराया ॥ ३ ॥

आपुहि बाउर आपुस याना । हृदयावसतराम नहिं जाना ॥ ४ ॥

वह दुःखरूप जो संसारहै ताको मर्मकोई न जानत भयो बहुत भांति करिके जेगमें सब जीव बौराय गये ॥ ३ ॥ सो जीव जे हैं ते आपुही ते बाउर होत भये अरु आपुही ते सयान होत भये हृदयमें बसत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जानत भये अर्थात् जे संसारमें परे हैं ते तौ बाउरई हैं जे आपनेको बहुत ज्ञानी मानै हैं औ सयान मानै हैं तेऊ बाउर हैं अर्थात् जे और २ ईश्वरनके दास भये औ जे आपहीको ब्रह्म मानत भये कि हमहीं ब्रह्म हैं औ आपने आत्मैको मानत भये तिनको साहब को ज्ञान नहीं होय है याहेतु ते दुःखही को सुख मानै है ॥ ४ ॥

साखी ॥ तेई हरितेई ठाकुरा, तेई हरिके दास ॥

जामें भया न यामिनी, भामिनिचली निरास ॥ ५ ॥

तेई जे जीव हैं ते अपने को हरि मानत भये औ आपनेही को ठाकुर मानत भये कि हमहीं जगत्कर्ता हैं और आपनेही को हरिके दास मानत भये अर्थात् सब आपहीको मानत भये औ यामिनी कहावै है लगनिया वह बस्तु कराइ देई है सो पूरागुरु कहावै है सो यह जीवको उद्धार कराइ देई है सो जो जो जीव पूरागुरु रामोपासक ना पायो जो समुझाइ देई कि यह धोखा है तिन जीवनते भामिनि जो मुक्ति सो निराश है गई कि ई न मुक्ति होयेंगे ॥ ५ ॥

इति इकतालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बयालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जबहमरहल रहानहिंकोई । हमरेमाहँरहलसबकोई ॥ १ ॥
 कहहुसोरामकवनतोरसेवा । सोसमुझायकहौमोहिंदेवा ॥ २ ॥
 फुरफुरकहउँ मारुसबकोई । झूठे झूठा संगति होई ॥ ३ ॥
 आंधर कहै सबै हमदेखा । तहँ दिठियारपैठिमुँहपेखा ॥ ४ ॥
 यहिविधिकहौमानुजोकोई । जसमुखतसजोहृदयाहोई ॥ ५ ॥
 कहहिं कबीरहंसमुकुताई । हमरे कहले छुटिहौभाई ॥ ६ ॥

जबहम रहलरहानहिंकोई । हमरेमाहँरहलसबकोई ॥ १ ॥
 कहहुसोरामकौनतोरसेवा । सोसमुझायकहौमोहिंदेवा ॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जबहम साहबके लोकमें रहै हैं तबतुम कोई नहीं रहेहौ तुमसब हमरे साहबके लोकप्रकाशमें रहेहौ ॥ १ ॥ अपनेको रामतौ कहौहौ तुम्हारीसेवाकौतहै कहां वेदपुराणमें लिखोहै कि इनकी सेवा किये मुक्तिहोइगी सो तुमदेवता बने फिरौहौ परन्तु मोको समुझायके कहौतौ कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्ति भई है ॥ २ ॥

फुरफुर कहउँमारुसब कोई । झूठेझूठासंगतिहोई ॥ ३ ॥

जो कोई फुरफुर कहैहै तौ सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुम साचहौ साहबकेहौ तौ मारन धावै है शास्त्रार्थ करि लैरै है काहेते लोकमें रीतिहै कि झूठेकी झूठेनसो संगतिहोयहै सो सांच जो जीव सो झूठामन उत्पत्तिकारिके झूठा जो धोखाब्रह्म ताहीके संग होत भये ॥ ३ ॥

आंधरकहैसबैहमदेखा । तहँदिठियारपैठिमुँहपेखा ॥ ४ ॥

साहबके ज्ञानते बिहीन जे आंधर हैं ते याकहै हैं कि वेदशास्त्र पुराणमें अर्थ सबहम ब्रह्मरूपई देखाहै जाके देखेते सबको ज्ञान हमको द्वैगयो तामें

प्रमाण ॥ (येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं विज्ञातं भवति)॥तहां दिठियार जे साहबके देखनवारै ते वोई श्रुतिनमें साहबमुख अर्थ देखैहैं कैसे जैसे येनाश्रुतं श्रुतं कहे जौने रामनामके सुने जो नहीं सुनाहै सोऊसुनै असहोइजाइहै काहेते वेदशास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसेहैं औ जौने रामनामके जानैते यह जो असत्य है सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मत होइ जाइहै अर्थात् परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको चितअचित विग्रही सब को माने है औ मन बचनके परे जे अविज्ञात साहब ते रामनाम साहबमुख अर्थ में व्यंजित होयहै अथवा रामनामको जानिकै साधन किहेते साहब हंसरूप दै तब जाने जाइहै ॥ ४ ॥

यहिविधिकहौमानुजोकोई । जसमुखतसजोहृदयाहोई॥५॥
कहहिंकबीरहंसमुसकाई । हमरे कहले छुटिहौ भाई ॥ ६ ॥

सो याभांतिते में सब जीवनको ममुझाऊंहौ पैकोई बिरला मानैहै कौन मानैहै जौन जस मुखते कहैहै तैसे हृदयते होइहै ॥ ५ ॥ कबीरजी कहैहैं कि मुसकाई मुसकैबैंधीं जीवोहमारेही कहैते तुम छुटौगे औरि भांति न छुटौगे मुकुताई पाठहोय तौ याअर्थ मुक्तिहोबेकीहैइच्छाजिनके ॥ ६ ॥

इति बयालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तेंतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जिनजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिवासा १
आवत जात न लागहि वारा।कालअहेरी सांझ सकारा२॥
चौदहिविद्यापढ़ि समुझावै।अपनेमरनकि खबरि न पावै३॥
जाने जिवको परा अँदेशा । झूठ आनिकै कहै संदेशा॥४॥
संगतिछोंड़ि करै असरारा । उबहै मोट नरककी धारा॥५॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष विचार ॥
 तेनरचौरासीभ्रमहिं, जवलगि शशिदिनकार ॥६॥

जिनजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिवासा १

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्माहै सोई मालिकहै दूसर नहीं है । एकैहै ते नरकी मुक्तिकी बातें कौनकहै वे स्वर्गहू नहीं जायहैं नरकमें जायकै नरकहींमें वास किये रहै हैं काहेते नरकही जायहैं कि इहांतौ तीर्थ व्रत संयम जो स्वर्गजावे को उपायहै तेतौमिथ्यामानिछांड़िदियो जीवात्मको-मालिकमान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमते रक्षाकरै औ वेद पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनको उपाय एकौ न कियो जब यमदूत मोगरालैकै मारन-लगे बांधिकै कांटामें कटिछावनलगे तबमूढ़पुकारनलाग्यो गुरुवा लोगनको ते रक्षा न किये औगुरुवालोगनहूकी वही हवाल देखनलग्यो सो साहबको नाम तो सबछोड़िकै लियोनहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहांस्वर्गजावेवारो-सुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटके से पाद जन्म गँवाइ दिये न इतके भये ना उतके भये तामें प्रमाण ॥ “रामनाम जान्योनहीं कहाकियो तुमआय ॥ इतकेभये न उतके रहियाजनमगँवाय” ॥ १ ॥

आवतजातनलागहिवारा । कालअहेरीसांझसकारा ॥ २ ॥
चौदहविंघापढ़िसमुझावै । अपने मरणकिखबरिनपावै॥३॥

आवत जात बारनहीं लगैहै कहे पुनिपुनि जन्म लेइ है काल जो अहेरीहै सोसांझ सकार उनहींको खायहै वही बासना उनकी बनीरहैहै फेरि वाही मनमें आरूढ़है फेरि वही नरकही को जायहै॥२॥औ चौदहौ विद्या पढ़िकै गुरुवालोग जेहैं ते औरैकोतौ समुझावैं हैं परंतु अपने मरणकी खबरि नहीं पावैहैं ॥३॥

जानोजियकोपराअंदेशा । झूठ आनिकै कहै सँदेशा॥ ४ ॥
संगति छोड़ि करै असरारा । उवहै नर्कमोटको भारा॥५॥

जे जीवात्महींको जानै हैं साहबको नहीं जानैहैं तिनहीं को अंदेशपरैहै
काहेते कि सब झूठहोहै वही संदेश कहैहैं जबयमदूत मारनलगे तब वा मारु-
दोखि उनको अंदेश परैहै कि हमारी रक्षा कौनकरैहै सो या पापिनकी दशा
गरुड़ पुराणमेंप्रसिद्धहै ४ साहबके जाननवारे जेसाधुहैं तिनकी संगति छोड़िकै
जेअसरारकहे कफरई करैहैं अपने जीवात्मैको मालिक मानैहैं साहबको नहीं
जानैहैं उकहे वे जेदुष्टहैं ते बहै मोटनरकको भारा कहे नरकको है भार नामें
ऐसी जेमायाकी मोटरी ताहीको बहै कहे ठोवैहैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारीपुरुषविचार ॥
तेनरचौरासीभ्रमहिं, जब लगिशशिदिनकार ॥६॥

कबीरजी कहैहैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु औ जे जे साहबके
बतावन वारेहैं सो येई गुरुहैं जो कोई इनकी बाणी को मिथ्या मानै है सोई
गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही औ मनमुखी कहे अपने मनैते नारिनर बिचारिकै जे
एक जीवात्महींको मालिकमानैहैं ते चौरासी लक्ष योनिही में जबलगि सूर्यचन्द्र-
मा रहै हैं तबलगि वाहीमें परे रहैहैं ॥ ६ ॥

इति तेंतालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौवालीसवीं रमैनी ।

चौपाई

कवहुं न भये संग औ साथ । ऐसो जन्म गँवाये हाथा ॥ १॥
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना । साधुसंगतुमनहिं पहिंचाना ॥ २॥
अवतौ होइ नरकमें वासा । निशिदिनपरैलवारके पासा ॥ ३॥
साखी ॥ जात सवन कहँ देखिया, कहै कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवस परत है धार ॥ ४ ॥

कबहुंन भये संग औ साथ । ऐसो जन्म गँवाये हाथा ॥ १ ॥

साहबके जाननवारे जे साधु तिनको सतसंगकबहुं न कियो औ उनके बताये
साहबको साथ कबहुं न कियो जेहिते आवागमन रहित होय मनुष्य ऐसोजन्म
अपने हाथते गमायदियो ॥ १ ॥

बहुरि न ऐसो पैहौथाना । साधुसंगतुम नहिंपहिचाना ॥ २ ॥
अबतोरहोइनरकमेंवासा । निशिदिनपरेलवारकेपासा ॥ ३ ॥

ऐसोस्थानकहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिचान्योहैं
साधुसंगकरो जो पूरागुरु पाइजाउगे तौ उबार द्वै जाइगो ॥ २ ॥ धोखाजो है ब्रह्म
औ माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लवरा तिनके पास में निशि-
दिन परयो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मो बासहोइगो ॥ ३ ॥

साखी ॥ जातसवनकहँदेखिया, कहँकबीरपुकार ॥
चेतवाहोहुतौचेतिले, दिवसपरतहै धार ॥ ४ ॥

दूनों ब्रह्ममायाके धोखा में सब को नरक जेतदेखिकै कबीर जी पुकारिकै
कहैहैं कि चेतिवे को होइ तो चेतौ नहींतौ दिनकै तिहारे ऊपर धारपैरैहै कहे
गुरुवालोगनको डाकापैरैहै भाव यह है जो गुरुवा लोगन को डाका तुम्हारे
ऊपर पैरैगो औ वह ब्रह्म को उपदेश करेगो औ तुम्हारे वह धोखा दृढ़परिजा-
इगो तौ तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूं
वह धोखाते काहूके फेरे न फिरोगे अर्थात्काहूको कहा न मानोगे तौ संसार-
हीमें परेरहेगे बहुत बड़ेबड़े वही धोखाते ब्रह्ममेंपरिकै मरिगये साहबको न
जानत भये सो आगेकहैहैं ॥ ४ ॥

इति चौवालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पैतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई

हिरणाकुश रावण गये कंसा । कृष्ण गये सुरनर मुनि वंसा ॥ १ ॥
 ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड़ सब गये जो रहे सयाना ॥ २ ॥
 समुझिन परी राम की कहानी । निरबक दूध कि सरबक पानी ॥ ३ ॥
 रहि गोपंथ थकित भो पवना । दशौ दिशा उजारी भोगवना ॥ ४ ॥
 मीन जाल भो ई संसारा । लोह कि नाव पषाण को भारा ॥ ५ ॥
 खेवै सवै मरम नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ॥ ६ ॥
 साखी ॥ मछरी मुखजस के चुवा, मुसवन मुहँ गिरदान ॥
 सर्पन माहँ गहे चुवा, जाति सवन की जान ॥ ७ ॥

हिरणाकुश रावण गये कंसा । कृष्ण गये सुरनर मुनि वंसा ॥ १ ॥
 ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड़ सब गये जो रहे सयाना ॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश रावण कंस मरि जात भये औ इनती-
 नों के मरै वैया काल स्वरूप जे कृष्ण तेऊ मरि जात भये दशौ अवतार निरंजन
 नारायण ते होइ हैं या हेतु ते मरि जान वारे तीनिकह्यो मारन वारो एक ही कह्यो
 औ सुर नर मुनि इनके बंश वारे तेऊ मरि गये औ ब्रह्मा आदिक जे बड़े बड़े
 सयानर हैं वेऊ वेद को तात्पर्य न जान्यो मरि गये ॥ १ ॥ २ ॥

समुझिन परी राम की कहानी । निरबक दूध कि सरबक पानी ॥ ३ ॥
 रहि गोपंथ थकित भो पवना । दशौ दिशा उजारी भोगवना ॥ ४ ॥

राम की कहानी कहे राम नाम की कहानी जो चारो वेद कहै हैं सो काहू को न
 समुझि परी धौं निरबक दूध हाँ धौं पानि ही पानी है अर्थात् जिनको परम पुरुष
 श्रीरामचन्द्र को ज्ञान भयो वेद को तात्पर्य बूझ्यो साहब मुख अर्थ लगायो सो दूध ही

पियतभयो औजो जगत्मुख अर्थमें लग्यो सोपानिहीपानी पियतभयो साइब मुख
अर्थ न जान्यो एते सबमरिगये ॥ ३ ॥ अपने अपने पन्थ चलावतभये जब पवन
थकितभयो कहे श्वासारहितभई तब दशौदिशा कहे दशौ इन्दिनद्वारके जे
देवता ते जातरहे तब दश द्वारको जो शरीरगाउँ सो उजारि द्वैगयो कहै मरिगये
याते या आयो कि जे नानामत चलावै हैं मतयहै रहिनायहै जा शरीरमें मरि कै
मये ताहीकी सुधि रहैहै ॥ ४ ॥

मीनजालभोई संसारा । लोहकिनावपषानकोभारा ॥ ५ ॥

याही रीतिते मरत जिघत जे मीनरूप जीवहैं तिनको यहि संसारसमुद्र में
बाणी जालफंदनको भयो सो जे जालमें फँदे ते तो अविद्याके जालमें फँदेही हैं
जे उबरे चाहै हैं तेजड़वत् जोमन पाषाण तांहीको है भार जामें ऐसी जोअविद्या-
रूपी लोहेकी नाव तामें चढ़े सोवह बूढ़िही जायंगी फिरवही संसारमें
परे रहैहैं ॥ ५ ॥

खेवै सवै मर्म नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ॥ ६ ॥

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहे वही धोखाब्रह्ममें लगावै हैं औ या कहैहैं कि
हम मर्मजान्योहै तुम यामें लगौ पारहैजाउगे सोवह जो संसारसमुद्र में अविद्या-
रूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूढ़िही जायगी तामें गुरुचेला दोउ बूढ़िही
जायेंगे पार न पावेंगे अर्थात् वेदान्त आदि नाना शास्त्रनमें नाना तर्क उठाय
उठाय विचार करतऊ जायहैं संकल्प बिकल्प नहींछूटे तात्पर्य तो जानै नहीं औ
नन्मभरि चेलापूछतई जाय है परंतु तबहूं यही कहै हैं कि तुम संसार समुद्रमें
उतराने हौ कहे उबरेहौ यह नहीं विचारैहैं कि संकल्प बिकल्प छूटबई नहीं
कियो संसारते कैसेउबरेंगे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मछरीमुखजसकेचुवा, मुसवनमुंहगिरदान ॥

सर्पन माहँ गहेजुवा, जाति सवनकी जान ॥ ७ ॥

जैसे मछरीके मुखमें केंचुवा मुसवानके मुंहमें गिर्दान अर्थात् जब मूस
गिर्दानको रंगदेख्यो तबलालमास अथवा लाल फल जानि धरनधायो जब फूंक

मारचो तब आंधरहैगयो गिर्दानहीं मूसकोखायलियो औ सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूंदरको धरैहै जो उगिलै तो आंधर हैजायहै खायतो मारिजाय ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्मकांडीहैं ते जैसे मछरी केचुवाको जब खायहै तब मुहमें बंसी चुभिजायहै वाहीमें फँसिजायहै तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्मकरैहै जनन मरण नहीं छूटैहै काल खायलेइ है औ जे ज्ञानकांडीहैं ते साहबको ज्ञान तो काचोहै अपने शाखबलं या कहैहैं कि हम समुझायकै पाखंडमतवारे जे हैं तिनको अपने मतमें लै आवेंगे या बिचारि तिनके यहांगये सो बे धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मारचो कि आंधरे है गये साहब को जौन ज्ञानरहै सो भूलिगये तो उनके खाबेको पै वोई उलटिकै खागये औ उपासना कांडी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपासना धरचो सोतौ छोड़तहीनहीं बनेहै बरैहै कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवताके लोकगये औ फेरिआये जन्ममरण नहीं छूटैहै जैसेसांप छछूंदरको धरचो परन्तु न उगिलत बने न छीलतबने ताते कबीरजी कहैहैं कि साहबको जानो जनन मरण उर्नहीं के छुड़ाये छूटैगो ॥ ७ ॥

इति पैंतालीसवींरमैनी समाप्ता ।

अथ छियालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

विनसै नाग गरुड़ गलिजाई । विनसै कपटी औसतभाई १
विनसैपापपुण्यजिनकीन्हा।विनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा२
विनसैअग्निपवनअरुपानी । विनसै सृष्टिजहांलौं गानी३
विष्णुलोक विनसै छनमाहीं । हो देखा परलयकी छाहीं ४
साखी ॥ मच्छरूप माया भई, यमरा खेलहि अहेर ॥

हरिहर ब्रह्म न ऊबरे, सुरनर मुनि केहिकेर ॥ ५ ॥

जेभर ब्रह्माण्डके भीतरहैं ते सब नाशमानहैं संसार समुद्रमें ऐसी माया लपेटयो कि यह मत्स्य(जीव)माया है गई अर्थात् मिलिगई है कहे जीवनको शरीरमें डारिदियो है शरीरही देखपरेहै जीवको खोजनहीं मिलै है भीतर बाहरमनमास आदिक वह जड़ मायहीदेखिपैहै यमरा जो दीमर कालहै सो शिकार खेलैहै ताते कोईनहींउबरैहै कोईहालहीमरैहै कोईमहाप्रलयमें मरैहै ॥ १ ॥ ५ ॥

इति छियालीवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सैंतालीसवींरमैनी ।

चौपाई ।

जरासिंध शिशुपालसँहारा । सहस्र अर्जुनै छल सों मारा १
वड़छल रावणसो गये वीती । लंकारह कंचनकी भीती २
दुर्योधनअभिमानहिंगयऊ । पंडवकेर मरम नहिंपयऊ ॥ ३ ॥
मायाके डिभगे सवराजा । उत्तम मध्यम वाजनवाजा ४
छांचक्रवैवितधरणिसमाना । यकौजीवपरतीति न आना ५
कँहलौं कहौं अचेते गयऊ । चेतअचेत झगरयकभयऊ ६
साखी ॥ ईमाया जग मोहिनी, मोहिसि सब जगधाइ ॥

हरिचन्द्र सतिके कारने, घर २ गये बिकाइ ॥ ७ ॥

ये जे राजा बड़े २ गनाय आये तेसब मोरपरे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकारकै गये सो कहाँलौं मैं कहाँ चित अचितके झगरा ते कहे चित जीव अचित माया ई दूनोकै संयोग ते सब जीव पृथ्वीमें मिलिगये अपन शुद्ध आत्माको न जानत भये यह माया जोहै जगमोहनी सोसब जगको धायकै मोहिलेतभई हरिचन्द्र जेराजाहैं तेसत्यके कारणे विद्यामाया में बँधिकै घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ॥ १ ॥ ७ ॥

इति सैंतालीसवींरमैनी समाप्ता ।

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

मानिक पुरहिकबीर वसेरी । मदति सुनोशेष तकिकेरी १
 ऊजो सुनी जमनपुर धामा । झूसी सुनी पिरनके नामा २
 इकइसपीर लिखेतेहिठामा । खतमा पढ़ै पैगमर नामा ३
 सुनिवोलमोहिरहा न जाई । देखि मकरवा रहे लोभाई ४
 हवीव और नबीके कामा । जहँलों अमल सो सेवेहरामा ५
 साखी ॥ शेखअकरदी शेख सकरदी, मानहु बचन हमारा ॥
 आदि अंत उत्पति प्रलय, देखो दृष्टि पसारा ॥ ६ ॥

प्रकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमे रह्यो तहासे खतकी मद्धति सुन्यो कि, जिन पीरनके स्थान ॥ १ ॥ जमनपुरमें सुन्यो ते झूसीपारमें आये तहां मेंहूंगयों ॥ २ ॥ इकैसौ जे पीरहैं तिनकेनामलिखे हैं कि ये सब पैगबरैकेर फातियां देइहैं औ कलमा पढ़ैहैं ॥ ३ ॥ सो उनके बोलसुनि २ मोपै नहीं रहाजाय है मकरवा देखि २ ये सब भुलायरहे हैं यह जानिकै तहां में जाइकै कह्योकि ॥ ४ ॥ हवीकहे देवतनको खाना अथवा हवीबकहे फारसीमें दोस्तकोकहै हैं औजहां भर नामहै नबीके जे तुम लेतेहौ औनबीके जहांभर कामहै जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हरामहै काहेत्वे अल्लाह तो मनबचनके परहै ॥ ५ ॥ हे शेख अकरदी हे शेखसकरदी हमारा कहे जो बचनहै सो सब सांच मानो आदि अंतमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहांभर मनबचनमें पदार्थ आवैहैं सो सबमाया को पसारहै अल्लाह नहीं है सो कबीरजी के चौबिसपरचैस खत केलिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भय ज्ञानमें बिस्तारते हैं ॥ ६ ॥

इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ उनचासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

दरकीवात कहौ दुर्वैशा । वादशाह है कौने भेशा ॥ १ ॥
 कहां कूच कहँकरै मुकामा । कौनसुरतिकोकरौंसलामा ॥ २ ॥
 मैतोहिं पूँछौं मूसलमाना । लाल जर्दकी नाना वाना ॥ ३ ॥
 काजीकाज करौ तुमकैसा । घर २ जवै करावो वैसा ॥ ४ ॥
 बकरीमुर्गीकिनफुरमाया । किसकेहुकुमततुमछुरीचलाया ॥ ५ ॥
 दर्द न जानै पीर कहावै । वैता पढ़ि २ जग समुझावै ॥ ६ ॥
 कहकवीरयकसय्यदकहावै । आपुसरीका जगकबुलावै ॥ ७ ॥
 साखी ॥ दिन भर रोजा धरतहौ, राति हततहौ गाय ॥
 यहतौखून वहबंदगी, क्योंकर खुशीखोदाय ॥ ८ ॥

और पदको स्पष्टही है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्दतो तिहोरें
 दिलमें आप्ती नहीं हैं गल्ल कटावतमें अल्लाहको बागीचा खराब करतेहौ अरु
 बैतें पढ़ि २ के पीरकहावतेहौ औजगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बेपीर पीर-
 भर कहवावतेहौ ॥ ६ ॥ सोकबीरजी कहै हैं कि एक सय्यदजोहै वह पीर गुरुवा सो
 जैसा आप खुआरहै औ तैसे सबको खुआरकरै है ॥ ७ ॥ दिनको तो रोजा धरतें
 हौ औ बंदगी करतेहौ औ रातिको गाईहततेहौ कहे मारतेहौ सो यह तो
 खूनकरतेहौ बहुतभारी औ वहबन्दगी बहुतथोरी करतेहौ दिनको न खायो राति-
 हीको खायो क्योंकर तिहारऊपर खोदाय खुशी होय ताते यह कि वह तौ
 साहबको है सो जिनको गल्ला तुम काटतेहौ तिनहीं के हाथ तुम्हारऊ गल्ला
 वह साहब कटावेंगे ॥ ८ ॥

इति उनचासवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

कहतेमोहिंभयलयुगचारी।समुझतनाहिंमोहसुतनारी ॥ १ ॥

वंशआगिलागि वंशैजरिया।भ्रमभुलाय नरधंधेपरिया ॥ २ ॥

हस्तीके फंदे हस्ती रहई । मृगी के फंदे भिरगा परई ॥ ३ ॥

लोहै लोह काटजसआना।तियकैतत्त्व तियापहिंचाना ॥ ४ ॥

सारखी ॥ नारि रचंते पुरुष है, पुरुष रचंते नार ॥

पुरुषहिंपुरुष जो रचै, तेहि विरलेसंसार ॥ ५ ॥

चारिउ युग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहतेकोई समुझत नहीं है ॥ १ ॥ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारिदेइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रममें भुलायकै नरधंधेमें परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासनामें परिकै जैरैहै कोई सुतनारीके धंधेमे परिकै जैरैहै ॥ २ ॥ जैसे हथिनीके फंदेहाथी रहैहै मृगीके फंदे मृगा परै है कहे फँदिजायहै ऐसे जीवके फंदमें जीवपरैहै । जैसे लोहते लोह कटिजाय है तैसे जीवहीते जीव यहमारो परैहै । तियकी तत्त्व स्त्री पहिंचानैं स्त्री जो ऊंठिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै । अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमिजायहै । काहेतें साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही भों विश्वास माने मायामें मिलिकै या जीव मायाही में रह्यो है ताते मायाकेही पदार्थमें विश्वास मानैहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ नारीते पुरुष रचिजाइहै कहे मायाते सब पुरुष भये हैं औ पुरुष जोहै शुद्धसमष्टि जीव ताहीते मायाभई है । औ पुरुष जो हैं शुद्धजीव सोपरमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीतिकरै ऐसो कोई विरलाहै ॥ ५ ॥

इति पचासवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इक्यावनवीं रमैनी ।

चौपाई

जाकरनाम अकहुवाभाई । ताकर कही रमैनी गाई ॥ १ ॥
 कहैको तात्पर्य है ऐसा । जस पन्थी वोहित चढ़िवैसा ॥ २ ॥
 हैक छुरहनिगहनिकीबाता । बैठारहत चला पुनिजाता ॥ ३ ॥
 रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ । मनस्थिर नहिं बोलै काऊ ॥ ४ ॥
 साखी ॥ तनरहते मन जातहै, मनरहते तनजाय ॥
 तनमन एकै हैरह्यो, हंस कवीर कहाय ॥ ५ ॥

जाकरनाम अकहुवाभाई । ताकर कहीरमैनी गाई ॥ १ ॥

जाको नाम अकह है ताको तौ हिन्दू मन बचनकेपरे कहते हैं औ मुसल-
 मान बेचिगून बेनिमून कहतेहैं । सो हम पूछतेहैं “हिन्दूकहै कि,
 वह तो निरङ्कार होतो तौकहैहैं कि, वेद मेरी श्वासाहै शरीर न होतो तौ वेद-
 श्वासा कैसेहोतौ । जोकहोवेद तो मायकहै, साकारहै तौ’ मिथ्याके बताये तुमहीं
 सांच पदार्थ कैसे जानिहौ । जो कहे साकार तौ मध्यम परमान ठहरा य तौ
 अनित्य होइहै अकहुवा न होइगो । अरु जो मुसलमान निराकार कहैहैं कि उसके
 आकार नहीं है तो मूसा पैगंबरको कोहनूरकें पहाड़ में छुगुनी देखायो सो वह
 पहाड़ छार द्वैगयो जो शरीर न होतोतौ छगुनी कैसे देखावतो । कुरानमें लिखैहै
 कि जिसतरफ अपना मुंह फेरै तिसी तरफ साहबका मुंहहै, औ सबके हाथके
 ऊपर अल्लाहको हाथहै, औ अल्लाह महम्मदसों कहतेहैं कि, “जिसका हाथप-
 करातुने तिसका हाथपकरा मैं। तब सों इनलीलैंते यहआवताहै” कि, उसके शक-
 लहै । पै जिस तरहकीशकल सोकोईनहीं कहिसकैहै काहेते कि जो उसके मिसाल
 दूसरा कोई होय तौ उसकी उपमादैकै समुझाय सके सो उसकी शकल तो
 कोईनहीं समुझाय सका है । लेकिन जो कोई उसकी शकल देखा है सोई जानताहै ।

नैसी उसकी शकलहै लेकिन बयान नहीं कर सकाहै । औ कुरान खोदाको कलाम कहैवात है जो बदन न होता तौ कलाम कैसे कहते। सो निराकार साकार के परे अकह जो साहब है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि वर्णनकी कथा जबानमें किस तरहसे कहौ, बचनमें तौ आवै नहीं है । अथवा जाकर नामैंअकहुवाहै ताकोरूप अकहुवा-बनैहै तिसकी कथाकहांकहै । जोवाहूअकहुवा होयगी जो ऐसाभया तौ जानि न परैगो किसूको मिथ्या होयजाइगो । तौनैको कबीरजी कहै हैं कि सबको हमको अकहुवा है कछु उसको साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हमताहीकी कही रमैनीगाइतहै सोजोकछुररमैनीमेंलिख्योहै सो सांचही है ॥ १ ॥

कहै को तात्पर्यहै ऐसा । जस पंथीवोहित चढ़िवैसा ॥ २ ॥
हैकछुरहनिगहनिकी वाता । बैठारहाचलापुनिजाता ॥ ३ ॥

जौनकहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांचशरीरते साहब नहीं मिलैहै काहेते मनबचनके परैहैसाहब है औ जोहमसों साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतुयह है साहब विचारयो कि मनबचकेपरे जो मैंहीं सों विनामेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जोकहौ साहबको कापरी है न जानैंगे जीवतौ साहबके दयालुताकी हानिहोइहै याते उपदेशकरै कहै हैं सो जौने अकह रामनाम के जपेते साहब प्रसन्नहै हंसरूपदेइहै तौने रामनाम रमैनी ते जानिहै काहेते कि ॥ (इच्छाकरभवसागर वोहितरामअधार । कहहिं कविरहरि शरणगडु गोबछखुर बिस्तार) ॥ ऐसी साखीरमैनी में लिखी है तेहिते या अर्थ आया कि संसारसागर पारहोवैको एक रामनामही जहाजमानि नामार्थ में जोशरणकीबि-धिहै ताको अनुसंधानकरत रामनामजपै ॥ २ ॥ यहरहनि गहनिकैकै जैसे बछवा को खुरलोग उतारिजायहै ऐसी संसारसागरमें रामनामको अभ्यासकै तारिजाय हैं कैसे जैसे नावकोचढ़ैया नावमेंबैठाहै पै पारहोत जायहै ऐसे रामनामको जपैया संसारसागरमें बैठा देखो परैहै परन्तु पारको चलो जायहै ॥ ३ ॥

रहैवदननहिंस्वागसुभाऊ । मनंस्थिरनहिंबोलैकाऊ ॥ ४ ॥

इसतरहके जेहैं जिनकेबदनकहे संभाषण करिबे ते जीवनको स्वागकोसुभाऊ कहे ब्रह्महैजावो चतुर्भुजादिकनके लोकमें जाइचतुभुज द्वैजावौ और नानादेवतन

के लोकजाय तिनके तिनके रूपधारियो सो मिटिजायहै। संसारतो छूटि ही जायहै सो वे बोलै हैं औ मन स्थिरहैगयो है कहेमनको संकल्प बिकल्प तो छूटैनहीं है मनते भिन्न द्वैको कहा है कि संकल्प बिकल्पही मनको स्वरूपहै जब संकल्प बिकल्प छूटिगयो तब मनते भिन्न द्वै गयो सो कैसे मनते भिन्नहोइगो सो साधन आगे कहैहैं ॥४॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै, मन रहते तन जाय ॥

तन मन एक हैरहो, हंस कबीर कहाय ॥ ५ ॥

तनजोहै वा शरीर स्थूल सूक्ष्मकारण महाकारण सोअर्थअनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित द्वैगयो तब मन जातरहै है औ मन जाय है तब चारिउशरीर जात रहैहैं । सो जब तनमन एकद्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बंधे हैं सो प्राण औ मनको एकधर करिदेइसोनाम जपिबिधिजानि-तबसंकल्प बिकल्प मनको छूटिजाय है। मनतो संकल्प बिकल्पकरूपहै सो जब-संकल्प बिकल्पछूट्यो तब मननाश द्वैगयो । तब चारिउशरीरको हेत जोहै ज्ञान सोऊ जातरहैहै तब चारिउ शरीर भिन्नहैजायहैं एक शुद्धआत्मा में स्थिर द्वैरहें हैं मुक्ति द्वैजाय हैं जैसे पूर्वशुद्ध समष्टिरूप में रह्योहै तैसे सो द्वैगयो। जैसे समष्टिजीव जब रह्यो है तब जगत् को कारणरह्यो आयो है साहबको न जानिबों रूप ताते संसारही द्वैगयो है तैसे यह जो शरीरनमें साहबको भजन करिराख्यो सो जब मनादिक याकेछूटि गये शुद्ध द्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो। काहेते कि राम नामको अर्थ साहब मुख जानिराख्यो है सो भङ्गल में साहब कहिआये हैं कि जो रामनाम जपिकै मोको जानै तो मैं हंसरूपदे अपने पास बुलायलेऊं। याहीते साहब हंस रूप देइ है तब वह काया-को बीरजीव हंस कहावैहै। कैसे हंस कहावैहै कि असारजेहैं चारिउ शरीर औ मन माया रूप पानी ताको छोड़िदियो औ सारजोहै साहबको ज्ञानरूपदूधता-फोग्रहणकियो औ अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेन-लग्यो सोकबीरजी लिखै कियो है शब्दमें (निर्मल नामचुनि चुनि बोले) अरु-अकह रामनामई है अरु अकह निर्गुण सगुण के परेहै। श्रीरामचन्द्रई हैं तामें

प्रमाण ॥ (रामकेनामतेपिंडब्रह्मांडसब रामकोनाममुनिभर्ममानी । निर्गुण-
निरंकार के पार परब्रह्म है तासुको नामरङ्गरजानी । विष्णुपूजाकरै ध्यान-
शङ्करधरै भनहि सुविरंचि बहुबिबिध बानी । कहैकब्बीर कोइ पारपावैनहीं
राम को नामहै अकह कहानी) ॥ ५ ॥

इति इक्यावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बावनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ज्यहिकारणशिवअजहुंवियोगी।अङ्गविभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपार न पावैं । सोअवखसमसहितसमुझावै॥ २॥
ऐसीविधिजोमोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै॥ ३॥
कौनेहुं भांति दिखाई देऊ। गुप्तै रहि सुभाव सब लेऊ॥४॥
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥

कहाहमार मानै नहीं, किमिछूटे भ्रमजाल॥ ५ ॥

ज्यहिकारणशिवअजहुंवियोगी।अंगविभूतिलायभेयोगी१॥
शेषसहसमुखपारनपावै।सोअवखसमसहितसमुझावै॥ २ ॥

जाकेकारण शिवअंगमें विभूतिलगाईके योगीभयेपरन्तुअजहंलौं वासों बियो-
गी हैं काहेते कि जोबियोगी न हो ते तो तमोगुणाभिमानी काहे रहते॥१॥औ
शेष सहस मुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीराम-
चन्द्रहैं ते हिते सहित जीवनको समुझावैहै काहेते जीवनको हित मानिकै समु-
झावै है कि मोको जानिकै मेरे पासआवै संसार दुःख न पावै ॥ २ ॥

ऐसीविधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्शसोपावै ॥ ३ ॥
कौनेहुंभांति दिखाईदेऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ॥ ४ ॥

साहब कहा समुझावैहै कि जैसो पूर्व कहिआये हैं (नामार्थमें लिखि आये हैं श्रनकी विधि) तैसो अनुसंधान करत रामनाम जपिकै निरंतर जो छठयें मास या होइतौ जो या शरीरते करैहै छामहीनामें दर्शन सो पावैहै याही भांतिसों जो मोकोध्यावै तौ छठयेंमास भेरोदर्शन पावै कहे छठौ जो हंस स्वरूप तामें स्थिर हैजाय ॥ ३ ॥ तौ कौनिउभांतिसों में देखाइ देउहौं औ निशिदिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभावेलेउ औ जो दृढ़होइ तौ राम नाम कासाधक ताको छठौ शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष हैजाउ पाछे २ रघुनार्थजी नित्य बेनरहत-हैं तामें प्रमाण॥ (रामरामेतिरामेतिरामरामेतिवादिनम् । वत्संगौरिवगौर्य्यर्च्या-धावंतमनुधावति) ॥ ४ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीरपुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥

कहा हमरमानै नहीं, किमिछूटै भ्रमजाल ॥ ५ ॥

श्री कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि जिनको शेष शिवादि कने पारनहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजुकाल्हि ऐसे सुलभहै गयेहैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपायकरैं तो छठयें शरीर में मोको पाइजाई ते साहबको कह्यो में कतनो समुझावतहौं पै सब बेवकूफ हैं जीवन को हवाछ उहैहै कहे वही मायाके नानामतनमें लगेहैं वहीको बिचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायोहै हमारो कहो यतनेहूँपै नहीं मानैहै सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसंछूटै ॥ ५ ॥

इतिबावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तिरपनवीरमैनी ।

चौपाई ।

महादेव मुनि अंत न पावा । उमासहित उन जन्म गँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिंकोई । मन निश्चल कहु कैसेहोई २॥
जौ लग तन में आहै सोई । तौलग चेत न देखौ कोई३॥

तबचेतिहौजवतजिहौप्राना । भयाअन्ततवमनपछिताना ४
यतनासुनतनिकटचलिआई।मनकोविकार न छूटैभाई ५॥
साखी ॥ तीनिलोकमों आयकै, छूटि न काहू कि आशा॥

यकआंधर जग खाइया,सबजग भया निराश ॥६॥

उनते अधिक सिद्धिकौन साध्योहै जाको मन निश्चल होइ अर्थात् सिद्धिसा-
धे मन निश्चल नहीं होयहै ॥ २ ॥ जबलग शरीरमें मनहै तबलग चेतन करिकै
अथवा महादेव जे हैं औ बड़े बड़े मुनिजहैं ते अंतनहीं पायो जो कोऊ
जान्योहै ते वोही साधन तेजान्योहै कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोईनहीं
देखै हैं ॥ ३ ॥ कबीरजी कहैहैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे ? तब-
कहां चेतौगे यह याकु भाव है जब अनतही जाई शरीर पावोगे तब मनको पछि-
तावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तौ यह अर्थहै कि तुम जो अया-
नेभये साहबको न जान्यो हमारकहा मानवई न कियो तौ अब पछिताना क्याहै
पछितातो काहेकोहै संसार पीर सहो ॥ ४ ॥ यह सब जगत् शास्त्रनम सुनाहै
कि मौत निकट चलीआवै है हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कैहैहै मनको
विकार नहीं छोड़ैहै ॥ ५ ॥ तीनि लोकमें आइकै सब मरिगयो परन्तु काहूकी
आशा न छूटतभई एक आंधरजोहै मन सोजगदको खाइलियो सब जगद
परमपुरुषके मिलिबेको निराश है गयो । इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुषको
कबहूंनहीं देखैहै काहेतेकि साहबमनबचनकेपैर है आपही शक्तिदेइहैजीवकों
तबहीदेसैहै ॥ ६ ॥

इति तिरपनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथचौवनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

मरिगयेब्रह्माकाशिकेवासी । शीव सहित मूये अविनासी १
मथुरा मरिगयेकृष्णगुवारा । मरि मरि गयेदशौ अवतारा २
मरिमरिगयेभक्तिजिनठानी । सर्गुणमें जिन निर्गुणआनी ३

साखी ॥ नाथ मछंदर ना छुटै, गोरखदत्ता व्यास ॥

कहाहिं कबीर पुकारिकै, परेकालकेफाँस ॥ ४ ॥

ब्रह्मा जेहें काशीके वासी शंभूजेहै तिनते सहित अविनाशी जे विष्णु ते मरिगये सो अविनाशी सबकोई कहतई है औरिबोकहै हैं सो उनको तो नाश कबहुं होतही नहीं है महा प्रलयम तिरोधान है पुनि प्रकटहोइहैं याते अविनाशी कह्यो है ॥ १ ॥ मथुरा के कृष्ण औ गुवार औ दशौ अवतार तेऊ मरिक्हे तिरोधान है गये कहांगये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हजारन ब्रह्मा विष्णु महेश दशौअवतार ठाढ़े हैं जाको जौने ब्रह्माण्डको हुकुमहोइहै सो तहां अवतारलै पुनि अपने अंशनमें लीनहोइहै तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमान्प्रति ॥ (आसीनंतमनुष्यायेसहस्रस्तंभमंडिते । मंडपेरत्नसंगेचजानक्यासहराव-
त्तम् ॥ मत्स्यः कूर्मश्चकृष्णश्चनारसिंहाद्यनेकधा । वैकुण्ठोपिहयग्रीवोहारिः केश-
ववामनौ ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोपिच । देवकीनंदनः कृष्णो वासुदेवो-
बलोपिच ॥ पृष्णिगर्भो मधून्माथीगोविंदो माधवोपिच । वासुदेवोपरोनन्तः संकर्ष-
ण इरापतिः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनाममहेश्वरः । तेषामैश्वर्यदातृत्वं तन्मूलत्वं
निरीश्वरः ॥ इन्द्रानामास इन्द्राणां पतिः साक्षी गतिः प्रभुः । विष्णुस्वयं सविणूनां प-
तिर्वेदांतकृद्भिः ॥ ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्त्ता प्रजापतिपतिर्गतिः । रुद्राणां स्थपती रुद्रो रुद्रको-
टिनियामकः ॥ चन्द्रादित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच । अवतारसहस्राणि शक्तिको-
टिशतानिच ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानिच । सभां यस्य निषेवंते स श्री-
राम इतीरितः) ॥ २ ॥ औजिनसगुण म भक्तिको ठानी है तेऊ मरिगये औ जे निर्गुण आन्यो है तेऊ मरिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ म-
रिगये ॥ ३ ॥ औ मछंदर औ गोरख औ दत्तात्रेय औ व्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सबकालके फाँसमें परतभये कहै
महाप्रलयमें नाशहैगये । गहाप्रलय में जबब्रह्मा मरे हैं तब कोई नहीं रहेहैं ॥ ४ ॥

इति चौवनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचपनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

गये राम अरुगये लक्ष्मना । संग न गै सीताअसधना १
जातकौरवनलाग न वारा । गये भोज जिन साजल धारा २
गै पांडवकुन्तीसी रानी । गैसहदेव जिन मति बुधि ठानी ३
सर्व सोनेकै लंक उठाई । चलत बार कछु संग न लाई ४
कुरियाजासु अंतरिक्ष छाई । हरिचन्द्र देखिनहिं जाई ५
मूरुख मानुष अधिक सजोवै। अपना मुवल औरलगिरोवै ६
इ न जानै अपनो मरि जैवै । टका दश विढ़ै और लै खैवै ७
साखी ॥ अपनी अपनी करि गये, लागिन काहूके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथ नाथ ॥ ८ ॥

गयैराम अरुगये लक्ष्मना । संगनगै सीता असिधना ॥ १ ॥

देवतन मुनिनको कहिआये हैं अब राजनको कहै हैं काहेते कि, आगे दश-
अवतार कहिआये हैं इहां पुनि राम कहै है तहां इहां जे जीव राम राजा भये
ताको औ लक्ष्मणको महाभारतसभापर्वमें नारद युधिष्ठिरते कह्योहै राजनके
गिनतीमें यमकीसभामें । तिनको कहै हैं कि, रामगये लक्ष्मणगये औ संगमें सीता
असनारी न जातभई । जो यह अर्थ कोई न मानै तौयह कहै हैं कि, नारायणके
अवतार रामचन्द्रहैं तिनहीको जाइबो कबीरकहै हैं तौ कबीरजी तौ सांचके
कहवैया हैं झूठी कैसे कहेंगे सब रामायणम वर्णन है कि प्रथम जानकी शरीर
ते सहितगई हैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जातभये जिनके संग श्रीशक्ति
भूशक्ति लीलाशक्ति शरीर सहित चलीजातीहै सो जो कबीरजी व राजा
जे भयै हैं तिनको जाइबेको न कहते तौ संगमें सिया असि धना न गई यह
कैसे लिखते ॥ १ ॥

जातकौरवनलागिनवारा गयेभोजजिनसाजलधारा ॥ २ ॥
 गेपांडव कुंतीसी रानी । गेसहदेवजिनमति बुधिठानी ॥ ३ ॥
 सर्वसोनेकी लंक बनाई । चलत बारकछुसंग न लाई ॥ ४ ॥

औ कौरवनको जातवार न लग्यो औराजाभोजगे जिनधारानगरीको बसायोहै
 कहे साज्यो है भोजके कहेते कलियुगके राजा सब आयगये ॥ २ ॥
 औ पांडवानेहैं औ कुन्ती ऐसी रानी जो है औ सहदेव जेहैं ते सब जातभये
 जेपण्डितहैं तिनहूं में अपनीमति कहे बुद्धि अधिक ठानतभये कहे करतभये ॥ ३ ॥
 औ सब लंका सोनेके रावण बनायो पै चलतवार संगमें न गई ॥ ४ ॥

कुरियाजासुअंतरिक्षछाई । सोहरिचंद्रदेखिनहिंजाई ॥ ५ ॥

औ जाकी कुरिया अंतरिक्षमें छाईहै कहे स्वर्गमें महलबनोहै इन्द्रते अधिक
 सिंहासनमें बैठेहैं ऐसेजहैं हरिचन्द्र राजा तेऊनहीं देखिपारै हैं अर्थात् तेऊ न
 रहिगये मरिगये भावयह है कि महा प्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाईहै ॥ ५ ॥

मूरुखमानुषअधिक सजोवै । अपनासुवलऔरलगिरोवै ॥ ६ ॥

इ न जानै अपनो मरिजैवै । टका दशवट्टे औरलैखैवै ॥ ७ ॥

मूरुख जो मनुष्यहै सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवै है अर्थात्
 और को मरिवो कहे आज्ञा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सबको मरिवो
 देखतई जायहैं औ रोवै हैं अपने मरनकी चिन्तानहीं करैहैं ॥ ६ ॥ या नहीं जानैहैं
 कि जेतेंदिन बीतिगये जेतने मरिगये और मरिही जायंगेय है विचारै हैं कि
 और दशटका बढ़ें जाते बहुतदिन बैठेसायँ ॥ ७ ॥

साखी ॥ अपनीर करिगये, लागिनकाहुकेसाथ ॥

अपनीकरिगयो रावणा, अपनीदशरथनाथ ॥ ८ ॥

जीतिजीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशी दशरथराजा ते अधिक
 कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करैहैं उनके सुकृतको यश जगतही में रहिगयो
 उनके साथ न गयो औ अयशीरावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब निन्दाकरै
 हैं जाके दुष्कृतको अयश जगतहीमें रहिगयो ॥ ८ ॥

इत पंचपनवीं रमैनी समाप्त ।

अथ छप्पनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

दिनदिन जरै जरलकेपाऊ । गाड़े जाइ न उमगै काऊ ॥१॥
कंधं न देइ मसखरी करइ । कहुधौकौनिभांतिनिस्तरई ॥२॥
अकरमकरै करमको धावै । पढिगुणिवेदजगतसमुझावै ॥३॥
छूछेपरे अकारथ जाई । कह कवीर चितचेतहु भाई ॥ ३ ॥

दिन दिन जरैजरलकेपाऊ । गाड़ेजाइ न उवरै काऊ ॥१॥

कबीरजी कहैहैं कि जे रोजरोज ज्ञानाग्नि करिकै कर्मकोजारै हैं अपने जीवत्वको जोरैहैं कि हम ब्रह्म हैजायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूके कर्मही जरे न कोई ब्रह्मही भयो । अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगये हैं कर्म जाको अर्थात् कर्मही नहीं है ऐसो जोब्रह्म ताकोको पायो है? अर्थात् कोई नहीं पायो है । जो कहो जड़भरतादिक पायो है तौ बेजो ब्रह्मही है जाते तौ दूसरो मानिकै रहुगणको कैसे उपदेश करते । कपिलदेव सगरकेलरिकन काहे जारिदेते औ सनकादिक जय विजयको काहे शापदेते सो तुम ब्रह्म हैबेकी आशा न करो जो संसारमें परे रहोगे तौ कबहूँ सत्संग पायकै उद्धारहू होइजाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़ में परेगे तो गड़िजाउगे कबहूँ न उमगोगे अर्थात् तिहारो कतहूँ उद्धार न होइगो ॥ १ ॥

कंधनदेइ मसखरी करइ । कहुधौकौनिभांतिनिस्तरई ॥२॥

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तारहोय समीचीनसाधुनको सत्संग तो मिलै नहीं है गुरुवा लोगको सत्संग मिलैहै ते मसखरी करै हैं । मसखरी कौन कहावैं जो आपतो जानै औ औरेनको ठगै सो गुरुवालोग आपतो जानै हैं कि या झूठाब्रह्ममें हम लागे हमारे हाथ कछुबस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जोसाहबमें लगैहै जीवतिनकोकांधातानदिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्ट तो

न किये कि भल्लेगेहैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं अहं ब्रह्मास्मि मानौ तौ तुमको अनेक प्रकारकी ऋद्धिसिद्धि प्राप्त होइ है साहब को ज्ञान छोड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारिदिये ॥ २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै । पढिगुणवेद जगतसमुझावै ॥३॥
छूछे परै अकारथ जाई । कह कबीर चितचेतहु भाई ॥४॥

कैसेहैं वे गुरुवा लोग करत तो अकरममतहैं कि हमको करमत्यागहै हम संन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं औ करम करिबेको धावै हैं औ वेदको पढि गुनिकै जगतको समुझावै हैं कि, निष्कर्महोउ चाहईते सब बिकारहै चाह छोड़िदेउ औ आप भायाके लिये बजारमें झगरै हैं सो उनके कहे जीवनको कैसे समुझिपरै ॥३॥ उनको उपदेश अकारथई जायहै औ जो सुनै है सो छूछई परैहै अर्थात् कछु-वस्तु हाथ नहीं लगे है सो कबीरजी कहै हैं कि, हे भाई ! चित चेत करो जेहिते कनककामिनी रूप मायाते औ धोखाब्रह्मते बचिजाउ ॥ ४ ॥

इति छप्पनवीर मैनी समाप्ता ।

अथ सत्तावनवीं रमैनी ।

चोपाई ।

कृतियासूत्रलोक यकअहई।लाख पचासके आगे कहई॥१॥
विद्या वेद पढै पुनि सोई । वचन कहत परतक्षै होई ॥ २ ॥
पहुंचि बात विद्या के वेता।बाहु के भर्म भये संकेता ॥ ३ ॥
साखी ॥ खग खोजनको तुमपरे, पीछे अगम अपार ॥

विन परचै किमि जानिहौ, झूठाहै हंकार ॥ ४ ॥

कृतियासूत्रलोकयकअहई।लाखपचासकेआगेकहई॥ १ ॥

कृतिया कहे यह कृत्रिम जो है कर्म अहं ब्रह्म मानिबो सो यहलोक में एक सूत्रके बरोबरहै कहेरसरीकेबरोबरहै जीवनके बांधिबेको । मंगलमें कहि

आये हैं कि, ब्रह्ममें अणिमादिकसिद्धि होइ हैं सो वह कृत्यकरिकै कहे ब्रह्मा-
निकै पचास लाखवर्षके आगेकी कहै हैं सो पचास लाख यह उपलक्षण है
अर्थात् भूत भविष्य वर्तमान सब कहै हैं ॥ १ ॥

विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई । वचन कहत परतक्षै होई ॥ २ ॥

पहुंचि वात विद्या के वेता । वाहुके भर्मभये सङ्केता ॥ ३ ॥

विद्या जो है वेद जो है सो संपूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौनबात
कहै हैं तौन परतक्ष होइहै कहे वाक्यसिद्धि है जाइ है ॥ २ ॥ वेविद्याके वेत्ता
कहे जनय्या जे लोग हैं ते वह बातको पहुंचि कहे पहुंचतभये अणिमा-
दिक सिद्धि होत भई औ ब्रह्मको जानतभये परन्तु साहबको जो है साकेत लोक
ताके जानिवेको उनहुंको भ्रमभयो अर्थात् साहबको लोक न जानत भये ॥ ३ ॥

साखी ॥ खगखोजन को तुम परे, पीछे अगमअपार ॥

बिन परचै किमिजानिहौ, झूठाहै हङ्कार ॥ ४ ॥

औ खग जो है हंसतिहारो स्वरूप ताके खोजिवेको तुमचल्यो कि, हम अपने
आत्माको स्वरूपजानैं सो साहब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म सों लग्यो है
वाहीकौ अपनोस्वरूप मानिलियो है जब कुछ संसार तुमको छूट्यो तब अगम
अपार जो धोखा ब्रह्म है ताही को अहंब्रह्मास्मि मानिकै बैठ्यो सो वह अगम
है काहूकी गम्य नहीं है अपार है अर्थात् झूठा है । भाव यह है कि, जब
साकेत लोक को जानोगे तब साकेतनिवासी जेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको
जानोगे तब वे हंसस्वरूपदे अपने धामको लैजायेंगे तबहीं जन्म मरणते रहित
होउगे तब हंसस्वरूपपावोगे औरीभांति संसार ते न छूटोगे न सिद्धिप्राप्त भयें
न ब्रह्मभये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजी को दोहा ॥ “बारिमथे घृतहोइ-
बरु सिकताते बरु तेल । बिनहरिभजन न भवतैरै यह सिद्धांत अपेल)
१ औ कबीरहूजी को प्रमाण ॥ “रामबिनानर हैहोकैसा । बाटमाँझ गोबरौरा
जैसा” ॥ ४ ॥

अथ अट्टावनवीं रमनी ।

चौपाई ।

तैं सुत मानु हमारी सेवा । तो कहँ राज देहुं हो देवा ॥ १ ॥
 गम दुर्गम गढ़देहु छुड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई ॥ २ ॥
 उतपति परलै देउ देखाई । करहुराज्यसुखविलसहुजाई ॥ ३ ॥
 एको वार न जैहै बाँको । बहुरिजन्मनहिहोइहैताको ॥ ४ ॥
 जायपाप देहौ सुखधाना । निश्चयवचनकबीरको माना ॥ ५ ॥
 साखी ॥ साधुसंत तेई जना, जिन माना वचन हमार ॥
 आदिअंत उत्पति प्रलय, सब देखा दृष्टिपसार ॥ ६ ॥

तैं सुत मानु हमारी सेवा । तोको राजदेहुं हो देवा ॥ १ ॥
 गम दुर्गम गढ़देहुं छुड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई ॥ २ ॥

वही लोकके गये जन्म मरण छूट है सो कबीरजी साहिबैकी उक्ति कहै हैं ।
 साहब कहै हैं हे सुत! हे जीव! तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहैहै
 किं मैं इनको दासहौं तिन देवतनकी राज्यमें तोको देहुंगो अर्थात् मेरोपार्षद
 जब होयगो तब सबके ऊपर है जायगो ते देवता तुम्हारही सेवाकरेंगे ॥ १ ॥
 औ गम जो है जगत् दुर्गम जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दूनों धोखाजे गढ़हैं ते तोको
 छोड़ाय देउंगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउंगो औ वह धोखा ब्रह्म में न
 लगन देउंगो जो जीवनको संसारी करिदेइहैं तब सगुण निर्गुणके परे जो और
 कछुबात है सो मेरोपार्षद कहै हैं सो तैंहूँ मेरे नगीच आइकै सुनैगो ॥ २ ॥

उतपतिपरलैदेउदेखाई । करहुराज्यसुखविलसहुजाई ॥ ३ ॥

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनीभांति सो मेरे प्रकाशके भीतर समष्टिजीवते होइ है
 सोमैं उंचेत तोको देखाइदेउंगो औ जगत्में आयकै जो मोको जानिकै मेरीभक्ति
 करैहैं सो सुखहै सो तैंहूँ मेरीभक्तिकरिहैं संसाररूपी राज्यमें जाइकै सुखसों बिलसैगो

तोकोसंसारबाधा न करिसकैगो । जगत् रूपी राज्यके विषयानंद ब्रह्मानंद आदिक जे सुखहैं ते सुखनहीं हैं जो कहां साहबके लोक जाइ फेरिकैसै आवैगो उहां गये तो अपुनरावृत्ति कहिआये हैं तोकबीरजी बीरसिंह देवको साहबके लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करतभये औ श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत् बाधानहीं करिसकैहै वे साहब लोकही मेंहैं काहेते कि साहबको लोकप्रकाश सर्वत्र व्यापकहै साहबकी सकल सामग्री साहबके रूपई वर्णन करि आये हैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्रपूर्ण है तौसाहबको लोक औ साहब सर्वत्रपूर्णई है । जे साहबको जानै हैं औ जगत्जमें हैं तौसाहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ॥ ३ ॥

एकोबार न जैहैवांको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको॥४॥
जायपायदेहौसुखधाना । निश्चयवचनकबीरकोमाना ॥५॥

एकोबार न बाँको जाइगो जन्ममरणतेरोछूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो॥४॥ औ संपूर्ण जे पापहैं ते जात रहैगें औसुखको धाना कहे समूह तोको देउंगे सोसाहब कहैहैं कि हेजीव! कबीरजीको वचन तुम निश्चय मानिके मेरेपास आवो५ साखी ॥ साधुसंत तेईजना, जिन माना वचनहमार ॥

आदिअंतउत्पति प्रलय,सबदेखा दृष्टिपसार॥६॥

जे हमारो कहावचन प्रमाणमान्योहै तेईसाधुहैं कहेसाधन करण वारेहैं औ तेई संतहैं तिनहीके मनादिक शांत ह्वै गये हैं औ तेई आदिअंत उत्पत्ति प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बातजानि लियोहैं ॥ ६ ॥

इति अष्टावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ उनसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

चढ़तचढ़ावत भड़हरफोरी । मननहिंजानै को करिचोरी १
चोर एक मूसल संसारा । बिरलाजन कोई जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै वारी । एकैराम सकल रखवारी ३॥

साखी ॥ पाहन है हँ सवचले, अनभितियन को चित्त ॥
जासा कियो मिताइया, सो धनभे अनहित ॥४॥

चढ़त चढ़ावत भड़हर फोरी । मन नहिं जानै को करि चोरी ॥ १ ॥
चोर एक मूसल संसारा । बिरला जन को इजान नहारा ॥ २ ॥
स्वर्ग पताल मूमिलै वारी । एकै राम सकल रखवारी ॥ ३ ॥

गुरुवा लोग आप प्राण चढ़ावै हैं अरु औरको सिखै सिखै प्राण चढ़ावै हैं सोयही प्राण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरि कै वही धोखा ब्रह्ममें लीन भये मनते । या नहीं जानै हैं कि साहब के ज्ञानकी चोरी को करै है वही धोखा ब्रह्मही तो करै है यही नहीं जानै हैं बाहीमें लगे हैं ॥ १ ॥ सो चोर एक जो धोखा ब्रह्म है सो संसार भरको मूसलियो अर्थात् ब्रह्मही के ज्ञानको सब दौरे हैं परमपुरुष को नहीं दौरे हैं तेहि ते कोई बिरला जन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है ॥ २ ॥ जे श्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमि को बारिके सम रखवारी कहे रक्षा करै हैं इहां एकै राम रखवारै है यह जो कह्यो ताते बाँधन वारे धोखा देन वारे बहुत हैं पै बंधन ते छोड़ावन वारे एक श्रीरामचन्द्र ई हैं दूसरो नहीं है स्वर्ग ते ऊपरके भूमि ते मध्यके पाताल ते नीचेके लोक सब आये ॥ ३ ॥

साखी ॥ पाहन है हँ सवचले, अनभितियन को चित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित ॥४॥

अनभितियाको चित्त जो धोखा ब्रह्म है तौनेमें लगिकै संपूर्ण जे जीव हैं ते पाहन है गये कहे जड़ वत् है गये वे धन ते छोड़ावन वारे श्रीरामचन्द्रको न जानत भये जौन ब्रह्म ते सब जीव मिताई कियो सो अनहित भये कहे संसार में हारन वारे धोखई ठहरयो ॥ ४ ॥

इति उनसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ साठवीं रमैनी ।

चौपाई

छाड़हु पतिछाड़हु लवराई।मनअभिमानटूटितवजाई॥ १॥
जनचोरी जो भिक्षाखाई।फिरिविरवा पलुहावन जाई ॥ २॥
पुनिसंपति औपतिको धावै।सो विरवासंसार लै आवै॥ ३॥
साखी ॥ झुठा झुठैकै डारहुं, मिथ्या यह संसार ॥

तेहिकारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ॥ ४ ॥

छाड़हुपतिछाड़हुलवराई।मनअभिमानटूटितवजाई ॥ १ ॥
जनचोरीजोभिक्षाखाई । फिरिविरवापलुहावनजाई ॥ २ ॥
पुनिसंपति औपतिकोधावै।सोविरवासंसारलैआवै ॥ ३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि नाना देवता जो पतिमानौहैं। सो औ लवराई जो धोखा
ब्रह्महै ताको छोड़िदेउ न छोड़ोगे तौपुनिकै जब संसारआवोगे तबतोअभिमान
दूरिहोजाय अर्थात् नानादेवतनही की सुधिरहिजायगी न धोखा ब्रह्महीकी सुधि-
रहिजाइगी॥ १॥काहे ते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ? सोआगे कहै हैं जीव या
सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षा
मांगि खायहैं औ फिरि २ विरवारूप देवतनको पलुहावैकहे प्रश्नकरे जायहैं पुनि
उनहीं सों सम्पति कहे नाना ऐश्वर्य होय सिद्धि होइ औ पति कहे राजाहोय
इंद्रहोय याको धावै हैं सो वे विरवारूप जे देवता हैं ते फिरि फिरि संसारमें
लै आवै हैं जन्म मरण होय है ॥ २॥ ३ ॥

साखी ॥ झुठाझुठैकैडारहु, मिथ्यायहसंसार ॥

तेहिकारणमैंकहतहौं, जासोंहोयउबार ॥ ४ ॥

सो झुठा जो ब्रह्महै ताको झूठ समुझिलेउ अरु देवता संसार ही में हैं सो
यह संसार जेहै ताको मिथ्या मानिलेउ औसबको कारण जौन सर्वत्रहै जाको

पूर्व कहिआयेहैं कि एकै रामरखवारी करै हैं सो भैंहींहों तिहारो पति तुम मोमें
लगौ जातेतुम्हारो उबार हैजाइ तिनको तुमपति मानिराख्योहै ते तुम्हारे पति-
नहीं हैं वे बांधने वारे हैं ॥ ४ ॥

इति साठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इकसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

धर्मकथा जो कहतै रहई । लवरीनित उठि प्रातै कहई ॥ १ ॥
लवरिविद्वानेलवरीसाँझा । यकलावरिवसत्तदयामाँझा ॥ २ ॥
रामहुंकेरमर्मनहिं जाना । लै मति ठानी वेद पुराना ॥ ३ ॥
वेदहुंकेर कहानहिंकरई । जरतै रहै सुस्त नहिं परई ॥ ४ ॥
साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहिं गये गमाय ॥
माटीतन माटीमिल्यो, पवनहि पवन समाय ॥ ५ ॥

धर्मकथाजो कहतैरहई । लवरीनितउठि प्रातैकहई ॥ १ ॥

धर्म की कथा जो कहतई रहै हैं कि स्त्री आपने पतिही को जानै और
दूसरेको पतिकारि न जानै परन्तु धर्म कछूजानै नहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह
साहबकी शक्तिहै याके पति साहब हैं तामें प्रमाण ॥ “अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृति-
विद्धिमेंपराम् । जीवभूतांमहाबाहो ययेदंधार्य्यतेजगत्” ॥ इतिगीतायाम् ॥ “वासुदे-
वःप्रमाणैकःस्त्रीप्रायमिदंजगत्” ॥ दूसर कबीरजीका प्रमाण ॥ “दुलहिनगावोमंगल-
चार । हमरेघरआयेरामभतार ॥ तनरतिकारि भैं मनरतिकरिहैं पांचौतत्वबराती ।
रामदेवमोहिंव्याहनऐहैं मैयौवनमदमाती ॥ सरिरसरोवरवेदीकरिहैंब्रह्मावेदउचा-
रा । रामदेवसँगभांवरिलेहैं धनिधनिभागहमारा ॥ सुरतेंतीसौकौतुकआयेमुनिवर-
सहसअशशी । कहेकबीरहमव्याहिचलेहैं पुरुषएकअविनाशी” ॥ तेसाहबको या
जीव नहीं जानै हैं औरऔरमें लगे है बड़े प्रातःकाल उठिके लवरी कहै है कि
हमहीं राम हैं दूसरो नहीं है अथवा जीव जन्म लेइहै सो प्रातःकाल है नव

गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्योहै कि तुम मोको गर्भते छुड़ायो मैं तिहारोभजन करौंगो औ जब गर्भते निकस्यो जन्मलियो तब वहवात लवरी कै डारयो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहा करन लग्यो ॥ १ ॥

लवरिविहानेलवरीसाँझा । यकलावखिवसहदयामाँझा ॥२॥
रामहुंकेर मर्मनहिं जाना । लै मतिठानी वेद पुराना ॥३॥

सो यहितरह ते लवरी बिहाने कहैहै औ साँझके लवरीकहैहै कहे आपन औ गुरुके औ देवताके ऐक्यता मानै है काहेते तीनि कहैं हैं कि, एक लवरी जो है मायासो हृदयमें बसैहै सोई सब लवरी कहावै है ॥२॥ सो भला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वहतो धोखा है सो कछू वस्तु होइ तौ जानै परन्तु सांच औ सर्वत्र पूर्ण औ सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि, जो कोई मेरे सन्मुख होइ ताको मैं छुड़ाइ लेऊँ या जीव न जानतभये साहब छुड़ाइ लेइहै तामें प्रमाण ॥ “अबही लेऊँ छुड़ाय काळते जो घट सुरति सम्हारो” ॥ याहीहेतु सुरति दियो है मतिलैकै कहेग्रहण करिकै वेदपुराणके अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धांतनमें लगायदेइ है ॥ ३ ॥

वेदहुं केर कहानहिं करई । जरतैरहै सुस्त नहिं परई ॥४॥

सिद्धांततौ एकैहोइहै साहबकोसिद्धांत जो तात्पर्यवृत्तिकरिकै यह कहैहै सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेदमें जो सुकर्म लिखे हैं सो करिकै नरकते तौ बचै सो वेदहू की कही जो विधि निषेधहै सोऊ नहीं करैहै एसो मूढ़ यह जीव शोकरूपी अग्निमें जरतै रहैहै सुस्त नहीं परै है सुचित्त नहीं होय है अर्थात् इहां कुछ छोड़यो उहां धोखाजोब्रह्महै तहांकुछ न समझ्यो औईश्वर जे हैं तिनहुं को काहू न मान्यो औ सबके रखवार दयालु जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनहुं छोड़यो तेहिते मूर्ख उंटके पाद द्वै गयो न जमीनको न आसमान को वाको कौन बचावै। जो कहो आत्माको चीन्हिकै बचिजाय तौ जो आत्मामें एती शक्तिहोती तौ बंधनमें न परतो आपही बचिजातो ताते सबके रखवारजे साहबहैं तिनहींके बचाये बचैहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहि गये गमाय ॥

माटीतन माटीमिल्यो, पवनहि पवन समाय ॥ ५ ॥

गुणातीत जो साहबको लोक ताकेगावते कहे प्रकाशतेजहांसमष्टि जीवरहै है तहां आपुही रामनाम को साहबमुख अर्थ गमाय कै संसारमुख अर्थ करि संसारी ह्वैगयो शरीर धारणकियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो औ पवनमें पवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्व गये औ जो गुणातीतके गावते यह पाठ होइ तौ यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखा ब्रह्म ताको गावत गावत साहब को गवांइ जातभये ॥ ५ ॥

इति ईकसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बासठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जोतोहिं कर्तावर्णविचारा । जन्मत तीनिदण्ड अनुसार १
जन्मत शूद्रभये पुनि शूद्रा । कृत्रिमजनेउ घालिजगदुंदार २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । और राह तुम काहेन आये ३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया । पैटैकाहेन सुनतिकराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु विलगाई ५
छाडुकपटनलअधिकसयानी । कहकबीर भजुशारंगपानी ६

जोतोहिं कर्तावर्णविचारा । जन्मततीनिदंडअनुसारा ॥१॥

जेतोको ब्रह्मा वर्णको विचारकियो कि ये ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं वैश्य हैं शूद्रहैं मुसलमानहैं सो एतो शरीर के धर्महैं तीनिदण्ड जे हैं संचित क्रियमान मारब्ध तिनके कर्मके अनुसारते जन्मनकहे जन्मलेइ हैं ॥ १ ॥

जन्मतशूद्रभयेपुनिशूद्रा । कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा ॥२॥
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । औरराहतुमकाहेनआये ॥३॥

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तबतैं शूद्रई रहै है काहेते कि संस्कार कुल-
नहीं रहैहै औ जब मरैहै तब अशुद्धई रहैहै शिखा जनेऊ दूनो आगीमें
जरिजाइहैं तबहूं शूद्रै हैजाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगत्में द्वन्द
मचाइ दियोहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्री हैं ये वैश्यहैं ये शूद्रहैं ॥ २ ॥
जोकहौ हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह है काहे
आये ब्रह्मांड फोरिकै आवते आंखी के राहहै आवते अशुद्ध राहहै काहेआये
अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै औ न तैं आपनी शक्ति ते
आइसकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्न करै है कर्मही ते तैं आवै है तेहिते जन्म ते
तौ शूद्रहौ संस्कारते द्विजभये वेद अभ्यास कियो तब विप्रभये औ जब ब्रह्मको
जानैगो तब ब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तोमें आवै है अहं-
ब्रह्म तो धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूं को तैं न जान्यो सो तैं
ब्राह्मणकैसे होइगो जबतैं साहबको जानैगो तबहीं ब्राह्मणहोइगो ॥ ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया । पैटैकाहेनसुनतिकराया ॥४॥
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ॥५॥

औ जो तू कहैहै कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्नहैं तौ पैटै काहे न सुनति
करायो तेहिते तुरुकिनी के पेटते भयेते मुसल्मान नहीं है ॥ ४ ॥ कारीपीरी
गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तौ काबिलग होइहै ऐसे आत्मा तौ एक-
ही जातिहै हिन्दू तुरुक नहीं है सकै है ॥ ५ ॥

छांडुकपटनरअधिकसयानी । कहकबीरभजुशारंगपानी६॥

आपनी सयानी अधिककरिकैजोकपट करिराख्यो है सोछोड़ि दे बिचारिकै
देखु तैंतो आत्मा न हिंदू है न तुरुकहै तैं जाको अंश है ऐसे शारंगपाणि जे
साहबहैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारंगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतुहै कि
धनुषबाण लिये तेरी रक्षा करिबेको तैयार हैं और तू औरै औरैमें लगाहै । जो

साहबमें लगैहै सोई सवते श्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण॥ (विमलविषडगुणयुतादरविंद
नाभपादारविंदविमुखाच्छवपचवारिष्ठम् । मन्येतदर्पितमनोवचनेहितार्थमाणं पु-
नातिसकुलं न तु भूरिमानः) ॥ १ इति भागवते ॥ ६ ॥

इति बासठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तिरसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

नाना रूप वर्ण यककीन्हा । चारि वर्ण उनकाहु न चीन्हा ॥ १ ॥
नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा ॥ २ ॥
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ॥ ३ ॥
बिमलषकरैन न नहिं सूझा । भो अयानतवकलुवनबूझा ॥ ४ ॥
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके वेष ॥

घट घट अविनाशी वसै, सुनहु तकी तुम शेष ॥ ५ ॥

वर्ण धर्मखंडन करि आये अब सब वर्णको एक मानिजे साहबको भूळैहैं तिनको
खंडनकरै हैं । नानारूप जे जीवहैं तिनको एक वर्ण कहे एक रंग करि देत भयो
अहं ब्रह्मास्मि करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरे नहीं है चारिउवर्ण
वहीको वर्णन करतभये यह न जानतभये कि यह धोखा ब्रह्मको खाई लेइहै ॥ १ ॥
फिरिफिरि सब जीव नष्ट हैगये कहे मरि गये उद्धारकर्ता जो साहबहै ताका न
चीन्हतभये औ औरहि जो धोखा ब्रह्महै तौनेमें मन दैकै नष्टहैगये अर्थात् लीन
हैगये साहबको तो जाने नहीं फिर संसारी भये ॥ २ ॥ जे वेदको बखानिके पढ़िप-
ढ़िकै औरनको अर्थ सुनावै हैं तेवेदपढ़्यो परंतु भेद न जान्यो कहे वेद को
तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट हैगये सब वेदको भेद साह-
बहै तामें प्रमाण ॥ (सर्ववेदायत्पदमामनन्ति) ॥ ३ ॥ बिमलष जो साहब मन
वचनके परे ताको खंकहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि, वह नहीं है
आकाशवत् ब्रह्मही पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्र तौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि

परं जब न सूझि परचो तब अज्ञान हैगये नेतिनेति कहनलगे कि, अकथ है कबीरजीका प्रमाण ॥ “वेदविचारि भेद जो जानै। सतगुरु मर्मशब्द पहिचानै” ॥ ४ ॥ गुरुवा लोग कहै हैं कि, वही जोहै अविनाशी सो सबके घटघट में सबको नाच नचावै है औनटके वेष आपो नाचै है । सो कबीरजी शेषतकीसों कहै हैं कि, हे शेषतकी ! जो सबको नाचनचावैगो आपनटके वेष नाचैगो सो अविनाशीकैसेहोइगो काहेते कि नटएक वेषलैआयोपुनि वह वेष छोड़िके और वेष लैआयो याही भांति नानावेष नट धारणकरै हैं ते सब अनित्यहैं नाना वेष धरिबो तौ मायाके गुणहैं वह मायाके परे कैसे होइगो औ जब मायाते परे न होइगो तौ अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेषतकी तुम सुनो वाह्विचार करत करत जो शेष रहिजायहै सो तुमहौ बातो तुम्हारहो अनुभवहै अथवा तुम शेषहौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेष हौ कहे अंशहौ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौंसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

काया कंचन यतन कराया। बहुत भांतिकै मन पलटायो ॥ १ ॥
जो सौवार कहौ समुझाई । तहिबो धराछोड़ि नहिंजाई ॥ २ ॥
जनकेकहे जो जन रहिजाई। नबो निद्धि सिद्धी तिनपाई ॥ ३ ॥
सदाधर्म तेहि हृदयावसई । राम कसौटी कसतै रहई ॥ ४ ॥
जोरि कसावै अंतै जाई । तौ वाउर आपुहि वौराई ॥ ५ ॥
साखी ॥ ताते परी कालकी फांसी, करहु आपनो शोच ॥
जहां संत तहँ संत सिधावै, मिलि रहे पोचै पोच ॥ ६ ॥

कबीरजी कहैहैं कि ईजीवनके कायाको हम बहुत यतनकरवाया औ बहुत भांति ते मन पलटायो कि तू धोखा कों त्यागि कंचन आपने स्वरूपको जानो ॥ ?

यात्रात यद्यपि मैं सौवारसमुझाऊँहों ताहूपै ऐसो धोखाको धरयो कि छोंड़ि
 नहींजाय सो जे जन गुरुवाजनके कहेरहिजायहैं धोखाकोनहीं त्यागि हैं ॥ २ ॥
 तेनबोनिद्धि पावे हैं औ निर्गुण सगुणके परेमें जोबातकहौहों ताकोकहां बूझैं ॥ ३ ॥
 जेमेरोकह्यो बूझैंहैं कि हमसाहबकेहैं याधर्मजिनके हृदयमें बसैहै तेसाहबके रूप-
 कसौटी में आपनो कंचन स्वस्वरूप कसतई रहै हैं औ जेसाहब नहींकसैहैं
 गुरुवालोगनके कसवैनाइहैं तेवेबाउरऊ निराकार ब्रह्म तांमें आपही बौरायजाय
 हैं जो औरको औरकहै सो बाउर है ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो हे जीवो ! तुम साहब
 के होइकै धोखा में लगे ताहीते कालकी फांसीमें परेहौ सो आपने छूटिबे को
 शोच करौ देखो तो जहां संत रामोपासकहैं तहैं संतजाइहैं आपनोस्वरूपजानि
 छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगनको उपदेश लेइहैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहेहैं ॥ ६ ॥

इति चौंसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथपैंसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अपने गुणके औगुण कहहू।यहैअभाग जोतुम न विचारहू १
 तुमजियरा बहुतैदुखपाया । जलवनमीनकवनसचुपाया २
 चातृकजलहल भरेजोपासा।मेघ न वरसै चलैउदासा॥३॥
 स्वांग धरयोभवसागर आसा।चातृकजलहलआशैपासा४
 रामै नाम अहै निजसारू । औ सब झूठ सकल संसारू ५
 किंचित है सपनेनिधिपाई । हियनमाहँ कहँ धरै छिपाई६॥
 हरि उतंग तुमजातिपतझा । यमघर कियो जीवको संग७
 हियनसमायछोड़नहिंपारा । झूठलोभ तैं कछु न बिचारा८
 स्मृति कहाआपु नहिंमाना । तरिवर छलछागर हैजाना ९
 जियदुरमति डोलै संसारा । तेहि नहिं सूझैवारनपारा १०

साखी ॥ अंधभया सबडोलई, कोइनहिं करैविचार ॥

हरिकि भक्तिजानेबिना, भव बूढ़िमुआ संसार ११

अपनेगुणकेऔगुणकहहू। यहै अभागजोतुननविचारहू १॥

तुमजियरावहुतैदुखपाया। जलबिनमीनकवनसचुपाया २॥

चातृकजलहलभरे जोपासा । मेघनवरसैचलेउदासा ॥३॥

स्वांगधरचोभवसागरआसा। चातृकजलहलआशैपासा ४ ॥

स्वतःसिद्ध तुम साहबके दासहौ या जोआपनो गुणताकोअवगुण कहौहौ कि हम ब्रह्महैं सो यां नहीं बिचारौहौ कि हमब्रह्महैं कि दासहैं याही तुम्हारी अभागहै दासभूतप्रेतमान ॥(दासभूताःस्वतःसर्वेह्यात्मानःपरमात्मनः)॥परमात्ममें बहुत दुःख पायो है जो छाया पाठ होय तौ बहुत दुखमें आयो सो जब बिनाकौनो सचुपायेहौ?नहीं पायो। ऐसे बिनासाहबके जाने सचुनपावोगे?॥१॥२॥ जैसे जब मेघ स्वातीको जलनहीं बरषैहै तब चातृकउदासैरहैहै कहे पियासैरहैहै जो नजीक समुद्रौ भरोहोय तौकहाहोइ ऐसेस्वामी मेघसम रामोपासक पूरागुरु तुमनहीं पायो जो साहबको बताइदेइ ताते तुम उदासईगयो और और में लगावन वारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पै जनन मरण नैं छूट्यो ॥ ३ ॥ भवसागर ते पारहोवे की आशाकरि स्वांगजो धोखाब्रह्म तौनेकोतुमधरचो कि अहंब्रह्मास्मि मानिसंसारते छूटिजाईगे सो तुम्हारी आशा चातृककी भई कि स्वातीतौ पायो नहीं जो बहुतजलहै पै बिना स्वाती चातृककी आशा फांसही हैगई अथवा स्वांग धोखा ब्रह्म को जो तुमधरचो है सो साहबकी आशाकहे दिशानहीं है भवसागर-हीकी आशाकहे दिशाहै ॥ ४ ॥

रामैनाम अहै निजसारू । औसबझूठ सकलसंसारू ॥ ५॥

किंचितहै सपनेनिधिपाई। हियनमाहँ कहँधरैछिपाई ॥ ६ ॥

हरिउतंगतुमजानि पतंगा । यमधरकियोजीवकोसंगा॥७॥

हियनसमायछोड़नहिंपारा। झूठलोभतैकछुनविचारा॥ ८ ॥

स्मृतिकहा आपुनहिं माना । तरिवर छल छागर है जाना ॥ ९ ॥

जियदुरमति डोलै संसारा । तेहि नहिं सुझै वारनपारा ॥ १० ॥

हे जीवो ! तुम यह विचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साहब मुख अर्थ समुझिकै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप औ तुम्हारो स्वरूप राम नामही में है औ सब कहे ब्रह्म है यह जो मानि राख्यो है सो धोखा है झूठा है औ मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठे हैं ॥ ५ ॥ अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठी है तैंतो किंचित् कहे अणु है वा विभु है झूठलो-भंत कछु न विचारा तुम्हारे हिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभवित होइ है याको छोड़ि देव औ वाको पार नहीं है कहे लवरी और न होय है याते झूठ लोभकिये है कि, मैं ब्रह्म होइ जाउँगो सो कछु न विचारा काहेते अच्छा विचार नहीं किये है अथवा कछु न विचारा कहे वा विचार कछु नहीं है मिथ्या है ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ जौन स्मृति बतावै है ॥ (स्याज्जीव-नेच्छायदिते स्वसत्तायां स्पृहायदि । आत्मदास्यं हरेः स्वाम्यं स्वं भावं च सदा स्मर ॥ १ ॥) सो तुम स्मृतिको कहा आप कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखा ब्रह्म में लगिकै अपने को ब्रह्मानिकै तरिवर जो है संसार ताको छल जो है धोखा ब्रह्म सोई है छाग कहे वकरा ताही है कहे वह ब्रह्म है कहे तुम जान्यो कि हम चरिलेई अर्थात् संसार ते छूटि जाई सो एतो बड़ो संसार रूपी वृक्ष कहा धोखा ब्रह्म बकरा चरो चरि जाइ है ॥ ९ ॥ जौन जीमें दुर्मति करिकै संसार में डोलै है कहे फिरौ है सो अहं ब्रह्म माने संसारको वारा पार न पावोगे वह तो धोखा है ॥ १० ॥

साखी ॥ अंधभया सब डोलई, कोइन करै विचार ॥

हरि कि भक्ति जाने बिना, भव बूढ़ि मुआ संसार ॥ ११ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं ये तो समुझाऊं हों परंतु सब संसार की आंखि फूटि-गई हैं अंधभया सब डोलै है कहे फिरै है यह विचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसार दुःख है सो हरि जे हैं सब के रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनु-रागात्मिका भक्ति बिना जाने भव जो है धोखा ब्रह्म तैनै है भ्रमको समुद्र ताही में संसार बूढ़ि मुआ कहे संसारी जीव बूढ़ि मुये ॥ ११ ॥

इति पैसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छयासठवीं रमना ।

चौपाई ।

सोई हितू बंधु मोहिं भावै । जात कुमारग मारग लावै ॥ १ ॥
 सो सयान मारग रहिजाई।करै खोज कबहुं न भुलाई ॥ २ ॥
 सो झूठा जो सुतकै तजई।गुरुकी दया रामको भजई ॥ ३ ॥
 किंचितहैयाहिजगतभुलाना।धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४
 साखी ॥ जिय जो नेक पयान किये,मंदिर भया उजार ॥
 मरे जे जियते मरिगये, बाँचे बाँचन हार ॥ ५ ॥

सोई हितु वा बंधु मोको भावैहै जो कुमारगमें जात जे जीव हैं तिनको सुमार्गमें लावै कहे साहबको बतावै अथवा कुमार्ग में जात जो जीवहैं ताको साहबके सुमार्गमें लगावै ॥ १ ॥ अरुसेई जीव सयानहै जो सुमार्गमें आयकै रहिजायहै कहे स्थिर हैजाय है अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धांत साहब हीमें लगाइदेइ सो कबहुं न भुलाई है ॥ २ ॥ ऐसो गुरुवा झूठा है जो सुतकै कहै मूढ़ मूढ़िकै अपना चेला बनाइके तजिदेइ है साहब को नहीं बतावै है औरे औरे देवतनको सौंपिदेइ है औ जाकीदया ते अर्थात् जाके उपदेशते यह जीव श्रीरामचन्द्र को भजन करै है सोई सांचो गुरु है । भाव यह है कि बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रजी के जाने यह जीव को शोक नहीं छूटै है जे गुरु साहबको बताइके संसारते नहीं छुड़ावै हैं औरे औरे मतन में लगाइके संसारमें डारिदेइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरक देन वारे हैं औ आप नरक जानवारे हैं तामें प्रमाण ॥ (शिष धनहरै शोकनाहिं हरई । सो गुरु घोरनरकमें परई) ॥ औकबीरहूजी लिखि आये हैं ॥ (छोड़िदेहु नरझेलिकझेला । बूड़ें दोऊगुरुअरुचेला ॥) हे जीवतू तो अणु हैं एकजो ब्रह्म औजगद्रूप जो है माया तामें भुलाइरह्यो है याही ते तैं जगत्में उत्पन्न भयो है आपने को मालिकमानिधन सुतादिको तोको अभिमान होइ है ॥ ३ । ४ ॥ हे जीव जो नेकहुपयान ते किये

स्थूल शरीर मंदिर उजार होइनाइ है सो बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरे जीवतौ मरिकै चौरासीलाख योनिमें भटकनेलगे औवाचे वाचनहार कहे जे पांचौ शरीर ते बचिकै पार्षदरूप वाचन द्वार रहे ते वाचे ॥ ५ ॥

इति छयासठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सतसठवीं रमैनी ।

गुरुमुख चौपाई ।

देहहलाये भक्ति न होई । स्वांगधरेबहुते नर जोई ॥ १ ॥
 धिंगाधिगी भलो न माना।जोकाहू मोहिं हृदय न जाना २॥
 मुखकछुऔरहृदयकछुआना।सपन्यो कवहूं मोहिं नजाना ३॥
 ते दुखपावैं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहु निनारा ॥ ४ ॥
 जो नर गुरुकी निन्दा करई । शूकर श्वानजन्मसो धरई ५॥
 साखी॥लखचौरासीयोनिजीव, भटकि भटकि दुखपाव ॥

कह कबीर जो रामहिं जानै, जो मोहिं नीके भाव

देहहलाये भक्ति न होई । स्वांगधरे बहुतै नर जोई ॥ १ ॥
 धिंगाधिगी भलो न माना।जोकाहू मोहिं हृदय न जाना ॥ २ ॥

देह हलाये कहे पेट हलाय कुंडलनी उठावै है औ स्वांगधरे कहे कोई खाख लगावै है कोई जटा नहीं बंटावै है कोई टोपीदे अलफी पहिरि कुबरी लेइ है कोईकोई तिलकै नहीं देय है कोई बेंड़ा तिलक देइ है कोई नाकते तिरुक् देइ है कोई काठफल पाषाण अस्थि इत्यादि माला पहिरै है ऐसे स्वांगधर नरनको देखेहै सौबिना साहबके जाने भक्तिहोई है ? नहीं होइ है ॥ १ ॥ धिंगाधिगीकहे बड़ेबड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बड़ेबड़े धिंगा है रहं हैं औ बड़ी बड़ी धिंगी द्वैरही हैं भलो जो साँच मत ताको नहीं मानै हैं साहब कहे हैं जो कोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पाव है ? नहा पावै है ॥ २ ॥

मुखकछु और हृदयकछु आना । सपन्यो कबहूं मोहिं न जाना ॥ ३ ॥
ते दुख पावहिं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहुनि नारा ॥ ४ ॥
जो नरगुरु की निन्दा करई । शूकर श्वान जन्म सो धरई ॥ ५ ॥

मुखमें तो और है कि, हम संन्यासी हैं हम साधु हैं हम ब्रह्मचारी हैं और
हृदय में और है धनमिलैको उपाय खोजै हैं तेनर सपन्यो कबहूं मोको नहीं
जानि सकैं हैं ॥ ३ ॥ सो ऐसे जे प्राणी हैं ते यहि संसार में दुःख नाना प्रकारके
पावै हैं सो हे नीवो ! तुम चेत करौ तो इनसे न्यारा है जाउ ॥ ४ ॥ औ जे
तात्पर्य वृत्तिकरि कै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरु हैं तिनकी जो कोई निन्दा करै
हैं कि, जोई वर्णन करै हैं सो सब मिथ्या है ते मरि कै श्वान अरु शूकरको
जन्म धारण करै हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ लख चौरासी योनि जीव, भटकि भटकि दुख पावै ॥
कह कबीर जो रामहिं जानै, सो मोहिं नीके भावै ॥ ६ ॥

साहब कहै हैं कि मेरो भक्त कबीर कहै है कि चौरासी लाख योनिमें जीव
यह भटकि भटकि दुःख पावै है सो तिनमें जो कोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई
मोको भावै है । ऐसो प्रकट कबीर बतावै हैं ताहूको और औरमें अर्थ करि और
और लगै हैं सो मोको नहीं जानै हैं ॥ ६ ॥

इति सतसठसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ अड़सठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

तेहि वियोग ते भये अनाथा । परि निकुंज वन पावन पाथा ॥ १ ॥
वेदौ न कल कहै जे जानै । जो समुझै सो भलो न मानै ॥ २ ॥
जटवर वन्द खेल जो जानै । ताकर गुण जो ठाकुर मानै ॥ ३ ॥
उहै जो खेलै सब घटमाहीं । दूसर को लेखा कछु नाहीं ॥ ४ ॥
भलो पोच जो अवसर आवै । कैसहु कै जन पूरा पावै ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये, तव सो जानैगा पीर ॥
लागैतौ भागै नहीं, सुखसिंधु निहारु कबीर ॥६॥

तेहिवियोगतेभये अनाथा । परिनिकुंजवनपावनपाथा ॥१॥
वेदौ नकल कहै जो जानै । जो समुझैसो भलो न मानै ॥२॥

संपूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं के वियोगते अनाथ हूँगये। निकुंज बन जो बाणीको जालहै नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्त मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके मिलनके पाथ कहे पंथ न पावत भये ॥ १ ॥ जिनको पूर्व कहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीवो! जो तैं जानै तौ वेदहू वे मतवारेन को नकलई कहै हैं तौ जो साहब को समुझैहै सोऊ उनको नहीं मानै है नकलई मानै हैं ॥ २ ॥

नटवरवंद खेल जो जानै । ताकरगुण जो ठाकुरमानै ॥३॥
उहैजो खेलैसवघटमाहीं । दूसरकोलेखा कछुनाहीं ॥४॥
भलोपोच जो अवसर आवै । कैसेकै जनपूरा पावै ॥५॥

अब योगिन को कहैहैं । नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहै यहजीव आत्माको ब्रह्मांडमें चढ़ाइकै फिरिउतारै जानै है ताको गुण यहहै कि, समाधि लागि जाइहै कहे ब्रह्मरूपहैजाइहै सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानैहै ॥ ३ ॥ अर्थात् जौनब्रह्ममें हैनाउहाँ तैनै घटमें है दूसरेकी कछुनहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछुनहीं है ॥ ४ ॥ सो जे यहमत करैहैं तिनको भलो पोच-कहे नीको नागा अवसर आवतहै अर्थात् जब जीवमें लीन है ब्रह्मरूप हैजा-इहै यातो भलो अवसर। औ जब समाधि उतरिगई जैसेकै तैसे हैगई या पाँच-अवसरहै सो कैसेकै जन पूरा ज्ञान पावै कि हम पूर्णब्रह्महैं तो सर्वत्र पूर्ण है जो या ब्रह्मैहैनातो तो समाधिउतरेहूमें वही वृत्ति बनी रहती ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये, तव सो जानैगा पीर ॥
लागैतौ भागै नहीं, सुखसिंधु निहारु कबीर ॥६॥

जेकरे शरलैगैहै सोई बाणलागे की पीर जानै सो जोः कोईसमाधि लगावै है सोई समाधि उतरेको दुःख जानैहै सो समाधि तौ तोर लगैहै ना भागु समाधिहीलगाये रहु सो तेरो भागिबो तौ बनतई नहीं है समाधि उतरेही आवैहै याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहै हैं सुखसिंधु जे साहबहैं तिनको निहारु जिनको एकवार निहारे समाधि लगी रहैहै अर्थात् जो एकहूबार साहबके सम्मुख भयोहै सो फिरिनी संसार में बच्योहै तामेंप्रमाण ॥ (एकोपि कृष्णस्यकृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभूथेनतुल्यः ॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्ण-प्रणामीनपुनर्भवाय ॥ इति) अथवा जाके बाण लगै है सोई पीर जानै है सो जो साहब में लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानै हैं कि हमयोगमें यज्ञादिमें लगि कै नाहक जन्म गँवाये। सो कबीर जी कहै हैं कि साहबको दुर्लभजानि तैं लागु तौभागु न साहब सुखसिंधुहै तिनको तूनिहारु तौ ये सब धोखनकी पीर दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरो न गँवैगे । तामें प्रमाण ॥ “कथंचिदुपकारेणकृतेनैके नतुष्यति ॥ न संमरत्यपकाराणांशतमप्यात्मवत्तया” इतिबाल्मीकीये ॥ ६ ॥

इति अड़सठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ उनहत्तवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरै लिये गफिलाई ॥ १ ॥
महादेवको पंथ चलावै । ऐसो बड़ो महंत कहावै ॥ २ ॥
हाट बाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ॥ ३ ॥
कबदत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपची जोरी ॥ ४ ॥
कब नारदवंदूक चलाया । व्यासदेव कब बंन बजाया ॥ ५ ॥
करहिं लड़ाई मतिकेमंदाईहैं अतिथि कि तरकशवंदा ॥ ६ ॥
भयेविरक्त लोभमनठाना । सोना पहिरि लजावै वाना ॥ ७ ॥
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गांवपाय यश चलो करोरा ॥ ८ ॥

साखी ॥ तियसुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ॥
कवहुंक दाग लगावई, कारी हांडी हाथ ॥ ९ ॥

ऐसा योग न देखाभाई । भूला फिरै लिये गफिलाई ॥ १ ॥
महादेव को पंथ चलावै। ऐसो बड़ो महंत कहावै ॥ २ ॥
हाटबाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ॥ ३ ॥
कव दत्तै मावासी तोरी । कव शुकदेव तोपचीजोरी ॥ ४ ॥

श्रीकबीर जी कहैहैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहबको तो जानै नहीं हैं गाफिल हैकै भूले भूले फिरै हैं ॥ १ ॥ अरु महादेव को पंथ जो तामस शास्त्रहै सो चलावै हैं औ बड़े महंत कहावै हैं ॥ २ ॥ सबके देखावन को हाट में औ पहारन के बाट में तारी लगायकै बैठै हैं औ सिद्धकहावै हैं औ सबके देखावन को यह कहै हैं कि संन्यासीको धर्मनहीं है कि द्रव्यलेय औ हाथछुवै परंतु जो कोई चढ़ाईकै चलयै जाइहै ताको चिमटाते लैकै कमंडलुमें डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ॥ ३ ॥ दत्तात्रेय कबै मवासिनको शत्रुन को तौरचोहे औ शुकदेव कबै तोपखाना अपने साथ जोरकै चलायो है ॥ ४ ॥

कव नारद बंदूक चलाया । व्यासदेवकववंचवजाया ॥ ५ ॥
करहिलराई मतिकेमंदा । ईहैंअतिथिकितरकसबंदा ॥ ६ ॥
भये विरक्त लोभ मनठाना । सोनापहिरि लजावैबाना ॥ ७ ॥
घोराघोरी कीन्ह बटोरा । गाँवपाययशचलो करोरा ॥ ८ ॥

औ नारद मुनि कबै बंदूक चलायो है औ व्यासदेव कबै नगरादैकै काहूके ऊपर चढ़ैहैं ॥ ५ ॥ ई संन्यासी बैरागी मतिके मंद लड़ाई करै हैं ई अतिथि हैं कि, तरकस बन्दसावंतहैं ॥ ६ ॥ भये तौ विरक्त संन्यासी परंतु लोभ

कारकै रोजगार करै हैं सोना पाहिर कै बानाको लजावै हैं ॥ ७ ॥ औ
घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संगेलत भये औ काहू राजाते गांव पायो करोर-
पती है या यश चलायो बड़े जानीहैं बड़े भक्तहैं या यश चलायो ॥ ८ ॥

साखी ॥ तियसुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥

कवहुंक दाग लगावई, कारी हांडी हाथ ॥ ९ ॥

लाव लइकर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहैहैं
अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्षकी अवस्था बनीरहैहै ऐसेब्रह्माकेपुत्र
तिनहूको या मजाहोयतोकबीर जी कहैहैं कि संन्यासिनके साथमें सुन्दारीका सो-
हैहै ? नहीं सोहैहै कवहुं दाग लगावतईहै जैसे कारी हांडी हाथमें छेई तो दाग
लागिही जायहै ऐसे जिनके जिनके संगमें खीरहैहै ते पाखंडिनको दाग लगतै है
स्त्रीनते नहीं बचैहैं। नामके तोसंन्यासी बैरागीहैं अखाड़ागृहस्थी बांधेहैं तहां स्त्री
आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखंडीहैं ते माया रूपई द्वैरहेहैं तेई
मायारूपी सुन्दरी कहे स्त्रीहैं तिनको संग न करै औ जो संग करै तौ दाग लगवई
करै सो जीव ते पाखंडिनको संग न करै तामेंप्रमाण ॥ (पुंसांजटाधरणमोजवतां
वृथैव मेधांविनामखिलशौचनिराकृतानाम् । तोयपदानपितृपिण्डबहिःकृतानां संभा-
षणादपिनराः नरकंप्रयांति) ॥ इतिविष्णुपुराणे ॥ ९ ॥

इति उनहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बोलानाकासों बोलियेभाई । बोलतही सबतत्त्वनशाई॥१॥
बोलतबोलत बाहु बिकारा । सोबोलिय जोपरैबिचारा॥२॥
मिलैजोसंतबचनदुइकहिये । मिलैअसंत मौनहै रहिये॥३॥
पंडितसों बोलियहितकारी । मूरुखसों रहिये झखमारी॥४॥
कह कबीर ई अधघट बोलै । पूरा होय विचार लैबोलै॥५॥

बोलाना कासोंबोलियेभाई । बोलतही सबतत्त्वनशाई ॥ १ ॥

बोलतबोलतवाढु विकारा सोबोलियजो परैविचारा ॥ २ ॥

बैरागिनकी संन्यासिनकी दशा जैसी द्वैरही है सो पूर्वकहिआये सो ऐसे पाखंडी संसारमें द्वै रहेहैं बोलानाकासों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाई जाइहै। तत्त्वकहावैहै यथार्थ सो साहब के जे नामरूप लीला धाम यथार्थ हैं तेनशाई जाइहै कहे भूलिजाइहैं ॥ १ ॥ बोलत बोलत विकारई बाढ़ैहै ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को विचार ठीक परिजाइ कौनी तरहते सांच विचार ठीक परै सो कहै हैं ॥ २ ॥

मिलैजोसंतवचनदुइकहिये । मिलैअसंतमौनहैरहिये ॥ ३ ॥

पण्डितसोंबोलियहितकारी । मूरुखसोंरहियेझखमारी ॥ ४ ॥

जो संत मिलैतो द्वैवचन कहबऊ करिये द्वैवचन कह्योताको भाव यहैहै कि थोरई आपने प्रयोजन मात्र बोलिये औ सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये विचार बाढ़ैहै औ असंत मिलै तो मौन द्वै रहिये बोलिये न काहेते कि उनके संगते अज्ञान बाढ़ैहै ॥ ३ ॥ तेहिते पंडितसों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि पंडित जेहैं ते सारासारको विचार करिकै सार पदार्थ जे साहबह तिनको ठीक करिकै असार जोहै धोखा ब्रह्म औ माया ताको छोड़ि दियोहै वे साहबको बतावेंगे औ मूरुख सों बोलिबो झकमारीहै काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तौ अपने स्मरणकी हानिहोइ है वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तबआपही झकमारी कै रहिजाइगो पीछे क्रोध होइगो अरु मूरुख नहीं समुझैहै तामेंप्रमाण गोसाईं जीको ॥ सोरठा ॥ “फलैनफूलैबेत, यदपिसुधाबरषैजलद ॥ मूरुखहृदयनचेत, जोगुरुमिलैविरंचिसम” ॥ १ ॥ पानीकोपान भीजै तो बेधैं नहीं । त्यों मूरुखको ज्ञान बुझावै तौ सूझैनहीं ॥ ४ ॥

कहकबीरई अधवट डोलै । पूराहोय विचार लैबोलै ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जे सत्संगऊ करै हैं औ मूरुखहू सों बोलै हैं शास्त्रार्थ करे हैं औ और और मतको सिद्धांतको जानो चाहैहैं कि हमारे मत ठीकहै कि औरउमतठीकहै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परेहैं यह सिद्धांतको निश्चय नहीं है

ते अधवटजैहें और और मतवारे इनकेसमुझाये नहीं समुझै हैं। औ असंत संगकरिकै विचारकी हानिहोइहै। कहाहानिहोइहै? कि औरऊको विचारमन पर न लागैहै अपने मतमें भ्रमहोन लगैहै आपनो ठोकनहीं वह ठीकहै जैसे आधी गगरी जलसे भरीहोइ तो वाकोजल डोलैहै ऐसे साहबमें उनको ज्ञानतो पूरो नहीं ताते डोलैहै औ जो पूरा सो बीचलैकै बोलैहै और प्रश्न सुनिकै वाकोविचार लैलियो कहे समझि लियो कि यह बोलिवो अधिकारी है हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलैहै जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलै है और जल वामें नहीं अमाय है ऐसे वे तो साहबके ज्ञान म पूर हैं सो उनको ज्ञान डोलै नहीं है अरु और मतनको सिद्धांतके जे ज्ञान हैं ते उनके अंतःकरणमें नहीं समायहैं ॥ ५ ॥

इतिस तरवीरमैनी समाप्ता ।

अथ इकहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

सोगवधावासम करिमाना । ताकी वात इन्द्रनहिं जाना ॥ १ ॥
जटातोरि पहिरावै सेली । योग युक्तिकै गर्भ दुहेली ॥ २ ॥
आसन उड़ाये कौन बड़ाई । जैसे काग चील्ह मड़राई ॥ ३ ॥
जैसी भिस्त तैसि है नारी । राजपाट सब गनै उजारी ॥ ४ ॥
जैसे नरक तसचंदन माना । जसबाउर तसरहै सयाना ॥ ५ ॥
लपसी लौंग गनै यकसारा । खांडै परिहरि फांकै छारा ॥ ६ ॥
साखी ॥ यह विचार ते बहि गयो, गयो बुद्धि बल चित्त ॥
दुइ मिलि एकै है रह्यो, काहि बताऊ हित्त ॥ ७ ॥

सोगवधावासम करिमाना । ताकी वात इन्द्रनहिं जाना ॥ १ ॥
जटातोरि पहिरावै सेली । योग युक्तिकै गर्भ दुहेली ॥ २ ॥

आसन उड़ाये कौन बड़ाई । जैसे कागचील्हमड़ाई ॥ ३ ॥
जैसीभिस्ति तैसि है नारी । राजपाटसवगनै उजारी ॥ ४ ॥

औरै पदको अर्थ स्पष्ट है १।२।३ । अब फिरि साहब के जनैयनको कहैहैं कि भिस्तिकहे स्वर्गको मानैहै तैसेनारीकहे दोजख को मानैहैं अरबीकी कि तावनमें भिस्तिकों जिनत औ दोजखको नारी अर्थके सम्बन्धते बहुत जगह कह्योहै अथवा नारकहे अगि सोजामें होय ताको नारीकहैहैं अर्थात् नरक और भिस्ति पाठहोय तोजैसे भिस्तिकहे देवालको मानैहैं तैसे नारीको मानैहैं और राजपाट जोहै जगत ताको उजारई गनैहैं कि संसार हई नहींहै चित अचितरूप साहबईके हैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण ॥ “नरक स्वर्ग अपबर्ग समाना । नहूँ तहूँ देखि धरे धनु बाना” ॥ ४ ॥

जैसे नरकतसचंदनमाना । जसबाउर तसरहैसयाना ॥ ५ ॥
लपसीलौंगगनै यकसारा । खांडै परिहरिफांकैछारा ॥ ६ ॥

जैसे नरककहे विष्ठाको तैसे चन्दनको मानैहैं औ हैंतौ सयान कहे साहब को जानैहैं परन्तु रहतबहुत बाउरही के तरहहैं ॥ ५ ॥ औ जे साहबको नहीं जानैहैं आपहीको ब्रह्म मानैहैं तिनकोकहैहैं लपसी लौंगको एकई मानैहैं खांड छोड़िके छारको फांकैहैं अर्थात् ताहूको एकही गनैहैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानैहैं जो कहो समान दृष्टि करतईहैं साहबके गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपहीको ब्रह्म मानैहैं औ खांड परिहरिके छार फांकैहैं ताको भाव यहैहै खांड साहबजे मिठाई ताके देनेवारे तिनको छांडि के छारफांकै हैं जामें सारकछुनहीं है अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करैहैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ यहिविचारते बहिगयो, गयीबुद्धिवलचित्त ॥

दुड़मिलि एकै है रह्यो, मैं काहिवताऊंहित्त ॥ ७ ॥

श्रीकबीरजी कहैहै बिचारतबुद्धिको बलजोहै निश्चयकरिकै अहंब्रह्म मानिं सो येहू जातरह्यो औ चित्तजोहै सोऊ जातरह्यो मनोनाश बासना क्षय हैगई कछु बासना न रह्यई दुड़ जैहैंब्रह्म औ जीव ते मिलिकै एकही है रहे जैसे

जल मिलिकै एकै ह्वै जायहै । हितुवा वहकहावै है । जो रक्षा करै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्म में लीनहोइ पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलै आवै है तब तो दूसरो यह मानतै नहीं है मैं काको हितुवां बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ औ जोसाहब हितुवामानै रक्षकमानै तौ साहब याको हंसस्वरूप दैकै आपनै पास बोलाइलेइ इहांमायाकीगति नहीं है ता पुनिधरिके जीवको संसारी कैसे करै है? ॥७॥

इति इकहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई ॥ १ ॥
गोड़ न मूड़ न प्राणअधारा । तामें भरमि रहा संसारा ॥२॥
दिना सातलौं वाकी सही । बुधअधबुधअचरजयककही ॥३॥
वाहिकिवन्दनकरसवकोई । बुधअधबुधअचरजबड़होई ॥४॥

एक नारि जो यह मायाहै सो संसार में आवतभई न वाके महितारी है आनै वह बापते उत्पन्नहै अर्थात् अनादिहै ॥ १ ॥ अरु न वाके गोड़हैं न मूड़हैं न प्राणहैं न आधारहै अर्थात् निराकारहै भर्मइहै ताहीमें संसार भरमिरह्यो है ॥२॥ औ सातो जे बारहैं दिन तिनमें वही मायाकी सहीहै अर्थात् कालमें वही अमिसीहै औ सातोंबार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारोंओर बिस्तारहै बुधजाहै पण्डित निर्गुणवारे जे सारासारकेबिचारकारिकै आपहीको ब्रह्ममानेहैं औ अधबुधजेहैं अधपण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनोंमें आश्चर्य्य जोहै माया ताको एक कहैहैं दूनोंमें यह माया बरोबारि व्याप्तहै ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह बड़ो आश्चर्य्यहै तौ कछुनहींहै औ वही मायाकी बन्दना निर्गुण-सगुणवारे दोऊकरैहैं जो मन बचनमें आवैहै सोमायाहीहै ॥ ४ ॥

इति बहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ।

गुरुमुखचौपाई ।

चलीजातिदेखोयकनारी । तरगागरिऊपरपनिहारी ॥ १ ॥

चलीजातिवहवाटैबाटा । सोवनहारकेऊपरखाटा ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदीसौरी । खसमनचीन्हैघरणिभैवौरी ॥ ३ ॥

सांझसकारदियालैवारै । खसमछोड़िसुमिरैलगवारै ॥ ४ ॥

वाहिके सङ्गमें निशिदिनराँची । पिय सों वात कहैनाहिँसाँची

सोवत छाड़िचली पिय अपना।ईदुखअवधौंकहौंक्यहिसना

साखी ॥ अपनीजाँघ उधारिकै, अपनी कही न जाय ॥

की जानै चित आपना, की मेरोजन गाय ॥७॥

चलीजातिदेखीयकनारी । तरगागरिऊपरपनिहारी ॥ १ ॥

चलीजात वहवाटैबाटा । सोवनहार के ऊपर खाटा ॥ २ ॥

सुरतिरूपी जोनारी सोईहै दूतीताकोहम चलीजातदेखाहैहृदयजोगगरी है सो

तेरेहै औसुरति उठीसाऊपर सुधासरोवर में जल भरनको गई शीशमें पहुँची ॥

वह सुरति जबचलैहै तब षटचक्र बेधिकै राहराह जायहै काहेतेकि नाभीमें

मणिपूरक चक्रहै तामें शीशदिये नागिनी बैठीहै सोई षटकोहे पलँगहै सो ऊपरहै

ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सोरहैहै तहांते सुरतिउठैहै तहां ज्वाला साथ

नागिनी उठावै ताही साथ प्राणजायहै ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदी सौरी । खसमनचीन्हैघरणिभैवौरी ॥३॥

सांझसकार दियालैवारै । खसमछोड़िसुमिरै लगवारै॥४॥

सुपेदी कहे रजाई जोहै यह शरीर सों जाड़नमरै है अर्थात् शीत उष्ण

वहीको लगेहै सौरीकहै सुपेदीको सुमिरणकरिकैजाड़नमरैहै अर्थात् जबलग देहा-

भिमानहै तबलग शीतउष्णहैआत्माको नहीं लगैहै साहब कहैंहैं । कि वह जोहै आत्मामेरी वरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरीशक्ति सो मैं जो हौं याको खसमताको नहीं चीन्हैहै त्यहिते बौरीकहे बौरायगई ॥ ३ ॥ साँझ सकार दियाछैअरैहै कहे समाधिलगायकै ज्योतिको बारिकै कुंडलिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वही ज्योतिमें मिलाये है औ याको मैं खसमहौं सो मोको छोड़िकै लगवार जोहै धोखा ब्रह्म ताको सुमिरै है ॥ ४ ॥

वाहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची । पियसोंवातकहैनहिंसाँची ५
सोवतछाँड़िचलीपियअपना । ईदुखअवधौंकहवक्यहिसना

सुरतिरूपी नारीजो है दूती ताहीके साथहैकै वहीधोखा ब्रह्म में निशिदिन रचिरही है कहे प्रीतिकारिरही है पियजोमेंहौं तासों सांचीवात नहींकहैहै सांची वात कहाहै कि मैं तिहारोहौं यहजो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्तिको छोड़ाइलेऊँ साहबकी यह प्रतिज्ञा है जो मोको जानै मोकोगोहरावै तौमेंसंसारते छुड़ाइलेऊँ तामें प्रमाण॥ “अबहूँलेऊँ छुड़ाय काल ते जोवटसुरति सम्हारै” ॥५॥ सो जीवरूपाशक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहि गई जागत न भई सोवतमें मोकोछोड़ि स्वप्न देखनबाली संसारीहैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्राप्तभई तब संसार में परि कै नाना दुःखपावैहै सो यहदुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तौ जानै नहीं है अरु और सब स्वप्नते झूठे हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ अपनीजाँघटघारिकै, अपनी कही न जाइ ॥

कीजानै चितआपना, कीमेरोजनगाइ ॥ ७ ॥

साहब कहै हैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपाशक्ति मोकोछोड़ि कै संसारीहै गई सो अपनीजाँघा जो उचारिहोइ तौ कोई कहां अपनोगिल्ला करै है नहीं करैहै ऐसे मेरी शक्ति यह जीव सो जो और और लगवार जोहैं सो यह दुःख का मोसों कहिजाइहै नहीं कहिजाइहै कि तो मेरोदिल जानैहै याको उद्धार है जाइ याही चाहैहौं औ कि मेरेजन जेहैं ते मेरो सौशील्य दया बात्सल्यादिक गुणगान करिकै जानै हैं कि साहबमें निर्दह सौशील्यादिक गुणहैं जीवको उद्धार

चाहै हैं और तो अज्ञानी जीव अपनो भूल न जानेंगे याही जानेंगे कि जोसाहब सबको मालिकहै सब करिवेको समर्थहै ताकी जो इच्छा होती तौ हमसब जीवके बंध ते तामेंप्रमाण॥ “सोपरंतु दुखपावत शिर धुनिधुनिपछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्यादोष लगाय” ॥ ७ ॥

इति तिहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

तहिया गुप्त थूलनहिं काया। ताके सोग न ताके माया॥ १॥
 कमल पत्र तरंग यकमाहीं। सङ्गहिरहै लिप्त पै नाहीं ॥ २॥
 आश ओस अंडनमहँ रहई। अगणित अंड न कोईकहई॥ ३॥
 निराधार आधार लैजानी । रामनाम लैउचरी वानी॥ ४॥
 धर्मकहै सब पानी अहई । जातीके मन वानी रहई॥ ५ ॥
 ढोर पतंग सैरै घरिआरा। तेहि पानी सब करै अचारा॥ ६॥
 फंद छोड़ि जो बाहर होई । बहुरि पंथनहिं जोहै सोई ॥ ७॥
 साखी ॥ भर्मक बांधल ईजगत, कोइ न किया विचार ॥
 हरिकि भक्तिजानेविना, भवबूढ़ि मुवासंसार॥ ८॥

तहिया गुप्त थूलनहिं काया । ताके सोग न ताके माया ॥ १ ॥
 कमल पत्र तरंग यक माहीं । संगहिरहै लिप्त पै नाहीं ॥ २ ॥
 आश ओस अंडनमहँ रहई । अगणित अंडन कोईकहई ॥ ३ ॥
 निराधार आधार लैजानी । रामनाम लैउचरी वानी ॥ ४ ॥

जबजीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो औ गुप्तकहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहे हैं औ न तेहिजीवके सोगरह्यो औ न मायारही है ॥ १ ॥ जैसे कमल पत्रमें जल रहै है पै कमलपत्र म लित नहीं रहै है तैसे यह आत्मामें माया ब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं । परन्तु माया ब्रह्ममें आत्मालित न रह्यो ॥ २ ॥ ब्रह्महैवेकी जो आशा है साईपियास है सो ओसचाटे कहूं पियास जाई है ओसके समजो है ब्रह्मानंद सो जीवरूपजे हैं अंड तिनमें रहै है अर्थात् कारणरूपते जीवमें बनो रहै है जब समष्टिजीवरह्यो है तब रहेतौ अगणित हैं अंड परंतु सब मिलि एकई कहावत रह्यो है अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ॥ ३ ॥ निराधार जो निराकार ब्रह्म है जामें सबजीव भरे हैं ताको बाधारलै जानिये कि साहबके लोक में है अर्थात् साहबके लोकको प्रकाश है तबतो समष्टिरही याही रामनाम लैकै बाणी उचरी कहे प्रकट भई इहां रामनाम लैकै बाणी प्रमट भई ताको हेतु यहै है कि बाणीमें जगत् प्रगट करिबेकी शक्ति नहीं रही रामनामको जगत् मुख अथ लैकै बाणी उचरी है पांचो ब्रह्म समत जगत् उत्पत्तिकियो है सोई इहां सिद्धांत करै है ॥ ४ ॥

धर्म कहै सब पानी अहई । जातीके मन बानी रहई ॥ ५ ॥
 ढोरपतंग सरै घरि आरा । तेहि पानी सब करै अचारा ॥ ६ ॥
 फन्द छोड़ि जो बाहर होई । बहुरि पन्थ नहिं जो है सोई ॥ ७ ॥

वेदशास्त्रमें आत्माको धर्म कहै हैं कि आत्माचित है याते चित धर्म है जैसे जलमें जल मिलै तो एकई हो जाई है ऐसे चिन्मात्र जो ब्रह्म है तामें मिलि कै चित्त-जो है जीव सो एकई द्वै जाय काहेते कि दुहुनको चितधर्म एकई है औ जाती कहे सब जाति जे जीव हैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हैं हैं कि मैं साहबको अंश हौं जाति करि कै वही हौं कछु स्वरूप करके नहीं हौं भेद बनोई है बह सर्वज्ञ है मैं अल्पज्ञ हौं वह बिभु है मैं अणु हौं वह स्वतंत्र है मैं परतंत्र हौं यह जो कहै हैं कि आत्मा ब्रह्म है सोतौ बाणीको विस्तार है सामान्य धर्म लैकै कहै हैं ॥ ५ ॥ ढोर पतंग घरि आर आदिक जामें सरै हैं ताही जलमें सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी-

बाणी में सब मरि मरि समाइ है और पुनि वहीते उत्पात्ति होइहै औ जौन
सबजीवको फंदायेहै तौनाही बाणीमें कहे सब आचारकरैहैं अथवा वही बाणीको
आचरणकरै है आपनेको ब्रह्ममौनैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ॥ ६ ॥ यह
बाणीके फंदते बाहरहैके परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें जो लगै तो पुनि
जगत्के पन्थको न जोहै अर्थात् फिर न जगत्में आवै ॥ ७ ॥

साखी ॥ भर्मकवांधलईजगत, कोइनहिंकियाविचार ॥

हरिकिभक्तिजानेबिना, भवबूढ़िमुवासंसार ॥८॥

यहि भांति भर्म जोमाया सबलित ब्रह्म त्योहिकरिकैबँध्यो जो यह संसारहै
ताको कोई नहीं विचार कियो हरि कहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्यार्थ
जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्ति के बिनाजाने भर्मके समुद्रमें संसार बूढ़ि मुवा
कहे संसारीजीव बूढ़ि मुयो ॥ ८ ॥

इति चौहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

तेहिसाहवके लागोसाथा । दुइ दुखमेटिकै होहुसनाथा ॥१॥
दशस्थकुलअवतरिनहिंआया । नहिंलंकाकेरायसताया ॥२॥
नहिं देवकिक गर्भहिआया । नहींयशोदा गोद खेलाया ॥३॥
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया । पैठिपतालनहींवलिछलिया ४
नहिंवलिरायसोमांड़ीरारी । नहिंहिरणाकुशवधलपछारी ५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया । क्षत्रीमारि निक्षत्रनकरिया ॥६॥
नहिंगोवर्द्धनकरतेधरिया । नहींग्वालसँगवनवनफिरिया ७
गण्डकशालग्रामनशीला । मत्स्यकच्छहैनहिंजलहीला ॥८॥
द्रावती शरीर न छांडालै जगनाथ पिंड नहिं गाड़ा ॥९॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वा पन्थे मतभूल ॥

जेहिराखे अनुमानकरि, सो थूलनहीं स्थूल ॥ १० ॥

तेहिसाहबकेलागोसाथा । दुइदुखमेटिकैहोहुसनाथा ॥ १ ॥

जिनको पूर्व कहि आयेहैं ते हरि कहे रक्षक मन वचनके परे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र है तिनके साथमें लागो दूनों जे दुःख हैं निर्गुण और सगुण । तनका मेटिकै सनाथ होउकहे नाथ जे साहबहैं तिनते सहित वह साहब कै-
सोहै कि धोखाब्रह्महै नहीं है औ कौन्यो अवतारमें नहीं है अर्थात् निर्गुण सगु-
णके परे हित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्महै नहीं है औ कौन्यो अवतार
में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परे है कबहूँ जब कौन्योकल्प में बाणनके
युद्धकी इच्छा होइहै तब आपही प्रकट हैकै प्रतापी नामको रावणहोइहै तासों
बाणनको युद्ध करैहै औ फिर शरीर सहित को चले जाइहै औ बहुधा जे अव-
तार होइहैं ते नारायण अवतार लेइहैं ॥ १ ॥

दशरथकुलअवतारिनहिआया । नहिंलङ्काकेरायसताया ॥ २ ॥

नहिंदेवकिकेगर्भहिआया । नहीयशोदागोदखेलाया ॥ ३ ॥

पृथ्वीरमनदमननहिकरिया । पैठिपतालनहीवल्लिछलिया ४

श्रीकबीर जी कहे हैं कि, वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दश-
रथ के इहां अवतार नहीं लियो दशरथ के इहां अवतारलै नारायण रावणको
मारै हैं ॥ २ ॥ अरु वे साहब देवकी के गर्भ में नहीं आयो अरु वाको
यशोदा गोदमें नहीं खेलायो ॥ ३ ॥ अरु वे साहब पृथ्वी रमण है कै म्ले-
च्छनको दमन अर्थात् बामन रूप नहीं धरयो ॥ ४ ॥

नहिंवलिरायसोंमाड़ीरारी । नहिंहिरणाकुशवधलपछारी ५ ॥

बराहरूपधरणीनहिंधरिया । क्षत्रीमारिनिक्षत्रनकरिया ॥ ६ ॥

नहिंगोवर्द्धनकरगहिंधरिया । नहिंग्वालसँगवनवनफिरिया ७

अरु वे साहब बलिरायसों रारि नहींमांड्यो कहे मोहनीअवतारलै देवतनको
अमृत पिआय दैत्यनको बारुणीपिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूप है

नहीं मारचो औ हिरण्यकश्यप को पछारिकै नहीं बाध्यों कहेनहीं बध्यों अर्थात् नृसिंह रूप नहीं धरचो ॥ ५ ॥ अरु वे साहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहीं धरचो औ क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुरामकों अवतार नहीं लियो ॥ ६ ॥ अरु वे साहब करते गोवर्द्धनको नहीं धरचो अर्थात् गोविंदरूप नहीं धरचो औ न ग्वालके सङ्ग बन बनमें फिरचो है याते हलधर रूपनहीं धरचो ॥ ७ ॥

गंडकशालग्रामनशीला । मत्स्यकच्छहैनहिंजलहीला ॥ ८ ॥
 द्वावतीशरीरनछाड़ा । लैजगन्नाथण्डिनहिंगाड़ा ॥ ९ ॥

अरु वे साहब गण्डक म शालग्राम का शिला नहीं भये औ न मत्स्य कच्छ ह्वैके जलमें परे हैं ॥ ८ ॥ अरु वे साहब द्वावती में शरीर नहीं छोड़ो है अर्थात् कालस्वरूप नहीं धारण कियो जौनजौन फिरि द्वावताम छोड्यो है औ जगन्नाथ के उदर म ब्रह्म जो इधा में तेनराख्यो है सो वे साहब को तेज नहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायण हैं औ सब अवतार हैं ते बे नहीं हैं ॥ ९ ॥

साखी ॥ कहँहिकबीर पुकारिकै, वा पंथेमति भूल ॥

ज्यहिराखे अनुमानकरि, सो थूलनहीं अस्थूल ॥ १० ॥

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि, वा पंथेमतिभूलकहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमानकरि कहे अनुमानकरि राख्यो है ब्रह्मको सोऊ वे साहब नहीं हैं औ स्थूलनहीं स्थूलकहे न थूलहोइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं है ताते सगुण निर्गुण साकार निकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथके इहां नारायण अवतारलेइ हैं तिनको रामनाम होइ है तिनहीं रामरूपते सगुण निर्गुणके परे हैं ॥ १० ॥

इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छिहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

मायामोह कठिनसंसार । यहैबिचार न काहु विचारा ॥ १ ॥

मायामोह कठिनहै फंदा । होय विवेकी सो जन बंदा ॥ २ ॥

रामनाम लै बेराधारा । सो तैं लै संसारहि पारा ॥ ३ ॥

साखी ॥ रामनाम अति दुर्लभै अवरे से नहिकाम ॥

आदि अंत औ युगयुगै रामहिते संग्राम ॥ ४ ॥

मायामोह कठिनसंसार । यहै बिचारनकाहुबिचारा ॥ १ ॥

मायामोह रूपते संसारको देखै है कहे नानापदार्थ भिन्नदेखै है याहितें संसार कठिन है यामें व्यङ्ग यह है कि, जो संसारको भगवत्चिदचिद् विग्रहरूप करिके देखै तो संसार उतरिजायबे को सरलै है सो यह बिचार कोई न विचारय ॥ १ ॥

मायामोह कठिनहै फंदा । होय विवेकी सो जनबंदा ॥ २ ॥

अरु कह संसारमें मायामोहरूप कठिन फंदा है जो संसारमें सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत्चिदचिद् विग्रहरूप देखै औ बिवेकी होइ सोई जन साहबको बन्दा है ॥ २ ॥

राम नामलै बेरा धारा । सो तैं लै संसारहि पारा ॥ ३ ॥

औ रामनाम जो है बेरा ताको आधारलैकै जो कोई साहबको जान्यो है ताको उबार द्वैगयो है सो तैंहूं रामनामजोहै बेरा ताको आधारलै कहे रामनाममें आरुढ़हो साहबको जानु तौ तैं संसार समुद्रको पार द्वैजाय ॥ ३ ॥

साखी ॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरेसे नहिं काम ॥

आदि अंत औ युग युगै, रामहिते संग्राम ॥ ४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह रामनाम अतिदुलभहै मोकोऔरे से काम नहीं

है आदि अन्तमें औ युगयुगमें मोसों रामैते संग्राम कहाहै किं शास्त्रार्थ करिकै
रामनाम में जो जगतमुख अर्थहै ताकोखण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहब
मुख अर्थ ताकोग्रहणकरौहैं अर्थात् जबजगतकी उत्पत्ति नहीं भईहै तब औ
युगयुगन में कोहे मध्यमें अन्तम कोहे जब मुक्तहैगयो तबहूं रामनामहीते संग्रा-
मकियो है अर्थात् रामनामको विचार करत रहौहैं ॥ ४ ॥

इति छिहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सतहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

एकैकाल सकल संसारा । एकै नामहै जगत पियारा ॥१॥
तियापुरुषकछुकथो न जाई । सर्वरूप जग रहा समाई ॥२॥
रूपअरूपजाय नहिंवोली । हलुकागरुआजाय न तोली ॥३॥
भूखनतृषाधूप नहिंछाहीं । दुखसुखरहित रहैत्यहिमाहीं ॥४॥
साखी ॥ अपरम परम रूपमगुरंगी, नहिंत्यहि संख्याआहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ॥५॥

एकै काल सकल संसारा । एकै नामहै जगतपियारा ॥ १ ॥

एक जोहै लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जोब्राह्मण मानिलेइहै
सोई माया सबलित द्वैबोहै सोई काल सकल संसारमें है सो जगत् को पियार
एक जोहै रामनाम ताको बिनाजाने याही ते जन्ममरण होइहै ॥ १ ॥

तियापुरुषकछुकथौनजाई । सर्वरूप जग रहा समाई ॥२॥
रूपअरूपजायनहिंवोली । हलुकागरुआजायनतोली ॥३॥
भूखनतृषाधूपनहिंछाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ॥४॥

वह माया सबलित ब्रह्मको स्त्री न कहिसकै न पुरुषकहिसकै सर्वरूप द्वैकै
संसार में समाइ रह्यो है ॥२॥ वाको न रूप कहिसकै औ न वह हलका गरुआ

तौलि जाइहै कि हलुकै गरुहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु-
होइ तोकहिजाइ औतोलि जाइ ॥३॥ जौनेलोकमें न भूखह न तृषाहै न धूपहै
न छाहीं है न दुःखहै न सुखहै तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्मरहैहै ॥४॥

**साखी ॥ अपरमपरमरूपमगुरंगी, नहिंतेहिसंख्याआहि ॥
कहाहिकवीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ॥५॥**

वह साहबको लोक परमरूपहै ताको प्रकाश जो है वह ब्रह्म सो परमपुरुष
है कहे परम नहीं है तौनेको आपनेहीको मानिबो जो है कि वह ब्रह्महमहीं हैं
सो धोखाहै तौनेके मगमरगे जीवहैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रका-
शमें भरेरहे जे समष्टि जीवह ते व्याष्ट द्वगये हैं तिनकी संख्या नहीं है सो
कवीर जी पुकारिकै कहै हैं कि आपही कल्पना करिकै वह प्रकाश रूप ब्रह्म
कोमान्यो कि वह ब्रह्मनहीं सो वह तो लोफप्रकाशहै हे जीव! वहप्रकाशब्रह्म नहीं
हैसकैहै यही धोखाम जीव बड़ो जाइ है यह बड़ो आश्चर्य है औ जोयह
पाठहोइ ॥ अपरमपरै परमगुरु ज्ञानरूप बहुआहि ॥ तौ यह अर्थ है अपरम
जोहै प्रकाशरूप ब्रह्म ताहू के पोरजोहै परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्महै
ताको परमश्रेष्ठकहेमालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको न जान्यो वहजो
है प्रकाशब्रह्म ताको जोज्ञान कियो कि ब्रह्ममहीं वहै जो है धोखा ब्रह्म तेहिते
बहुआहि कहे जीव बहुत द्वैगये काहेते कि ज्ञानबहुतहै ज्ञानीज्ञान करिकै ब्रह्म
मानै हैं औ योगी जेहैं ते ज्योतिरूप में आत्माको मिलाइकै ब्रह्म मानै हैं
इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्यमानै हैं औ और सगुण उपासनावारे कोई
चतुर्भुज कोई अष्टभुज कोई देवी कोई गणेश कोई सूर्य इत्यादिकनमें ऐक्य-
मानै हैं ज्ञानकरिकै तेहिते ज्ञाननाना हैं औ साहब तो मनबचनके परे वह लोक
में एकही बनो है ॥ ५ ॥

अथ अठहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

मानुष मन्म चूकेजगमाझी । यहितनकेर बहुतहैं साझी ॥ १ ॥
 तातजननिकहै हमरोवाला । स्वारथलागि कीन्हप्रतिपालार
 कामिनिकहै मोर पिय आही । बाधिनिरूप गरासै चाही ॥ ३ ॥
 पुत्र कलत्र रहैं लवलाये । जंबुक नाई रह मुँहवाये ॥ ४ ॥
 काकगीध दोउ मरण विचारैं । शूकरश्वान दोउ पंथनिहारैं ॥ ५ ॥
 धरती कहै मोहिं मिलिजाई । पवन कहै मैं लेख उड़ाई ॥ ६ ॥
 अग्नि कहै मैं ई तन जारों । सो न कहै जो जरत उबारों ॥ ७ ॥
 ज्यहि घर को घरकहै गवारे । सो बैरी है गले तुझारे ॥ ८ ॥
 सो तन तुम आपनकैजानी । विषयस्वरूप भुले अज्ञानी ॥ ९ ॥
 साखी ॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुखपाय ॥
 चेतत नाहीं वावरे, मोर मोर गोहराय ॥ १० ॥

मानुष जन्म चुकेजगमाझी । यहितनकेरबहुतहसाझी ॥ १ ॥
 तातजननिकहैहमरोवाला । स्वारथलागिकीन्हप्रतिपालार
 कामिनिकहैमोरपियआही । बाधिनिरूपगरासैचाही ॥ ३ ॥

हे जीव ! तैं मानुष जन्मजगत्के बीच में पायक चुकिगयो साहब को भजन
 न कियो या तनके साझिया बहुत हैं ॥ १ ॥ औमाता पिता कहै हैं हमारों
 पुत्रह आपने अर्थ में लगिकै प्रतिपालकरै है ॥ २ ॥ औ कामिनि जो परस्त्री
 है सो कहै है हमारो बड़ो प्यारो पति है बाधिनिरूप रति समय में गरासि-
 बोई चाहै है अथवा वाके संगते मूढ़ह काटो जायहै ॥ ३ ॥

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये । जम्बुकनाई रहमुहबाये ॥ ४ ॥
 कागगीधदोउमरणविचारै । शूकरइवानदोउपंथनिहारै ॥ ५ ॥
 धरतीकहै मोहिंमिलि जाई । पवन कहै मैलेव उड़ाई ॥ ६ ॥
 अगिनिकहै मै ईतन जारों । सोनकहै जोजरतउवारों ॥ ७ ॥

पुत्र कलत्र जो घरकी स्त्री को लालच लगाये रहैं हैं धनलेवे की औ बाको
 उनकी चिंता म मांससुखान जात है जैसे सियार मांस खावेको मुंहफारे रहै है
 तैसे वोऊहैं ॥ ४ ॥ औकाग जेहैं गीधजे हैं शूकर जेहैं इवान जेहैं ते मरनको पंथ
 तेरो निहारै हैं या विचारै हैं कि जो मरै तौ हम मांसखायँ ॥ ५ ॥ औधरती कहै है
 कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाक मैं उड़ाय लैजाउँ ॥ ६ ॥ औ
 अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते
 जरत में उबार होइ बचिजाय ॥ ७ ॥

जेहिघरको घरकहै गवारे । सो बैरी है गले तुझारे ॥ ८ ॥
 सोतनतुमआपन कै जानी विषयस्वरूपभुलेअज्ञानी ॥ ९ ॥
 साखी । यतने तनके साझिया, जन्मो भरिदुखपाय ॥
 चेतत नाहीं बावरे मोर, मोर गोहराय ॥ १० ॥

जेहि घरको शरीरको तू कहै है कि मेरो है सोघरशरीर तेरेगले की बैरीकहै
 फांसीहै अथवा बैरी है यमके यहां गलाकटावेगें ॥ ८ ॥ हे अज्ञानी ! तौनेशरीरको
 तू आपनो मानिकै विषयनमें परिकैभूलि गयो है ॥ ९ ॥ सो यतने जेतने कहिआये
 ते यहि तनके साझी हैं तिन तेजन्म भरि तैं दुःखपायकै हेबावरे ! कहे मूढ़
 मोरमोर तैं गोहरावै है कि यातनमेरो है अजहूं चेतनहीं करै है कि यातनैमोकां
 फांसेहै ॥ १० ॥

अथ उन्नासिर्वीं रमैनी ।

चौपाई ।

बढ़वतवाढ़ि घटावत छोटी । परखतखर परखावतखोटी १
 केतिक कहाँ कहाँलों कही । औरौ कहाँ परै जो सही ॥२॥
 कहे बिनामोहिं रहो न जाई । बेरहिलैलै कूकुर खाई ॥ ३॥
 साखी ॥ खातै खातै युगगया, अजहुं न चेतो जाय ॥

कहाँहि कबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ॥ ४॥

बढ़वतवाढ़िघटावतछोटी।परखतखरपरखावतखोटी ॥१॥
 केतिककहाँ कहाँलों कही । औरौ कहाँ परै जो सही ॥२॥
 कहे बिना मोहिं रहो न जाई । बेरहिलैलै कूकुरखाई ॥३॥

यह माया को प्रपंच जोहै सो बढ़ावत जाइतो बढ़तई जाय है रंकते इन्द्रहू
 द्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जायहै औ जो घटावैलगै तो घटिही जाइहै औ नाना-
 मतमें लगिं मनमुखी बिचारैहै तब तो खर कहे सांचैहै औ जब काहू साधुते
 परखायो तब झूठहीहै जायहै ॥ १ ॥ औमैं केतिको बातकह्यो परन्तु पाथरकै-
 सो पानी बहि जाइहै बेधै तौ हईनहीं है मैं कहाँलों कहाँ औ औरऊ कहाँ जो
 सहीपरै कहे जो तोको सांच जानिपरै ॥२॥ हे जीवातेरे ये दुःखदेखिकै मोको
 दयाहोइहै ताते बिनाकहे मोसों नहीं रहिजाइहै जौने बेरा रामनाम संसार सागर-
 के उतरिवे को मैं बताइदेउँहैं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग
 ते खाई जाइहै कहे मेरोकहो तामें नहीं लगन देइहैं औरे औरे मतमें लगाइ
 देइहैं जो यहपाठ होई “बिरहिनि लैलैकूकुर खाइ” तौ यह अर्थ है कि बिरहिन
 जेलोगहैं जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिनको गुरुवालोग खाइ जाइहैं अथवा
 बीर जे साहबहैं तिनते हीनजे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ॥ ३ ॥

साखी ॥ खाते खाते युगगया, अजहुं न चेतो जाय ॥

कहाँहि कबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ॥ ४ ॥

सो कबरिनी पुकारिकै कहैहैं कि खातखात केतन्यो युग बीति गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटैहैं अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नही चेतकरैहैं सो यहजीव अचेतै कहे बिना साहब के चेतकिये अर्थात् बिना साहबके ज्ञाने नरक-को चलो जाइहै ॥ ४ ॥

इति उन्नासिर्वी रमैनी समाप्ता ।

अथ असिर्वी रमैनी ।

चौपाई ।

बहुतकसाहसकरिजियअपना । सोसाहेवसों भेटनसपना १
खराखोट जिननहिंपरखाया । चहतलाभसोंमूर गमाया २
समुझिनपरै पातरी मोटी । आछीगाढ़ी सब भो खोटी॥३॥
कहँहिकवीरकेहिदेहौंखोरी । जबचलिहौं झिनआशातोरी॥४॥

बहुतकसाहसकरिजियअपना।सोसाहेवसोंभेटनसपना॥१॥
खराखोटजिननहिंपरखाया।चहतलाभसोंमूरगमाया ॥२॥

हे जीव ! आपही ते तुम ज्ञानयोग वैराग्य तपस्यामें साहसकरिकै बहुतक्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहींहै जौन छड़ावन वारोहै॥१॥
जिनजीव गुरुवा लोगनकेसमुझाये नानामतमें लागि कहूं सांच साधूते खराखोट नहीं परखाये तेजीव चाहत तो मुक्तिको लाभहैं परन्तु जिनसुकर्मनते अंतःकरण शुद्धिद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो ॥ २ ॥
समुझि न परैपातरीमोटी । आछीगाढ़ी सबभो खोटी॥३॥
कहकवीरकेहिदेहौंखोरी । जबचलिहौंझिनआशातोरी॥४॥

सोजिन मूरगमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटीकहे बिभुनहीं समुझि परै है काहेते ओछी जामतिहै तामें निश्चयरूप गांठी नहीं परैहै कि यतनोई

विचारहै नेति नेति कहैहै याते सब खोटही द्वैगयो ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं
सांचो जो है साहव रक्षकताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि
हमब्रह्म द्वै जायँ तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीनहोउगे फिरि संसार परोगे तब काको
खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्महौ ॥ ४ ॥

इति असिर्वीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इक्यासिर्वीं रमैनी ।

चौपाई ।

देवचरित्र सुनौ रे भाई । सो तो ब्रह्मा धिया नशाई ॥१॥
ऊजेसुनी मँदोदरि तारा।ज्यहिघर जेठ सदा लगवारा॥२॥
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया।सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया३
कह कबीर हरिके गुणगाया । कुंतीकर्ण कुंवारेहि जाया ४

देवचरित्र सुनौरे भाई । सोतो ब्रह्माधिया नशाई ॥ १ ॥
ऊजेसुनीमँदोदरि तारा । ज्यहिघर जेठसदा लगवारा ॥२॥

बड़ेबड़े जीव मायामें परिकै भूलिगयेहैं छोटे जीवनको कहा कहियेहे भाइउ!
देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग भूलि गये ॥ १ ॥ ऊजे मन्दोदरी
तारामैंहैं तिनके घरमेंजेठही लगवारहोत आयोहै जो कहो सुग्रीव बिभीषणको
कहतेहौ तौ तिनके घर न कहते तिनके कहते औ ई लहुरे हैं वेजेठकहै हैं सो
ब्रह्माके हवाले कह्यो ब्रह्माके पुत्र आपुसैंमें काज करतभये सो पुलस्त्य जेठ हैं
ते लहुरे भाईकी कन्याको बिवाहे या मन्दोदरीके घरको हवाल भयो औ
ऋक्षराजस्त्री भये तिन्हैं सूर्य औ इन्द्रगहे तिनते सुग्रीव औ वालिभये सो प्रथम
सूर्य ग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई औ सूर्यते जेठइन्द्रहैं तेऊपीछे ग्रहणकियो
ताराके घरको हवाल भयो सो तारा मन्दोदरीके घर जेठही लगवार होत आयो
है जो लहुर पाठहोइ तौ सुग्रीव बिभीषण बनेहैं सो यहां नहीं है ॥ २ ॥

सुरपतिजाइअहल्याछालिया। सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया ३
कहकवीरहरिके गुणगाया । कुंतीकर्णकुवारेहिजाया ॥४॥

सुरपतिअहल्याको गमनकरतभयो औ सुरगुरु जे बृहस्पति हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ॥ ३ ॥ औ कुन्ती जो हैं सो कुंवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या डौलके हैं जो नीचहू नहीं करै है परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावतभये ताते इनहूकी सज्जनहीं में गिनती भई ऐसहुमें हरिरक्षाकैलियो सो हे जीव ! तैं केता अपराध कियो ॥ ४ ॥

इति इक्यासिर्वी रमैनी समाप्ता ।

अथ बयासिर्वी रमैनी ।

चौपाई ।

सुखकबृक्षयकजक्तउपाया । समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्री पत्री युग चारी । फल द्वै पापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनंतकछुवर्णिनजाहीं । कर चरित्र सो तेही माहीं ३
नटवरसाजसाजिया साजी । सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा वपुरा युक्ति न देखा । शिवशक्तीविरंचिनहिंपेखा ५
साखी ॥ परदेपरदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥

जो जानै सो वाचिहै, होत सकल की हानि ॥६॥

सुखकबृक्षयकजक्तउपाया । समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्रीपत्री युगचारी । फलद्वै पाप पुण्यअधिकारी ॥ २ ॥
स्वादअनन्तकछुवर्णिनजाही । करचरित्रसो तेहीमाही॥३॥

साहबको बिसरायकै सूखा जो बृक्षहै यह संसार माया कहे पावत भयो बिषय
बिषरूप माया न समुझिपरी संसारीहैगयो ॥ १ ॥ शरीर धारणकै छा उरमिनको

धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षी है जौने वृक्षचारिउ युगमें पक्षीहैं
गयो अथवा क्षयमान जे नवगुण हैं तिनको धारणकीन्है जो जीव सोई पत्री कहे
पक्षी है नवगुण कौन हैं सुखदुःख इच्छा प्रयत्न राग द्वेषधर्माधर्म भावना
याहितरहको जीव जो है पक्षी सो पापपुण्य फल ताको खाइबेको चारिउयुग
अधिकारीहैं ॥ २ ॥ तिन फलनमें बहुतस्वादहै कछु कहो नहीं जायहै
तेहीवृक्ष में जीवरूप पक्षी चरित्रकरै है सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

नटवरसाजसाजिया साजी । सो खेलैसो देखै वाजी ॥४॥
मोहावपुरायुक्तिन देखा । शिवशक्ती बिरंचिनहिंपेखा ॥५॥

नटके बेटा कैसी साज साजि कहे नानारूप धारण करिकै आवैजाय है जो
वाजीगर जौने खेलखेलै है तौने देखै है अर्थात् जे ब्रह्ममें लगेते ब्रह्मही देखै हैं जे
जीवात्मामे लगैहैं ते जीवात्मैको देखैहैं इत्यादि जो जौने मतमेंहैं सो ताही में
लगोहै सांच बताये लरैधावै है काहे ते उनकी वासना अनेक जन्म ते वही
है ॥ ४ ॥ गुरुवाकरिकै मोहा जो बपुराजीव है सो साहबके जानिबे की युक्ति
न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्ब कहिआये हैं सो या शिवशक्ति बिरंचि
मायारूप या बात न जानतभये ॥ ५ ॥

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिंवानि ॥
जो जानै सो वाचि है, होत सकलकी हानि ॥ ६ ॥

परदे परदे कहे बिना साहबके जाने संसारमें जीव चलिगया कहे संसारमें
जातरहा बाणी जोहै वेद शास्त्र सो तात्पर्य करिकै साहबको बतावैहै सो जीव-
को न समुझिपरयो जो कोई वेदशास्त्रादि में तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर
श्रीरामचन्द्रको जानै सोई बाचैहै अपरोक्ष अर्थ जगत्मुख जानिकै सबकी हानि
होतही जाय है ॥ ६ ॥

इति बयासिर्वा रमैनी समाप्ता ।

अथ तिरासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा । वाके वढ़ै सवाई कर्मा ॥ १ ॥
 जिन अवधू गुरुज्ञान लखाया । ताकरमन तहँई लै धाया ॥ २ ॥
 क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै । पांचौमेंटि एककरि बूझै ॥ ३ ॥
 जीवहिमारि जीव प्रतिपालै । देखत जन्म आपनो घालै ॥ ४ ॥
 हालै करै निशाने घाऊ । जूझि परे तहँ मनमत राऊ ॥ ५ ॥
 साखी ॥ मनमत मरै न जीवई, जीवही मरण न होइ ॥
 शून्य सनेही रामबिन, चले अपनपौ खोइ ॥ ६ ॥

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा । वाके वढ़ै सवाई कर्मा ॥ १ ॥
 जिन अवधू गुरुज्ञान लखाया । ताकरमन तहँई लै धाया ॥ २ ॥
 क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै । पांचों मेंटि करि बूझै ॥ ३ ॥

जैसे क्षत्रिय क्षत्रियाधर्म करे हैं तो वाके सवाई कर्म बढ़े हैं रणमें पैठिकै शत्रु-
 को मारिकै शूरतारूप कर्म बढ़े हैं ऐसे जीव यह क्षत्रिय हैं क्षत्रिय जे साहब हैं
 तिनकी जाति है सो संसार रणमें पैठिकै मन माया धोखा जानई शत्रु मारि साहबके
 मिलनरूप शूरता बढ़ै है ॥ १ ॥ जे अबधू कहे बधू जो माया त्यहित रहित
 रामोपासक जेसा धुते गुण जे साहब हैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताको
 मन तहँई लय भयो मनोनाश बासना क्षय है गई जब मनोनाश भयो तब धाया
 कहे हंसरूप में स्थित है साहबके पास को धावत भयो ॥ २ ॥ क्षत्रिय सो है जो
 कुटुम्ब सों जूझै कुटुम्ब याके को है पांचौ शरीर तिनको मेंटिकै एक जो है हंसस्वरूप
 त्यहि करिकै साहबको बूझै ॥ ३ ॥

जीवहिमारि जीव प्रतिपालै । देखत जन्म आपनो घालै ॥ ४ ॥
 हालै करै निशाने घाऊ । जूझि परे तहँ मनमतराऊ ॥ ५ ॥

जीवहि मारिकै कहे जो औरै औरै को जीव है रह्यो है आपने को ब्रह्म मानै है

आपनेको औरै औरै देवताके दास मानै है यहनाममिटाइदेइऔ यह जीबका जीव नामामिटाइदेइ औ हंसरूप में स्थितहैकै जीवको नाम रामदास धरावै तबहीं यहजीवको प्रतिपाळ होइहै आपने देखतै जन्म मरणको लैहे कहे छोड़िदेइ है ॥४॥ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हाळै निशानेमें घाउकरै अर्थात् मनोनाश बासक्षय हाळै है जाइहै औ जेमनमतराउह अपने मनमतमें अपनेको राजामानै हैं जूझिकै संसारमें परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्ममानै है कोई आत्मैको मालिकमानैहै ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपनेको कृष्णमानि जूझिपरचो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारे जाय हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ मनमतमरैनजीवई, जीवहिमरण न होय ॥

शून्यसनेहीरामविन, चलेअपनपौखोय ॥ ६ ॥

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्वनहीं जाइ है जिवब तो तब कहिये जब साहबको जानिकै साहबके लोकहि में जन्म मरण छूटि जाय मरिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीनहोय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सो शून्य जे हैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमती हैं तेमरै हैं न जिये हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनको है तामें प्रमाण ॥ (ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतः सनातनः) ॥ ६ ॥

इति तिरासिर्वी रमैनी समाप्ता ।

अथ चौरासिर्वी रमैनी ।

चौपाई ।

जोजिय अपनेदुखै सँभारू । सोदुःखव्यापिरहोसँसारू ॥ १ ॥
माया मोह बंध सब लोई । अल्पै लाभ मूलगो खोई ॥ २ ॥
मोर तोर में सबै विगूता । जननीउदर गर्भमहँसूता ॥ ३ ॥
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौरा असगये बहूता ॥ ४ ॥
उपजैखपै योनिफिरि आवै । सुखक लेशसपनेहुंनहिँपावै ॥ ५ ॥

दुःख सँताप कष्ट बहुपावै । सो न मिला जो जरत बुझावै ॥
 मोर तोर में जर जग सारा ॥ धिग जीवन झूठो संसारा ॥ ७ ॥
 झूठे मोह रहा जगलागी । इनते भागि बहुरि पुनि आगी ॥ ८ ॥
 जेहित कै राखे सबलोई । सो सो सयान वाचे नहिं कोई ॥ ९ ॥
 साखी ॥ आपु आपु चैते नहीं, औ कहौतौ रिसिहा होइ ॥
 कहकवीर सपने जगै, निरस्ति अस्ति नहिं कोई ॥ १० ॥

जोजिय अपने दुखै सँभारू । सो दुख व्यापिर हो संसारू ॥ १ ॥
 मायामोह बंध सबलोई । अल्पै लाभ मूलगो खोई ॥ २ ॥
 मोर तोर में सबै विगूता । जननी उदर गभम हँसूता ॥ ३ ॥
 ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जन भौरा असगये बहूता ॥ ४ ॥

हे जीव ! जौन दुःख यह संसार में व्यापिरह्यो है तौने अपने दुःखकों सँभारू
 अर्थात् तौने दुःखसे निकसु ॥ १ ॥ मायामोह में सब बँधेहौ सो अल्पतो लाभ
 है अर्थात् विषय सुखतो थोरही है तिन सबके मूल संपूर्ण दुःख के भेटनवारे जे
 परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोज जाइ हैं कहे बिसरि जाय हैं ॥ २ ॥ मोर
 तोर याही में सब जीव विगूता कहे अरुझि रहै है याहीते जननीके उदरमें
 सदा सूतत है अर्थात् गर्भवास नहीं मिटे है ॥ ३ ॥ जैसे भौरा फूलतमें रस
 लेनको जाइ है संध्या है गई तब कमल संपुटित द्वैगयो तब फँसिगयो तैसे ये
 जीव बहुरूपते बहुत पराक्रम करिके खेलखेलै हैं कहे विषय रसलेनको जाय ही
 मायामें फँसिजाय हैं ॥ ४ ॥

उपजै खपै योनि फिरि आवै । सुख कलेश सपने हुं नहिं पावै ॥ ५ ॥
 दुःख सँताप कष्ट बहुपावै । सो न मिला जो जरत बुझावै ॥ ६ ॥

उपजै है औ खपै कहे मरै है पुनि पुनि योनिमें फिरि आवै है सुखको लेश
 सपन्यो नहीं पावै है ॥ ५ ॥ दुःख संताप कष्ट बहुतपावै है जो आगीते जरत

बुझावै सो गुरुनहीं मिलै है इहांदुःखसंताप कष्ट तीनबार जो कह्यो तामें कुछ भेद है दुःख वह कहावै है जो काहूहमारे होइहै औ जो रोगादिकन करिकैहोइ है सो संकष्टकहावै है औ जो कोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ॥ ६ ॥

मोरतोरमें जरजग सारा । धिगजीवन झूठो संसारा ॥७॥

झूठेमोहरहाजगलागी । इनतेभागि बहुरि पुनिआगी ॥८॥

जेहितकै राखे सबलोई । सो सयान बाचे नहिं कोई ॥९॥

औ तोर मोर करिकै सब संसार जर जाइ हैं यहसंसार साहब को चिदूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूठो है सो ऐसे झूठे संसारमें जीवनको जीबेको धिक्कार है ॥ ७ ॥ मायाको जो मोहहै सो सब संसारमें लगरह्यो है सो झूठो है इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झूठे ब्रह्माग्निमें जरै है ॥ ८ ॥ जेजे सबलोई कहें लोगन को हितकै राखै हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचै हैं तू कैसे बचैगो ॥ ९ ॥

साखी ॥ आपुआपु चेतैनहीं, औ कहौतौ रिसिहा होइ ॥

कहकबीरसपनेजगै, निरस्तिअस्तिनहिंकोइ ॥१०॥

आपु आपुकहे आपने स्वरूपको नहीं चेतै है कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र-कहौं सो मैं जो समुझाऊंहौं तौ रिसहा होइ है सो कबीरजी कहै हैं कि जो-सपने जागै सपन कहा है देहको अभिमानी मनमुखी है जागे कहे अपने मनते यह बिचारिलेइ कि मैं जाग्यो मैं ब्रह्म है गयो अथवा आपनेको जान्यो मैंहीं सबको मालिकहौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं है म अपने का जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहबको न मान्यो सो निरस्तिकहे नास्तिक है । सो अस्तिकहे आस्तिक न होइहै सो कहा जागैहै नहीं जागै है अर्थात् वह ज्ञानतो धोखाहै संसार समुद्र ते तेरी रक्षाकहा करैगो ताते वहसाहबको समु-झिजाते तेरोसंसार समुद्रते उबार करिदेइ ॥ १० ॥

इति चौरासिवीं रमैनी सम्पूर्णा ।



अथ शब्दः प्रारभ्यते ।

पहलाशब्द ॥ १ ॥

संतौ भक्ति सतौगुरु आनी ।

नारीएक पुरुषदुइ जाये बूझोपंडितज्ञानी ॥ १ ॥

पाहनफोरिंगंगयक निकरी चहुंदिशि पानीपानी ।

तेहिपानी दुइषर्वतबूड़े दरियालहरि समानी ॥ २ ॥

उड़िमक्खी तरुवरके लागी बोलै एकैवानी ।

वहिमक्खीके मक्खानाहीं गर्भरहा विनपानी ॥ ३ ॥

नारीसकल पुरुषवहिखायी ताते रहेउ अकेला ।

कहै कवीर जो अवकी समुझै सोईगुरु हमचेला ॥ ४ ॥

सन्तौभक्तिसतौगुरुआनी ।

नारीएकपुरुषदुइजाये बूझोपण्डितज्ञानी ॥ १ ॥

हे सन्तो ! हे जीवौ ! तुमतो शांतरूपहौ । गुरुजे हैं सबते श्रेष्ठ परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतोकहे सातो जे भक्ति हैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात् सगुण निर्गुणके परे मनबचनके परे है कौन सातभाक्ति हैं ते कहै हैं “ शांत ” प्रथम ताकर द्वैभेद १ सूक्ष्मा २ सामान्या । सो शांतिके सूक्ष्माके सामान्याके जुदे जुदे लक्षण हैं ताते तीनि भक्ती ये हैं । औ १ दास्य २ सख्य ३ वात्सल्य ४ शृङ्गार चारि येमिलाय सातभाक्ति भई । सोई जे हैं सा तौ रसहैं ते मन बचन में नहीं आवै हैं जब प्राप्तिहोइहैं तबहीं जानिपैरहै कि ऐसे हैं ।

सो या भांति साहबकी जे सातौभक्तिहैं ते गुप्तहै गई काहेते कोऊ न जानत-
भयो सो कहै हैं नारी जेहै कारणरूपा माया सोद्वैपुरुषको प्रकटकियो एकजीव
दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्मईश्वर प्रकट भयेहैं सो आदि मंगलमें कहिआयेहैं।
जनीप्रादुर्भावै धातुहै या जायोको अर्थ प्रकटकरबोई है औ मायाते जीव ईश्वर
प्रकटभये हैं तामें प्रमाण ॥ (मायाख्यायाःकाभेधेनोर्वत्सोजीवेश्वराबुभाविति
जीवेशावाभासेनकरोति मायाचाविद्याचेतिश्रुतेः) ॥ सो हे पण्डित ज्ञानी ! तुम
बूझौ तौ सारासारके बिचार करनवारै सांचहौ यहवाणी जो है सोई तुम को
भरमाइ दियो है ॥ १ ॥

पाहनफोरिंगंगयकनिकरी, चहुंदिशिपानी पानी ।

तेहि पानी दुइपर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी ॥२॥

पाहन कहिये कठिनको सो कठिन मनहै ताको फोरिकै गंगा निकसी नाना
पदार्थनमें जो राग होइ है सोई गंगाहै सो वही रागरूपा मायामें परिकै जीव
संसारमें रागकरि बूड़िगये। औ ईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वर जे
हैं तेई दुइभारी पर्वत हैं ते बूड़िगये। औ दरिया जो धोखा ब्रह्महै तामें रागरूपा
जो है गंगा ताकी जो लहरि है सो समाइ जातीभई अर्थात् सब धोखहीमें राग
करत भये, सांच वस्तुमें जिनजाना तेई बाचे अथवा वही रागगंगा लहरि संसा-
रसागरमें समाइजाती भई। सबजीव ईश्वर संसारमें रागद्वेषकरिकै बूड़िगये।
अथवा वहै जो बाणीगंगा सो पाहन जो मनहै तौनेको फोरिकै निकरी है सो
चारिउ ओर पानीपानी है रही है तौने पानी दुइ पर्वत बूड़े एक जीव एक
ईश्वर औ गङ्गा समुद्रमें समानी हैं इहां बाणीरूप गङ्गाको पर्यवसान दरिया
जो ब्रह्महै ताही में होतभयो ॥ २ ॥

उड़ि मक्खी तरुवर को लागी, बोलै एकै बानी ।

वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भरहा विनपानी ॥ ३ ॥

मक्खीजे हैं जीव ते तरुवर जो है देह तामें उड़िकै आपने आपने बासननते
लागतभये अर्थात् प्रलय जबभई तबभई तब वही ब्रह्ममें लीनभये, पुनि
जबसृष्टिभई तब पुनि शरीर पावत भये ॥ अथवा मक्खी जेहैं जीव ते संसार

वृक्षमें लागतभये ते सब एकबाणी बोलै हैं कि, “ एक ब्रह्मही है दूसरो नहीं है ” साहबको नहीं जानै है सो वहीमक्खी जो जीवहै ताकेमक्खा नहीं है कहेप्रथम जीव जो हिरण्यगर्भ समष्टि जीवहै ताके पति नहीं है परन्तु बिना पानी गर्भर-हर्तईभयो जीवते संसारप्रकटै यह आपहीते नामको जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी द्वैगयो साहब तौ याको उद्धार करिबो रमानाम दियो ताकि मेरेनाम मेरो अर्थ जानिकै मेरेपास आवै संसार न होइ ॥ ३ ॥

नारीसकल पुरुषहि खायी, ताते रही अकेला ।

कहै कबीर जौ अबकी समुझै, सोइ गुरु हम चेल ॥ ४ ॥

नारी जो है वहै कारणरूपा माया, सो सबजीव ईश्वर जेपुरुषहैं तिनको खाइ-लियो, कहे आपने पेटमें डारिलियो; अर्थात् उन के काहूके ज्ञान न रहिगयो, आपनोचेरो बनाइ लियो । तेहिते हे संतौ ! हे जीवो ! तुमतो शुद्धहौ, इनको छोड़िदेउ, तब साहब जे हैं तेई छोड़ाइ लेइंगे । अकेलारहो अकेल कहे जे सबके साहब परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके द्वैकैरहौ, जोजीव ईश्वरको सङ्ग करौंगे तो तुमहूको माया धरिलेइगी । श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो अबकी समुझै कहे यह मानुष शरीर पाइकै समुझै सोइ गुरु है तौने जीवको हमचेला द्वैजाई अर्थात् ताके हम सेवक द्वै जाई । जो जो हमसों पूछै. सो सब वाको बताइ देई कछू गोप्य न राखैं । अथवा सो हम पूछिलेइ कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनीभांति ते छूटचो । सो कबीरजी तो कबहूँ बाँधिकैछूटे नहीं हैं ताते कबीर जी कहै हैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तौ हम पूछि लेई बाँधिकै छूटै कैसे सुख होइ ॥ ४ ॥

इति पहिलाशब्दसमाप्ता ।

१ हम कहिये अहंकार अर्थात् कबीर साहब कहते हैं जो अबकी समुझे अर्थात् जो मानुष शरीर में समुझे वह गुरुहै । और अभिमानी माया में बद्ध चेलाहै ।

अथ दूसरा शब्द ॥ २ ॥

संतो जागत नींद न कीजै ।

काल न खाय कल्प नहिं व्यापै देहजरानहिं छीजै ॥ १ ॥

उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै शशि औ सूरगरासै ।

नवग्रह मारि रोगियावैठे जलमें विंव प्रकासै ॥ २ ॥

बिनुचरणन को दशदिशि धावै विन लोचन जगसूझै ।

ससा सो उलटि सिंह को ग्रासै ई अचरज कोऊ बूझै ॥ ३ ॥

औंधे घड़ा नहीं जल डूबै सूधेसों घट भरिया ।

जेहिकारण नर भिन्न भिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ॥ ४ ॥

पैठि गुफामें सब जग देखै बाहर कछुव न सूझै ।

उलटाबाण पारथिव लागै शूराहोय सो बूझै ॥ ५ ॥

गायन कहै कवहुं नहिंगावै अनबोला नितगावै ।

नटवर वाजीपेखनी पेखै अनहदहेतु बढ़ावै ॥ ६ ॥

कथनी वदनी निजुकै जोहैं ईसब अकथकहानी ।

धरती उलटि अकाशहि वेधै ई पुरुषहि की बानी ॥ ७ ॥

विना पियाला अमृतअचवै नदी नीरभरि राखै ।

कहै कबीर सो युग युगजावै राम सुधारस चाखै ॥ ८ ॥

संतो जागत नींद न कीजै ।

काल न खाय कल्प नहिं व्यापै देह जरानहिंछीजै ॥ १ ॥

हे संतों ! हे जीवों ! तुम तो चैतन्यरूप हो तुम काहेको सोचोहो अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परहो मायादिक तो जड़ हैं औ तिहारो अनुभव जो ब्रह्म है सोऊ जड़ है । काहेते कि, तिहारो मन तो जड़ है ताहीकी कल्पना ब्रह्म है ।

जो कहो “मनको विषय ब्रह्म है” यह तो कोई वेदांतमें नहीं है तो जहां भर मन वचनमें आवै तहांभर अज्ञान कल्पितहै । औ “अहंब्रह्मास्मि” (मैं ब्रह्महौं) मानिबो तो मूलाज्ञानमें है । यह वेदांतको सिद्धांतहै जैसे, धूरि धूम बादर घटादिकके आकाशही रहिजायहै । कबीरजी कहैहैं कि, तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ । जहांभर ब्रह्म कहैहैं औ विचारकरैहैं सोमन वचनमें आइ-जाइहै ताते, मनही को कल्पितहै; ताते वोऊजड़हैं, सो तुम नहींहौ । तुमतौ चैतन्यहौ । तिहोरूपको कालनहीं खाय है । औ कौनौ कल्पना नहीं व्यापै है अर्थात् कौनौ तुम्हारे स्वरूप में कल्पना नहीं उठै है । औ तेरो जोस्वरूपहै याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके समीप रहैहै । सो रूप जरा जो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजै है अर्थात् कबहूँ बुढ़ाई नहीं होइहै सदा किशोर बनोरहै है ॥ १ ॥

उलटी गंग समुद्रहि सोखै शशि औ सूर गरासै ॥

नवग्रहमारि रोगिया बैठे जलमें बिम्ब प्रकासै ॥ २ ॥

रागरूपी जोहै गङ्गा सो संसारमुख ब्रह्ममुख द्वैरहीहै । सो जो उलटै साह-बमुख होइ साहबमें जीव अनुरागकरै तो समुद्रजोहै संसारसागर औधोखा ब्रह्मसागर ये दुहुनको सोखिलेइ । औ शशि जो है जीवात्मा मानिबो कि एक आत्मही है; दूसरो पदार्थ नहीं है यहज्ञान; औ सूर जो है नाना निरंजनादिक ईश्वरनके दास मानिबोको ज्ञान; तौनेको गरांसिलेइहै । औ यहसांचो साहब कोहै जान याको देखैहैं संसारवालो जो रोगहै सो पारखहीते जायहै । सो नव-ग्रह जब निबल होइहै तब रोगहोइहै । सो नवग्रह नवद्रव्यहैं । नवद्रव्यके नाम १ पृथ्वी २ अप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७ आत्मादिक ८ दिशा ९ मन तिनकोमारिकै कहे मिथ्या मानिकै औ आपनी आत्माको साहब को दास मानिकैबैठे, तब रागरूपी जलमें बिंब जोहै शुद्ध साहब को अंश याको स्वरूप, जाको प्रतिबिंब धोखा ब्रह्महै औ संसारहै तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै ॥ २ ॥

बिन चरणनको दशदिशि धावै बिन लोचन जग सूझै॥
ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै ई अचरज कोऊ बूझै ॥३॥

तब बिना चरणको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुखचलिबो याको छूटिगयो । अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन है गयो । तब नवधाभक्तिको छोड़िकै दश कहे दशौ जो साहबकी “अनुरागात्मिका” भक्तिहैं तोनेके दिशाको धावै है । अथवा नवद्वारको छोड़िकै दशौ द्वारको जो है मकरतार साहब के इहांकी डोरि लगी है तहांको धावै है । औ शरीरनको जे प्राकृत नयन हैं ते याके न रहि- गये । साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौने के नेत्रकरिकै साहब को चिदचिद् रूप यह संसार सो सूझि परन लग्यो कहे बूझिपरनलग्यो । तब अरेमूढ़ ! भ्रमरूपजो है ससा खरहा अहंब्रह्म विचार सो, तैं जो है समर्थ सिंह ताको ग्रासै है । सो वहतो धोखाहै वही भर्म भूलि गयो । सो हेजीवो ! यह अचरज कोऊ बूझौ । औ जौनज्ञान में कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो । जो कबहूं न होइ नई बात होय सो यह आश्चर्य है । ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे । वह ब्रह्म तुम्हारई अनुभवहै ताहो में तुम भुलाने हो ॥ ३ ॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया सूधे सों घट भरिया ॥

जेहि कारण नर भिन्नभिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ॥ ४ ॥

औंधा घड़ा जो जल में डारि दीजै तौ नहीं डूबैहै, जलनहीं भरि आवैहै । सो तैं जो साहबको पीठिदैकै ब्रह्ममें औ संसार मेंलै सो तौ धोखाहै । जैसे सूधे घटमें जलभरि आवै है तैसे तैंहूं साहबकी ओर मुखकरु, जब साहब तेरेऊपर प्रसन्नहोइगो तबहीं तैं ज्ञान भक्ति करिकै पूरा होइगो । जाकारण नर भिन्न भिन्न करैहै कहे भिन्न भिन्न पदार्थ मानैहै औ सब पदार्थ साहबको चिदचिद् रूपकरिकै नहीं देखै हैं । सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठ अंधकारको दूरिकरनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके प्रसादते तरोगे । अथवा साहबके बतावनवारे अंधकारके दूरि करनवारे जब गुरुमिलैगे तब तिनके प्रसादते तरोगे ॥ ४ ॥

पैठि गुफामों सब जग देखै वाहर कछुव न सूझै ॥

उलटा बाण पारथिव लागै शूरा होय सो बूझै ॥ ५ ॥

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफाहै तौनेमें पैठिकै कहेशरीर पाइकै चिदचिद्

साहबका रूप सब संसार याको सूझिपरै औसाहबके रूपते बाहिरे औकुछ वस्तु न सूझिपरै । सुरतिरूपी जो बाणहै सो जगत्मुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख है रहाहै सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिवकहे राजा जे परम-पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगावै । यहवात जो कोई गूरा होइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्मज्ञान की एक आत्मै सत्यहै तिनको जीति लेइ सो बूझै तबहीं जन्ममरण याको छूटै है ॥ ५ ॥

गायन कहै कवहुं नहिं गावै अनवाला नितगावै ॥

नटवर बाजी पेखनी पेखै अनहद हेतु बढ़ावै ॥ ६ ॥

गायन जोहै बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहबको कहें हैं तौनेको तौ कवहुं नहीं गावैहै और अनबोला जो निराकार धोखा ब्रह्महै जो कवहुं बोलतै नहीं है, सो कैसे पूरपरै । कौनीतरहते अनबोलाको गावै हैं सो आगे कहै हैं । वह जो धोखा ब्रह्मको देखनोहै सो नटवत् बाजी है कहे झूठै है उहां कछु नहीं देखि परै है जो कहो अनहदको हेतु तो बढ़ावैहै कहे दशोधुनि अनहद की तौ सुनि परै है ॥ ६ ॥

कथनीबदनी निजुकै जोहै ई सब अकथ कहानी ॥

धरती उलटि अकाशहि बेधै ई पुरुषहिकी वानी ॥ ७ ॥

सोई तो सब कथनी बदनीहै । जो बिचारिकै देखौ तौ अनहद आदिदैकै ई सब अकथ कहानी हैं । साहबके जाननवारे पूरेसंतनके कहिबे लायक नहीं है, झूठहैं कछु इनमें है नहीं । सबमनके अनुभवहैं । पुरुषजेहैं तिनकी यह वानीकहे स्वभावहै । धरती जो जड़मायाहै ताको उलटिदेइहै, वाको मुख मुरकाई देइहै वासों आप फिरि आवैहै । औ आकाश जोब्रह्महै ताको बेधैकहे ब्रह्मके पार जाय है ताम प्रमाण ॥ “सिद्धाब्रह्मसुखेमन्ना दैत्याश्चहरिणाहताः । तज्जोतिर्भेदनेश-कारसिकाहरिवेदिनः ॥ ” औकुपुरुषजे हैं ते संसारमें लगै हैं कि, धोखाब्रह्ममें-लगैहैं उनकी वानीकहे यहै स्वभावहै ॥ ७ ॥

विना पियाला अमृत अचवै नदी नीर भरि राखै ॥

कहै कवीर सो युगयुग जीवै राम सुधा रस चाखै ॥ ८ ॥

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचों शरीरहैं तेईपियालाहैं । स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानंद पियै हैं । औ महाकारण कैवल्य ते ब्रह्मानंदपियैहैं । पांचौ शरीर पियाला ते निकसिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूपहै तामें स्थित हैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृतहै ताको अंचवै हैं जाते जन्म मरण न होई । तिन को जगत्के रागरूपी नीरकारिकै भरी जो नदीहै जाको आगे वर्णनकरिआयेहैं “नंदियानीर नरकभरि आई” सो तिनको राखै कहे छारई हैं अर्थात् झरहीहैं । अथवा संसारमें जो रागकियेहैं सो नरक भरीहैं ताको निकारिकै रसरूपी भक्ति जो साहबकी नीर ताको भरिराखै । सो कबीरजी कहै हैं कि, सोई युगयुग जीवैहै, कहे वहीको जनन मरण नहीं होय, जो या भांति परमपुरुष जेश्रीराम-चंद्रहैं तिनके प्रेमरूपी सुधारसको चाखैहै ॥ ८ ॥

इति दूसराशब्द समाप्त ।

अथ तीसरा शब्द ॥ ३ ॥

संतौ घरमें झगराभारी ।

रातिदिवस मिली उठिउठि लागैं पांचढोटायकनारी ॥ १ ॥

न्यारोन्यारो भोजन चाहैं पांचौ अधिक सवादी ।

कोइकाहुको हटा न मानै आपुहिआपुमुरादी ॥ २ ॥

दुर्मति केरदोहागिनि मेटे ढोटैचाप चपेरै ।

कहकबीरसोई जन मेरा घर की रारि निवेरै ॥ ३ ॥

सन्तो घरमें झगराभारी ।

रातिदिवसमिलि उठिउठिलागैं पांचढोटायकनारी ॥ १ ॥

आगे या कहिआयेहैं कि बिना पियाला अमृत अंचवैहैं औ जे नहीं अंचवैहैं तिनको कहै हैं । हेसंतौ ! हे जीवौ ! या घर जो शरीरहै तामें भारी झगरा मच्यो है । पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं औ नारी जो मायाहै सोउठि उठिलागैहैं कहे झगराकरैहैं । यहै उपाधिराति दिन जीवको लगैरैहै ॥ १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं पांचौ अधिक सवादी ।

कोउ काहूको हटा न मानै आपुहि आपु मुरादी ॥ २ ॥

अपने अपने न्यार न्यार भोजन चाहैं हैं पांचौं बड़े सवादी हैं । आकाश श्रोत्रइन्द्रियप्रधानहै सोशब्द चाहै है । वायु त्वचा इन्द्रिय प्रधान सो स्पर्शको चाहै हैं । तेज चक्षुइन्द्रिय प्रधानहै सो रूपको चाहैहै । जल रसनेन्द्रिय प्रधानहै सो रसको चाहै है धरती घ्राणेन्द्रिय प्रधानहै सो गंधको चाहैहै औ माया जीवहीको ग्रसन चाहैहै । कोईकाहूको हटको नहीं मानैहै आपही आप मालिक द्वेगहैं । आपुही आपु आपनी मुरादिकहे बांछापूरकरैहैं ॥ २ ॥

दुर्मतिकेर दोहागिनिमेटै ढोटै चापचपेरै ।

कहकबीरसोई जनमेरा घरकीरारिनिबेरै ॥ ३ ॥

दुर्मति जेहैं गुरुवालोग (जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको छोंड़ि आत्मही को सत्य मानै हैं औ या कहैहैं कि, सबसुख करिलेउं वहां कछु नहीं है ऐसे जेनास्तिकहैं) तिनकी दोहागिनिकहे नहींग्रहणलायक वाणी तिनको मेटिकै कहे छोड़िकै; ढोटैजेहैं पांचौ तत्त्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दगाइलेइ । अर्थात् वे न दबावन पावैं । आपने आपने विषयनमें मनको खैंचि लैजाइहे तहां मन न जानपावै । सो कबीरजी कहै हैं कि, जोपारि-ख करिकै शरीर जो घर है तौनेमें जो पांचौं इन्द्रिनको झगड़ा है ताको निबेरै कहे सब तत्त्व जे पृथ्वी आदिक हैं तिनमें लीन जे पांचौं इंद्रिय हैं तिनकी जे विषय हैं तिनको निबेराकरै कि, भगवत्की अचिद् विग्रहहै । पृथ्वी आदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है; इन्द्रियरूप करिकै जो देखै औ विषयरूप करिकै जो देखैहै सो न देखै । औ यह मानै कि, मैं जोहौं जीवात्मा तौनेकी एकौ नहींहैं; काहेते कि, मैं चिदचित् विग्रहहौं, ये जड़ विग्रहहैं, इनते भिन्नहौं सो ये जेहैं जड़ ते आत्मैकी चैतन्यता पाइकै आपुसमें लड़ैहैं । सो इनते जब

१ दुर्मत अर्थात् दुष्ट बुद्धिवाले पुरुषजिनको परमार्थका तो ज्ञान है ही नहीं परन्तु देखादेखी वेध धारनकर अथवा कुलाभिमानसे गुरु बने बैठे हैं ऐसे जे झूठे गुरुलोग हैं उनको गुरुवाकहते हैं उन्हींको दुर्मत कहते हैं ।

आत्मा भिन्नद्वजाइगो तब सब शरीरै एकौ कार्य करनको समर्थ न होइगो ।
 कैसे, जैसे जीव इनते अपनेको जुदो मानैगो हंसस्वरूपमें स्थित होइगो सो
 इनहींको चपाइ लेइगो घरकी रारिनिबारि जायगी । सो इसतरहते जो कोई
 अपने स्वरूपको जानि घरकी रारिनिबेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्रमें लगै सोई
 जन मेरो है ॥ ३ ॥

इति तीसराशब्द समाप्त ।

अथ चौथाशब्द ॥ ४ ॥

संतौ देखत जग वौराना ।

साँच कहौं तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना ॥ १ ॥
 नेमी देखे धर्मी देखे प्रात करहि असनाना ।
 आतम मारि पषाणहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना ॥ २ ॥
 बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना ।
 कै मुरीद तदवीर बतावैं उनमें उहै जो ज्ञाना ॥ ३ ॥
 आसन मारि डिंभ धरिवैठे मनमें बहुत गुमाना ।
 पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना ॥ ४ ॥
 माला पहिरे टोपी दीन्हे छाप तिलक अनुमाना ।
 साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना ॥ ५ ॥
 हिंदू कहै मोहिं राम पियारा तुरुक कहै रहिमाना ।
 आपुसमें दोउ लरिलरि मूये मर्म न काहू जाना ॥ ६ ॥
 घरघर मंत्रजे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना ।
 गुरुवा सहित शिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना ॥ ७ ॥

कहै कवीर सुनो होसंतो ई सब भर्म भुलाना ।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै आपहि आप समाना ॥८॥

सन्तो देखत जग बौराना ।

सांच कहौं तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना ॥ १ ॥

हे संतो ! यह जगत् देखत देखत बौराई गयो । यह जानै है कि, यह कल्पना मनहींकी है । एकनको दुःखपावत देखै है, एकनको भूतहोतदेखे है, एकनको रोगग्रसित देखै है, एकनको बोड़े हाथी चढ़े देखै है, एकनको राजा होतदेखै है औ एकनको मरतदेखै है । आपहू मरघट ज्ञान कथै है कि, ऐसे ही हमहू मरिजाइंगे । सो यह देखत देखतहू भुलाइ जाइहैं । परम परपुरुष ज श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करै है, जाते संसारते छूटै । जो सांचब-ताऊं हौं कि, सांच जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं, जो चित् अचित्तमें व्यापक हैं, सब ठौर बने हैं, तिनमें लगौ जाते उबार है तौ मारन धावै है । औ झूठे जे माया ब्रह्म हैं तिनके विस्तारके जे नाना मत हैं तिनमें जो कोई लगावै है तौ तिनको सांच मानिकै पतियात जाय ह ॥ १ ॥

नेमी देखे धर्मी देखे प्रात करहिं असनाना ।

आतम मारि पषाणाहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना ॥ २ ॥

बहुत नेमी धर्मी देखे हैं, बहुत प्रातःस्नान करनवालेनको देखे हैं, स्वर्ग को जाय हैं । औ आत्माको मारिकै कहे भगवान्को मंदिर शरीरमें साक्षात् सबके हृदयमें भगवान् अंतर्धामी रूपते बसे हैं, तौने शरीरको फोरिकै, मेढ़ा महिषादिकनको मूड़लैके, पीतरपाथर आदिक जे देवीकी मूर्ति हैं तिनमें चढ़ा-वै हैं । औ सबके उद्धार द्वैबेको बतावै हैं, तौ इनमें कौन ज्ञान है ? कछू ज्ञान नहीं है काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानै हैं ॥ २ ॥

बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताव कुराना ।

करि मुरीद तदवीर बतावैं उनमें यहै जो ज्ञाना ॥ ३ ॥

औ बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरानके पढ़नवाले ते जीवनको मुराद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरीके हलालकरै कि तदबीर बतावैं हैं औ आपौ हलाल करै हैं ॥ ३ ॥

आसनमारि डिंभ धरि बैठे उनमें बहुत गुमाना ।

पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना ॥ ४ ॥

औ कोई चौरासी आसन कैकै प्राण चढ़ायकै डिंभधरि बैठे हैं कि, हमारे बरोबरि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमान करै हैं । यह योगिनको कह्यो । औ कोई पीतरकी मुर्ति कोई पाथरकी मुर्तिपूजै हैं औ सर्व भूतमें व्यापक जो भगवान् तिन भूतनको द्रोहकरै हैं ते अज्ञानी हैं साहबको नहीं जानै हैं । तामें प्रमाण ॥ “ अहमुच्चा वचैर्द्रव्यैः क्रियोत्पन्नयानघे ॥ नैवतुष्येऽर्चितोर्च्चायां भूतग्रामावमानिनः ॥ १ ॥ यस्यात्मबुद्धिः कुणपेत्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु-भौम इज्यधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगो खरइतिभा-गवते ॥ ” औ कोई तीर्थनमें लागै है । सो इनहीके गर्व में सब भुलाने हैं कि, हम मुक्त द्वै जायेंगे ॥ ४ ॥

माला पहिरे टोपी दीन्हे छाप तिलक अनुमाना ।

साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना ॥ ५ ॥

अब कबीरपंथिनको नानापंथिनको कहै हैं कि, माला पहिरे हैं टोपी दीन्हे हैं औ नाकतेलैकै अछिद्र ऊर्ध्व तिलक दीन्हे हैं ताहीके अनुसार छाप पाये हैं या कहै हैं हमको गद्दीकी छाप भई है हम महन्त हैं पान पायोहै औ साखी शब्द गावतहैं पै वाको अर्थ भूले हैं साखी शब्दमें जो साहबको रूप बतावैहैं जीवात्माको सो नहीं जानै ॥ ५ ॥

हिंदू कहै मोहिं राम पियारा तुरुक कहे रहिमाना ।

आपसमें दोउ लरि लरि मूये मर्म कोइ नहिं जानाद ॥

सो हिन्दूतो कहैहैं कि, वेद शास्त्रमें रामही पियारा है औ मुसल्मान कहैहैं कि, रहिमानही पियाराहै । यहद्विविधा लगायराख्यो है या न जानतभये कि,

एकही हैं । आपसमें लड़िलड़िकै मरिगये मर्म कोई न जानतभये की जो है राम है, वही रहिमान है । साहब एकई है, दूसरो नहीं है सब नाम कारको हैं तामें प्रमाण ॥ “सर्वाणिनामानियमाविशंतिइतिश्रुतिः” सो ॥ सब चत-
वाहीमें घटित होयहैं ॥ ६ ॥

घरघर मंत्र जे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना ।

गुरुवा सहित शिष्य सब बूढ़े अन्त काल पछिताना ७॥

घरघर जे मंत्र देत फिरतहैं अपनी महिमाके अभिमानते कि, हम सिद्ध हैं योगी हैं पीरहैं औलिया हैं ऐसेजे गुरुवा हैं । ते यही अभिमानते सबकी रक्षा करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै, सब जीवनको और और में लगाइ देइहैं औ कहै हैं कि, हम उद्धारकै देइहैं । गुरुवा सहित सब शिष्य बूढ़िजाइंगे औ जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि, हमपरम पुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षक हैं ॥ ७ ॥

कहहि कबीर सुनोहो संतो ई सबभर्म भुलाना ॥

केतिक कहाँ कहा नहिं मानै आपहि आप समाना॥८॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो तुम सुनो ये सब भर्मईमें भुलान रहै हैं मैं चारौ युगमें केतनौ समुझाऊँहों पै मानै नहीं हैं । यद्यपि माया ब्रह्मकी एती सामर्थ्य नहीं है कि, यह जीवको धरिलैजाय काहेते कि, वह जीवहीको अनुमानहै । सो यह आपनेनते आप यही भर्ममें समाइगयो है कि, मैं ब्रह्महौं । आप आपहीते यह माया ब्रह्मसो आपस मानलियो है अर्थात् संगति कैलियो है तेहिते संसारी द्वै गयो ॥ ८ ॥

इति चौथाशब्द समाप्ता ।

१ इस चरणका पाठ दाना पुरकी पंक्तिमें ऐसा है । “केतिक कहाँ कहा नहिं मानै सहजे सहज समाना”

ओं वः
मुरीद वः
आपै

अथ पांचवां शब्द ॥ ५ ॥

संतो अचरज यक भो भाई ।

यह कहौं तोको पतिआई ॥ १ ॥

एकै पुरुष एक है नारी ताकर करहु विचारा ।

एकै अंड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा ॥ २ ॥

एकै नारी जाल पसारा जग में भया अँदेशा ।

खोजत काहु अंत न पाया ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ ३ ॥

नागफांस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जगखाई ।

ज्ञान खड्ग विन सब जगजूझै पकरि काहु नहिं पाई ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनिचुनि खाई ।

कहैं कबीर तेई जन उवरेजेहिं गुरु लियो जगाई ॥ ५ ॥

संतो अचरज यक भो भाई। यह कहौं तो को पतिआई १

एकै पुरुष एक है नारी ताकर करहु विचारा ।

एकै अण्ड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा ॥ २ ॥

एकै नारी जाल पसारा जगमें भया अँदेशा ।

खोजत काहु अंत न पाया ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ ३ ॥

हे संतो ! शुद्धजीवो ! भाई एक बड़ो आश्चर्य भयो जो मैं वाको कहौं
तौ को पतिआय ॥ १ ॥ एकै पुरुष है एकै नारी है कहे वही जीवात्मा पुरुषौ है
नारिउ है ताको विचारकरो वा कौन है ? एकै अंडमा कहे एक ही प्रणवमें उत्पन्न
चौरासीलाख योनि तामें पारिकै यह जीव संसारके भर्ममें भुलायरह्यो है अथवा
एकही अंड कहे ब्रह्मांडहिमें ॥ २ ॥

यह जीव शरीर धरयो तब एकै नारी जो बाणी सो नानाप्रकार की जो है कल्पना सोई है जाल ताको पसारि देत भई । तब जगमें नाना प्रकारको अंदेशा होत भयो कहे नानाप्रकारके मतन करिकै जगत्के कारणको खोजत-भये परन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश ह भी अन्त न पावतभये; थकिकै नेतिनेति कहि दियो आत्माको विचार न कियो कि कौनकोहै ॥ ३ ॥

नागफाँस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जग खाई ।

ज्ञान खड्ग विन सबजग जूझै पकरि काहु नहिं पाई॥

सो ये कैसे अन्त पावै नागफाँस कहे त्रिगुणकी फाँसी लिये घटके भीतर माया बनीरहै है सोई सब संसारको मूसिकै खाई लेइहै । मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वैतौ नाना मतनमें परे यहजानै हैं कि, यही सत्यहै परन्तु माया जो है सो परमपुरुषको जानिबो मूसि लियो कहे चोराइलियो । परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको औ अपने आत्माको जानिबो कि, साहबकोहों में औ मायादिकन को मिथ्या मानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताके बिना सब जग जूझो जाइहै । वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो, तब साहबको अपनो स्वरूप काँ जानै ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनि चुनि खाई ।

कहहि कबीर तेई जन उवरे ज्यहि गुरु लियो जगाई॥५॥

आपुहि वह मायामूल अविद्याहै जगत्के नानापदार्थ करत भई कहे कारण अविद्याभई। औ आपहीफुलवारी कहे कार्य अविद्या द्वैके जगत्के नानापदार्थ भई औ आपही कालरूपद्वैके चुनि चुनि खाइहै । सो कबीरजीकहै हैं स्वप्न जो माया तौनेते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरै हैं ।

१-नाग फाँस कहिये बाणीको क्यों कि जैस नागकी दो जिह्वा होती है वैस ही बाणी के दो अर्थ होते हैं संसार मुख अर्थ से नरक में पड़ता है और गुरुमुख अर्थसे मोक्ष पद को प्राप्त होताहै । २ क्या ।

अर्थात् जो साहबको जानै हैं औ अपने स्वरूपको जानै हैं कि, मैं साहबकोहों ताको माया स्वप्नवतहै । अथवा गुरुजे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रहैं तेई जिनको मोह निशामें सोवत जगाहदियो है अर्थात् हंसरूप दैके अपने पास बोलाइलियो है तेई जन उबरै हैं कहे बचै हैं ॥ ४ ॥

इति पांचवांशब्द समाप्त ।

अथ छठाशब्द ॥ ६ ॥

संतो अचरज यक भारी । पुत्र धरल महातारी ॥ १ ॥
 पिताके संग हि भई बावरी कन्या रहल कुमारी ।
 खसमहिं छोंड़ि ससुर सँग गवनी सो किन लेहु विचारी ॥ २ ॥
 भाई संग सासुरी गवनी सासु सौतिया दीन्हा ।
 ननैद भौज परपंच रंच्योहै मोर नाम कहिलीन्हा ॥ ३ ॥
 समधीके सँग नाहीं आई सहज भई वरबारी ।
 कहहि कबीर सुनो हो संतो पुरुष जन्म भो नारी ॥ ४ ॥

संतो अचरज यक भो भारी । पुत्र धरल महतारी ॥ १ ॥
 पिताके संगहि भई बावरी कन्या रहल कुमारी ।
 खसमहिं छोंड़िससुरसँग गवनी सो किन लेहु विचारी ॥ २ ॥

हे सन्तो ! एकबड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीवहै ताकी महतारी जो मायाहै सो धरतभई ॥ १ ॥ अरु पिता जो ब्रह्म है ताके संग बावरी द्वे जात-भई, कहे जारपुरुष बनावतभई । अर्थात् माया सबलित ब्रह्म भयो औ कन्या जो बुद्धि है सो पतिको निश्चय कहूं न करतभई । विचारै करत रहिगई । कुंवारीही रहतभई अर्थात् सब मतनमें खोजतभई परन्तु निश्चय न होतभई ॥ पहिले पिता जो ब्रह्महै ताको खसम बनायो, पुनि तौने खसमको छोड़िके ससुर जो है मन, कहे मनैको अनुभव ब्रह्महै ताके सँग गवनत भई । सो हे

जीवो ! अपनेते काहे नहीं बिचारिलेउ हौ कि माया हमारे मन में पैठिकै और औरमें बुद्धि निश्चय करावै है ॥ २ ॥

भाई के संग सासुर आई सासु सौतिया दीन्हा ।

ननँद भौज परपंच रच्योहै मोरनाम कहि लीन्हा ॥ ३ ॥

प्रथम याको भयभई तब या बिचार कियो कि “द्वितीयाद्वै भयं भवति” ॥ तबहीं माया लगी याते भाई भयो । मायाको भय सोई भाई के साथ नाना मतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मन है सोई सासुर है तहां आई औ तिन गुरुवनकी बाणी जोहै सोई सासुहै कोहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणीहीसे होतीहै सो गुरुवनकी बाणी रूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दीक्षारूप सो मायाको देतभई। सो मायाते दैवयोग छूटि उजाय परन्तु दीक्षासवतिते नहीं छूटै है । सो मायाकी सवतिदीक्षा काहेतेभई, माया तो ब्रह्मकी स्त्री है सो ताही ब्रह्म को दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई, ब्रह्मकी बहिनिभई, मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पति बनायो सो भौजी आप भई सो ये दोऊ भौजी ननँद मिलिकै परपंच रच्योहै अरु जीव कहै है मेरो नाम कह दियो है कि, जीवही सब करै है ॥ ३ ॥

समधीके सँग नाही आई सहज भई घरवारी ।

कहै कवीर सुनो हो सन्तो पुरुष जन्मभोनारी ॥ ४ ॥

मायाकी कन्या बुद्धि कहि आये सो बुद्धि कुँवारहीमें नानाजीवनको जारपति बनायो सब जीव साहबके अंशहैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सो मायाके समधी भये । तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनके बिवाहलेत भई अर्थात् बशकर लेत भई । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो जीव ! जो पुरुष है सो माया के साथनारी द्वैगयो ॥ ४ ॥

इति छठाशब्द समाप्त ।

अथ सातवां शब्द ॥ ७ ॥

संतो कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १
 लौकै रतन अवेध अमौलिक नहिं गाहक नहिं साई ।
 चिमिकि चिमिकि चमकै दृग दुहुं दिशि अरव रहा छरिआई
 आपहि गुरू कृपा कछु कीन्हो निर्गुण अलख लखाई ।
 सहज समाधि उनमुनी जागै सहज मिलै रघुराई ॥ ३ ॥
 जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई मन माणिक वेधयो हीरा ।
 परम तत्त्व यह गुरुते पायो कह उपदेश कबीरा ॥ ४ ॥

सन्तो कहौ तो को पतिआई। झूठा कहत सांच बनि आई १

हे संतो ! झूठा जो ब्रह्म है ताको कहत कहत जीवन सांचबनि आई वही
 ब्रह्मको सांच मानलियो है अब जो मैं सांच साहबको बताऊँ तो को पतिआय
 अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्महीमें लगे हैं ॥ १ ॥

लौकै रतन अवेध अमौलिक नहिं गाहक नहिं साई ।
 चिमिकि चिमिकि चमकै दृग दुहुं दिशि अरव रहा छरिआई

लौ लगनको कहै हैं सो वा ब्रह्म माही हौं या जो लौ कहे लगन ताही ज्ञानको
 रतनकै अवधित अमोलिक मानि जामें गाहक औ साई नहीं है (अर्थात् दूसरा
 तो हई नहीं है गाहक साई कहाँते होय) सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानि लियो
 है । तौने ब्रह्म उनके दृगन में चमकि चमकि चमकै है, सर्वत्र देखो पुरै है ।
 जो कहो लोक प्रकाश ब्रह्मही देखो पुरै है सो नहीं अरु जो या हठ है कि, सर्वत्र
 ब्रह्मही है सोई जो बरहा है सो छरिआई रह्यो है सर्वत्र ब्रह्मही देखायै है जैसे
 बरहामें जलबड़े सर्वत्र फैलिजाय है ऐसे अहं ब्रह्मास्मि जो या ज्ञान सो जब
 बढ़यो तब याको हठहीरूप ब्रह्म देखो पुरै है ॥ २ ॥

आपुहिं गुरू कृपा कछु कीन्हो, निर्गुण अलख लखाई ।
सहज समाधिं उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई ॥ ३ ॥

सो गुरुजहें सद्गुरुते जब आपही कृपाकरैहें तब निर्गुण जो ब्रह्महै ताको
अलख लखावै हैं कि वे कछुवस्तुही नहीं हैं अर्थात् अलख हैं धोखाहै साहब
कब मिलै जब सहज समाधि उनमुनी मुद्रा करि जो सर्वत्र ब्रह्म देखैहै तौन
उनमुनी रूप निद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चित् अचितरूप विग्रह या
जगत साहबको है यादेखै तौ सहजहीमें परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं
ते मिलें ॥ ३ ॥

जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मन माणिक बेध्यो हीरा ।
परम तत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कवीरा ॥ ४ ॥

अधेधित अमौलिक आगे कहिआये ताको तो नेतिनेति कहै हैं वामें काहूको
मनहीं नहीं बेध्यो अर्थात् धोखही है अब साधुनको मन जो माणिक है अनु-
राग पूर्वक लागे सो साहब जे हीरा हैं तिनमें बेध्यो है । ऐसे जेसाहब चित्-
अचितरूप जहांजहां देखौहौ तहांतहां सोई है यह कबीरजी कहै हैं कि यह
परम तत्त्वको उपदेश मैं गुरुते पायोहै ॥ ४ ॥

इति सातवां शब्द समाप्त ।

अथ आठवां शब्द ॥ ८ ॥

अवतारविचार ।

संतो आवै जायसो माया ।

है प्रतिपाल काल नहिं वाके ना कहुं गया न आया ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना शंखासुर न संहारा ।

अहै दयालु द्रोह नहिं वाके कहहु कौनको मारा ॥ २ ॥

वे कर्ता न वराह कहावैं धरणि धरै नहिं भारा ।

ई सब काम साहबके नाहीं झूठ कहै संसारा ॥ ३ ॥
 खंभ फारि जो बाहर होई ताहि पतिज सबकोई ।
 हिरणाकुश नख उदर विदारे सो नहिं कर्ता होई ॥ ४ ॥
 वावन रूप न बलिको यांचे जो यांचै सो माया ।
 विना विवेक सकल जग जहड़े माया जग भरमाया ॥ ५ ॥
 परशुराम क्षत्री नहिं मारा ई छल माया कीन्हा ।
 सतगुरु भक्ति भेद नहिं जानै जीव अमिथ्या दीन्हा ॥ ६ ॥
 सिरजनहार न व्याही सीता जलपषाण नहिं बंधा ।
 वे रघुनाथ एककै सुमिरे जो सुमिरै सो अंधा ॥ ७ ॥
 गोपी ग्वाल गोकुल नहिं आये करते कंस न मारा ।
 है मिहरबान सबनको साहब नहिं जीता नहिं हारा ॥ ८ ॥
 वे कर्ता नहिं बौद्धकहावैं नहीं असुरको मारा ।
 ज्ञान हीन कर्ता कै भरमें माया जग संहारा ॥ ९ ॥
 वे कर्ता नहिं भये कलंकी नहीं कलिंगहि मारा ।
 ई छल बल मायै कीन्हा यतिन सतिन सब टारा ॥ १० ॥
 दश अवतार ईश्वरी माया कर्ताकै जिन पूजा ।
 कहै कबीर सुनो हो संतौ उपजै खपै सो दूजा ॥ ११ ॥

अवतार विचार ।

अबतक सबके गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णन करिआये ति-
 नके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहेआवैहैं ते अमायिकहैं काहेते कि आवै
 जायनहीं हैं तिनहीको परात्पर ब्रह्म करिकै वर्णतहैं तामें प्रमाण ॥ (पूर्णमदः
 पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते । पूर्णस्यपूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते इतिश्रुतेः) ॥ ”
 औ ई माया ते परे हैं औ बहुधा निरंजनादिक जे नारायणहैं जिनको पांच

ब्रह्ममें कहियेहैं ते, उनकी उपासना करिके उनको आपनेते अभेद मानि कै उनकी शक्तिको प्राप्ति हैकै जगत्के कार्य सब करैहैं । औ जब मत्स्यादिक अवतारलेइ हैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उतने अवतारकी शक्ति पाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सबहैं तिनके उपासक हैं उपासनामें देवको औ अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है ॥ “ देवोभूत्वादेवंयजेत् ” ॥ तेहिते उनकी शक्तिते ये सबअवतार लेइहैं । जोकहो यामें कहा प्रमाणहै कि, येसब उनहींके उपासकहैं । तो रामनामके साहब मुखअर्थमें मकार स्वतःसिद्ध सानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौनेमें साहबके जे सब पार्षद हैं तिनको वर्णन करिआये हैं । ये सब नारायणादिक रामनामहीकी उपासनाकरै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीन चाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामहीमें है जायहै रामनामकी ये सब उपासनाकरै हैं तामें प्रमाण ॥ “ नारायणःस्वयंभूश्चशिवश्चन्द्रादयस्तथा । सनकाद्याश्च योगीन्द्रानारदाद्यामहर्षयः ॥ सिद्धाः शेषादयश्चैवलोमशाद्यामुनीश्वराः । लक्ष्म्यादिशक्तयःसर्वाःनित्यमुक्ताश्चसर्वदा ॥ मुमुक्षवश्च मुक्ताश्चरूपयश्चशुकादयः । तत्प्रभावंपरंमत्वामंत्रराजमुपासते ॥ इतिवसिष्ठसंहितायाम् ॥ ” जो कहो ये सब रामनाममें साहबमुख अर्थ तौ जान्यो मायिक काहेभयो ? तौ बिना माया सबलित भये जगत्के कार्य नहीं है सकै हैं तेहिते ये सब माया सबलित हैकै कार्यकरै हैं । परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इन के नहीं होइहैं । जब महाप्रलयभई तब सबजीव साहब के लोक प्रकाशमें समष्टिरूप रहै हैं जब उत्पत्तिभई तबफिरि कर्मकरिकै उत्पत्तिहोइहै । औ ये सब नारायणादिकनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं होइ है । काहेते कि ईश्वरहैं, जब महाप्रलयभई तब जे साकेत लोकमें नारायणादिकहैं ते, इनके अंशीहैं उपास्यहैं तहां लीन हैकै रहेनाइहैं । उत्पत्ति समयमें समष्टि जीव व्यष्टि होन चाहैहैं तब राम नाममें जगत् मुख अर्थको भावना करै है, तब साकेतनिवासी जे नारायण हैं तिन्हें तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकट होइहैं । साकेतमें जे नारायणादिकहैं ते अमायिकहैं, औ तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जाय हैं ते माया सबलित हैं । सो ये सब

मत्स्यादि अवतारनको मायिक कहिके कबीरजी साहब को परत्वदेखावैहैं कि साहब सबते भिन्नहैं ॥

• संतौ आवै जाय सो माया ।

है प्रतिपाल काल नहिंवाके नहिं कहुं गया न आया ॥१॥

हे संतौ! आवैजायहै सो तो मायाको धर्म है। जे साहब परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते सबको प्रतिपालही भर करै हैं कहे उद्धार ई भर करैहैं औ काम नहिंकरै हैं । उनके कालनहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै । अथवा जो कोई वे साहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ना कहीं गये हैं न आये हैं ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना शंखासुर न संहारा ।

अहदयालु द्रोह नहिं वाके कहौ कौनको मारा ॥ २ ॥

वे कर्त्ता न वराह कहावैं धरणि धरै नहिं भारा ।

ई सब काम साहबके नाहीं झूठ कहै संसारा ॥ ३ ॥

अरु वे उद्धारकर्त्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रको क्या मकसूद कहे क्या मकसूद है अर्थात् क्या प्रयोजनहै, मच्छ कच्छ होनेका । वे शंखासुरको नहीं संहारयेहै शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको मारयो है अवतारते सब आइगये । अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षाकरै हैं उनकेद्रोह नहीं है कहौ कौनको मारयो है ॥ २ ॥ अरु वे उद्धारकर्त्ता साहब वाराह नहीं भये औ न पृथ्वीको भारा धरयो सो जौन सबकोई कहै हैं कि, ई सब काम साहबहीके हैं सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार झूठई कहैहै सो साहबको बिना जाने कहै हैं ॥ ३ ॥

खम्भ फारि जो बाहरहोई ताहि पतिज सब कोई ।

हिरणकशिपु नख उदर विदारे सो नहिं कर्त्ता होई॥४॥

बावनरूप न बलिको यांचे जो यांचे सो माया ।

बिना विवेक सकल जग जहड़े माया जग भरमाया ५

औ खम्भ फारिके बाहर है के नरसिंह रूप है नखते हिरणकशिपुके उदरको विदारयो है तौनेन व्यापक ब्रह्म को सबकोई पतियायहे सो वे उद्धारकर्त्ता परमपुरुष श्रीरामचन्द्र नहीं हैं । यह सब माया कियो है ॥ ४ ॥ औ बावन-रूप है वे साहब बलिको नहीं यांच्यो है । मांगियो पाइयो तो सब माया है सब जगत् के जीव बिना विवेक जहड़े कहे भुलाय गये हैं । सब जीवनको माया भरमाइ लियो है ॥ ५ ॥

परशुराम क्षत्री नहिं मारा ईछल मायहि कीन्हा ।

सतगुरु भक्ति भेद नहिं जानै जीव अमिथ्या दीन्हा ॥ ६ ॥

अह वे उद्धारकर्त्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र परशुराम है क्षत्रिन को नहीं मारयो है यह सब मायाही कियो है । सतगुरु कहे सैकरन जे गुरुवा हैं ते साहबके भक्तिके भेदको जानै नहीं हैं । जीव को ये जे नारायण हैं औ सब जे अवतारहैं तिनही को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कइकै कि, वे सांच साहब येई हैं तिनही की जीवन को दोषा देइ है । सो मिथ्या है ॥ ६ ॥

सिरजनहार न व्याही सीता जल पषाण नहिं बंधा ।

वे रघुनाथ एक्के सुमिरे जो सुमिरै सो अंधा ॥ ७ ॥

औ वे सिरजनहार कहे जाके सुरतिदियो ते, ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं औ जगत्की उत्पत्ति होइहे सो सीता को नहीं बिवाह्यो, औ सेतु नहीं बांध्यो । सो वे निर्विकार उद्धारकर्त्ता रघुनाथको औ ये सब अवतारनको एक करिकै सबकोई सुमिरै हैं । सो जो एक करिकै सुमिरै हैं ते अंधे हैं । काहेते कि, वे तौ रघुनाथ हैं । रघु कहिये सब जीव को तिनके नाथ हैं वे काहेको काहू के मारनको अवतार लेइंगे । वे निर्विकार औ ये माया सबलित हैंके सब अवतार लेइ हैं । जो कोई आवेनाय है सो मायिकहै सो वे निर्विकार साहब औ सविकार ये सब अवतार एक कैसे होइंगे । आ

रघु जीवको कहै हैं ते रघुशब्दकै (व्युत्पत्तिरंवतेलोकाल्लोकान्तरं गच्छन्ति रघवो-
जीवास्तेषां नाथः) अर्थ लोकेते और लोक जाय ते जीवरघु हैं तिनके नाथजे
हैं तेई रघुनाथ हैं ॥ ७ ॥

गोपी ग्वाल गोकुल नाहिं आये करते कंस न मारा ।
है मेहरवान सवनको साहब नाहिं जीता नाहिं हारा ॥ ८ ॥

औ गोपी ग्वाल गोकुल में कबहूँ नहीं आये हैं वे उद्धारकर्त्ता साहब कंसको
करते नहीं मारयो औ न मथुरागये काहेते किब्रह्म वैवर्त्तमें लिखाहै । (वृन्दावन-
परित्यज्ययादमेकं न गच्छति) ॥ वे साहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारे
हैं वे न काहूँसों जीतै हैं न हारै हैं न काहूँको मारै हैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो
वेतौ रासई करत रहे हैं ॥ ८ ॥

वे कर्त्ता नाहिं बौद्ध कहावैं नहीं असुरको मारा ।

ज्ञानहीन कर्त्ता भरमे माया जग संहारा ॥ ९ ॥

वे कर्त्ता नाहिं भये कलकी नहीं कलिंगहि मारा ।

ई छल बल सब मायै कीन्हा यतिन सतिन सब टारा १०

अरु बौद्धरूप द्वैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनको संहार कराइ
डारयो है सो सबमाया कियो है बे मुक्तिकर्त्ता साहब नहीं कियो । काहेते कि
वे मुक्तिकर्त्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैगे । सो
ज्ञानहीन जे हैं भर्मे, ते यह कहै हैं कि, यह सब उद्धार कर्त्ता जो है सोई सब
करै है सो कर्त्ता नहीं करै है यहमाया सब जगत्को संहारकरै है ॥ ९ ॥ अरु
वे उद्धारकर्त्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र कलकी अवतार नहींलियो औ न
कलिंग देशो जे म्लेक्ष हैं तिनको मारयो है यह छलबल सबमायै कियो है ।
यतिनको जो है सत्य सवताको टारिदियो है अर्थात् यती जे रहे संन्यासी
गोरखादिक तिनकर सत्य जो है साहबको जाननवारो मत तौनेको टारिदियो
योगादिकनमें लगाइदिको ॥ १० ॥

दश अवतार ईश्वरी माया कर्ता कैजिनपूजा ।

कहहिं कबीर सुनौ हो सन्तौ उपजै खपै सो दूजा ॥ ११ ॥

नारायणै माया करिकै अवतार लेइ है ते सब ईश्वरीमाया है कहे ईश्वर रूपहीमाया है तिनको जिन पूजाकहे रामचन्द्र मानि कै न पूजो वैसेपूजो तो पूजो ईश्वरमानिकै न पूजो । सो कबीरजी कहै हैं कि हेसंतौ! जो उपजै हैं औ-खपै हैं सो साहबते दूजो पुरुष हैं; वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूँ नहीं आवै जाय हैं तामें प्रमाण ॥ (पूर्णः पूर्णतमः श्रीमान्स-च्चिदानन्दविग्रहः । अयोध्याकापिसंत्यज्यसकविन्नैवगच्छति ॥ इतिवशिष्टसंहिता याम् ॥ साकेतेनित्यमाधुर्येधाम्निस्वेराजतेसदा । शिवसंहितायाम्) ॥ जो कहा इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतारलिख्यो है सोई कबहूँ आवै जाय नहीं है साकेतही में बतरहै हैं । जब कबहूँ बाणयुद्धकी इच्छा चले है तब यह अयोध्या साकेतई प्रकटहोइ है । अरु उहांके सब परिकार जमके तस प्रकटहोइ हैं । यह ब्राह्मण्डमें तहां जैसे साकेतमें बिहारकरै हैं तैसे बिहार करै हैं । याहीहेतुते ज्ञानी अज्ञानी जड़चेतनकीटपतंगादिको मुक्ति करिदियो सोश्रुतिमेंलिखैहै ॥ (ऋतज्ञानान्न-मुक्तिः) बिनाज्ञानमुक्ति नहींहोइ है सो जोवह साकेतकेशव न होते तौ मुक्ति कैसे होती । जो कहो यह ब्राह्मण्ड वह साकेतई है गयो तौ साकेतको आइबो तौ आयौ तौ सुनौ वह साकेत औ यह अयोध्या एकई है, इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्रपूर्ण हैं, तेसे साकेत तो साहबके रूपई है सो वही स-र्वत्रपूर्ण है (अयोध्याचपरंब्रह्म) इत्यादिक प्रमाणते । जब परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट बिहार करनको होइहै तब प्रकटहै जाइहैं औ जब गुप्तबिहार करनको होइहै तब गुप्त हैजाइ हैं । तब साकेत जोप्रकट औ गुप्त हैजाइहै कैसे ? जैसे श्रीकबीरजीको जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छाहोइहै तब प्रकटहोइ उपदेशकरै हैं, औ सब कोई देखैहैं । औ जब गुप्तउपदेश करन होइहै तब गुप्त उपदेशकरै हैं । जाको उपदेशकरै हैं सोई जानैहै । वे साकेत निवासी श्रीरामचंद्र जैसे सर्वत्रपूर्ण हैं तैसे उनको लोकउ सर्वत्रपूर्ण है । जोकहो उनके नामादिक तौ अनिर्वचनीय हैं वे कैसे प्रकट बचन में आवेंगे तौ, नारायण जे रामावतार लेइ हैं तेई हैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यंजित-

होइहैं, सो पीछेलिखिआये हैं । जबउद्धारकर्ता साहब प्रकटहोइ हैं तब जे देखन वारे सुननवारे हंसरूप में स्थितहैं तेई वहीरूपते देखैहैं सुनै हैं सच्चिदानन्दात्मको (भगवान् सच्चिदानन्दात्मिका अस्यव्यक्तिः) यह श्रुति करिकै एकरूपताकहि आये हैं । याहीते लोकहूको व्यापक कह्यो । औ नारायण जो रामावतारछै अशोकबाटिकामें लीलाकियो सो वर्णनकरि मन बचनके परे जे साहबहैं तिनके लीलाको व्यंजितकरै हैं । सो व्यंजित तो करै हैं परन्तु मनबचनके परे जेसाहबहैं तिनके नामरूप लीलाधाम मनबचनके परे साकल्य करि कैव्यंजितऊ नहीं करिसकै हैं । सो यह बातजो कोई साहब करिकै हंसरूपपाये हैं, सोसाहबके मनकरिकै साहबको नामादिक जानै है । औ जपै है औ साहबके दिये रूपकी आंखीते साहबको देखै है । तामें वेदसारोपनिषद् को प्रमाण ॥ ३७ ॥

(जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्यप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोऽयंज्ञात्वेहविमुक्तो-
भवतीति ॥ १ ॥ सहोवाचकौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधाम-
लीला मनो वचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशं कथमहं शक्तुयांविज्ञातुंज्ञापकाज्ञा-
नादितिसपुनः प्रतिवक्ति अथैते श्लाकाभवन्ति ॥ विरजायाः परेपारेलोकोवैकुण्ठसं-
ज्ञितः ॥ तन्मध्येराजतेयोध्या सच्चिदानन्दरूपिणी ॥ ३ ॥ तत्रलोकेचतुर्बाहू
रामोऽनारायणः प्रभुः ॥ अधोध्यायांयदाचास्य अवतारोभवेदिह ॥ ४ ॥ तदा-
स्ति रामनामेदमव-रविधौविभोः ॥ तन्नाम्नोनामरहितस्याम्ना तं नाम तस्यहि
॥ ५ ॥ दशकंउवधाद्यादिलीलाविष्णोः प्रकीर्तिताः ॥ सकदाचिच्च कल्पेस्मिँ-
ल्लोकेसाकेतसंज्ञिते ॥ ६ ॥ पुष्पयुद्धंरघूत्तंसः करोति सखिभिः सह ॥ ७ ॥ कस्मि-
न्कल्पेतरामोसौ बाणजन्येच्छयाविभुः ॥ तैरेवसखिभिः सार्द्धमाविर्भूय रघूद्वहः
॥ ८ ॥ रावणादिवधेलीला यथाविष्णुः करोतिसः ॥ तथायमपितत्रैवकरोति-
विविधाः क्रियाः ॥ ९ ॥ क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः ॥ लीला-
निर्वचनीयत्वंततोभवतिसूचितम् ॥ १० ॥ किंचायोध्यापुरोनामसाकेतइतिसो-
च्यते ॥ इमामयोध्यामाख्याय सायोध्यावर्ण्यतेपुनः ॥ ११ ॥ अनिर्वाच्यत्व-
मेतस्याय्यक्तमेवानुभूयते ॥ रामावतारमाधत्तेविष्णुः साकेतसंज्ञिते ॥ १२ ॥
तद्रूपंवर्णयित्वानिर्वचनीयप्रभोः पुनः ॥ रूपमाख्यायतेविद्भिर्महतः पुरुषस्य हि
॥ १३ ॥ इत्यथर्वणवेदेवेदसारोपनिषदिप्रथमखण्डे) श्रीकबीरजीका यहीमतहै
कि, साकेतछोड़िकहूं नहींजायहै नित्यबिहारी हैं ॥ ११ ॥

अथ नवमशब्द ॥ ९ ॥

संतौ बोले ते जग मारै ।

अन बोलेते कैसे वनिहै शब्दै कोइ न विचारै ॥ १ ॥

पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमिया पाछे ।

बाप पूतकी एकै माया ई अचरज को काछे ॥ २ ॥

उंदुर राजा टीका बैठे विषहर करै खवासी ।

इवान बापुरा धरनि ठाकुरो विछी घरमें दासी ॥ ३ ॥

कागज कार कारकुड़ आगे बैल करै पटवारी ।

कहहि कबीर सुनौ हो संतौ भैसें न्याउ निवारी ॥ ४ ॥

संतौ बोले ते जग मारै ।

अनबोलेते कैसे वनिहै शब्दै कोइ न विचारै ॥ १ ॥

पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमिया पाछे ।

बाप पूतकी एकै माया ई अचरज को काछे ॥ २ ॥

हे संतौ! जो बोलौहो कहे जोमें बताऊँहों सोतो मानै नहीं है बोलेते जगमा-
रैहै कहे शास्त्रार्थकरैहै ओ जो न बोलौ तो वनैकैसे शब्दको कोई नहीं विचारै
॥ १ ॥ अरु पहिले पूतजो जीव है ताको जन्म द्वैलेइहै तब पिता जोहै जीव-
को अनुमान ब्रह्म ताको जन्म होइहै । पिताजीवको कोहते कह्यो कि, जब शुद्ध
जीव एकते अनेक ब्रह्मही द्वारभयोहै वह माया सबलित ब्रह्मपूतहै औ जीव
मायाहीमें परचोहै दोनों माया सबलितहैं सो बापजोहै जीव औ पूतजोहै ब्रह्म
तिनकी महतारी एक मायाही है अर्थात् यहीते अनादिकालते दोनों प्रकटहैं
वहीमें पैरहैं । सो तैं विचारु तौ यह अचरजको काछेहै अर्थात् तैंहीं अपने
अज्ञानते यह अचरज काछे है औ नानारूप धरेहै ॥ २ ॥

उंदुर राजा टीकाबैठे बिषहर करै खवासी ।

श्वान बापुरा धरनिठाकुरा विल्ली घरमें दासी॥ ३ ॥

उंदुर जोहे मूस सो तौ राजा भयो टीकामें बैथ्यो औ बिषहर सर्प सो खवासी करैहै औ श्वान बापुरा जो है सोधरनि ठाकुरा कहे बस्तु लैके ढांकिके धरे है कहे भंडारीहै औ विल्ली घरमें दासी है सो खानवालिनि है । अर्थात् उंदुरकहे वह साहबको ज्ञान जाको दूरकै दियो है । उंदुरमूसको संस्कृतमें कहै हैं सो उंदर कहे मूसतो जीवहै सो उंदुर शरीरको आपनो मानिलियो है सोई राजाभयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्पसो कालहै । सो खवास भयो कहे क्षण पल घरी पहर वाको खात बीता तो होतनायहै सो खवास द्वैकै यहकाल वाकी आयुर्दायको खातई जायहै । औ नाना प्रकार की जो बिषयहैं तेई बीराहै ताको खवावत जायहै । अरु श्वानकहे वह स्वानुश्वानन्द जोहै सो बापुरा जो जीव ताकोधरिकै ढांकि लियो है कहे साहबको ज्ञान नहीं होअ देइहै औ विल्ली जोहै षट् दर्शनकी बाणी सोधरमें दासी द्वैरही है कहे नाना मतन में लगावैहै साहबकी भक्ति रस जो है सोई है गोरस ताको खाइ लेइ है ॥ ३ ॥

कागज कार कारकुड आगे वैल करै पटवारी ।

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो भैंसै न्याउ निवारी॥४॥

कागज कार कहे लिखो कागज कार कुड जो वैलहै ताको आगे धरो है । सोई वैल पटवारी करैहै । सो कारो कागज कहे लिखो कागज जो गुरुवा लोगनकी बनाई पोथी तिनको आगेधरिके वैलजे गुरुवा लोगन के चेलाहैं ते पटवारी करै हैं । अर्थात् कायानगरी के बसैया जे मन बुद्धि चित्त अहंकार पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दशौ इन्द्रिय तिनको बिचारिके कि, कौन काके-आधीनहै ज्ञानरूपी द्रव्य तहँसील करैहै । वा पटवारीकैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै । या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मैते चैतन्यहैं याते आत्मै मालिकहै । यह निश्चयकियो । सो कबीरजी कहै हैं हे संतो ! तुम सुनो वहां भैंसा जो है सोई न्याउ निवारैहै, इहां भैंसाकहे गुरुवालोग जो हैं सोआपचहलामें परहैं औ चहलामें परोजो

जीव ताहीको मालिक बतावै हैं । और चेला जे हैं तिनहूं को मायाके चहलामें डारैहैं ऐसो न्याउ निवारैहैं । भाव यहैहै कि, भैंसा यमकी असवारी है सो यमही पुर को लैजाइगो । तहां जब यमके लट्ठा लगैगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ॥ ४ ॥

इति नवमशब्द समाप्त ।

अथ दशवां शब्द ॥ १० ॥

(मजहब)

संतो राह दुनों हम डीठा ।

हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानै स्वाद सवनको मीठा ॥ १ ॥
हिन्दू व्रत एकादशि साधै दूध सिंघाड़ा सेती ।
अनको त्यागै मन नहिं हटकै पारन करे सगोती ॥ २ ॥
तुरुक रोजा नमाज गुजारै विसमिल बाँग पुकारै ।
उनकी भिंस्त कहाँते होइ है सांझै मुर्गी मारै ॥ ३ ॥
हिन्दूकि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घटसों त्यागी ।
वै हलाल वै झटका मारै आगि दुनों घर लागी ॥ ४ ॥
हिन्दू तुरुक कि एक राहहै सदगुरु इहै बताई ।
कहाहि कबीर सुनौ हो संतो राम न कहेउ खोदाई ॥ ५ ॥

संतो राह दुनों हम डीठा ।

हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानै स्वाद सवन को मीठा ॥ १ ॥

हे संतो! हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानै है । हम सबको समुझावते हैं कि विषयनको छोड़िके देखो तो दूनोंकी राह एकई है सो दूनों दीनको विषयनको स्वाद मीठो लग्यो है यहीके मिलनकी उपाय करै हैं साहबको नहीं खोजै हैं ॥ १ ॥

हिन्दू व्रत एकादशि साथैं दूध सिंघाड़ा सेती ।
 अनको त्यागैं मन नहिं हटकैं पार न करैं सगोती ॥ २ ॥
 तुरुक रोजा नमाज गुजारैं विसमिल बाँग पुकारैं ।
 उनकी भिश्त कहाँते होइहै सांझै मुर्गीमारैं ॥ ३ ॥

हिन्दू जे हैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी व्रत साथैं हैं कहे उपासे रहै हैं औ फलाहार करै हैं । औ बिहान भये नानाप्रकारके व्यंजन बनाइकै सगे जे हैं गोतीभाई तिनको लैकै पारण करै हैं औ मनको नहीं हटकै हैं कहेदशौ इन्द्रिय ग्यारहों मनको नहीं हटकै हैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करै हैं । अथवा जैसे सगोतीमें कहे सगाई में अर्थात् जैसे बिवाहमें जाफतमें खाय हैं तैसे पारण करै हैं ॥ २ ॥ औ मुसलमान रोजा रहै हैं औ नमाज गुजारैहैं औ विसमिल्लाको बाँग दैकै पुकारैं हैं औ सांझको मुर्गी मारिके पोलाव बनाइ खाय हैं सो कहोतो उनकी भिश्त कैसे होइगी ॥ ३ ॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घट सों त्यागी ।
 वेहलाल वे झटका मारैं आगि दुनों घर लागी ॥ ४ ॥

हिन्दूकी दया तुरुककी मिहर है जो हिन्दू दया करत तौ यम ते छूटत अरु जो मुसलमान मिहर करत तौ यमते छूटत । सो ये दोऊ दया औ मिहरको आपने घटते त्यागि दियो है मुसलमान कहैं हैं कि गलेकी रगसेभी अल्लाह नगीचैहै औ घट घट में मौजूदहै औ गला काटतई हैं सो गौ सेइकै गला काटते हैं औ हिन्दू कहैं हैं कि ब्रह्मसर्वत्र पूर्ण है औ झटका मारैं हैं कहे मूड़ काटिडारै हैं सोऊ ब्रह्म की ही गलाकाटै हैं या प्रकार ते कबीर जी कहै हैं कि दूनों घरमें आगिलगी है यह अज्ञानरूपी आगि दूनों को बुद्धिको दाहे डारै है ॥ ४ ॥

हिंदू तुरुक कि एक राह है सतगुरु इहै बताई ।
 कहहि कबीर सुनो हो संतो राम न कहौ खोदाई ॥ ५ ॥

हिन्दू मुसलमानकी एकै राहहै राम न कह्यो खोदाइ कह्यो खुदा न कह्यो राम कह्यो । नाम सब वही बादशाहके हैं सो वह बादशाहको हिन्दू तुरुककी

एतीबड़ी गुस्ताखी कब नीक लगैगी । अथवा हिन्दू तुरुक की एक राहहै कहे
एक रामनाम लियेते उद्धार होइहै सो कर्मते निवृत्त हूँ न हिंदू राम कहैं न
मुसल्मान खोदा कहैं आपने आपने कर्म में सब लगे हैं तेहिते माया कैसे छूटे ।
अथवा न नारायणराम कह्यो कि तुम झटका मारौ न खोदा इकह्यो कि तुम
हलाल करौ ये दोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियो है ॥ ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्त ।

अथ ग्यारहवां शब्द ॥ ११ ॥

(ब्राह्मण)

संतो पांडे निपुण कसाई ।

वकरा मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्द न आई ॥ १ ॥
करि स्नान तिलक करि बैठे विधिसों देवि पुजाई ।
आतम राम पलकमो विनशे रुधिरकी नदी बहाई ॥ २ ॥
अतिपुनीत ऊंचेकुल कहिये सभा माहिं अधिकाई ।
इनते दीक्षा सबकोइ मांगै हंसि आवै मोहिं भाई ॥ ३ ॥
पाप कटनको कथा सुनावैं कर्म करावैं नीचा ।
बूढ़त दोउ परस्पर देखा गहे हाथ यम घींचा ॥ ४ ॥
गाय वधै तेहि तुरुका कहिये उनते वैका छोटे ।
कहहि कबीर सुनौहौ संतो कलिके ब्राह्मण खोटे ॥ ५ ॥

संतो पांडे निपुण कसाई ।

वकरा मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्द न आई ॥ १ ॥
करि स्नान तिलक करि बैठे विधिसों देवि पुजाई ।
आतमराम पलकमो विनशे रुधिरकी नदी बहाई ॥ २ ॥

हेसंतो ! पांडे निपुण कसाई हैं काहेते कि, कसाई अबिधिते मारै है वह बिधिते मारै है याते निपुण है । बकराको मारिके भैंसाके बलिदान दीबेको धावै है ॥ १ ॥ स्नान करिके रक्तचंदनके बड़ेबड़े तिलक दैके बैठे है औ बिधिसों देवीको पुजावै है अरु यह कहै है अंतर्यामी सर्वत्र है, औ बकरा भैंसाको मूडकाटि डारै है, रुधिरकी नदी बहनलगै है तबवह आतमरामजो है जीव (कहे आत्माजो है शरीरतेहि बिषे है आरामजाको) सो बिनशि जायैहै कहे शरीरते जुदा हैजाय है ॥ २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये सभा माहँ अधिकारै ।

इनते दीक्षा सब कोउ मांगै हँसि आवै मोहिं भाई ॥३॥

सो ऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अति पुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं । अरुसभामें उनहींकी अधिकारै है कहे शास्त्रार्थ करिके सभामें आपनिन अधिकारै राखै है । तेहिते सबकोई दीक्षामांगै हैं कि, हमको दीक्षादै संसारते उबारिलेउ । सो यह देखिकै मोको हँसी आवै है कि, आपई नरकमें जाइ है तौ और को नरकते कैसे उबारि है अर्थात् तोहूको वही नरकमें डारिदेई है ॥ ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावै कर्म करावै नीचा ।

बूढ़त दोउ परस्पर देखा गहे हाथ यम घींचा ॥ ४ ॥

बोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावै हैं रामायणादिक औ वही कथामें वर्णन है कि, रघुनाथजी शिकार खेलै हैं । सो गुरुवालोग कहै हैं कि तुमहूँशिकारखेलो । यहनहीं जानै हैं कि रघुनाथजी तिर्यग्योनि वालेन परदया करी कि, ई ज्ञानभक्ति बैराग्यकैसे करैगे याते मारिकै मुक्तिकरिदेइ हैं और हम इनको मारैंगे तो पाप ते हमई दोऊ नरकै जायँगे । याहीते दोऊगुरु चेलाको परस्परनरकमें बूढ़त देख्यो है तिनको नरकमें डारिबेको यमघींचही धरै हैं । नरकमें डारिदेहिंगे तब नरकमें गुहमूत्र खाइगो औ मारो जाइगो । औ जो जीवनको मारिकै मांस खायो है तेई वाके मांसको खायँगे । औ अपने २ सींगन ते खुरनते मारैंगे । याते मांस खायो है वै जीवतही मांस खायँगे । इहांते जो जीवन को वह मारयो तिनको क्षणइमात्रको क्लेश है औ उहां वे जीव

वाको बारंबार मारिगे । मरणको क्लेश क्षणमें होइगो औ यातना शरीर लाख-
नवर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़ पुराणादिक में प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

गाय वधै तेहि तुरुका कहिये उनते वैका छोटा ।

कहहि कबीर सुनो हो संतो कलिके ब्राह्मण खोटा ॥५॥

जे गायको मारै हैं ते मुसल्मान कहावै हैं सो इनते वै का छोटे हैं । तुरुक
गायमारै हैं अरु वै भेड़ा भैंसा मारै हैं । आत्मातो सब एक हीहै । सो कबी-
रजी कहै हैं कि, हे संतो ! कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहे ते कि, जे शास्त्र
को नहीं समुझै तेतो मूढ़ही हैं, वे खोटकर्म करोई चाहैं परन्तु जे शास्त्रको
समुझै हैं तिनहंको समुझाईके खोटकर्ममें लगाइ देइ हैं अपनी पाण्डित्यके
बलते । ब्राह्मण जो कह्यो ताको या अर्थ है सबको यही समुझावै है को काको
मारै है सर्वत्रतो एकई ब्रह्म है औ कोई या समुझावै है कि बलिदानदै देवीको
प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञान दै ब्रह्मबनाइ देइगी ॥ ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्द समाप्त ।

अथ बारहवां शब्द ॥ १२ ॥

संतो मतेमात जनरंगी ।

पीवत प्याला प्रेमसुधारस मतवाले सतसंगी ॥ १ ॥

अर्धऊर्ध्वलै भाठी रोपी ब्रह्म अगिनि उदगारी ।

मूंदे मदन कर्म कटि कसमल संतत चुवे अगारी ॥ २ ॥

गोरख दत्त वशिष्ठ व्यासकवि नारद शुक मुनि जोरी ।

सभा वैठि शंभू सनकादिक तहँ फिरि अधर कटोरी ॥ ३ ॥

अंबरीषऔ याग जनक जड़ शेष सहस मुख पाना ।

कहँलों गनों अनंत कोटि लै अमहल महल दिवाना ॥ ४ ॥

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माते माती शिवकी नारी ।
 सगुण ब्रह्म माते वृन्दावन अजहुं न छूटी खुमारी ॥ ५ ॥
 सुर नर मुनि जेते पीर औलिया जिन रे पिया तिन जाना ।
 कहै कबीर गूंगेकी शकर क्यों कर करै बखाना ॥ ६ ॥

संतो मते मात जन रंगी ।

पीवत प्याला प्रेम सुधारस मतवाले सतसंगी ॥ १ ॥

संतो मतेकहे संतनके जेमतेहैं जिनमें रंगेने जनहैं तेईमात कहे मातिरहे हैं ।
 “रंगच्छतीतिरंगः रंगोस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरंगी” रकार बीजको जो कोई प्राप्त होइ
 है सो रंग कहाँवसो रकार बीज रामोपासकनके होइहैते रामोपासक जाके गुरुहोइ
 सोकहवैरंगी । अथवा सुराति कमल बैठे जे परम गुरुहैं ते रकार बीजको उच्चार
 करैहैं, सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइके सुने सो रंगीहै। सोई रंगी संतनके
 मतमें माते है । औ कबीरऊ रकारई बीजको जपत रहैहैं सोबंशावलीमें लिख्यो
 है । श्रीरामरामसिंह बाबाकबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धांतहै तब कबी-
 रजी कह्यो ॥ “ रा अक्षर बट रम्यो कबीरा। निज घर मेरो साधु शरीरा ” ॥
 सो पीछे लिखाये हैं । अरु सुधाको मादकधर्म है सो श्रीरामचन्द्र के प्रेम-
 रूपी प्याछामें भरयो जो है सुधारसरूपा भक्ति ताको जे पानकरै हैं तिनके
 सत्संगी जे हैं तेऊ मतवाले हैनायहैं कहेपरम सिद्धांतवाले जो मत है तेहि तें
 युक्त हैजाईहैं । अथवा रसरूपा भक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रस
 आनन्दको कहै हैं सो आनन्दमें निमग्नरहै हैं तामें प्रमाण ॥ “ रसोवैसःरस-
 होवायंलब्ध्वानन्दीभवति ॥ ” इतिश्रुतेः इहां सुधारस को कह्यो ताको हेतु यह
 है कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जनन मरण छोड़िके अमर होयहैं औरनको
 जनन मरण नहीं छूटै है अरु वह रसरूपा भक्ति मधि उत्पत्ति भयो है ताको
 रूपक करिके समुझावै हैं ॥ १ ॥

अर्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी ब्रह्मअग्नि उदगारी ।

मूंदे मदन कर्मकाटि कसमल सतत चुवै अगारी ॥ २ ॥

उहां समेटिकै कहिआयेहैं अबइहां रसरूपा भक्तिको मदको रूपककरिके कहै हैं । अध कहे नीचेके लोक ऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्यंत जो सारासारको विचार (सारकहे चित् अचित् रूप साहबको या जगत् मानिबो औ असार कहे नानात्व जगत् मानिबो या जो विचार) सोई भाठी रोपतमये । औ तेहि ते भयो जो यथार्थज्ञान कि, सब सच्चिदानन्द स्वरूपहै काहेते चित्तौ अचित साहबको रूपहै यहिहेतु ते सोई ब्रह्म अग्नि उदगारीकहे वारन भये । महुवा नरमें धरैहै इहांमदन जोभनोन तौनैजोहै शरीरनर अर्थात् वीर्यते शरीर होइहै सो अंतःकरण में मूंदे । जे साहबकी अनेक प्रकारकी जो लीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुवादिक द्रव्यहैं, तिन्हैं जोकर्मनकी बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कसमल ताको काटिडारयो, तब निश्चयात्मक बुद्धिजे पात्र तामें रसरूपाभक्ति रूपजो अगारी सो निरंतर चुवनलागी ॥ २ ॥

गोरख दत्त बशिष्ठ व्यास कवि नारद शुकमुनि जोरी ।

सभा बैठि शंभू सनकादिक तहँ फिरि अधर कटोरी ॥३॥

गोरख दत्तात्रय बशिष्ठ व्यास कवि कहेशुक नारद शुकमुनि कहे शुकाचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरतभये । औ सभाके बैठैया जे हैं शंभु सनकादिक तहां रसरूपा भक्ति जो सुधा रस तेहि करिके भरी जो है प्रेम रूपी कटोरी सो तिनके अधरहैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकैहै अर्थात् न मनमें आवै न बचनमें आवै वाके पानकरतमें छकि सब जायहैं । रसवाच्यमें नहीं आवैहै यहसर्वत्र ग्रंथनमें प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

अंबरीष औ याज्ञ जनक जड़ शेष सहस मुख पाना ।

कहँलों गनों अनंत कोटिलै अमहल महल देवाना ॥ ४ ॥

अंबरीष औ याज्ञवल्क्य औ जड़भरत औ शेषकहे संकर्षण औ सहसमुख कहे शेषनाग ते पान करतभये । सो कहँलों मैं गनों परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहल महल अनंत कोटि हैं ताहीमें लीनभये औ दिवाना होतभये कहे मत्तहोतभये । इहां अमहलमहल जोकह्यो सोऊ जे अयोध्याजीके महलहैं अमहलहैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पांचभौतिक नहीं हैं । अरु महल

जो कह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्त्तमान बने हैं । अमहल कह्यो याते निर्गुणधर्म आयो औ महलकह्यो याते सगुणधर्म आयो । सगुणानिर्गुण में नहीं होयहै । निर्गुण सगुणमें नहीं होयहै उन में दोनों धर्म बने हैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं । तिनमें जायके दिवाने भये । माया ब्रह्ममें जो दिवानेरहे सो छोड़ि दिये । अमहलमें दिवाना द्वै गये महलन में साहबकी अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यान कैकै हंसरूप में स्थित द्वैकै रसरूपाभक्ति पानकैकै छकिरहे । रसरूपाभक्ति शांतशतक के तीसरे खंड में औ रामायणादिकमें हमलिखेन है सो देखिलेहु ॥ ४ ॥

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माते माती शिवकी नारी ।

सगुणब्रह्म माते वृन्दावन अजहुं न छूटि खुमारी ॥५॥

औ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण औ पार्वती मतिगई औ सगुण ब्रह्म जे साक्षात् नारायण श्रीकृष्ण हैं तेऊ वृन्दावन में मतिगये । अबहुं भरखुमारी नहीं छूटी की भाव यहैहै कि, जिनके शरीर छूटै तेतो साकेतहीमें जाय दिवानेभये कहे प्रेम में लके । ओ जिनके शरीर बनेहैं तिनहूँकी खुमारी नहीं छूटी कहे अबहुं भर श्रीरामचन्द्रहीकी उपासना करेहैं तामें प्रमाण ॥ (पूजितो नंदगोपायैः श्रीकृष्णेनापि पूजितः । भद्रयामहिषीभिश्च पूजितोरघुपुङ्गवः ॥) यह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौने को प्रमाण सब आचार्य दियो है ॥ ५ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया जिनरे पिया तिन जाना ।
कहै कबीर गूंगे को शक्कर क्यों करि करे बखाना ॥ ६ ॥

औ सुर नर मुनि जेते पीर औलिया हैं तिन में जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियोहै तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है औ तेई मन बचनके परेहैं । जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है । सो जिनजान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूंगे को शक्कर है काहेत वह मन बचनकेपर है, जब वहीभांति उहोहै जाय तब वाको स्वाद पावै । काहू सों वाको कोई बखान नहीं करि सकैहै । सो कबीरजी कहैहैं । जो कोई कहै यहअर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला जो कबीरजी ब्रह्मको कहिआयेहैं वहीको पीपीकै सब मतवार द्वैगये हैं, सांचपदार्थ

नहीं जान्यो, तौ हम यह कहै हैं कि, जिनको कबीरजी आगे वर्णन करिआये हैं तेई नहीं जान्यो तौ तुमहीं कैसे जान्यो ? जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीको कह्यो तो तुमही झूठ कहौहो । जो कहो पारिख करिके जान्यो तो पारिख किधे तौ मन बचनके परे औ निर्गुण सगुणके परे जे शुद्ध जीवात्मा सदा रघुनाथजीके निकटवर्त्तीति और श्रीरामचन्द्र येई आवै हैं वेद शास्त्रमें प्रमाण मिलै हैं तुम पारिख कहिके मन बचनके परे कौन पदार्थ-राख्यो है । जो कहो हम जीवात्माको मानै हैं औ कोई ब्रह्मको मानै हैं तौ आत्मा औ ब्रह्म येह नाम है बचनमें आय गयो । औ तुम जो विचार करौहो सो मन में आय गयो । जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्रको मन बचनके परे कहौहो वोऊतो मन बचनमें आय जाय हैं; तौ हम पूर्व लिखिआये हैं कि, नारायण राम अवतार लेईहं तिनके नामरूप लीला धामके वर्णन करिके, वे जे परमप-रपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सपरिकर लक्षित करै हैं । वे मन बचनके परे हैं औ यहू आगे लिखिआये हैं कि ॥ (ऐसी भांति जो मोकहूँ ध्यावै । छठयें मास दर-श सो पावै) ॥ सो अपनी इन्द्रिय है आपै देखे परे हैं जो कोई उनके प्रसन्न करिबेको उपाय करै है सो साहिबैके जनाये जानै है । तामें प्रमाण कबीरजी की साखी सागर की चौपाई ॥ (जानैसो जोमहीं जनाऊं । बांह पकरि लोके लै आऊं) ॥ बीजकोमें लिखी है साखी ॥ (बहुबंधन ते बांधिया एक बिचारा जीव । काबल छूटै आपनो जो न छुड़ावै पीव) ॥ उनको वर्णन कोई जीवनहीं करि सकै है, ते-हिते जो पारिख हम कियो सोई सांच है जो तुम पारिख करौहो सो झूठ है । तुम श्रीकबीरजीको अर्थ जानते नहींहो भ्रममें लगेहो अनामा उनहीं को नाम है अरु बोई हैं तामें प्रमाण ॥ (अनामा सो प्रसिद्ध त्वाद रूपो भूत वर्जनाव ॥ इति वायुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति बारहवांशब्द समाप्त ।

अथ तेरहवांशब्द ॥ १३ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै ।

गति मति वाकी समुझि परै नहिं सुर नर मुनिहिं नचावै ॥ १ ॥

काँ सेमरके शाखा बढ़ाये फूल अनूपम बानी ।
 केतिक चात्रिक लागि रहेहैं चाखत रुवा उड़ानी ॥ २ ॥
 कहा खजूर बढ़ाई तेरी फल कोई नहिं पावै ।
 ग्रीष्म ऋतु जब आय तुलानी छाया काम न आवै ॥ ३ ॥
 अपना चतुर और को सिखवै कामिन कनक सयानी ।
 कहै कबीर सुनो हो संतो ! रामचरण रति मानी ॥ ४ ॥

राम तेरी माया डुंदि मचावैं ।

गति मति बाकी समुझि परै नहिं सुर नर मुनिहिं नचावै ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे जीवो ! राममें जो तिहारी माया जो कष्ट सो दुन्दिमचावै है । कैसीमायाहै कि, जाकी गति मति नहीं समुझिपरै, सुरनर मुनि जे हैं तिनहूँ को नचावै । अर्थात् उनहूँको लागिहै । सो साहब को न जानिवो रूपकारण जगत्को आदि मंगलमें कहि आये हैं ॥ १ ॥

का सेमरके शाखा बढ़ाये फूल अनूपम बानी ।

केतिक चात्रिक लागि रहेहैं चाखत रुवा उड़ानी ॥ २ ॥

सो हेजीवो ! तुम द्वन्द्वमाया को त्यागो साहबको जानो यासंसाररूप सेमरको वृक्ष तामें नाना बासना नाना देवतनकी उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै । नौनेवृक्षमें अनुपम कहे साहब के जाननेवारे विशेषकर ज्ञानवारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी वाणीसोई फूलहै । ताहीते भयो जो धोखा ब्रह्मको ज्ञान सोई-फलहै । तामे केतकौ चात्रिकरूप जीवलागि रहेहैं । इहां चात्रिकै कह्यो और पक्षी न कह्यो, सो चात्रिक पियासो रहै है और इनहूँके मुक्तिकी चाह रहैहै । पक्षी रस नहीं पावै है इन मुक्ति नहीं पावै है । चाखतमें रुवा उड़ै है पक्षीके जीभमें लपटिजाय है, जीभडु को रससूखि जायहै । इहां वा ज्ञानको जब अनु-

भव कियो तब गुरुवालोग बतायो कि तुमहीं ब्रह्महौ, तुम्हारई जीवात्मा मालिकह सबको । राम सबको खाय लेयैहै रामको का भजो रामतौ मायिकहै । जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें बासनारही सोऊ छूटिगई । यही गुरुवाहै पक्षी वा रस नहीं पावै है तबखेद होइ है औ या वही ज्ञानमें दृढ़ता करिके उड़त उड़त नरकही में गिरै है नरकमें दुःख पावैहै ॥ २ ॥

कहा खजूर बड़ाई तेरी फल कोई नहिंपावै ।

ग्रीष्म ऋतु जब आय तलानी छाया काम न आवै ॥ ३ ॥

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टांतदेके कहै हैं । खजूरकी बड़ाई ले कहा करै फल तो कोई पावतै नहीं है । ग्रीष्मऋतु में छायाकाहूके काम नहीं आवैहै । वाके तरेही रहैहै, आतप तपतै रहै है । ऐसे हे गुरुवा लोगो ! तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि, मैंही ब्रह्महौं, मोते बड़ो कोई नहीं है, आत्मै मालिक है। सो न कोई ब्रह्मै भयो ना आत्मै मालिक भयो या फल कोई नहीं पायो । जो कोई तुम्हारे मत में आवैहै उनको जनन मरणरूप ग्रीष्म तापनहीं छूटै है या तुम्हारो उपदेश रूप छाया काहूके काम नहीं आवै है ॥ ३ ॥

अपना चतुर औरको सिखवै कामिनि कनक सयानी ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो रामचरण रतिमानी ॥ ४ ॥

गुरुवालोग कनक कामिनीके मिलिवेको आप चतुर द्वैरहे हैं । कनक सुवर्ण कहावै है सो आत्मा को सुवर्ण जोहै स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनीमें लप-ट्योहै तोहिते शुद्धनहीं है । अथवा कनक जोहै सुवर्ण सो शुद्धहै औ सुवर्णके जेहें भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्याहैं । ऐसे और सबको मिथ्या-मानिके एकब्रह्म हीको मानिबो । औ कामिनीमें सयानी कहे ज्ञान करिकैं विचारै है कि, कामिनी माया हई नहीं है, मिथ्या है । यही सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखै है औ औरहूको सिखावै है परन्तु जननमरण होतई जायहै माया नहीं छूटै है सो कबीरजी कहै हैं कि, हेसंतो ! याहीते मैं ये बखेड़नको छोड़ि-के परमपरपुरुष जे श्रीरामचंद्र हैं तिनके चरणनमें रतिमान्यो है । इहां संतनको

साखी दैकै जो कह्यो ताकोहेतु यहहै कि, संत समुझैंगे कि, सांच कहैं हैं कि, झूठ कहैं हैं । अथवा हे जीवो ! मेरो सिखावन सुनो—श्रीरामचन्द्रके चरणमें रतिमानिके जैसे, सब भयो है, नानामत कियो है, तैसे, एकबार मेरो वचन सुनि रामचरणमें रतिमानिके संत होउ । वंग्य यहहै कि, जो संतहोउगे तो जननमरणते रहित हैजाउगे औरी भांति न छूटौगे । अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अनो चतुर नहीं है मायाही मैं परे हैं और और को कनक कामिनीमें सयानी कहे बिचारकरावै है कि, कनक कामिनीरूप मायाको बिचारकै देख्यो या मिथ्या है । सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेशते कनककामिनी माया कब त्यागैंगे ॥ ४ ॥

इति तेरहवां शब्द समाप्त ।

अथ चौदहवांशब्द ॥ १४ ॥

रामरा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यमलूटै ॥ १ ॥
 है मसकीन कुलीन कहावो तुम योगी संन्यासी
 ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ई मति काहु न नासी ॥ २ ॥
 स्मृति वेद पुराण पढ़ै सब अनुभवभाव न दरसै ।
 लोह हिरण्य होय धौ कैसे जो नहि पारस परसै ॥ ३ ॥
 जियत न तरे मुये का तरिहौ जियतै जो न तरै ।
 गहि परतीति कीन जिन जासों सोई तहैं मरै ॥ ४ ॥
 जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझु सयाना ।
 कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यमलूटै १

हैं मसकीन कुलीन कहावौ तुम योगी संन्यासी ।

ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ई मति काहु न नासी ॥ २ ॥

रामराकहे रकार जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिन को अभावहै, रामोपासक नहीं हैं, तिनकी संशयकी गांठिनहींछूटै है, तेहितेपकरिपकरिके यम लूटिलेइहैं अर्थात् याकोमारिकै नरकमें डारिदेई हैं । फिरिफिरि शरीर पावै है फिरिलूटि जायहै मारो जायहै ॥ १ ॥ मसकीन कहे गरीब फकीर हैंकै कुलीन कहावै है कहे भये तौ फकीर परन्तु कुलाभिमान नहीं छूटै है कहै हैं कि, हम-फलाने गद्दीके मुरीदहैं । सो तुम योगी हौ संन्यासी हौ ज्ञानी हौ गुणी हौ शूर हौ कविहौ दाताहौ इत्यादिक जो भेदकी मति हैं सो कोई न नाशकियो काहेते कि, हे संतो ! ये परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो यह कोई नहीं जान है औ यह जगत् चित् अचित् बिग्रहकरिके साहबको रूपहै भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है ॥ २ ॥

स्मृति वेद पुराण पढ़ै सब अनुभव भाव न दरसै ।

लोह हिरण्य होय धौ कैसे जो नहिं पारस परसै ॥ ३ ॥

स्मृति वेद पुराण सबै पढ़ै हैं परंतु परमपरपुरुष जेश्रीरामचन्द्रहैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहुको नहीं दरसै है । जो पारसको स्पर्श न होय तौ लोह हिरण्य कहे सोन कैसेहोय न होय । तैसे स्मृति वेदपुराणनको तात्पर्य श्रीराम-चन्द्रहैं तिनके चरणको जोछौं न परसै तौलौं मुक्ति नहीं होयहै पार्षद रूपत्मा वाको प्राप्ति नहीं होयहै ॥ ३ ॥

जियत न तरै मुयेका तरिहौ जियतै जो न तरै ।

गहि परतीति कीन जिनजासों सोई तहैं मरै ॥ ४ ॥

जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना ।

कहै कवीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

सो जियतमें जो न तुम तरोगे तौ मुयेकैसे तरौगे । सो हे जीवो ! जियतै काहेनहीं तरिजाउहौ । जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्शकिये जीव शुद्ध

हैं जायहैं तौने साहबसों जो कोई (जहैं साहबको मत गहिकै) परतीति कहे
 बिश्वासकीनहै सो जानतहै कहे संसारहिमें अमर है गयो है ॥ ४ ॥ सो कबी-
 रजी कहें हैं कि, ये जीव ज्ञान करैं हैं कि अज्ञान करै हैं ताहीको सब कुछ
 मानिकै आपने को सयान मानैहै तिनसों कहा कहिये जो अपनी दृष्टिते देखत
 देखत भुलायदियो । स्मृतिवेद पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको कहैं
 हैं, उनहीके भक्त हनुमान् विभीषणादिक अमर भयेहैं, सो देखतेहैं औ यह नहीं
 समुझैं कि, सबके मालिक बादशाह श्रीरामचद्र हैं, इनहीके छोडाये छूटैंगे
 औरके छोडाये न छूटैंगे ॥ ५ ॥

इति चौदहवां शब्द समाप्त ।

अथ पन्द्रहवां शब्द ॥ १५ ॥

रामरा चली बिनावन माहो । घर छोड़े जात जोलाहो ॥ १ ॥
 गज नौ गज दश गज उनइसकी पुरिया एक तनाई ।
 सात सूत नौ गाड़ वहत्तरि पाट लागु अधिकाई ॥ २ ॥
 तापट तूल न गजन अमाई पैसन सेर अढ़ाई ।
 तामें घटै बढै रतिओ नहिं कर कच कर घरहाई ॥ ३ ॥
 नित उठि बैठ खसम सों वरवस तापर लाग तिहाई ।
 भीनी पुरिया काम न आवै जोलहा चला रिसाई ॥ ४ ॥
 कहै कबीर सुनोहो संतो जिन्ह यह सृष्टि उपाई ।
 छाड़ि पसार रामभजु वौरे भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

रामरा चली बिनावन माहो । घर छोड़ जात जोलाहो ॥ १ ॥

रामरा कहे रा जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिनके अभावहै साह-
 बको नहीं जानें । ऐसेजे समष्टिजीव तिनके इहां मानो है कारणरूपा माया
 सोबिनावनको कहे बिनवावनको चली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली । इहां

बिनबो न कह्यो बिनबाइबो कह्यो सोबिना चैतन्य ब्रह्म औजीवके लपेटे याको बनायो नहीं बनै है काहेते कि, यह जड़है अर्थात् ब्रह्म जीवको संयोग करिके बनवानको चली । ब्रह्मजीवके पाससों जोलाहा जो यह जीवहै सो घरको छोड़ेदेयहै अर्थात् यहशुद्ध जीवात्मा आपनो जो घरहै साहबके लोकको प्रकाश जहांशुद्ध रहैहै तौनै घरको छाड़िकै, माया के लपेटमें परिके, आपने बंधनको आपने मन करिके संसाररूपी पटको बनौवैहै ॥ १ ॥

गज नौ गज दश गज उनइसकी पुरिया एक तनाई ।

सात सूत नौ गाड़ बहत्तर पाट लागु अधिकाई ॥ २ ॥

प्रथम एकगजकी कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथम जीव बाणी प्रणवरूप एक गजकी पुरिया अनुमान ब्रह्म बनायो अर्थात् मन भयो । पुनि नौ गजकी पुरिया तनावत भई सो नवौ व्याकरण बनावत भई । अर्थात् नवौ व्याकरणमें शब्द ब्रह्मको वर्णन ह सो शब्द बनावत भई । पुनि दश गज की पुरिया तनावत भई, सो चारवेद औ छः शास्त्र ई दशगजकी पुरिया तनावत भयो सो अठारहों पुराण उनीसों महाभारत ये उनइसगजकी पुरिया बनावत भयो ॥ २ ॥ पुनि सात सूत कहे सप्तावरण १ पृथ्वी २ अप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ अहंकार ७ महत्तत्त्व अथवा सात सूत १ जाग्रत् २ महाजाग्रत् ३ बीजजाग्रत् ४ स्वप्नजाग्रत् ५ स्वप्न ५ सुषुप्ति ६ औ ७ महासुषुप्ति ये सात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनि नवगाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तर हजारनस बनावत भयो ॥ २ ॥

ता पट तूल न गजन अमाई पसन सर अढ़ाई ।

तामें घटै बढै रतिबो नहिं कर कच कर घरहाई ॥ ३ ॥

तापट कहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रमरूप तूल रह्यो तबतो गजमें नहीं अमातरह्यो कहे अप्रमेय रह्यो है । औ सेरकहे सिंहरूप रह्योहै संसारको नाशकै देनवारो रह्योहै । सो संसारी द्वैके जैसे सूतपैसा को अढ़ाईसेर विकाय है तैसे यह जीवात्मा विषयरूप पैसाको चाहिके अढ़ाई सेरद्वैगयो । एकै पृथ्वीको विषय सुख चाहैहैं एकै यज्ञादिक करिकेस्वर्ग-

को विषय सुख चाहै हैं, आधेमुमुक्षू द्वैके ईश्वरन के लोकको सुख चाहै हैं, औ ब्रह्ममें लीनहैवो चाहै हैं, इनमें पूरीविषय भोगनहीं है, याते आधाकह्यो अहंब्रह्म तूलते नाना शरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत द्वैगयो । जोपट संसारमें विनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभर न घटैहै न बढैहै घरहाई जोहै जीवैकीनारीमायासो यहीजीवको कच आपने करमें करिलियोहै अर्थात् यहजीवकी चूदीगहि लियोहै मायाको भोक्ताजीवहै यातेजीवहीकी स्त्री माया है ॥ ३ ॥

नित उठि बेठ खसमसों वरवस तापर लागु तिहाई ।

भीनी पुरिया काम न आवै जोलहा चला रिसाई ॥४॥

खसम जो जीवहै तासो नित उठिउठिके वरवस कहै जबरदस्ती बेठ कहै बेगारि लेयहै सोएकतो संसारमें माया वेगारिलेयहै दूसरो जोभागनते यह संसारउठो तो आत्मा को तिहाईलगी कहे त्रिकुटीमें धोखा ब्रह्मको ध्यान लगायो । जोनेमें विनिजायहै तौन पुरिया कहावैहै । सो जब भीजिजायहै तब नहीं काम आवैहै । ऐसे यह संसार पुरिया है नाना पदार्थ ते जो है राग तेहिकारिकें जब शरिर भीज्यो तब यह संसारको असार जानिके कहे संसार कुछ कामको न जानिके जोलाहा जोहै जीव सो रिसाय चल्यो, धोखाब्रह्ममें लगतभयो; सोऊ ब्रह्मतो तांहीको अनुभव है वहअनुभव ब्रह्ममें कछु न पावतभयो ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जिन यह सृष्टि उपाई ।

छाडि पसार राम भजु वौरे भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि, जामें तुम लग्यो है सोतो तिहारोई मन को अनुभवहै अरु यह संसारऊको तुम्हारो मनही रच्यो है । सो जिन सृष्टिवाली उपाय कियोहै तेहि माया ब्रह्मते छोड़ि पसार परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को भजन करु, काहेते कि, यह भवसानर परमकठिनहै उनहींके भजन किये छूटैगों, औरीभांति न छूटैगो, और तो सब याही में परहैं अथवा यहकठिन भवसागरमें आयके श्रीरामचन्द्रही को भजन करि मनते छूटैगो ॥ ५ ॥

अथ सोलहवां शब्द ॥ १६ ॥

रामरा झीझी जंतर वाजै । कर चरण विहूना राजै ॥ १ ॥
 कर विन वाजै श्रवण सुनै विन श्रवणै श्रोता सोई ।
 पाटन स्ववश सभाविनु अवसर बूझौ मुनि जन लोई ॥ २ ॥
 इन्द्रिय विनु भोग स्वाद जिह्वा विनु अक्षय पिण्ड विहूना ।
 जागत चोर मंदिर तहँ मूसै खसम अच्छत घर सूना ॥ ३ ॥
 बीज विन अंकुर पेड़ विनु तरुवर विनु फूले फल फलिया ।
 बांझ की कोखि पुत्र अवतरिया विन पग तरुवर चढ़िया ॥ ४ ॥
 मसि विनु द्राइत कलम विनु कागज विनु अक्षर सुधि होई ।
 सुधि विनु सहज ज्ञान विन ज्ञाता कहै कवीर जन सोई ॥ ५ ॥

पूर्व मायाको बर्णनकरिआये तौनी मायाते छूटिके जौने उपाय ते साहब को पावै है सो उपाय कहै हैं ॥

रामरा झीझी जंतर वाजै । कर चरण विहूना राजै ॥ १ ॥

हे जीव! राम कहे रकार तोको मरौहै अर्थात् रकार बीज को तोको अभाव है याहीते तैं अपने को ब्रह्म मानिके संसारी है गयोहै । झीझीकहावै झिझिया जो कुवार शुक्लचतुर्दशीको अनेक छिद्रकै जो मटुकी होयहै ताके मध्यमें दीप बारिके धरैहै सो झिझियानांव देठियाको कवि संप्रदायहमेंहै ॥ (रंध जाल मग है कढ़ै तिय तन दीपति पुंज । झिझियाके सो घट भयो दिनहूमें बनकुंज) ॥ (सारीमूलामलसी फलकांति झरोखन की झझरी झिझियासी) सोझिझिया रूप-नव दुवारको । अथवा रोम रोम में छिद्र है जामें वोई छिद्रन है पसीना निक-सैहै यहिप्रकारको झींझी जोहै शरीर तौनेजन्तरबाजै है कहे ताहीको यह सोहं शब्दहै काहेते कि, श्वासा कहैहैं सोवहीश्वासके कहेते करचरण विहून जो निराकार ब्रह्महै सो तेरे आँगैराजै कहे शोभितं होन लग्यो । अथवा आंखिन के आगे नाचन लग्यो, सर्वत्र ब्रह्मही देखि परनलग्यो । अथवा तैंहीं करचरण

बिहून कहे निराकार ब्रह्म द्वेके नाचन लग्यो । अथवा राजै कहे शोभित भयो
 सो तुम तो शरीरते भिन्नहो जैसे डेढिया ते दीप भिन्न रहै है । वह सोहं शब्द
 तो शरीरको है वाको कहे तुम काहे घोखा में परेहौ । तुम निर्गुण सगुणके
 परे जो है साहब ताके हौ तिनमें लगौ । निर्गुण सगुणके परे कैसे साहबहैं
 सो कहै हैं ॥ १ ॥

कर विनु वाजै श्रवण सुनै विन श्रवणै श्रोतासोइ ।
 पाटन स्ववश सभा विनु अवसर बूझौ मुनिजन लोई ॥२॥

साहब के लोकके जेवाजाहैं ते विन कर वाजै हैं काहेते कि वहां के जे
 बाजा हैं ते पांचभौतिक नहीं हैं, औ उहांके जे बासी हैं तिनके शरीर पांचभौ-
 तिक नहींहैं अर्थात् मनवचन के परेहौ औ प्राकृतजे हैं प्रकृति संबंधी पदार्थ
 साकार औ अप्राकृत जो हैं निराकार ब्रह्म लोक प्रकाश ताहूते बिलक्षण है ।
 कर बिना कह्यो याते साकारौ नहीं है औ सो वाजै है याते निराकारौ नहीं है ।
 औ सोई श्रोता जे हैं लोकवासी ते श्रवणते सुनै हैं औ श्रवण नहीं हैं याते
 साकारौ नहीं है औ श्रवणते सुनै है याते निराकारौ नहीं है । मायाब्रह्म जीव
 को जो अरुझा लाग्योहै सो जीव साहबको स्मरण करै ताके पाटन कहे पटाइ-
 लीबे को साहब स्ववशहैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखि देइहैं
 सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहु बचन है सो जीव उनके शरण
 जायहैं तिनको पाटन के लिखि दीबे में अपनायलीबे में स्ववश हैं तामें प्रमाण ॥
 (सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्ब्रतम्मम) ॥
 औ बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहैहै वहां कालकी
 गति नहीं है औ वाजन सदावाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां होता रहैहै । सो हे
 मनन शील मुनिलोगो! तुम उन्हीं को समुझौ औ उन्हींको मनन करो वहघो-
 खा ब्रह्म के मनन कीन्हैते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो ॥ २ ॥

इन्द्रि विनु भोग स्वाद जिह्वा विनु अक्षय पिण्ड बिहूना ।
 जागत चोर मँदीर तहँ मूसे खसम अछत घरसूना ॥ ३ ॥

तुम वह साहब को कैसे समझौ इंद्रिय बिना द्वैके साहब के लोक को जोहै भोग सुख है ताको लेऊ औ बिना जिह्वा द्वैके अनिर्वचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेऊ । औ पिंड बिहूनाकहे पांचौ शरीरते बिहीन द्वैके कहे पांचौ शरीरनको छोड़िकेहंसस्वरूपमें स्थित द्वैके अक्षय कहे अक्षय द्वै जाऊ । तुम्हारे अंतःकरण रूपीवरको चोरजोहै धोखा ब्रह्म सो मूसि लेय है अर्थात् साहब को ज्ञान चोराये लेयहै तुमहीं अहं ब्रह्म बुद्धि कराये देयहै । काहे ते कि खसम जे हैं साहब ते अछत बने हैं औ तुम अपनो हृदय घरसून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहब को नहीं जान्यो ॥ ३ ॥

**बीज विनु अंकुर पेड़ विनु तरुवर विन फूलै फल फलिया ।
बांझकी कोखि पुत्र अवतरिया विन पग तरुवर चढ़िया ॥४॥**

इहां याकु अर्थ है बीज बिना कहूं अंकुर होय हैं ? औ पेड़बिना कहे बिना जर कहूं तरुवरहोय हैं ? औ बिना फूलकहूंफल होय हैं ? अरु बांझके कोखमें कहूंपुत्रहोईहै ? औबिनापगकोईतरुवरमें चढ़ेहै ? सो बीज तौ वह ब्रह्मको कहौ-हौ सोतो शून्य है, कोईपदार्थनहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसेमाया सबलित ब्रह्म भयो । औ पेड़ जड़ मायाको कहौ सो तो मिथ्या है संसार तरुवर कैसे भयो । औज्ञानरूप जो फूल है ताहूको तो मूलाज्ञान कहौ हौ, सोऊ मिथ्या है, कहौ तो मुक्तिरूपी फल कैसे फर्यो । औ मनको तौ जड़ कहौ हौ, ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो । औ आत्मा को तौ अकर्ता कहौ हौ मन बुद्धि चित्तते भिन्न है सो बिना पांव संसार वृक्षको चढ़िके कैसे चैतन्याकाशको पहुंच्यो ॥ ४ ॥

**मसि विनु द्राइत कलम विनु कागद विनु अक्षर सुधि होई ।
सुधि विनु सहज ज्ञान विन ज्ञाता कहें कवीर जन सोई ॥५॥**

बिना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौ हौ मनको अनुभव कैसे रहैगो । वह मिथ्याई होयगो । औ बिना कागज कलम कहा करैगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अंतःकरण तो मिथ्ये कहौ हौ ज्ञान केहिके आधारहोयगो जहां बुद्धिरूपी कलमते लिखौगे निश्चय करौंगे औ जो यहपाठ होय “बिनअ-

क्षर सुधिहोय" तौ यह अर्थ है कि, जो एक आत्माही को सत्य मानोगे तो साहब को बिना अक्षर कहे बिना अनादि माने सुधि कहे सुरति तुम को कैसे होयगी । औ कौन सुरति देयगो । औ सुधिबिन कहे जो सुधि न भई तो सहज कहे सो हंसो कैसे होयगो । तेहिते बिनाज्ञाता को ज्ञानकरु कहे अबैते अपने को ज्ञाता मानि रहे हैं कि, मैं अपनो बिचारकरत करत औ सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जाय है ताहीको मानिलेउंगो कि, यहीतत्व है सो यह भ्रमछाड़ो, तेरेजानेते साहब न जानिपरैगे साहब मनवचन क परे हैं । सो जौन बिना ज्ञाताको ज्ञान है जो साहब देय हैं काहेते कि, वह ज्ञान काहूको नहीं जानो है जब साहब आपनो रूपदेय हैं, तब वह रूपते जानि परै, साहब हीके रूपको जानोपरै है । वाको ज्ञाता कोई नहीं है । सो ज्ञानकरु अर्थात् रकार ध्वनि श्रवण रूप साधनकरु तब साहबई तोको हंसस्वरूप देके आपने नामरूप लीलाधामको स्फुरित करायदेयंगे । तौने हंसस्वरूप की आँखीते श्रवण ते साहब को देखु औ साहबके गुणसुनु । सो कबीरजी कहै हैं कि, यहि तरह ते जाके बिना ज्ञाताको ज्ञान है सोई भरोजन है । अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थिति है तौनेही लोकको वहजन है बिनाज्ञाताकोज्ञान कौन कहावै है जो साहब देय हैं तामेंप्रमाण ॥ "तेषांसततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् । ददामि बुद्धियोगं तं येनमामुपयांतिते " ॥ इतिगीतायाम् ॥ ५ ॥

इति सोलहवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्रहवां शब्द ॥ १७ ॥

राम गाइ औरन समुझावै हरि जाने बिन विकल फिरै ॥ १ ॥
 जा मुख वेद गायत्री उचरै ता सु वचन संसार तरै ।
 जाक पाँव जगत उठि लागै सो ब्राह्मण जिउ बद्ध करै ॥ २ ॥
 अपना ऊँच नीच घर भोजन ग्रीण कर्म करि उदर भरै ।
 ग्रहण अमावस ढुकि ढुकि माँगै कर दीपकलिये कूपपरै ॥ ३ ॥

एकादशी व्रतौ नहिं जानै भूत प्रेत हठि हृदय धरै ।
तजि कपूर गांठी विष बांधे ज्ञान गमाये मुगुध फिरै ४
छीजै शाहु चोर प्रतिपालै संत जननकी कूटकरै ।
कहै कवीर जिह्वाके लंपट यहि विधि प्राणी नरक परै ५

राम गाइ औरन समुझावै हरि जाने विन विकल फिरै ॥ १ ॥
जा मुख वेद गायत्री उचरै तासु वचन संसार तरै ।
जाके पाँव जगत् उठि लागै सो ब्राह्मण जिउ बद्ध करै ॥ २ ॥

श्रीरामचन्द्रको गावै हैं औ औरनको समुंझावै हैं औ सबके कलेश हरन-
वारे जे साहब हैं तिनको नहीं जानै कि, येई केश हरि हैं हरि येई हैं । सो
या नाना देवता नाना उपासना खोजत विकल फिरै हैं ॥ १ ॥ अरु जाके मुखते वेद
गायत्री जो वचन हैं सो उचरै हैं वहीको तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहें जानि-
संसार तरै है ताको अर्थ न जानते कि वेदगायत्री तात्पर्यार्थ ते श्रीरामचन्द्र-
हीको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “सर्ववेदाः सषोषाश्च सर्ववर्णाः स्वरा अपि ।
समात्रास्तुविस्मर्गाश्चसानुस्वाराः पदानेच । गुणसांद्रेमहाविष्णौ महातात्पर्य-
गौरवात्” ॥ इतिमहाभारते ॥ जेब्रह्मादिकर्म विष्णु हैं त विष्णुहें औ महा
विष्णु श्रीरामचन्द्रही कहावै हैं तिनको तो नहीं जानै हैं । वेद गायत्री पढ़ै हैं
औ वही मुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादन करै हैं समुंझावै हैं । औ आपहू
हिंसा करै हैं । तिनहीं के पांय सब जगत् उठिलागै हैं अरु वाहीको कहा
सब सुनै हैं ॥ २ ॥

अपना ऊंचनीचघर भोजन घ्रीण कर्म करि उदर भरै ।
ग्रहण अमावस टुकिटुकिमाँगें करदीपक लियेकूपपरै ॥ ३ ॥

आपतौ जातिमें ऊंचे हैं परंतु नीचके घर भोजन करै है औ जौन कर्म
अपने को उचित नहीं है तौन चिनहा कम कैके पेट भरै है । औ ग्रहणमें अमा-
वसमें टुकिटुकिमाँगें है कि, यहकुदान आन न लैजाय, हमें लेई । औ राम-
नाममुंहते कहै हैं सो नाम रूपी दीपक लीन्हे भ्रम कूपमें परै हैं ॥ ३ ॥

एकादशीव्रतौ नहिं जान भूत प्रेत हठि हृदय धरै ।

तजि कपूर गाँठी विष बाँधै ज्ञान गमाये मुगुध फिरै ॥४॥

औ एकादशीव्रत उपलक्षणै है अर्थात् साढ़े अट्ठाईस जे व्रत हैं चौबीस एकादशी औ रामनवमी, कृष्णाष्टमी, बामनद्वादशी, नरसिंहचतुर्दशी और आधाअनन्त । येजे वैष्णवीव्रतहैं तिनको नहीं जानै हैं अर्थात् वैष्णवी उपासना नहींकरैं औ मुंहते रामरामकहै हैं । औ भूत प्रेत यक्षिणी आदि जे उपासनाहैं तिनको करै हैं तामें प्रमाण॥ “अंतः शैवाबहि इशाक्ताः सभामध्येच वैष्णवाः । नानारूपपधराः कौला विचरन्तिमहीतले” ॥ सो रामनाम जो कपूर है ताको छोड़िकै नाना पाखंड मत जो विषयहैं ताको धारण कीन्हे ज्ञान गमायके मूर्खचारों ओर फिरै हैं ॥ ४ ॥

छीजै शाहु चोर प्रतिपालै सन्त जननकी कूटकरै ।

कहे कबीर जिह्वाके लंपट यहि विधि प्राणी नरकपरै ॥५॥

तेहिते शाहु जो आत्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको अंश सदाको दास या जीवको स्वरूपहैं सो जेहैं ते छीजैहैं । अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलिजायहै । गुरुवनके बताये जेनाना पाखंडमत तेई चोरहैं तिनको प्रतिपाल कियो कहेसंग कियो तेईज्ञानको चोरायलेयहैं । औ जे साहबके ज्ञानके बतैया जे संतहैं तिनहींकी कूट करै हैं कि, ये मुड़ियनको मत वेदशास्त्रके बहिरे हैं । सो कबीरजी कहै हैं ऐसे जिह्वाके लंपट प्राणी हैं ते नरकहीमें परै हैं ॥ ५ ॥

इति सत्रहवां शब्द समाप्त ।

अथ अठारहवां शब्द ॥ १८ ॥

राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो ।

अबुझा लोग कहाँलौं बूझ बूझनहार विचारो ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसीसों जिन यह जग विटमाया ।

केते कान्ह भये मुरलीधर तिनभी अंत न पाया ॥ २ ॥

अत्स्य कच्छ वाराह स्वरूपी वामन नाम धराया ।
 केते बौद्ध भये निकलंकी तिनभी अंत न पाया ॥ ३ ॥
 केतक सिद्ध साधक संन्यासी जिन बनवास बसाया ।
 केते मुनि जन गोरख कहिये तिनभी अंत न पाया ॥ ४ ॥
 जाकी गति ब्रह्म नहिं पाई शिवसनकादिक हारे ।
 ताके गुण नर कैसेपैहौ कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो ।

अबुझा लोग कहाँलौ बूझै बूझनहार विचारो ॥ १ ॥

परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण न्यारे न्यारे हैं । इहां तीन बार जो कह्यो ताते या आयो कि साहबके गुण, मायाके गुणते जीवात्माके गुणते ब्रह्मके गुण न्यारे हैं । कौनी रीतिसे न्यारे हैं कि, मायाके गुण नाशवान् हैं विचार किये मिथ्या हैं । औसाहबके गुण नित्यहैं साँचहैं, औ जीवात्माके गुण अणु हैं । औ साहब क गुण विभुहैं औ ब्रह्मनिर्गुणत्वगुणब्रह्ममें है औ साहब निर्गुण सगुणके परे है सो या प्रमाणपीछे लिखिआये हैं ॥ “अपाणिपादोजवनो गृहीता” इत्यादि औब्रह्मसंबंधी अनुभवानंदजीवको होइ है औ साहब अनुभवातीत है याते साहबक गुण सबते न्यारे हैं सो वा बात अबुझा लोग कहाँलौ बूझै, कोई बूझनहार तो बिचारते जाउ ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसी सा जिन यह जग बिटमाया ।

कत कान्ह भये मुरलीधर तिनभी अंत न पाया ॥ २ ॥

केतन्यो रामचन्द्र हैं कौन रामचन्द्र ज तपस्वी ब्रह्म हैं तिनसों जगत बिटमाया कहे बनायोहै । अर्थात् जे नारायण रामावतार लेइहैं सो ब्रह्माते कैसे जग बनवायो । सो कथा पुराणन में प्रासिद्धहै कि, कमलमें ब्रह्मा भये, तब आकाशबाणी भई, “तप तप” तब तपस्या कियो, तब नारायण प्रकटभये,

तें ब्रह्माते कह्यो कि, जगत् बनावो, तब बनावतभयो नारायण जे रामावतार लेइ हैं तामें प्रमाण “ यदास्वपार्षदौजातौराक्षप्रवरौप्रिये । तदानारायणः साक्षाद्रामरूपेण जायते ॥ प्रतापीराघवसखा भ्रात्रावै सहरावणः । राघवेण तदा साक्षात्साके तादवतीर्यते ” ॥ नारायण अंत न पायो ते नारायण रामचन्द्र क्षीरशायी श्वेत द्वीप निवासी बहुतहैं जिनके गुण को अंत कोई नहीं पावै हैं । अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचन्द्र एकई हैं । औ केते कान्ह मुरलीधर भये तिन भी अंत नहीं पायो काहेते कि उनके अनंत गुण हैं ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ बाराह स्वरूपी वामन नाम धराया ।

केते बौद्ध भये निकलङ्गी तिनभी अंत न पाया ॥ ३ ॥

केतिक सिद्ध साधक संन्यासी जिन वन बास वसाया ।

केते मुनिजन गोरख कहिये तिनभी अंत न पाया ॥ ४ ॥

औ केतन्यो मत्स्य कच्छ बाराह वामन बौद्ध कलकीरूप भये तिनभी अंत नहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिनमें वामन नरसिंह आदिक अवतार आइगये तेऊ अंत नहीं पायो है ॥ ३ ॥ औ केतन्यो सिद्ध साधक संन्यासी भये जे वनमें बास करत भये औ केतन्यो मुनि गोरख इंदिन के रखवार भये तेऊ ताको अंत नहीं पायो ॥ ४ ॥

जाकी गति ब्रह्म नहिं पाई शिव सनकादिक हारे ।

ताके गुण नर कैसे पैहौ कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

औ जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि, तिनके अनंत गुण हैं सो हे नर! तुम कैसे पावोगे? जे गुरुवनके कहे कहौहौ कि महीं राम हौं सो मिथ्या है वे रामके गुण न तुम्हारे गुरुवा पायो है न तुम पावोगे । व्यंग यह है कि, ते वे पाखंडी गुरुवनको संगछाँड़िकै रामोपासकनको संग करौ तब जैसी भजन क्रिया वे करै हैं सो करिके निर्गुण सगुणके परे साहबके लोक जाउ, तब तिहारो जनन मरण छूटैगो । ये गुरुवा लोग जौनेमें सिद्धांत करि राखे हैं ते सब याही कैते हैं निर्गुण सगुणमें है औ परमपुरुष पर साहबको लोक सबके पर है तामें प्रमाण कबीरजीको रेखता झूलनाछंद पिंगलमें कहै हैं ॥ “ चला

जबलोकको शोकसब त्यागिया हंसको रूपसतगुरु बनाई । भृंगज्योंकीटको पलटिभृङ्गैकिया आपसमरङ्गदैं लैउड़ाई । छोड़ि नासूतमलकूतको पहुंचिया विष्णुकी ठाकुरीदीखजाई । इंद्रकुञ्जवरजहँ रंभको नृत्यहै देवतेतीस कोटिक र-
 हाई ॥ १ ॥ छोड़िवैकुण्ठको हंसआगे चला शून्यमें ज्योतिजगमग जगाई । ज्योति परका-
 शमें निरखि निस्तत्त्वको आपनिर्भयहुआ भयमिटाई । अलखनिर्गुण जेहिबेद स्तुति
 करै तीनहूँ देवकोहै पिताई । भगवान तिनकेपरे श्वेत मूरतिधरे भागको आन
 तिनकोरहाई ॥ २ ॥ चारमुक्कामपरखंडसोरहकहैं अंडको छोर ह्यांतेरहाई । अंडके-
 परे स्थान आंचित को निरखिया हंसजब उहांजाई । सहस औद्वादशै रूहहैं सङ्गमें
 करतकल्लोल अनहद बनाई । तासुके बदनकी कौनमहिमाकहौं भासती देह
 अति नूरछाई ॥ ३ ॥ महल कंचनबने माणिकतामेंजड़े बैठतहँ कलशआखंड
 छाजै । आंचितकेपरे स्थान सोहंगका हंस छत्तीसतहँवां बिराजै । नूरकामहल
 औ नूरकाभुम्य है तहांआनंद सो द्वन्द्वभाजै । करतकल्लोल बहुभांतिसे संगयक
 हंससोहंगके जो समाजै ॥ ४ ॥ हंसजब जात षट्चक्रकोबोधिकै सातमुक्का-
 ममें नजरफेरा । सोहंगके परे सुरति इच्छाकही सहसबामन जहँहंसहेरा ।
 रूपकी राशितेरूप उनको बना नहीं उपमा इन्दुजीनिबेरा । सुरतिसे भेटिकै
 शब्दको टेकिचढ़ि देखि मुक्कामअंकूरकेरा ॥ ५ ॥ शून्यकेबीचमें विमल बैठक
 जहाँ सहज स्थान है गैब केरा । नवो मुक्कामयहहंसजब पहुंचिया पलकविलंबहँ
 कियोडेरा । तहाँसे डोरिमक्तारज्यों लागिआ ताहिचढ़िहंसगो दै दरेरा ॥ ६ ॥
 भयेआनन्दसे फंदसब छोड़िया पहुंचिया जहाँ सतलोकमेरा । हंसिनीहंस सब-
 गायबज्जायकै साजिकै कलश बड़िलेन आये । युगनयुगबीछुरोमिलेतुम आईकै
 प्रेमकरि अंगसों अँगलगाये । पुरुषनेदर्शनबदीन्हियाहंसको तपनिबहु जन-
 मकी तबनशाये । पलटिकैरूप जबएकसेकीन्हियामनहुं तबभानु षोडशउगाये
 ॥ ७ ॥ पुहुपकेदीप पीयूष भोजन करै शब्दकी देहजबहंसपाई । पुहुपके से-
 हरा हंसऔहंसिनीसच्चिदानन्द शिरछत्रछाई । दिपैबहुदामिनी दमकबहुभांति
 की जहाँ घनशब्दको घुमड़लाई । लगेजहँवरषने गरजघनघेरिकै उठततहँ शब्द
 धुनिअति सोहाई ॥ ८ ॥ सुनैसोइ हंसतहँ यूथकेयूथद्वै एकहीनूरयकरङ्गरागै ।
 करतबीहार मनभाभिनी मुक्तिभै कर्म औ भर्मसबदूरिभागै ॥ रङ्गऔभूप कोइपर-

खि आवैनहीं करत कल्लोलबहु भाँतिपागे । कामऔक्रोध मदलोभ अभिमान
 सब छाँड़िपाखंड सतशब्दलागे ॥ ९ ॥ पुरुषके बदनकी कौनमहिमाकहाँ जगत्में
 ऊपमांयकछुनाहिंपाई । चन्द्रऔसूरगणज्योतिलागैनहीं एकहीनक्खयपरकाशभाई ।
 पानपरवानजिनवंशका पाइया पहुंचियापुरुषकेलोकजाई । कहैंकब्बीर यहिभांति
 सो पाइहैं सत्यकीराह सोप्रकट गाई ॥ १० ॥ औ वहलोकको बर्णन वेदसा-
 रार्थ जो सदाशिवसंहिता है ताहूमें है । श्रीसौमित्रिस्वाच “ महर्लोकः क्षितेरू-
 ध्वमेककोटिप्रमाणतः । कोटिद्वयेनविख्यातो जनलोकव्यवस्थितः ॥ १ ॥ चतु-
 ष्कोटि प्रमाणंतु तपोलोकोक्विराजितः । उपरिष्ठात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः ॥ २ ॥
 आयुःप्रमाणंकौमारंकोटिषोडशसंभवम् । तदूर्ध्वोपरिसंख्यातमुमालोकंसुनिष्ठतम्
 ॥ ३ ॥ शिवलोकंतदूर्ध्वंतु प्रकृत्याच समागतम् । विश्वस्यपुरतोवृत्तिः शिव-
 स्यपुरतोबहिः ॥ ४ ॥ एतस्माद्वहिरावृत्तिः सप्तावरणसंज्ञका । तदूर्ध्वसर्वत-
 त्वानां कार्यकारणमानिनाम् ॥ ५ ॥ निलयं परमं दिव्यं महावैष्णवसंज्ञकम् । शुद्ध-
 स्फटिकसंकाशनित्यस्वच्छमहोदयम् ॥ ६ ॥ निरामयं निरौधारं निरंबुधिसमा-
 कुलम् । भासमानं स्ववपुषा वयस्यैश्च विजृम्भितम् ॥ ७ ॥ मणिस्तंभसहस्रैस्तु
 निर्मितं भवनोत्तमम् । वज्रवैदूर्यमाणिक्यग्रथितं रत्नदीपकम् ॥ ८ ॥ हेमप्रासादं
 मावृत्य तरवः कामजातयः । रत्नकुंडैरसंख्यातनैर्मल्यवासिभिः ॥ स्त्रीरत्नैः पर-
 माह्लादैः संगीतध्वनिमोदितैः । स्तुतंच सेवितं रम्यरत्नतोरणमंडितम् ॥ १० ॥
 कारुण्यरूपं तन्नीरंगगायस्मादिनिःसृता । अनंतयोजनोच्छ्रायमनंतयोजनायतम्
 ॥ ११ ॥ यत्र शेते महाविष्णुर्भगवान्जगदीश्वरः । सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः
 सहस्रपाद् ॥ १२ ॥ यन्निमेषाज्जगत्सर्वलयीभूतं व्यवस्थितम् । इन्द्रकोटिसहस्राणां
 ब्रह्मणांच सहस्रशः ॥ १३ ॥ उद्भवंति विनश्यंति कालज्ञानविडंबनैः । यदंशेन-
 समुद्धूता ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ॥ १४ ॥ कार्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः ।
 यत्र आवर्तते विश्वं यत्रैव प्रलीयते ॥ १५ ॥ तद्वेदपरमं धाम मदीयं पूर्वसूचितम् ।
 एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातु वाञ्छितं हि नः ॥ १६ ॥ तदूर्ध्वन्तु परं दिव्यं सत्यमन्यद्-
 व्यवस्थितम् । न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवद्भावितात्मनाम् ॥ १७ ॥ महाशंभुर्मोदतेऽ
 त्रसर्वशक्तिसमन्वितः । तदूर्ध्वंतु स्वयं भातं गोलोकं प्रकृतेः परम् ॥ १८ ॥ ”
 अरुसहस्रशीर्षपुरुष जो लिख्या है तहैं शुद्धजीव समिटे रहे हैं । वे सम-

ष्टीहैं ताके रोमरोममें अतंतकोटि ब्रह्माण्ड हैं । तहैंते अनेक ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति होइ हैं औ तहैं महामलयमें लीन होइ हैं औ दूसरे सत्यलोकमें जो महा-शम्भुको वर्णनकियो सो परमगुरुको रूपहै । तामें प्रमाण ॥ “वेदशंभुंजगद्गुरुं” औ गुरुसों औ साहवसों अभेदतामें प्रमाणहै ॥ “आचार्यमांविजानीयान्नाव-मन्येतर्हिचित् इतिभागवते ” औ महाशंभुसों औ महाविष्णुसों अभेदहै तामें-प्रमाण “ शिवस्यश्रीविष्णोर्यइह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नंपश्येत् स ख-लुहरिनामाहितकरः ॥ इति स्कंदपुराणे ॥ ” औ नारायण जे वर्णन करिआयें तेऊ श्रीरामचन्द्रईके रूपहैं तामे प्रमाण ॥ सदाशिवसंहितायाम् ॥ “ वासुदेवो वनीभूतं तनुतेजो महाशिवः ॥ ” औ गोलोकमें श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं औ गोलोकके मध्यसाकेतमें रामरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं तामेंप्रमाण सदाशिवसंहिताके बिस्तारते वर्णन करिआये कि, पश्चिमद्वार वृन्दावन है, उत्तरद्वार जनकपुर है, पूर्वद्वार आनंदवन है, दक्षिणद्वार चित्रकूट है ताके-आगे यहलोक है तेहिते इहां प्रयोजनमात्र लिख्यो है ॥ “ तेषांमध्ये पुरंदिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् इति ॥ ” औ साकेत ऊपर कछु नहीं है औ साकेत औ अयोध्या सत्यासत्य लोक इत्यादिक नाम सब वही लोकके पर्यायहैं तामेंप्रमाण ॥ “साकेतान्तरंकिंचित्तदेवहिपरात्परम् ॥ ” औ गोलोकजे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तेईश्री रामचन्द्रईके महत् ॥ “सीतारामात्मकं युग्मंमाविशन्नतिपूर्वकम् ॥ १ ॥ ” श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीसों कह्यो कि, वृन्दावनको विहार करिये, तब रघुनाथजी कह्यो जब तुम कह्यो तैं एक दूसरा विहारस्थल बनाइये तब हम वृन्दावन बनायो, राधि-का तुमभई कृष्णहमभये। सो विहार करते भये सो हमारई, तुम्हाररूप राधाकृ-ष्णहैं । या कहिकै आकर्षण करिकै वृन्दावन बोलाइलियो । राधाकृष्ण आइगये तब राधिकाजी जानकीजीमें लीनभई श्रीकृष्णचंद्र रामचंद्रमें लीनभये । अरु पुनि विहारकियो जब विहार करिखुके तब जानकी रघुनाथ ते निकसिकै वृन्दा-वन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको । सो यह कथा शुकसंहितामें है ताको एक श्लोक लिख्यो है औ विस्तारसे देखिलीजियो । तेई श्रीकृष्णके नखके प्रकाश ब्रह्म है वहीप्रकाशको मुसल्मान लामकान कहै हैं । औ जे दशमुकाम रेखतामें कहिआये औ दश वोई मुकाम सदाशिवसंहितामें वर्णन करिआये

तिनमें पांच मुकाम मुसल्माननके कहै हैं औ पांचमुकाम छोड़िदेइहैं तिनको
 उनहीमें गतार्थ मानिलेइहैं । मुसल्माननमें वोई पांच मुकामके दुइनामहैं “ नासू-
 तको आलम अजसामकहे शरीरधारी । ” याते यहलोकके सब आइगये औ
 मलकूत को “ आलम मिसाल फिरिस्तनकै दुनियां देवलोक ” औ जबरूतको
 आलम अर्थात् कहे पृथ्वी अप तेज बायु तत्त्वरूपहै “ औ लाहूतको आलम
 कर्ब कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाशजोहै ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश
 लिख्योहै ” औ “ हाहूतको मुकाम महम्मदीकहे जहांभर महम्मद पहुंचै है ”
 श्रीकृष्णके लोक अब इनके मंत्रऊ लिखे हैं॥ जिकर नासूत “ लाईला हइलाहू ”
 जिकिर मलकूत “ इल्लिलोहू ” जिकिरजवरूत “ अल्लाः अल्लाः ” जिकिरलाहूत
 अल्लाह जिकिरहाहूत “ हूंहूं ” ॥ सोइनको रातिदिन पांचहजारबार जपकरै ।
 जब पांचहजारहोय तबध्यानकरै औध्यानमें गइ औ आपको भूले फिरिजहानको
 भूलै पुनि जिकिरि कहे मंत्रको भूलै तब क्रमते मजकूरको पहुंचै अर्थात् अल्ला-
 हीजे श्रीकृष्णचंद्र हंसस्वरूप देई तामें स्थित द्वैकै जिनको प्रकाश निराकार जो हैं
 ऐसेजे श्रीकृष्णहैं तिनकेपास होत उनके बताये मन बचनके परे जे खुद खाविंद
 सबके बादशाह जे श्रीरामचंद्र है तिनके पास जाताहै । सो यह मत महम्म
 दजे साहबके बंदे हैं तिनको साहब भेजा । तब जे साहबके पास पहुंचनवारे रहे
 तिनको महम्मद भेद बताइदियो । सो बिरले कोई कोई यह भेद जानै हैं जे जानै हैं
 ते साहबके पासपहुंचै हैं । अब याको क्रम बतावें हैं जौनी भांति साहबके पास
 पहुंचै तामें प्रमाण॥ पीरानपीरसाहबके पासपहुंचै ऐसेजेहैं सलोलके मालिक पनाह
 अता तिनको कबित्त ॥ “ देह नासूत सुरै मलकूत औ जीव जबरूतकी रूह
 बखानै । अरबीमें निराकार कहै जेहि लाहुतै मानिकै मंजिल ठानै॥ आगे हाहूत
 लाहूत है जाहूत खुद खाविंद जाहूतमें जानै । सोई श्री रामपनाह सब जग-
 नाह पनाह अता यह गाने ॥ १ ॥ दोहा ॥ तजै कर्मनासूतलहि, निरखै तब मलकूत ।
 पुनि जबरूतौ छोड़िकै, दृष्टि परै लाहूत ॥ २ ॥ इन चारोंतजि आगेही, पना-
 हअता हाहूत । तहां न मरै न बीछुरै, जात न तहँ यमदूत ॥ ३ ॥ औ “ जुलजला-
 लअवल ” एकराम मुसलमानोंके कहै हैं किताबनमें प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका
 साहब बख्शीश का अर्थात् वह सबते बुजुर्गी कहे बड़ाहै उससे बड़ा कोई नहीं

है । औ वही गुनाहका बख्शनेवाला है और के छुड़ाये न छूटैगो । जब श्रीरामचन्द्र जीवको छोड़वेंगे तबहीं छूटैगो । औ खोदाके सौ नाम हैं निम्नानब सगुणनाम हैं, औ मुक्तिको देनवारो निर्गुण अल्लाह नामही है वही खुद खामिन्दका नाम है । तौने बात वेद शास्त्रनमें भी सिद्धान्त कियो है । कोई कोई जे साहबके पहुंचे हैं ते वेग्रंथ जानै हैं सो लिख्यो है कि, और देवतनके नामते अधिक और सब नाम भगवान्के हैं औ भगवान्के सब नामते अधिक रामनाम है । सो महादेवजी पार्वतीजी ते कह्यो है ॥ “सहस्रनामततुल्यंरामनामं वरानने । सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एकएव परोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम् । विष्णोरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकंमतम् । तादृङ्नामसहस्रेणरामनामसमंस्तुतम्” ॥ इतिपात्रे॥ औ गोसाईंजीहू लिख्यो है “रामसकल नामनते अधिका” ॥ सो यही रामनाम तैं अल्लाहनाम निकस्यो । “राम नामके मकारको रकार भये आगेका पीछे आया तब अरभया सो अर राके पीछे आया तब “अर राम भयो रलके अभेदसे अल्लाभयो” व्याकरण बर्णविकार बर्णकार बर्णविपर्यय पृषोदरादि पाठसे सिद्ध शब्दको साधनके वास्ते प्रसिद्ध है । औ जो सदाशिव संहितामें दशमुकाम लिखि आये हैं औ पहिले रेखतामें लिखि आये हैं सो कबीरजी पुनि खुद खाविन्दको दूसरे रेखतामें वहीबात लिख्यो है “जुलमत नासुत मलकूतमें फिरिस्ते नूर जल्लाल जबरूतमें जी । लाहूतमें नूर जम्माल पहिंचानियै हक्क मक्कान हाहूतमें जी ॥ बका बाहूत साहूत मुसिद वारहै जोरब्ब राहूतमें जी । कहत कब्बीर अबिगति आहूतमें खुद खाविन्द जाहूत में जी ॥ १ ॥” सो वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण सबते न्यारे हैं औ उनको धाम सबते परेहै बाकोकोई अंतनहीं पायो सो तिनके गुण हे जीवो ! तुम कैसे पावोगे ॥ ५ ॥

इति अठारहवां शब्द समाप्त ।

अथउन्नीसवां शब्द ॥ १९ ॥

एतत राम जपो हो प्राणी तुम बूझो अकथ कहानी ।
जाको भाव होत हरि ऊपर जागत रैन विहानी ॥ १ ॥

डाइनि डारे सोनहा डारे सिंह रहे बन घेरे ।

पांच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन वाज घनेरे ॥ २ ॥

रोह मृगा संशय बन हाँकै पारथ वाना भेलै ।

सायर जरै सकल बन डाहै मक्ष अहेरा खेलै ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जो यह पद निरधारै ।

जो यहि पदको गाय विचारै आप तरै अरुतारै ॥ ४ ॥

एतत राम जपोहो प्राणी तुम बूझौ अकथ कहानी ।

जाको भाव होत हरि ऊपर जागत रैन विहानी ॥ १ ॥

एतत कहे ई जे निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो। कैसे जपो कि, अकथ कहानी को मनबचनके परे जाह रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थ बूझिकै जपो । श्रीरघुनाथ जीके ऊपर जाको भाव होय है ताको यहसंसाररूपी जो है निशा बिहानई है जायहै; सोवतते जागिउठैहै । ताते यह ध्वनित होय है जाको रघुनाथजी के ऊपर भाव नहीं है ताको यह संसार रूपी निशा बनी रहैहै बिहान नहीं होयहै; जागै नहीं है; कहे ज्ञाननहीं होयहै; भ्रमरूपी निशामें सोवत रहै है । यहीसंसारमें जीव कैसे घेरे रहते हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

डाइन डारे सोनहा डारे सिंह रहे बन घेरे ।

पांच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन वाज घनेरे ॥ २ ॥

डाइनि जेहें गुरुवालोग छालाकें डारनेवाले जे वाके कानमें अपनी विद्या-डारिदियो । इहां गुरुवालोग डाइनि हैं जे सिंहको मंत्रते बाँधि देयहैं वा बनत्यागि और बननहीं जायहैं । औ सोनहा जोहै सो हंहंसमंत्र तौनेमों डोंरा बांध्यो अर्थात् यह कह्यो कि; तूहीब्रह्महै और कहां खोजै, तैंवा है । यह-मंत्रको अर्थबतायो सो सिंह जोहै जीव या सामर्थ है सो उनही बाणीरूप बन-में घेरि रह्यो कहे बाँधिरह्यो तबपाँचौ जे ज्ञानेन्द्रियहैं पाँचौ जे कर्मेन्द्रियहैं अथवा

पाचौ जे प्राणहैं प्राण अपान समान उदान व्यान तेई कुटुम्ब हैं तिनमें मिलिकै जूझैलांग पांच कुटुम्ब सिंहके पंचआनन जब सिंहको मारन जाय है तब झुनका बाजा बजावै है तैसे यहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजा हैं ॥ २ ॥

रोह मृगा संशय वन हांकै पारथ बाना मेलै ।

सायरजरै सकल वन डाहे मच्छ अहेराखेलै ॥ ३ ॥

रोह कौनकहावै कि, जो कमरीमें आगीबारत जायहै झुनकां बजावत जायहै तामें मृगा मोहि जायहैं सो वाहीकी छाया में पीछे धनुष बाणकी बांसकी बंदूकादि आयुध लिये खड़ा रहै है शिकारी सोई मारैहै यही रोहहै सो मृगराज जोहै जीव ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यास कैकै धोखा ब्रह्मको प्रकाश बतायो तामें-रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहौ हाँकि कौन लायो? तौ संशय रूप हँकबैया है नैस आगी बरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृग मृगराज जायहै या कैसो बाजा बाजै है या कैसी टेमहै या संशयजो है ज्ञानमिलनकी चाह सो याको हाँकिले आयो ऐसे गुरुवा लोगनकी जोबताई बाणीबनहै जौनअनहद सुनिबेकी युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनिसुनिकै औ जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्म देखिकै जीव या संशय कैकै निकट जायहै औ याबिचा-चारै है कि, या ज्योतिरूप ब्रह्ममैहीं हौं कि, मोते भिन्नहै तब शिकारी जैसे टुको रहैहै ऐसो मूलाज्ञान रूप शिकारी अहं ब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि बा जीवको अनुभव कराय देयँ कि, महीं ब्रह्महौं वाके जीवत्वको नाश कै देयहै यहीमारिबोहै ॥ औ जैसे बाण लागे मृग राजको अंतःकरण जर उठै है अधि-क कोप है बनमें जोई आगे वृक्ष परैहै तौने पर चोटं करैहै, जो मारनवालेको देखै है तो बाहूको धीर खायहै ऐसे जब आपनेको ब्रह्ममान्यो तबसायर जो संसारहै सो जरैहै अर्थात् संसार याको मिथ्या जानि परैहै औ बन डाहैहै कहे वा दशमें बाणीरूप बन सोऊ भूलिजायहै । ऐसे अधिक मारचो अधिकको बाघ मारचो अधिकको जबमारिकै दोऊ गलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो । अथवा मारिकै दोऊ बहैरहै कीड़ापरे जब बाढ़को जलआयो तबमछरी खायो

ऐसें ब्रह्महु में छीनहै अठई अवस्थाको प्राप्तभये तब न जीवत्वरह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसैहूभये तथापि साहबको बिना जाने मच्छ जो काल है सो खायलेईहै, फिरि संसारमें परै है तामें प्रमाण ॥ “येऽन्येरविंदाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावाद विशुद्धबुद्धयः । आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततःपतत्यन्त्यधोनादृतयुष्मदंग्रयः ॥ ” इति भागवते ॥ कबीरजीकोप्रमाण ॥ “कोटि करम कटपलमें, जोराचै यक नाम । अनेक जन्म जो पुण्य करै, नहीं नाम बिनु धाम ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद निरधारै ॥

जो यह पदको गाइ बिचारै आपु तरै अरु तारै ॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि, हेसंतो ! जो यह पदको निराधारै कहे सारासार बिचारकरै औ जौन ब्रह्मपद कहिआये तौनेको गाइ बिचारै कहे माया बिचारै सो आपु तरेहै और आनहूको तारै है अर्थात् साहबको वा जानै औ औरहूको जनाइ देइ ॥ ४ ॥

इति उन्नीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बीसवां शब्द ॥ २० ॥

कोइ राम रसिक रस पियहुगे । पियहुगे सुख जिय हुगे ॥ १ ॥

फल अमृतै बीज नहिं बोकला शुक्पक्षी रस खाई ।

चुवै न बुन्द अंग नहिं भीजै दास भँवर सँगलाई ॥ २ ॥

निगमरसाल चारि फल लागे तामें तीनि समाई ।

एक है दूरि चहै सब कोई यतन यतन कोइ पाई ॥ ३ ॥

गयउ वसंत ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर आवै ।

कहै कबीर स्वामी सुख सागर राम मगन है पावै ॥ ४ ॥

कोइ राम रसिक रसपियहुगे सुख जियहुगे ॥ १ ॥

फल अमृतै बीज नाहिं बोकला शुक पक्षी रस खाई ।

चुवै न बुंद अंग नाहिं भीजै दास भँवर सग लाई ॥ २ ॥

हे जीवौ ! कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिकहैकै रामरस पिऔगे । जो रामरसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्म मरणते छूटोगे अरुआनंदरूप होउगे ॥ १ ॥ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके स्वायेते जन्म मरण नहीं होइहै औ तौने फलमें बीज बोकला नहींहैं अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहींहै औ न मीठों फलहोइहै ताही फलमें सुवा चोंच चलावैहै यह लोकमें प्रसिद्धहै । यहां शुकाचार्य रामरसको मुक्त है आस्वादन कियोहै ताते यह व्यंजित भयो कि, रामरसते ब्रह्मानंद कमही है अर्थात् श्रीमद्भागवतमें है ॥ “ बंदिमहापुरुषतेचरणारविंदम् ” ॥ ऐसो कहि शुकाचार्य परम परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीके चरणनको वंदना कियोहै औ श्रीरघुनंदनहीके शरण गये हैं । यह वणन श्रीमद्भागवतहीमें है ॥ “ तन्नाकपालवसुपालकिरीटगुणं पादांबुजंरघुपतेःशरणंप्रपद्ये ” ॥ इतिभागवते ॥ औ श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्व तात्पर्यते वर्णन कियोहै सो कोई बिरला संतजन याकोअर्थ जानैहै । औ जो यह पाठहोइ “ फल अंकृतै बीजनहिं बोकला ” तौयह अर्थहै कि फलकी अंकृति कहे आकृति तोहै परन्तु बीजबोकला जे निर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवैहैं इनते भिन्न है । सो रामरसरूपी फल है तो रस रूपई है परन्तु वाको रसबुन्दहू नहींचुवैहै अर्थात् अंतकबहू नहींहोइ है अनादि अनंतहै । औ काहूके पांचौ शरीरके अंगनहीं भीजैहैं अर्थात् कोई पांच शरीरते भिन्न नहीं होइहै । जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवरहैं ते वाके संग लगे रहैं हैं अर्थात् रामरस पान करतई रहै हैं ॥ २ ॥

निगम रसाल चारि फल लागे तामें तीनि समाई ।

यक है दूरि चहै सब कोई यतन यतन कोइ पाई ॥ ३ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, निगम जोहै रसाल कहे आमको वृक्ष तामें चारि-फल लागे हैं अर्थ धर्म काम मोक्ष तिनमें तीनिफल तहैं समातहैं कहे नष्टहै-

जाइहैं अर्थात् तीनिऊं अनित्यहैं औ एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरि है यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावै है । अर्थात् निगमतौ रसालहै रसमय है तात्पर्य-वृत्तिकरिके साहबईको बतावैहै सो वह तो कोई जानै नहींहै यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ॥ ३ ॥

गयउ वसंत ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर आवै ।

कहै कबीर स्वामी सुखसागर राम मगन ह्वै पावै ॥ ४ ॥

अरु जो कोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फल पायोहै वाको पायो है ताको वसंत ऋतु जाइ रहैहै ग्रीष्म ऋतु ह्वै जाइहै कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलि गयो । सुखको आस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीं ब्रह्महैं। ग्रीष्म-ऋतुमें प्रकाश बढ़ै है सोयहौ प्रकाशमें समाइगयो सो फेरि जोचाहै कि, रामोपा, सनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छायामिलै तौ नहीं मिलै । श्रीकबीरजीकहै हैं कि-सुखसागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामराम रसमें जब मग्नहोय है तबहीं पावै है जीवको स्वरूप ॥ “ आत्मदास्यं हरेस्स्वाम्यं स्वभावं च सदास्मर ” ॥ औ शुकाचार्य या फलको चाखिनहै तामें प्रमाण ॥ “ निग-मकल्पतरोर्गलितं फलं शुक्रमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिवतभागवतं रसमालयं मुहुरहोर-सिकाभुविभावुकाः ” ॥ ५ ॥ इति भागवते ॥ ४ ॥

इति बीसवां शब्द समाप्त ।

अथ इक्कीसवां शब्द ॥ २१ ॥

राम न रमसि कौन ढँड लागा । मरि जैहै काँ करिहै अभागा १
कोइ तीरथ कोई मुण्डित केशा । पाखँड भर्म मंत्र उपदेशा २
विद्या वेद पढ़ि करहंकारा । अंतकाल मुख फाँकै क्षारा ३

दुखित सुखितसबकुटुंब जेवइवे। मरणवेर यकसरदुखपइवे४
कह कवीर यहकलिहै खोटी। जो रहकरवा निकसललोटी५

राम न रमसि कौन दंड लागा । मरि जैहै का करिहै अभागा

सबको दंड छोड़ा देनवारे जे सबते परे परमपुरुष श्रीरामचंद्र हैं तिनमें जोतैनहीं रमैहै सो तोको गुरुवा लोगनको कौन दंड लगौहै यहतो सबयहींके साथी हैं साहबके भुलायदेनवारे हैं जेउपदेश करनवारेगुरुवनके कहे माया ब्रह्म आत्माको ज्ञानरूपी दंडचवावमें जोते परे हैं सो हे अभागा! जबतैंमरिजैहै तबवे गुरुवा तोको न बचासकेंगे तब क्याकरोगे ॥ १ ॥

कोइ तीरथ कोई मुंडितकेशा । पाखंड भर्म मंत्र उपदेशार

तीर्थनमें जाइकै कोई चाहौहौ कि, बिना ज्ञानही मुक्तिहै जाइहै औकोई मूढ़-मुड़ायकै वेषवनाइकै संन्यासीहैकै औ अपने आत्माहीको मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तहैजायँ । औकोई नास्तिकादिकनके जेनानापाखंड मतहैं तिनमें लागिके जानौकिं मुक्त हैगये औ कोई भ्रमजो धोखाब्रह्महै तामें लागिके आपने-कोब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हममुक्तहैगये औकोई और और देवतनके मंत्रउप-देश पायकै जानौहौ किं हममुक्तहैगये ॥ २ ॥

विद्या वेद पढ़ि कर हङ्कारा। अंतकाल मुखफांकै क्षारा॥३॥

अरुकोई वेदबाह्य जे नाना विद्या अपने अपने गुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै औ कोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र औ चौंसठ कलादिक सब आइगये अहङ्कारकरोहो कि हम मुक्तहैगये सोमुक्ति तो जिनको वेदतात्पर्य करिकै बतावेहै ऐसेजे परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनके बिनाजाने न होयगी । होयगो कहां ? कि जबअंतकाल तेरो होइगो तब यहौ मुखमें क्षार फांकैगो औ पुनिजब पुण्यक्षीणहोइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरैब करोगे क्षारई फांकौगे ॥ ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुंबजेवइवे । मरणवेरयकसरदुखपइवे४

दुःखसुखमें सबकुटुम्बनको जेवावैहै तेमरणसमय कोईकाम नहीं आवैहैं तैं अकेलही दुःखपावैहैं परन्तु सहायतेरी कोई नहीं करिसकै है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह कलि है खोटी । जोह करवा निकसल टोटी ५

कलिनाम झगड़ाको है सो कबीरजी कहैहैं यह माया ब्रह्मको झगड़ा बहुत-
खोटहै अथवा यह कलिकाल अतिखोटहै । जोवस्तु करवामेरहैहै सोईटोटीतेनि-
कसैहै तैसेजोकर्म यहजीवकरै है सोई दुःखसुख वह जन्मभोगकरै है अरु नाना
देवतनकी उपासनाअब करैहै ताहीकी वासना बनीरहै है तेहिते पुनिबोई देवतन
में लागै है अरु जो ब्रह्मविचार अबकरैहै सोई ब्रह्मविचार पुनिजन्मलैकै करैहै
अर्थात् बिना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने जन्ममरण नहीं छूटैहै जोवासना
अंतःकरणमें बनी रहैहै सोई पुनि होयहै ॥ ५ ॥

इति इक्कीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बार्दिसवां शब्द ॥ २२ ॥

अवधू छोड़ो मन विस्तारा ।

सो पद गहहु जाहिते सद्गति परब्रह्मते न्यारा ॥ १ ॥

नहीं महादेव नहीं महम्मद हरि हजरत तव नाहीं ।

आदम ब्रह्म नहीं तव होते नहीं धूप नहिं छाहीं ॥ २ ॥

असी सहस पैगंबर नाहीं सहस अठासी मूनी ।

चन्द्र सूर्य तारागण नाहीं मच्छ कच्छ नाह दूनी ॥ ३ ॥

वेद किताब स्मृति नहिं संयम नहीं यम न पारसाही ।

वांगनेवाज कलिमा नहिं होते रामो नहीं खोदाही ॥ ४ ॥

आदि अंत मन मध्य न होते आतश पवन न पानी ।

लखचौरासी जीवजन्तु नहीं साखी शब्द न वानी ॥ ५ ॥

कहै कबीर सुनो हो अवधू आगे करहु विचारा ।

पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे किरतमकिनउपचारा ॥ ६ ॥

हे अवधू जीवौ ! तुम्हारे तो बधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात् तुमतौ मायाते भिन्नहौ । जेतनो तुम देखोहो सुनोहौ ताको मायामें मिलिकै तुम्हारे मनही बिस्तार कियो है सो यह मनको बिस्तार छोड़ि देउ अरु जिनते सद्गति कहे समीचीन गति है मन बचनके परे धोखा ब्रह्मके पार ऐसो जो लोक प्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पदगहौ । कबीरजी कहै हैं कि, हेजीवौ ! बिचार तो करौ (जोजो बात यहि पदमें स्पष्ट वर्णन करिगये ते) ये कोऊ तब नहीं रहे । अरु वासों भिन्न जो तुम कहौ हौ कि, पूर्णब्रह्म है कहे सर्वत्र ब्रह्मही है वासो भिन्नदूसरो नहीं है सो यह धोखा कहाँते प्रकट भयो है । औ किरिनम जोमाया है ताको किन उपचार कहे किन आरोपण किण्यो अर्थात् यह शुद्ध समष्टि जीवको मनहीं किरितम जो माया है ताको आरोपण कियोहै औ मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियोहै, ताहीको कियो राम खोदाय आदिजे मन बचनमें आवै हैं जे वर्णन करि आये हैं तेई बिस्तार हैं सो पूर्व मंगलमें औ प्रथम रमैनीमें वर्णन करि आयेहैं । औ यहां रामको औ हरिको जो कहै हैं सो नारायण जे रामावतार लेइ हैं तिनको कहै हैं । नहीं यमन परसाही कहे चौदहौ यमनके परेजे निरंजन हैं तिनहूँकी साही नहीं रही । परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको नहीं कहै हैं काहेते कि, वेतौ मन बचनके परे हैं सो पूर्वलिखि आये हैं सोबांवि लेहुगे । सोजब मनको त्यागो तब परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूपदेई तामेंप्रमाण—“ मुक्तस्यविग्रहोलाभः ” ॥ यह श्रुति तौने स्वरूपते साहबको अनिर्वचनीय रामनामनामादिक तुमको स्फुरित होईंगे । तामें प्रमाण—“ वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः । तस्यनामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाशयते ॥ ” इतिमहारामायणे ॥ ६ ॥

इति बाईसवां शब्द समाप्त ।

अथ तेईसवां शब्द ॥ २३ ॥

अवधू कुदरतिकी गतिन्यारी ।

रङ्ग निवाज करै वह राजा भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥

येते लवंगहि फल नहिं लागै चंदन फूल न फूलै ।
 मच्छ शिकारी रमै जंगलमें सिंह समुद्रहि फूलै ॥ २ ॥
 रेड़ा रूख भया मलयागिरि चहुँदिशि फूटी बासा ।
 तीनि लोक ब्रह्मांड खण्डमें देखै अंध तमासा ॥ ३ ॥
 पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ता डोलै ।
 गंगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै अनहद वाणी बोलै ॥ ४ ॥
 बांधि अकाश पाताल पठावे शेष स्वर्गपर राजै ।
 कहै कबीर राम हैं राजा जो कुछ करैं सो छाजै ॥ ५ ॥

जो पूर्व यह कहि आये कि रामौ नहिं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीची
 गति होइ है तिनके पदगहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै
 या शब्दमें बतायो है । अब याकी टीका लिखते हैं ।

अवधू कुदरतिकी गति न्यारी

रंक निवाज करै वह राजा भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥
 येते लवंगहि फल नहिं लागै चंदन फूल न फूलै ।
 मच्छ शिकारी रमै जंगलमें सिंह समुद्रहि झूलै ॥ २ ॥

हे अवधू जीवौ ! परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्य
 की गति न्यारी है । सुग्रीव जे पुत्रकलत्रते हीन, भिखारीकी नाई बन बन
 पहाड़ पहाड़ बागत रहे तिनको निवाजिकै राजा बनाइ दियो । औ सबराज-
 नके जीतनवारे जे क्षत्रिय तिनको मारि कै पृथ्वी भूसुरन दैडारेउ । नारायण
 के अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो ॥ १ ॥ लवंगमें फल
 नहीं लागै सोऊ लागै, चंदनमें फूल नहीं फूलै सोऊ फूलै है जाकी सामर्थ्य
 ते । सो बाल्मीकीयमें लिख्यो है जब श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं
 तब जे वृक्ष फूलै फूलैवाले नहीं रहे सूखे रहे तेऊ फालि फूलिआये हैं । औ

मच्छ जो मत्स्योदरी सो शिकारी जो शंतनु ताकेसाथ भय ते रमन लगी ।
सिंहसमर्थ को कहै हैं सो समर्थ जे बड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें
बसेजाय ॥ २ ॥

**रेड़ा रूख भया मलयागिरि चहुं दिशि फूटी वासा ।
तीनि लोक ब्रह्मांड खंडमें देखै अंध तमासा ॥ ३ ॥**

रेड़ा रूख जेहैं, सवरी, बारार, निषादादिक जिनको वेदका अधिकार नहीं रह्यो,
तेऊ चंहनद्वैगये । उनकी बास चारिउदिशा फूटी कहे उनको यश सबकोई गावै
है । चंदन औरौ वृक्षनको चंदन करै है ऐसे औरहूको साधु बनावनवारे ये सब
भये तामें प्रमाण ॥ “नजन्मनूनमहतोनसौभगं नवाङ्गुनबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः । तैर्य-
द्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येवतलक्ष्मणाग्रजः ” इतिभागवते ॥ औ आँध-
रेजे हैं धृतराष्ट्र तिनको कृष्णचन्द्र ब्रह्माण्ड भरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्यते
शरीरहीमें देखायदियो । नारायण औ कृष्णचन्द्र साहबकी सामर्थ्यते करै हैं
तामेंप्रमाण ॥ “ यस्यप्रसादाद्देवेशममसामर्थ्यमीदृशम् । संहरामिक्षणादेवत्रैलो-
क्यंसचराचरम् ॥ धातासृजतिभूतानि विष्णुर्द्धारयतेजगत् ” । इतिसारस्वततंत्रे ॥
कृष्णचंद्रको अवतार विष्णुहीते होइहै सो पुराणनमें प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ताडोलै ।

गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै अनहद बाणी बोलै ॥ ४ ॥

औ जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगु जे हैं अरुण ते पृथ्वीकी कीला
जे हैं सुमेरु तिसको रोज उलंघै हैं नांपै हैं । अथवा पंगुजा हैं राडु जाके शिरै
भरहै गोड़ हाथ नहीं है सोसुमेरु का नाघत रहै है औ मुक्तजे हैं नारद
शुक कबीर आदिक जे संसार ते मुक्त हैंकै मनादिकन को छोड़िकै साहब के
पास गये हैं औ यह शास्त्रमें लिखै है कि, उहांके गयेपुनि नहीं आवै है
परन्तु तेऊ साहबकी सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलै हैं संसारबाधा नहीं करिसकै
है । आ जब शुकाचार्य निकसे हैं तब व्यास पछुआन जात रहे हैं तब गूंगे जे
वृक्ष हैं तेऊ व्यासको समुझायो है । औ मध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे

तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तबबरदा शिष्यनको पढ़ायो है । औ जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उनके दासनके द्वैगई कि, वोई अनहद वाणीको बोले हैं जाकी हद नहीं है ॥ ४ ॥

बाँधि अकाश पताल पठावै शेषस्वर्ग परराजै ।

कहे कबीर रामहै राजा जोकुछ करै सो छाजै ॥ ५ ॥

औ आकाश जो है आकाशवत् ब्रह्म तौनेको जोमानै है कि वह ब्रह्म मैहीं हैं ताको साहब अपनो ज्ञान कराइकै धोखा ज्ञानको बाँधि कै पतालमें पटै देइहै । अर्थात् तेहि जीवको मूलज्ञान निर्मूलई करि देयहै । जैसे लोकमें या बात कहै हैं कि, या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़दियो फिरि वा अज्ञानको अंकुर नहीं होयहै । औ शेष कहे भगवत् शेषजो है जीव सो जे साहबकी सामर्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जोहै साहबको लोक तहाँ राजै हैं । “स्वर्गपदकोऽर्थ जो दुःखते भिन्न स्थान होयहै सो कहावै स्वर्ग” । औ जो लोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहब तहाँराजैहै दुःखरहितस्थानको स्वर्ग कहै हैं तामें प्रमाण । “यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनंतरम् । अभिछाषोपनीतंच तत्पदंस्वःपदास्पदम्” इति॥ सो कबीरजी कहै हैं कि यह अवटित घटना सामर्थ्य परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं वे राजा हैं वे जोकुछकरैं सो सब छाजैहै चाहे रंकको राजा करैं चाहे राजाको रंक करैं चाहे लौंगमें फल लगावैं चाहे चंदनमें फूल फुलाय देयैं चाहे मछरीको बनमें रमावै चाहे सिंहको समुद्र में रमावैं चाहे रेंडारूखको चंदनकरैं । चाहे अंधाको तीनउ लोक देखाय देयैं चाहे पंगुको सुमेरु नँघायदेयैं चाहे गूंगाको ज्ञान कहवायदेइ । चाहे आकाशको बाँधिके पातालपैठावैं चाहे पातालवासी जे शेष तिनको स्वर्गपरराखैं, या सामर्थ्य उनमेंहै श्रीरामचंद्र तौराजाहैं तामें प्रमाण ॥ “राजाधिराजस्सर्वेषां रामएव न संशयः ॥” औ उन्हींकी भयते सूर्य चन्द्रमा अवसरमें उये हैं औ मृत्यु जबसमय आवैहै तबखायहै तामें प्रमाण ॥ यद्गयादाति वातोयं सूर्यस्तपतियद्गयात् ॥ वर्षतींद्रो दहत्यग्निर्मृत्युश्चरति पंचमः ॥ इति श्रीमद्भागवते ॥ ५ ॥

इति तेईसवां शब्द समाप्त ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥ २४ ॥

अबधू सो योगी गुरु मेरा । जो ई पदको करै निवेरा ॥ १ ॥
 तरुवर एक मूल विन ठाढ़ो विन फूले फल लागा ।
 शाखा पत्र कछू नहिं वाके अष्ट गगन मुख जागा ॥ २ ॥
 पौ विनु पत्र करह विनु तुम्बा विनु जिह्वा गुण गावै ।
 गावनहारके रूप न रेखा सतगुरु होइ लखावै ॥ ३ ॥
 पक्षी खोज मीनको मारग कहे कवीर दोउ भारी ।
 अपरम पार पार पुरुषोत्तम मूरतिकी बलिहारी ॥ ४ ॥

अबधू सो योगी गुरुमेरा । जो ई पदको करै निवेरा ॥ १ ॥
 तरुवर एक मूल विन ठाढ़ो विन फूलै फल लागा ।
 शाखा पत्र कछू नहिं वाके अष्ट गगन मुख जागा ॥ २ ॥

बधू जाके न होइ सो अबधू कहावै सो हे अबधु जीवो! जो यह पदके अर्थको निवेरा करिके जानै सो योगी गुरुकहे श्रेष्ठहै औमेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौहैं ॥ १ ॥ एकजो तरुवरहै सो विन मूल ठाढ़ो है अरु वामें बिनाफूल फल लागो हैं सो यहां तरुवर मनहै सो जड़है अरु आत्मा चैतन्य है शुद्ध है जो कहिये आत्माते उत्पत्तिहै सो जो आत्माते उत्पन्नहोतो तौ आत्मा चतन्य है याते यहू चैतन्य हो तो ताते आत्माते नहीं उत्पन्नभयो । यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो बिचारैतौ वाकोमूल भगवत् अज्ञान सत नहीं है बिनामूल ठाढ़े भयोहै अरु बिना फूलै फल लागोहै कहे जगत् उत्पादक क्रिया मननहीं कियो मिथ्या संकल्पमात्रते जगद्रूप फललागवई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अंगनहीं है चित्त बुद्धि अहंकार येऊमिथ्याहैं निराकारहैं अरु यह मनैके मुखते आठौ गगन जागतभये । सात सप्तावरणके आकाश अथवा चैतन्याकाश ॥ २ ॥

पौविनुपत्रकरहविनुतुम्बा विनुजिह्वागुणगावै ।

गावनहारकेरूप न रेखा सतगुरुहोइलखावै ॥ ३ ॥

अब श्रीकबीरजी जीवात्मा को वृक्षरूप द्वैकै बर्णन करें है पौविनु कहे आत्माको जगत्को अंकुर नहीं है मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्रदुइ लागवेई कियो औ करहूजो कर्म है सो नहीं रह्यो आत्मामें जगत्तरूप तुम्बा लागवेई कियो । यह जीवात्माकी दशाकाहेतेभई कि, बिनु जिह्वा जंहै निराकार ब्रह्म ताके जे गुणहैं देश काल बस्तु परिच्छेद ते शून्यत्व सो आपने में लगावन लग्यो । ये गुण मोहीं में हैं भेरोस्वरूप यही है सो जो या आपनेको ब्रह्ममान्यो तौ आत्माके ब्रह्मकेरूपको रेखनहीं है काहेते याको देश बनो है समष्टि जीवलोक प्रकाशमें रहैहैं, औ कालबन्यो है जौनेकालमें समष्टिते व्यष्टि होयहै, औ या देश काल बस्तु परिच्छेदते सहितहै काहेते अणुहै भगवद्दासहै तामें प्रमाण॥ “बालाग्रशत-भागस्यशतधाकल्पितस्यच॥ भागोजीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पते” इतिश्रुतिः अंशोनानाव्यपदेशात्ते ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीनको मारग कहे कबीर दोउ भारी ।

अपरम पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ॥४॥

ताते मीनकी नाई संसारते उलटी गति चलिक्कै पक्षी जो हंस स्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजी कहै हैं ये दोऊ भारी हैं संसारते उलटी गति होइबोः यह भारी है, आपनो हंसरूप पाइबो यह भारी है । सोसंसारते उलटी गति करि हंसरूप पाइकै परमपर जो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय । भाव यह है तब तेरो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति चौबीसवां शब्द समाप्त ।

अथ पचीरवां शब्द ॥ २५ ॥

अवधू वोत तुरावल राता । नाचै वाजन वाज वराता ॥ १ ॥
 मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथा जोरि कहाता ।
 मड़येके चारन समधी दीन्हो पुत्र विवाहल माता ॥ २ ॥
 दुलहिनि लीपि चौक वैठाये निरभय पद परभाता ।
 भातहि उलटि वरातहिं खायो भली वनी कुशलाता ॥ ३ ॥
 पाणि ग्रहण भये भव मंडौ सुषुमनि सुरति समाता ।
 कहै कवीर सुनो हो संतो बूझो पण्डित ज्ञाता ॥ ४ ॥

अवधू वोत तुरावल राता । नाचै वाजन वाज वराता ॥ १ ॥

हे जीवौ ! आपतौ अवधू रहेहौ कहे आपके बधू जो है मायासो नहीं रही है परंतु रौरे अब वह तत्त्वमें राते हैं । अथवा हे अवधू ! यह शरीरको राजा है जीव सो अब वह तत्त्वमें राता है । कौन तत्त्वमें राता है ? सोकहै हैं; जहां बाजन नाचै है, बरांतबाजै है । सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचै है कहे जाग्रत् अवस्थामें स्थूल, स्वप्नअवस्थामें सूक्ष्म, औ सुषुप्ति में कारण, तुरियामें महाकारण, येई नाचै हैं । तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उन्मनी मुद्राआदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तेई बाजै हैं कहे तिनको जो संघट्ट द्वैवो है इंद्रियनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकी ध्वनि सुनि परती हैं तामेंप्रमाण कबीरहीजीको ॥ “उठतशब्द घनघोर शंखध्वनि अतिघना । तत्त्वोंकी झनकार बजतझीनीझना” ॥ १ ॥

मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथा जोर कहाता ।

मड़येके चारन समधी दीन्हो पुत्र विवाहल माता ॥ २ ॥

नाभीमें चक्र है तामें नागिनीको बास है सो चक्रके द्वारमें मुड़दिये परी है । आत्मा नीचे है सो वह आत्मा दूलह है ताहीकी नागिनी मौर है रही

है सो जब पांचहजार कुंभक कियों तब नागिनी जागीं सो ऊपर को चढ़ी तब चक्रको द्वार खुलिययो तब आत्मातो दूल्हहै सो चढ़िकै मौर जो नागिनीहै ताके माथेपर गैब गुह्यमें बैठयो जाइ । औ बरातनमें जो नहीं कहिबेलायक झूठीबात सो गारिमें कहैहैं इहां शरीरमें ब्रह्म द्वैजैबो अकथहै कहिबे लायक नहीं है । सो कहै हैं कि, हम ब्रह्मह्वगये । औ मड़ये के चारनको नेग समधी देइहै; इहां मड़येके चारनके तेगनमें समधीही दीन्होहै । मायाको पिता जो मनहै सो एक समधीहै औ मनके समधी साहबहैं काहेते कि, यहजीव भगवद्वात्सल्यको पात्रहै जबयह आत्मा विषयनमें रह्यो है तब बेजाने कबहूँ कहतहूँ सुनतरह्यो जबते ब्रह्माड मड़वामें गयो तबते कबीरजी यहकूट करै हैं कि, मड़येके चारन में समधीको दौरायो है कहे समधी जो साहब ताको कहिबो सुनिबो भिटिगयो । सो जानैतो यहहै कि, हम मायाते छूटिगये पै नागिनीको जै बुन्दसुधा देइहै तै वर्ष वहां समाधि लागै है सो नागिनी ही वहां गीहरौख है सो पुत्र जो जीवै सो माता जो माया है ज्योतिरूप आदिशक्ति ताको विवाहि लेयहै कहे वाहीहै संग ज्योतिमें लीनहै के वहां रहै है ॥ २ ॥

दुलहिनि लीपि चौक बैठाये निर्भय पद परभाता ।

भातहिं उलटि बरातहिं खायो भली वनी कुशलाता ॥३॥

चौक लीपिकै दुलिहिन को बैठावै हैं । यहां दुलहिन जो है माया जो जगत् रूप करिकै नानारूपहै ताको लीपिकै एक करिडारयो कहे एक ब्रह्मही मान भयो ताके ऊपर चौकबैठायो कहे चौक देत भयो । अर्थात् अंतःकरणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावै है । वृत्त्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाणचैतन्य कहावै है । बिषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय चैतन्य कहावै है । स्फूर्त्यवच्छिन्नचैतन्य स्फूर्त चैतन्य कहावै है । सो ये चारों चैतन्यको चौकबैठायो कहे चौक पूरयो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थितकियो विवाह होत होत भिनसार होइ जायहै तब यह मन भयो कि, हम निर्भय पदको पहुंचिगये प्रभात द्वैगयो, मोहरात्री व्यतीत द्वैगई । नागिनीको जो अमृत सरोवर में अमृत पियावै है सोई भातहै सो नागिनी जब अमृतपियो तब वहै भात बरात जो आगेबर्णनकरि आये पांचतत्त्व पचीसप्रकृति ताकोखा

लियो अर्थात् कुछ सुधि न रह गई । सो कबीरजी कहै हैं कि भली कुशलात बनी है कि तब तो कुछ सुधि रह रही अब कुछ सुधिनहीं रह गई ॥ ३ ॥

पाणि ग्रहण भये भव मंड्यो सुषुमनि सुरति समाता ।

कहै कबीर सुनो हो संतो बूझो पंडित ज्ञाता ॥ ४ ॥

वहां मंडप परे पर पाणिग्रहण होय है यहां पाणिग्रहण भये पर भव मंड्यो अर्थात् जब पाणि ग्रहण मायाको द्वे चुक्यो कहें नागिनी को जब सुधा पिआइ चुक्यो तब जे मुह नगिनीको पानी दियो तैसेहि फल मिल्यो । एक मुंह दियो तौ महीना भरेकी समाधि लगी औ दुइ मुंह दियो तौ तीन महीनाकी समाधि लगी औ चारि मुंह दियो तौ छः महीनाकी समाधि लगी, औ पांच मुंह दियो तौ वर्ष दिनकी, औ छः मुंह दियो तौ तीन वर्षकी, औ सात मुंह दियो तौ बारह वर्षकी, समाधि लगी । और जो हजारन वर्ष समाधि लगावा चाहै तौ और मुंह देय । सो जब नागिनीको सुधा पिआयो तब जे मुंह दियो तेतनेन दिन भर सुषुमनि सुरति समाता । अर्थात् सुषुम्णामें जीवकी सुरति समाई है । पुनि जब समाधि उतरी तब फिर भव मंड्यो कहै संसारी भयो अर्थात् पुनि ब्रह्मांड मंड्यो कि, शरीरकी सुधि भई । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो ! हे ज्ञाता पंडितौ ! तुम सुनौ तौ बूझौ तौ वे कहां मुक्त भये ? नहीं भये फेरि तौ संसारही में उलटि आवै हैं ॥ ४ ॥

इति पचीसवां शब्द समाप्त ।

अथ छब्बीसवां शब्द ॥ २६ ॥

कोई विरला दोस्त हमारा भाई रे बहुतका कहिये ।

गाठन भजन सवारे सोइ ज्यों राम रखै त्यों रहिये ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुति संयम ज्योतिष पढ़ि बैलाना ।

छौ दर्शन पाखंड छानवे येकल काहु न जाना ॥ २ ॥

आलम दुनी सकल फिरि आये कलि जीवहि नहिं आना ।
ताही करिकै जगत उठावै मनमें मन न समाना ॥ ३ ॥

कहै कबीर योगी औ जंगम फीकी उनकी आसा ।

रामै राम रतै ज्यों चातक निश्चय भगति निवासा ॥ ४ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा भाईरे बहुत का कहिये ।

गाठन भजन सवारै सोइ ज्यों राम रखै त्यों रहिये ॥ १ ॥

कबीरजी कहै हैं कि, हे भाइउ जीवौ ! और और बहुत मतवारे तौ बहुत जीव हैं तिनको कहा कहिये । रामोपासक हमारो दोस्त जैसे हम गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहे हैं ऐसे वह गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहै । औ जैसे हम को राम राखै है तैसही रहै हैं ऐसे बहू रहै हैं । क्षणभरि न भूलै ऐसा कोई बिरला है ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुति संयम ज्योतिष पढ़ि बैलाना ।

छौदर्शन पाखंड छानवे येकल काहु न जाना ॥ २ ॥

अब बहुत मतवारे जे बहुतहैं तिनको कहै हैं कोई आसन दढ़ करैहै कोई पवन साधैहै कोई योग करैहै कोई वेद पढ़ैहै । कोई संयम करैहै कोई व्रत करैहै कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब बैकलाइ गये । जो बैकल होइहै सो झूठको साँच जानैहै औ साँच को झूठ मानैहै । सो छःदर्शन छानवे पाखण्ड-वारे जे ये सबहैं एकल कहे एक स्वामी सबके परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो अथवा एकलकहे जौने करते मैं उपासना करौहौं सो कोई नहीं जानै है ॥ २ ॥

आलम दुनी सकल फिरि आये कलि जीवहि नहिं आना ।

ताही करिकै जगत उठावै मनमें मन न समाना ॥ ३ ॥

आलम कहे दुनियां संसार सो सब जीव दुनियांमें फिरि आये गुरुवा लोगनके यहाँपर या कल जौनेकरते मैं उपासना श्रीरामचन्द्रकी करौ हौं सो आपने जियमें न आनत भये जातेसंसार छूटिजाय साहब मिलैं जे नानामत आगेकहिआये ताही

करिकै जगत्को उठावैहै कि, जगत् उठिजाय मरिहि जाइ । सो यह जगत् तो मन रूपही है सो उनके मनमें मनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनको मिथ्या कियो न करिगयो । अथवा धोखाब्रह्म ताको मन कहे बिचार उनके मनमें समाई रह्योहै ताही करिकै जगत् को उठावै है कि, जगत् न रहिजाई सोऊ न उठ्यो ॥ ३ ॥

कहैकवीर योगी औ जङ्गम फीकी उनकी आसा ।

रामै नाम रटै ज्यों चातक निश्चय भक्ति निवासा ॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि योगी जंगमन की सबकी आशा फीकी है काहेतें धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्यानहीं होइहै । जीवनके ब्रह्महोबेकी आशा फीकी है सो जो रामनाम निशिबासर लेबैहै औ जैसे चातक एक स्वातीही की आशा करै है तैसे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकी आशा करैहै ताहीके हृदयमें उनकी भक्तिको निश्चय कै निवासहोइहै भक्तिरसरूपहै याते इनकी आशासरिसहै अर्थात् सफलहै औ सोई संसार सागर ते उबरै है सो आगे रामैनीमें कहिआये हैं ॥ “कहै कबीरते ऊबरे जोनिशिबासर नामहिलेव” ॥ ४ ॥

इति छब्बीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥ २७ ॥

भाई अद्भुत रूप अनूप कथा है कहौ तो को पंतिआई जहँजहँ देखौ तहँतहँ सोई सब घट रह्यो समाई ॥ १ ॥

लछि विनु सुख दरिद्र विनु दुख है नींद विना सुख सोवै ।

जस विनु ज्योति रूप विनु आशिक रतन बिहूना रोवै ॥ २ ॥

भ्रम विनु ज्ञान मनै विनु निरखे रूप विना बहु रूपा ।

थितिविनु सरति रहस विनु आनंद ऐसो चरित अनूपा ॥ ३ ॥

कहै कबीर जगत् विनु माणिक देखो चित अनुमानी ।

परिहारि लाभै लोभ कुटुंब सब भजहु न शारंगपानी ॥ ४ ॥

भाई अद्भुत रूप अनूप कथा है कहौं तोको पतिआई ।
जहँजहँ देखों तहँ तहँ सोई सबघट रह्यो समाई ॥ १ ॥

जाति करिकै सबजीव एकही हैं तातेजीवनको भाई कह्यो कि, हे भाई जीवो ! वे जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुतरूपहै, अरु वहि रूपकी अनूपकथाहै सो मैं जो वाको दृष्टांत दैके समुझाऊँहौं कि, वाको रंग दूर्बा दलकी नाई है, अरसी कुसुमकी नाई, नील कमलकी नाई, तौ येई सबमें भेदपरै एक एककी तरह नहीं है वहतो मनबचनके परे है । ऐसेनाम रूप लीला धाम सबहै वाको तौ कैसे समुझाऊँ। काहेते जोमैं वाको समुझाईकै कहौं तौ कैसे कहो औ जो कहबऊकरीं तौ कोई पतिआय कैसे । सो यहितरहको जो याको रूपहै सो जहाँ जहाँ देखोहौं तहाँ तहाँ वही रूप देखायहै । काहेते कि, सबघटमें समायरह्यो है । यहाँ सबघटमें समान्यो जो कह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइरह्यो यह-आयो जो व्यंग्य पदार्थहै जीव ब्रह्म माया काल कर्म स्वभाव ताहीको सब देखैहै औ जो व्यापक पदार्थ है ताको कोई नहीं देखैहै । जो चितहू अचितमें जो कहौ वही धोखा ब्रह्मको तुमहूँ कहतेहौ जो सर्वत्र फैलि रह्यो है तौ वाको कोई-नहीं कहतेहैं; काहेते कि, अद्वैतबादी कहै हैं कि, सब पदार्थ वही ब्रह्मही है वाते भिन्न दूसरो पदार्थ नहींहै औ हम कहैहैं कि, सबपदार्थ चित् अचित् रूपते व्याप्य है औ हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको विश्वास होइ ताको वे साहब साकेत निवासी परम पुरुष श्रीरामचन्द्र सहजही प्रकट है जायहैं । सो जो मैं कहौहौं ताको नहीं प्रतीत करै हैं । चित् जो है जीव औ ब्रह्म ताहूँमें श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं तामेंप्रमाण ॥ “ औंयोवैश्ररामचन्द्रोभगवान् दैतपरमानन्दात्मा यः परंब्रह्मेतिरामतापिन्याम् ” ॥ जीवहूँमें व्यापकहैं तामें प्रमाण ॥ “ यआत्मनि तिष्ठन् यआत्मानं वेदयस्यात्माशरीरमिति ” ॥ मायादिक सबमें व्यापक हैं तामेंप्रमाण ॥ “ यस्यभासासर्वमिदं विभातीति श्रुतिः ” ॥ १ ॥

लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है नींद विना सुख सोवै ।
जस बिनु ज्योति रूप विन आशिक रतन विहूना रोवै ॥ २ ॥

कैसे साहब सर्वत्र पूर्ण है सो बतावै हैं । लछिविनु सुख कहै जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुख नहीं होइ है देखो तो नहीं परै है साहब पै जो कोई स्मरण करै है सर्वत्र ताको सुख होय है । साहबको कौनौ बातको दरिद्र नहीं है जो चाहै सो करि डारै समर्थ है परन्तु नाना जीवनको अज्ञान में परे देखिके साहिबोको यही दुःख है कि, मेरे अंश जीव माया में परिके नरक स्वर्ग जाय हैं । काहेते यह दुःख है कि, साहब अति दयालु हैं तामें प्रमाण ॥ “ तावत्तिष्ठति दुःखी यथा वदुःखं न नाशयेत् । सुखी कृत्य परान् भक्तान् स्वयम्पद चात्सुखी भवेत् इति ” ॥ ध्वनि यह है कि, साहब दयालु हैं ते सर्वत्र पूर्ण हैं यह बिचारिके किं जीव मोको जहें स्मरण करै मैं तहें उबारि लेऊँ । फिर कैसे सो साहब है कि, मोहनिद्रा नहीं है सदा जगै है अपने भक्तनकी रक्षा करिबेको । ऐसेहू साहबके सम्मुख जो जीव नहीं होइ हैं तिनकी और सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात् कबहू नहीं देखै है । फिर कैसे सो साहब है जाकी ज्योति जो ब्रह्म है अर्थात् जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो बिना कौनौ कथै है वा कौनौ लीलै कियो अकथै हैं ऐसे साहबके बिना रूपमें आशिक भये साहबको ज्ञानरत्न विहीना जीवसंग्रह में जनन मरण पाइ पाइ रोवै है ॥ २ ॥

**भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखै रूप विना बहुरूपा ।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनंद ऐसो चरित अनूपा ॥३॥
कहै कबीर जगत विन माणिक देखौ चित अनुमानी ।
परि हरि लाभै लोभ कुटुंब सब भजहु न शारंग पानी ॥४॥**

फिर कैसे है साहब भ्रम बिना है अर्थात् कबहू माया सबलित है कि जगतमें ही उत्पत्तिकियो । सदा ज्ञान गुण सदा ज्ञान स्वरूप है । तौने साहबको मानै बिना निरखै कहे बिना है कि हंस स्वरूप पाइके तैं देखै । कैसे हैं साहब कि, चित् अचित् जेरूप हैं तेहि बिना हैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करि सकै हैं औचित् अचित् के शरीरी है बहुत रूपौ हैं सब उन्हींके रूप हैं । फिर कैसे हैं जब साहब सुरति दीन है तब जीवन की स्थिति भई है । औ सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वालोक में बनी है । औ आनंद जो मनबचनमें आवै है सो नहीं है वहां आनंद बनों

है । ऐसे साहबके अनूप चरित हैं । अर्थात् जो रहस कहिआये सोऊ मन बचनके परे है । सो कबीरजी कहै हैं कि, जोचितमें अनुमानकरि देखौ तौ यावत् उपासना औ ज्ञान तुम करौ हौ, जगत् मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी । ऐसी मुक्तिके लाभ को लोभत्यागिके औ सब कुटुंब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिके शारंगपानी कहे धनुषको न्है साहब तिनको काहे नहीं भजौहौ अर्थात् भजौ ॥ ३ ॥ ४ ॥

इति सत्ताईसवां शब्द समाप्त ।

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥ २८ ॥

भाई रे गैया एक विरंचि दियोहै भार अमर भो भाई ।
 नौ नारीको पानि पियतिहै तृषा तऊ न बुताई ॥ १ ॥
 कोठा बहत्तारि औ लौलाये बज्र केवाँर लगाई ।
 खूटा गाड़ि डोरी दृढ़बांधो तेहिवो तोरि पराई ॥ २ ॥
 चारि वृक्ष छौ शाखा वाके पत्र अठारह भाई ।
 एतिक लै गैया गम कीन्हो गैया अति हरहाई ॥ ३ ॥
 ई सातौ अवरण हैं सातौ नौ औ चौदह भाई ।
 एतिक गैयै खाइ बढायो गैया तौ न अघाई ॥ ४ ॥
 खूटामें राती है गैया इवेत सींग हैं भाई ।
 अवरण वरण कछू नहिं वाके भक्ष अभक्षै खाई ॥ ५ ॥
 ब्रह्मा विष्णु खोज कै आये शिवसनकादिक भाई ।
 सिद्ध अनंत वहि खोज परेहैं गैया किनहुं न पाई ॥ ६ ॥
 कहै कबीर सुनो हो संतो जो या पद अरथाई ।
 जो या पद को गाइ विचरि है आगे ह्वै तरिजाई ॥ ७ ॥

भाई रे गैया एक विरंचि दियोहै भार अभर भो भाई ।
नौ नारीको पानि पियति है तृषा तऊ न बुताई ॥ १ ॥

हे भाई जीवो! एक बाणीरूप गैया तुमहीं सबको विरंचि जे ब्रह्माहैं ते दियो है । सो गैयाको जो तात्पर्य दूधहै ताको तुम न पायो गैयाको भारा अभर ह्वैगयो तुम्हरो सँभारो न सँभारिगयो । अर्थात् जोजो बाणीमें विधि निषेध लिखै हैं सो तुम्हारो कियो एकौ नहीं है सँकैहै । सो ये मायिक विधि निषेध तो तुम्हारो किये है नहीं सँकैहै । बाणी जो तात्पर्य वृत्तिते बतावैहै सो तो अमायिकहै कैसे जानौगे? वह गैया कैसी है सो बतावैहैं नौ कहे नवो जे व्याकरण हैं तिनकी जो नारी कहे राहै तिनकर जो शब्दरूपी जलहै ताको पियै है अर्थात् वोहीके पेटते वेदशास्त्र सब निकसै हैं औ वहीके पेटमें हैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरणके शब्दरूपी जलते शोधे जायहैं । अर्थात् वही बाणीमें जल समाईहै परन्तु तृषा तबहूँ नहीं बुझाईहै कहे वोही नवो व्याकरण करिके शोधैहै शास्त्रार्थ करतहो जायहै बोध नहीं होइहै किं, शुद्धहैगयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेयहै ॥ १ ॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये बज्र केवँर लगाई ।
खूटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तेहिवो तोरि पराई ॥ २ ॥

पातंजल शास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोंठाते लौलगाइकै कहे श्वास खेंचिकै खेचरी मुद्राकरि घेटीके ऊपर बज्र कपाट जो लग्यो है ताको जीभते टारयो तब वहां अमृत श्रवो तब नागिनी उठी श्वासके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूटा जो ब्रह्मांडहै ब्रह्मज्योति तहां पहुंच्यो जाई सो ज्योतिरूप ब्रह्मखूटाहै तामें प्रणागिनी जो गैयाहै ताको बांध्यो तेहिवो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तबफिरि जसकोतस संसारी है गयो नागिनीशक्ति उतारआइ पुनि जीवनको संसारमें डारिदियो ॥ २ ॥

चारि वृक्ष छौ शाखा वाके पत्र अठारह भाई ।
एतिक लै गैया गमकीन्हो गैया तउ न अघाई ॥ ३ ॥

पातंजल शास्त्रमें योगक्रियाहै सो कायाते होयहै ताते अलग कह्यो अब सब भेटिके कहै हैं । चारि वेदजेहैं तेई वृक्षहैं औ छड़उ शास्त्रजे हैं तेई शाखाहैं अठारहौपुराण पत्रहैं सो एकलेकहै यहां लगे । गैयागमनके जातभई कहे प्रवेश केजातभई सो गैया बड़ी हरहाई है अर्थात् जहां जहां आरोपकियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियोहै तौन वाके पेटते बाहर नहीं है भीतरहीहै ॥ ३ ॥

ई सातौ अवरणहैं सातौ नौ औ चौदह भाई ।

एतिक गैया खाय बढ़ायो गैया तउ न अघाई ॥ ४ ॥

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र औ सातौ सहस्रार जहां ब्रह्मज्योतिमें जीवको मिलावैहै अरु सातौ आवरणजेहैं पृथ्वी अप तेज वायु आकाश अहंकार महत्तत्त्व अथवा सातौ बार काल अरु नौ खंड जे हैं अरु चौदहौ भुवन जे हैं सोई सबनको गैया खाइके बढ़ाइ डारयो तउ न अघातभई अर्थात् सब बाणीमय ठहरे ॥ ४ ॥

खूटा में राती है गैया श्वेत सींग हैं भाई ।

अवरण वरण कछू नहिं वाके भक्ष अभक्षौ खाई ॥ ५ ॥

ब्रह्मा विष्णु खोजके आये शिव सनकादिक भाई ।

सिद्ध अनंत वहिखोज परे हैं गैया किनहुं न पाई ॥ ६ ॥

सो वह गैया खूटा जो धोखाब्रह्महै तामें राती है अर्थात् ब्रह्म माया सबलितहै । अरु वहि गैयाके सींग श्वेत हैं कहे सतोगुणी हैं सोई ब्रह्ममें बांधिबो है औ अवरण कहे असत् औ वरण कहे सत् ई वाके कोई नहीं है अर्थात् सत् असत्ते विलक्षणहै अथवा अवरणकहे नहीं है वरण जाके निरक्षर ब्रह्म नाम रूपादिक नहीं है जाके औ वरणकहे अक्षर ब्रह्म जीव ईदोनोनों नहीं है वाके अर्थात् ईदोनोते विलक्षणहै । औ भक्ष अभक्षौ खाइहै कहे कर्म करावन लायकहै सो करावैहै औ जोकर्म करावन लायक नहीं है सोऊ करावैहै । अर्थात् विद्यारूपते शुभकर्म करावैहै सो वाको शिव सनकादिक ब्रह्मा विष्णु महेश

अनन्त सिद्ध खोज मरे पै गैयो कोऊ न खोजे पायो कि, सत् है कि, असत् है तात्पर्यऊ न जाने ॥ ५ ॥ ६ ॥

कहै कवीर सुनो हो संतो जो या पद अरथाई ।

जो या पदको गाइ विचरि हे आगे है तरिजाइ ॥ ७ ॥

श्री कवीरजी कहै हैं कि, हे संतो ! सुनो जो यह पदको अर्थ है कहे अर्थ विचारि है औ जौन पद हम वर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सप्तावरण आदिदैकै जेपदहैं कहे स्थान तिनको जोकोई गाइ कहे मायाको रूपही विचारैगो कि यहां भरतो मायाही है सो मायाके आगे हैकै साहबको लोक विचारैगो सोहैं तरैगो ॥ ७ ॥

इति अष्टाईसवां शब्द समाप्त ।

अथ उन्तीसवां शब्द ॥ २९ ॥

भाई रे नयन रसिक जो जागै ।

परब्रह्म अविगत अविनाशी कैसेहु कै मन लागै ॥ १ ॥

अमलीलोग खुमारी तृष्णा कतहुं सँतोष न पावै ।

काम क्रोध दोनों मतवाले माया भरिभरि प्यावै ॥ २ ॥

ब्रह्म कलारचढ़ाईनि भाठी लै इन्द्री रस चाखै ।

सँगाहि पोच है ज्ञान पुकारै चतुर होइ सो नाखै ॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमों बहुतक व्याधि शरीरा ।

जहँवां धीरगँभीर अतिनिर्मल तहँउठि मिलहु कवीरा ॥ ४ ॥

यहां अब मायाकेपरे जे साहबहैं तिनको बतावै हैं ।

भाई रे नयन रसिक जो जागै ।

परब्रह्म अविगत अविनाशी कैसेकै मन लागै ॥ १ ॥

हे भाइउ ! नयन रसिकजोहै संसारी चर्म चक्षुते भिन्नभिन्नदेखि विषयरस
 लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षुहोइ तौ ब्रह्मके पार औ अविगत कहे विगत
 नहीं सर्वत्र पूर्ण औ अविनाशी कहे जाको नाश कबहूँ नहीं होइहै ऐसे जे
 परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें कैसेकै मन लगै जो कैसेहुके पाठहोय तौ
 यह अर्थ है जो कैसेहुके मन लगबो करै तौ बीचमें बहुत अवरोधहैं ॥ १ ॥

अमली लोग खुमारी तृष्णा कतहुँ संतोष न पावै ।

काम क्रोध दोनों मतवाले माया भरिभरि प्यावै ॥ २ ॥

सबलोग अमली हैं विषय छाड़्यो पैतृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं
 संतोषको नहीं पावै है । फिरि काम मत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो
 मुद्राराक्षसादि ग्रन्थनमें प्रतिपाद्य जे मतहै तेई प्यालाहैं तिनको काम क्रोध रूप
 जो मद सो माया भरिभरि उन को पिआवै है ॥ २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी लैइन्द्री रसचाखै ।

सँगहि पोच होइ ज्ञान पुकारै चतुर होइ सो नाखै ॥ ३ ॥

प्रथम तौ काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तौ ब्रह्म
 जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धि करै है गुरुबालोग जे भाठी चढ़ाइनि ज्ञान सिखवै
 लगे कि तुहीं ब्रह्महै ताहीं में इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मिको रसचाखन
 लग्यो अर्थात् ब्रह्मानंदको अनुभव करनलग्यो जो मदपियै है ताको ज्ञान भूलि
 जायहै यहै कहैहै कि मैहीं मालिकहाँ सो जो गुरुबालोगन को संगकियो ब्रह्मानंद
 पानकियो सो मैं साहवकोहौं यहअक्ल भूलिगई वही गुरुवा लोगनको ज्ञानदियो
 पुकारन लग्यो कि मैहीं ब्रह्महौं।परं जो चतुराहाइ सो बिघ्ननको नाकि जाइहै ॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमें बहुतक व्याधि शरीरा ।

जहँवां धीर गँभीर अति निर्मल तहँ उठि मिलहु कबीरा ॥ ४ ॥

पोचकहे अज्ञानी जे जीवहैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झग-
 डामें बहुतसंकट शोच औ व्याधिशरीर को है सोजहां अति धीर है कहे चला-
 यमान नहीं है निश्चलपद है औ गंभीर कहे गहिरहै औ निर्मल कहे माया

ब्रह्मको लेश नहीं है सो हे कबीर ! कायाके बीर जीवो ! मायाब्रह्मके तुम परे
हौ तहांते उठिकै कहे मायाब्रह्मके विघ्ननते निकसिकै साहबको मिलौ तबहीं
तिहारो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इतिउन्तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तीसवां शब्द ॥ ३० ॥

भाई रे! दुइ जगदीश कहांते आये कहु कौने भरमाया ।
अल्लाः राम करीम केशव हरि हजरत नाम धराया ॥ १ ॥
गहना एक कनक ते गहना तामें भाव न दूजा ।
कहन सुननको दुइ करि थापे यक निमाज यक पूजा ॥ २ ॥
वही महादेव वही महम्मद ब्रह्मा आदम कहिये ।
कोइ हिंदू कोइ तुरुक कहावै एक ज़िमीं पर रहिये ॥ ३ ॥
वद किताव पढ़ै वे खुतवा वे मोलना वे पांड़े ।
विगत विगतकै नाम धरायो यक माटी के भांड़े ॥ ४ ॥
कह कबीर वे दूनों भूले रामहिं किनहुं न पाया ।
वे खसिया वे गाय कटावै वादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

अब यहां यह वर्णन करै हैं कि दूसरो जगदीश नहीं है परमपरपुरुष जे
श्रीरामचन्द्रहैं तेई जगदीशहैं ॥

भाई रे ! दुइ जगदीश कहांते आये कहु कौने भरमाया ।
अल्लाः राम करीम केशव हरि हजरत नाम धराया ॥ १ ॥
गहना एक कनकते गहना तामें भाव न दूजा ।
कहन सुननको दुइ करि थापे यकनेवाज यकपूजा ॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे भाइउ ! दुइजगदीश कहांते आये तोको कौने
भरमायो है । अल्ला राम करीम केशव हरि हजरत ये तौ सब नामभेद हैं

कहत तो एकही को हैं ॥ १ ॥ जैसे एक गहना को सुवर्ण ते गहना कहें गहिलेइ
 कहे सुवर्ण बिचारिलेइ तामें भाव दूजा नहीं है वह सुवर्ण है जैसे कोई चूड़ा कोई
 बिजायठ इत्यादिक नाम कहै हैं परन्तु है सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबेको दुइ करि
 थाप्यो ह यक निमाज यक पूजा परन्तु है सब साहबकी बंदगीही परम परपुरुष
 श्रीरामचन्द्रही को सेवै हैं ॥ २ ॥

**वही महादेव वही महम्मद ब्रह्मा आदम कहिये ।
 कोइ हिंदू कोइ तुरुक कहावै एक जिमीं पर रहिये ॥ ३ ॥**

वोही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको महादेव औ महम्मद औ ब्रह्मा औ
 आदम सब कहिये कहे कहतभये कोई राम कहिके कोई अल्लाह कहिके
 कुरानमें लिखै है कि सब नामनमें अल्लाहनाम ऊपर है औ यहां वेदपुराण में
 लिखै है कि सबनामनमें रामनाम ऊपरहै तामें प्रमाण ॥ “ सर्वेषामपिमंत्राणाम-
 ममंत्रं फलाधिकम् ” ॥ इति ॥ “ सहस्रनामतत्तुल्यं रामनमावरानने ” ॥ याते
 सबके मालिक परम पुरुष श्रीरामचन्द्रही जगदीशहैं दूसरो जगदीश नहीं है । उन
 हींके अल्लाहनामको सब नामनते परे महम्मद कुरानमें लिख्योह औ उन्हीं नाम
 को महादेवने तंत्रमें लिख्योह औ ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताबमें कहत-
 भये अरु इहांतो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहीं के जिमीमें कहे जगतमें
 रहत भये । नामके भेदते कोई हिन्दू कोई मुसल्मान कहावै है ॥ ३ ॥

**वेद किताब पढ़ै वे खुतुबा वे मोलना वे पाँड़े ।
 विगत विगतके नाम धरायो यक माटी के भाँड़े ॥ ४ ॥**

जिनके पोथी जमा होयहैं ते कहावैं खुतुबा वे वेदपुराण जमा कैकै पढ़ैहैं वे
 किताब जमाकैकै पढ़ै हैं वे पंडितकहावै हैं वे मोलना कहावै हैं वेद पढ़िकै पंडित
 किताब पढ़िकै मोलना कहावैं विगत विगत कहें जुदा जुदा नाम धराय छेतें
 भये हैं एकई माटीकेभाँड़े कहै हैं सब पांचभौतिकही हैं ॥ ४ ॥

**कह कबीर वे दूनों भूले रामहिं किनहुं न पाया ।
 वे खसिया वे गाय कटावैं वादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥**

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिंदूतो वोकरा मारिके मुसल्मान गायमारिके नानाप्रकारके बाद विवाद करिके अथवा बाँदिकहे वृथाही दोऊ भूलिके जन्म गँवाइ दियो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावत भये हिन्दू तुरुकके खुद-खाविंद एकई है कोई बिरले जानैहैं ते वहां पहुँचै तामें प्रमाण झूलना ॥ “छोड़ि नामसूतमलकूत जवरूत लाहूत हाहूत बाजी । और साहूतराहूत इहांडां-रिदेकूद आहूत जाहूत जाजी ॥ जायजाहूतमें खुदखाविंद जहँ वही मकान-साकेत साजी । कहै कबीरह्वां भिस्त दोजख थके वेदकीताबकाहूतकाजी” ॥५॥
इति तीसवां शब्दसमाप्त ।

अथ इकतीसवां शब्द ॥३१॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १
घरघर सावज खेलै अहेरा पारथ वोटा लेई ।
पानी माहिं तलफिग भूभुरि धूरि हिलोरा देई ॥ २ ॥
धरती वरसै वादल भीगै भीटभया पैराऊ ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने चहले वीधा पाऊ ॥ ३ ॥
जौ लगि कर डोलै पगु चलई तौ लगि आश न कीजै ।
कह कबीर जेहि चलत न दीखै तासुवचन का लीजै ॥४॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १
घरघर सावज खेलै अहेरा पारथ वोटा लेई ।
पानी माहिं तलफिगै भूभुरि धूरि हिलोरा देई ॥ २ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे हंसा! संशयरूप छूरिते मारिगयो तोको उलटों ज्ञान द्वै गयो । बछरुवा जो है तेरोस्वरूप और ज्ञानरूप जो है दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो ॥ १ ॥ सावज जो या मनहै सो घरघरमें कहे शरीर

शरीरमें शिकारखेलेहै । पारथ कहे शिकारी जो तैं सो वोटाखेइहै अर्थात् नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरै है पै मन तोको नहीं छोड़ै है । साउज ते नहीं बचैहै। बाणी रूप जो है पानी नानाशास्त्र तौनेमें(भूभुरि जोसूर्यनके तापते तपित भूमि होयहै सोभूभुरि कहावै है; ऐसे संसार तापते तपितजो)तेरा अंतःकरण सो तलफिगयो अर्थात् अधिकअधिक शङ्का होतभई तिनते अधिकतप्त भयो शीतल न भयो काहेते कि, धूरि जो सूखा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्यो कहेशास्त्रनमें वही धोखा ब्रह्मही देखपरन लग्यो । शास्त्रनको तात्पर्य साहब तिनको न जान्यो॥२॥

धरती वर्षै बादल भीजै भीट भया पैराऊ ।

हंस उड़ाने ताल सुखाने चहले वीधा पाऊ॥ ३ ॥

बुद्धिजेहै सो धरती है काहेते सब मतनको आधारयहोहै बाणीरूप पानी बरसै है कहे नानामतनको निश्चय कैकै प्रकट करै है । अरु यह बाणी जीवंहि ते प्रथम निकसी है सो जीव बादल है सो भीजै कहे वोई मतनको ग्रहणकियो । यह लोकोक्तिहै किं, फलाने फलानेमें भीजिरहे हैं कहे आसक्त द्वैरहे हैं । भीट चारो वेदहैं मर्यादाते पैराउद्वैगये कहे उनकी थाह कोई न पावतभयो अर्थात् तात्पर्य कारिकै जोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णनकरैहै सोकोई न पावतभयो । ताल सूखे हंस उड़ैहै यहां हंसउड़े तालसूखे हैं जब हंस उड़ो कहे यहजीव निकसिगयो तबताल जोशरीरहै सोसूखि गयो । तब बासना जेहैं तेई चहला हैं तिनमें पाँउ बँधिरह्यो । जैसे तलाउ जबसूखेउ औ पुनिचौमासेमें जब जल बरस्यो तब जस को तस द्वैगयो, तैसे बासनामें पाँउफँसिरह्योहै दूसर शरीर जब पायो तब फिर वही शरीरमें तलाउमें हंसजीव बूड़न उतरान लग्यो है । सो भाव यह कि, उड़नको तो करै है पर शरीर तालते अंतै नहीं जाइ सकैहै कोई योनियेमें रहै है ॥ ३ ॥

जौलगि करडोलै पगचलई तौलगि आश न कीजै ।

कह कबीर जेहि चलत न दीखै तासु वचन का लीजै॥४॥

जबलग पाँउ चलैहै करडोलै है कहे शरीर बनोहै तबलगि गुरुवालोगनकी आश न करिये जो आश करैगो तो याहीभांति बँधि रहैगो । सो कबीरजी कहैं

हैं जे गुम्वा लग नाना पदार्थनमें आशं लगाइ देइहैं तिनहींते नहीं चलत
वर्न हें तौ तिनको कद्यो वचन कैसे कीजिये कहे कैसे मानिये ? अर्थात् उनके
यहां न जाइये काहेते कि, वे साहबको भुलाइके औरे में लगाइ देइंगे । संसार
ही में फँसो रहैगो यामें धुनि यहहै कि, जे संसारते छूटेहैं रामोपासकहैं तिनहीं
को वचन मानिये तिनहीं के यहां जाइये ॥ ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बत्तीसवां शब्द ॥ ३२ ॥

हंसाहो ! चित चेतु सवेरा । इन्ह परपंच करल बहुतेरा ॥१॥
पाखंड रूप रच्यो इन्ह तिरगुण यहि पाखंड भूल संसारा ।
घरको खसम अधिक भो राजा परजा काधौं करै विचारा ॥२॥
भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत विष कैलिय सारा ।
आगे बड़े ऐसही भूले तिनहुं न मानल कहा हमारा ॥३॥
कहल हमार गांठी बांधो निशि वासर हि होहु हुशियारा ।
ये कलिके गुरु बड़ परपंची डारि ठगौरी सब जग मारा ॥४॥
वेद किताव दोय फंद पसारा ते फंदे पर आप विचारा ।
कह कवीर ते हंस न बिछुड़े जेहिमें मिल्यो छोड़ावनहारा ॥५॥

हंसाहो चितचेतु सवेरा । इन्ह परपंच करल बहुतेरा ॥१॥
पाखंडरूप रच्यो इन्ह तिरगुण तेहि पाखंड भूल संसारा ।
घरको खसम अधिक भो राजा परजा काधौं करै विचारा ॥ २

हे हंसा जीवौ ! सवेरेते कहे तबहींते चित्तमें चेतकरौ । सवेरेते कह्यो
ताको भाव यहहै कि, जब काल नियराइ आवैगो तब कछू न करत बनैगो
तिहारे फांसिबेको यह माया बहुत परपंच कियो है ॥ १ ॥ पहिले पाखंड-

रूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जे सत रज तम हैं तिनको तिहारे फांसिवेको प्रकट कियो । सो तीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवता हैं अरु पाखंडरूप जो धोखा ब्रह्म है तामें सब भूलिगये । घरको खसम जब स्त्रीको बधिक कहे दुःख देन लाग्यो मारन लाग्यो तब स्त्री कहा करै । तैसे जो राजा प्रजाको बधिक कहे मारन लाग्यो दुःख देन लाग्यो तब बिचारे प्रजा कहा करै । सो यह मनतो सबको मालिक है रह्योहै सो यही जो सबको दुःख देन लाग्यो तौ जीव कहाकरै ॥ २ ॥

**भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत बिष कैलिय सारा ।
आगे बड़े ऐसही भूले तिनहुं न मानल कहा हमारा ॥ ३ ॥**

भक्तिको तो जानै नहीं हैं भक्त कहावै हैं । अमृत जो है परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै बिष जो है और और की भक्ति ताको सारमानि लियोहै सो आगे जे बड़ेबड़े बूढ़ेगये हैं तेऊ ऐसही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहबकी भक्ति छोड़िकै और की भक्ति करिके संसारही में परतभये ॥ ३ ॥

**कहल हमारा गांठी बांधो निशि वासरहि होहु हुशियारा ।
ये कलिके गुरु बड़ परपंची डारि ठगौरी सब जग मारा ४**

सो हमारो कहो गांठीबांधो । जो अबहूँ हमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करोगे तौ संसारही में परौगे । कलियुगके जे गुरुवा हैं ते बड़े पर-पंची हैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्तिको छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइहैं । सो निशिवासर हुशियार रहो अर्थात् निशिवासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवा लोगनको कहा न मानो ॥ ४ ॥

**वेद किताब दोय फंद पसारा ते फंदे पर आप विचारा ।
कह कबीर ते हंस न बिछुरे जेहि मैं मिलो छोड़ावन हारा ५ ॥**

वोई जे गुरुवालोगहैं तेये वेद किताबको फंदा पसारि कै नाना मतमें गुरु आई करतभये । सो वहीफंदमें आप परतभये औ औरहू को वहीफंदमें डारिकै नानाम-

तनमें लगाय देने भये । वेद किताबको तात्पर्य न जानतभये । सो कबीरजी कहैहैं कि, जौने जीवको मैं फंदेत छोड़ावनहार मिल्योहों औ परमपुरुषमें लगाइ दियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंग। सो तुमहूं पारिखकरिके मेरोकहों मानिकै हे हंसजीवो ! तुमहूं फंद छोड़ि परमपुरुष परजेश्रीर/मचन्द्र हैं तिनमें लगौ ॥५॥

इति वत्तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तैंतीसवां शब्द ॥ ३३ ॥

हंसा प्यारे सरवर तेजे जाय ।

जेहि सरवर विच मोतिया चुनते बहु विधि केलि कराय ।
सूखे ताल पुरइनि जल छोड़े कमल गयो कुंभिलाइ ।

कह कबीर जो अबकी बिछुरै वहुरि मिलै कव आइ ॥ २ ॥

हे प्यारे हंस ! सरवर जो शरीरहै ता तेजे जाय कहे जिनके शरीर छूटि-जायहैं । जौने सरवर शरीरको प्राप्नहोइकै मोतिया चुनैहैं कहे ज्ञान योगादिक साधन करिकै मुक्तिकी चाहकरै हैं औ बहु बिधिकी केलि करै है । जो त्याजे पाठहोय तौ या अर्थ है । हे हंसाजीव ! प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जायहै जौन सरवर शरीरमें नाना देवतनकी उपासनारूप मोती चुने नाना विषयनको भोग कीन्हे सो छोड़ेजायहै ॥ १ ॥ सोशरीररूपी ताल जब सूख्यो कहे रोग करिके ग्रस्तभयो सब पुरइनि जल छोड़ि दियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो । अरु अनुभव तो तुमकरतहो सोई कमलहै सोकुं-भिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि, यहि तरहते जो अबकी बिछुरै कहे शरीर छूटिजाय तब पुनि कबै ऐसो शरीर पावैगो । चौरासीलाख योनि भटकेगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीर छूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजाय हैं । तेहिते मानुष शरीर पायकै साहबको जानै । वह शरीरहू छूटे नहीं भूलै है काहेते कि साहबही अपनो ज्ञान देइहै औ हंसस्वरूप देइहै ॥ २ ॥

इति तैंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ चौतीसवां शब्द ॥ ३४ ॥

हरिजन हंस दशा लिये डोलैं।निर्मल नाम चुनी चुनि बोलैं१
मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै।मौन रहै की हरि गुण गावै॥२॥
मान सरोवर तटके वासी।राम चरण चित अंत उदासी ॥३॥
काग कुबुद्धि निकट नाहि आवै।प्रति दिन हंसा दर्शन पावै४॥
नीर क्षीरको करै निबेरा।कह कबीर सोई जन मेरा ॥ ५ ॥

जे साहबको नहीं जानै हैं तिनको कहिआये अब जे साहबको जानै तिनकी दशा कहै हैं ॥

हरि जन हंस दशा लिये डोलैं।निर्मल नाम चुनीचुनी बोलैं१

हरिजे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं तिनके जे जन हैं ते हंस दशा जो है शुद्धजीव पार्षद रूपता तौनी दशाको लिये सर्वत्र डोलै हैं कहे फिरैं हैं । यहां हरि जो कह्यो ताको हेतु यह है कि, अपने भक्तनकी सिगरी बाधाहरै सोहरि कहावै है । सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरिलेइहैं तब तिनके जन सुख पूर्वक संसारमें फिरैं हैं, उनको संसार स्पर्श नहीं करै है । अरु जो नाम माया सवलित है तिनको छोड़िदेइहै औ निर्मल जो नाम राम नामहै मन बचनके परे अमायिक ताको चुनिचुनि कोहे साहब मुख अर्थ ग्रहण करिके औ संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलै है कहेरामनाम उच्चारण करै हैं । यहां मनबचनके परे जो नाम है ताको कैसे बोलै है ऐसो जो कहो तो ये हंस दशालिये डोलै है कहे जब शुद्ध जीव रहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्रिय देइहैं तिनते तौने नामको बोले है । जैसे सूमा जरिजायहै तब बाकी ऐंठनभर रहिजाइहै । तैसे यहशरीरकी आकृतिमात्र रहि जाइहै वह पार्षदही शरीरमें स्थितरहेहै जब शुद्ध शरीर है जाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावैहै यह आगे लिखि आये हैं॥ १॥

मुक्ताहललिये चोंचलोभावै । मौनरहै की हरिगुणगावै॥२॥

हंस मुक्ताहल चोंच में लिये बच्चनको लोभावै है जौन मांगै है ताके मुंहमें डारिदेइहै । ऐसे साधुनके मुखमें पांचमुक्तिहैं १ सामीप्य २ सारूप्य ३

साधु ४ सांख्य ५ साष्टय तिनते जीवको लोभावै है कहे संव यह जानै है कि इनहींकी देई देजाइहै । जो जौनमुक्तिकी चाहकरिके उनके समीप जाइहै । ताको श्रीरामनामके उपदेश करिके तौन भाव बताइके मुक्ति देइहैं । औ आन यौनही रहै है कि, साहबके गुणगाइके छके रहैहैं ॥ २ ॥

मान सरोवर तटके वासीराम चरण चित अंत उदासी॥३॥

हंस जेहें ते मानसरोवरके तटकेवासी हैं अरु वे साधुकैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवरहै ताके तटके वासीहैं कहे मनते भिन्न द्वै रहैहै जामें हंसकी दशाहै साहबकी दीन ऐसो जो चितमात्रआपनो स्वरूपहै ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहीके चरणनमें लगाइ राखैहैं अरुअंत उदासी कहे जो वह धोखा ब्रह्ममें अंह ब्रह्मास्मि मानिके आत्माको अंत द्वै जाइहै आपै ब्रह्म मानिलेइहै वहजो है आत्मा के अंत द्वैको मन धोखा तेहिते उदासी कहे उदास द्वै रहैहैं अथवा अंतजो है संसार ताते उदास रहैहैं ॥ ३ ॥

**काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै । प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै४
नीर क्षीरको करै निवेरा । कहं कबीर सोई जन मेरा ॥५॥**

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यह अज्ञान सो निकट नहीं आवै है तौ और मत कैसे आवै सो कबीरजी कहै हैं कि यहि भांतिजो चलै है सो हंसशुद्धजीव प्रति दिन श्रीरामचन्द्र को दर्शन पावत रहै है सर्वत्र साहबको देखत रहैहै ॥४॥ जैसे हंस नीर क्षीरको निवेरा करै हैं तैसे हंस जे साधु हैं ते असार जो है नाना उपासना नानाज्ञान तामें अमीसीं जो वेद शास्त्र पुराणादिकनमें साहबकी उपासना ताको ग्रहण करैहैं औ सब असारको छोड़िदेयहै । सो कबीरजी कहै हैं कि, सोई जन मेरो है अर्थात् जे रामोपासक हैं तेई कबीरपंथी हैं और सब पाखंडी हैं जौने स्वरूपमें हंसदशाहै तौने स्वरूपमें साहबके स्फूर्ति कराय नाम जपैहैं । तामेंप्रमाण ॥ “माछाजपौं न कर जपौं जिह्वा जपौं न राम । मेरासाई मोहिजपै मैं पावौं विश्राम्” ॥ ५ ॥

इति चौतीसवां शब्द मात ।

अथ पैतीसवां शब्द ॥ ३५ ॥

हरि मोरपीवमैरामकीबहुरिया।राममोरबड़ाभैतनकीलहुरिया १
 हरिमोररहँटामैरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया २
 छःमासतागवर्षदिनकुकुरी।लोगबोलेभलकातलबपुरी ॥३॥
 कहै कबीर सूत भल काता।रहँटा न होय मुक्तिको दाता ॥४॥

हरि मोरपीवमैरामकीबहुरिया।राममोरबड़ाभैतनकीलहुरिया १

मोर पीव हरि है । पीव केहे वे मोको पियारहैं मैं उनकोऊ पियार हों ।
 अरुमैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र की बहुरिया केहे नारी हों । यहां नारी कह्यो
 सो यह जीव साहबकी चितंशक्ति है तामें प्रमाण कबीरजीके आदि टकसार
 ग्रन्थ को ॥ “आतम शक्ति सुबश है नारी । अमर पुरुष जेहि रची धमारी
 ॥ १ ॥ दूसरो प्रमाणसायरबीजकको ॥ “ दुलहिनि गाऊ मंगलचार ।
 हमरे वर आये राम भतार ॥ तनरति करि मैं मनरति करिहों पांचो तत्व
 बराती । राम देव मोरे व्याहन ऐहैं मैं यौवन मद माती ॥ सरिर सरोवर
 वेदी करिहों ब्रह्मा वेद उचारा।राम देव संग भांवरि लेहों धन २ भाग हमारा ॥
 सुर तेंतीसौ कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कह कबीर हम व्याह
 चले हैं पुरुष एक अविनाशी ॥ २ ॥ अरु श्रीरघुनाथजी मोरबड़ेहैं अरु मैं
 तनकी लहुरियाहों, केहे उनके शरीर सर्वत्र व्यापक बिभुहैं औ मैं अणुहों
 तामें प्रमाण ॥ अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहंव्याप्यतिष्ठति । इतिस्मृतिः ॥ १ ॥

हरिमोररहँटामैरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया

अरु हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मोर रहँटा केहे चित् अचित् रूपतें
 जगत्बोई हैं । अरुमैं रतनपिउरियाहों यह जगत् जीवंधी के वास्ते बन्योहै ॥
 “जीव सूत हैकै लपटि रहै हैं । मैं रतनकी पिउरियाहों तामें नहीं लपटोहों।
 हरिजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको नाम लैकै बहुरिया केहे उलटिकै मैं कात्यो अर्थात्
 जगत्को जगद्रूप करिकैनहीं देख्यो जगत्को चित् अचित् रूप करिकै देख्यो है
 रामनाममें बहुरिकै साहब मुखअर्थ देख्यो जगत् मुखअर्थ नहीं ग्रहणकियो ॥ २ ॥

छः मासतागवर्षदिनकुकुरी । लोग कहल भलकातलवपुरी ३

छः महीनामें एक ताग कात्यो, छः महीनामें एक ताग और कात्यो तब वर्षदिनमा एक कुकुरीभै दोनों ताग मिलायकै । अर्थात् छः महीनामें अपनी स्वरूप समुझ्यो कि, मैं साहबकी नारीहैं औ छः महीनामें मैं साहबको स्वरूप समुझ्यो । वर्षदिनमें साहबको मिल्यो सो मैंतो इतनीदेर करिकै मिल्यो साहब तो हनूरहरिहैं ताहूमें लोग कहै हैं कि, वपुरी भलकात्यो जो अनंत-कोटि जन्मते नहींनानैहै सोसाहबको वपु आपनो वपु वर्षे दिनामें समुझ्यो ॥ ३ ॥

कहै कबीरसूत भलकाता । रहँटा न होय मुक्तिको दाता ॥ ४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जौने रहँटा जगदते सूत भल कात्यो है । कतवैया कबीरजीको विवेकहै सो रहँटा न होय यह मुक्तिको दाताहै, काहेते कि, जब शुद्ध आत्मा रह्योहै याको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं न तिनको ज्ञानरह्यो औ न संसारको ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्यो है तामें प्रमाण ॥ “ नित्यः सर्वगतस्स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ” ॥ इति गीतायाम् ॥ जब यह याके मन भयो तब संसारको कात्योहै औ संसारमें परिकै दुःख सुख भोग कियो है । औ जब पूरागुरु मिल्योहै तब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको पाइकै संसारते छूटिगयोहै औ पुनि संसारमें नहींआयो । सो कबीरजी कहै हैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्तिको दाताहै जो संसार बुद्धि करिकै देखैहै सो संसारमें रहै है औजो संसारको साहबको चित अचितरूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिही देखैहैं या संसारमें आये मुक्त भयोहै ॥ ४ ॥

इति पैंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ छत्तीसवां शब्द ॥ ३६ ॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई । हरि वियोग कस जियहु रेभाई १
कोकाकोपुरुषकौनकाकीनारी । अकथकथायमजालपसारी २
कोकाकोपुत्र कौनकाकोवापा । कोरे मरै को सहै संतापा ३

ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । राम ठगौरी विरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरी ठग पहिचाना ॥५॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई । हरि वियोग कस जिय हुरे भाई ॥१॥

हरि ठग कहे हरिरूप द्रव्यके चोरावनहारे गुरुवालोग ते जगत् में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइहैं और और में लगाइकै सो हे जीवो ! हरिके वियोग ते तुम कैसे जियौहौ ॥ १ ॥

कोकाको पुरुष कौन का कीनारी । अकथ कथायम जाल पसारी ॥
कोकाको पुत्र कौन का कोवापा । कोरेमरै कोसहैं संतापा ॥३॥

यह संसारमें जबसांचे साहबको भूल्यो तबको काको पुरुषहैको किसकी नारी है अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासना करै हैं आपन स्वामीमनैहैं तिनके स्वामी कबहूँ होयहै वोई याकी नारी होयहै दासहोइहै कबहूँ स्त्री पुरुष होयहै पुरुष स्त्री होयहै सोयायम कहे दोऊ विद्याऽविद्याके जाल पसारयो है ॥ २ ॥ कोकाको पुत्रहै कोकाको वापहै कोमरैहै को संतापसहैहै तुम को तो सुखै सुखै तुमहीं साहबहौ तुमहीं भोगीहौ ॥ ३ ॥

ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । राम ठगौरी विरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरी ठग पहिचाना ॥५॥

सो यह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूलनो है साहबको ज्ञानसो ठगि-लेत भये । औजो यह पाठ होइ “ठगि ठगि मूँड़ सबनको लीन्हा” तौ यह अर्थ है कि, सब जगको ठगि ठगि मूँड़ि लियो कहे चेला करि लियो है । सो यह ठगौरी जो रामकै परीहै कि रामको ज्ञान सब जीवनको गुरुवालोग ठगे लेयहैं । जैसे कोई रुपया को कपड़ाको घोड़ाको ठगै है तैसे गुरुवालोग रामको ठगैहैं तामें पमाण—“शास्त्रं सुबुद्धा तत्त्वेन केचिद्वादबलाज्जनाः । कामद्वेषाभिभूतत्वादहंकारव-शंगताः ॥ याथातथ्यंच विज्ञाय शास्त्राणां शास्त्रदस्यवः । ब्रह्मस्तेनानिरांभादंभो-हवशानुगाः ॥ ४ ॥” सो कबीरजी कहै हैं कि, तुम्हारो मन ठग है जे गुरुवा-लोग तिनहीं सो मान्योहै ते तुमको ठगि लीन्हे हैं । सो जब तुम ठगको पहिचा-नि लेउगे कि, ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी ॥ ५ ॥

इत छतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सतीसर्वां शब्द ॥ ३७ ॥

हरिठगठगत सकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला
बालापनके मीत हमारे । हमें छोड़ि कहँ चले सकारे॥२॥
तुम असपुरुष हौं नारि तुम्हारी।तुम्हरी चाल पाहनहुंते भारी
माटिक देह पवनको शरीरा।हरि ठग ठगतसो डरल कवीरा४
हरिठगठगतसकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीव कोहें हैं कि, हरिको ठग जो गुरुवाहै सो ठगहारी करिकै सब जीवन को ठगतकहे हरिते बिमुख करत जगडोलाकहे संसारमें फिरै है । अरु जब गमनकरनछगे यम बेरिलियो तब मोसों मुखहूते न बोले कि, एतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्ममें अथवा जीवात्मामें ते न बचायो । यह खबरिकहि समु-
झाय न दियो कि, हम को धोखा द्वैगयो तुमहूं धोखामें न परौ ॥ १ ॥

बालापनके मीत हमारे । हमें छोड़ि कहँ चले सकारे॥२॥
तुम असपुरुष हौं नारि तुम्हारी।तुम्हारी चाल पाहनहुंते भारी

सो तुम बालापनके हमारे मीतहौ जबभर रह्यो जियो तबभर हमको धोखाही-
में लगायेरहे अब हमें छोड़िकै सकारे कहे हमहिंते आगे कहांजाहुगे काहेते
कि, तुमतो काहू को रक्षक मान्यो नहीं वही धोखामें लगेरहे, आपही को
माझिक मानेरहे, अब तुम्हारी रक्षा कौन करै ? सो जब तुम्हारी कोई न कियो
यम लैहीगये तौ जौन ज्ञान हमको दियो है तौनेते हमारी रक्षाकौन करैगो॥२॥
तुम ऐसो हमारे पुरुषहै तुम्हारी हम नारी हैं काहेते कि, बीजमंत्र हम को
उपदेश दियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौते भारी है कहे पाहनौ ते जड़ है तेहिते
साहबको भुलाइदियो ॥ ३ ॥

माटिकि देह पवनको शरीरा । हरिठग ठगतसो डरल कवीरा४

माटीकी यह देह है सो स्थूल शरीर नाशवानहै औ पवनको शरीर सूक्ष्म
शरीर है सो मनोमय चंचलहै ज्ञानभये वही नाशमानहै तामें स्थित जे कबीर कहे

कायाके बीर जीवहैं ते हरि जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं सबके कलेश हरनवारे
तिनको ठग जे गुरुवालोग हैं तिनके ठगतमें कहे रक्षकको छपायेदतमें जीबडरै
है कि, हमारी रक्षा अब कौन करैगो, वह ब्रह्म तो धोखई है वा तो गुरुबनहीं-
की रक्षा नहीं कियो औ तेई मालिक होतो तौ मायाके बश कैसे होते औ यम
कैसे धरि लैजाते ॥ ४ ॥

इति सैंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ अड़तीसवां शब्द ॥ ३८ ॥

हरि विनु भर्म बिगुर बिन गन्दा ।

जहँ जहँ गये अपन पौ खोये तेहि फन्दे बहु फंदा ॥ १ ॥

योगी कहै योग है नीको द्वितिया और न भाई ।

चुण्डित मुण्डित मौन जटा धरि तिनहुं कहां सिधिपाई २

ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं ।

जहँसे उपजे तहाँहिं समाने छूटिगये सब तवहीं ॥ ३ ॥

वायें दहिने तजो विकारै निजुकै हरि पद गहिया ।

कह कबीर गूंगे गुर खाया पूछे सों का कहिया ॥ ४ ॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवा लोगनको उपदेश लग्यो है तिन को कहै हैं
औ गुरुवा लोगनको कहैं हैं ॥

हरि विनु भर्म बिगुर बिन गंदा ।

जहँ जहँ गये अपन पौ खोये तेहि फंदे बहु फंदा ॥ १ ॥

मलिन बुद्धि जाकी होइ है ताको गंदा कहै हैं सो गंदा जो यह जीवहै सो
बिना जाने भर्मते बिगारि जात भयो ताते बिन्मात्र हरि को अंशजो यहजीव
ताकी नीचे बुद्धि होइगई । जहांगयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साह-
बको हों यहज्ञान खोयकै तौने फन्दामें पारिकै तौने मतमें लगिकै बहुत फन्द
जे चौरासी लाख योनि हैं तिनमें भटकत भये ॥ १ ॥

योगी कहै योग है नीको द्वितिया और न भाई ।

चुंडित मुंडित मौन जटा धरि तिनहुं कहां सिधि पाई ॥ २ ॥

ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं ।

जहँसे उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तवहीं ॥ ३ ॥

जिनको जिनको यह पदमें कहि आये तेते आपने मतको सिद्धांत करत भयें कि, हमारही मत सिद्धांत है । परन्तु रक्षकके बिनाजाने जहां ते उपजे तहँ पुनि समाइ जात भये । अर्थात् जा गर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनि गये, जन-नमरण नहीं छूटै है । जब दूसरा अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धांत करिराख्यो तेने मन सब छूटिगये । अथवा जहांते उपजे कोहे जौने लोक प्रकाशते उपजे हैं तहँ समाने महाप्रलयमें तब सब बिसरिगयो ॥ ३ ॥

वायें दहिने तजो विकारै निजुकै हरि पद गहिया ।

कह कवीर गूंगे गुरखाया पूछेसों का कहिया ॥ ४ ॥

सो मंत्र शास्त्रमें जे वाममार्ग दक्षिण मार्ग हैं ते दोऊ विकारई हैं तिनको दुहुनको छोड़िदेउ औ हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिहारे रक्षा करनबारे तिनके पदको निजुकै कोहे आपन मानिकै गहौ अथवा निजुकै कोहे विशेषिकै तिनके पदको गहौ जो कहो उनको बताइदेउ वे कैसे हैं तौ वे तौ मन बचनके परे हैं उनको कोई कैसे बताइसकै । जो उनको जान्यो है ताको गूंगे कैसे गुर भयो है कछु कहि नहिं सकै है इशाराहिते बतावे है । वेदशास्त्रको तात्पर्य कै जो सज्जनलोग साहबको समुझावै हैं सोतात्पर्य वृत्तिही करिकै बतावै हैं ऐसे तुमहूँ जो भजन करौगे तौ तुमहूँ उनको जानि लेउगे कि ऐसे हैं ॥ ४ ॥

इति अङ्गतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ उनतालीसवां शब्द ॥ ३९ ॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पंडुर कतहूँ गरुड़ धरतुहै ॥ १ ॥

मूस विलारी कैसे हेतू । जम्बुककर केहरिसों खेतू ॥ २ ॥

अचरज यक देखा संसारा। सोनहा खेद कुंजर असवारा ॥३॥
कह कबीर सुनो संतो भाई। यह संधि कोई बिरलै पाई ॥४॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पंडुर कतहूं गरुड़ धरतुहै ॥१॥

जैसे पूर्व कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत लरतुहै कहे विरोध करतुहै । औ जे उनके भक्त उनको बतावै हैं तिनके मतको खंडन करै है। सो हे मूढ ! पंडुरकहे पनिहां पियरसर्प कहूं गरुड़को धरतुहै ? जो “हुंडुभ” पाठहोय तें हुंडुभ पनिहां सर्पका नामहै । सो रामोपासना गरुड़ है सो और मत जे सर्प हैं तिनको कहां खंडनकीन होइहै वही सबको खंडन करनवारो है । जो वाकों (रामोपासना को) मत अच्छी तरहते जानो होइहै ॥ १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू । जंबुक कर केहरि सों खेतू ॥ २ ॥

सो हे जीवो ! तुम्हारों ज्ञानतौ मूस है औ गुरुवालोगनको ज्ञान बिलारीहै। जे और और मतमें लगावै हैं तुमको और और मतमें लगाइके खाइलेइंगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो । जंबुक जो सियार सो केहरि जो सिंह है तासो खेत करै है कहे लरैहै । सो जंबुक अज्ञान है सो सिंहजो तुम्हारो जीव सोलरैहै वह सिंह जीव कैसो है अज्ञान को नाश कै देनवारोहै अर्थात् जब आत्माकों ज्ञान होइ है तब अज्ञान नाश है जाइहै ॥ २ ॥

अचरज यक देखा संसारा। सोनहा खेद कुंजर असवारा ॥३॥
कह कबीर सुनो संतो भाई। यह संधि कोई बिरलै पाई ॥४॥

सो हम यह बड़ा आश्चर्य देख्योहै । सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवारको खेदै है । सो नानामतवारो जे हैं तेई कुत्ते हैं ते कांउं कांउं कहें शास्त्रार्थ करिकै कुंजरके असवार जे हैं रामोपासनाके साधक तिनको खेदैहैं । कहे उनसों वे कछनहीं पावैहैं । यहां कुंजर मन है ताको परम पुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदियेहैं औ आप असवार हैं ॥ ३ ॥ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि,

इं संतो भाई ! तुम सुनौ मनते भिन्नहैके साहबके मिलबेकी जोहै संधि भेद
 दाको कोई बिरला पायेहै अर्थात् जबभर मन बनोरहै है तबभर वाको भूलिवे-
 की संधि बनीही रहै है, मनते भिन्न हैके वाके भजन करिवेको उपायकोई
 बिरला जानैहै ॥ ४ ॥

इति उनतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४० ॥

पंडित बाद बंदौ सो झूठा ।

रामके कहे जगत गति पावै खांड कहे मुख मीठा ॥ १ ॥

पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ।

भोजन कहे भूख जा भाजै तौ दुनियाँ तरिजाई ॥ २ ॥

नरके संग सुवा हरि बोलै हरि प्रताप नहिं जानै ।

जो कबहूँ उड़िजाय जंगलको तौ हरि सुरति न आनै ॥

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई ।

धनके कहे धनिक जो होतो निधन रहत नकोई ॥ ४ ॥

सांची प्रीति विषय मायासों हरि भगतनकी हांसी ।

कह कवीर यक राम भजे बिन वांघे यमपुर जासी ॥ ५ ॥

पंडित बाद बंदौ सो झूठा ।

रामके कहे जगत गति पावै खांड कहे मुख मीठा ॥ १ ॥

सो हे पंडितौ जो बाद बंदौहौ सो झूठाहै काहेते कि, पंडिततो वह कहावै
 है जाके सारासार विचारिणी बुद्धि होइहै सो सारासार विचारिणी बुद्धि तो
 तिहारे है नहीं पंडित भर कहावोहौ । काहेते कि, सारशब्दको झूठा कहौहौ
 यह बाद बंदिकै रामके कहेते जो गति पावतो तौ खांडाकेहे मुखमीठ हैजातो ॥ १ ॥

पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ।

भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाइ ॥ २ ॥

नरके संग सुवा हरि वोले हरि प्रताप नहिं जानै ।

जो कवहूं उड़िजाय जंगलको तौ हरि सुरति न आनै ॥ ३ ॥

जो पावकके कहे दाह पावतो तो जीभ जेरिजाती, औ जलके कहे तृषा बुझाई जाती, औ भोजनके कहेते भूख भाजिजाती तौ, रामके कहेते दुनियाँ तरिजाती ॥ २ ॥ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहैहै औ श्रीरामचन्द्रको प्रताप नहीं जानै है, काहेते कि, जब कवहूं जंगलमें उड़िजाय है तब रामकी सुरति नहीं करै है । ऐसे जोतुम रामनाम कहि हरिको प्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ॥ ३ ॥

बिन देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई ।

धनके कहे धनिक जो होतो निर्धन रहत न कोई ॥ ४ ॥

बिना देखे बिना स्पर्श किये नाम लिये कहा होईहै । अर्थात् जो कोई दूर-होइ औ देखै न स्पर्श न होइ औ जो वाक्को नामलेइ तौ का जानि लेइहै ? नहीं जानै है । धनके कहेते कोई धनिक हैजातो तौ निर्धनी कोई न होतो ऐसे नाम लिये जो मुक्ति हेत तौ सब मुक्त होइजात । सो हे पंडितौ तुम ऐसे असंगत दृष्टांतदिकै यहवाद बंदौहौ सो झूठाहै । काहेते कि, रामनाम तौ मन बचनके परे है औ ये सब बचन में आवै हैं । औ वह राम नाम साहबके दियेते स्फुरित होइहै । यहै रामनाम जपेते औ ये सब अनित्य हैजाइहैं ॥ ४ ॥

सांची प्रीति विषय मायासों हरिभक्तनकी हासी ।

कह कबीर यक राम भजे बिनु बांधे यमपुर जासी ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहैं हैं कि, हे नास्तिक पण्डितौ ! विषय मायासों सांचीप्रीति करौहौ औ ऐसे ऐसे कुवाद बंदिकै हरिभक्तनकी हासी करौहौ; नाम रूप लीला धामको खण्डन करिकै । सो एक जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नामके बिना भजन किये बांधे मोगरन की मार सहत यमपुरहीको जाहुगे ।

जे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते विमुख हैं ते सब लोकनमाँ निन्दित हैं तामें प्रमाण—“ यश्चरामनपश्यत्युचरामोनपश्यति । निन्दितस्सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते ” ॥ ५ ॥

इति चालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ इकतालीसवां शब्द ॥ ४१ ॥

पण्डित देखौ मनमो जानी ।

कहुयौ छूति कहांते उपजी तवाहिं छूति तुम मानी ॥ १ ॥

नादे बिन्दु रुधिर एक संगै घटहीमें घट सज्जै ।

अष्ट कमलकी पुहुमी आई यह छूति कहां उपज्जै ॥ २ ॥

लखचौरासी बहुत वासना सो सब सरिभो माटी ।

एकै पाट सकल वैठारे सींचि लेत धौं काटी ॥ ३ ॥

छूतिहि जेवन छूतिहि अचवन छूतिहि जग उपजाया ।

कह कबीर ते छूति विवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

पण्डित देखौ मनमो जानी ।

कहुयौ छूति कहांते उपजी तवाहिं छूति तुम मानी ॥ १ ॥

हे पण्डित! तुम मनमें जानिकै कहे विचारिकै देखौतौ औ कहौ तौ यह छूति कहांते उपजी है जो छूति तुम अपने मनमें मान्यो है ॥ १ ॥

नादे बिन्दु रुधिर एक संगै घटहीमें घट सज्जै ।

अष्ट कमल की पुहुमी आई यह छूति कहां उपज्जै ॥ २ ॥

नादते पवन बिन्दुते वीर्य्य रुधिरके संगते घटहीमें घट सज्जै, बुद्बुदा होइहै सो अष्टदलको कमलहै तामें अटकिकै लरिका होइ है । सो पुष्टपर है सो लरिकौके बाही भांतिको अष्टदल कमलहोइहै तौने अष्टदल कमल कमलके दलदलमें वाको मन फिरत रहै है ताते तैसे नाना कर्म में लगिकै नाना स्वभाव वाके होइ हैं ।

और जहां जहांकी बासना करिकै मरै है तौना तौनी योनिमें प्राप्त होइ है एकै जीव बासनन करिकै सर्वत्र होइहैं यह छूति कहाँते उपजै है ॥ २ ॥

लख चौरासी बहुत बासना सो सब सरिभो माटी ।
एकै पाट सकल बैठारे सींचिलेत धौं काटी ॥ ३ ॥

यह जीव बहुत बासननमें परिकै चौरासी लाख योनिनमें भटकैहै शरीर सरिकै माटी है जायहै एकै पाटमें कहै जगत्में नानां बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करतभई अरु ये शरीर सब-माटीही आई औ माटीमें मिलि जाईंगे औ जीव सबके एकही हैं औ एकही पाटमें बैठे हैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेत हैं का जल सींचे छूति मिटि जातहै ? नहीं मिटै ॥ ३ ॥

छूतिहि जेवन छूतिहिअचवन छूतिहि जग उपजाया ।
कह कबीर ते छूति विवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

सो वही छूति जो है बासना सो जब उठी तब जेवन कियो औ वही बासना उठी तब अचयो । और कहालों कहें वही बासना ते जगत् उपज्यो है । सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जाके संग माया नहीं है सोई बासनारूपी छूतिके विवर्जितहै । सो हे पंडित ! माया को जो तुम छोड़्यो नहीं छूति तिहारें भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ बड़ी छूतिकियो है बासनैते चित्तकी वृत्ति उठै है तब यह मानै है कि, हम ब्राह्मणहैं क्षत्री हैं वैश्य हैं शूद्रहैं ॥ ४ ॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बयालीसवां शब्द ॥ ४२ ॥

पंडित शोधि कहहु समुझाई जाते आवागमन नशाई ॥
 अर्थ धर्म औ काम मोक्ष फल कौन दिशा वस भाई ॥ १ ॥
 उत्तर दक्षिण पूरव पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे ।
 विन गोपाल ठौर नहिं कतहुं नरक जात धौं काहे ॥ २ ॥
 अन जानेको नरक स्वर्ग है हरि जानेको नाहीं ।
 जेहि डरको सब लोग डरतहैं सो डर हमारे नाहीं ॥ ३ ॥
 पाप पुण्य की शंका नाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ।
 कहै कवीर सुनो हो संतो जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

वासना मायाके योगते होइहै सो माया जौनी मकारते छूटै है सो
 उपाय कहै हैं अरु आचारको वहां खंडन करिआये सो अव जौनी दशमैं अचार
 नहीं है सो कहै हैं ॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई जाते आवा गमन नशाई ॥
 अर्थ धर्म औ काम मोक्ष फल कौन दिशा वस भाई ॥ १ ॥
 उत्तर दक्षिण पूरव पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे ।
 विन गोपाल ठौर नहिं कतहुं नरक जात धौं काहे ॥ २ ॥

हे पंडित! तुम तो सारासारको विचार करौहौ सो तुम शोधिकै मोक्षों समुझाय
 कहो जाते यह जीवात्माको आवागमन नशाइ । अर्थ धर्म काम मोक्ष ये फल
 कौनी दिशामें रहै हैं? ॥ १ ॥ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहां
 सर्वत्र मैं दूढ़ि डार्यों परन्तु विना गोपाल कहूं ठौर न देख्यों गोपाल कहे गों
 जो इन्द्रिय जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहै
 तिनहींको सर्वत्र देखत भयो । विषय इन्द्रिनते देवता मनते मन जीवते जीव
 परमपुरुष श्रीरामचन्द्रते चैतन्यहै सो जीव उनको चित्त शरीर अरु मायाकाल

कर्म स्वभाव उनको अचित शरीरहै तेहिते विना गोपाल कहूं ठौर नहीं है । जीव नरक स्वर्ग जायहै सो अब बतावैहैं ॥ २ ॥

अन जानेको नरक स्वर्ग है हरिजानेको नहीं ।

जेहि डरको सब लोग डरत हैं सो डर हमरे नहीं ॥ ३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनजानेको नरक स्वर्ग है कहेजो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको स्वर्गहै औ नरकहै । औ जो कोई हरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरकहै न स्वर्ग है । जौन डरको सब लोग डरायहैं माया ब्रह्म नरक स्वर्गादिकनको तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबैको देखैहैं ॥ ३ ॥

पाप पुण्यकी शंका नहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ।

कहै कबीर सुनो हो संतो जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

औ न उनको पापपुण्य की शंका है काहेते कि, जो कोई बद्ध होइ सो मुक्त होइ, तेहिते न वे बद्धही हैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण श्रीभागवते ॥ “बद्धो-मुक्तइतिव्याख्या गुणतोमेनवस्तुतः । गुणस्यमायामूलत्वान्नमेमोक्षो न बन्धनम्” ॥ हम तो सर्वत्र साहबहीको देखैहैं वे नरक स्वर्गको नहीं जाइहैं सो कबीर जी कहैहैं कि हे संतो! सुनो ऐसी भावना जे नर करैहैं ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो तिनहीं के स्थानमें जाइ हैं ॥ ४ ॥

इति ब्यालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तेतालीसवाँ शब्द ॥ ४३ ॥

पंडित मिथ्या करौ विचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा ।
थूल स्थूल पवन नहिं पावक रवि शशि धरणि न नीरा ।
ज्योति स्वरूपी काल न उहँवां बचन न आहि शरीरा ॥ २ ॥
कर्म धर्म कछुवो नहिं उहँवां ना कछु मंत्र न पूजा ।
संयम सहित भाव नहिं एकौ सोतो एक न दूजा ॥ ३ ॥

गोरख राम एकौ नहिं उहँवां ना ह्वां भेद विचारा ।
हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती तिरथौ नहीं अचारा ॥ ४ ॥
माय वाप गुरु जाके नाहीं सो दूजा कि अकेला ।
कह कवीर जो अबकी समुझै सोई गुरु हम चेला ॥ ५ ॥

हे पंडित ! तुमतौ वहि ब्रह्मको मिथ्यै विचार करोहो। जो यहिपदमें वर्णन करिआये सो वहमें एकउ नहीं है वह तो धोखाही है सो कवीरजी कहै हैं कि, जो सो वह आत्माते दूसर है कि अकेल वह ब्रह्महै? जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञान भये पर समुझै कि, मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको हौं वह ब्रह्म धोखा है सोई गुरुहै । म चेलाहौं काहेते कि, मोहिं तो धोखई नहीं भयो है जो आप-नेको ब्रह्मबानिकै औ साहबको समुझै है औ वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरुहै औमैं वाको चेलाहौं अर्थात् सोई मोसों अधिक है काहेते कि, वह धोखा में परिकै निकस्यो है यह प्रशंसा कियो ॥ ५ ॥

इति तेतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४४ ॥

बूझहु पंडित करहु विचारी पुरुष अहै की नारी ॥ १ ॥
ब्राह्मणके घर ब्रह्मणी होती योगीके घर चेली ।
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलिमें रहै अकेली ॥ २ ॥
वर नहिं वरै व्याह नहिं करई पुत्रजन्म होनिहारी ।
कारे मूँड़े यक नहिं छाँड़ै अवहूँ आदिकुवारी ॥ ३ ॥
मायिक न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै ।
कह कवीर वे युगयुग जीवैं जाति पांति कुल खोवैं ॥ ४ ॥

यह मायाही सब जगतके जीवनको भरमायो है सोई कहै हैं ॥

बूझहु पंडित करहु विचारी पुरुष अहै की नारी ॥ १ ॥

ब्राह्मण करे ब्रह्मणी होती योगीके घर चेली ।

कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलि में रहै अकेली ॥ २ ॥

सो हे पंडित! तुम बूझौ औ विचारिकै काम करों यहमाया पुरुषरूपहै कि नारीरूपहै? यहमाया सबको लपेटि लियो है ॥ १ ॥ विद्या माया ब्राह्मणके तौ ब्राह्मणी हैकै बैठी है । ब्राह्मणकहै हैं कि, हम ब्रह्मको जानै हैं ॥ “ब्रह्मज्ञानाति ब्राह्मणः” ॥ अरु घरमें ब्राह्मणी बैठायेरहै हैं, वाको स्त्रीको भाव करै हैं बेटीसों बेटीको भाव, बहिनीसों भगिनीको भाव मानै हैं । सो कहो तो ब्रह्मभाव कबभयो जो कहो जिनके स्त्री नहीं है तिनको तो ब्रह्मभाव ठीकहै तौ उनके ब्रह्म ज्ञानपनीरूप ब्राह्मणीकी गहूरी बनो है । संयोगिनके तौ चेली है बैठी है औ योगिनके योगीरूप है बैठी है। योगी महामुद्रा साधन करिकै वीर्यकी उलटी गति कैदेइहैं । सो जब वृद्ध भये तब षोडशी कन्या एक घरमें रातिभरि राखिकै संभोग करिकै उनको वीर्य लिंग द्वारते खैचिकै कपारमें चढाइ लेइहैं, तब आप तरुणहै जाइहैं वहे षोडशीकन्या मरिजाइहै। एतो बड़ो अनर्थकरै हैं। जे प्राणायाम करिकै प्राणचढाइ लै जाइहैं तिनके कुंडलिनी है बैठी हैं। औ मुसलमाननके जब विवाह होइहै तब निगाह सों निकाह कै कलिमापढ़िकै तुरुकिनी होइहै औ मुसलमान होइहै । सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मणमें स्त्रीके साथ कर्मरूप हैकै औ योगिनके दशमुद्रा रूपहैकै औ मुसलमाननमें निकाह कलिमा आदिदैक शरा अरूप हैकै अकेली मायाही रहतभई साहबके काम ये एको नहीं हैं ॥ २ ॥

वर नहिं वरै व्याह नहिं करई पुत्र जन्म होनि हारी ।

कारे मूड़े यक नहिं छांड़ै अवहं आदि कुवारी ॥ ३ ॥

वर कहे श्रेष्ठ जे हैं साहबके जाननवारे भक्त तिनको नहीं बरचो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या ये दोनोंका नहीं है । अरु खसम ब्रह्म है सो व्याह नहीं करैहै काहेते कि, धोखाकी भंवरी नहीं परै । औ मायाको पुत्र जगत् है जाको गर्भ धारण करैहै सो कारे कहे जिन के शिखाहै “ हिंदू लोग ” औ

मूँहें कहे जिनके शिखा नहीं है मुसल्मान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़्यो । अबहूँ भर वह आदिकहे आद्या जो मायाहै सो कुँवारीही बनी है अर्थात् हिंदू मुसल्मानको आपही बशकै लियो है इनके बश नहीं भई ॥ ३ ॥

मायिक न रहै जाइ न ससुरे साई संग न सोवै ।

कह कवीर वे युग युग जीवै जाति पांति कुल खोवै॥४

अरु मायिक जो है शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्ति भईहै माया तहां तो रहतही नहीं है वहां तौ जीवके साहबको अज्ञान रूप कारण मात्र रह्योहै । औ सासुर जो है लोक प्रकाश ब्रह्म जहां जीव मान्यो है कि, ब्रह्म मैंही हौं, सो धोखाहै । तहां नहीं जाइहै औ वही साई कहे पतिहै काहेते कि, वही मायासबलित होइ है तब जगत् होइ है ताके संग नहीं सोवैहै काहेते कि, वहतो धोखई है औ वह माया धोखा है जो कछु बस्तु होइ तब न वाके संग सोवै । श्रीकबीरजी कहै हैं कि, सब जगत्को माया लपेटि लियो है । जे जीव साहब औ साहबकी जाति आपको मानै हैं औ अपनी जाति पांति कुल खोवै हैं सोई मायाते बचे हैं औ युग युग जियै हैं और तो सबको माया खाइही लियो है अर्थात् उनहीं को जनन मरण नहीं होयहै ॥ ४ ॥

इति चवालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ पैतालीसवां शब्द ॥ ४५ ॥

कौन मुवा कहु पंडित जना॥सो समुझाय कहौ मोहिंसना॥
मूये ब्रह्मा विष्णु महेशा । पावती सुत मुये गणेशा ॥ २ ॥
मूये चन्द्र मुये रवि केता॥मुये हनुमत जिन्ह बांधी सेता॥
मूये कृष्ण मुये करतारा । यक न मुवा जो सिरजन हारा॥४॥
कहै कवीर मुवा नहिं सोई । जाको आवा गमन न होई॥५॥

जिनको जिनको यापदमें वर्णन करिआये तेते सब महाप्रलयमें लीन होइहैं । एक कहे सम अधिकते रहित जो साहव नहीं मुवा । औ सिरजनहार जो समष्टि जीव सो नहीं मुवाहै अर्थात् सो रहिजायहै । और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावै हैं । जीवतो मरै नहीं है शरीरहीमरैहै सो जे जे देवत-नको मुवा कहिआये ते जौन रूपते साहबके समीप रहै हैं सो स्वरूप इनको नहीं मुवै है पार्षद शरीरते बनै रहै ह यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआये हैं ॥ ५ ॥

इति पैंतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ छियालीसवां शब्द ॥ ४६ ॥

पंडित अचरज यक बड़ होई ।

यक मर मुये अन्न नहिं खाई यक मर सीझ रसोई ॥ १ ॥

करिकै स्नान तिलक करि बैठे नौ गुण कांध जनेऊ ।

हांडी हाड़ हाड़ थारी मुख अव षट कर्म बनेऊ ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव बधै तहँ अकरम करे मेरे भाई ।

जो तोहरे को ब्राह्मण कहिये तौ केहि कहिये कसाई ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो भरम भूलि दुनिआई ।

अपरम पार पार पुरुषोत्तम यह गति विरलै पाई ॥ ४ ॥

अब जे षट्कर्म पंडित लोग बलिदान करिकै मांस खाइ हैं तिनको कहै हैं ॥

पंडित अचरज यक बड़ होई ।

यक मर मुये अन्न नहिं खाई यक मर सीझ रसोई ॥ १ ॥

करिकै स्नान तिलक करि बैठे नौ गुण कांध जनेऊ ।

हांडी हाड़ हाड़ थारी मुख अव षट कर्म बनेऊ ॥ २ ॥

हे पंडित ! एक बड़ो आश्चर्य होइ है । एक मरै है ताके मेरेते कोई अन्न नहीं खायहै अरु वाके छुयेते अशुद्ध है जाइहै, अरु एक जीवको मारि

ले आवे हैं तौने मुर्दाको रसोईमें सिझावै हैं ॥ १ ॥ औ नौ गुणको जनेऊ कांधे में डारिकै स्नान करिकै बड़ो वेदना ऐसो तिळक दैकै बैठै हैं । सो कबीरजी कूटकरै हैं कि, अब षट्कर्म बनि परचो कि, हांडीमें हाड़ है थारीमें हाड़ है मुखमें हाड़ है । व षट् कर्म ब्राह्मणके ये हैं । पढ़ै पढ़ावै दान देइ लेइ यज्ञ करै यज्ञ करावै । इहां ये षट्कर्म करै हैं एक हँडिया दूजे हाड़ तीजे थारी चौथे हाड़ पांचौ मुख छठौ हाड़ अब ये अब षट्कर्म बनि परचो ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव वधै तहँ अकरम कर मेरे भाई ।
जो तोहरेको ब्राह्मण कहिये तौ केहि कहिय कसाई ॥ ३ ॥
कह कबीर सुनो हो संतो भ्रम भूलि दुनिआई ।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम यह गति बिरलै पाई ॥ ४ ॥

जहां धर्मको कथैहै कि, या यज्ञहै, देवपूजन पितर श्राद्धहै याधर्म है तहँ जीवनको मारै है । सो हे भाइउ ! जो करिबेलायक कर्म नहीं है सोऊ करैहैं ऐसे जे तुम्हारे कर्म हैं तिनको, तो ब्राह्मण कहेंगे ब्रह्मके जनैया कहेंगे तो कसाई काको कहेंगे ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलि रही है । अपरमकहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्म है ताहूते पार पुरुष समष्टि जीव हैं जाके अनुभवते ब्रह्म भयो है ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्र हैं काहेते कि, वे विभु सर्वज्ञ हैं औ जीव अणु अल्पज्ञहै । ते श्रीरामचन्द्रकी जो यहगति है ज्ञान सो कोई बिरलै पाई है अर्थात् कोई बिरला जान्यौ है कि, सबते पर साहबई है । उनते सम औ अधिक कोई नहीं है । तामेंप्रमाण ॥

“सकारणकारणकारणाधिपोनचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः । नतस्य कार्यकरणचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ इतिश्वेताश्वतरोपनिषदि ॥ समोनविद्यतेतस्यविशिष्टः कुतएवतु ॥ इति वाल्मीकीये । ” औकबीरजीकोप्रमाण ॥

“साहब कहिये एकको दूजा कहो न जाइ । दूजा साहब नो कहैं, बाद बिडंबन आइ ॥ जनन मरणते रहितहै, मेरा साहब सोय । मैंबलिहारी पीउकी, जिन सिरजा सब कोय ॥ ४ ॥

इति छियालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सैंतालीसवां शब्द ॥ ४७ ॥

पंडित बूझि पियो तुम पानी ।

जा माटीके घरमें बैठे तामें सृष्टि समानी ॥ १ ॥

छपन कोटि यादव जहँ विनशे मुनि जन सहस अठासी ।

परग परग पैगम्बर गाड़े ते सरि माटी मासी ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार वियाने रुधिर नीर जल भरिया ।

नदिया नीर नरक वहि आवै पशु मानुष सब सरिया ॥ ३ ॥

हाड़ झरी झरि गूद गली गलि दूध कहाँते आवै ।

सो तुम पाँड़े जेवन बैठे मटिअहि छूति लगावै ॥ ४ ॥

वेद किताव छोड़ि दिहु पाँड़े ई सब मनके कर्मा ।

कहै कबीर सुनोहो पाँड़े ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

जे दंभ करिकै बड़ों आचार करैहैं जिनको चिदअचिद साहब को रूप है यहबुद्धि नहीं है ताको कहै हैं ।

पण्डित बूझि पियो तुम पानी ।

जा माटीके घरमें बैठे तामें सृष्टि समानी ॥ १ ॥

छपन कोटि यादव जहँ विनशे मुनि जन सहस अठासी ।

परग परग पैगम्बर गाड़े ते सरिमाटी मासी ॥ २ ॥

सो हे पंडित! ज्ञानतो तिहारे है नहीं आचारकरौ हो सो तुम कहाँको पानी पियो है। भला बूझिकै कहे बिचारिकै तौ पानी पियो। जौने माटीके घरमें अर्थात् पृथ्वीमें तुम बैठेहौ तौनेमें सब सृष्टि समाइरहीहै ॥ १ ॥ औ जौनी पृथ्वीमें छप्पन कोटि यादव औ अठासी हजार मुनि ये उपलक्षण हैं अर्थात् सबजीवन-के शरीर वही माटी में मिलि मिलिकै सरिगये अरु परग परगमें पैगम्बर गाड़ेहैं

ते सब सरिके माटी है रहेहैं तेहिते माटी मासी है कहे मांसमें मिलिरही है औ माटी मासी कहे मधुकैटभके मांसकी आई ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार वियाने रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक वहि आवै पशु मानुष सब सरिया ॥३॥
हाड झरी झरि गूद गली गलि दूध कहांते आवै ।
सो तुम पांडे जेवन बैठे मंदिअहि छूति लगावै ॥ ४ ॥

अरु नदियाके जलमें मत्स्य कच्छ घरियार वियाने कहे होयहैं औ रुधिर नीर मछ इत्यादिक वही नदियाके जलमें मिलिजाइ है औ पशु मानुष सरिजा-यहैं; ते वही पानी पियोहौ औ आचार करोहो ॥ ३ ॥ दूधो हाडते झरि झरि गूदते गलिगलिके लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैके हे पंडित! तुम जेवन बैठोहौ औ माटी जो मांसहै ताको छूति लगावोहौ कि, मांसबड़ो अपवित्र है याको जे खाइहैं ते बड़ो निषिद्धकर्म करै हैं सो कहो तो वह दूध मांसते कैसे भिन्नहै ॥ ४ ॥

वेद किताब छोडि दिहु पांडे ई सब मनके कर्मा ।

कहै कबीर सुनोहो पांडे ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

सो हे पांडे! शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जानेजाइहैं ते वेद किताबको तुम छोडिदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करौहौ ते तो सब तुम्हारे मनके कर्म हैं आपने मनहींते ये सब तुम बनाइ लियोहै इनते तुम न निबहौगे। श्रीकबीरजी काकु करैहैं कि हेपांडे! बिचारिके देखौ ये सब तुम्हारे धर्महैं? अर्थात् नहींहै तुमतौ साहबकेहौ । अथवा कबीरजी कहै हैं एते सब कर्म करौहौ अपने मनके बनाये औ वेद किताबोके कहते ये सब तुम्हारे धर्मकहे तुम्हारे शरीरमा हैं । तेहिते शरीरते भिन्न हैकै आपने स्वरूपको जानौगे तब आपने सांचे कर्मनको जानौगे यह व्यंग्यहै ॥ ५ ॥

इति सैंतःलांसवां शब्द समाप्त ।

१ कहीं कहीं मट्टी मांसको भी कहैहै परन्तु यहां तो मिट्टीसे आशय है मनुष्य शरीरते क्योंकि, दम्भ करिके आपजी चहे कर्म करतहै तोरे दूसरे पवित्र मनुष्यनते कूत मानतहै ।

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥ ४८ ॥

पंडित देखो हृदय विचारी । कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
 सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा ।
 वाको नाम कहा कहि लीजै ना वहि वरण न रूपा ॥ २ ॥
 तैं मैं काह करै नर वौरे क्या तेरा क्या मेरा ।
 राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहु धौं काहि निबेरा ॥ ३ ॥
 वेद पुराण कुरान कितेवा नाना भांति बखानी ।
 हिंदू तुरुक जैनि औ योगी एकल काहु न जानी ॥ ४ ॥
 छः दरशनमें जो परवाना तासु नाम मन माना ।
 कह कबीर हमहीं हैं वौरे ई सब खलक सयाना ॥ ५ ॥

पंडित देखो हृदय विचारी । कौन पुरुष को नारी १
 सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा ।
 वाको नाम कहा कहि लीजै ना वह वरणनरूपा २ ॥

हे पंडित! तुमतौ सारासारको विचार करौ हौ हृदयमें विचारि कै देखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मा तो न पुरुष न नारी है ॥ १ ॥ जो कहों घटघटमें सहज जीव ब्रह्म समाइ रह्योहै वाको चरित्र अनूपहै सोई हमारो स्वरूप है तो वाको नाम कहां कहि लीजै वाको तो न वर्ण है न रूपहै वह तो धोखाहै ॥ २ ॥

तैं मैं काह करै नर वौरे क्या तेरा क्या मेरा ।

राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहु धौं काहि निबेरा ३

औ जो तैं मैं कहौहौ कि, तैं मैं आह्यो, मैं तैं आह्यो एकही ब्रह्मतो है तैं मैं कहा करैहै । विचारिदेखु तौ क्या तेराहै क्या मेराहै सब साहबका तौ ।

जो तैं साहब होइ तब तेरा होइ। राम खोदाय औ शक्ति शिव जेहैं तिनमें कहुयौ तैं काको निबेरा कियो है कि, एक यह जगतको मालिक है । औ वही मैं हौं । अर्थात् इनकी सामर्थ्य तोमें एकऊ नहीं देखि परै है ताते इनमें तैं कोई नहीं है ॥ ३ ॥

वेद पुराण कुरान कितेवा नाना भांति बखानी ।

हिंदू तुर्क जैनी औ योगी एकल काहु न जानी ॥ ४ ॥

वही साहबको नाना नाम लैकै कहै हैं सो वेद पुराण कुरान किताबमें वही साहबको सबने परे नाना भांतिते नाना नाम लैकै बर्णन कियो है यही हेतुते हिन्दू तुर्क जैनी योगी एकल कहे एक नाम करिकै कोई नहीं जान्यो कि, एक यही सिद्धांत है यही सबको मालिक है । अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपायते मै मन बचनके परे साहबको जान्यो है सो कोई नहीं जान्यो ॥ ४ ॥

छः दर्शनमें जे परवाना तासु नाम मन माना ।

कह कबीर हमहीं हैं बौरै ई सब खलक सयाना ॥ ५ ॥

छइउ दर्शनमें अरु जेते सब हिन्दू तुर्क आदि वर्णन करि आये तिन सबमें जौन धोखा ब्रह्म को प्रमाण परै है तौनेही को नाम सबके मनमें मानै है । कहते तौ मन बचनके परे हैं परंतु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वादीको सब मानै हैं । सो कबीरजी कहै हैं कि, सब खलक सयाना है काहेते कि, कहते तो यह बात हैं कि, वह तो मन बचनमें आवते नहीं है औ जे मन बचनमें आवै हैं तिनहीं में फिरि लागै है ताते हमहीं बौरहा हैं जो ऐसो कहै हैं कि, साहब आपही ते कृपा करिकै अनिर्वचनीय रामनाम स्फुरित करि देइ हैं ताहीके मिलनको उपाय बतावै हैं यह काहु करै हैं ॥ ५ ॥

इति अडतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ उनचासवां शब्द ॥ ४९ ॥

बुझ बुझ पण्डित पद निर्वाणा । सांझ परे कहँवां बस भाना १
नीच ऊँच पर्वत ठेला न भीत । बिन गायन तहँवा उठ गीत २

ओस न प्यास मँदिर नहीं जहँवां । सह सौ धेनु दुहावै तहँवां ३
 नितै अमावस नित संक्रांति । नित नित नवग्रह बैठे पांति ४
 मैं तोहिं पूछौं पण्डित जना । हृदया ग्रहण लागु केहि खना ५
 कह कबीर यतनौ नहीं जान । कौन शब्द गुरु लागा कान ६

अब योगिनको कहै हैं ।

बुझ बुझ पंडित पद निरवाना । सांझ परे कहँवां वस भाना १
 नीच ऊँच पर्वत ठेला न भीत । विन गायन तहँवां उठ गीत २

हे पंडित ! तुम वह निर्वाणपदको बूझो तो जो त्रिकुटीमें ध्यान लगाइके भानु
 कहे सूर्य देखेहों । सो सूर्य सांझपर कहे जब शरीर छूटिगयो तब कहाँ बसैहै ?
 ॥ १ ॥ नीचेते ऊँचेको कहे कुंडलिनीते गैबगुफामें जब आत्मा जाइहै तौनें
 पर्वतमें न ठेलाहै न भीतिहै । औ बिना गायन तहँवां गीत उठैहै कहे अनहदकी
 ध्वनि सुनिपरै है ॥ २ ॥

ओस न प्यास मँदिर नहीं जहँवां । सहस्रो धेनु दुहावै तहँवां ३

ओस जो वहाँ परे है कहे अमृत जो वहाँ झरे है ताको पान करिकै न प्यास
 है जाइहै कहे पियास नहीं लगैहै । अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो मानि-
 राखेहैं कि, अमृत पीकै हम अमर है जाइंगे सो अमर न होउगे । औ जो गैब
 गुफा पर्वतमें घरमानि राखेहैं सो वहाँतेरो मंदिर कहै घर नहीं है अर्थात् वहाँ
 तो शून्यहै तहां सहस्र दलमें धेनु दुहावै है कहे धेनु जोहै गायत्री ताको अर्थ
 जोहै वहद्रूप ज्ञान स्वरूप ब्रह्म ताको बिचार करैहै आपने को ब्रह्म मानै हैं जब
 शरीर सरिजाई तब गैबगुफौ जरिणाइहै औ फिरि शरीर धारणकरै है ॥ ३ ॥

नितै अमावस नित संक्रांति । नित नित नव ग्रह बैठे पांति ४ ॥

औ तहां नित अमावस रहैहै चन्द्रमा सूर्यनके ओट है जाइ सो अमावस कहा-
 वै है । सो यहांते आत्मा जाइके ब्रह्मज्योतिमें लीन है जाइहै ताते नित
 अमावस रहै है औ फिरि जब समाधि उतरी तब शंकामें परिगयो वही वाकों

निन संकांति है । औ नित नव ग्रह पांति जो है दुवार जामें ऐसो जो है ग्रह शरीर तौने की पांति बैठै है कोह इतना योग साधै है तऊ शरीर धारण करिबों नहीं छूटै है ॥ ४ ॥

मैं तोहिं पूछौं पंडित जना । हृदया ग्रहण लागु क्याहि खना ५
कह कबीर इतनौ नहिं जाना कौन शब्द गुरु लागा कान ६ ॥

हे पंडित ! तुमसों हम पूछै हैं कि, जब समाधि उतारि आवै है तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइ है औ निर्वाण पद कहतहीहौ । सो निर्वाण पद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते औ कैसे नाना शरीर पावते सो देखतेहौ बूझते नहींहौ, यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमाको कब ग्रहणकियो ॥ ५ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीरके साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीरके साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरे कानमें लागिकै गुरुवालोग कौनसो शब्दको उपदेशकियो है जाते परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको भूलि गेय ॥ ६ ॥

इति उनचासवां शब्द समाप्त ।

अथ पचासवां शब्द ॥ ५० ॥

बुझबुझ पंडितविरवा न होई । अधबस पुरुष अधावस जोई १
विरवा एक सकल संसाला । स्वर्ग शीश जर गयल पताला २
बारह पखुरी चौबिस पाता । घन वरोह लागी चहुँ घाता ३
फलै न फुलै वाकिहै बानी । रैन दिवस विकार चुव पानी ॥ ४ ॥
कह कबीर कछु अछलोन जहिया । हरि विरवा प्रतिपालत तहिया ५

बुझबुझ पंडितविरवान होई । अधबस पुरुष अधावस जोई ॥ १ ॥
विरवा एक सकल संसाला । स्वर्ग शीश जर गयल पताला २

हे पंडित ! यह संसाररूपी वृक्षको जो तैं बूझि राखे है कहे मानि राखे है सो तैं बूझतौ जितने बिचार होइहैं तिनको यह मिथ्याही है । हरिकेचिदुअचिद रूपसे सत्यहै। यह संसार वृक्ष आधा पुरुष है आधा प्रकृति है अर्थात् चित् पुरुष जीव औ अचित् मायादिक इनहीते संपूर्ण जगदहै ॥ १ ॥ पुनि कैसेहै संसार-रूपी बिरवा याको स्वर्गशीश कहे ब्रह्मांडको जो खपरा है सो शीश है अरु याकी जर पातालमें गई है ॥ २ ॥

बारह पखुरी चौबिस पाता। घन बरोह लागी चहुँ घाता ॥३॥
फलै न फुलै वाकि है वानी। रैन दिवस विकार चुव पानी ॥४॥

औ बारह महीना जे हैं ते बारे पंखुरी हैं अर्थात् काल औ चौबिस तत्त्व वाके चौबिस पातहैं औ घन कहे नाना कर्मनकी वासना तेई घन बरोह चारों ओर लगीहैं ॥ ३ ॥ या संसाररूपी वृक्ष साहबको ज्ञान रूप फल नहीं फूलै औ साहबको भक्तिरूप फल नहीं लौ है या संसारके बाहर भयेते होयहै औ राति दिन बिकाररूप पानी चुवै है ॥ ४ ॥

कहकबीरकछुअछलोनजहिया। हरिविरवाप्रतिपालततहिया ५

सो कबीरजी कहै हैं कि, जहां हरि परम पुरुष श्रीरामचन्द्र जाके अंतःकरणमें भागवत धर्म रूपी बिरबनकी बाग प्रतिपालै हैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छो नहीं है । व्यंग यह है कि, माली जो होइहै सो कांटा वाला पेड़ निष्काम अलग कै देखै इहां हरि संसार रूपी बिरवा अलग कै देखै है भागवत धर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी रेखता में कह्यो ॥ “धर्मकी बाग फुलवारि फूली रही शील संतोष बहुतक सोहाई । भक्तिका फूल कोउ संत माथे धरे ज्ञान मत भेद सतगुरु लखाई ॥ विवेक बिचार सोइ बाग देखन चले प्रेम फल पाइ टोरै चखाई । पराहै स्वाद जब और भावै नहीं तजैगा प्राणकी बहवाई ॥ ५ ॥

अथ इक्यावनवां शब्द ॥ ५१ ॥

बुझबुझपण्डितमनचितलाय। कवहिं भरलवहै कवहिं सुखाय १
खन उवै खन डुबै खन अवगाहारतन नमिलै पावनहिं थाहर
नदिया नाहिं सरस वहै नीर । मच्छ न मरै केवट रहै तीर ३
कह कवीर यह मनका धोका वैठा रहै चला चह चोखा ४

बुझबुझपण्डितमनचितलाय। कवहिं भरलवहै कवहिं सुखाय १

हे पण्डित ! सारासारके विचार करनवाले ते तो विवेकी कहावै हैं चित्त लगाइके यह मनको बुझि, तौ कबहुं भरलकहे कबहुं तो तैं आपनेको मानिले-
इहै कि, मैही ब्रह्महीं आनंदते भरिजायहै औ कबहुं वहज्ञान बहिजायहै तब सुखाइ जाइहै अर्थात् वह आनंद नहीं रहिजाइहै ॥ १ ॥

खन उवै खन डुबै खन अवगाहारतन नमिलै पावनहिं थाहर
नदिया नाहि सरस वहै नीर । मच्छ न मरै केवट रहै तीर ३

तब क्षणमें संसारते मन ऊबिउठै है कहे बैराग्य है आवै है औ क्षणमें बही मनरूपी नदी हिलै है बूड़िजाय है अर्थात् संसारके विषयमें बूड़िजाय है । औ क्षणमें अवगाहैहै कहे नानामतमें विचार करै है कि, संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदीकी थाह नहीं पावै है तेहिते रत्न जो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है विचारही करत रहिजायहै ॥ २ ॥ सो मनरूपी नदियाहै नहीं जो तैं विचारकरै तू तो मनके बाहर है परंतु सरस नीर सङ्कल्पबनै है । अब मच्छको मारनवालो केवट ज्ञान तीर में वनै है परंतु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरै हैं ॥ ३ ॥

कह कवीर यह मनको धोखा । वैठा रहै चला चह चोखा ४

सो कवीरजी कहैहैं कि, नाना मतमें परिछै संसार छूटिबेको नहीं उपाय करौ हो औ चोखे कहे नीके चला चाहौहो परंतु होबैठे कहे साहबके मिलिबेको उपाय ये एकउ नहीं हैं काहेते कि, पश्चिमको ग्राम नगीचऊ होइ औ तहांजाइबो चाहै औ जसजस पूर्वको मेहनत करिके मंजिलकरै तौ तस तस दूरिही परंतु जाइहै यह संसार मनको धोखा जिय्याहै सो मनते भिन्न हैके साहबमें लगै तबहीं साहब मिलैंगे ४

इति इक्यावनवां शब्द समाप्त ।

अथ बावनवां शब्द ॥ ५२ ॥

बूझि लीजै ब्रह्मज्ञानी ।

घोरि घोरि वर्षा वरषावै परिया बुंद न पानी ॥ १ ॥

चींटीके पग हस्ती बांधे छेरी वीगे खायो ।

उदधि माहिते निकसि छांछरी चौड़े गेह करायो ॥ २ ॥

मेढुक सर्प रहै इक संगै बिल्ली इवान विवाही ।

नित उठि सिंह सियारसों जूझै अद्भुत कथो न जाही ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे पारथ वाना मेलै ।

सायर जरै सकल वन डहै मच्छ अहेरा खेलै ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना को यहि ज्ञानहँ बूझै ।

विनु पंखे उड़िजाहि अकाशौ जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

बूझि लीजै ब्रह्मज्ञानी ।

घोरि घोरि वर्षा वरषावै परिया बुंद न पानी ॥ १ ॥

हे ब्रह्मज्ञानी ! आप बूझिये तौ घोरिघोरि कहे नयेनये ग्रन्थन को बनाइकै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडारयो कि, एक ही ब्रह्म है । वही बाणी शिष्यनके श्रवण में वर्षा ऐसो वर्षावोहौ परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानी को बुंदहू न उनके परयो जर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्मकबहू न भयो सो तुम्हारो यह हवाल हैरह्यो है ॥ १ ॥

चींटीके पग हस्ती बांधे छेरी वीगे खायो ।

उदधि माहिते निकसि छांछरी चौड़े गेह करायो ॥ २ ॥

चींटी कहिये बुद्धिको कोहेते कि, सूक्ष्म होइ है कुशग्रवर्ती शास्त्रमें कहै हैं ताके पाइमें मतङ्गरूप जोमनहै ताको बांधिदियो मनबड़ाहै औ दुर्वारमतहै याते हाथीकह्यो

तब छेरी जो है माया सो बीगा जो है जीव ताको खाइ लियो जीवको बीगा काहेते कह्यो कि, जो जीव आपने स्वरूप को जानै तौ छेरी जो है माया ताको नाशकै देइ सो छेरी मायही बीगा जीवको आपने पेटमें डारिलियो । अरु छेरी मायाको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “ अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां ” इत्यादि । सो लोक प्रकाश जो उदधि तहांते निकरिकै चौड़ी छांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर मायाते बनवायो अर्थात् संसारी द्वै गयो ॥ २ ॥

मेढुक सर्प रहै इक संगै बिल्ली श्वान वियाही ।

नित उठि सिंह सियारसों जूझै अदभुत कथो न जाही ॥

वह कैसो संसारहै जहां मेढुक (जीव) औ सर्प (काल) एकैसंगरहै हैं । नाना शरीरनको काल खात जाइहै पुनि पुनि शरीर होत जाइहै । अरु बिल्ली जो है मॉनसी वृत्ति सो श्वान स्वानुभवानन्द ताको बिवाहीगई अर्थात् वाही में लगिगई । वृत्तिकोबिल्ली काहेते कह्यो कि, बिल्ली जहां गोरस देखै है तहें जाइहै औ यह वृत्ति जो है सोऊ जहै रस जो है सुख सो देखैहै तहें जाइहै । सो स्वानुभवानन्दमें बहुत सुख देख्यो याते वाहीको बिवाहीगई । तब नित-उठिकै सिंह जो ज्ञान सो सियार अज्ञानते मारो जाइहै । जो कहो ज्ञान तो अज्ञानको नाश करनवारो है अज्ञानते ज्ञान कैसे नाश होइहै ? सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि, हम ब्रह्म हैं सो अद्भुत है कहिबेलायक नहीं है नेति कहैह अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराणमें नहीं कह्यो कि, फलानो जीव ब्रह्म द्वै गयो याही ते मूलाज्ञानमें ठहराये हैं ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन वन घेरे पारथ वाना मेलै ।

सायर जरै सकल वन डोहै मच्छ अहेरा खेलै ॥ ४ ॥

येई दुइतुक अधिकसे जानेपरैहैं परन्तु पोथीमें लिखो लख्यो अर्थ करिदियो सो शरीरबनको संशय जो मिरगा है सो घेरे है औ पारथ जे हैं गुरुवा लोग ते संशयरूपी मृगाके मारिबेको बाण जो है नानाप्रकारको उपदेशरूप बाणी ताको मेलैहैं सो उनको बाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै । संशय कहा है सो कहै हैं सायर जो है बिबेकसागर सो जरिजाइ है औ नाना शरीर जे

बन हैं ते लाय देइ हैं अर्थात् गुरुवनकी बाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवनको उपदेश कियो तब उनको सबको साहबको विवेकजरिजि-गयो औरैऔरे में लगिगये विवेक करिकै साहबको ज्ञानजो द्वैबेको रहै सो न भयो तब संसार समुद्रमें मच्छ जोहै काल सो अहेर खैलै है अर्थात् जीवनको खाइ है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना को यहि ज्ञानहि बूझै ।
बिनु पंखे उड़ि जाहि अकाशै जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, यह संसार अद्भुतहै औ ब्रह्म अद्भुत है इन दूनोंको ज्ञान जिनको है कि, ये धोखा है ऐसो को है ? अर्थात् कोई नहींहै परन्तु जो-कोई बिरला बूझनवारो होइ औ मन माया है दोनों धोखा हैं येई तहैं उड़ै हैं नाना पदार्थनको स्मरण होइहै नाना योनि पावैहै संसारमें तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही को द्वैरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़ि कहें निकसिकै साहबके यहां पहुंचै जाइ जो कहो बिना पखना कैसे उड़ि-जाय । सो यहां उपासना दुइप्रकारकी हैं एक बांदर कैसो बच्चा भजन करैहै कि, बांदरको बच्चा अपनी माताको आपही धरे रहै है सो यहजीव नाना प्रका रकें शास्त्रादिकनते विचार करिकै औ असांच मत खंडन करिकै आपही अपने साहबको धरे रहै है भ्रम में नहीं परै है । औ दूसरी उपासना विलारीके बच्चाकीसीहै बिलारीको बच्चा और सबकी आशा तोरे माताकी आशा किये रहैहै सो वह विलारी अपने बच्चाको जहां सुपास देखै है तहां आपही उठाइ लैजाइहै । तैसे यह जीव वेद शास्त्रको छोड़िकै न काहूके मतके खंडन करिबेकी सामर्थ्य है न अपने मतके मंडन करिबेकी सामर्थ्यहै साहबको जानै है कि, मैं साहब का हौं दूसरो मत सुनतही नहीं है सो जब सब पक्ष को छोड़िकै साहब को द्वैरह्यो, तब याको साहबही हंसस्वरूप दैकै अपने लोकको उठाइ लैजाइहै ॥ ५ ॥

इति बावनवां शब्द समाप्त ।

अथ तिरग्न्यां शब्द ॥ ५३ ॥

गुरुमुख ।

वह विरवा चीन्है जो कोई जरा मरण रहितै तन होई ॥ १ ॥
 विरवा एक सकल संसारा पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥ २ ॥
 मध्यके डार चारि फल लागा शाखा पत्र गनत को वागा ॥ ३ ॥
 वेलि एक त्रिभुवन लपटानी वाँधे ते छूटिहि नहिं प्रानी ॥ ४ ॥
 कह कवीर हम जात पुकारा पण्डित होय सो करै बिचारा ५

वह विरवा चीन्है जो कोई जरा मरण रहितै तन होई ॥ १ ॥

जो विरवाको आगे वर्णन करै हैं ताको जो कोई चीन्है औ असार मानि
 लेइ औ सार जो साहब हैं तिनको जानै सो पार्षद स्वरूप द्वै जाइ औ जन्म मर-
 णत रहित द्वै जाइ ॥ १ ॥

विरवा एक सकल संसारा । पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥ २ ॥

मध्यके डार चारि फल लागा शाखा पत्र गनत को वागा ॥ ३ ॥

सो एक विरवा सब संसार है तौने विरवाको पेड़ कहे मूल विराट् पुरुष है
 तौनेमें ब्रह्मा विष्णु महेश तीनि डार फूट्यो है ॥ २ ॥ सो मध्यकी डार जे
 विष्णु हैं तिनमें अर्थ धर्म काम मोक्ष ये चारि फल लागत भये चारि फलके देवै-
 या विष्णु ह । सो जो कोई विष्णुका उपासक होइ सो चारों फलके पावै है ।
 डारन जो डरैया कहै हैं ते शाखा कहावै हैं । सो ब्रह्मा विष्णु महेश जे तीनि
 डारै हैं तिनते नाना देव नाना मत भये । तेई शाखा हैं । तिनको को गनत वा-
 गा है अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो औ सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी जे
 नाना वासना होत भई तेई पत्र हैं ॥ ३ ॥

वेलि एक त्रिभुवन लपटानी वाँधे ते छूटिहि नहिं प्रानी ॥ ४ ॥

कह कवीर हम जात पुकारा पण्डित होय सो करै बिचारा ५ ॥

वृक्षमें बेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्षमें आशारूपी बेलि लपटि गई है तामें बँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ॥ ४ ॥ साहब कहै हैं कि हे कबीर ! जो जीव तोको संसार जातमें हम पुकाराहै रामनामको सो पंडित होइ है विचार करिलेइ अर्थात् असार जो रामनाममें जगत् मुख अर्थ ताको छाड़ि राममें सार जो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पास आवै ॥ ५ ॥

इति तिरपनवां शब्द समाप्त ।

अथ चौवनवां शब्द ॥ ५४ ॥

सोईके सँग सासुर आई ।

संग न सूती स्वाद न मानी गयो यौवन सपनेकी नाई ॥ १ ॥
जना चारि मिलि लगन शोचाई जना पांचमिलि मंडपछाई ।
सखी सहेली मंगल गावै दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई ॥ २ ॥
नाना रूप परी मन भांवरि गांठि जोरि भई पति आई ।
अरघे दैदौ चली सुवासिनि चौकहि रांड़ भई सँग साई ॥ ३ ॥
भयो विवाह चली विन दूलह वाट जान समधी समुझाई ।
कह कबीर हम गौने जैवै तरव कंतलै तूर वजाई ॥ ४ ॥

यह जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकी शक्ति है सो जौनी भांतिते याको आपने स्वरूपको ज्ञान रह्यो है औ फिरि भयो है सो लिखै हैं ॥

साईके सँग सासुर आई ।

सङ्ग न सूती स्वाद न मानी गयो यौवन सपने की नाई १

परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाश जो ब्रह्म है ताको साई मानिकै ताही सङ्ग सासुर जो यह संसार है तहां आई । सासुर संसार कांहेते ठहर्यो कि, अहंब्रह्मबुद्धि संसारहीमें होइहै । जब संसारकेबहिरे रहै है तबतो याको सुधिही नहीं रहैहै । जब महाप्रलय है जाइहै तब सत् जो है साहबके लोकको

प्रकाश ब्रह्म ताहीमें सब रहे हैं । जब उत्पत्तिको समय भयो सुरति पायो तब आपनेको लोकप्रकाश ब्रह्म मान्यो तब मनभयो । मनते इच्छाभई । तब यह ब्रह्मकहे हैं कि, मैं जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप करि हौं। सो जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप जीवात्माके करत भयो याहीते याको साँई मानिकै चित् शक्ति जीव सासुर जो संसार तहां आवत भयो । सो वह ब्रह्मको खसम मानि लेबो धोखा-है काहेते कि, वह तौ निराकारहै सो वाके संग न सोवत भई, न स्वाद पावत भई नानारूप धरत भई तेई यौवन है जे सपने की नाई जात भये सो जौनी भांति चित् शक्ति जीव साँईके संग ससुरेमें आई सो लिखेहै अपनेको ब्रह्म मान्यो तब संसार की उत्पत्ति भई तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दमंगलको ॥ (सो उत्पत्ति बीजहै, शून्य प्रलय कर ठाउँ । तन छूटे कह जाइहौ, अकह बसायो गाउँ ॥ १॥)

**जना चार मिलि लगनशोचाई जना पांच मिलि मंडप छाई।
सखी सहेली मंगल गावैं। दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई॥२॥**

जना चार कहे मन बुद्धि चित्त अहंकार ये जे अंतःकरण चतुष्टय हैं तेई मिलिकै लग्न शोचावतभे अर्थात् जीवको शरीरकी लग्न लगावतभे । औ जना पांच कहे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश ये पांचों तत्त्व मिलिकै मंडप छावत भये अर्थात् शरीर बनावत भये । औ सखी सहेली जे हैं पांच कर्मेन्द्रिय ते मंगल गावैंहैं गाइबो कहाहै कि, रूप रस गंध स्पर्श शब्द ये विषयको लेनलगे । और नाना प्रकारकी जे पुण्य पापकी वृत्तिहैं तेई कुवारी कन्याहैं सो नाना प्रकारके पुण्य पाप कराइ-कै दुःख सुख की हरदी जीवरूप दुलहिनिके माथे चढ़ावैं हैं ॥ २ ॥

**नाना रूप परी मन भांवरि गांठी जोरि भई पति आई ।
अरघै दैदैं चली सुवासिनि चौकहि रांड़ भई संग साँई॥३॥**

औ नानारूप कहे नाना भांति की जे वासनाहैं तिनहीकी याके मनमें भांवरि परिगई है । औ चित् अचित्की गांठी परिगई ताहीते ब्रह्मको पति आई कहे पति आइ गई है अर्थात् ब्रह्मको पति मानिलियो है कि, वह ब्रह्म मैहीं हौं । हेतु यह है

कि, जब विवाहहै जाइहै तब स्त्री अर्द्धांगी हैजाइहै औ सुवासिनि वे कहावैहैं जे या कुलकी कन्या अनत बिवाही रहैहैं सो जब संसारमें जीव ब्रह्म फांसमें फँसिगयो तब सुवासिनि जे हैं साहबके जैन्या तिनको ब्रह्मसों विवाह नहीं भयो ते अरब दैकै कहे उपदेश करिकै वाको लैचले सो यद्यपि याको चौका बनोहीहै मड़ये के तर बैठीही है अर्थात् यद्यपि संसारमें शरीर धारण किये है परंतु तहैं राँड़ हैगई ब्रह्मको पतिमानि राख्योहै । सो बिचारा मरिगयो अर्थात् वाको धोखा-समुझि लियो इहां राँड़ हैबो कहिआये औ सांच साईको संग बनेहै यह जो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनेहै वह अहंब्रह्मको बिचार मिटिगयो ॥ ३ ॥

**भयो विवाह चलीविनु दूलह बाट जात समधी समुझाई ३
कह कबीर हम गौने जैवे तरव कंतलै तूर बजाई ॥ ४ ॥**

सोइ सत रहते विवाह भयो कहे इस तरहते संसारी भयो । औ पुनि बिन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्ति हैकै चित्तशक्ति जीव साहबके पास जाइबेकी गैल लियो सो वह बाट जातमें समधी जो है शुद्ध समष्टि जीव सो याको समुझावत भयो कि, जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध हो । अर्थात् जब जीव साहबके लोक प्रकाशको बेधिकै साहबके लोकको चल्यो तब यह समुझत भयो कि, जैसे ये शुद्ध रहे हैं तैसे हमहूं शुद्ध रहेहैं, यह बीचहीमें धोखा भयो है। उनको देखिकै यह ज्ञान भयो यही उनको समुझाइबो है । सो कबीर जो है कायाको बीर जीव सो कहैहै कि, मन बचनके परे जो साहब के ऊपर दूसरो साहब नहीं है जासों हमारो विवाह हैबेको नहीं है । वह हमारो सदा को कंत है । तहां हम गवनजाइहै अर्थात् तहांको हम गवन करेंगे । अरु वाही कंतको लैकै कहे पाइकै तरिजाब । औरे कंतको लैकै नतरेंगे । औ तहैं परम मुक्ति रूपी तूर बजावेंगे । अर्थात् और ईश्वरनमें लागे औ आपनेको ब्रह्म माने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार औ सब उपासना औ ब्रह्म हैजाइबो ये सब तूरिकै साहबके पास जाइकै अर्थात् डंकादैकै जाइगो ॥ ४ ॥

अथ पचपनवां शब्द ॥ ५५ ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई ॥ १ ॥

सिंह शार्दूल यक हर जोतिनि सीकस वोइनि धाना ।

वनकी भलुइया चाखुर फेरै छागर भये किसाना ॥ २ ॥

कागा कपरा धोवन लागे बकुला किररै दांता ।

माछी मूड़ मुड़ावन लागी हमहूं जाव वराता ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होतहै मंगल गावै गाई ।

वनके रोझ धै दाइज दीन्हो गोह लोकंदै जाई ॥ ४ ॥

कहै कवीर सुनोहो संतो जो यह पद अर्थावै ।

सोई पाँडित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

जिनको सद्गुरु मिले तिनको या भांतिउद्धार है गयो औ जिनको सद्गुरु नहीं मिले जे सद्गुरुको नहीं मान्यो तिनको गुरुवा लोग और और मतमें लगाइदेइ हैं वे साहब को नहीं जानै हैं सो कवीरजी कहै हैं ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई ॥ १ ॥

साहब कहते हैं कि, हे भाई! हेसंतौ! ढाढ़सदेखो यहजीव मेरो अंशहै सो मोको नहीं जानै है और औरमें लागि कै खराब होइ है नाना दुःखसहै है मोको जानिकै दुःख नहीं त्यागकरै है बड़ो ढाढ़सी है । सो हे भाइउ ! ढाढ़स करिकै जोनेके लिये जाभें यह लागै है सो ब्रह्म अकथ कथा है कहिवे लायक नहीं है । वह ब्रह्म विचार झूठा है वहां कछु प्राप्ति नहीं है सो अकथ कथा कहै हैं ॥ १ ॥

सिंहशार्दूल यकहरजोनिनि सीकस वोइनि धाना ।

वनकी भलुइया चाखुरफेरै छागरभयेकिसाना ॥ २ ॥

यहां सिंह जो है जीव शार्दूल जो है मन येई दोऊ बैल हैं । कर्म जो हैं सोई हर संसार सीकस भूमि है कहे ऊपर भूमि है । अजा कहावै है माया सोई

छेरी ताको पति बोकरा है सो छागर कहावै । तेई माया में लपटे किसान गुरु-
वा लोग सो ज्ञातिके उपदेश रूप धान बोवत भये । औ तौने नवानावके जे
भुलइया कहे भुलावनहारे पण्डित तेई चाखुर फेरें कहे निरावै हैं अर्थात् ताते
वृत्ति करिकै वेद जो साहब को बतवै है ताको अर्थ फेरिडारै हैं ॥ २ ॥

कागा कपरा धोवन लागे बकुला किररै दांता ।

माछी मूड़ मुड़ावन लागी हमहूं जाब बराता ॥ ३ ॥

नाना पाखंड मतमें परे ऐसे जे हैं, मलिन पाखंडी जीव तेई काग हैं । ते
कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करै हैं कि, हमारेमत में आवो तौ हम
तुम्हारे अंतःकरण शुद्ध करिदेई ! औरूपकपक्षमें जब बरात जाइहै तब सबुनी
करिकै लोग जाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो । अरु जिनके अंतःकरण-
रूपी धोवनको वे उपदेशकियो तेई बकुलाभये कहे ऊपरते तो वेष बनाये चन्दन
टोपी दिये हैं औ अंतःकरण मलिनहै बिषयमें चित्तलगाये रहै हैं । जहां कोई
संत मत कहन लगै है ताको खण्डन करिडारै हैं । दांत किररै हैं कहे कोप
करै हैं जैसे बकुला ऊपरते तोस्वच्छ है औ नदी के तीर मछरी खाइबेको बैठे
है । भीतर बासना मलीन भरी है; हंस आवै हे तिनको डेरवाय कै बैठन नहीं
देइहै दांतकिररै है ! तैसे बरात जब चलै है तब कारिंदा कामकाजी सफेद कपरा
पहिरि दांत किररै हैं कि, यह कामकरो वह कामकरो कहा बैठेहौ यह रिस करै ।
औ माछी कहे जो माया ते क्षीण द्वैबेको बिचारकरै हैं, ते माछी कहवावै हैं ।
अर्थात् मुमुक्षू ते नाना मतके जे गुरुवा लोग हैं तिनके यहां मूड़ मुड़ावै हैं कि,
हमहूं बरात जाब कहे हमहूं मुक्त होब । सो वहां मुक्तितो पायो नहि पर गुरु
वनकी मीठी बाणी में परिकै आपने को ब्रह्म मानत भये तेहिते स्वस्वरूपको ज्ञान
न रहिगयो मायामें फँसिगये औ रूपक पक्षमें दुलहा के संगती जे हैं ते बार
बनवावै हैं ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होत है मंगल गावै गाई ।

वनके रोज़ धै दाइज दीन्हो गोह लोकंदै जाई ॥ ४ ॥

अब व्याहको रूपक कहे हैं । गुरुवा लोग जे हैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करन वारे ते छेरी जो है माया ताको औ बाध जो है जीव ताको व्याह होतहै अर्थात् जीवको मायामें डारिदेइ हैं । औ छेरी जो है माया ताको बाध जो है जीव सो खाइलेनवारो है अर्थात् जो जीव आपने स्वरूपको जानै तौ मायाको नाश करिदेई । अरु तहांगायरूपी जो गायत्री है सो मंगल गावै है अर्थात् सब जीवको कर्त्तव्य गायत्री गावै है वेद गायत्री ते कह्यो है औ बन कहे वाणीको रोझ जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हो । यहां रोझको प्रणव काहेते कह्यो कि, रोझ गवे कहावै हैं काहेते कि, गोक्री सदृश होइ है । सो गैया जो है गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवही ते निकसी है । प्रणव ब्रह्म है ताको दाइज दीन्हो कहे ब्रह्म मेंहीं हैं । यही प्रणवको अर्थ समुझाइ दीन्हो । कन्याकेसाथ जो डोलहाई जाइ हैं तेलोकंदी कहावै हैं सो यह लोकोक्ति है मिथिलाकैती कहै हैं सो गोह जो है सो लोकंदै जाइ है कहे डोलाके साथ जाइ है । वहां गोह कहे गो जो इंद्रिय हैं जब जीव मायामें लपटै तब और चंचल हैजाइ है नाना शरीररूप डोलामें चढ़ा जीव ताहीके साथ साथ जाइ है ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनौ हो संतो ! जो यह पद अर्थवै ।

सोई पंडित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, यह साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे संतौ ! तुम सुनौ इस पदमें जे भ्रम वर्णन कियो तिनको छोड़िके यह पदको अर्थ सांच जो साहब ताको जानै असांच को छोड़ै सोई पंडित है सोई ज्ञाता है सोई भक्त है ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी साहब की उक्तिमें कहैहैं गुरुमुख ।

अथ छप्पनवां शब्द ॥ ५६ ॥

नरको नहिं परतीति हमारी ।

झूठे बनिज कियो झूठे सन पूजी सबै मिलि हारी ॥ १ ॥

षट् दर्शन मिलि पंथ चलायो तिर देवा अधिकारी ।

राजा देश बड़ो परपंची रहअत रहत उजारी ॥ २ ॥

इतते उत औ उतते इत रहु यमकी सांट सँवारी ।

ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर अपने खुशी परारी ॥ ३ ॥

यहै पेठ उत्पत्ति प्रलय को विषया सबै विकारी ।

जैसे श्वान अपावन राजी त्यों लागी संसारी ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना मानो वचन हमारो ।

अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारो ॥ ५ ॥

नरको नहिं परतीति हमारी ।

झूठे बनिज कियो झूठे सन पूजी सबै मिलि हारी ॥ १ ॥

सबते गुरु परम परपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि, नरको हमारी परतीति नहीं है सब लोग झूठेसों झूठी बनिज करत भये । कहे झूठे ब्रह्ममें जें लगावै हैं ऐसे जे गुरुवा लोगहैं सौदागर तिनसा झूठी बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्मम लगावै हैं अर्थात् जो वे उपदेश कियो कि, “तुमहीं ब्रह्महौ” सो झूठा है तासों बनिज करिकै पूजी सब हारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलि गयो । कौन ज्ञान भूलिगये कि, यह आत्मा तो मेरो सदाको दास है बद्धहूमें मुक्तहूमें है ताम प्रमाण॥ “दासभूताः स्वतः सर्वे ह्यात्मानः परमात्मनः । नान्यथा लक्षणन्तेषां बंधे मोक्षे तथैव च” ॥ इति पद्मपुराणे ॥ १ ॥ जो कहौ भुलवाइ कौन दियो ? सो आगे इसका समाधान करते हैं ।

षट् दर्शन मिलि पंथ चलायो तिर देवा अधिकारी ।

राजा देश बड़ो परपंची रइअत रहत उजारी ॥ २ ॥

औ षट् दर्शन जे हैं ते मिलिकै नानापंथ चलावत भये । कोई योगीद्विकै योग धारण करन लग्यो, औ कोई अनुभव कथिकै शून्य ज्ञान पंथ चलायो, अरु कोई नाना प्रकार के कर्म करने लगे, औ कोई नाना उपासना करने लग्यो, औ कोई मैं ब्रह्महैं यह कहने लग्यो, औ कोई कर्त्ता न्यारा है यह कहने लग्यो औ कोई मतछोड़िकै आत्मामें स्थित भयो । या ब्रह्मांडमे ब्रह्मा विष्णु महेश अधिकारी हैं ते सब मतनके अधिष्ठाता हैं या हेतुते सत रज तमते कोई नहीं छूट्यो । औ ओई राजाहै जे हैं ब्रह्मा विष्णु महेश आ उनको देश जोहै सत रज तम सो बड़ो परपंची है याहीते रइअत जे और सब जीवहैं तिनके अन्तःकरण उजारि रहे हैं जो है भक्ति मोर, जो है ज्ञान मोर, सो उनको अन्तःकरण में नहीं होन पावै है ॥ २ ॥

इतते उत रहु उतते इत रहु यमकी सांठ सँवारी ।

ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर अपने खुशी परारी ॥ ३ ॥

तेहिते इत उत कहे कहुं स्वर्ग जाइहै, कहुं नरक जाइ है, कहुं आपने उपास्य देवतनके लोक जाइ फिरि इहां आयकै उनहींकी उपासना करै है औ पुनि जब उपासना भूलै तब पुनि पापकरिकै नरक जाइहैं निनके वास्ते यमकी सांठ सँवारी कहे यमके दंडते नहीं बचै है । जौने कपि कहे बाँदर को बाजीगर आपनी डोरि ते बाँधै है औ वह बाँदर बाजीगरके बश द्वैगयो तब आपनी खुशी ते बाँके बंधनमें परो रहै है नाना नाच नाचै है प्रथम चित् शक्ति में जगत्को कारण रूप बनो रह्यो याही भांति सब जीव माया ब्रह्मके बश द्वैगयो, तब वही बंधन में अपनीखुशी ते परे रहे हैं; वही ब्रह्मको ज्ञान करे हैं मोको नहीं जानेहैं ॥ ३ ॥

यहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको विषया सबै विकारी ।

जैसे श्वान अपावन राजी त्यों लागे संसारी ॥ ४ ॥

यहै माया ब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै । अरु संसारमें जे संपूर्ण विषय हैं तेई विकार हैं याते मोहिते व्यतिरिक्त जे पदार्थ संसार में ज्ञान योग वैराग्य

भक्ति आदिक जेहैं ते सब विषय हैं या हेतुते किं, जामें जामें मन लगैहै ते सब मनके विषय हैं । ते सब बिकारई हैं औ जो “यहै पेट उत्पत्ति प्रलयको सौदा सबै बिकारी” ऐसो पाठ होइ तौ यह अर्थ पेट नाऊं हाटको यह देश भाषाहैं सो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनके उत्पत्ति प्रलय को माया ब्रह्म दोनों तरफकी पेट कहे बजारहैं । सो यह जगत शहरहै विषयरूपी सौदा जोहै ताके संसारी जीव लग-बारे हैं सो जैसे श्वान (कुत्ता) सो अपावन जो हाड़है ताको चाटैहै तब वोही-के दांतते लोहू निकसैहै सो हाड में लगैहै सोऊ चाटतै जायहै, वही में राजी रहैहै; तैसे यह आत्मा अपने भ्रममें पराहै वहीको भ्रम नाना विषयमें सुखरूप देखो परैहै । सो विषयतो जड़है विषय में सुख नहीं है याहीको सुख विषयन में जाइरहैहै आपनोई सुख विषयमें पावै है अरु मानै है कि, मैं विषयको सुख-प्राऊं हौं अरुपर वह ब्रह्मको अनुभव कियो तहां वाके आत्मैको सुख मिलै है; जानै यह है कि, मोको ब्रह्मानन्द भयोहै । काहेते कि, जब भर अहं ब्रह्म बुद्धि रहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइ है जब सबको निराकरण द्वै गयो एक आत्मा ही को ज्ञान रहिगयो सो ब्रह्मानन्द रूप होइहै तेहिते वह ब्रह्मानन्द आत्माहीकों आनन्दहै सो जैसे श्वान आपनेही लोहूके स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यही आपनो सुख विषय ब्रह्ममें पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लगी रह्यो है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना मानो वचन हमारो ।

अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारो ५

सो हे कबीर कायाके बीर जीवो ! हम तुमसों यह अद्भुत ज्ञान कहैहैं हमारो वचन मानौ जो अपने घटमें सुरति सँभारो औ वह सुरति मोमें लगावों तौ अबहूं कहे माया ब्रह्ममें तुम परेहौ ताहूपर तुमको मैं कालते छोड़ायलेऊं अथवा अजहूं को भाव यह है कि, कालकी दाढ़ में तुम परिचुके हौ सो कालते तुमको छोड़ाइ लेऊंगो ॥ ५ ॥

इति छप्पनवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तावनवां शब्द ॥ ५७ ॥

ना हरि भजै न आदत छूटी ।

शब्द समुझि सुधारत नाही अँधरे भये हियो की फूटी ॥१॥

पानी माहँ पषानकी रेखा ठोंकत उठै भभूका ।

सहस घड़ा नितही जल ढारै फिरि सूखेका सूखा ॥ २ ॥

सेते सेते सेत अंग भो शयन बढ़ी अधिकाई ।

जो सनिपात रोगि अहि मारै सो साधुन सिधि पाई ॥३॥

अनहद कहत कहत जग विनशे अनहद सृष्टि समानी ।

निकट पयाना यमपुर धावै बोलहि एकहि बानी ॥ ४ ॥

सतरु मिले बहुत सुख लहिया सतगुरु शब्द सुधारै ।

कह कवीर सो सदा सुखारी जो यहि पदहि विचारै ॥५॥

ना हरि भजै न आदत छूटी ।

शब्दै समुझि सुधारत नाही अँधरे भये हियो की फूटी ॥१॥

ना तैं हरि भजै है अरु ना तेरी आवागमनकी आदत कहे स्वभाव छूट्यो । यह अर्थ साहबके कहे शब्दको सुनिकै औ विचारिकै जो आपनो नहीं सुधारैहै सो काहे नहीं सुधारैहै । काहेते कि, साहब कहतई जोइहै कि, जो मो को अबहूँ जीव जानै तौ कालते छोड़ाय छेउँ । ताते आंधर भये हियोकी तिहारी फूटिगई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुँची इन्द्रियन. जबाब दियो तामें प्रमाण । “ नेह गये नैना गये, गये दांत औ कान । प्राण छरीदा रहिगये, तेऊ कहत हैं जान ” ॥ अबहूँ तौ जानौ भजन करिकै छूटिजाउ ॥ १ ॥

पानीमाहँ पषानकी रेखा ठोंकत उठै भभूका ॥

सहस घड़ा नितही जल ढारै फिरि सूखेका सूखा ॥ २ ॥

हे जीवौ ! तुम बड़े जड़ हो जैसे पानीमें पाषाणकी रेखा कहे छोटी शर्बती पथरी डारि रखै तो और भभूका आगीकों उठनलगे है । चकमक में ठोंकेते तैसे जस जस साधुलोग उपदेश करत जाइहैं तस तस साहब को भजन तौ नहीं करोहौ और काम क्रोध आदिक जे आगी हैं ते तुमको जोर करत जाइ हैं । अर्थात् जब उपदेश करन लगै है तब अधिक रिस करन लगौहौ, जैसे पाषाणमें नित हजारन बड़ा जल डारै पै पाषाण भीतर सूखै रहै है तैसे केतऊ ज्ञान उपदेश करै परन्तु हे जीवौ । तुम जड़के जड़ही बने रहौहौ ॥२॥

सेते सेते सेत अंगभो शयन बढी अधिकाई ।

जो सनिपात रोगिअहि मारै सो साधुन सिधि पाई ॥३॥

सेत सेत जो ब्रह्म है तामें लगे लगे तुम भीतर बाहर सपेद द्वैगये अर्थात् बुढ़ाय गये ऊपरौ के रोमा बुढ़ाय गये । ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनों स्वरूप भूलिगयो तब शयनमें कहे सो वन अधिकाई बढी कहे अधिक सोव-नलगे अर्थात् समाधिकरनलगे । अपनीआत्माको ज्ञान औ साहबको ज्ञान औ जगत् भूलिगयो पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरीदशाद्वैगई । सोई लक्षण सन्निपातमें होइहै सो तोको सन्निपात भयो है । सन्निपातरोंग याको मारैहै औ उनको आत्माको ज्ञान भूलि जाइहै । ब्रह्म द्वैवो साधुलोग सिद्धि पाईहैं कि, हम सिद्धहैं यह मानि ले ही आत्माको ब्रह्म द्वैवो असिद्धहै सो आगे कहै हैं । “ सीते सीते पाठहोइ तौ ज्ञान करत करत कि, संसार ताप हमारो छूटि जाइ शीत अंग द्वैगये । कहे सन्निपातकी अधिकाई तुम्हारे अङ्गमें बढ़िआई अर्थात् सन्निपात में खबरि देह की भूलि जाइहै । औ रोगि-यनका मारै है सोई साधुलोग सिद्धिपाई है कि, हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्ध द्वैगये ॥ ३ ॥

अनहद कहत कहत जग विनशे अनहद सृष्टि समानी ॥

निकट पयाना यमपुर धावै बोलहि एकै बानी ॥ ४ ॥

वह जो ब्रह्म है ताकी हृद नहीं है ताको अनहद कहत कहत कहे नेति नेति कहत २ संसार विनशि गयो । अनहद जो ब्रह्म है तामें सृष्टिके सब

लोग समाइगये औ सृष्टिमें वह अनहदब्रह्म समाइ गयो सो मानत तो यहैहे कि, सब ब्रह्महीमें समाइहै कहे ब्रह्म है जाइहै परन्तु निकट पयाना यमपुर-हीको धाइबो है अर्थात् आपनेको ब्रह्ममानिके ब्रह्मनहीं होइहै यमपुरही को चलेजायँहैं तेऊ एकही वाणी बोलैहैं कि, एक ब्रह्मही है दूसरा नहीं है । तामें धुनि यहैहे कि, अरे मूढ़ एकतो ब्रह्म है नरकै कौन जायहै ॥ ४ ॥

सतगुरु मिले बहुत सुख लहिया सतगुरु शब्द सुधारै ।
कह कवीर सो सदा सुखारी जो यहि पदहि विचारै ॥५॥

हे जीवौ! तुमको सतगुरु मिलै तौ वे राम नाम रूपी पदमें साहब मुख अर्थ बताइ देइ । तौनेको जोतुम विचारौ तौ बहुत सुख पावो श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थ अर्थ बताइकै गुरुवालोगन बिगारि डारयो है ते जब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थ अर्थ खंडन करैकै वे वेद शास्त्रादिकन के शब्दके तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहब मुख अर्थ बताइदेइहैं । सो जो वा शब्द जो रामनाम ताको जगत् मुख अर्थ बताइ देइहै सो जो कोई राम नामरूपी पद में साहब मुख अर्थ विचार सो सदा सुखी रहैहै ॥ ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्त ।

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥ ५८ ॥

नर हर लागी दव विकार विन ईधन मिलै न बुझावन हारा ।
मैं जानों तोहीते व्यापै जरत सकल संसारा ॥ १ ॥
पानी माहँ अगिनिको अंकुर मिल न बुझावन पानी ।
एक न जरै जरै नौ नारी युक्ति न काहु जानी ॥ २ ॥
शहर जरै पहरू सुख सोवै कहै कुशल घर मेरा ।
कुरिया जरै वस्तु निज उवै विकल राम रँग तेरा ॥ ३ ॥
कुविजा पुरुष गले यक लागी पूजि न मनकी साधा ।
करत विचार जन्म गो खीसा ई तन रहल असाधा ॥४॥

जानि बूझि जो कपट करतहै तेहि अस मंद न कोई ।

कह कबीर सब जरी रामकी जोते और न कोई ॥ ५ ॥

नर हर लागी दब विकार बिन ईधन मिलै न बुझावन हारा ।

मैं जानों तोहीं ते व्यापै जरत सकल संसारा ॥ १ ॥

हे नरहर दबलागी कहे तेरे स्वरूप की हरनवारी मायारूपी दवारि लगी है । तैं कैसाहै ? विकार बिन । तौ माया मोको काहेको लगीहै ? तौ बिना ईधन को बुझावनवारो तोको नहीं मिल्यो, जो तोको समुझाइ देई कि, तैं बिन विकारको है जो मिलैहै सो नाना उपासना नाना मत रूप ईधन डानर बारों मिलैहै । साहबको ज्ञान रूप जल डारै माया रूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानौ हों या मायारूपी दवारि बोहीते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोहीं तें भये ताहीमें सब संसार जरो जाइहै ॥ १ ॥

पानी माहँ अग्निको अंकुर मिलन बुझावन पानी ।

एक न जैरै जैरै नौ नारी युक्ति न काहू जानी ॥ २ ॥

सो वह मायारूपी अग्निको अंकुर पानीमें है कहे नाना वेद शास्त्रादिक बाणीमें है ते वेद शास्त्रादिकनके अर्थको बदलिकै साहबको छिपाइकै मायारूपी अग्निको प्रकट कियो औ तोकोऔरे औरेंमें लगाइ दियो । अर्थात् वे सब मतनको फल ब्रह्मै जाइवो बताइ दियो । वह अग्निको बुझावन को वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थहैं जल सो नहीं मिलै है । अथवा जे वेद शास्त्रादिकन के सांच अर्थ मुनि जन लोग बनाइ गये हैं, बशिष्ठ संहिता, शुक संहिता हनुमत्संहिता, अगस्त्यसंहिता, सदाशिवसंहिता, मुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ औ वेदशिरोपनिषद् विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मतके कहनवारेते जल नहीं मिलैहै । सो जब वह आगि लगी तब अद्वैत करिकै बहुत समुझावैहै परन्तु एक वह आत्मा नहीं जैरै औ साहबमें जे नवधा भक्तिहैं ते नव नारी हैं ते जैरैहैं सोयह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहीं होइहै औ साहब को जानै तौ वे नवधा भक्ति न जैरै ॥ २ ॥

**शहर जरे पहरू सुख सोवै कहै कुशल घर मेरा ।
कुरिया जरै वस्तु निज उवरै विकल राम रँगतेरा ॥ ३ ॥**

औ शहर कहै साहबके मिलिबे के जेते ज्ञानहैं जीवात्मा के ते जरे जाइहैं औ पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवै है कहे साहबके बतावनवारें संतनहीं दुरैहैं जे आपने बाणीरूप मलसों माया ब्रह्म रूपी आगी बुतावै । सोवतै रहैहै औ यह कहैहै कि, मैं सच्चिदानन्द हौं, सो मेरोवर जोहै सच्चिदानन्द सो कुशलहै यह नहीं जानैहै कि, ये सब तो जरिही गये सो मैंहु जरिजाउँगो। एक माया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजायगी । वही आगिमें तेरी कुरिया जोहै स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजाइगी । अर्थात् जब ब्रह्मास्मि में सुषुप्ति होयगी तब मैं सच्चिदानन्द रूपहीं यहू ज्ञान न रहिजाइगो । याही ते तैं विकल है सो यह करु जाते तेरी वस्तुजो है साहब में नवधा भक्ति सो उवरै औरै औरै रंगमें लगिबो तेरो रंग नहीं है श्रीरामचन्द्रके रंगमें रँग यही तेरो रंग है ॥ ३ ॥

**कुबिजा पुरुष गले यक लागी पूजि न मनकी साधा ।
करत विचार जन्मगो खीसा ई तन रहल असाधा ॥ ४ ॥**

कुबिजा पुरुष कहे अंगभंग पुरुष जो वह ब्रह्म है नपुंसक ताको एकमानिकै । कि, एक ब्रह्मही है ताकेगले में, हे साहबकी जीवरूपाशक्ति ! तैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषकेसंग स्त्रीकी साधनहीं पूजै है तैसे वह ब्रह्म में लग तुम्हारी साध नहीं पूजै है कहे वामें आनंद नहीं मिलैहै । वही ब्रह्मको विचार करत जन्म खास कहे वृथा जाइ है । तन कहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाध रहै है कहे साहबके मिलनको सुख नहीं पावै है ॥ ४ ॥

**जानि बूझि जो कपट करतहै तेहि अस मंद न कोई ।
कह कबीर सव नारि रामकी मोते और न होई ॥ ५ ॥**

सो जानि बूझिकै जे लोग कपट करै हैं कहे वह धोखा ब्रह्ममें लगै हैं तिन ऐसो मंद कहे मूढ कोई नहीं है । सो कबीरजी कहै हैं कि, जहांभर चित् शक्ति जीव हैं ते सब श्रीरामचन्द्रकी नारी हैं सो मैं जानौ हौं याते मोते और

पुरुष साहबै है सो जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़ि और पुरुष करै हैं ते छिनारि हैं सो जो छिनारि हैं तिनके ऊपर संसार रूपी मार परोई चाहै । तामें व्यंग्य यहै है कि, जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको पति मानैं हैं तेई माया ब्रह्माभिते बचै हैं ॥ ५ ॥

इति अष्टवनवां शब्द समाप्त ।

अथ उनसठवां शब्द ॥ ५९ ॥

माया महा ठगिनि हम जानी ।

तिरगुण फांस लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥

केशवके कमला है बैठी शिवके भवन भवानी ।

पंडाके मूरति है बैठी तीरथमें भइ पानी ॥ २ ॥

योगीके योगिनि है बैठी राजाके घर रानी ।

काहूके हीरा है बैठी काहूके कौड़ी कानी ॥ ३ ॥

भक्तनके भक्तिनि है बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी ।

कहै कबीर सुनो हो संतो यह सब अकथ कहानी ॥ ४ ॥

माया महा ठगिनि है हम जानी । यह माया माधुरी बानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवनको बांधिलियो । औ सबके घरमें नानारूप करिकै बैठी है; केशवके कमला है बैठी है, औ शिवके भवनभवानी है बैठी है, औ पंडाके मूरति है बैठी है, औ तीरथमें पानी है रही है, औ योगीके घरमें योगिनि है बैठी है, औ राजाके रानी है बैठी है, औ काहूके हीरा है बैठी है, औ काहूके कानी कौड़ी है बैठी है, औ ब्रह्माके ब्रह्मानी है बैठी है । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो ! सुनो यह सब मायाको चरित्र अकथ कहानी कहाँलैं वर्णन करैं यह माया सत् असत्ते विलक्षण है कहिबे लायक नहीं है अरु याको अंतनहीं है ॥ १-४ ॥

इति उनसठवां शब्द समाप्त ।

अथ साठवां शब्द ॥ ६० ॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतनहरिलीन्हा ॥१॥

जीवन ऐसो सपना जैसो जीवन सपन समाना ।

शब्द गुरु उपदेश दियो तैं छांड़्यो परम निधाना ॥ २ ॥

ज्योतिहि देखि पतंग हुलसै पशु नहिं पेखै आगी ।

काम क्रोध नर मुग्ध परेहैं कनक कामिनी लागी ॥३॥

सय्यद शेख कितावें निरखै पंडित शास्त्र विचारै ।

सद्गुरुके उपदेश विना तुम जानिकै जीवहि मारै ॥ ४ ॥

करौ विचार विकार परिहरौ तरन तारनै सोई ।

कहकवीर भगवंत भजन करु द्वितिया और न कोई ॥५॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतन हरिलीन्हा ॥१॥

पूर्व जो वर्णन करिआये सो माया जीवको मोहित करत भई । सांचमें असांचकी बुद्धि होय है या मोहको लक्षण है । सो यह आत्मा तो शरीरनते भिन्न सांच है ताको शरीरकी बुद्धि भई कि, शरीर मैं हौं, मनादिक मेरे हैं । यह असांच बुद्धि भई याहीते मायामें परिगयो। तब याको माया मोहते मोहित करिकै परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिन को ज्ञान रतन जो रहै कि, मैं उनको अंशहौं, वे बड़े रतन हैं, मैं कनीहौं अल्पज्ञ हौं परन्तु जाति उन हींकी हौं, वे विभु आनन्द हैं जैसे उनमें मनादिक नहीं हैं तैसे मैं जो उनको जानौं तो मूढ़ मनादिक नहीं हौं यह जीवको ज्ञान रख माया हरिलीन्हा ॥ १ ॥

जीवन ऐसो सपना जैसो जीवन सपन समाना ।

शब्द गुरु उपदेश दियो तैं छांड़्यो परम निधाना ॥२॥

यह जीवन ऐसो है स्वप्न है यहि शरीरते दूसरे शरीरमें गयो तब यह शरीर स्वप्न ब्रह्म गयो औ वह जीव स्वप्न जे संपूर्ण शरीर हैं तिनमें नहीं समान्ये

वहि शरीर ते भिन्न है काहेते मरिबों जीबो शरीरको धर्म है, सो अपने स्वरूपको नहीं जानै है स्वप्न समान जे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियो है । गुरु कहे सबते गुरुपरमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं ते शब्द जो रामनाम ताकों उपदेश दियो कि, तैं मेरो है सो मेरे पास आउ सो तौने शब्दमें परमनिधान कहे तिनके रहिबेको पात्र जो साहब मुख अर्थ है ताको शब्द छोड़ि दियो औ संसार मुख अर्थ करिकै संसारी द्वैगयो ॥ २ ॥

ज्योतिहि देखि पतंग हूलसै पशु नहिं पेखै आगी ।

कामक्रोध नर मुगुध परेहैं कनक कामिनीलागी ॥३॥

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतंग हूलसै कहे ज्योतिमें मिलिबेको जाय है परंतु वही पशु जो है अज्ञानी पतंग सो नहीं देखै है कि, या आगी है यामें जरि जै हैं सो वहां धसिकै जरि जाय है । तैसे काम क्रोधादिकनमें जीव मुगुध परे हैं या नहीं जानै हैं कि, यामें जरि जायेंगे ॥ ३ ॥

सय्यद शेख किताब नीरखै पंडित शास्त्र विचारै ।

सद्गुरुके उपदेश विना तुम जानिकै जीवहि मारै ॥ ४ ॥

सो हे सय्यद शेखौ ! तुम किताब देखिकै नाना कर्म करौहौ औ हें पण्डितौ ! तुम नाना शास्त्र पुराण पढ़िकै सुनिकै नाना कर्म करौहौ । सद्गुरुको उपदेश तौ तुम लियो नहीं असतगुरुन के पास जाइ जाइ उनहीं को उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुम अपने जीव को मारौहौ कहे जनन मरण रूप दुःख देउहौ । साहब के जाननवारे जे हैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहबको बताइदेई, औ जन्म मरण तुम्हारो छूटि जाइ या प्रकारते जानिकै आपनी आत्माको मारौहौ तामें प्रमाण॥ “नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् । मयानुकूलन नभस्वतोरितं पुमान्भवाब्धि न तरेत्स आत्महा” ॥ इति श्रीभागवते ॥ ४ ॥

करो विचार विकार परि हरौ तरन तारने सोई ।

कह कबीर भगवन्त भजन करु द्वितिया और न कोई॥५॥

सो विचार करौ औ सम्पूर्ण जे विकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ो । तरण तारण एक पुरुष पर श्रीरामचन्द्रही हैं । श्री कबीरजी कहै हैं कि, तिन-हींको भजन करु, उनते और दूसरो तेरो छोड़ावन वारो नहीं है । इहां तरण तारण दुइ कह्यो, सो तरण जो है मुक्ति ह्वेकी इच्छा ताते तारणवारो कोई नहीं है वोई हैं । वही मुक्तिकी इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरो पासनादिक नाना उपासना करिकै तरनको चाहै हैं परन्तु कोई तरै नहीं हैं, जब तरनकी चाह छूटिजाइहै तब मुक्ति होइहै । सो यह तरनकी इच्छाते एक परम पुरुष श्रीरामचन्द्रही तारिदेइहैं । अर्थात् उनकी दीन मुक्ति दैजाइहै औरकी दीन मुक्ति नहीं दैजाइहै । जबभर तरनकी इच्छा होइहै तबभर मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण ॥ “भुक्तिमुक्तिस्पृहायावत्पिशाची-हृदि वर्तते । तावद्भक्तिसुखस्पर्शः कथमभ्युदयो भवेत्” ॥ इति भक्तिरसामृतसिन्धौ ॥

इति साठवां शब्द समाप्त ।

अथ इकसठवां शब्द ॥ ६१ ॥

मरिहौ रे तन कालै करिहौ । प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ ॥ १ ॥
काय विगुरचन अनवनि बाटी । कोइ जारै कोइ गाड़ै माटी ॥
हिंदू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपंच दुनौ घर छाड़ै ॥ ३ ॥
कर्म फांस यम जाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहि मारा ॥
राम बिना नर ह्वैहौ कैसा । बाट मांझ गोवरौरा जैसा ॥ ५ ॥
कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घरसों जव वा घर जैहौ ॥ ६ ॥

मरिहौ रे तन कालै करिहौ । प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ ॥ १ ॥
काय विगुरचन अनवनि बाटी । कोइ जारै कोइ गाड़ै माटी ॥
हे जीवो ! तुम मरिहौ तौ फिर तन लेहौ तौनेको लैके का करिहौ । का या तनते कियोहै का वा तनते करिहौ । जबप्राण छूटैगो तब बाहू शरीरको

लेकै बाहरै धरोगे ॥ १ ॥ सो या काया जो है ताको बिगुरचन कहै छूटैमें
आनि आनि बाटि है काहेते कोई तो या कायाको जरैहै, औ कोई माटीमें
गाड़ैहै, सो जो गाड़ैहै औ जरै है तिनको अब कहै हैं ॥ २ ॥

हिंदू लै जरै तुरुक लै गाड़ै । ई परपंच दुनौ घर छाड़ै ॥ ३ ॥

कर्म फांस यम जाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहि मारा ॥ ४ ॥

राम बिना नर ह्वैहो कैसा । वाट मांझ गोबरौरा जैसा ॥ ५ ॥

सो हिंदू जेहें ते तो जरैहैं औ तुरुक जेहें ते गाड़ैहैं । सो ई दुनौ घरमें जो
परपञ्च है ताको तू छाड़ै ॥ ३ ॥ संसारमें यमराज कर्म फांस रूपी जाल पसा-
रिराख्योहै । जाही शरीरमें जीव जायहै तहें मारि डारैहैं जैसे धीमर जौने डाव-
रमें मछरी जायहै तौनेही डावरते खैंचिकै मारिडारै है । तब शरीरकी नाना
बाटि होइहै भस्म होयहै कीरा होयहै विष्टा होय जायहै ॥ ४ ॥ सो हे
जीवो ! बिना साहबके जाने तुम कैसे होउगे बाटमें, जैसे गोबरौरा जोई आवै
जाय सोई कचरि देइहै मरिजायहै ॥ ५ ॥

कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घरसों जव वा घर जैहौ ॥ ६ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जब या घरसों वा घर जाउगे अर्थात् जब यह
शरीर ते दूसरो शरीर धरौगे, गर्भवास होइगो तब पछिताउगे । गर्भवासमें
साहब की सुधि होइहै सो जब गर्भवासको क्लेश होइगो तब कहौगे कि, हे
साहब ! अबकी बार जो छुड़ावो तौ फिर न ऐसे काम करौगे । सो गर्भ स्तुति
श्रीमद्भागवतादिकनमें प्रसिद्ध है । तेहिते यह व्यंग्य है कि, परम पुरुष पर
श्रीरामचन्द्रको जानो ॥ ६ ॥

इति इकसठवां शब्द समाप्त ।

अथ बासठवां शब्द ॥ ६२ ॥

माई मैं दूनौं कुल उजियारी ।

बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी ॥ १ ॥

सासु ननैदि मिलि पटिया बांधल भसुरा परलो गारी ।

जारों मांग में तासु नारिकी सरिवर रचल हमारी ॥ २ ॥
 जना पांच कोखियामें राखौं औ राखौं दुइ चारी ।
 पार परोसिनि करों कलेवा संगहि बुधि महतारी ॥ ३ ॥
 सहजै बपुरी सेज विछायो सूतल पाउँ पसारी ।
 आउँ न जाउँ मरों ना जीवों साहव मेढ्यो गारी ॥ ४ ॥
 एक नाम मैं निजके गहिल्यो तौ छूटल संसारी ।
 एक नाम मैं बढिकै लेखौ कहै कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

माई मैं दूनौ कुल उजियारी ।

बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी ॥ १ ॥

चित् शक्ति कहै है कि, हे माई! कहे हे माया! मैं दूनौं कुल उजियार कर-
 नवारी हौं कहे मोहिते जीव कुल उजियार हौं। जीबछः प्रकारके है १ मुक्त
 २ मुमुक्षु ३ विषयी ४ बद्ध ५ नित्यबद्ध ६ नित्यमुक्त। औ ब्रह्म कुल उजियार है सब ईश्वर
 ब्रह्म कुलहीमें हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो । मैहीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै औ
 मैहीं सब जीवकी चैतन्यता हौं सो बारह खसमको नैहरमें खायो । ते बारह
 खसम कौनहैं तिनको कहै हैं—अष्टप्रधान जे हैं काली, कौशिकी, विष्णु, शिव,
 ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, भैरव, औ नवौं परमपुरुष जिनके ई आठौ प्रधान कहै
 मंत्री हैं । इनको महातंत्रमें वर्णन है । औ पांच ब्रह्म आदि मंगलमें
 वर्णन करिआर्य हैं तिनमें रेफरूपा जो है सो मंत्ररूप है औ परा शक्ति है
 ताको शक्तिमान में अंतभाव है । औ शब्दब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता
 नहीं है, विचार करिवेलायकैही तेहिते पांचब्रह्ममें तीनि ब्रह्म उपासना करिवे
 लायक हैं सो अष्टप्रधान औ नवौं परमपुरुष औ तीनिब्रह्म मिलाइके बारह
 उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समष्टि जो है सोई नैहर है जहांते
 व्यष्टि होइहै । सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां मैं इनको खाइलियो है कहे
 पेटमें डारिलियो है मोहिते भिन्ननहीं है औ जब मैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्ममें

अथ तिरसठवां शब्द ॥ ६३ ॥

मैं कासों कहौं को सुनै को पतिआय ।
 फुलवाके छुवत भँवर मरिजाय ॥ १ ॥
 गगन मँडल विच फुल यक फूला ।
 तर भो डार उपर भो मूला ॥ २ ॥
 जोतिये न वोइये सिचिये न सोइ ।
 विन डार विना पात फूल यक होइ ॥ ३ ॥
 फुल भल फुलल मालिनि भल गूथल ।
 फुलवा विनशि गथल भँवर निरासल ॥ ४ ॥
 कह कबीर सुनो संतो भाई ।
 पंडित जन फुल रहे लुभाई ॥ ५ ॥

मैंकासों कहौंको सुनै को पतिआय ।
 फुलवाके छुवत भँवर मरिजाय ॥ १ ॥

कबीरजी कहै हैं कि, मैं जासों कहौं हों सो तो सुनतई नहीं है औ जो सुन्वों तौ शंका कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडारयो सांचेको स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलै है तौ यह कहै है कि, यह जोलहाकों कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ विचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है येतो सब धोखामें अटके हैं मैं कासों कहौं को सुने । कौन बात कहा हों कि, वह धोखा ब्रह्म आकाशको फूल है ताके छुवतमें भँवर जोहै तिहारों जीवात्मा सो मरिजाय हैं कहे तुम नहीं रहिजाउहौ, वही धोखा ब्रह्मई रहि-जाइहै वाके आगेकी बात तुमकैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष परश्रीरामच-द्रको जानो । वे जब अपनी इंद्री देखेंगे तब वह ब्रह्मके ऊपरकी बात जानि परैगी । जौन हंसशरीर देखै सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्य स्वरूपत

पाइकै ब्रह्म मायाके परे मन बचन के परे परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है । सो भेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखामें लगे है जो धोखाते जगत् होइहै कैसो होइ है कि ॥ १ ॥

गगनमँडल विच फूल एक फूलातरभो डार उपर भोमूला २

गगन मंडल कहे लोक प्रकाश चैतन्याकाशमें एक फूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्म माया सबलित होत भयो अर्थात् आकाश फल को मिथ्या कहै हैं सो वह मिथ्याही फूल भ्रमते फूलत भयो । जीवको भ्रम भयो ताके अनुमानते प्रकट है जात भयो । सो मूल तो वह ब्रह्म है सो ऊपर भयो औ तरे बाकी डारैं फूटत भई चौदहों लोक संसाररूप वृक्ष तयार भयो ॥ २ ॥

जोतिये न वोइये सिचिये न सोइ ।

विन डार विना पात फूल एक होइ ॥ ३ ॥

फूल भल फुलल मालिनि भल गूथल ।

फुलवा विनशि गयो भवँर निरासल ॥ ४ ॥

वह न जोति गयो न बोय गयो औ न सींचि गयो विना डार पातहै ऐसो विरवा चैतन्याकाश जो लोक प्रकाश है तामें धोखा ब्रह्मरूप फूठ फूल्यो, ताहीते संसाररूप विरवा तैयार भयो ॥ ३ ॥ तब मालिनि जो मायाहै सो भल गूथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नाना वाणीसों खूब वर्णन करिकै वहीको आरोप करत भई । तब यहजीव सब छोड़िकै वही ब्रह्ममें नाना वाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहां कुछ न पायो वह धोखही द्वैगयो तब भवँर जो जीव सो निराश द्वैगयो ॥ ४ ॥

कह कवीर सुनो संतो भाई।पंडित जन फुल रहे लोभाई ५

श्रीकवीर जी कहै हैं कि, हे संतो ! भाइउ सुनो वही ब्रह्मफूलमें पंडितजन जे हैं ते लोभाय रहे हैं । यह विचार नहीं करैहैं कि, जगत्को तो हम मिथ्यई कहह औ वही ब्रह्मते जगत्की उत्पत्ति कहै हैं । सांचते सांच झूठेते झूठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तौ वासों झूठा जगत् कैसे उत्पन्न होतो ।

औ वही ब्रह्म को निराकार अकर्ता निर्धर्मिक कहौ हौं कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन ? अरु वाको निर्वस्तु कहौ हौ कि, वह कुछ वस्तुनहीं है? देशकाल वस्तु परिच्छेदते शून्यहै कहो तो वह धोखई रहिगयो किं, कुछ वस्तु रहिगयो ! सो निहारेही बातमें वह धोखा जान्यो परै है कि, कुछ नहीं है शून्यहै तेहितें परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रमें लागौ जाते माया ब्रह्मके पार है उनहीके पास पहुँचौजाइ औ आवागमनते रहित हैजाउ ॥ ५ ॥

इति तिरसठ शब्द समाप्त ।

अथ चौंसठवां शब्द ॥ ६४ ॥

जोलहा बीनेहु हो हरिनामा जाकेसुर नरमुनि धरैं ध्याना।
ताना तनैको अउठा लीन्हे चखी चारिहु वेदा
सर खूटी यक राम नरायण पूरण कामहि माना ॥ १ ॥
भवसागर यक कठवत कीन्हों तामें माड़ी सानी
माड़ीको तन माड़ि रहो है माड़ी विरला जाना ।
त्रिभुवन नाथ जो मंजन लागे श्याम मुररिया दीना
चांद सूर्य दुइ गोड़ा कीन्हो मांझ दीप किय ताना ॥ २ ॥
पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधै को रामा
वे ये भरि तिहुं लोकै बांधै कोइ न रहै उवाना ।
तीन लोक एक करिगह कीन्हो दिगमग कीन्हो तानै
आदि पुरुष बैठावन बैठे कविरा ज्योति समाना ॥ ३ ॥

श्रीकबीरजी रामानंदके शिष्य हैं सो अपनी संप्रदाय बतावैं ॥

१ कबीर साहब रामानन्दके कैसे शिष्यहैं सो ज्ञानवेक हेतु—कबीरभानुप्रकाश,
कबीर मन्सार, रामानन्द गुप्ती और आत्मदासजीकृत कबीर सागर देखना चाहिये ।

जोलहा बीनेहु हो हरि नामा। जाके सुर नर मुनि धरै ध्याना ।
ताना तनैको अउठा लीन्हे चर्खी चारिहु वेदा
सरखूटी यक राम नरायण पूरण कामहि माना ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, जोलहा जो मैं हौं सो हरिके नामको विनौ हौं । वे हरि कैसेहैं कि, जिनको सुर नर मुनि ध्यान धरै हैं । कौनी नरहो विनौहैं सो उपाय कहौहैं । कोरिनके यहां ताना तनिबेको अउठाने नापिछेइहैं औ इहां अउठाजो शरीरहै ताको साढ़े तीनिहाथको नापिलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिंगशरिरहै सो मनोमय है ताको मैं हरिनाम विनिबेको धारणकियो है । नहीं तौ मैं मनके पर रह्यो हौं । औ कोरिनके इहां चर्खीते सूत खैंचिकै कैंडा करि छेइहैं, औ इहां चारो वेद जे हैं तेई चर्खी हैं तिनके तात्पर्यते आत्माको स्वरूप “कि ते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको है” यही सूत जीवात्माको निकास्यो । औ कोरिनके इहां सर औ खूटीते तानाको पूरैहैं अरु इहां श्री इहां बैष्णवहै रूपके मंत्र पावैहै रघुनाथजीको षट्क्षर और नारायणको द्वाक्षर औ अष्टाक्षर सो सर खूटी-राम औ नारायण ये नामहैं । एकनामको सरवनायो एक नामको खूटी वनायो इनहींको नामलिये हरिनामरूपी कपरा विनिबे को मैं अधिकारी भयो । यह मैं मान्यो कि, मैं पूरिदेहौं रामनाम दुइ खूटी हैं नारायण नामसर हैं ॥ १ ॥

भव खागर यक कठवत कीन्हो तामें माड़ी सानी ।
माड़ीको तन माड़ि रहोहै माड़ो विरला जाना ।
त्रिभुवन नाथ जो मंजन लागे श्याम मुररिया दीना ।
चाँद सूर्य्य दुइ गोड़ाकीन्हो मांझदीप किय ताना ॥ २ ॥

कोरिनके इहां माड़ी सानी जाइहै तब एक कठौतामें धरै हैं सो इहां भवसागर कठौताहै औ चारों शरीर माड़ी हैं तामें जीव सूतसनो है इहां साधन अवस्थामें चारों शरीरमें वह नामको भावनाकरिकै जो जपियो है मुमुक्षुदशामें सोई सानिबो है सो नाम उच्चारणकी विधि कोई विरला जानै है सो रामानुजाचार्य आपने राममंत्रार्थमें लिख्यो है यह नाम स्मरणको शरीर धारण कियो सो

जब नामस्मरण न कियो सोई शरीर रूपी माड़ी याके माड़ि रह्योहै कहे छपटि रही है औ कोरिनके जब बाको मांजै हैं तब मांडी सम है जाइहै औ मैल छूटि जाइहै । औ इहां त्रिभुवननाथ जो मनहै सो रेचक कुंभक पूरक जे कूचाहैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नामको जपनलग्यो औ जीवको माड़ी जोहै चारो शरीर तिनको सम कै दियो कहे एक करिदियो औ । कोरिनके मांजत में जब तागा टूटि जाइहै तौनेको मुरेरिकै जोरि देइहै सो मुररिया कहावैहै इहां नामके स्मरण में जब बीचपरैहै तब कहीं श्याम कहीं गोपाल कहीं कृष्ण इत्यादिक नाम लैकै धागा जोरिदेइहै । औ कोरिनके दुइगोडा कहे दुइ घोरियाके बीचमें ताना तनैहैं औ इहां चांद सूर्य जे इड़ा पिंगला तिनके बीचमें दीप जौ सुषुम्णा नाड़ी है ताको ताना कियो । ताना बाको काहेते कह्यो कि, वह साहबके लोकते लै मूलाधारचक्र लौं रश्मिरूप तनी है जीवही सुषुम्णा नाड़ी है भक्तन को जी उतरै चढ़ैहै ॥२॥

पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधै को रामा

वे ये भरतिहुँ लोकै बांधै कोइ न रहै उवाना ।

तीन लोक एक करिगह कीन्हो दिगमग कीन्हो तानै

आदि पुरुष वैठावन बैठे कविराज्योति समाना ॥ ३॥

कोरिनके इहां पाई साफ करिबेको कहै हैं औ कमठिनके बीचते सूत निकासी लेइहै सो भरना कहावै है सो इहां चारो शरीर माड़ी मांजिकै कहे चारयो शरीर छोड़ायेकै जीवको साफ करि कै कहे सूक्ष्म बिचारते जीव को स्वरूप निकस्यो कि, रामहीको है औरको नहीं है औ कोरिनके राक्षसी जो कमठी ताके छिद्र है सब सूतको निकासीलेई है औ दुइ सूत बांधिदेइह सो वे कहावैहैं औ तीन फेरी करिकै सूतको गांसी देई है सो तिलोक कहावैहै । औ उवान वह कहावैहै जो बाहर सूत रहिजाइहै सो उवान न रहिगयो सो इहां दोनों कुंभकमें राम जे दुइवर्ण हैं रकार मकार तिनको बांधि दियो । बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थंभिकै लौटै है सो कुंभक कहावै है तहां रकार जपै है तब सूर्यके प्रकाशको भावनाकरै है औ जब भीतर श्वास जाइहै औ थंभिकै लौटै है तहां मकार जपै है तब चन्द्रमाको प्रकाशको भावना करै है

सो जौन साधारण श्वास चलैहै नासिकाते बारह आंगुर भीतर जायहै बारह आंगुर बाहर जायहै जहां जहांते थँभि थँभिकै लौटै है तहां रकार मकार को जपिकै वे आंगुरनको घटाइ बूझै दूनों कुंभकनको घटावनलगै इसतरहते वे जो हैं श्वास ताके बांधतमें जब श्वासके क्रमते घटाइकै तिहुँछोकै बांधै कंहं त्रिकुटीमें बांधिदेइ अर्थात् एक आंगुर भीतर जानपावे न एक आंगुर बाहर जानपावै औ एक आंगुर बीचमें राखै सो यहि तरहते जो कोई करै है सोई उबान नहीं रहै है कहै संकल्प विकल्प मिटि जाइहै जपकरतमें काहेको उबैगो ताको रामनामही तीनों लोक देख परे है वोत बाहर नहीं देखपरै है । जहां कोरी बीननको बैठे है सो करिगह कहावै है जब कपरा बीनि चुके तब तहां तीनि घरी करिकै कपरा धरि देइहै औ तानाको दिगमग कहे जहां तहां डारिदेइहै इहां तीनि लोकमें फैली जो जीवकी वृत्ति है ताको जहां अपने स्वरूपमें आत्माकी स्थिति है तहां कैवल्यमें राख्यो । तीनि आंगुर श्वासा करिकै जो स्मरण करतरह्यो सो मन पवनको एक घर कै दियो तब संकल्प विकल्प सब मिटिगयो यह ताना शरीरमें तन्यो रह्यो ताको दिगमग कियो कहे पृथ्वीको अंश पृथ्वीमें जलको अंश जलमें तेजको अंश तेजमें वायुको अंश वायुमें आकाशको अंश आकाशमें मिलाइदियो ये पंच भये औ मनको बुद्धिमें बुद्धिको चित्तमें चित्तको अहंकारमें अहंकार को जीवात्मामें मिलाइदियो ये पांचभये ये सबताना दशौ दिशा में फैलाइ दियो तब याको सुधि भूलिगई एक जीवात्माभर रहिगयो औ जब कपरा तैय्यार हैजाइहै तब कोरीके यहां मालिक को पयादा आवै है तब पयादाके साथ मालिकके यहां कपरा कोरी लैजाइहै औ यहां आदिपुरुष जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं ते बैठावन देइ हैं कहे याको हंसस्वरूप देइहैं सोई पयादाहै ताके साथ द्वैकै कहे तामें स्थितद्वैकै कबीर जो मैहाँ सो वह जोहै कैवल्यरूप ताते छूटि कै पार्षदरूप पाइकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाशरूप जोहै ब्रह्म तौने ज्योतिमें समाइकै कहे वाको भेद परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रके धामको गयो भाव यह है जैसे कोरी थान मालिक के नजर कैदेइहै तैसे अपने आत्माको शुद्ध करिकै परम पुरुष पर श्री रामच-

न्द्रको अरपि दीन्होजाइ ज्योति भेदिकै साहबमें समाइगयो तामें प्रमाण ॥
 “तज्ज्योतिर्भेदेन सक्ता रसिका हरिवेदिनः॥” इति ॥ औ श्रीकबीरहूजीको प्रमाण ॥
 “जैसे माया मन रमै तैसे राम रमाय । तारामंडल भेदिकै तबै अमरपुर जाय” ॥ ३॥
 इति चौंसठवां शब्द समाप्त ।

अथ पैसठवां शब्द ॥ ६५ ॥

योगिया फिरिगयो नगरमँझारी। जाय समान पांचजहँ नारी १
 गये देशांतर कोइ न बतावै। योगिया गुफा बहुरि नहिँ आवै २
 जरि गो कंथ ध्वजागो टूटी। भजिगो दंड खपरगो फूटी ॥ ३॥
 कह कबीर यह कलिहै खोटी। जोरह करवा निकसल टोंटी ४
 योगिया फिरिगयो नगरमँझारी। जाय समान पांचजहँ नारी १

जौने ब्रह्मांडमें पांचनारी जे बयारि हैं नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय
 ई जिनमें समाइहैं ऐसे प्राण अपान व्यान उदान समानते जामें समाइगयेहैं
 तौन जोहैं नगर ब्रह्मांड ताके मांझते योगिया जो है योगी सो फिरिजाइहै
 कहे फिरिफिरि ब्रह्मांडको प्राण चढ़ाइ लैजाइहै ॥ १ ॥

गये देशांतर कोइ न बतावै। योगिया बहुरि गुफा नहिँ आवै २
 जरिगो कंथ ध्वजागो टूटी। भजिगां दंड खपरगो फूटी ॥ ३॥

जब वह योगी शरीर छोड्यो तब कोई नहीं बतावै है कि कौन देशांतर
 को गयो कौने लोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोक को तौ मानतै नहीं है
 तेहिते यही शरीर पुनि पावैहै तब वह योगकी सुधि बिसरि जाइहै पुनि
 नहीं गुफामें आवैहै कहे पुनि नहीं प्राण चढ़ावत बनै है ॥ २ ॥ कंथजोहै शरीररूपी
 गुदरी सो जरिगयो तब ध्वजा जो है पवन तौनेकी धारा टूटिगई तब मेरुदंड
 भेजित द्वैगयो कहे टूटिगयो औ खप्परजोहै ब्रह्मांडकी खपरी सो फूटिगई ॥ ३ ॥

कह कबीर यह कलिहै खोटी। जोरह करवा निकसल टोंटी ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह कलि बड़ो खोटोहै अथवा यह कलि जो है
 झगड़ा सो बड़ो खोटोहै यह कोई नहीं बिचारै है कि जब शरीरही नहीं गयो

तब ब्रह्मांड कहां रहिगयो जहां ब्रह्मांडमें लीनहूँकै बनो रह्यो सो यह बात ऐसी है कि, जे ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ावै हैं तिनके जब शरीर छूटिजायहैं तब उनक गैवगुफा सब जरिजायहैं तब गैवगुफा रूपी करवामें जो प्राण चढ़ो रहै है सो जब दूसर शरीर धर्यो तब नासिका जो है टोटी तहांते वहै पवन निकसैहै वही बासना लगी रहैहै नेहिते फिरि गुरुसों पूछिकै अभ्यास करनलगै हैं ॥ ४ ॥

इति पैंसठवां शब्द समाप्त ।

अथ छाछठवां शब्द ॥ ६६ ॥

योगिया कि नगरी वसै मतिकोइ।जोरेवसै सो योगिया होइ १
वह योगियाको उलटाज्ञाना । काराचोला नाहीं म्याना २॥
प्रकट सो कंथा गुप्ताधारी । तामें मूल सजीवनि भारी॥३॥
वा योगियाकी युगुति जो बूझैरामरमै सो त्रिभुवनसूझै॥४॥
अमृतवेली क्षण क्षण पीवै। कहकवीर सो युग युग जीवै॥५॥

योगिया कि नगरी वसै मति कोइ।जोरे वसै सो योगिया होइ
योगिया जो है योगी ताकी नगरी जो है ब्रह्मांड गैवगुफा तहां कोई न बसौ अर्थात् हठयोग कोई न करो काहेते कि, जो कोई वह नगरीमें बसै है अर्थात् हठयोग करै है सो योगियै होइहै कहे फिरि फिरि वही बासना करिकै योगिया होइहै योग साथै ह जन्म मरण नहीं छूटै है ॥ १ ॥

वह योगिया को उलटाज्ञाना।कारा चोला नाहीं म्याना २

सो वह योगी को उलटा ज्ञान है कहे उलटे पवन चढ़ावै है अर्थात् या शरीर को वेदांत शास्त्रमें निषेध करै है कि, यही शरीर ते आत्मा भिन्नहै तौनेही शरीरको योगी प्रधान नानै हैं कि यही शरीर ते मुक्त हैजायँगे सो इनको चोला जो है मन जौनेते शरीर पावै है औ मनै गैवगुफामें समाइ जाइ है नाना प्रकारके जे कुत्सित कर्म हैं तिनते मलीन है रह्यो है याते

ताको काराकह्यो औ म्याना छोट को फारसी में कहै हैं सो वह मन छोट नहीं है बड़ो है सब संसार अरु चारों शरीर मनमें भराहै ॥ २ ॥

प्रकट सो कंथा गुताधारी । तामें मूल सजीतनि भारी ॥ ३ ॥

अरु जो बहुत योग करिकै ब्रह्मांडमें प्राण चड़ाइके प्राणको गुप्तकियो है सो प्रकटै है ते वे योगी कंथाजो है शरीर ताको धारण किये रहै हैं बहुत दिन जियै हैं ताको हेतु यहै है कि, मूल सजीवनि अमृतहै सो भारी कहे बहुतहै सो चुबत रहै है जैसे संजीवनी औषधि महाप्रलय भये नहीं रहि जाइहै सो याको वह जियवै है सोऊ नहीं रहिजायहै तैसे जो कोई मूढ़ काटि डारयो अथवा कोई शरीर को खाइलियो तब न वह अमृत रहिजाइ न वे रहिजाई ॥ ३ ॥

**वा योगिया की युगुति जो बूझै । राम रमै सो त्रिभुवन सूझै ४
अमृत वेली क्षण क्षण पीवै । कह कबीर सो युग युग जीवै ५**

सो ये जो हैं योगी ते युगुति करिकै जियै हैं आखिरमें इनको जन्म मरण नहीं छूटै सो या योगियाको हठयोग छोड़िकै जो कोई वा योगी की युगुति बूझै जे राजयोग करनवारे हैं सो रामरमै तब वाको त्रिभुवनमें रामई सूझिपै ॥ ४ ॥ अरु श्री कबीरजी कहै हैं कि, अमृतवेली जो है रामनाम ताको क्षण क्षण में पिये कहे श्वास श्वास में राम नाम स्मरण करै है सोई हनुमान बिभीषणादिक के तरह युगयुग जियै है औ जनन मरणते रहित है नाइहै ॥ ५ ॥

इति छान्दोग्यो शब्द समाप्त ।

अथ सरसठवां शब्द ॥ ६७ ॥

**जोपै बीजरूप भगवाना । तौ पंडित का बूझौ आना ॥ १ ॥
कहँ मन कहां बुद्धि ओंकारा । रज सत तम गुण तीनि प्रकारा २
विष अमृत फल फलै अनेका । बहुधा वेद कहै तरवेका ॥ ३ ॥
कह कबीर ते मैं का जानो । कोधौ छूटल को अरुझानो ॥ ४ ॥**

जो आगे कहिआये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जनन मरणते रहित होइहै सो कहै हैं ॥

जोपै बीजरूप भगवाना । तौ पाण्डित का बूझौ आना ॥ १ ॥
कहँमन कहाँ बुद्धि ओंकारा । रजसत तमगुण तीनि प्रकारा २

बीज जो है रामनाम सो भगवानै जनन मरण छोड़ाई देवेको तौ हे पंडित तुम आनश्चान जगत् कारण ब्रह्म ईश्वर प्रकृति पुरुष काल शब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौ हो यह नामही जगत्मुख अर्थ करि जगत्को कारण है ॥ १ ॥ सो रामनामै जो सबको बीज उहरयो तो मनको बुद्धिको मणिको कारण कहाँ रह्यो एते सत रज तम जे गुण हैं तिनके तीनि २ प्रकार हैं जगत् कियो है प्रथम मन बुद्धि ओंकार कहाँ रहे कोई नहीं रहे भाव यहै कि प्रथम साहबको सुरति पायकै रामनाम को जगत्मुख अर्थ करिकै जीव समष्टि ने व्यष्टि द्वैके संसारी भयो है तबहीं ये सब भये हैं ॥ २ ॥

विष अमृत फल फूल अनेका । बहुधा वेद कहै तरबेका ३

कोई सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी उपासनाते विष अमृत अनेक फल फलत भये कहें नाना दुःख सुख जीव पावत भये कोई वे देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइके सुख पायो औ कोई विषय आदिक करिकै दुःख पायो येई वे गुणन में फल फलेहैं सो सबके फल स्तुति बहुधा वेद तरबे को लिख्योहै ॥ “शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगन्पिता । शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः” ॥ इत्यादिक सब ॥ ३ ॥

कह कबीरते मैं का जानो । को धौं छूटल को अहङ्गानो ४

सो कबीरजी कहैहैं कि वेद तो फलस्तुतिमें तरबे को कहैहैं कछू साच नहीं कहैहैं ये सब जीव आपनी आपनी उपासना में लगे कहैहैं कि हम मुक्त है जाईमे सो सब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुणभयहैं सो मैं कहाजाना को बद्धहै को छूटहै तुमहीं विचार करि लेउ कि हमारी उपासना मायाके भीतर है कि माया के बहिरे है अर्थात् वेद में यह दिखायो कि सबको

मूल रकार बीजहै जो सबको परम कारण है सबते पर है सो याही राम नामको जो कोई साहबमुख अर्थ करिकै जपैगो सोई परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास जाइगो और नहीं तैरैहैं ॥ ४ ॥

इति सरसठवां शब्द समाप्त ।

अथ अड़सठवां शब्द ॥ ६८ ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै ।

मैं कातौं सूत हजार चरुखला ना जरै ॥ १ ॥

बाबा ब्याह करायदे अच्छा वर हित काह ।

अच्छा वर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं बिवाह ॥ २ ॥

प्रथमै नगर पहुंचतै परिगो शोक सँताप ।

एक अचंभौ हौं देखा बेटी ब्याहै वाप ॥ ३ ॥

समधी के घर लमधी आया आये बहूके भाइ ।

गोड़ चुलहौने दैरहे चरखा दियो डढाइ ॥ ४ ॥

देवलोक मरि जाहिंगे एक न मरै बढ़ाय ।

यह मन रंजन कारने चरखा दियो दृढ़ाय ॥ ५ ॥

कह कबीर संतो सुनो चरखालखै न कोइ ।

जाको चरखा लखिपरो आवा गमन न होइ ॥ ६ ॥

नाना उपासना में लगे जीव संसारते नहीं छूटैहैं सो काहेने नहीं छूटै हैं सोकहैहैं ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै ।

मैं कातौं सूत हजार चरुखला ना जरै ॥ १ ॥

बाबा ब्याह करायदे अच्छा वर हित काह ।

अच्छा वर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं विवाह ॥ २ ॥

यह स्थूल शरीर चरखाहै सो जरिजायहै कहे छूटि जायहै औ बदैया जो मनहै सो नहीं भरे है वह चरखा शरीर गढ़ि लेइ है कहे बनाइ लेइहै सो जीव कहैहैं कि, मैं हजार सूत कातौहों कहे कर्म छूटनेके लिये बहुत उपाय करौहों बहुत उपासना बहुत ज्ञान इनहीं शरीरनते करौहों परन्तु चरखला जे चारो शरीर हैं ते नहीं जरै हैं ॥ १ ॥ जीव गुरुवन के इहां जाइकै कहैहै कि हे बाबा गुरुजी! अच्छा वर दिन करनवारो तो है तासों ब्याह कराय देउ अर्थात् हित करन वारो जो अच्छी देवताकी उपासना कराइदेइ अरु आछो देवता जो तुम्हें न मिलै कहे मुक्ति करि देनवारो देवता जो तुम्हें न मिलै तौ तुमहीं मोको विवाहौ कहे-ज्ञान उपदेश करिकै अपनो भरो जो भेद है ताको भेटवाइदेउ ॥ २ ॥

प्रथमै नगर पहुंचतै परिगो शोक सँताप ।

एक अचंभौ हौं देखा बेटी ब्याहै वाप ॥ ३ ॥

प्रथम साधन बतायो गुरुवालोग कि, ईश्वरकी उपासना करौ जामें अभेद ज्ञान होय सो प्रथम नगर पहुंचतै कहे जब गुरुवा देवताकी उपासना बताइ-दियो ताही प्रथमही शोक संताप परिगयो कहे तौने देवताको बिरह भयो सो जरन लग्यो अरु दूसरो ज्ञान उपदेश जो मांग्यो तामें बड़ा आश्चर्य भयो कि, बेटी वापको विवाह्यो । जब उन उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुमहीं सर्वत्र पूर्ण हौ सो जीवतौ कबहुं ब्रह्म होतई नहीं है सो ब्रह्मतो न भयो औ न वामे ब्रह्मके लक्षण आय भयो कहा कि आपने को ब्रह्म मानि कर्म धर्म सब छोड़ि-दियो सो ज्ञान अज्ञान जीवही को होइ है सो माया जीवहीते भई है सोई बेटी है सो बाप जीवको विवाहि लियो कहे बांधि लियो ॥ ३ ॥

समधी के घर लमधीआयो आयो बहू को भाइ ।

गोड़ चुल्होनै दै रहे चरखा दियो डढाइ ॥ ४ ॥

जीवको व्याही माया जो होइहै सो मनते होइहै सो मन ससुर भयो अरु
 शुद्धते अशुद्धभयो सो अशुद्ध जीवको बाप शुद्ध जीव ठहरयो सोई समधी
 ठहरयो तौने जीवके घरमें लमधी जो है मन को भाईचित्त सो आयो नाना
 स्मरण देवायो तबहूं जो माया है ताको भाई काल आयो । चूल्हा जो है तामें
 दुई पल्ला होइहैं सो पुण्य पाप जेहैं ते दुनों पल्लाहैं तौने चूल्हामें गोड़ दैकै
 चरखा जो शरीर है तिनको दडाइदीन्हो कहे लाइदियो काहूको पुण्य करायकै
 काहू को पाप करायकै शरीर खाइलीन्हो ॥ ४ ॥

देवलोक मरि जाहिंगे एक न मरै बढ़ाय ।

यह मन रंजन कारने चरखा दियो दढ़ाय ॥ ५ ॥

कह कबीर संतौ छुनौ चरखा लखै न कोइ ।

जाको चरखा लखि परो आवा गवन न होइ ॥ ६ ॥

देवलोक को नरलोक को सबको काल खाइलेइहै यह बँदैया जो मनहै
 सोनहीं मारो मरै है औ जब वह चरखा टूटैहै तब बँदही बनाइ देइहै ऐसे
 वह बढ़ई जो मन सो कालके रंजन करिवे को शरीर रूपी चरखा को दढ़
 करत जाइहै नाना शरीर कालको खवावत जाय है ॥ ५ ॥ श्रीकबीरजी
 कहैं हैं कि, चरखा जे चारो शरीरहैं तिनको कोई नहीं लखै है जाको चारों
 शरीर लखिपरे अरु पांचौशरीर केवल्य में प्राप्त भयो कहे केवल चितमात्र
 रहिगयो तब वह चरखाको गढ़ैया जो मनहै तेहिते जीव भिन्न द्वैगयो तब
 छठवो अंश स्वरूप साहब देइहै तामें स्थित द्वैके साहबके लोकको जाइहै
 आवा गमन नहीं होइ है ॥ ६ ॥

इति अरसउवां शब्द समाप्त ।

अथ उनहत्तरवां शब्द ॥ ६९ ॥

यंत्री यंत्र अनूपम वाजै । वाके अष्ट गगन मुख गाजै ॥१॥

तूही गाजै तूही वाजै तूही लिये कर डोलै ।

एक शब्द में राग छत्तिसौ अनहद बाणी बोलै ॥ २ ॥
 मुखको नाल श्रवणके तुम्बा सतगुरु साज बनाया ।
 जिह्वा तार नासिका चरही माया मोम लगाया ॥ ३ ॥
 गगन मँडल मा भा उजियारा उलटा फेर लगाया ।
 कह कवीर जन भये विवेकी जिन यंत्री मन लाया ॥ ४ ॥

यंत्री यंत्र अनूपम बाजै । वाके अष्ट गगन मुख गाजै ॥ १ ॥

यंत्री जो है जीव ताको यंत्र जो शरीर है सो अनूपम बोन बाजै है वोनमें सात स्वर बाजैहैं अरु आठवों जीवके तारमें दीपको स्वर बाजै है औ इहां यह शरीरमें सात चक्रहैं सहस्तारलों तिनके बीच बीचको जो है आकाश ये सात गगन भये अरु आठवों सहस्तार के ऊपर को जो आकाश तामें सुरपति कमलमें बैठो जो गुरुनाम बतावै है सो वह आठवों गगनमें जाइके गान्यों कहें रामनाम सुनिकै लेन लग्यो सो इहां सुषुम्णा जो नाड़ी सोई तार है मूलाधार चक्रसुरति कमल येई तुम्बा हैं ॥ १ ॥

तूही गाजै तूही बाजै तूही लिये करडोलै ।

एक शब्द में राग छत्तिसौ अनहद बाणी बोलै ॥ २ ॥

सो या बीणाको तूही गाजै कहे सुरति कमलमें तुहो नाम लेइ है औ तुहो बाजै कहे तूही सुरति बोले है औ तूही सुरतिको लैकै डोलै है कहे तूहीं सुषुम्णा द्वे चदिनाइहै अर्थात् शरीरको मालिक तूही है औ बीणामें छत्तिस राग बोलै है। औ इहां एक शब्द जो है राम नाम तामें चौतिस बर्ण औ पैंतीसौनाद औ छत्तिसौबिंदु ई सब हैं बिंदुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहद है कहे वही-को हृद नहीं है तौने रामनाम रूपी बाणी सुरति कमलमें गुरु बोलै है सो तहीं जपैहै या अंतर बीणा बतायो सो जानु अब बाहर को बीणा बतावै हैं ॥ २ ॥

मुखको नाल श्रवणके तुम्बा सतगुरु साज बनाया ।

जिह्वा तार नासिका चरही माया मोम लगाया ॥ ३ ॥

बीणाके बीचमें डांडीहै यहां मुखै नाल डांडी है बीणामें दुइतुम्बा लगैहैं यहां दूनों जे श्रवणहैं तेई तुम्बाहैं बीणाको स्वर मिलावैहैं औ यहां सतगुरु जेहैं ते साज बनाइ जीवनको उपदेश करै हैं औ बहा बीणामें तार लगै है अरु यहां जीभ जो है सोई तार है औ बीणामें चरही कहे सार लगैहै औ यहां नासिका चरही कहे सारहै सारमें मोम जमाया जाइ है यहां माया जो है गुरुकी कृपा माया “दम्भे कृपायां च॥” सोई मोम जमायो जैसे बीणा में जौन स्वर बजावै तौन बाजै है तैसे सुरतिकमलते गुरु जो राम नामको उपदेश कियो सोई जीभते जपैहै ॥ ३ ॥

गगन मँडल मा भा उजियारा उलटा फेर लगाया ।

कह कबीर जन भये बिबेकी जिन यंत्री मन लाया ॥ ४ ॥

बीणा जब सुरते बाजै है तब सब रागनको उजियारा ह्वे जाइहै औ आछो लगैहै सबराग जानि जाइहैं और दूसरे पक्षमें जीवको उलटो ज्ञान जगत्मुख द्वैगयो तैं ब्रह्ममुख द्वैगयो तैं औ आत्मामुख द्वैगयो तैं कि महीं ब्रह्महों ताकों नाना शब्दमें समुझाइकै अठयें गगनमें जीवको साहब मुख करतभये तब जीवको ज्ञान द्वैगयो सब धोखा छोड़िकै साहब में लग्यो जगत्मुख रह्यो सो उलटा रह्यो ताको सीधेमें गुरुवालोग फेरि लैआये औ लगायो । पाठ होइतो साहबमें लगावत भये श्रीकबीरजी कहैहैं कि, यंत्री जो है बीणाकार उस्ताद तौनेते जो बीन बजावै मन लगाय सीखैहै तौ वाको सुरनको रागनको वे व्यौरा आइ जाइहैं ऐसै सुरति कमलमें बैठे जे हैं परमगुरु जे राम नामको उपदेश करै हैं तिनसोंजो कोई यंत्री जीवात्मा मन लगावै है सो बिबेकी होइहै कहे जगत् को असांच जानिकै सांच साहब में लगि जाइहै ॥ ४ ॥

इति उनहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तरवां शब्द ॥ ७० ॥

जसमास नरकी तसमास पशुकी रुधिररुधिर यकसाराजी ।
 पशुकी मास भखै सबकोई नरहि न भखै सियाराजी ॥१॥
 ब्रह्मकुलाल मेदिनी भरिया उपजि विनशिकित गइयाजी ।
 मास मछरिया जोपै खैया जो खेतनि में बोइयाजी ॥ २ ॥
 माटीको करि देई देवा जीव काटि कटि देइयाजी ।
 जो तेरा है सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी-॥ ३ ॥
 कहै कवीर सुनोहो संतो रामनाम नित लैयाजी ।
 जो कछुकियो जिह्वाके स्वारथ बदल परारा दैयाजी ॥४॥

जसमासनरकी मास पशुकी रुधिररुधिरयकसाराजी ।
 पशुको मास भखै सबकोई नरहि न भखै सियाराजी ॥१॥

जस नरकी मास होइ है तस पशुकी मास होइ है अरु रुधिर भी एक तरह होइ है परंतु पशुके मासको जे भक्षण करै हैं ते सियारई हैं सो वे मनुष्यते औ सियारते यतनै भेद है कि, सियार मनुष्यको मांस खाइ है अरु नरपशु की मांस खाइ है मनुष्यको मांस पशु नहीं खाइ है सो कहै हैं कि, रुधिर मांस तो सब एकई तरह है नर की मांस काहे नहीं खाय हैं ॥ १ ॥

ब्रह्मकुलाल मेदिनी भरिया उपजि विनशिकित गइयाजी ।
 मास मछरिया जोपै खैया जो खेतनि में बोइयाजी ॥ २ ॥

जौनेते सब पृथ्वी जगत् भयो है ऐसो जो है ब्रह्मा कुलाल जो कुम्हार औ सर्वत्र जगत् में भैर रहा अर्थात् सब वस्तु ब्रह्मई रह्यो तौ यह सब पृथ्वी उपजी औ विनशिकै कहांगई सो एक ब्रह्मही सर्व मानिकै जो मास मछरी खाइ कि सब तो एकई है जो मन चलेगो सो करेंगे नरक स्वर्ग कर्म सब

मिथ्या हैं ऐसो जो मानैगे तौ जो खेतमें बोंवनको होइ हैं सो तुम मुर्दे पशु की मासकी मास खाउ हौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुरमें मांस खाईगे जो कहों हम देवताको बलि चढ़ाइके खाइ हैं तौनेपर कहै हैं ॥ २ ॥

माटीको करि देई देवा जीव काटि कटि देइयाजी ।

जो तेराहै सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी ॥ ३ ॥

माटीको तौ देवता बनाओहौ उसके आगे जीव काटि काटि कै राखौहौ यह कैसी गाफिली तुमको घेरी है जो माटीको देवता सांच है तो जब बोकरी खेतमें चरती है तब तुम्हारा देवना काहे नहीं खाता क्या देवताको किसीका डर है भाव यह है कि, तुम काहेको हत्यारी लेतेहो अंगुरिआयदेउ जो सांचा होयगो तौ खाइगो तेहिते तुम्हारी देवता मिथ्या है खेतमें चरत बोकरीको न खाइ सकैगो ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनोहो संतौ रामनाम नित लैयाजी ।

जो कछु कियो जिह्वाके स्वारथ बदल परारा दैयाजी॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जिनके जिनके गलाको तुम काटतेहौ ते सब तुम्हारे नरकमें गला काटेंगे तेहिते रामनामको नितलेउ भाव यह है जब नामा-पराध छोड़ि रामनाम लेउगे और फिरि पातक न करौगे तबहीं तुम्हारे पातक जाइंगे तामें प्रमाण ॥ “हरिर्हरति पापानि दुष्टचितैरपि स्मृतः । यदृच्छयापि संस्पृष्टे दहत्येव हि पावकः ॥ रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति ” ॥ दशनामापराधमें प्रमाण ॥ “संतां निंदा नाम्नः परममपराधं वितनुते यतः ख्यातिं जातं कथमिह सहेद्धेलनमदः । शिवस्य श्रीविष्णोर्वा इह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामा हितकरः ॥ मुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिंदनं तथार्थज्ञादो हरिनाम कल्पनं । नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि विच्युतिः ॥ श्रुत्वापि नाममाहात्यं यः प्रीतिरहितोधमः । अहं ममारिपरमो नाम्नि सोप्यपराधकृत्, ॥ ४ ॥

इति सत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ इकहत्तरवां शब्द ॥ ७१ ॥

गुरुमुख ।

चातक कहा पुकारै दूरी । सो जल जगत रहा भरपूरी ॥ १ ॥
 जेहि जल नाद विन्दुका भेदा । षट्कर्मसहित उपान्यो वेदा २ ॥
 जेहि जल जीव सीवका वासा । सो जल धरणि अमर परकासा ३ ॥
 जेहि जल उपजे सकल शरीरा । सो जल भेदन जान कबीरा ॥ ४ ॥

चातृक कहा पुकारै दूरी । सो जल जगत रहा भरपूरी ॥ १ ॥
 जेहि जल नाद विन्दुका भेदा । षट्कर्मसहित उपान्यो वेदा २ ॥

सर्वते गुरु परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि, हे चातक दूरि दूरि तैं कहा पुकारै है कि पियासोहों पियासोहों जैन स्वातीको जल तैं चाहै है जाते पियास बंद है जाइ है सो राम नाम रूपी जल स्वातीको मुख्य मुक्तिको साधन जगतमें पुरि रह्यो है तैं कहाँ और और मुक्तिको साधनको खोजते फिरै है ॥ १ ॥ औ जौने रामनामरूपी जलमें नादविन्दु को भेद है अपने षट मात्रनते वेदको उपान्यो कहे उत्पत्ति कियो है ॥ २ ॥

जेहि जल जीव सीवका वासा । सो जल धरणि अमर परकासा ३ ॥
 जेहि जल उपजे सकल शरीरा । सो जल भेदन जान कबीरा ॥ ४ ॥

जौने रामनामरूपी जलमें जीव जेहैं सीव जे नानाईश्वर तिनको वास है औ सोई रामनामरूपी जब धरणि में जो कोई जपै ताको अमर करै है या प्रकाश कहे जाहिर है अथवा वा अबनीमें नाशमान नहीं होय है या जाहिर है तैं पियासो काहे मरै है ॥ ३ ॥ जेहि राम नामरूपी जलते सकल शरीर उप-जे है अर्थात् संसारमुख अर्थात् अनन्त ब्रह्मा उपजे हैं रामनामरूपी जलको भेद कबीरा कहे कायाके बीर जे जीव हैं ते नहीं जानै हैं अर्थात् जो रामनाम मोको बतावै है सो जो बिचार करै तौ चिदविग्रह करिकै सर्वत्र महीं देखों परों तौ मेरी भक्ति नलपान करिकै मुक्ति है जाइ है । औ संसारताप बुताइ जाइ है ॥ ४ ॥

इति इकहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ वहस्तराणां शब्द ॥ ७२ ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो ।

दशौ द्वार नरकै में बूड़े तू गंधीको बेढो ॥ १ ॥

फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी ।

काम क्रोध तृष्णाके मारे बूढ़ि मुये विन पानी ॥ २ ॥

जारे देह भसम है जाई गाड़े माटी खाई ।

शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बड़ाई ॥ ३ ॥

चेति न देखु मुग्ध नर वारे तूते काल न दूरी ।

कोटिन यतन करै बहु तेरे तनकी अवस्था धूरी ॥ ४ ॥

वालूके घरवामें बैठे चेतत नहिं अयाना ।

कह कबीर यक राम भजे विन बूड़े बहुत सयाना ॥ ५ ॥

चलहुका टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो । दशौ द्वार नरकै में बूड़े तू गंधीको बेढो

तीन बार टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो जो कह्यो सो ज्ञानकांड कर्मकांड उपासना कांड ये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी ये तीनों कर्मते टेढ़े हैं सो ये मार्ग में कहा चलोहौ दशौ द्वार जे दशौ इन्द्री हैं ते नरकही में लगी हैं कहे विषयन ही में लगी हैं सो तेरे विषयकी गन्धि लगी है ताते तैं गन्धी है सो तोहीं ऐसे गन्धी को माया बेदिलियो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइ लियो । अरु जो बेड़ो पाठ होइ तौ यह अर्थ है कि तोहीं ऐसे गंधीको जाके दशौद्वार नरक हीमें बूड़े हैं ताको बेड़ो नहीं है जाते संसार सागर उतरि जाइ अथवा गन्ध जगत् जो है गन्धी शरीर ताको तैं बेड़ो कहे आधार कहा है रहै है टेढ़ो टेढ़ो चाल चालकै यहां कहां तेरो पारकियो होइगो संसार सागरते न होइगो बूढ़िही जाइगो ॥ १ ॥

फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी ।

काम क्रोध तृष्णाके मारे बूढ़ि मुये विन पानी ॥ २ ॥

जारे देह भसम है जाई गाड़े माटी खाई ।

शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बढ़ाई ॥ ३ ॥

चेति न देखु मुगुध नर वौरे तूते काल न दूरी ।

कोटिन यतन करै बहुतेरे तनकी अवस्था धूरी ॥ ४ ॥

अरु ये पदनको अर्थ स्पष्ट है इनमें यही वर्णन करै हैं कि मायाकी फौज तोको लूटलियो अथवा शरीररूपी बेड़ो तेरो चलायो न चल्या संसार सागर कामादिक तोको बेरि दियो काल दूरि नहीं है आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था दूरिही है आखिर धूरिही में मिलिजाइगो ॥ ३ ॥ ४ ॥

बालूके घरवामें बैठे चेतन नाहि अयाना ।

कह कबीर एक गम भजे विन बूढ़े बहुत सयाना ॥ ५ ॥

श्री कबीर जी कहै हैं कि यही शरीररूप बालूके घरमें बैठिकै अरे मूढ़ चेतन नहीं है परम पुरुषपर श्री रामचन्द्रको भजन नहीं करै हैं न जानै यह शरीर कब गिरिजाइ कहे छूटिजाइ सो विषय छोड़ि बेगिही भजनकरु वे समर्थ तोको छोड़ाइ लेइंगे साहबके भजन बिना बहुत सयान मतनमें लगिकै बूड़िग-ये हैं अर्थात् मायाते छोड़ाय लीवे में समर्थ साहबही हैं और कोई न छोड़ाय सकैगो तेहि ते परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रको भजन करु वे तोको संसारते छोड़ायही देइंगे ॥ ५ ॥

इति चत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ तिहत्तरवां शब्द ॥ ७३ ॥

फिरहु का फूले फूले फूले ।

जो दश मास अघो मुख झूले सो दिन काहेक भूले ॥ १ ॥

ज्यों माखी स्वादै लहि विहरै शोचि शोचि धन कीन्हा ।

त्योंही पीछे लेहु लेहु कर भूत रहनि कछु दीन्हा ॥ २ ॥

देहरीलों बरनारि संगहै आगे संग सहेला ।
 मृतुकथान सँगदियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला ॥ ३ ॥
 जारे देह भसम है जाई गाड़े माटी खाई ।
 काचे कुंभ उदक जो भरिया तन कै इहै बड़ाई ॥ ४ ॥
 राम न रमसि मोहमें माते परचो कालवश कूवा ।
 कह कबीर नर आपु बँधायो ज्यों नलिनीध्रम सूवा ॥ ५ ॥

फिरहु का फूले फूले फूले ।

जो दश मास अधो मुख झूले सो दिन काहेक भूले ॥ १ ॥

औरे औरे मतनमें लगिकै कहा फूले फूले फिरौहौ कि हमहीं मालिक हैं
 हमहीं मुक्त हैं दश महीना अधोमुख गर्भ में झूलतरहे तहां कह्यो कि हैं
 साहब ! मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो । सो दिन काहेको भूलिगयें
 अब काहे भजन नहीं करौहौ निकसतही कहां कहां करनलग्यो । जो कहो
 जब हम गर्भमें रहे तब हमको साहब दयालुता करिकै सुरति लगायो अब काहे
 दयालुता करिकै सुरति नहीं लगावै हैं सो हम कहाकरें, हमको साहबई भुलाइ
 दियो । अरेमूढ़ साहब तो गोहरावत जाइहै सब शास्त्र वेदके तात्पर्य करिकै बीज-
 कमें कि जो मोको जानि भजनकरु तो मैं तेरो उद्धार करौंगो सो गर्भवासमें जो
 तैं भजन करिबेको कौल कियो सो भजन न कियो भुलायदियो तामें प्रमाण
 कबीरजीके मुक्तिछोला ग्रन्थ को ॥ “ गर्भवासमें रह्यो मैं भजिहीं तोहीं । निशि-
 दिन सुभिरौ नाम कष्टसे काढ़ौ मोहीं ॥ यतना कियो करार काढ़ि गुरु बाहर
 कीना । भूलिगयो निज नाम भयो माया आधीना ” ॥ सो साहबको कौन दोष-
 है तुहीं कौलते चूकि गयो साहबको भजन न कियो ॥ १ ॥

ज्यों माखी स्वादै लहि विहरै शोचि शोचि धनकीन्हा ।

त्योहीं पीछे लेहु लेहुकर भूत रहनि कछु दीन्हा ॥ २ ॥

जैसे माखी फूलनके रसके स्वादको पाइकै विहार करै है औ ताहीके सहनको धन जोरि जोरिकै धरै है तैसे तुमहूँ विषय भोग करिकै धन जोरि जोरि धरौहौ सो जैसे कोठ आइकै मछहनको लाइकै सहनको लेजाइकै आपुसमें बांटे लेइहै तैसे तोहीं पीछे कहे जब तुम न रहिजाउगे तब तिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहु लेहु करिकै बांटे लेइंगे अरु तुमको भुन की रहनि कहे दशदिन भूत कहेंगे मरवयमें बैठवेंगे ॥ २

देहरीलौ वरनारि संगहै आगे संग सहेला ।

मृतुकथान सँग दियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला ३

जारे देह भसम है जाई गाड़े माटी खाई ।

काचे कुंभ उदक जो भरिया तनकै इहै बड़ाई ॥ ४ ॥

ये चारो तुकनको अर्थ स्पष्ट है ॥ ४ ॥

राम नरमसि मोहमें माते परयो काल वश कूवा ।

कह कबीर नर आपु बँधायो ज्यों नलिनी भ्रम सुवा ॥ ५ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हेजीव! मोहमें माते राममें नहीं रमै है कालके वश हैकै संसार कूपमें परयो है वाते बारबार तेरो जन्म मरण होइहै सो तौ अपनेही भ्रमते नानादुःख सहै है जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ै नहीं है मारो जाइहै तैसे तैंहूँ नाना मत्तनमें लगिकै अरु विषयनमें लगिकै आपहीते यह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरैहै भाव यहै संसार तोको बांधे नहीं है तैं छोड़ि काहे नहीं देखैहै अरु जेहि साहबको तैं है जहां एकऊ दुःख नहीं हैं तिनमें काहे नहीं लगै है ॥ ५ ॥

इति तिहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ चौहत्तरवां शब्द ॥ ७४ ॥

योगिया एसोहै वद करणी । जाके गगन अकाश न धरणी १

हाथ न वाके पाउँ न वाके रूपनवाके रेखा ।

बिना हाट हटवाई लावै करै ब्याई लेखा ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युगुती ।
 सींगी पत्र कछुव नहिं वाके काहेक मांगै भुगुती ॥ ३ ॥
 तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना मैं तोहिं माहँ समाना ।
 उतपतिप्रलय एक नहिं होती तब कहु कौनको ध्याना ॥ ४ ॥
 योगिया एक आनि किय ठाढो राम रहा भरिपूरी ।
 औषधि मूल कछुव नहिं वाके राम सजीवनि मूरी ॥ ५ ॥
 नटवत वाजी पेखनी पेखै वाजीगरकी वाजी ।
 कहै कबीर सुनौहो सन्तों भई सो राज विराजी ॥ ६ ॥

योगिया ऐसो है बद्द करणी । जाके गगन अकाश न धरणी १
 हाथ न वाके पाउँ न वाके रूप न वाके रेखा ।
 विना हाट हटवाई लावै करै बयाई लेखा ॥ २ ॥

योगिया कहे संयोगी याको ब्रह्मसंयोग करिकै जगत् करैहै याते योगिया
 माया सबलित ब्रह्महै सो वह योगिया की बद्द करणी है कहे निषिद्ध करणी है
 जौने चैतन्याकाशमें अहं ब्रह्मास्मि बुद्धि करै है तौन चैतन्याकाश मेरे लोकको
 प्रकाशहै तहां आकाश धरणी एकौ नहीं हैं ॥ १ ॥ वह चैतन्याकाशको जो मानि
 लियो है कि सो महीं हो ऐसा जो समष्टि जीव चैतन्य ब्रह्मरूप सो वाके न हाथ
 है न पाउँ है न वाके रूप रेखा है जहां जीव नानाकर्म करै है जगत् अरु बही
 जगत् कर्मनको फल पावैहै जहां यही लेनदेन है रह्यो है सो जो है हाट वाके
 नहीं हैं कहे देश काल वस्तु परिच्छेदतैं शून्यहै औ हटवाई लगौतै है माया
 कहे सबलित हैकै जगत् करतै है अरु बया और को अनाज और और को नापि
 देइहै अरु ब्रह्म जो है बया सो माया सबलित हैकै ईश्वर रूपते जीवनके कियें
 जे कर्मके फलहैं ते जीवन को देइहै ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युगुती ।
 सींगीपत्र कछुव नहिं वाके काहेको मांगै भुगुती ॥ ३ ॥

अरु वह ब्रह्मको न कर्म है न धर्म है और न वाके योग युगुती है औ सींगी जो योगी लोग बनावैहैं सो वाके नहीं है औ योगी तुम्बा लिये रहैहैं अरु वाके पात्र नहीं है । सो कबीरजी कहै हैं कि, वह ब्रह्म तौ न योग करै न वेध बनावै सिद्धांत में तो कुछ हई नहीं है सो हे योगिउ जानिउ वेध बनाइके जो कहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तौ मुक्ति कहे ऐश्वर्य काहे मांगौ हौ कि हमहीं जगत् के मालिक औ ब्रह्म हैनाई; हे गुरु ! हमको यह युगुति बताइ देउ औ जो मुक्ति पाठ होइ तौ तुम पहिलेही ते मुक्त बनेरहे गुरुवा लोगनते काहे मुक्ति मांगौहौ कि जामें हम मुक्त है जाई सो युगुति बताइ देउ । जो कहो हम आपने भ्रम निवृत्ति करिबे को मुक्ति को ज्ञान मांगै हैं तौ अरे मूढ़ौ वह ब्रह्मके तो कुछ हई नहीं है वह निलेपहै वह ब्रह्म जो तुम होते तो अज्ञानई तुम्हारे कैसे होतो ॥ ३ ॥

**तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना मैं तोहिं माहँ समाना ।
उतपति प्रलय एक नहिं होती तव कहु कौनको ध्याना ४**

श्री कबीरजी कहैहैं कि, हे जीव ! ज्ञानजो तैं मानि लियो है अर्थात् ते उपासना करै हैं कि मैं ईश्वरहों ईश्वर में समानहों ईश्वर मोहीं में समानहै । तौ उत्पत्ति प्रलय जब कुछ नहीं है तबतो बताउ कौनको ध्यानहै अर्थात् काहूको ध्यान नहीं करत रह्यो भाव यह है कि तब जो ब्रह्महोते तौ संसारी काहेहोते ॥ ४ ॥

**योगिया एक आनि किय ठाढ़ो राम रहो भरिपूरी ।
औषधि मूल कछुव नहिं वाके राम सजीवनि मूरी ॥ ५ ॥**

सो तैंहां योगिया मायासबलित ब्रह्मको अनुभव करिके धोखा ब्रह्महीकों साहब मानि ठाढ़के लीन्हो है । फिरि कैसो है ना कुछ औषधिहै ना वाके मूलहै ताको मानै है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं सजीवनि मूरि सर्वत्र पूर्ण है रहै हैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनि मूरि याते कह्यो औ नाना ईश्वर जीवत्व भिद्य देन-वारे हैं औ साहब जीवनको जियाय देनवारे हैं अर्थात् रूप देनवारे हैं ॥ ५ ॥

**नटवत बाजी पेखनी पैखै बाजीगर की बाजी ।
कहै कबीर सुनोहो संतौ भई सो राजविराजी ॥ ६ ॥**

जौन तू धोखाब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानै है सो तेरी यह पेखनी नटवत बाजी पेखनी है अर्थात् झूठहै बाजीगरकी बाजी है अर्थात् सांच असांच देखवै असांच सांच देखवैहै सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ ! सुनौ उनको राजविराजी द्वे गई कहे सर्वत्र पूर्ण सत्य जे साहबहैं ते उनको नहीं जानिपरैहैं वही धोखाब्रह्म में लगै हैं असत्यही सर्वत्र देखै हैं मनमाया को राज द्वैरह्यो है साहबको राज्य नहीं है ॥ ६ ॥

इति चौहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ पचहत्तरवां शब्द ॥ ७५ ॥

ऐसो भर्म विगुरचिन भारी ।

वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषाको नारी ॥ १ ॥

माटीको घट साज बनाया नादे बिंदु समाना ।

घट बिनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना ॥ २ ॥

एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा रुधिर गूद यक मुद्रा ।

एक बिंदुते सृष्टि रच्योहै को ब्राह्मणको शुद्रा ॥ ३ ॥

रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई ।

कहै कबीर राम रमि रहिया हिन्दू तुरुक न कोई ॥ ४ ॥

ऐसो भर्म विगुरचिन भारी ।

वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी ॥ १ ॥

ऐसो कहे यहितरहते जैसो आगे कहै हैं तैसो चिन्मात्र जीव को बिगारिबों भर्मते बहुत भारी है काहेते कि भर्म ते दुबिधा कहिकै वह सार पदार्थ को न जान्यो हिन्दू मुसल्मान दोऊ बिगरिगये हिन्दू वेद की राहते नाना मत बनाय लेतभये औ मुसल्मान किताबनकी शरा लैकै नाना मत दूसरो दीनको खड़ा करत भये हिन्दू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिश्त दोजख कहतभये जो

वेद किताबके तात्पर्यते देखौ तौ न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सो
नव पुरुषही नारीको भेद नहीं है तौ हिन्दू मुसल्मान कैसे भेद भयो ॥ १ ॥

माटी को घट साज बनाया नादे बिंदु समाना ।

घट विनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना २

एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा रुधिर गूद यक मुद्रा ।

एक बिंदुते सृष्टि रच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा ॥ ३ ॥

नाभीके तरे जो दश आंगुरकी ज्योतिहै औ नानेमें नव प्राण वायुको
संयोग होइहै तब नाद उठै है तामें बिंदु समाइगयो तब माटीको घट यह
पिंडभयो ताहीको नाम धरावैहै नव याको घट विनशिगयो कहे शरीर छूटि-
गयो तब याको क्या नाम धरौगे अर्थात् नामरूप याके सब मिथ्या हैं अहमक
जो है जीव सो नाम रूपके खोजमें मुडाइ गयो ये सब जीवात्मा के नाम रूप
नहीं हैं ॥ २ ॥ सो एकै हाड़ादिकनने औ एकै बिंदुते कहे वीर्य ते सकल
सृष्टि भई है काको हिन्दू कहैं काको मुसल्मानकहैं काको ब्राह्मण कहैं काको
शूद्रकहैं शरीरमें यही साज सबके हैं अरु वेदमें कर्म किताब में शरायही ते
नानाभेद लगै हैं जो विचारिकै देखो तौ नाम रूपहीको भेद लगि रह्यो है
आत्मा तो सबको चितही है औ मांस चाम सबके पांचभौतिकही हैं अब जे
गुणाभिमानी हैं तिनको कहै हैं ॥ ३ ॥

रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई ।

कहै कवीर राम रमि रहिया हिंदू तुरुक न कोई ॥४॥

वही नाम रूप के भेदते ब्रह्मा रजोगुणी शंकर तमो गुणी विष्णु सतोगुणी
भये औ वही नामके भेदते मुसल्मानमें इनहीं को अजाजील मैकाईल इनराईल
कवीरजी कहै हैं कि येतो सबनाम रूपके भेदहैं इनको सबको आत्मा एकई है
तिनमें अंतर्ध्यामी रूपते मनवचनके परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रई रमि रहे
हैं । जो कहो राम नामौ तौ नाममें आवै है तौ रामको नाम मन वचनमें
नहीं आवै है आपही स्फुरित होइहै तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचन्द्र

निर्गुण सगुणके परे हैं तिनको जानै औ जो आत्मा नाम रूपते भिन्नहै न हिन्दू है न तुरुक है तामें येई राम रमि रहे हैं या हेतुते सबको आत्मा इन्हींको दासहै तेहिजे इनहींको जो जाने सोई मुक्त होइहै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुणके परे हैं तिनहींको राम नाम जाने मुक्ति होइ है तामें प्रमाण ॥
 “रामके नामते पिंड ब्रह्मांड सब रामका नाम सुनि भर्म मानी । निर्गुण निराकार के पार परब्रह्महै तासुका नाम रंकार जानी । विष्णु पूजाकरैं ध्यान शंकर धरैं भनैं सुबिरांचि बहु विविध बानी । कहै कबीर कोइ पार पावै नहीं रामका नाम अकह कहानी” ॥ ४ ॥

इति पचहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ छिहत्तरवां शब्द ॥ ७६ ॥

अपन पौ आपुही विसरो ।

जैसे शोनहा कांच मँदिरमें भर्मत भूँकि मरो ॥ १ ॥
 ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखिपरो ।
 ऐसेहि मद गज फटिकशिलापर दशननि अनिअरो ॥ २ ॥
 मर्कट मुठी स्वाद ना विहुरै घर घर नटत फिरो ॥
 कह कबीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥

अपन पौ आपुही विसरो ।

जैसे शोनहा कांच मँदिरमें भर्मत भूँकि मरो ॥ १ ॥

ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखिपरो

ऐसेहि मद गज फटिक शिलापर दशननि आनि अरो २

अपनपौ कहे आपने जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको आपही तें यह जीव बिसरि गयो जैसे कूकुर कांचके मंदिरमें आपनो रूप देखि देखि भर्मते भूँकि भूँकि मरैहै ॥ १ ॥ अरु जैसे केहरि कूपके जलमें अपनी प्रतिमा

देखिके कूदि परैहै अरु ऐसेही प्रतिबिंब देखि स्फटिक शिलामें हाथी दांत
येरि डारैहै ॥ २ ॥

**मर्कट मुठी स्वाद न विदुरै घर घर नटत फिरो
कह कबीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥**

अरु जैसे मर्कट मुठीमें जोहै दाना ताके स्वादके लिये फँसि गये बाजी-
गरके साथ नाचत वागैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे इनके सबके भ्रम
होइहै तैसे हे जीव तैंहीं सब कल्पना करिलियो है अपनी कल्पनाने तोहिंको
भ्रम होइहै नाना उपासना नाना ठाकुर खोजत फिरैहैं । विचारिके देख तो जब
तेरे कल्पना नहींरही तबने शुद्ध रहैहै जैसे सुवा ललनीको पकरी छेइहै तैसे
तैंहीं ये सब कल्पना करिके कल्पनामें बंधोहै जैसे सुवा ललनी को जो छेड़ि-
देइ तो वृक्षमें पडुंचै जाइ तैसे तैंहूँ जो कल्पनाको छोड़िदेइ तो तोको कौन
पकरयेहै। परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास पडुंचै जाइ जब सब कल्पना छोड़ि
शुद्ध है जाइ है तब साहब अपनो बिग्रह देइहै तामें स्थितहै साहबके लोकको
जाइहै तामें प्रमाण ॥ “आदत्ते हरिहस्तेन हरिपादेन गच्छति” इतिस्मृतिः॥ अरु
श्रीकबीरजी को मंगल प्रमाण ॥ “चलो सखी बैकुण्ठ विष्णु माया
जहां चारिउ मुक्ति निदान परम पद लेतहां ॥ आगे शून्य स्वरूप अलख नहिं
छाखि परै । तत्त्व निरंजन जान भरम जानि जानि चितधरै ॥ आगे है भगवंत
तो अक्षर नाउँहै । तौन मियाँवै कोटि बनावै ठाउँहै ॥ आगे सिंधु बलंद
महा गहिरो जहां । कोनैया लैजाय उतारै को तहां ॥ कर अजपाकी नाव तो
सुरति उतारिहै । छेइहौं अजरनाउँ तो हंस उबारिहै ॥ पार उतर पुरुषोत्तम
परैख्यो जानहै । तहँवां धाम अखंड तो पद निर्वान है ॥ तहँ नहिं चाहत
मुक्ति तो पद डारे फिरै । सुरत सनेही हंस निरंतर उच्चरै ॥ बारह मास
बसंत अमर लीला जहां । कहै कबीर बिचारि अटल है रहतहां ” ॥ ३ ॥

इति छिहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ सतहत्तरवां शब्द ॥ ७७ ॥

आपन आश किये बहु तेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा ॥१॥
 इन्द्री कहां करै विश्राम । सो कहँ गये जो कहते राम ॥२॥
 सो कहँ गये होत अज्ञान । होय मृतक यहि पदहि समान ॥३॥
 रामानंद राम रस छाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके ॥४॥

आपन आश किये बहु तेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा ॥१॥

आपने स्वरूपके चीन्हिये की बहुतेरा कहे बहुत आशकिये कि हमारों आत्मै सबको मालिकह यहीके जानते हम मुक्त है जाँइगे परन्तु मुक्त न भये अरु हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हरनवारे हैं तिनको मर्म न पायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो ॥ १ ॥

इंद्री कहां करै विश्राम । सो कहँ गये जो कहते राम ॥२॥

अरु यह कोई नहीं विचार करै है कि इन्द्री कहा विश्राम करै है काहेतें कि इन्द्रीके जे देवताहैं तिनते समेत इन्द्रीतो मनते चैतन्य हैं औ मन जीवात्मा ते चैतन्यहै औ जीवात्मा परमपुरुषपर श्रीरामचंद्र के प्रकाशते चैतन्य है सो जे आपने स्वरूपको विचार करै हैं कि महीं रामहैं ते वे रामभर कहांगये अर्थात् नहीं गये ब्रह्ममें समान रहे अरु एक एकते चैतन्यहै तामें श्रीगोसाईं तुलसीदास को प्रमाण ॥ “ विषय करन सुर जीव समेता । सकल एकते एक सचेता ॥ सबकर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ जगत प्रकाश प्रकाशक रामू । मायाधीश ज्ञान गुणधामू ” ॥ २ ॥

सो कहँ गये होत अज्ञान । होय मृतक यहि पदहि समान ॥३॥
 रामानंद राम रस छाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके ॥४॥

जीव ब्रह्ममें समान रह्यो शुद्ध रह्यो जब मनकी उत्पत्ति भई अज्ञान भयों सो कहांगयो अर्थात् तब मृतक है आपने स्वरूपको भुलायके यहि पदहि कहे यहि संसारमें समान ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम चारों युगमें कहि कहि थकिये

कि रामानंद जेहैं तेई राम के रसमें छके हैं अरु तेई परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रके धामको गये हैं और कोई नहीं परम मुक्ति पाई है तुमहूं रामानंद होतजाउ अर्थात् तुमहूं रामहीति आनंद मानतजाउ यह हम चारोंयुग में सबको समुझायो परंतु कोई हमारो कह्यो न मान्यो राममें आनंद कोई न मान्यो सब वही माया ब्रह्ममें लगिकै संसारी होतभयो ॥ ४ ॥

इति सतहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ अठहत्तरवां शब्द ॥ ७८ ॥

अब हम जाना हो हरि बाजीको खेल ।

डंक वजाय देखाय तमाशा बहुरि सो लेत सकेल ॥ १ ॥

हरि बाजी सुरनर मुनि जहँडे माया चेटक लाया ।

घरमें डारि सवन भरमाया हृदया ज्ञान न आया ॥ २ ॥

बाजी झूठ बाजीगर सांचा साधुनकी मति ऐसी ।

कह कवीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भइ तैसी ॥ ३ ॥

अब हम जाना हो हरि बाजी को खेल ।

डंक वजाय देखाय तमाशा बहुरि सो लेत सकेल ॥ १ ॥

हेहरि ! हे साहब ! संसाररूप बाजीके खेलको हेतु अब हम जान्यो । अब जो कह्यो तामें धुनि यहैं कि, तब यह विचारन रहे कि साहब तो दयालुहै शुद्धजीवको संसार राचि अशुद्ध काहे करिदिये यह शंका रही सो अब जब छुटी तब साहबको हेतु जान्यो साहब जो सुरति दियो सो आपनेपास लिवाय सुखलिये ढङ्गा वजाय कहे रामनाम शब्द सुनायकै तमाशा देखाय कहे जगत् मुख अर्थ द्वार संसार तमाशा देखायकै बहुरि सो लेत सकेल कहे जे कोई जीव साहब के सम्मुख भयो ताको साहब मुख अर्थ बताइकै चित अचितरूप विग्रह जगत् स्थायकै संसार सकेलि लेय है अर्थात् संसार देखि नहीं पौ ॥ १ ॥

हरिवाजी सुर नर मुनि जहँडे माया चेटक लाया ।
 घरमें डारि सबन भरमाया हृदया ज्ञान न आया ॥ २ ॥
 वाजी झूठ वाजीगर साँचा साधुनकी मति ऐसी
 कह कबीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भई तैसी ॥ ३ ॥

हरि जे साहब तिनकी बाजी जोसंसार तामें साहबको हेतु न जानिकै सुर-
 नर मुनि जे हैं ते रामनामको संसार मुख अर्थ करिकै मायाके चेटकमें जहँडि-
 गये अर्थात् भूलिगये सो माया इनको घर जो संसार तामें डारिकै भरमाय दियो
 हृदयमें ज्ञान न होतभयो तौन हम जान्यो साहब सुरतिदियो तैं अपने पास बोला-
 वेको सो या जीव आपहीते संसार वाजीरचि भूलिगयो ॥ २ ॥ बाजी जो संसार सो झूठ
 वाजीगर जो जीव सो सांचहै सो साधनकी मति तो ऐसी है और जे सबहैं बद्धजीव
 ते जैसे समुझिनि है ताकी तैसी ही गति भई है सो गतिहू सब अनित्य है ॥ ३ ॥

इति अठहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ उन्नासीवां शब्द ॥ ७९ ॥

कहो हो अम्बर कासों लागा । चेतनहारे चेतु सुभागा ॥ १ ॥
 अम्बर मध्ये दीसै तारा । यक चेतै दुजे चेतवनहारा ॥ २ ॥
 जेहि खोजै सो उहवां नार्ही । सोतो आहि अमर पद मारही ॥ ३ ॥
 कह कबीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके यक होई ॥ ४ ॥
 कहो हो अम्बर कासों लागा । चेतन हारे चेतु सुभागा ॥ १ ॥
 अम्बर मध्ये दीसै तारा । यक चेतै दुजे चेतवनहारा ॥ २ ॥

तैंतों सुभागाहै साहब कोहै तैं काहे मन माया ब्रह्ममें लगिकै अभागा द्वैरहैहै
 चेत करनवारे तैं चेत तोकरु अंबर जो है लोक प्रकाश रूप ब्रह्म सो कहां
 लागाहै अर्थात् वह काको प्रकाशहै वह साहब साहबके लोकको प्रकाशहै चेततों
 करु ॥ १ ॥ वह अम्बर जोहै लोक प्रकाश ब्रह्म तामें तारा देखाइहै कहें

जबतैं उहां अहं ब्रह्म बुद्धि करै है, तबहीं जगदरूप तारा उत्पत्ति होइहै तौनेही
जगत्में एक गुरु होइहै सो चेतवैहै अरु एक शिष्य होइहै सो चेतकरैहै ॥ २ ॥
जेहि खोजै सो उहवां नहिं । सोतो आहि अमर पद माहीं ४
कह कवीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके यक होई ४

सो ज्यहि आपने स्वरूपको तैं खोजैहै कि मैं आपने स्वरूपको जानिकै मुक्त
हैजाउँ सो उहां वागुरुवनको ज्ञानमें नहीं है औ न वह लोक प्रकाशमें है काहेते
कि जे जे देवतनमें वे लगावैहैं तेई अमर नहीं हैं तां तोको कहां मुक्ति करैंगे
अरु महा प्रलयमें जब लोक प्रकाशमें लीन होइहै तब उहैंते उत्पत्ति होइहै
तेहिते उहैं गये अमर नहीं होइहैं तेहिते यह आयो कि तैंतो अमर नहीं होइहै
तेहिते यह आयो कि तैंतो अमर पदमें है साहबको अंशहै साहबको जानिले तौ
अमर हैजाइ ॥ ३ ॥ श्रीकवीरजी कहैहैं कि यह अमरपद अपनो स्वरूप कोई
बिरला बूझैहै कौन जाके सम अधिक नहींहै ऐसो जो है एक रामनाम सो जाके
मुखहृदय में होइहै सोई बूझैहै ॥ ४ ॥

इति उन्नासीवां शब्द समाप्त ।

अथ अस्सीवां शब्द ॥ ८० ॥

बन्दे करिले आप निवेरा ।

आपु जियत लखु आप ठवर करु मुये कहां घर तेरा ॥ १ ॥

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा ।

कहै कवीर सुनो हो संतो कठिन काल को घेरा ॥ २ ॥

बन्दे करिले आप निवेरा ।

आपु जियत लखु आप ठवर करु मुये कहां घर तेरा ॥ १ ॥

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अंत कोई नहिं तेरा ।

कहै कवीर सुनो हो संतौ कठिन काल को घेरा ॥ २ ॥

हे बंदे अपनेमें तो निबेरां करिछें अपने जियत अपना ठौर तौ करु मुयेतें
 तेरा घर कहाहै अर्थात् जो सत् असत् कर्म करैगो सो सब नरक स्वर्गादिकनमें
 भोग करैगो तेतो कर्मके घरहैं तेरे घर नहींहैं औ जो ज्ञान करिकै आपने को
 ब्रह्म मानिकै ब्रह्म प्रकाशमें हैकै शुद्ध जीवन कहैगो सो ब्रह्म होनातौ धोखाहै
 जब फेरि उत्पत्ति समय होइगो तब माया धरिछै आवैगी पुनि संसारी हैजाइगो
 अरु और और देवतनकी उपासना करिकै उनके लोक जाइ जो तेऊ तेरे घर
 नहींहैं जब माया धरिछै आवैगी तब संसारी हैजाइगो जब मरैगो औ ये घरनमें
 जाइगो तब बिचार करनेकी सुधि न रहि जाइगी तेहिते जीतही आपनो घर
 बिचार तेरो घर वहहै जहांके गये फिरि न आवै सो तैं साहबको अंशहै सो साहब-
 के पास घर करु कहे ठौर करु जाते फिरि न संसारमें आवै ॥ १ ॥ सो कबीरजी
 कहैहैं कि हे प्राणिउ यहि अवसरमें कहे मनुष्य शरीर में जो साहबको नहीं
 जानौहौ तौ हे संतौ ! सुनौ तुमको अंतकालमें यह कठिन जो कालको घेराहै ताते
 कौन बचावैगो अर्थात् जहां जहां जाहुगे तहां तहांति काल तोको खाइ
 लेइंगो साहब बचावनवारे खड़े हैं ताको प्रमाण आगे लिखिही आये हैं ॥
 “अजहूं लेहुं छुड़ाइ कालसों जो घट सुरति सँभारै” सो साहबको जानिकै साह-
 बके पास जाय जनन मरण छूटि जाय ॥ २ ॥

इति अस्सीवां शब्द समाप्त ।

अथ इक्यासीवां शब्द ॥ ८१ ॥

तूतो ररा ममा की आंति हौ संत उधारन चूनरी ॥ १ ॥

बालमीकि बन वोइया चूनिलिया शुक्रदेव ।

कर्म बेनौरा हैरह्यो सुत कातै जयदेव ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो ब्रह्मा विष्णु महेश ।

नाम लेतें मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश ॥ ३ ॥

जिन जिह्वा गुण गाइया विन वस्तीका गेह ।
 सूने घरका पाहुना तासों लावै नेह ॥ ४ ॥
 चारि वेद कैंड़ा कियो निराकार कियरास ।
 विनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दास ॥ ५ ॥

तूतो ररा ममा की भांति हौ संत उधारन चूनरी ॥ १ ॥

जो तुम मनमाया ब्रह्ममें लगी रह्योहै सो तुम इनके नहीं हो तुमतो ररा ममा की भांतिहो अर्थात् राम जो मैंहीं तिनकी भांतिहो जैसे मैं विष्णु चैतन्य हों तैसे तुम अगु चैतन्यहो मेरे अंशहैं सो मेरो जो रामनामहै ताको उधारन नामकी चुनरी कबीरसंत मेरो बनायो है । यही रकार बीज में मकारहू है यहि हेतुते साहब रकारहीको कहै हैं अर्थात् जब राम नाममें जपौगे तब यह जानि जाहुगे कि मकार मेरो स्वरूपहै रकार साहबको स्वरूप है औ कबीर संत असार जो है जगतमुख अर्थ ताको त्यागिकै सार जो है साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण करिकै चुनरी बनाई है सो कहैहैं ॥ १ ॥

वालमीकि वन वोइया चुनि लिया शुकदेव ।

कर्म बेनौरा है रह्यो सुत कातै जयदेव ॥ २ ॥

माटीको है बहुत छिद्रहैं याते शरीर बल्मीक कहे बेमौरि है तामें जो रहै सो बाल्मीकि कहावै सो बाल्मीकि आत्मा है सो बाणी रूपी जो वन कहे कपा सहै ताको बोवत भयो अर्थात् वहीकी इच्छा शक्ति भई है। औ शुच शोके धातु है तेहिते शुक शब्द होइहै—ताको जो देव होइ सो शुकदेव कहावै है । सो शोच मनके होइ है अर्थात् सङ्कल्प विकल्प मनके होइ है सो शुकदेव मन है । सो आत्माते जो बाणीरूपी कपासके ढेड़ाको अनुसार भयो ताको चुनि लियो अर्थात् बाणी मैंने ते निकसी है अरु जय करिकै क्रीड़ाकरै अथवा जय विषय क्रीड़ाकरै सो जयदेव कहावै सो सबको जीति लियो है अज्ञान सो मूलाज्ञान जयदेव है तौनेमें कर्म बेनौरा है रह्यो है। विद्या जीवद्या माया सोई सृत है जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्म बुद्धितौनहै। जाके ऐसों

जो जीव जयदेव सो कातै है अर्थात् अहंब्रह्म बुद्धि जब समष्टि जीव कियोहै तबहीं मनकी उत्पत्ति भई कर्म भयो है संसार प्रकट भयो है ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो ब्रह्मा विष्णु महेश ।

नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश ॥ ३ ॥

तीनलोक जोहै सोई ताना तन्यो है ताको तीनि खूंटहैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोक के सतोगुण विष्णु आकाशके तमोगुण महेश पातालके । अरु अनेक जे नामहैं अनेक जे मतहैं अनेक जे ज्ञान हैं वेदमें सोई कपरा तयार भयो तिनको नाम लेत मुनि औ इंद्र औ सबराजा हारि गये । वही ब्रह्मरूपी कपराके गठियामें कसे रहि गये वासों निकसिकै मुक्ति न पावत भये अर्थात् मोको न जानत भये ॥ ३ ॥

बिन जिह्वा गुण गाइया बिन बस्ती कागेह ॥

सूने घर का पाहुना तासों लावै नेह ॥ ४ ॥

कहत का भये कि बिन जिह्वा जो गुण गावै है कहे अजपा जो है सोहं तौने अजपाको साथ गाइकै कहे जपि जपिकै बिन बस्तीको । गेह जो है ब्रह्म झूठा तौने कपराके गठिया के भीतर बँधि जात भये कहे यह मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं । सो वह घरतो देशकाल बस्तु पारिच्छेदते शून्य है सो जैसे सूने घरमें पाहुना जाय औ कुछ न पावै तैसे जीव उहां कुछ न पावत भयो । येतौ रामनाकको जगत्मुख अर्थ करि सब यह कपरा बिनो अरु श्रीकबीरजी साहबमुख अर्थकरि कौन कपरा बिनै हैं सो कहे हैं ॥ ४ ॥

चारि वेद कैंड़ा कियो निराकार किय रास ।

बिनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दास ॥ ५ ॥

चारि वेद को कैंड़ा करिकै औ निरङ्कारको राशि बनाइकै वही निरङ्कारके भीतरते निकासि लैजाइकै । अर्थात् प्रकाशरूप ब्रह्म कौनको प्रकाशहै ? तब यह बिचारेउ साहबके लोकको प्रकाशहै । लोक कौनको है । यही बिचार करिबो है ब्रह्मते वेदको तात्पर्य निकसिबो है सो चारिउ वेदको कैंड़ा करिकै ब्रह्म जो है राशि तौनेते वेदको तात्पर्य निकासि रामनामकी चूनरी श्रीकबीरजी कहै हैं कि

में बिनौहों । ताको हरिके जानिवेमें दाक्ष कहें दक्ष जेकोई विरले दासहैं ते पहि-
रै हैं अर्थात् रामनाम जपिकै साहबको जानै हैं । यहि पदमें वाल्मीकि को शुकदे-
वको जयदेवको जो अर्थ हम कियो है सोई अर्थ है काहे ते कि जेई वाल्मीकि
शुकदेवको अर्थ करै हैं तिनको यह ज्ञान नहीं रह्यो कि तीन लोक जब ताना
तानेगये हैं ब्रह्मा विष्णु महेश खूटा भये हैं तब वाल्मीकि शुकदेव जयदेव
नहीं रहे हैं ॥ ५ ॥

इति इक्यासीवां शब्द समाप्त ।

अथ बयासीवां शब्द ॥ ८२ ॥

तुम यहि विधि समुझौ लोई । गोरी मुख मंदिर वजोई ॥ १ ॥

एक सगुण षट चक्रहि वेधै विनु वृष कोल्हू मांजै ।

ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै मक्षगगन चढ़ि गाजै ॥ २ ॥

नितै अमावस नितै ग्रहण होइ राहु ग्रास नित दीजै ।

सुरभी भक्षण करै वेदमुख घन वरसै तन छीजै ॥ ३ ॥

पुहुमिक पानी अंबर भरिया यह अचरज का कीजै ।

त्रिकुटि कुंडल मधि मंदिरवाजै औघट अंबर भीजै ॥ ४ ॥

कहै कवीर सुनोहो संतो योगिन सिद्धि पियारी ।

सदा रहै सुख संयम अपने वसुधा आदि कुंवारी ॥ ५ ॥

तुम यहिविधि समुझौ लोई।गोरी मुख मंदिर वजोई॥ १

एक सगुण षट चक्रहि वेधै विनु वृष कोल्हू मांजै ।

ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै मक्ष गगन चढ़ि गाजै ॥ २ ॥

वह लोई जो है लपट कहे ज्योति सो ब्रह्मांडमें है ताको यहि विधिते तुम
समझौ । अथवा लोईकहे हे लोगौ ! तुम यहि विधिते समुझौ गोरी जो है कुंडलिनी
शक्ति नागिनी ताहीके मुख शरीररूपी मंदिर कहे मृदङ्ग अथवा मंदिर कहे षर

बाजै है अर्थात् परावाणी उन्हें ते निकासै है सोई पश्यंती ते मध्यमा आइ वैख-
रीमें प्रकट होइ है । षटचक्रको बेधिकै कुण्डलिनी शक्ति नागिनी जायहै ताके
साथ त्रिगुण ते युक्त जो एक सगुणजीव है सो जायहै सो वाकी विधि आगे
लिखि आये हैं । सो वृषभ तो उहां नहीं चलै है औ कोल्हू जो कुंडलिनीशक्ति
सो मांजै कहे देह मांजिकै उठै है सो पांच हजार कुंभक कियो तब श्वासनते
तपित होइहै अथवा खेचरीते सुधाबिंदु वाके ऊपर परचो ताकी शीतलता पाइकै
उठै है सो ब्रह्मांड में जाइकै अर्थात् जेतने रोज समाधि लगायो तेतने दिन रही
ताके साथ जीवहू गयो। सो कहै हैं किं, ब्रह्मांड जोरजोगुणहै ताको योगाग्निमें होमि
दियो सो रजोगुण जरचो तौ तमोगुण जरै है । अरु भक्ष जो जीवहै सो नाभीके
जलमें रह्यो तहांते चलिकै गगन जो ब्रह्मांडहै तहां गाजै है कहे यह कहै है कि
महीं मालिक हौं ॥ १ ॥ २ ॥

नितै अमावस नितै ग्रहण होय राहु ग्रास नित दीजै ।

सुरभी भक्षण करै बेद मुख घनवरसै तन छीजै ॥ ३ ॥

पुहुमिक पानी अंवर भरिया यह अचरज को कीजै ।

त्रिकुटि कुंडल मधि मंदिर वाजै औघट अंवर भीजै ४

खेचरी की दृष्टि तीनहै तामें एक पूर्णिमाहै कहे सर्वत्र पूर्ण देखै है । औ
ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा है । औ अंतरदृष्टि अमावस है । सो जब अंतर खेचरी चढ़ीं
औ कालूतरी आकाशमें बेधी कहे ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा में बेधी तब अंधकार अविद्या
ग्रहण है कै चैतन्यको छाड़ लियो । अर्थात् प्रथम अंधकार देखोपरो और कछु न
देखि परचो । पुनि बिजली ऐसी चमकी तब तारागण वीर्य है ताकी गति मालूम
भई। तब प्रथम सूर्य मण्डल पुनि चंद्र मण्डल देखोपरचो । सो वही ज्योतिमें लीन
रहैहैं समाधि लगी रहैहै जब समाधि उतरी तब जीवको अमावस भई तममें परचो
आइ । तब सूर्य प्रकाश देखत रह्यो ताको मायारूपी राहु ग्रसि लियो अथवा जब
नागिनिको सुधा पिआवैहै तब बहुत दिनकी समाधि लगैहै। अब जौन पुरुष रोज
समाधि लगावैहै औ उतारै है सो कहैहैं जब समाधि चढ़ाय लग्यो तब याको
अमावस हैगयो पूनि तममें परचो औ नित्य ग्रहण होइहै वे चंद्रमा औ सूर्य दुइ

नाड़ीहैं तिनको सुषुम्णारूपी राहु ग्रास देइहै अर्थात् ग्रसन करावै है वही सुषुम्णामें लीन कै देइहै। जब समाधि लगी तब सुरभी जोहै गायत्री माया कुंडलिनी शक्ति सो वेदमुख बाणी भक्षण कैलियो अर्थात् बाणी रहित द्वैगयो। औ तन छीजै है कहे दूबर द्वै जाइहै सो घन बरसै है कहे सुधा बरसै है याते बनो रहै है। पुहुमी का पानी जब अंबरमें भरन लगैहै कहे नीचे को वीर्य ब्रह्मांडमें चढ़ावन लगैहै तब शशि की सराई बनाइकै लिंगद्वार में डारै है पानी खैंचैहै जब राह साफ़ द्वै जाइहै तब पवनके साथ वीर्य चढ़ैहै तब पवन वीर्यके साथ जीवात्मा चढ़ि जाइहै त्रिकुटी में त्रिवेणीको स्नान करिकै दशौ अनहद सुनन लाग्यो तामें मंदिर कहे मृदंगौ हैं सो बाजै हैं औ घटते कहे बङ्गनालकी राहते जब जीवात्मा जाइहै तब अम्बर जो है गैबगुफाको आकाश सो भीजै है अर्थात् उहां वीर्य पहुंचि जाइहै सो यह आश्चर्य का कीजै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनौ हो संतो योगिन सिद्धि पियारी ।

सदा रहे सुख संयम अपने वसुधा आदि कुंवारी ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ ! यहि तरहकी जो सिद्धिहै सो योगिनको पियारिहै सो प्रथमतो सिद्धिही नहीं होइहै जो घुनाक्षर न्याय ते सदा सुख संयम में रहै औ सिद्धि भई समाधि लगी ताते फेरि वैसेही योगी भये अथवा पुहुमीपति भये योग करिकै हम यह शरीरके मालिक द्वैगये मनादिक हमारे बश द्वैगये परंतु जब यह शरीर छूटि जाइहै और शरीर होइहै तब वह सुधि सब भूलि जाइहै अरु जब पुहुमीपति भयो आपनेको राजा मानि लियो सो जब मरिगयो तब पुहुमी आनही की द्वै जाइहै पृथ्वी कुमारिही रहि जाइहै ॥ ५ ॥

इति बयासीवां शब्द समाप्त ।

अथ तिरासीवां शब्द ॥ ८३ ॥

भूला वे अहमक नादाना । तुम हरदम रामहिं ना जाना १
वरबस आनिकै गाय पछारा गला काटि जिउ आप लिया ।
जीता जिव मुरदा करि डारै तिसको कहत हलाल किया २

जाहि मासुको पाक कहतहैं ताकी उतपति सुनु भाई ।
 रज वी रजसों मासु उपानी मासु नपाक जो तुम खाई ॥३॥
 अपनो दोष कहत नहिं अहमक कहत हमारे बड़ेन किया ।
 उसकी खून तुम्हारी गर्दन जिन तुमको उपदेश दिया ॥४॥
 स्याही गई सफेदी आई दिल सफेद अजहूं न हुआ ।
 रोजा निमाज बांग क्या कीजै हुजरै भीतर बैठ मुआ ॥५॥
 पंडित वेद पुराण पढ़ै औ मोलनापढ़ै सो कुराना ।
 कह कबीर वे नरकगये जिन हरदम रामहिं ना जाना ॥६॥

१-५ तक के पदको अर्थ स्पष्ट है अंतके छठे तुकको अर्थ करै हैं। सब समें-
 टिकै जे हरमद कहे हर साइत श्वास श्वाशमें रामको नहीं जानते हैं ते नादान
 कहे बेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हरएकके दम कहे प्राणमें अंतर्योमी रूपमें
 व्यापक परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जे बेवकूफ नहीं जानते हैं ते मोलना
 पंडित भूलिगये जो वे आपने हुजरामें बैठिकै रोजा निमाज किया औ कुरान
 किताब पढ़ा औ जो पंडित अपने घरकी कोठरीमें एकांअवैरकै बहुत वेद
 शास्त्र को पढ़ा तौ का किया आखिर नरकही में गये अवैरकै कि काहूको
 न सुन्यो कि बिना रामको जाने मुक्त ह्वैगये ॥ ६ ॥ अवैरकै

इत तिरासीवां शब्द समाप्त ।

अथ चौरासीवां शब्द ॥ ८४ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ।

झंखत बकत रह्यो निशि वासर मति एकौ नहिं जाना ॥१॥
 शक्ति न माने सुनति करतहौ मैं न बढौंगा भाई ।
 जो खोदाय तुव सुनति करतहै आपुहिं काटि किन आई ॥२॥

सुनति कराय तुरुक जो होना औरत की का कहिये ।
 अर्द्धशरीरी नारि बखानै ताते हिंदू रहिये ॥ ३ ॥
 घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरीको क्या पहिराया ।
 वो तौ जन्म कि शूद्रिनि परुसा सो तुम पांड़े क्यों खाया४॥
 हिंदू तुरुक कहाँते आया किन यह राह चलाई ।
 दिलमें खोज खोज दिलहीमें भिस्त कहाँ किन पाई ॥५॥
 कहै कवीर सुनोहो संतो जोर करतुहौ भारी ।
 कविरन ओट रामकी पकरी अंत चला पचिहारी ॥ ६ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ।

झंखत बकत रहौ निशिबासर मति एकौ नहिं जाना ॥ १ ॥

हे काजी ! तुम कौन किताबको बखानत रहौहौ निशिबासर वही किताबकों
 बकत रहौहौ अरु बाहीमें झंखत कहे शंका करत रहौहौ सो कुरान किताब
 तात्पर्यते जो एक साहबको बर्णन करै है ताको जो तुम्हारी मति न जानत
 भई तौ तुम कुरान किताबकी एकऊ बस्तु न जानत भये ॥ १ ॥

शक्ति न माने सुनति करतहौ मैं न बढौंगा भाई ।
 जो खोदाय तुव सुनति करति तौ आपु काटि किन आई२॥
 घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरी को क्या पहिराया ।
 वोतो जन्म की शूद्रिनि परुसा सो तुम पांड़े क्यों खाया३॥

सुनति किये जो मानतेहौ कि, हम मुसलमान हैं औ या नहीं मानते हौ कि,
 शक्ति जो माया सोई करैहै सो हे भाई ! मैं न बढौंगा जो खोदाय तेरी सुनति
 करतो तौ पेटही ते कटी आउती ॥ २ ॥ सो हे पंडित ! आपनी आत्माकों
 साहबकी शक्ति न मान्यो । अरु ब्रह्मसाहबको न जान्यो जनेऊ पाहिरिकै तुमतो
 ब्राह्मणभये औ अपनी मेहरीको कहा पहिरायौहै जाते वह ब्राह्मणी भई सो

तिहारी स्त्री तो जन्मकी शूद्रिनिहै सो परसैहै औ हे पाड़ि ! तुम खाउहौ ताते
तुम कैसे ब्राह्मण भये ब्राह्मण तौ ब्रह्म जानते कहावैहै ॥ ३ ॥

हिन्दू तुरुक कहाते आया किन यह राह चलाई ।
दिलमें खोज खोजु दिलहीमें भिड़त कहां किन पाई ॥४॥

आत्मातों एकईहै हिंदू तुरुक ये शरीरके भेदहैं यह शरीर कहां ते आयोहै
औ यह राह कौन चलायो है अर्थात् बीचैते आये हैं बीचैते जायँगे सो दिलमें
तुम खोजौ उसका खोज दिलही में है औ कौन भिड़त पायोहै अर्थात् खोदा-
यका बंदा जो तिहारो जीवात्मा है जो हिंदू तुरुकमें एकई है सो तिहारे दिल-
हीहै उसको जानो तो जानि परै उसके मिलनको खोज कहे राह वही
आत्माहै जब आपने स्वरूपको जानोगे तब बाको पावोगे ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जोर करतु है भारी ।

कविरन ओट रामकी पकरी अंत चला पचिहारी ॥५॥

कबीरजी कहैहैं कि हे संतों! सुनौ यह जीव आपने छूटि जाइबे को बड़ा जो-
र करैहै कहे बहुत उपाय करै है नाना मतन करिकै ते कबीर काया के बीर
जे जीवहैं ते औरें औरे मतनमें लगिकै राम अल्लाहके ओट के और पकरत
भये कहे और २ जे मतहैं ते राम अल्लाहके ओट के देनबारेहैं तिनको पक-
रिकै अथवा कबीर जे जीवहैं ते रामकी ओट न पकरत भये अर्थात् आपने
जीवात्माको साहबको बंदा न जानत भये राम अल्लाहको बिसरि गये ताते
अंतमें पचिकै कहे मरिकै अरु वे मतनते हारिकै चलेगये। जो यह मानि राख्यो
तैं कि हमको स्वर्ग बिहिड़त होइ हम ब्रह्म होईंगे सो एकऊ न भये जौन कर्म कारि
राख्यो तैसोई कर्म नरक स्वर्गनमें भोग करन लग्यो ॥ ५ ॥

इति चौरासीवां शब्द समाप्त ।

अथ पचासीवां शब्द ॥ ८५ ॥

भूला लोग कहै घर मेरा ।

जा घर वामें फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा ॥ १ ॥

हाथी घोडा बैल वाहनो संग्रह कियो घनेरा ।

वस्तीमें से दियो खदेरी जंगल कियो बसेरा ॥ २ ॥

गांठी बांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा ।

बीबी बाहर हरम महलमें बीच मियांको डेरा ॥ ३ ॥

नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझै जन्म २ अरुझेरा ।

कहै कबीर मुनो हो संतो यहि पद करो निवेरा ॥४॥

भूला लोग कहै घर मेरा ।

जा घरवा में फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा ॥१॥

साहबको पार्षदरूप जो है हंसस्वरूप आपनो सांच शरीर ताको भूले लोग कहैहैं कि यह मिथ्या जो स्थूलशरीर सो हमाराहै सोजा घर स्थूल शरीरमें तैं फूलाडोलै है मेरो शरीरहै सो तेरा घर कहे शरीर नहीं है ॥ १ ॥

हाथी घोडा बैल वाहनो संग्रह कियो घनेरा ।

वस्ती मेंसे दियो खदेरी जंगल कियो बसेरा ॥ २ ॥

गांठी बांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा ।

बीबी बाहर हरम महल में बीच मियां को डेरा ॥ ३ ॥

बहुत हाथी घोड़े बैल इत्यादिक वाहनको संग्रह कियो परंतु जब तैं शरीर रूपी बस्तीते खदेरि जाइगो कहे शरीर छूटि जाइगो तब जंगलमें कहीं पीपरके तर भूत हैके बसेर कहे बास करैगो अरु वह शरीरहूको बाहर खदेरिलै दमशानमें जारि देखैगो तब वह हाथी घोड़े औरहीके है जाईगो ॥ २ ॥ गांठी बांधि-
धरयो अरु खर्च न पठयो कहे पुण्य न कियो जो वह लोकमें मिलिकै बहुरिकै

फेरा न कियो कहें यह शरीरमें नहीं पावैहै सो बीबी जो है साहबकी दई
सुरति सो बाहरहै कहे संसार मुख है रही है औ हरम कहे लौंडी जो है माया
सो महलमें है कहै सब शरीरन में है ताके बीचमें मियां जो है जीव ताको डेराहै
ताको वह माया घेरे है ॥ ३ ॥

नौमन सूत अरुझि नहिं सुरझै जन्म जन्म अरु झेरा ।

कहै कबीर सुनो हो संतौ यहि पद करो निबेरा ॥ ४ ॥

सो नौमन कहे नित्यही नवीन जौ मनहै अर्थात् मनके दिये नाना शरीर
होयहैं सो नाना कर्म नाना मत जे सूतहै तिनमें अरुझिकै सुरझै नहीं है सो
कबीरजी कहैहैं कि हे संतौ! यह पद को निबेरा करो कहें पांचों शरीरमें अरुझो
नो है मन ताते भिन्नहोउ तौ तुम शरीरनते भिन्न हैजाउ ॥ ४ ॥

इति पचासीवां शब्द समाप्त ।

अथ छियासीवां शब्द ॥ ८६ ॥

कविरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना ।

गुरुकी कही करत नहिं कोई अमहल महल देवाना ॥ १ ॥

सकल ब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा ।

मन मत कर्म धरै सब देही नाद बिंदु विस्तारा ॥ २ ॥

सकल कबीरा बोलै बानी पानीमों घर छाया ।

लूट अनंत होत घट भीतर घटका मर्म न पाया ॥ ३ ॥

काभिनि रूपी सकल कबीरा मृगा चरिंदा होई ।

वड़ वड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सकै नहिं कोई ॥ ४ ॥

ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरंदर पीपा प्रहलद चाखा ।

हिरणाकुश नख उदर विदारा तिनहुंक काल न राखा ॥ ५ ॥

गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा ।
 उनकी खवरि कहत नहिं कोई कहां कियेहैं वासा ॥ ६ ॥
 चौपर खेल होत घट भीतर जन्मके पांसा ढारा ।
 दमदमकी कोइ खवरि न जानै करि न सकै निरवारा ॥ ७ ॥
 चारि दिशा महिमंड रचोहै रूम साम विच दिछी ।
 ता ऊपर कछु अजब तमाशा मारैहैं यम किछी ॥ ८ ॥
 सब अवतार जासु महिमंडल अनत खड़ो कर जोरे ।
 अद्भुत अगम अथाह रचोहै ई सबशोभा तोरे ॥ ९ ॥
 सकल कबीरा बोलै बीरा अजहूं हो हुशियारा ।
 कह कबीर गुरु सिक्किली दर्पण हरदम करो पुकारा ॥ १० ॥

कबिरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना ।
 गुरुकी कही करत नहिं कोई अमहल महल देवाना ॥ १ ॥

कबीरजी कहैहैं कि हे कबिरा! कायाके बीर जीव तेरो घर तो कँदलामें है
 कहे आनंदको कंद कहे सारांश जो है साहबको धाम तहां है तेरो घर या
 जगदमें नहीं है तैं नाहक भुलान रहै है यहां गुरु कहे सबते श्रेष्ठ जे परमपुरुष
 पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि अबहूं जो मोको जानो तौ मैं कालते छोड़ाइ लेउँ
 तिनको कह्यो कोई न मानिकै अरु आनंदको कंद उनको धाम छोड़िकै अमहल
 महल कहे जो कछु वस्तु नहीं है ऐसो जो है धोखा ब्रह्म तामें अरु कोई
 माया के प्रपंचमें देवाना है रह्यो है ॥ १ ॥

सकल ब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा ।

मन मत कर्म धरै सबदेही नाद विन्दु बिस्तारा ॥ २ ॥

हे हंस! कबीर कायाके बीर जीवते साहबको ब्रह्मही कहै हैं तिनको कहिबों
 कागन कैसी चोंचको पसारिबों है जैसे कागनके आगे जो दूध भात औ

आमिष धरिदेउ तौ दूध भात न खायँ आमिषही खायँ तैसे साहब पुकारतई जायहैं कि तुम मेरे पास आवो मैं तुमको हंसरूप देउँ ताको छोड़िके जीव माया ब्रह्मके धोखामें लग्यो कागई होइहै नाना कर्मके बासनन ते शरीर छूटतमें जहां २ मन को मत होइहै कहे जहां २ मन जाइहै तहां २ सब देह धरे है नाद बिंदुके बिस्तारते सो नाद बिंदुको बिस्तार लिखि आये हैं ॥ २ ॥

सकल कबीरा बोलै बानी पानी में घर छाया ।

लूट अनंत होत घट भीतर घटका मर्म न पाया ॥ ३ ॥

अरु ज्ञानी जे सब जीवहैं ते यह बाणी बोलै हैं कि यह शरीर पानी को घर छायाहै कहे पानीको बुझा है न जानो कब बिनशि जाय कहे छूटि जाय सो मुखते तो यह कहै है अरु घट कहे शरीरके भीतर अनंत कहे बिना अंतको जोहै साहब ताकी लूटि होइजाइहै ताको नहीं देखैहै यह आत्मा साहबको है तोको भुलाइके और मतनमें लगाइ देइहै वाको मर्म नहीं पावैहै ॥ ३ ॥

कामिनि रूपी सकल कबीरा मृगा चरिंदा होई ।

बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सकै नहिं कोई॥

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनि रूपीहै कहे मृगीरूपी है तामें जो चलै सो चरिंदा कहावैहै सो चरिंदा कहे चलनवारो जोहै मन सो मृगाहै जब यह जीवात्माको यमदूत एकपुतरा देखावै हैं तब वह पुतरामें मनोमय जो लिंग शरीरहै सो जात रहै है अरु वही के साथ जीव प्रवेश करिजाइहै तब यमराज नाना कर्म भोग करावै हैं जौने शरीरमें मन लोभ्यो मरतमें वाको स्मरण भयों सोई शरीर कर्म भोग करिके धारण कियो सो मारितो यह भांतिते जायहै वह मंत्रको औ आत्मा के स्वरूपको कोई न पकरिपायो अर्थात् कोई न जान्यो ॥ ४ ॥

ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरंदर पीपा प्रहलद चाखा ।

हिरणाकुश नख उदर विदारा तिनहुँक काल न राखा॥

गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा ।

उनकी खबारी कहत नहिं कोई कहां किये हैंबासा॥६॥

ये चारि तुकनमें जिनको कहि आये हैं तिनको काल जब खाइ लियो है कहे इनके शरीर जब छूटि गये हैं तब ये कहां बास कियो है यह कोई खबरि न जानतभयो सो जहां गये है अरु जहांके गये नहीं आवै हैं तौने लोकको मूढ़जीव न जानतभये इहां नरसिंहो जीको लिख्यो तामें धुनि यह है कि उपासक आपने आपने उपास्यनके साथ साहबही के लोक जाइ हैं उपास्य उपासक दोऊ जहां परम मुक्तावस्था में जायँ सो वह साहब के लोकको ये बद्धविषयी जीव कैसे जानैं ॥ ६ ॥

चौपर खेल होत घट भीतर जन्मके पांसा ढारा ।

दम दमकी कोई खबरि न जानै करि न सकै निरुवारा ॥ ७ ॥

मन बुद्धि चित्त अंकार ये अंतःकरण चतुष्टय हैं सोई चौपरि है ताको खेल घटके भीतर है रह्यो है इनहींके योगते नाना जन्म होइ हैं सोई पांसा ढारिबो है सो दम दम कहे आपने इवास इवासकी खबरि तौ कोई जानै नहीं है कि आवत जातमें रकार मकार बिना जपे कब अंतःकरण शुद्ध है सकै है अरु कौं निरुवार करि सकै है अर्थात् कोई निरुवार नहीं करि सकै है अर्थात् या नहीं जानै है कि हमारो जीवात्मा कहां जपै है रकार मकार जीवात्मा सदा जपै है तामें “प्रमाण रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेषतुनः । राम रामेति वै मंत्रं जीवो अपति सर्वदा” ॥ ७ ॥

चारि दिशा महि मंड रचो है रूम साम बिच दिल्ली ।

ता ऊपर कुछ अजब तमाशा मारे है यम किल्ली ॥ ८ ॥

महिमंडल जो है शरीर तामें नाभि हृदय कंठ त्रिकुटी ये चारि दिशा रचत भये अरु रूमकहे सहस्रदल कमल है अरु साम सुरति कमल है तौ ने सुरति कसलके बीचमें दिल्ली है परंतु गुरुको स्थान तास्थानके ऊपर अजब तमाशा है । सो कौन योगी प्राण चढ़ाइके सहस्र दल कमलों जाइ है कोई परम योगी प्राण चढ़ाइके सुरति कमलों जाइ है परमपुरुष स्थानके ऊपर जहां अजब तमाशा है तहां कोई नहीं जाइ सकै है काहेते कि यमकिल्ली मारे है कहे दशवां दुवार बंद किये है अजब तसाशा वह कैसे देखै सो कहै हैं कि यह ब्रह्म रंधते साकेत लोक जाको कहै हैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको धाम वही साकेत लोकको दशवां स्थान फकीर

लोग जाहूत कहे हैं । तहांलों ब्रह्म ज्योतिकी डोरि लगी है वही डोरीको मक-
तार कहैहैं सो वह मकतार सुषुम्णामें लगेहै जब परमगुरु रामनाम बताई है
तब वही सुषुम्णा हैकै मकतारकी डोरी हैकै साहब के लोक जाय है तहां-
अजब तमाशा कौनहै कि उहांके त्रिगुण गुल्म छता देखे तो पांचभौतिकं से
परेहै पै पांचभौतिक नहीं है आनंदरूप है ॥ ८ ॥

सब अवतार जासु महि मंडल अनंत खड़ो कर जोरे ।

अद्भुत अगम अथाह रचोहै ई सब शोभा तोरे ॥ ६ ॥

सकल अवतार औ ईश्वर अनंत जिनके आगे कर जोड़े खड़े हैं वह साहब
लोक कैसो है अद्भुतहै कहे आश्चर्य है बचनमें नहीं आवै है औ अगमहै कहे
उहां काहूकी गम नहीं है औ अथाह है कोई बर्णन करिकै थाह नहीं पायो कि
यतनहै सो हे जीव! यह सब शोभा तोरे साहबकी है तेरे देखिबे योग्यहै काहेते
कि साहबो द्विभुजहै औ तैंहू द्विभुजहै और तो सब ईश्वर अवतार कोई अष्टभुज
कोई चतुर्भुज मत्स्य कूर्म इत्यादिक हैं अथवा साहबके लोकमें जे ईश्वर अव-
तार आदिक हैं ते सब अपनी शोभाको मंडल तोरे हैं अर्थात् उनकी शोभा
साहबकी शोभाते मंद देखि परैहै ॥ ६ ॥

सकल कबीरा बोलै वीरा अजहूं हो हुशियारा ।

कह कबीर गुरु सिकिली दर्पण हरदम करो पुकारा ॥ १० ॥

हे सब कबीरौ! कायाके बीर जीवौ वही बीरा लेऊ अर्थात् परम पुरुष पर
जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बीरालेऊ अजहूं हुशियार होऊ जे मतनमें गुरुवा
लोग समुझाई समुझाई लगाई दिये है तिन मतनमें जब भर तुम रहोगे तब
भर तुम्हारो जन्म मरण न छूटैगो ताते मतनको छोड़िदे सुरति कमलमें जेपरम
गुरुहैं ते सिकिलीगरहैं तुम्हारे अंतःकरण साफ करिबेको ते राम बतावै
हैं सो वा राम नाम सुनिकै हरदम पुकार करो तब साहबके इहां पहुंचौ
अरु सब अवतार ईश्वर उनके द्वारे हाथ जोरे खड़े हैं तामें प्रमाण शिवसंहि-
तामें हनुमान्जी प्रति अगस्त्यजी कहै हैं ॥ “आसीनं तमयोध्यायां सहस्र-
स्तम्भमंडिते । मंडपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥ मत्स्यःकूर्मःकिरि-

नैको नारसिंहोऽप्यनेकधा । वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥ यज्ञो नारा-
यणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च । देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बल्लोऽपि च ॥ पृष्णि-
गर्भो मधुन्माथी गोविंदो माधवोऽपि च । वासुदेवो मरोऽनंतः संकर्षण इरापतिः ॥
प्रद्युम्नोऽप्यनुरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपि सर्वदा । रामं सदोपतिष्ठन्ते रामदेहा व्यव-
स्थिताः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः । तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मू-
लत्वाच्चिरादिवरः ॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिः प्रभुः । विष्णुस्स्वयं
स विष्णूनां पतिर्वेदांतकृद्भिः ॥ ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्त्ता प्रजापतिपतिर्गतिः । रुद्रा-
णां सपती रुद्रः कोटिरुद्र नियामकः ॥ चंद्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च ।
अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोशतानि च ।
महाभैरवकालादिकोट्यर्बुदशतानि च ॥ गंधर्वाणां सहस्राणि देवकोटिशतानि च ।
सभां यस्य निषेवंते स श्रीराम इतीरितः ॥ इति ॥ औ कबीरहू जी को प्रमा-
ण ॥ “जहँ सतगुरु खेलै ऋतुवसंत । तहँ परम पुरुष सब साधु संत ॥ वह तीन
लोकते भिन्नराज । तहँ अनहद धुनि चहुँ पास बाज ॥ दीपक बरै जहँ निराधार ।
बिरलाजन कोई पाव पार ॥ जहँ कोटिकृष्ण जोरे दुहाथ । जहँ कोटिविष्णु नावै
सुमाथ ॥ जहँ कोटिन ब्रह्मा पढ़ पुरान । जहँ कोटि महादेव धरै ध्यान ॥ जहँ
कोटि सरस्वति करै राग । जहँ कोटि इन्द्र गावने लाग ॥ जहँ गण गंधर्व मुनि
गनिन जाहिं । सो तहँवां परकट अणु आहिं ॥ तहँ चोवा चन्दन अरु अबीर । तहँ
पुहुपबास भरि अतिगंभीर ॥ जहँ सुरति सुरङ्ग सुगन्धलीन । सब वही लोकमें
बास कीन ॥ मैं अजरदीप पढुँच्यो सुजाइ । तहँ अजर पुरुषके दरश पाइ ॥
सो कह कबीर हृदया लगाइ । यह नरक उधारण नाम जाइ ॥ १० ॥

इति छियासीवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तासीवां शब्द ॥ ८७ ॥

कबिरा तेरो घर कंदलमें मनै अहेरा खेलै ।

बपुवारी आनंद मीर्गा रुची रुची शरमेलै ॥ १ ॥

चेतत रावल पावन षंडा सहजहि मूलै बांधै ।

ध्यान धनुष धरि ज्ञान वान बन योग सार शर साधै ॥ २ ॥

षट् चक्र वेधि कमल वेध्यो जब जाइ उज्यारी कीन्हा ।
 काम क्रोध अरु लोभ मोह ये हांकि साउजन दीन्हा ॥ ३ ॥
 गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा जहां दिवस नहिं राती ।
 दास कबीर जाय सो पहुंच्यो सब बिछुरे संग सँघाती ॥ ४ ॥

कविरा तेरो घर कंदलमें मनै अहेरा खेलै ।

बपुवारी आनंद मीर्गा रुची रुची शरमेलै ॥ १ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे कबीर ! कहे कायाके बीरजीव तेरोवर कंदलमें है
 कहे आनंदको कंद कहे सार जो साहबको धाम है तहां है। जो कहो संसार कैसे
 भयो तौ तेरोबपु शिकारी बपुरी जो है नाना शरीर तेई वारी हैं। शिकारी जहां
 हांकि है सो वारी कहावै है। तहां जाइके बिषयानंद ब्रह्मानंद जे हैं मृगाको शिकार
 खेलै हैं कोई विषयानंदरूप मृगामें वृत्ति शर मारि भोग करै हैं कोई शिकारी
 मन ब्रह्मानंदरूप मृगाको वृत्ति शर मारि भोग करै हैं ॥ १ ॥

चेतत रावल पावन षंढा सहजहि मूलै बांधै ।

ध्यान धनुष धरि ज्ञानवान बन योग सार शर साथै २ ॥

षट् चक्र वेधि कमल वेध्यो जब जाइ उज्यारी कीन्हा ।

काम क्रोध अरु लोभ मोह ये हांकि साउजन दीन्हा ३

जो शिकार खेलबो कैसे छूटे या मनको तौ रावल कहे सबके राजा ताको
 पावन कहे पावनको चेत करत कहे स्मरण करत अथवा पावन कहे पवित्र
 हैकै षंढा कहे नपुंसक ब्रह्म तद्रूप जो जीव सो सहज समाधि लगाइके
 मूलबंध करै यहै ध्यान जोहै धनुष तौनेको धरिकै साहब में आत्मा को लगाय
 दीबो जो बाण यही योगसार रूप शर साथै ॥ २ ॥ सोई योग बतावै हैं
 जे हठ योग करै हैं ते कुंडलिनी उठायके छड़उ चक्र बेधै हैं इहां कुछ कुंडलि
 नी उठाइबेको प्रयोजन नहीं है वह जो ब्रह्म ज्योतिकारकी मूलाधार चक्रते लै
 ब्रह्मांड है साकेतमें लगीहै सो छड़उ चक्र को बेधिकै लगी है सुषुम्णा नाडी

हैकै ता ज्योतिरूपी डोरीमें गुरुजो युगुति बतावै है तौनी युगुति ते सुरतिके साथ जब जीवको साजि दियो तब छड़उ चक्र को आपही वह ज्योति बेधै है सो वह ज्योतिके भीतर हैकै षट्चक्र बेधिकै सहस्रदल कमलको बेध्यो तब उहां उजियारी देख्यो जाइ ब्रह्म प्रकाशकी तब काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ई जे सावज हैं तिनको हांकि दीन्ह्यो कहे दूरिकै दीन्ह्यो ॥ ३ ॥

गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा जहां दिवस नहिं राती ।

दास कबीर जाय सो पहुंच्यो सब बिछुरे संग सँघाती ४

जहां सुरति कमलमें परमगुरु रकार मकार कहै हैं औ दशौ द्वार बंदहैं तहां न दिवसहै न रातिहै वह प्रकाशरूप ब्रह्मई है । सो उहां परम गुरुते राम-नाम सुनिकै वही नामते दशवों द्वार खोलिकै वही डोरी हैकै दासजो कबीर जीव है सो परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोकको पहुंचे जाइहैं तब संगके संघाती जे हैं चारिउ शरीर अरु प्रकाशरूप ब्रह्म जो है कैवल्य शरीर ताहूको बिछोह हैजाई है। अथवा कबीरजी कहै हैं किं, मैं जो हौं साहबको दास सो अनिर्वचनीय पार्षद शरीर जो है हंसशरीर ताको पाइकै वोही डोरी ब्रह्मज्योति हैकै अनिर्वचनीय जो है साहबको धाम तहाँ पहुंच्यो जाइ । तहां हे जीवो ! तुमहू पहुंचौ यह भ्रममें काहे परेहौ तुम तौ साहबके आनंदकन्द धामके हौ साहबके दास ताते रहित औ जौन तुम मानौ हौ सो तुम नहीं हौ ॥ ४ ॥

इति सत्तासीवां शब्द समाप्त ।

अथ अष्टासीवां शब्द ॥ ८८ ॥

गुरुमुख ।

सावज न होइ भाई सावज न होइ ।

वाकी मांसु भखै सब कोई ॥ १ ॥

सावज एक सकल संसारा अविगति वाकी बाता ।

पेट फारि जो देखिये रे भाई आहि करेज न आता ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसुरे भाई पल पल मांसु बिकाई ।
 हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै आगि धुवां नहिं खाई ॥ ३ ॥
 शिर औ सींग कछू नहिं वाके पूंछ कहां वह पाई ।
 सब पाण्डित मिलि धन्धे परिया कबिर वनौरी गाई ॥४॥

सावज न होइ भाई सावज न होइ। वाकी मांसु भखै सब कोइ १

साहब कहै हैं कि, जेहि शब्द ब्रह्ममें तुम लगे हो औ तुमको वही भुलाय
 दियो सो सावज न होइ तौने शब्दको तात्पर्य्य तुम नहीं बूझो वहीके मांसको
 तुम सब भक्षौहो कहे बाणी सब कहौहो औ वही मांस सब जगदहै ताहीको
 भक्षौहो कहे भोग करोहो अरु वाको तात्पर्य्य सत्य पदार्थ जो मैंहों ताको नहीं
 जानौहो संपूर्ण बाणीको बिस्तार असत्यहै मैंहीं सत्यहों ॥ १ ॥

सावज एक सकल संसारा अबिगति वाकी वाता ।

पेट फारि जो देखिये रे भाई आहि करेज न आता २

सो वाको पेट फारिकै जो देखिये अर्थात् जो वाको बिचारिकै देखिये तात्प-
 र्य्यते तो जो तुम बिचार करिराख्योहै कि शब्द ब्रह्मके अर्थ को सारांश करेज
 निर्गुण ब्रह्म है सो नहीं है वेदतो तात्पर्य्य ते मोको वर्णन करै है अरु त्रिगुण
 माया आंतहै सो वाकी बात अबिगति है कहे अव्यक्त है काहूके जानिवे योग्य
 नहीं है जो मोको जानै है सोई वह सावज को जानै है ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसुरे भाई पल पल मांसु बिकाई ।

हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै आगि धुवां नहिं खाई ॥ ३ ॥

पल का कहावै है सो वह शब्द ब्रह्मकी मांसु जो है बाणी सोहे भाइअ ऐसी
 है कि, पल पल कहे टका टका को बिकोइहै अर्थात् को बिकाइहै तामें प्रमाण ॥
 “कबीरजीको चौरासी अंगकी साखी ॥ “गली गली गुरुवा फिरैं दिक्षा हमरी लेहु ।
 की बूझी की ऊबरौ टका परदनी देहु” ॥ थोरे थोरे अक्षरके मंत्र गुरुवा लोग
 देखैं औ शिष्यनसों धन लेइहैं अरु केवल शब्द ब्रह्मते मुक्ति नहीं होइहै तामें

प्रमाण ॥ “शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि । श्रमस्तस्य श्रमफलं-
ह्यवेनुमिव रक्षत” । इति भागवते ॥ सो जब वे गुरुवा मंत्र दियो तब बाणी
को जो हाड़ गोड़ रहै ज्ञानकांड कर्मकांड ताको घूर पँवारि दियो कहे ज्ञानकांड
कर्मकांड घूर हैं तहां फेंकि दियो । उपासनाकांडी वह मंत्र दैकै उपासनामें
लगाइ दियो तहां मंत्र दियो सो उन न जप्यो जाते ज्ञानाग्नि उत्पन्न होइ अरु श्रम
जैरै औ धुवां जे हैं कल्मष ते निकसि जायँ सो बाणीरूपी वह मांसु ज्ञानाग्निते
पकाइ नहीं गई अर्थात् वह मंत्रको अर्थ न जान्यो औ न अभ्यास कियो वह
अज्ञानरूपी धुवां गुँगुआतै रह्यो निर्धूम न भई ॥ ३ ॥

शिर औ सींग कछु नहिं वाके पूछ कहां वह पाई ।

सब पंडित मिलि धन्धे परिया कविरं बनौरी गाई ॥४॥

औ शिर जेहें नित्य शब्द औ कार्यशब्द ते वाके नहीं हैं औ चारि जे सींग
हैं नाम धातु उपसर्ग निपात ते वाके नहीं हैं काहेते कि, वाको अनिर्वचनीय कहैं हैं।
तौ पूछ जोहैं ब्रह्म द्वैजबो मोक्ष ताको कहां पावैगो अर्थात् जहांभर बचनमें आवैं हैं
सो सब मिथ्याहैं जो कहो मोक्षऊको रहि जाइबो न कह्यो तो रहि का गयो । तौ
शब्द तो तात्पर्य करिकै वर्णन करै हैं कि, निर्गुण सगुणके परे परम पुरुष जो मैं
ताको सदाको अंश यह जीव है यह जो बिचार करै कि, मैं उनको हौ तौ
बद्धही नहीं है मुक्त काहेते होइ मुक्तही बनोहो बद्ध मुक्ततो कथन मात्रहै तामें
प्रमाण ॥ “अज्ञानसंज्ञौ भवबंधमोक्षौ द्वौ नामनान्यौ स्त ऋतज्ञभावात् । अज्ञानचि-
न्त्यात्मनि केवले परे विचार्यमाणे तरणाविवाहनी” इति भागवते ॥ अरु तात्पर्य
करिकै शब्द यह मोहींको वर्णन करै है सो भागवतादिकनमें प्रसिद्ध सुनै है तऊ
मूढ़ नहीं मानै है ॥ “शब्दब्रह्मपरब्रह्मममोभे शाश्वतीतनू” ॥ अपने अपने अर्थ
बनाइकै गाइ रहे हैं मोको नहीं जानै हैं सब पंडित धंधेमें परि रहे हैं नानामत
बनाइ रहे हैं तिनकी बनौरीको कबीर जे हैं जीव उनके सब शिष्य ते गावै हैं
अर्थात् अपने अपने आचार्यन के मीतमें आरूढ़ हैं जो और कोई कहै है तौ
लड़े हैं अरु पारिख करिकै सब वेदनको तात्पर्य जो मैं हौं ताको नहीं जानै हैं
शब्द ब्रह्म तात्पर्य करिकै परम पुरुष पर जो मैं हौं ताहीको वर्णन करे हैं ॥४॥

इति अष्टासीवां शब्द समाप्त ।

अथ नवासीवां शब्द ॥ ८९ ॥

सुभागे केहि कारण लोभ लागे रतन जन्म खोये ।
 पूरव जन्म भूमिके कारण बीज काहेको बोये ॥ १ ॥
 पानीसे जिन पिंडै साजे अगिनिहि कुंड रहाया ।
 दशौ मास माताके गर्भ कटि बहुरि लागिली माया ॥ २ ॥
 बालकसे पुनि वृद्ध हुआहै होनी रही सो होये ।
 जब यम ऐहें बांधि लैजैहें नयन भरी भरि रोये ॥ ३ ॥
 जीवनकै जिन आशा राख्यो काल गहे है श्वासा ।
 वाजीहै संसार कबीरा चित चेति ढारो पासा ॥ ४ ॥

हे सुभागे ! जीव तैंतो मेरौ है यह संसारमें जो तैं लोभकियो सो कौने
 कारण कियो काहेते कि आपने दुःख पाइवे को कोई उपाइ नहीं करैहै जैसे
 मनादिक कारिकै संसारमें परिगयो तैसे जो मेरो स्मरणकरत तो मैं हंसस्व-
 रूपदेत्यों तामें स्थितहैंकै मेरे धामको पहुँचते । सो तैं रत जोहै यह मानु-
 षजन्म ताको धोइडारयो पूर्वजन्मकी भूमिकाके कारण कहे पूर्वजन्ममें जैसे
 कर्म करिराखे हैं तैसे सुख दुःख यह जन्म पावै है अरु जो यह जन्म करै है
 सो वह जन्ममें दुःख सुख पावैगो सो आंखिन तो देखि लिये कोई सुखदुःखके
 कारण रूप बीज तैं काहेको बोये और सब पदनको अर्थ स्पष्टई है ॥ १।४ ॥

इति नवासीवां शब्द समाप्त ।

अथ नब्बे शब्द ॥ ९० ॥

गुरुमुख ।

संत महन्तौ सुमिरौ सोई । जो कलहफांससों वाचा होई १
 दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्यास्वाद भुलाना ।
 मथिकै घृतको काढ़यो ताहि समाधि समान ॥ २ ॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना ।
 ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ॥ ३ ॥
 वशिष्ठ शिष्ट विद्या संपूरण राम ऐसे शिष शाखा ।
 जाहि रामको करता कहिये तिनहुंक काल न राखा ॥४॥
 हिन्दूकहै हमैं लै जरवै तुरुककहै मोर पीर ।
 दूनों आय दीनमों झगरै देखैं हंसकवीर ॥ ५ ॥

आगेके पदमें कहि आये काल इवासा गहे है सो चेति पांसा दारो कहे
 विचारि विचारि कामकरो सोई विचार बतावै है ।

संत महंतौ सुमिरौ सोई । जो कालफांससों बाचा होई ॥१॥

साहब कहै हैं कि, हे संतमहंतौ ! ताको सुमिरण करो जो कालफांसते
 बचो होइ ॥ १ ॥

दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्या स्वाद भुलाना ।
 सलिला मथिकै घृतको काढ़्यो ताहि समाधि समाना ॥२॥

जो कहो दत्तात्रेय आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्मही हैगये तेतो वाके मर्मकों
 कहे ज्ञानको जान्यो है सो प्रथम दत्तात्रेयऊ नहीं जान्यो काहेते कि वहतो
 धोखा मिथ्या है सो तेऊ मिथ्यास्वादमें भुलाइ गये यह न विचार्यो कि,
 जौन विचार करत करत रहिजाय है सो मेरो स्वरूप परम पुरुष पर श्रीराम-
 चन्द्रको दास है जब वे बिग्रह देइ हैं आपनो तब उनके पास जाइ है
 सो यह तो न जान्यो पानी को मथिकै घृत कढ़्यो वही धोखा ब्रह्मकी समाधिमें
 समाइ रह्यो सो कहूं पानिहूते घृत निकसै है उनके हाथ धोखई लग्यो ॥ २ ॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना ।
 ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ॥ ३ ॥

वशिष्ठ शिष्ट विद्या संपूरण राम ऐसे शिष शाखा ।

जाहि रामको करता कहिये तिनहुंक काल न राखा ॥ ४ ॥

अरु योग युक्तिको अनुमान करिके गोरख पवनराखै नहीं जान्यो कहे प्राण चढ़ावै नहीं जान्यो काहेते किं ऋद्धि सिद्धि संयममें लागिगये ब्रह्मके पार जे साहब हैं । तिनको न जान्यो ॥ ३ ॥ औ वशिष्ठ जे हैं संपूर्ण विद्यामें श्रेष्ठ तिनके राम ऐसे कहे श्रीरामचन्द्रहीके बरोबर रघुवंशी जिनमें शिष्य शाखा-भये तिनहुंको काल नहीं राख्यो अर्थात् यह शरीर उनहुंको न रह्यो औ राजन में जिनको राम को कर्त्ता कहै हैं कि श्रीरामचन्द्रको जे उत्पन्न कियो है ऐसे दशरथको काल न राख्यो । इहां गोरख आदिक योगी दत्तात्रियादिक ज्ञानी वशिष्ठ आदिक ब्रह्मर्षि ई सबते श्रेष्ठ हैं । याते संयोगी ज्ञानी ब्रह्मर्षि पृथ्वीके आइगये औ दशरथ महाराजको श्रीरामचन्द्रके बिछोह होत प्राण छूटिगयो सो ये सब राजर्षिते श्रेष्ठ हैं ताते दशरथ महाराज के कहे सब राजर्षि पृथ्वीभरके आयगये तिनहुंको काल न राखत भयो अर्थात् शरीरधारी कोई नहीं रहि जाइ है कोई योगकरि जो जियो तो ब्रह्माके दिन भर जियो महामलयमें जब ब्रह्माको नाश है जाइ है तब ब्रह्मांडई नहीं रहै है और कोई कैसे रहै सो हंस समाधि लैकै मिलत है ॥ ४ ॥

हिन्दूकहै हमें लै जरवै तुरुक कहै मोर पीर ।

दूनों आइ दीनमों झगरैं देखै हंस कवीर ॥ ५ ॥

जाको हंसस्वरूप साहब देइहै सो हंस स्वरूपमें स्थित हैकै साहबके पास जाइहै । सो साहब कहै है कि जो मोको जानै तौमैं हंसस्वरूप देऊँ तामें स्थित हैकै मेरे पास आवै । सो मोको तो जानै नहींहै हिंदूकहैहैं कि हम वह ज्ञानाग्नि कैके सबकर्म जारि देइंगे ब्रह्म होइ जाइंगे औ मुसल्मान कहै हैं कि पिरान जाहिर जो मक्का है तहां हमारो पीरहै हमारे खाबिंदहैं ते हमारे कर्म सब जारि देइंगे । फिरि दोनों आइ दीनमें झगरैं हैं वे कहै हैं कि तुम्हारा खोदाय झूठाहै वे कहै हैं कि तुम्हारा ईश्वर झूठा है सो जीवात्मा तौ मेरो बंदाहै सो आपने स्वरूपको जानिकै मोको जानै नहीं है आपने आपने अनुमानकरि आपने खाबिंद बनाइ लिये हैं

तिनको झगरा देखता कौन है जो सबके ऊपर होइ है सो साहब कहै हैं किं जिनको मैं हंसस्वरूप दियो है मेरे पास पहुंचै हैं ते सबके ऊंचेहैं उनको झगरा देखते हैं औ हँसते हैं कि सांच साहबतो एकई हैं ताको जानै नहीं हैं आपुसमें झगरते हैं ॥ २ ॥

इति नब्बे शब्द समाप्त ।

अथ इक्यानवे शब्द ॥ ९१ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनु धरि सुखी न देखा ।
उदय अस्तकी बात कहतहौं ताकर करहु विवेका ॥ १ ॥
बाटे बाटे सबकोइ दुखिया क्या गिरही बैरागी ।
शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भे माया त्यागी ॥ २ ॥
योगी दुखिया जंगम दुखिया तापसको दुखदूना ।
आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोई महल नहिं सूना ॥ ३ ॥
सांच कहौं तौ सब जगत्तीझै झूठ कहो नहिं जाई ।
कह कबीर तेई भे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥ ४ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनुधरि सुखी न देखा
उदय अस्तकी बात कहतहौं ताकर करहु विवेका ॥ १ ॥

जाको संसारमें देखै हैं ताको सबको दुखिये हेखैं तनुधरिकै सुखिया काहूको नहीं देखा काहेते कि गर्भते जो जीव निकस्यो तो माया लपटि जाती है सो उदय अस्त कहे सब संसारकी बात कहौहौं अरु ताकर तुम विवेक करत जाउ ॥ १ ॥

बाटे बाटे सबकोइ दुखिया क्या गिरही बैरागी ।

शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भे माया त्यागी ॥ २ ॥

आपने आपने वाटमें कहे आपने आपने मतमें सबको दुखिया देखते हैं क्या गिरही क्या बैरागी अर्थात् त्रिगुणके मतमें सब परे हैं मायाको दुःख कोई नहीं

छोड़े है जो जेतो पायो है सो वहीको सांच मानिकै सांचपदार्थ को नहीं जानै
है दुःखहीके कारण शुकाचार्य गर्भमें मायाको त्यागिदियो । शुकाचार्य गर्भमें
बारहवर्षके द्वैगये सो गर्भते न निकसैं कहैं कि जो हम निकसैंगे तौ हमको
माया लगि जायगी तब ब्रह्मादिक देवता सब जुरे आय न निकसे तब भगवान्
आइ कह्यो कि बरदाके सींगमें सरसौ धरि देइ जब भर सरसौ सींगमें रहै है
यतने काल भरमाया हम खँचेले हैं निकसिआ ओ सो शुकाचार्य निकसे नारासहित
बनको चलेगये साहबको मिले जाइ ॥ २ ॥

योगी दुखिया जंगम दुखिया तापसको दुख दूना ।

आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोई महल नहिं सूना ॥ ३ ॥

सांच कहौ तो सबजग खीझै झूठकहो नहिं जाई ।

कह कबीर तेई भे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥ ४ ॥

योगीजंगम सबदुखियाहैं अरु तापसको तो दूनदुःखहै काहेते कि आशा
तृष्णा सबके घटमें व्यापै है कोई महल सूननहीं है काहूको हृदय आशातृष्णाते
सून नहीं ह सबके हृदयमें आशा तृष्णा व्यापि रही ह ॥ ३ ॥ श्रीकवी-
रजी कहै हैं कि अपने अपने मतमें जीव लगे हैं सांच मानिकै जो सांचको
हम कहै हैं कि सांच जे परमपुरुष परश्वराम चन्द्रहैं तिनमें लगौ जिनको तुम
जानि राख्यो है ते असांचहैं तो खीझै हैं औ मोसों झूठ कह्यो नहीं जाइहै सो
जे जे गुरुवा लोग आपनी आपनी मतकी राह चलाई हैं ते दुखिया बँ गये हैं
तौ जिनको वे शिष्य बनायो है ते दुखिया काहे न होई ॥ ४ ॥

इति इक्ष्यानवे शब्द समाप्त ।

अथ बानवे शब्द ॥ १२ ॥

गुरुमुख ।

ता मनको चीन्हौ रे भाई । तनु छूटे मन कहां समाई ॥ १ ॥

सनक सनंदन जयदेव नामा । अंबरीष प्रह्लाद सुदामा ॥ २ ॥

भक्त सही मन उनहुं न जाना । भक्तिहेतु मन उनहुं न जाना ॥ ३ ॥

भरथरिगोरखगोपीचंदा। तामनमिलिमिलिकियो अनंदा ४
जा मनको कोइ जान न भेवा। ता मन भगन भये शुकदेवा ५
एकल निरंजन सकलशरीरा। तामें भ्रमि भ्रमि रहल कवीरा ६

जो कहि आये कि नाना उपासना करि सांच साहबको न जान्यो सो
इहां कहै हैं ॥

ता मनको चीन्हौ रे भाई । तनुछूटे मन कहां समाई ॥१॥
सनक सनंदन जयदेव नामा। अम्बरीष प्रहलाद सुदामा ॥२॥
भक्त सही मन उनहुं न जाना। भक्तिहेतु मन उनहुं न जाना ३

जा मनते नाना उपासना भई ता मनको हे भाई ! चीन्हौ यह मन के को
भयो है अर्थात् जौने मनते नाना उपासना ठाढ़ी कै लियो है सो मनतों तुम-
हींते भयो है सो यह विचारतो करो जब सब शरीर छूटि जाइ है तब मन
कहां समाई है अर्थात् तुमहीं में समाइ जाइ है सो मनके मालिकतौ तुमही
मनैते जो नाना उपासना ठाढ़ कै लियो है ते तुम्हारी उपासना सांच कैसे
होइगी ॥ १ ॥ सनक सनंदन सनत्कुमार नामदेव जयदेव अंबरीष प्रहलाद
सुदामा ये सब भक्त सही हैं संसारते छूटै हैं परन्तु मनको बोझ न जान्यो
जो मनको जानते तौ मनते भिन्नहै कै मनबचनके परे जो मेरो रामनाम है
ताहीको जपते । औरे औरेकी भक्तिको कारणजो है मन तेहि करिकै उनहूँको
मेरो प्रथमज्ञान न होतभयो फेरि जब औरे २ सपासननमें कुछ न देख्यो तब
साहब कहै हैं कि मोमें लगे काहेते कि वह मन आपैते होइहै अरु वह जीवा-
त्माके परे मैं हौं काहेते कि यह मन आत्मैते होइहै अरु वह जीवात्माके परे
मैंहीं काहेते कि मेरो अंशहै अरु ध्यानादि ज्ञानादिक सब मनते अनुमान करै
हैं ताते ज्ञानको अनुभव ब्रह्म औ ध्यान को अनुभव उपास्य देवता ये मनके
भीतर होवई चाहैं औ मन आत्माको है ताते मनमें आत्माको स्वरूप कैसे
आइ सकै वहतो मनते परे है सो जब मनको छोड़ै है तब चिन्मात्र रहि जाइ

है यातें मन बचनके परे आत्मा होवई चहै अरु जब मैं हंसस्वरूप देउहों
तामें स्थितहूँ मेरे पास आवते कल्पनाकारकै नानारूप में न लगते ॥२॥३॥

**भरथरिगोरखगोपीचंदा।तामनमिलिमिलिकियोअनन्दा ४
जामनकोकोइजाननभेवा।तामनमगन भये शुकदेवा ॥५॥**

भरथरी गोरख गोपीचंद जे हैं ते वही मनहीं में मिलिकै आनंद कियो
अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनन्द कियो सो ब्रह्ममनहींको अनुभव है ॥४॥
सो जौने मनको अनुभव ब्रह्म होइ है अरु वह ब्रह्म उपास्यकनमे अर्थ
आपनी नाना ईश्वर स्वरूप कल्पना करैहै तौने मनको भेद कोई नहीं
जान्यों तौने मनके मगनमें कहे; राह में शुकदेव ना भये गर्भहीते मायाको
त्यागि दियो औ सनक सनकादिक प्रह्लादादिक बहुत श्रमकरिकै फेरि फेरि
समुझ्यो है सो साहब कहै है कि मोको जानिके मेरे पास आये । इहां
रामोपासक शुकदेव को छूटिगये जो कह्यो तौ रामोपासक सब आइ गये ॥५॥

एकलनिरंजनसकलशरीरा।तामेंभ्रमिभ्रमिरहलकवीरा॥६॥

एक जो है निरंजन ब्रह्म सर्वव्यापी तिनहीं को नानाशरीर नारायणादिक
महेशादि रूपहै तिनहीं में सिगरे कबीर कायाके बीर भ्रमि भ्रमि रहतभये
कहे उनहींकी उपासना करतभये अपनो रूप औ मेरो रूप न जानत भये अरु
ब्रह्म नानारूप कल्पनाकरि लियो है तामें प्रमाण ॥ “उपासकानां कार्यार्थ ब्रह्मणो
रूपकल्पना” ॥ याको अर्थ मेरे सर्व सिद्धांतमें है औ रामोपासक शुकदेवको कहि
आये हैं सो शुकाचार्यई मुक्त द्वैगयेहै तामें प्रमाण ॥ “शुको मुक्तो वामदेवो वा
इति श्रुतेः” ॥ औ रामोपासक रहै हैं तामे प्रमाण ॥ “पादांबुजं रघुपतेः शरणं
प्रपद्ये” ॥ इति भागवते ॥ औ कबीरऊजीको प्रमाण ॥ “आदिनाम शुकदेवजो
पावा । पूर्वजन्मके कर्ममिटावा” ॥ ६ ॥

इति बानबे शब्द समाप्त ।

अथ तिरानवे शब्द ॥ ९३ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो येकलि है व्यवहारा ।
 को अब अनख सहे प्रतिदिनको नाहिं न रहनि हमारा ॥ १ ॥
 सुमृति सुभाव सवै कोई जानै हृदया तत्त्व न बूझै ।
 निरजिव आगे सर जिव थापे लोचन कछुव न सूझै ॥ २ ॥
 तजि अमृत विष काहेको अंचवै गांठी बांधो खोटा ।
 चोरनको दिय पाट सिंहासन शाहुको कीन्हो ओटा ॥ ३ ॥
 कह कबीर झूठो मिलि झूठा ठगहीठग व्यवहारा ।
 तीनिलोक भरि पूरि रहो है नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो येकलि है व्यवहारा ।
 को अब अनख सहे प्रतिदिनको नाहिं न रहनि हमारा ॥ १ ॥

बाबू केहे है जीवो! तिहारो यह संसार ऐसो है कि एक जो है मन ताहीके लिये यह संसारको व्यवहार है अरु वहीके छोड़ै ते संसार छूटि जाई है तामें प्रमाण ॥ “मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः” ॥ तामें कबीरजीको प्रमाण ॥ “मुक्ति नहीं आकाशमें मुक्ति नहीं पाताल । जब मनकी मनसा मिटै तवहीं मुक्ति विशाल” ॥ सो यह मनकी प्रतिदिनकी अनख कौन सहे अर्थात् अणुजो जीव है ताको प्रतिदिन खाइ लेइ है कहे अपनेमें मिलाइ लेइ है सो रोजरोजको याके स्वरूपको भुलाइबो कौन सहे यह मन हमारे रहनि माफिक नहीं है यह जड हम चैतन्य याते हम कैसे मिलेंगे ॥ १ ॥

सुमृति सुभाव सवै कोई जानै हृदया तत्त्व न बूझै ।
 निरजिव आगे सरजिव थापै लोचन कछुव न सूझै ॥ २ ॥

सो यहि तरहते मनको स्वभाव सुमृति जे स्मृति है तामें वर्णन है सो सवै कोई जानै है परन्तु हृदयमें जो मनको तत्त्वकहे स्वरूप है ताको कोई नहीं

बूझैहै कि हम यहि मनते भिन्नहैं । निर्जीव जो मन है ताके आगे सजीव जो है
आत्मा ताको राखि देइहै कहे मिलाइ देइहै आंधरनको यह नहीं सूझि परै है कि,
चिद् जीवको जड़नमें मिलाइ जड़ काहे करैहै औ आत्मा देहको एकही मानै है ॥ २ ॥

ताजि अमृत बिष काहेको अँचवै गांठी बांधो खोटा ।
चोरनको दिय पाट सिंहासन शाहुको कीन्हो ओटा ॥ ३ ॥

अमृत जो है आपने आत्माको स्वरूप ताको छोड़िके बिष जो है मन तामें
लगिकै नाना पर्दाथनमें लागिबो तो है ताको काहेते अँचवै हैं कि गांठीमें
खोटा जो मनहै ताको बांधै हैं सो काहैं सो काहे बांधै हैं मनते भिन्नहीं हैं जाइहैं
आत्मा के स्वरूपको भुलाइकै मन में लगाइ देनवारे औ साहब को भुलाइ
देनवारे औ संसारमें डारि देनवारे ऐसे जे गुरुवा लोगहैं तिनको पाट सिंहा
सन देइ है कहे उनको गुरु करैहै औ शाहु जे साधु जनहैं मनते छोड़ाय देन-
वारे जे साहबको बताइ देइ आत्माको स्वरूप जनाइकै तिनको ओटा कीन्है है कहे
उनको दर्शनई नहीं लेइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर झूठे मिलि झूठा ठगही ठग व्यवहारा ।
तीनलोकं भरि पूर रहोहै नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि ऐसे जे लोगहैं ते झूठा जो मनको अनुभव ब्रह्महै
तामें मिलिकै झूठे हैं रहै हैं ठगै ठगको व्यवहार हैं रह्यो है सो तीन लोक में
वही भारपूरि रह्यो है सो पतिआइबे लायक नहीं है जो ठगमें लगैहै सो ठगही
हैं जाइहै जो कहो तीनलोकमें तो साधुहैं पतिआइबे लायक कोई न रह्यो यह
कैसे तो कबीर जी कहै हैं कि साधुजन तीनलोकके बाहरईहैं बे तीनलोकके भीतर
नहीं हैं काहेते कि तीनि लोक मनको पसाराहै अरु वे मनते भिन्न हैं ॥ ४ ॥

इति तिरानवे शब्द समाप्त ।

अथ चौरानवे शब्द ॥ ९४ ॥

कहौ निरंजन कवनी बानी ।

हाथ पांव मुख श्रवण न जिह्वा का कहि जपहु हो प्रानी ॥ १ ॥

ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी ।

ज्योतिहि ज्योति ज्योति दैमार तब कहँ ज्योति समानी ॥ २ ॥

चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया तिनहुं न यागति जानी ।

कहै कबीर सुनो हो संतो बूझहु पंडित ज्ञानी ॥ ३ ॥

जो कहौ मनहीं ते यह संसार है औ जब मनते छूटैगो तब ब्रह्मही है जाइ
गो तामें श्री कबीरजी कहै हैं ॥

कहौ निरंजन कवनी बानी ।

हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा का कहि जपहु हो प्रानी ॥ १ ॥

ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी ।

ज्योतिहि ज्योति ज्योति दैमारै तब वह ज्योति समानी ॥ २ ॥

कहौतौ निरंजन ब्रह्मको कौनी वाणीते कहौहौ वाको तौ मन बचनके प
कहौहौ तामें प्रमाण ॥ “यतो वाचो निर्वर्तते अप्राप्य मनसा सह” ॥ इति श्रुतेः ॥
अरु वाको तो बिना नाम रूप को कहौ हौ वाको कैसे जपौहौ औ कैसे ध्यान
करौहौ ॥ १ ॥ जो कहो वह प्रकाशरूप ब्रह्म है सो प्रकाशको ध्यान करें हैं प्रकाशमें
अपने आत्माको मिलाइ देइहैं ब्रह्म हमहीं है जाइहैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्म है
तामें आपने आत्माकी ज्योति ज्योतिकै कहे मिलाइकै जो कहिये वह ज्योति कौन
सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जब सब पदार्थ मिथ्या मानत मानत एक प्रकाशरूप
ब्रह्ममान्यो ताको मान्यो कि वहि ब्रह्म हमहीं ब्रह्म हैं सो जब भर यह माने
रह्यो कि वह ब्रह्म हमहीं हैं तब भर तो तिहारो अनुभव रहैहै औ जब अनुभव ऊ
मिटिगयो तब तुमहीं रहिजाउहौ तब वहि ब्रह्मकी कौन सहिदानी रहिजाइ है
अर्थात् कुछ नहीं रहिजाय है तुमहीं रहि जाउ हौ यही प्रकार जब ब्रह्मज्योति

आत्माकी ज्योति मिलायकै वहि ज्योति को दैमारचो कहे छोड़्यो अर्थात् सबको निराकरण कै कैवल्य शरीरमें प्राप्त भयो अरु वहूको छोड़्यो तब आत्माकी ज्योति कहां समाईहै सो कहै हैं जीवके मुक्त भये पर परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हंसस्वरूप जेइहैं तामें टिकिकै साहबकी सेवा जीव करैहै यह ज्ञानतो जीवजानै नहीं है वही ब्रह्म प्रकाश को जानिराख्यो है कि हमैहीं ब्रह्महैं सो जब मनको निराकरण है गयो तब ब्रह्महू को द्वैजाय है तब आत्मै रहिजाय है याते मनै को अनुभव ब्रह्महै सो जौने हंस स्वरूपमें बा ज्योति समाईहै ताको विचारकरो ॥ २ ॥

चारिवेद ब्रह्मा निजकहिया तिनहुं न या गति जानी ।
कहै कबीर सुनो हो संतौ बूझहु पंडित ज्ञानी ॥ ३ ॥

ब्रह्मा चारिवेदकह्यो तिनमें यहकह्यो कि मुक्तभये पर विग्रहको लाभ होयहै॥ “मुक्तस्य विग्रहो लाभः”॥इत्यादिक श्रुति आंखही कह्यो तऊ न जान्यो काहेते जो जानते तौ जगत् की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूपमें टिकिकै साहबके लोक-को चले जाते सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ ! सुनौ जाके सारासार विचारिणी बुद्धिहोय सो पंडित कहावै सोई पंडितहै सो हे ज्ञानिउ ! जिन संपूर्ण असारको छोड़ि कै सार जे साहबहैं तिनको ग्रहण कैलियो ऐसे जे पंडितहैं तिनसों बूझो वहगति वोई बूझैहैं तबहीं तिहारो धोखा ब्रह्म छूटैगो ॥ ३ ॥

इति चौरानवे शब्द समाप्त ।

अथ पंचानन शब्द ॥ १५ ॥

कोअसकरैनगरकोतवलिया। मासुफैलाय गीधरखवरिया १
मूस भो नाव मँजारि कँड़हरिया। सोवै दादुर सर्प पहरिया २
वैल वियाय गायभै वाँझा । बछवै दुहिया तिनतिन साँझा ३
नेतउठि सिंहस्यारसों जूझै । कविरक पद जन विरला बूझै ४

साहब कहैहैं या संसाररूपी नगरकी कोतवाली को करै जौने नगरमें शरीर-
रूपी मांस फैलाहै । गीध जो निर्जन काल सो रखवारहै औ जहां जीवको स्वरूप
ज्ञान जो मूसरूप नाव ताके बिलार कड़हरियाहै कहे गुरुवालोग औ दादुर जो
जीवहै सो सोवैह प्राण जो सर्प सो पहरी हैं पै ई नानाशरीरमें लैजाइहैं औ
गाय जो गायत्री सो आपने तात्पर्य छपाय राख्यो सो बांझ भई औ बैल जो
शब्द ब्रह्म सो बियाय है कहे नाना ग्रन्थरूप बछवा भये तेई बछवाको तीनि
तीनि सांझ दुहैहैं अर्थात् रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी सब वाही को दुहैहैं
कहे पढ़ै सुनैहैं औ सिंह जो विवेक है सो सियार जो कुमति तासों रोजही जूझैह
सो कबीर जोहै जीव ताको पद जोहै मेरो धाम ताको कोई विरला बूझै है जे
मेरे धाम को बूझै हैं ते संसारते छूटि जायहैं ॥ ४ ॥

इति पंचानवे शब्द समाप्त ।

अथ छानवे शब्द ॥ ९६ ॥

काकहि रोवहुगे बहुतेरा । बहुतक गये फिरे नहिं फेरा ॥ १ ॥
हमरी बात बतैं न सँभारा । बात गर्भकी तैं न बिचारा ॥ २ ॥
अब तैं रोया क्या तैं पाया । कहि कारण तैं मोहि रोवाया ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो नर लोई । कालके बशहि परौ मति कौई ॥ ४ ॥

का कहिकै रोवोहौ बहुत तरहते कि, ये हमारे भाईहैं, ई बाप हैं, ई पुत्र हैं
बहुत यही तरहते गयेहैं फेरि नहीं फेरेफिरे हैं ॥ १ ॥ सो जब जब हमको
तेरो दुःखदेखिकै करुणाभई हमारो वा तोको उपदेश दियो सो तू न सँभारे
जो करार किये तैं कि, मैं भजन करौंगो । सो न बिचारे । साहबको भजन न
कियो । अबतैं गर्भमें जाय जाय संसारमें आय आयकै रोवै है कहे दुःखपावैहै
सो क्या तैं पाये अब हमको तैं काहे रोवावैहै तेरो दुःख देखिकै मोको दुःख
होय है सो कबीरजी कहैहैं कि, हे नर लोगो ! साहबको जानौगे तबहीं कालते
बचौगे सो साहबको भुलायकै काहे कालके बशपरौहौ संसार दुःखपावौहौ ॥ ४ ॥

इति छानवे शब्द समाप्त ।

अथ सत्तानवे शब्द ॥ १७ ॥

अल्लह राम जीव तेरी नाई ।

जन पर मेहर होहु तुम साई ॥ १ ॥

क्या मूड़ी भूमिहिशिरनाये क्या जल देह नहाये ।

खून करै मसकीन कहावै गुणको रहै छिपाये ॥ २ ॥

क्या भो वजू मज्जन कीन्हे क्या मसजिद शिरनाये ।

हृदया कपट निमाज गुजारै कह भो मक्का जाये ॥ ३ ॥

हिंदू एकादशि चौबिस, रोजा मुसलम तीस बनाये ।

ग्यारह मास कहौ किन टारौ ये केहि माहँ समाये ॥ ४ ॥

पूरुब दिशि में हरिको वासा पश्चिम अलह मुकामा ।

दिलमें खोज दिलैमें देखो यहै करीमा रामा ॥ ५ ॥

जो खोदाय मसजिदमें बसतुहै और मुलुक केहि केरा ।

तीरथ मूरति राम निवासी दुइ महँ किनहुं न हेरा ॥ ६ ॥

वेद किताब कीन किन झूठा झूठा जो न विचारै ।

सब घट माहँ एक करि लेखै भै दूजा करि मारै ॥ ७ ॥

जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा ।

कविर पोंगड़ा अलह रामका सो गुरु पीर हमारा ८ ॥

अल्लह राम जीव तेरी नाई । जन पर मेहर होहु तुम साई १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे श्रीरामचन्द्र ! कोई तुमको अल्लाह कहैहै कोई रामकहैहै हिंदू मुसल्मान दोउनमें शरीरभेद है जीव तो एकईहै सबमें बिभु चैतन्य तुमहौ । अरु चैतन्यजीव है सो ज्योति तुम्हारी है हिंदू मुसल्मानको आत्मा तुम्हारी है तुमदूनोंके साईहौ ताते तुम्हारे जन जेहै हिंदू तुरुक दोऊ हैं तिनके ऊपर मेहरवानी करौ अर्थात् दयाकरौ ॥ १ ॥

क्या मूड़ी भूमिहि शिर नाये क्या जल देह नहाये ।

खून करै मसकीन कहावै गुणको रहै छिपाये ॥ २ ॥

कबीरजी कहै हैं कि, हिंदू तुरुक तुमको बिसराइके और और बिचारकरै हैं या चित्तमें न दीजै मिहर करिये काहेते कि, तुरुक मूड़ी भूमि जो गोर तामें शिर नावै है औ हिन्दू बहुत जलसों नहायै याते काहभयो आपको तो जनवै न कियो औ जीवनके गरकाटे है ऐसो खूनकरै तौन खून तौ छिपावै है आपते जे सर्वत्रपूर्ण हैं तिनको नहीं जानै है औ मसकीन जो फकीरसो कहावै है याते काहभयो ॥ २ ॥

क्या भो वजू मज्जन कीन्है का मसजिद शिर नाये ।

हृदया कपट निमाज गुजारै कहाभो मक्का जाये ॥ ३ ॥

हिंदू एकादशि चौबिस रोजा मुसलम तीस बनाये ।

ग्यारह मास कहाँ किन टारौ ये केहि माहँ समाये ॥ ४ ॥

हिन्दू बहुत प्रकारके मज्जनकरै हैं औ तुरुक वजूनो कुल्ला मुखारी करिके हृदयमें कपट सहित निमाज गुजारयो, मसजिद में माथ नवायो, मक्का गया याते काह भयो ? आपको तो जनवै न कियो ॥ ३ ॥ हिन्दू तौ चौबिस एकादशी रहै औ तुरुक तीसरोजा रहे याते काहभयो ? काहेते यातो जनवै न कियो कि और दिन ये काहेमें समायेंगे ई सब दिन साहिब के हैं ग्यारह मास काके हैं ॥ ४ ॥

पुरुब दिशिमें हरि को बासा पश्चिम अलह मुकामा ।

दिलमें खोज दिलैमें देखो यहै करीमा रामा ॥ ५ ॥

जो खोदाय मसजिदमें बसतुहै और मुलुक केहि केरा ।

तीरथ मूरति राम निवासी दुइमें किनहुँ न हेरा ॥ ६ ॥

हिंदू कहै हैं कि, पूरुब औ उत्तरके कोनेमें सुमेरुहै ताहीमें बैकुंठ है वहेते सूर्य उदय होइहै तहें हरिको बासहै ताही ओर पूजा ध्यान करै हैं । औ पश्चिमकेति

मकाहै तहां अल्लाहको बास है ताही ओर मुसल्मान निमाज गुजरै हैं। सो याते काह भयो ? आपने दिलमें खोज कैकै तौ देखबै न कियो कि, करीम जे खुदा राम जे रामचंद्र ते दिलहीमें हैं हिंदू तुरुक दोउनमें वोई हैं ये तो शरीर आय साहब एकई है या न जानै तौ काहभयो ॥ ५ ॥ मुसल्मान लोग या मानै हैं खोदाय मसजिद में वसतु है औ हिन्दू मानै हैं कि रामचन्द्र मूर्ति औ तीर्थ में बसै हैं याते काह भयो ? काहेते दुइ में या बात कोई न बिचारे कि, और मुल्कमें को बसै है सो सर्वत्र साहिबही पूर्ण है यहै न जानने ते सब आपने आपने पक्षमें लगे हैं ॥ ६ ॥

वेद किताब कीन्ह किन झूठा झूठा जो न विचारै ।

सब घट एक एक करि लेखै भय दूजा करि मारै ॥ ७ ॥

वेद वाले किताबको झूठाकहै हैं, किताब वाले वेदको झूठाकहै हैं सो या कहा झूठाहै इनको को झूठा करिसकै है । झूठा वही है जो इनको नहीं बिचारै है कि, वेदकिताबको यही सिद्धांत है साहब सर्वत्रपूर्ण है हिंदूके याहै कि, सब-नाम साहिबहीके हैं ॥ “ सर्वाणि ना मानि यमाविंशतिइति श्रुतिः ” ॥ औमुसल्मानके “ जामैजमीसिफात जामै जमीअसमात ” यह कलामुल्लाके किताबमें लिखै है सो घट घटमें चित्त स्वरूप जीव एकही है सबके साहब रामचन्द्रही हैं; तिनको एक करि लेखै भय दूसरेते होय है ताको मारै सो यातो बिचारबै न कियो तौ काह भयो ॥ ७ ॥

जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा ।

कबिर पोंगड़ा अलह रामको सो गुरु पीर हमारा ॥ ८ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जेते औरत औ मर्द उपाने कहे उपजे हैं ते सब तुम्हारे रूप हैं काहेते कि, चित् जो तुम्हारे विग्रहहै ताही ते जगत् है । औ कबिर कहे कायाके बीर जे जीवहैं ते हे अल्लाह राम तिहारे जीवनके पोंगड़ा हैं अर्थात् तुमहीं घट घट में बोलत हो, तुमको जानिबेको इनके कुदरति नहीं है चाहौ तुम उपदेशकरि आपनेमें लगावो चाहौ गुरुपीर द्वारा उपदेश

करि आपनेमें लगावो इनको बश नहीं है तामें प्रमाण ॥ “यथादारुमयी-
योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया । एवमीश्वरतन्त्रोयमीहते सुखदुःखयोः” ॥ चौपाई ॥
“ उमा दारुयोषितकी नाई । सबैनचावत रामगोसाई” ॥ ८ ॥

इति सत्तानवे शब्द समाप्त ।

अथ अष्टानवे शब्द ॥ ९८ ॥

आवो वे आवो मुझे हरिको नाम । और सकल तजु कौने काम १
कहँ तव आदम कहँ तव हवा । कहँ तव पीर पैगम्बर हुवा २ ॥
कहँ तव जिमी कहाँ असमाना । कहँ तव वेद किताब कुराना ३
जिन दुनियामें रची मसीद । झूठो रोजा झूठ ईद ॥ ४ ॥
सांच एक अल्लाःको नाम । ताको नय नय करौ सलाम ॥ ५ ॥
कहुधौं भिस्त कहाँते आई । किसके कहे तुम छुरी चलाई ६ ॥
करता किरतिम बाजी लाई । हिंदु तुरुक दुइ राह चलाई ७ ॥
कहँ तव दिवस कहाँतव राती । कहँ तब किरतिम कीउतपाती ८
नहिंवाके जाति नहिंवाके पांती । कहकवीरवाके दिवस नराती ९

आवो वे आवो मुझे हरिको नाम । और सकल तजु कौने काम १
कहँ तव आदम कहँ तव हवा । कहँ तव पीर पैगम्बर हुवा २ ॥
कहँ तव जिमी कहाँ असमाना । कहँ तव वेद किताब कुराना ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जौने नाममें सब नाम हैं तौने जो मन बचनके
परे हरिको नाम है सो हे जीव ताको तैं बिचारकरु कि, मोको आवै ।
और सब बस्तु झूठे छोड़ि दे, कौने कामके हैं । जब वह नाम रह्यो है आदिमें
तब कुछ नहीं रह्यो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ पदका अर्थ स्पष्ट है भाव यह है
कि, ये जे कहिआये ते कहाँ रहै हैं अर्थात् कोई नहीं रहे ॥ २ ॥ ३ ॥

जिन दुनियामें रची मसीद । झूठी रोजा झूठी ईद ॥ ४ ॥
 सांच एक अल्लाःको नाम । ताको नय नय करो सलाम ॥ ५ ॥
 कहुधौं भिश्त कहाँते आई । किसके कहे तुम छुरी चलाई ६ ॥

अरु जीव जिन संसार में मसीद जो मसजिद शरीर रच्यो है ते कर्तारो नहीं रहे ॥ ४ ॥ सांच एक मन बचनके परे अल्लाःको नाम है ताको नय नयके सलाम करो और सब झूठा है जिसके बनाये भिश्त भई है तेऊ वही नामते प्रकट भये हैं तुम किसके कहे जीव मारते हो ई सब झूठे हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

करता किरतिम बाजी लाई । हिंदु तुरुक दुइ राह चलाई ७
 कहँ तवदिवस कहाँ तव राती । कहँ तव किरतिम की उतपाती ८
 नहिं वाके जाति नहीं वाके पांती । कहै कबीर वाके दिवस न राती ९

सो कर्ता के कृत्रिम जो माया है सो बाजी लगायके दुइ राह चलाई है ॥ ७ ॥ जब प्रथम साहब सुरति दियो है तब कहाँ दिन रह्यो है कहाँ राति रही कहाँ कृत्रिम जो माया ताकी उत्पत्ति रही है ? न वाके कुछ जाति है जो कहिये, वा ब्रह्ममें है, मायामें है, सत्चित है तो वा एकऊमें नहीं है । न जाति है वाके एकई साहब हैं दुइ चारि साहब नहीं हैं न वाके दिवस है न राति है कहे ज्ञान है न अज्ञान है ताते साहबको सांच नाम जपौ ॥ ८ ॥ ९ ॥

इति अष्टानवे शब्द समाप्त ।

अथ निम्नानवे शब्द ॥ ११ ॥

अब कहँ चल्यो अकेले मिता । उठि किन करहु घरहु की चिंता १
 खीर खांड़ घृत पिंड समारा । सो तन लै बाहर कै डारा ॥ २ ॥
 जेहि शिररचिरचित्रांध्योपागा । सो शिररतन बिदारा हिंकागा ३
 हाड़ जरैं जस लकड़ी झुरी । केश जरैं जस तृण कै कूरी ॥ ४ ॥

आवत संग न जातको साथी । काह भयो दल साजे हाथी ५
मायाको रस लेइ न पाया । अंतर यम विलार है धाया ६
कहकबीरनर अजहुंन जागा । यमको मोंगराम धिशिर लागा ७

श्री कबीरजी कहै हैं कि, हे जीवो ! जैसो या पदमें कहि आये हैं तैसो तिहारो हवाल है रह्यो है । जो तुम परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको न जानौगे तो तिहारे शिरमें यमको मोगदर लगैगो ॥ १ ॥ ७ ॥

इति निबानवे शब्द समाप्त ।

अथ सौ शब्द ॥ १०० ॥

देखौ लोगौ हरिकी सगाई । माय धरै पुत धिय संग जाई १
सासु ननदि मिलि अदल चलाई । मादरिया गृह बेटी जाई २
हम वहनोइ राम मोर सारा । हमहि वाप हरि पुत्र हमारा ३
कहै कबीर हरीके वृता । राम रमैतैं कुकुरि के पूता ॥ ४ ॥

हे जीवो ! सब संसारकी सगाई न देखो दुःखकै हरैया जे हरि हैं तिनकी सगाई देखो । अर्थात् साहबमें लागो तो वे संसार दुःख दूर करि देंगे । जो संसारमें लागोगे तो माई जो माया सो तुमको धरैगी तुम जीवो वा मायाको पुत्र है रह्यो है । समष्टि ते व्यष्टि जीव मायाही करैहै याते मायाको माय कह्यो है अब जीवके बुद्धि उत्पन्न होयहै याते जीवकी धी कहे कन्या है । सो तैं बुद्धिके संग बिगारि गयो और और में बुद्धि निश्चय कराइ नरकमें डारि दियो ॥ १ ॥ बुद्धि कर्म की बासना ते उत्पत्ति होय है जौनै प्रकारकी बासना होय है तैसी बुद्धि होइ है सो बासना जीवकी सासु है औ जीवकी सुरति बहिनी है काहेते कि, वही सुरति पाइकै जीव चैतन्य भयो है संसारी भयो है औ वह सुरति जब साहब मुख होइगी तब साहब को पावैगो सो यई जे हैं बुद्धिकी सासु ननदि हैं तेई अदल जो हैं हुकुमसो चलाईकै शुद्ध समष्टि

जीबको संसारमें डारि देइ हैं सो कैसे डारि देइहैं सो कहै हैं जौन बादरको नट
नचावै है सो मादरिया कहावे सो मनहै ताकी बेटी जो है इच्छा सो उत्पन्न भई तब
जीव संसारमें परचो ॥२॥ हे जीव! तैं यह बिचारु कि, यामें परिकै हम बहनोय
हैं अर्थात् बहन वारे हैं सो वही जायँगे अरु हमारे सार कहे सारांश रामैं हैं औ
हमारे बाप रामैं हैं औ पुत्र रामैं हैं तामें प्रमाण ॥ “ रामो माता मत्पिता राम-
चन्द्रः स्वाभी रामो मत्सखा रामचन्द्रः । सर्वस्वं मेरामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव
जाने न जाने ” ॥ तामेंकबीरजीहूकोप्रमाण ॥ “राम हमारे बाप हैं राम हमारे
भ्रात । राम हमारी जाति हैं, राम हमारी पांत” ॥ सो यह बिचारिकै श्रीक-
बीरजी कहै हैं कि, हरिके बूता कहे हरिनके बूतते अर्थात् अपने बलते नहीं ।
कुकुरी जो माया है ताके पति हे जीवो! सर्व नात रामैं सो मानिकै रामैंमेंरमो
अर्थात् जब तुम साहबके होउगे तब साहब हंस स्वरूप दैकै तुमको अपने
धामको बोलाइ लेइंगे ॥ ३ ॥ ४ ॥

इति सर्वां शब्द समाप्त ।

अथ एकसै एक शब्द ॥ १०१ ॥

देखि देखि जिय अचरज होई । यह पद बूझै विरला कोई १
धरती उलटि अकाशहि जाई । चींटीके मुख हस्ति समाई २
बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीव जंतु सब विरछा बुड़ै ॥३॥
सूखै सरवर उठै हिलोल । विनु जल चकवा करै कलोल ॥४॥
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ॥ ५ ॥
कह कबीर जो पद को जान । सोई संत सदा परमान ॥६॥

देखि देखि जिय अचरज होई । यह पद बूझै विरला कोई ॥ १ ॥
धरती उलटि अकाशहि जाई । चींटीके मुख हस्ति समाई २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं तो स्पष्टई कहौहों पै यह पद जो साकेत लोक ताको कोई विरछा बृझै है सो यह देखि देखि मोको बड़ो आश्चर्य होइ है ॥ १ ॥ जब महाप्रलय होय है तब धरती उलटिकै आकाशको जात रहै है कहे पृथ्वी जलमें जल तेजमें तेज वायुमें वायु आकाशमें समाइ जाइ है अरु वही जो है आकाश सो अहङ्कारमें समाइ है अरु अहङ्कार महत्तत्त्व में समाइ है सो महत्तत्त्व मनहै काहेते कि यह सब विस्तार मनहीं को है सो महत्तत्त्व जो है आदि कारण मन हाथी सो भगवत् अपना रूप जो है जगत्की मूल-शक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुख में समाइ है ॥ २ ॥

बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीव जंतु सब विरछा बुड़ै ३

सो वह साहबकै अज्ञान रूपा मूल प्रकृति लोक प्रकाशमें जो समाष्टि जीवहैं तहां समानी रहै है पृथ्वी आदिक तो समाइ गये हैं उहां पवन नहीं है परन्तु वह चैतन्याकाश कहे ब्रह्मरूपी आकाश मे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड जे पर्वत हैं ते उड़तई रहै हैं अरु वही सरवरमें जीव जंतु ते सहित जे संसार रूपी वृक्षहैं ते बूड़े हैं अर्थात् वही ब्रह्ममें सब संसारकी लय होय है ॥ ३ ॥

सूखे सरवर उठै हिलोल । विनु जल चकवा करै कलोल ४
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ५

वह ब्रह्मतो सूखा सरोवरहै अर्थात् सो ब्रह्म महींहों यह मानिबो मिथ्या है लोक प्रकाश ब्रह्म सत्य है तौने के प्रकाश की हिलोर उठै है तहां बाणीरूपी जल तौ है नहीं औ चकवा जे जीवहैं ते कलोल करै हैं कहे वहेते पुनि बाणीको उत्पत्ति करिकै संसारी है जाइहें ॥ ४ ॥ पण्डित जे हैं ते बैठे पुराण पढ़ै हैं अरु उत्पत्ति प्रलयको सब बखान करै हैं यह तो नहीं समुझै हैं कि वह तो बिन देखे का है कहे शून्य है जो हम ज्ञान उपदेश करिकै वहि ब्रह्ममें लगावैगे तौ भगवत् अज्ञान रूपी कारणशक्ति तौ उहां बनिही है माया फेरि न धरि लै आवैगी ॥ ५ ॥

कह कबीर जो पदको जान । सोई संत सदा परमान ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो कोई यह पदको कहै है जौने को प्रकाश यह ब्रह्म है ऐसो जो साकेत है तौने पदको कहे स्थान को जो जानै तौ प्रमाणिक संत वहीहै औ जेहिको प्रकाश या ब्रह्म है तौने धाममें जायकै पुनि नहीं लौटि आवै है तामें प्रमाण ॥ “न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः । यद्रूपा न निवर्तते तद्धाम परमं मम” ॥ तामें कबीरजीको प्रमाण ॥ “कालहि जीति हंस लै जाहीं। अविचल देश पुरुष जहँ आहीं ॥ तहां जाय सुख होइ अपारा । बंदुरि न आवै यहि संसारा” ॥ ६ ॥

इति एकसै एक शब्द समाप्त ।

अथ एकसैदो शब्द ॥ १०२ ॥

होदारी! की लै देउं तोहिं गारी। तुम समुझु सुपंथ विचारी ॥ १ ॥
घरहुको नाह जो अपना । तिनहूं सों भेट न सपना ॥ २ ॥
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ॥ ३ ॥
योगी औ जङ्गम जेते । वे आप गये हैं तेते ॥ ४ ॥
कहै कबीर यक योगी । तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ॥ ५ ॥

होदारी! की लै देउं तोहिं गारी। तुम समुझु सुपंथ विचारी ॥ १ ॥
घरहुको नाह जो अपना । तिनहूं सों भेट न सपना ॥ २ ॥
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ॥ ३ ॥

हो दारी कहे बांदी की बंची जीवशक्ति तोको गारी देइहैं। तैं यह मायाकी बंची हैकै मायाही में लगि रही है सो यह माया दारी है। जो सबको दरि डारै सो दारी कहावै है सो तोको दरे डारै है यही के ये पेटते निकसे यहीमें लगे यह कुपंथ है सो तैं सुपंथ बिचार ॥ १ ॥ घरके नाह जे परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र अपना है तासों सपनेहूं नहीं भेट करै है तौ योग ज्ञान उपासनादिकन में जो नाह वर्णन किये हैं तेतो जारहैं जो तोको मिलिबो करेंगे दश दिनको तौ फेरि

छाँडि देइंगे ॥ २ ॥ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको
वेदको अधिकारहै ते वेदको तात्पर्य परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को न जान्यो
तौ शुद्र अंत्यजनकी कहवई कहा करें ॥ ३ ॥

योगी औ जंगम जेते । वे आपु गये हैं तेते ॥ ४ ॥

कह कवीर यक योगी । तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ॥ ५ ॥

योगी जंगम जेतेहैं ते वही धोखा ब्रह्ममें लगिकै आपने आपने पौ खोइ
दियो ॥ ४ ॥ श्रीकबीरजी कहैहैं कि तुम एकके योगी भयो कि हम आत्माको
एक जोब्रह्महै तामें संयोग करि देइहैं कहे मिलाइ देइहैं सो यह नहीं विचार
करतेहौ कि एक वही ब्रह्म जो जीव होतो तौ वासों भिन्न काहे होतो औ
तुमको मिलाइवेको काहे परतो । जो कहौ यह ब्रह्महीको मायाते भ्रम भयो है
तब नानारूप देखन लग्यो है तौ तुमहीं ब्रह्मको ज्ञानमय कहौहौ ॥ 'सत्यं ज्ञान
मनंतं' ॥ इत्यादि तौ वाको भ्रमहीं कैसे भयो अरु जो मायामें एती सामर्थ्यहै कि
तुमको फोरिकै नाना रूप करि दियो है तौ जब तुम मिलिहू जाउगे तब तुमको
फेरि फोरिकै संसारमें न डारि देइगो का? जनन मरण न छूटैगो ताते तुम फेरि
फेरि यह भवभ्रममें भ्रमि भ्रमिकै भोगी होउगे अर्थात् जब वह ब्रह्ममें लगौगे
फेरि फेरि संसारही में परौगे ॥ ५ ॥

इति एकसै दो शब्द समाप्त ।

अथ एकसै तीन शब्द ॥ १०३ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भीरा ।

ज्यों पानी पानीमें मिलिगो त्यों डुरिमिल्यहु कबीरा ॥ १ ॥

ज्यों मैथिलको सच्चा बास।त्योहिं मरण होइ मगहर पास ॥ २ ॥

मगहर मरै मरन नहिं पावै । अंतै मरै तो राम लजावै ॥ ३ ॥

मगहर मरै सो गदहा होई । भल परतीति रामसों खोई ॥ ४ ॥

क्या काशी क्या ऊपर मगहर हृदय राम बस मोरा ।
जो काशी तन तजै कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ५ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भीरा ॥

ज्यों पानी पानीमें मिलिगो त्यों दुरि मिल्यहु कबीरा ॥ १ ॥

हेलोगो! तुम बड़े मतिके भीरहौ कहे डराकुलहौ काहे ते जोमें एतौ उपदेश पशुको करत्यों तौ पशुहू को ज्ञान हैजातो तुम पशुहूते अधिकहौ जैसे पानीमें पानी मिलि जाइहै ऐसे कबीरजी कहैहैं कि तुमहू दुरिकै मिलौ कहे हंसस्वरूपमें प्राप्त होउ औ साहबके पास जाउ जो कहो पानीमें पानी मिले एकही है जाइहै; तब एक नहीं है जाइहै काहेते कि छोटा भरे जलमें चुरुवा भरि जल नाइ देई तों बाढ़ि आवै है जो वही जल होतो तौ बढ़तो कैसे जो कहो समुद्र में तौ नहीं बढ़े तौ समुद्रमें गंगादिक नदी जुदीही रहती हैं देखबेको मिली हैं परन्तु उनको पारिख भेष जानै हैं वहांते मीठै जल लैकै बँधै हैं पुनि जब श्रीरामचन्द्र समुद्रपरकोपे तब समुद्र आयो है सब नदी चमरछत्र लीन्हे जुदी जुदी आई हैं औ अबहू जहाजवारे जे जानै हैं ते मीठा जल समुद्रको पाइ जाइहैं सो देखबीरौ ! कायाके बीर जीवौ तुमहू हंसस्वरूपमें स्थित है साहब के लोकमें प्रवेश करि साहबको मिलोजाइ ॥ १ ॥

ज्यों मैथिलको सच्चा वासा त्योंहि मरण होय मगहर पास २
मगहर मरै मरण नहिं पावै । अंतै मरै तो राम लजावै ॥ ३ ॥
मगहर मरै सो गदहा होई । भल परतीति रामसों खोई ॥ ४ ॥

जो श्रीरामचन्द्र को जानै तौ जैसे मैथिल कहे मिथिलापुर में मरे मुक्ति होइहै तैसे मगहरमें मरे मुक्ति होइ है ॥ २ ॥ जो मगहरमें मरै तो मरणनहीं पावै है यह सबकोई कहैहैं कि मगहरमें मरे मुक्ति नहीं होइहै अरु जो अंतै मरै तो श्रीरघुनाथजीको लजावै कि तीर्थकी ओट लैकै मरचो ॥ ३ ॥ सो जाकी श्रीरामचन्द्रमें परतीति नहीं होयहै सो मगहरमें परे गदहै होइहै ॥ ४ ॥

क्या काशी क्या ऊपर मगहर हृदय राम बस मोरा ।
जो काशी तन तजे कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ५ ॥

जो हृदयमें श्रीरामचन्द्र बास कियेहैं तो क्या श्रीकाशीहै क्या ऊपरहै क्या मगहरहै जहें मरै तहें मुक्ति हैजाइ तौ श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको कौन निहोरा तेहिते मैं श्रीरामचन्द्रको निहोरा करिकै मगहर मेंही शरीर छोड़यो मोको मगहर बाधा न कियो तेहिते हे जीवो ! तुमहूं परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको हृदयमें धरौगे औ रामनाम जपौगे तौ तुमहूं को कुछ बाधान रहैगी जहें मरौगे तहें मुक्त हैजाउगे ताते और सब धोखा छोड़िकै परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको स्मरण करौ मैं अजमाइकै कहौहों जो कहो अपने शरीर छोड़िये-की कथा श्रीकबीरजी अपने ग्रन्थमें लिखै हैं यह असम्भव बातहै तौ मगहरमें जो श्रीकबीरजी शरीर छोड़यो तौ आपनी रामोपासकता देखाइबेको मैं किगहरमें शरीर छोड़ौहों कैसे यम मोको गढ़हा करैंगे औ कैसे मुक्त न होउँगो सो मगहरमें मैं शरीर छोड़यो यमको कियो कुछ न भयो मगहरमें शरीर छोड़ि मथुरामें जाय रतनाकंदु इनिको उपदेश कियो है पुनि बहुतदिन प्रकट रहै हैं याते यह देखायो कि नित्य वृन्दावनके रासमें देख्यो जाइ है जहां सब मुक्त हैकै जाइहैं परम मुक्त है नित्य वृन्दैवनके रासमें जायहैं तामें प्रमाण शुकाचार्य मुक्त है गये हैं तिनसों श्री कृष्णचंद्र की उक्ति ॥ “स चोवाच प्रियारूपं लब्धवंतं शुकं हरिः । त्वं मे प्रियतमा भद्रे सदा तिष्ठ ममांतिके ॥ इति पद्म पुराणे” ॥ सो सब कथा आपही धर्मदासते निर्भय ज्ञानमें आपनेही मुख कमलते कह्यो है सो स्पष्ट है ॥ ५ ॥

इति एकसै तीन शब्द समाप्त ।

अथ एकसै चार शब्द ॥ १०४ ॥
कैसे कै तरो नाथ कैसे कै तरो
अब बहु कुटिल भरो ॥ १ ॥
कैसी तेरी सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान ।
ऊपर उजर देखो वक अनुमान ॥ २ ॥

भाव तौ भुवंग देखो अति विविचारी ।

सुरति सचान देखो मति तौ मँजारी ॥ ३ ॥

अति तो विरोधी देखो अतिरे दिवाना ।

छौ दरशन देखो भेष लपटाना ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो नरवन्दा ।

डाइनि डिंभ परे सब फंदा ॥ ५ ॥

अब गोरखनाथ के मतके जे नाथ कहावै हैं जे आपने इष्ट देवता को नाथ कहै हैं तिनको कहै हैं कैसे हैं वे कि आप कालते नाथेगये अरु औरऊ को कालते नथावै हैं जिनको अपने अपने मतमें लै आवै हैं तेऊ कालते नाथे जायँगे अर्थात् नाथे सोनाथ कहावै अथवा नाथोजाइ सो नाथ कहावै ॥

कैसे कै तरी नाथ कैसे कै तरी, अब बहु कुटिल भरो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हेनाथ ! तुम कैसे मुक्त होउगे गोरखनाथ रहे तेतो योगऊ करतरहे अबतो योगको नामई रहिगयो मुद्रा पहिरिलियो वेष बनाइ लियो कपरा रँगिकै अरु नाना प्रकारके मंत्रते भैरव भूतको बशि कैकै सिद्धि देखावन लगे लोगनको ठगन लगे कोई महन्त बनि बैठे कोई राज काज करन लगे कोई राजाके गुरु द्वैबैठे सो अब तुम बहुत कुटिलता तें भरेहौ ॥ १ ॥

कैसे तेरी सेवा पूजा कैसे तेरो ध्यान ऊपर उजर देखो बक अनुमान

तिहारी सेवा पूजा ध्यान करिबो कैसे है कि ऊपरते तो यह जानि परे हैं बड़े पुजेरी हैं बड़े ध्यानी हैं बड़े योगी हैं औ भीतर कपट ते भरे हैं जैसे बक ऊपरते उजल रहै है औ भीतर कुटिलईते भरे मछरी धरनको ताके रहै है तैसे भीतर बासना भरी है काहूको धनपावै तौ लैलेइ काहूके लरिकाको देखै तौ मूँड़ि लेइ काहू राजा को ठगि जागः पावै तौ लैलेइ जातै हमारी महंती चले ॥ २ ॥

भाव तो भुवंग देखो अति विविचारी ।

सुरति सचान देखो मति तौ मँजारी ॥ ३ ॥

भाव करिकै तौ भुवंगहै जाको सांप धरै है ताको विष चढ़ै है मरि जायहै
तैसे जो इनको संग करै हैं ताहूके इनके मतको विष चढ़ि जाइहै इनके मतनमें
चल्यो सो मारो परयो । अरु वे बड़े विविचारी होत हैं शास्त्रके मतते जो कर्म हैं
ताको छोड़ाइही देखैं अरु परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र को जानतेई नहीं हैं
जाते उद्धार है जाइ सो कर्मकांडी तो भला कछु स्वर्गको सुख पाइकै संसारमें परै
हैं ये सीधे नरकही को चले जाइहैं सो इनकी सुरति सचान है रही है जैसे सचान
खोजत फिरै है कि जो कौन्यो जीवको पांऊं तौ धरिलेउं अरु उनकी मति जो है दुर्म-
ति सो मंजारी है रही है जैसे मंजारी खोजत फिरै है कि जो काहू मूसको पांऊं
तौ धरिलेउं तैसे येऊ खोजत बागै हैं कि काहूको पावैं तौ चेला करिलेई
औ धन लेलेई जैसे आप नरकमें जाय हैं तैसे चेलाको नरकमें डारैहैं ॥ ३ ॥

अतितौ विरोधी देखो अतिरे देवाना । छौ दर्शन देखो भेष लपटाना ॥
कहै कबीर सुनौ नर बंदा । डाइनि डिंभ परे सब फंदा ॥ ५ ॥

योगी जङ्गम सेवरा संन्यासी दरवेश ब्राह्मण तिनसों अति विरोध करैहैं
अरु अपने मतमें अति दिवाने है रहे हैं अर्थात् वही पाखंड मतको सबते अधिक
मानै हैं सो याही भांति छइउ दर्शनमें देखै हैं कि भेष सबमें लपटान्यो है कुछ
सार पदार्थ नहीं जानै हैं भेष बनाइ लियो योगी जङ्गम सेवरादिक कहावन लगे
॥ ४ ॥ श्री कबीरजी कहै हैं कि हे नर ! तैंतो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको
बंदा है सो उनको तो ये षट् दर्शनवारे जानै नहीं हैं आपने आपने मतमें डिंभ
किये हैं कि, हमारई मत ठीक है और मत झूठैहैं ॥ ५ ॥

इति एकसै चार शब्द समाप्त ।

अथ एकसै पांच शब्द ॥ १०५ ॥

यह भ्रम भूत सकल जग खाया । जिनजिन पूजातिन जहड़ाया १
अंड न पिंड प्राण नहिं देहा । काटि काटि जियकेतिकयेहार २
वकरी सुर्गी कीन्हो छेहा । अगिल जन्म उन्ह अवसरलेहा ३
कहै कबीर सुनो नर लोई । भुतवा के पूजे भुतवै होई ॥ ४ ॥

बुढहादेव भैरव भवानी ग्रामदेवता ई सब भ्रमहैं ई सब जगत् को खाये
 लेइहैं जिन जिन इनको पूजाहै तिनको तिनको जहड़ाइवो कहे वह काल देइहै
 ॥ १ ॥ येई देव तिनके नाअंड है ना पिंडहै इनको अनेक जीव काटि काटि दियो
 सो काह जानिकै दियो तुमको बैकलाइ डारैंगे फल ना देइंगे ॥ २ ॥ बकरी
 मुर्गी दैकै जो तुम इनको पूजा कीन्हों सोई आगिले जन्म तुम्हारो गर काटैंगे
 ॥ ३ ॥ सो श्री कबीरजी कहैहैं हे लोगो ! तुम सुनौ ये भूतनको जो तुम पूजौगे
 तौ तुमहं भूत होउगेभूतके पूजेते भूत होइहै तामें प्रमाण ॥ “ यांति देवव्रता
 देवान् पितॄन् यांति पितृव्रताः । भूतानि यांति भूतेज्या यांति मद्याजिनोपि
 माम् ” ॥ इतिगीतायाम् ॥ ४ ॥

इति एकसै पांच शब्द समाप्त ।

अथ एकसै छः शब्द ॥ १०६ ॥

भँवर उड़े बक बैठे आय । रैनि गई दिवसौ चलि जाय ॥ १ ॥
 हल हल कांपै बाला जीव । ना जानै का करिहै पीव ॥ २ ॥
 कब्बे वासन टिकै न पानी । उड़िगे हंस काय कुम्हिलानी ३
 काग उड़ावत भुजा पिरानी । कह कबीर यह कथा सिरानी ४
 भँवर उड़े बक बैठे आय । रैनि गई दिवसौ चालि जाय ॥ १ ॥
 हल हल कांपै बाला जीव । ना जानै का करिहै पीव ॥ २ ॥

यह जगत्में यह दशा द्वैगई कि भँवर जेहैं रासिक संत जे परम पुरुष पर
 श्री रामचन्द्रके प्रेममें छके रहै हैं ते उड़िगये कहे उठिगये अरु बक जेहैं
 गुहवा लोग ते बैठे आय जैसे बकुला मछरी खायहै तैसे ठगि ठगिकै जीवको
 स्वस्वरूप खाइलेइहै कहे भुलाइ देइहै वही ब्रह्ममें लगाइकै ॥ १ ॥ सोयह
 जीव तौ बाला स्त्रीकहे परम पुरुष श्री रामचन्द्र की चितशक्ति है सो ब्रह्म
 धोखामें लगिकै हलहल कांपैहै अर्थात् मैं आपने स्वामीको भुलायकै धोखा
 ब्रह्ममें लग्यों सो हाथ न लग्यो सो ना जानौं खफा द्वैक मेरे पीउ कहे स्वामी
 अब कहा करैंगे ॥ २ ॥

कच्चे वासन टिकै न पानी । उड़िगो हंस काय कुम्हिलानी ३
काग उड़ावत भुजा पिरानी । कह कबीर यह कथा सिरानी ४

सो उमिरि तो वह ब्रह्ममें व्यतीत कै दियो औ हाथ कुछ न लग्यो तब यह बिचारयो कि मैं अपने स्वामी जे परम पुरुष श्रीरामचंद्र हैं तिनमें लगौं सो जैसे कच्चे वासनमें पानी धरि देइ तौ वासन कच्चा बिगसि जाय है तैसें यह शरीरतो रहै नहीं है जब हंस उड़िगयो शरीर कुम्हिलाइ गयो कहे उड़िगयो भाव यहहै तब पंछितावई हाथ रहि जायहै ॥ ३ ॥ श्री कबीरजी कहै हैं कि जैसे नारी अपने पतिके आइबेको भुजाते काग उड़ावै है जब पति नहीं आवै है तब भुजाको पिरावई रहि जाइ है तैसे ब्रह्म द्वैते के लिये उमिरि बिताइ दियो अहं ब्रह्म अहं ब्रह्म करत करत वह सब कथा सिराइ गई कहे जिन जिन ब्रह्म भये उनको ब्रह्म न मिल्यो तब मेहनतई हाथ रहि जाइहै जैसे भूसीके खांडि कुछ हाथ नहीं लगै है मेहनतई हाथ रहिजाइ है तैसे इनको बिना परम पुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने ब्रह्म द्वै जाइबो भूसई कैसो खांडिबो है उहां कुछ हाथ नहीं लगै है तामें प्रमाण ॥ “श्रेयः स्तुतिर्भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिद्यन्ति ये केवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषाववातिनाम्” ॥ १ इतिभागवते ॥ ४ ॥

इति एकसैछः शब्द समाप्त ।

अथ एकसै सात शब्द ॥ १०७ ॥

खसम विन तेली के वैलभयो ।

बैठत नाहिं साधुकी संगति नाथे जन्म गयो ॥ १ ॥

बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दण्ड सह्यो ।

धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो ॥ २ ॥

खसमहिं छोड़ि बिषयरंग माते पापके बीज वयो ।

झूठ मुक्ति नर आश जिवनकी प्रेतको जूठ खयो ॥ ३ ॥

लख चौरासी जीव योनिमें सायर जात गह्यो ।
कहै कबीर सुनौहो संतौ श्वान कि पूछ गह्यो ॥ ४ ॥

खसम बिन तेलीके बैलभयो ।

बैठत नाहिं साधुकी संगति नाधे जन्म गयो ॥ १ ॥

बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दंड सह्यो ।

धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो ॥ २ ॥

श्री कबीरजी जीवकों उपदेश करै हैं हैं जीव ! तेरें मालिक जे रामचन्द्र हैं तिनहीं बिना तैं तेलीको बैल भयो जे साधु तेरो स्वरूप बताइदेई ऐसे साधु-नकी सङ्गति में कबौं नहीं बैठै तेलीके बैलकी नाई नाधे नाधे जन्म व्यतीत भयो जन्मतै मरत रह्यो ॥ १ ॥ जब काधे जुवां नाधि जायहै तब निज तेलीके निमित्त ढोइ ढोइ मरै है जो ना रेंगैं तौ तेली डंडा मारै है तैसे यह जीव धन दारा सुत राज काजके हित नाना कर्म करै है इंद्रियसुख लिये बहि बहि कहे नाना कर्मनको भारा ढोइ ढोइके पचै है अरु अंतमें यमदंड मारै हैं सो सहै हौ याही रीति जन्म जन्म यमदंड सहै हौ ॥ २ ॥

खसमहिं छोड़ि विषय रंग माते पापके बीजवयो ।

झूठ मुक्ति नर आश जिवनकी प्रेतको जूठ खयो ॥ ३ ॥

खसम जे साहब तिनको त्यागि विषय रंगमें मात्यो औ पापको बीज बोवत भयो अर्थात् जो नारी आपन खसमको छोड़ि और पुरुषमें लगै है तौ वाको बड़े पाप होयहै सोतैं खसमको छोड़िकै नाना देवतनकी उपासनामें लगि जात भयो मातिगयो सो तैं महापाप के बीजबोयो औ नरन को ज्यावनवारी जो मुक्तिकी जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयेंगे तौ हम जीतै रहेंगे हमारों जनन मरण न होयगो सो वह मुक्ति झूठी है जौने शरीरते उनके लोकको जायगो सो तन नाशहै जाइगो जब फेरि सृष्टि समय होइगो तब वाई देवनके साथ फिरि आवैगो जनन मरण न छूटैगो सो ऐसी झूठी मुक्तिके वास्ते

तैं मेतनको जूठ खाय है कहे भैरव भूत आदिकन के बलिदान खाय है उनके दिये तपौना शराव पियै है ॥ ३ ॥

लख चौरासी जीव योनिमें सायर जात बह्यो ।

कहै कवीर सुनौहो संतौ श्वान कि पूंछ गह्यो ॥ ४ ॥

श्री कवीरजी कहै हैं कि हे संतौ! जीवौ सुनो तुम परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते तुम्हारे रक्षक संसार सागरते पार के देनवारे जहाज तिनको छोड़ि श्वान जे हैं ई सब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछ गहे चौरासी लक्ष योनि समुद्र संसारमें बहो जाय है सो श्वान की पूंछ गहेते कैसे संसार समुद्रते पार जाउगे ॥ ४ ॥

इति एकसै सात शब्द समाप्त ।

अथ एकसै आठ शब्द ॥ १०८ ॥

अब हम भयल बहिर जल मीना । पुरुष जन्मतपकामद कीना १
तब मैं अछलो मन बैरागी । तजलो कुटुम्ब राम रट लागी ॥ २ ॥
तजलो काशी मै मति भोरी । प्राणनाथ कहु का गति मोरी ३
हम चलि गैल तुम्हारे शरणा । कतहुं न देखो हरिको चरणा ४
हमहि कु सेवक तुमहि अयाना । दुइ महँ दोष काहि भगवाना ५
हम चलि गैल तुम्हारे पासा । दास कविर भल कैल निरासा ६

श्री कवीरजी कहै हैं कि, जब मैं साहबके पास गयो तब यह बिनती कियो कि तबतो संसार के जलके मीन रहे अब जबते हम संसारके बहिरे तिहारे प्रेमजलके मीन भये प्रथम हम पूर्व जन्ममें पंचांगोपासना तपस्या बहुत करी पुनि जब जन्मलियो तब हम को पूर्वजन्म की सुधि बनीरही वह तपस्याको मद कहे अहंकार हमको बहुत रहै सो वही तपस्याके प्रभावते ॥ १ ॥ तब हमको अच्छो मनमें वैराग्य रहै खुनाथजीमें भक्ति भई तब कुटुम्बको छोड़िकै राम राम रट लगावत भयो ॥ २ ॥ तब प्राणनाथ में काशी छोड़ि दियो औ मेरी मति भोरी भई कहे पूर्वजन्म के तपके मदते निर्गुणरस

रूपा भक्ति मोको न होत भई केवल ज्ञानै करिकै रामनामकी रटनि लगाइकै
 बिचरत भयो कि, मिलिही जायँगे तब हे प्राणनाथ! भेरी कहा गति होत भई
 सो कहौहीं ॥ ३ ॥ हम तुम्हारे शरण तो चलिगये कहे तुम्हारे नाममें रट
 लगावत भयो पै तुम्हारे चरणन को न देखत भयो अर्थात् दर्शन न पायो
 ॥ ४ ॥ सो हे भगवन्! षट् ऐश्वर्य संपन्न धौं हमहीं कुसेवक रहे जो तिहारों
 दर्शन न पायो धौं तुमहीं अयान रहे हमको न जानत रहे जो हमको नहीं
 मिले दुइमें काको दोष है ॥ ५ ॥ अब दास कबीर जो मैंहीं ताको भली
 भांतिते जब निराश करिदियो कि, कौनिउ भांतिकी जब आश न रहिगई न
 ज्ञान करिकै न योग करिकै न भक्ति करिकै केवल सुधारसरूपा निर्गुणा
 भक्ति जब मोको दियो तब हम तुम्हारे पास चलि आये याते कबीरजी या
 देखायो कि, जब सब बातते निराश हैं जाय हैं तब साहबके पास जाइहैं ॥ ६ ॥
 इति एकसै आठ शब्द समाप्त ।

अथ एकसै नव शब्द ॥ १०९ ॥

लोग बोलै दुरिगये कबीरा। या मत कोइ कोई जानै धीरा ॥ १ ॥
 दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना । राम नामको ममैं आना २
 जेहि जिय जानि परा जस लेखारजु को कहै उरगजोपेखा ३
 यद्यपिफल उत्तमगुणजाना। हरिहित्यागिमनमुक्तिनमाना ४
 हरि आधार जस मीनहि नीरा। औरयतनकछुकहहि कबीरा ५

लोग बोलै दुरि गये कबीरा । या मत कोइ कोई जानै धीरा १

श्री कबीरजी कहै हैं कि, सब लोग बोलै हैं कि, कबीर बहुत दूरि गये
 बहुत पहुंचे हैं सो या मत कोई जे धीरे धीरे साधनमें क्रियनमें समुझनमें
 अभ्यास करै हैं सो जानै हैं कौन मत सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना। राम नामको ममैं आना २ ॥

सो दशरथसुतको तौ तीनौलोक जानैहैं पै रामनामको मर्म कोऊ कोऊ जानैहैं
अर्थात् कबहूँ दशरथ सुत कबहूँ नारायण कबहूँ व्यापक ब्रह्मही अवतार लेइ
हैं नित्य साकेत विहारी परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं जिनके नामते ब्रह्म ईश्वर
वेद शास्त्र सब निकसैहैं तौने रामनामको तौ मर्म आनहै ॥ २ ॥

**जेहि जिय जानि परा जस लेखा।रजुको कहै उरगको पेखा ॥
यद्यपिफलउत्तमगुणजाना।हरिहित्यागिमनसुक्ति न माना॥**

जाको यह रामनाम जैसो जानि परचो है सो तैसे लेख्यो है कोई रघुनाथ-
जी को दशरथके पुत्र मानै है कोई नारायण को अवतार मानै है कोई ब्रह्मको
अवतार मानै है तिनहीं को नाम रामनाम मानैहै सो जैसे रसरीको उरग
कहं हैं बिना समुझे ऐसे रामनाम जो साहबको है सो भ्रम छोड़िके बिचारै तौ
तौ साहित्यको बोध करैहैं ॥ ३ ॥ सो यद्यपि उत्तम गुण जानेके फल होयहै
कि विष्णु लोक प्राप्तभये परन्तु परम पुरुषपर जे श्रीरामचन्द्र तिनके पास
भये बिना हम मुक्ति नहीं मानै हैं ॥ ४ ॥

हरिअधारजसमीनहिनीरा।औरयतनकछुकहैकबीरा ॥५॥

सो जैसे मीनको आधार अंबुहै बिना जल मीन नहीं रहि सकै है तैसे
श्रीरामचन्द्र सबके आधारहैं सो तिनहीं को जो आधार मानै तो जैसे मीन
सर्वत्र जलही देखै है द्विभुजरूप श्रीरामचन्द्रको सर्वत्र देखै औ उनहींमें रहै तौ
श्री कबीरजी कहैहैं कि और यतन सब थोरई है तामें प्रमाण श्री गोसाईजी को
॥ दोहा ॥ “ सो अनन्य अस जाहिके, मतिन टरै हनुमन्त । मैं सेवक सचरा-
न्दर, रूप राशि भगवंत ” ॥ १ ॥ तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ “ नैनन आगे
ख्याल घनेरा । अरध उरध बिच लगन लगी है क्या संध्या क्या रैन सबेरा ।
जेहि कारण जग भरमत डोलै सो साहब बट लिया बसेरा । पूरि रह्यो अस-
मान धरणिमें जितदेखो तित साहब भेरा । तसबी एक दियो मेरे साहब कह
कबीर दिलही बिच फेरा ” ॥ ५ ॥

अथ एकसै दश शब्द ॥ ११० ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई ।

कर्म लिखा मिटै धौं कैसे जो युग कोटि सिराई ॥ १ ॥

गुरु वशिष्ठ मिलि लगन शोधाई सूर्य मंत्र यक दीन्हा ।

जो सीता रघुनाथ विआही पल यक संच न कीन्हा २

नारद मुनिको वदन छपायो कीन्हो कपिसों रूपा ।

शिशुपालहुके भुजा उपारे आपुन बौध स्वरूपा ॥ ३ ॥

तीनि लोकके करता कहिये वालि बध्यो वरियाई ।

एक समय ऐसी वनि आई उनहूं अवसर पाई ॥ ४ ॥

पार्वती को बांझ न कहिये ईश न कहिय भिखारी ।

कह कबीर करता की बातें कर्मकि बात निनारी ॥ ५ ॥

श्रीमन्नारायण वैकुण्ठते केतन्यो अवतार लियो तेऊ कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो सो जे साहब उत्पत्ति पालन संहार करै हैं तेतो कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो और की कहा गति है सो बिना परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रके नामलिंये कर्मकी गति काहूकी मेटी नहीं मेटि जाइहै श्री रामनामते कर्मकी गति मिटि जाइहै साहब मेटि देखै तामें दोऊ प्रमाण ॥ “राम नाम मणि विषय व्यालके। मेटत कठिन कुअंक भालके” ॥ १ ॥ “सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः” इति गीतायां ॥ “सकृदेवमपन्नायतवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्भतं मम” ॥ इति रामायणे ॥ औ कबीरजी ऊको प्रमाण ॥ “पहिले बुरा कमाइकै, बांधी विषकै मोट । कोटि कर्म मिट पृलकमें, आवै हरिकी ओट ॥ ” और और पदको अर्थ स्पष्ट है ॥ १-५ ॥

इति एकसै दश शब्द समाप्त ।

अथ एकसै ग्यारह शब्द ॥ १११ ॥

है कोई पंडित गुरुज्ञानी उलटि वेदको बूझै ।
 पानीमें पावक जरै अंधे आंखी सूझै ॥ १ ॥
 गयातो नाहरको खायो हरिना खायो चीता ।
 कागा लगरै फादिकै बटेरन वाजै जीता ॥ २ ॥
 मूसा तो मंजारै खायो स्यारै खायो श्वाना ।
 आदिके उपदेश जानै तासु बेसै बाना ॥ ३ ॥
 एकै तो दादुर सो खायो पांचौ जे भूवंगा ।
 कहै कवीर पुकारिकै हैं दोऊ एक संग ॥ ४ ॥

हैं कोई गुरु ज्ञानी पंडित उलटि वेदको बूझै ।
 पानीमें पावक जरै अंधे आंखी सूझै ॥ १ ॥

ऐसो गुरुज्ञानी पंडित कोई नहीं है जो उलटिकै वेदको अर्थ बूझै अर्थात् गायत्रीते वेद भयो है प्रणवते गायत्री भई है प्रणव राम नामते उत्पन्न भयो है सो कहै हैं पानी जो है बानी तामें पावक बरै है कहे ब्रह्माग्नि बीज रामनाम है सो सर्वत्र पूर्ण है सो अंधेके आंखीमें कैसे सूझै उलटिकै वेदको बूझै तो जानै कि सबको मूल रामनाम है ॥ १ ॥

गैया तो नाहर को खायो हरिना खायो चीता ।
 कागा लगरै फादिकै बटेरन वाज जीता ॥ २ ॥

गैया जो गायत्री तौनेके नाना अर्थ करि कहीं सूर्यमें लगावै हैं कहीं ब्रह्ममें लगावै हैं सोई अर्थ जो गैया सो सांच गायत्रीको तात्पर्यार्थ साहब तिनको ज्ञान जो नाहर ताको खायलियो औ हरिनाजो अद्वैत ज्ञान कि हरिनहीं है प्रणवको अर्थकियो कि जीव नहीं है एक ब्रह्मही है सो मैं हों या जो हरिना सो साहबकों

ज्ञान जो चीता ताको खाय लियो चीता साहबके ज्ञानको कहते कह्यो कि जब साहबको ज्ञान होइहै तब अद्वैत ज्ञान नहीं रहिजाइ है औ काग जो अज्ञान सो साहबको ज्ञान जो लगर शिकारी पक्षो कागा को खानवारो ताको कागा खायलियो औ असत् शास्त्रके अनेक प्रकारके जे अर्थ तेई हैं बटेर ते सत् शास्त्र जे साहबके बतावनवारे तेई हैं बाज ताको जीतिलियो अर्थात् तामसीजे हैं ते तामस शास्त्रको प्रचार करि सत् शास्त्रको लोप करिदियो ॥ २ ॥

मूसातो मंजारै खायो स्यारै खायो श्वाना ।

आदिको उपदेश जानै तासु बेसै बाना ॥ ३ ॥

एकै तो दादुर सो खायो पांचौ जे भूवंगा ।

कहै कबीर पुकारिकै हैं दोऊ एक संग ॥ ४ ॥

मूसा जो है बितंडाबाद सो साहबको उपदेश जो मंजार ताको खायलियो औ स्यार जो माया सो जीवके स्वरूप ज्ञानते जो होइहै स्वानुभवानंद सोई है श्वान ताको खाइ लियो सो कबीरजी कहै हैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनाम जानै ताहीको वेष बानाहै और सब पाखंडई है ॥ ३ ॥ एकही दादुर जो मन सो दादुरके खाय लेनवारो पांचभुवंग जे रति नेष्टा भाव प्रेम रस ते ताको खाइलियो सोई एक एकके विरोधी रहे तिनको खाइ लीन्है सो कबीरजी कहैहैं जीव साहब एकै संगके हैं आपने स्वरूपको न समुझ्यो या न विचार्यो कि मैं साहबको हौं ताते संसारी द्वै गयो है जो साहब मुख अर्थ विचारतो तौ एकही संग को है ॥ ४ ॥

इति एकसै ग्यारह शब्द समाप्त ।

अथ एकसै बारह शब्द ॥ ११२ ॥

झगरा एक वढो जियजाना जो निरुवारै सो निरवान ॥ १ ॥

ब्रह्म बड़ा की जहँते आया वेद बड़ा की जिन उपजाया ॥ २ ॥

इहमन बड़ा की जेहिमन माना राम बड़ा की रामहिं जाना ॥ ३ ॥

भ्रमिभ्रमिकविरा फिरै उदास तीर्थ बड़ा की तीर्थक दास ॥ ४ ॥

हे जीवौ ! यह झगड़ा बढ़ो है ताको बिचार करो जो कोई यह झगड़ा निरुवारै सोई निर्वाण कहे मुक्त है। सो कहै हैं भला जौन ब्रह्म जीव आपने मनते अनुभव करि लियो है सो बड़ा है कि जहांते जीव आयो है लोक प्रकाशते सो बड़ों है। सो ब्रह्म बड़ा नहीं है। वा लोक प्रकाश बड़ा है जहांते जीव आयो है। औ जौने वेदकी अज्ञाते नाना ईश्वर मानि लियो है सो बड़ा है कि रामनाम ते वेद उपजा है सो बड़ा है अर्थात् रामनाम बड़ा है जाते वेद भयो है। औ मन बड़ा है कि जाको मन आपनेते बड़ा मान्यो है सो बड़ा है अर्थात् जो मन बचनके परे है सोई बड़ो है जाको मन मान्यो है। औ श्री रामचन्द्र काहुको उपदेश करै नहीं आवैं श्री रामचन्द्रके जाननवारे रामको बतायकै जीवनको उपदेश कै उद्धार कै देइहैं याते रामदास बड़े हैं। औ तीर्थ बड़ो कि जे तीर्थको विधि सहित न्हाइहैं ते बड़े अर्थात् जे तीर्थके दास बने हैं ते बड़े हैं सो हे कायाके बीरौ जीवौ ! भ्रमि भ्रमिं काहे को उदास फिरौ हो या बात को बिचारौ ॥ १ ॥ ४ ॥

इति एकसै बारह शब्द समाप्त ।

अथ एकसै तेरह शब्द ॥ ११३ ॥

झूठे जनि पतिआहु हो सुन संत सुजाना ।

घटही में ठगपूरहै मति खोउ अयाना ॥ १ ॥

झूठका मंडान है धरती असमाना ।

दशौ दिशा जेहि फंद है जिउ घेरे आना ॥ २ ॥

योग यज्ञ जप संयमा तीरथ व्रत दाना ।

नवधावेद किताब है झूठका वाना ॥ ३ ॥

काहुको शब्दै फुरै काहुकरमाती ।

मान बड़ाई लैरहै हिंदू तुरुक दुजाती ॥ ४ ॥

वातकथै असमानकी मुदति नियरानी ।

बहुत खुदी दिल राखते बूढ़े बिन पानी ॥ ५ ॥

कहै कबीर कासों कहों सिगरो जग अंधा ।

सांचेसों भाजे फिरैं झूठे सों बंधा ॥ ६ ॥

हे संत सुजान! जो तुम सुजान होउ तौ वा झूठेसों न पातिआहु मेरी बात सुनौ वह ठग जो है तिहारो अनुभव धोखा ब्रह्म सो तेरे घटही में है धोखामें पारि आपनो स्वरूप जो साहबको दास ताको मति खोउ ॥ १ ॥ धरतीमें कहे नीचेके लोकनमें औ असमानमें कहे ऊपरके लोकन में वही झूठे ब्रह्मका मंडानहै औ दशौ दिशा जे हैं छः शास्त्र औ चारिवेद तिनमें वहीको फंदहै वही के फंदते इनको जो है यथार्थ अर्थ सो कोई नहीं जनैह जीवके आनिकै घेरि लियो है अर्थात् शास्त्रन वदनमें अर्थ बदलि बदलि वही झूठे ब्रह्मको उपदेश कैके गुरुवा लोग भुलाइ दियो है सब में वही धोखही ब्रह्म देखावैहै ॥ २ ॥ योग यज्ञ जप संयम तीर्थ व्रतदान नवधा सगुणाभक्ति औ वेदकिताब इनसब में झूठे कहे वही धोखा ब्रह्मका बाना कहे बिरदावली गुरुवा लोग सबकी मनावै हैं कि, या साधन कीन्हे अंतःकरण शुद्ध होय है तब ब्रह्म को प्राप्त होइहैं ॥ ३ ॥ औ काहूको शब्दै फुरैहै कहे वेद शास्त्र किताब कुरान पढ़िकै उनको अर्थ बदलि बदलिकै शास्त्रार्थ करिकै औरकों हरावै है उनहींको हिन्दू तुरुके दूनों जाति मान बड़ाई करैहैं औ वोई मान बड़ाई लैरहै हैं । पंडित मोलबालोग औ कोई जे बैरागी हैं संन्यासी हैं फकीर हैं औलियाहैं ते काहूको बेटादियो काहूको जागा दियो कहुं जलमें हीठि गयो कहुं आकाशते उड़ि गये कहुं दश पांच वर्ष कोठरी चुनाइकै आयें कहुं भूत भविष्य वर्तमान जानिलियो इत्यादिक नाना प्रकारकी करामात देखाइकै हिन्दू तुरुक दूनों दीनन सों मान बड़ाई लैकै रहै हैं ॥ ४ ॥

औ परम पुरुष श्री रामचन्द्र अल्लाह साकेत जाहूतके रहनवारे तिनको तो जानै नहीं हैं आसमान जोहै शून्य धोखा ब्रह्म तौने की वार्ते कथै हैं कि हमहीं ब्रह्महैं औ हमहीं बेचून बेचिगूग बेसुवा बेनिमून हैं औ उनके जिन्दगीकी मुदति नियरेही है केतनौ यहै कथत कथत मरिगये केतौ मरेंगे केतौ मरे जायह यह नहीं बिचारैहैं कि जो खुदा होते ब्रह्म होते तौ मरि कैसे जाते सो बहुत खुदी दिलमें राखते हैं कि खुदसाबिंद हमहीं हैं औ जो बहुत खुबी पाठ होइ तौ यह अर्थ कि हमहीं सबते खूब कहे अच्छे हैं पै बिना पानी झूरहींमें बूढ़ि गये अर्थात् मरिही गये वहनो ब्रह्म खुदाको ज्ञान कियो कि हमहीं हैं सो ज्ञान झूरही ठहरचो वामें कुछ रस न ठहरचो मरतमें वह रक्षा तनकऊ न कियो जो कहो जे साहब खुदाको जानैहैं ते कब जिये हैं तेऊतो मरिही जायहैं तो तुमही रामायणमें सुनै होउगे कि जे ते भर प्रजाहैं जे ते भर भालु बांदरहैं तिनको श्रीरामचन्द्र सदेह आपने धामफो लैगये औ श्री हनुमान्जीको बिभीषणको छोड़िगये ते अबलों बने हैं औ कागभुशुण्ड नारद अगस्त्य बशिष्ठजी रामोपासक हैं ते अबलो बने हैं जो कहो अब केतो राम भक्तको मरत देखै हैं तौ जे साधनमें हैं औ परमपुरुष श्री रामचन्द्रको नीकी भांति नहीं जानै हैं औ श्री रामचन्द्रकी प्राप्ति नहीं भई ते शरीर छोड़िकै वह लोकको क्रमते जाइहैं शरीर छोड़िकै फिरि अवतार लेइहैं पुनि ज्ञान होइ है तब जाइहै औ जे परमपुरुष श्री रामचन्द्रको अच्छी भांति जानि लियोहै औ तहांको प्राप्त होइ गये हैं तिनको शरीर छोड़िबो ऐसो कि यहां गुप्त है गये पुनि कहूं प्रगट हैके उपदेश करिकै जीवनको तारचो वे साहबको प्राप्तइहैं जब चाहैहैं तब साहब के रहै हैं जब चाहै हैं तब प्रगट हैके जीवनको उपदेश करिकै तारैहैं सो श्री कबीरजी प्रगटई देखाइदियो कि काशीमें शरीर छोड़चो मथुरा में उपदेश कियो औ चारिउ युग उपदेश करतइहैं औ मुसल्माननके अली शरीर छोड़चो पुनि लौटिकै आयकै संदूकमें आपनी लाश राखिकै ऊंटमें लादिकै लैगये सो दै पहारके बीच है निकसे जाइ सो वहीमें अटकाइ दियो सो अबलों वह संदूक अटकी है सो इनको चोला छाड़िबो यहि भांति कोहै जैसे सांप केचुरि छाड़िदेइहैं ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि मैं कासों कहां सिगरो संसार आंधर है रह्योहै
सांचे जे परम पुरुष श्री रामचन्द्र सर्वत्र पूर्ण हैं तिनसों भागो फिरै है उनको
नहीं देखैहै औ झूठा जो है धोखा ब्रह्म ताही में बाँधि रह्योहै औ यथार्थ अर्थमें
चार्यों वेद छइउ शास्त्र तात्पर्यकै परम पुरुष श्री रामचन्द्रको बर्णन करै हैं
सो मैं आपने सर्व सिद्धांत में स्पष्ट करिकै लिखि दियो है ॥ ६ ॥

इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्री राजा बहादुर
श्री सीतारामचन्द्र कृपा पात्राधिकारि विश्वनाथ
सिंह जू देव कृत तिलक शब्द समाप्त ।

इति ।



सूचना—मूल ग्रन्थमें ११५ शब्द हैं सो न जाने किस कारणसे महाराजने उसे छोड़
दिया है । सो दोनों शब्द प्रस्तावनामें दे दिये हैं पाठक वहांसे देख लें ।



अथ चौंतीसी ।



ओंकार ।

ओंकार आदिहि जो जानै।लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै॥
वे ओंकार कहै सब कोई।जिनहुँ लखा सो विरला सोई॥१॥

चौंतीसी ।

कका कमल किरणिमें पावै।शशि विगसित संपुटनहि आवै॥
तहां कुसुंभ रंग जो पावै । औगह गहकै गगन रहावै ॥ १ ॥
खखा चाहै खोरि मनावै । खसमहिं छोडि दशौ दिशि धावै॥
खसमहिं छोडि क्षमा है रहई।होय अखीन अक्षय पद गहई॥२॥
गगा गुरुके वचनै मानै । दूसर शब्द करै नहिं कानै ॥
तहां विहंग कतहुं नहिं जाई । औगह गहकै गगन रहाई॥३॥
घघा घट विनशे घट होई । घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै। घटही में फिरि घटै समावै॥४॥

डडा निरखत निशि दिन जाई।निरखत नैन रहा रटलाई ॥
 निमिष एक लौं निरखै पावै । ताहि निमिषमें नैन छिपावै५॥
 चचा चित्र रचो बहु भारी।चित्रहि छोड़ि चेतु चित्रकारी ॥
 जिन यह चित्र विचित्र उखेला।चित्र छोड़ि तू चेतु चितेला६
 छछा आहि छत्र पति पासा।छकिकै रहसि मेटि सब आसा॥
 मैं तोहीं छिन छिनसमुझाया।खसमछोड़िकसआपबंधाया७
 जजा या तन जीयत जारो।यौवन जारि युक्ति जो पारो ॥
 जो कुछ जानिजानि पर जरै ।घटहि ज्योति उजियारी करै८
 झझा अरुझि सरुझि कित जाना।हीठत ढूँढ़त जाहि पराना॥
 कोटि सुमेरु ढूँढ़ि फिरि आवै।जो गढ़ गढ़ा गढ़हि सो आवै९
 बजा निरखत नगर सनेहू । करु आपन निरवारु सँदेहू ॥
 नाहिं देखी नाहिं आपभजाऊ।जहां नहीं तहँ तन मनलाऊ१०
 टटा विकट वात मन माहीं । खोलि कपाट महलमें जाहीं ॥
 रहै लटपटे जुटि तेहि माहीं।होहिं अटल ते कतहुं नजाहीं११
 ठठा ठौर दूरि ठग नीरे । नितके निडुर कीन मन धीरे ॥
 जेहिठगठगसवलोगसयाना।सो ठगचीन्हिठौरपहिचाना१२
 डडा डर कीन्हे डर होई । डरहीमें डर राखु समोई ॥
 जो डर डरै डरै फिरि आवै।डरहीमें पुनि डरहि समावै॥१३॥
 ढढा ढूँढ़तई कत जाना । ढीगर ढोलहि जाइ लोभाना ॥
 जहां नहीं तहँ सब कछु जानी।जहां नहीतहँले पहिचानी१४
 णणा दूरि बसौ रे गाऊं । रे णणा दूटै तेरा नाऊं ॥
 मुये यते जिय जाही घना।मुये यतादिक केतिक गना॥१५॥

तता अति त्रियो नहिं जाई । तन त्रिभुवनमें राखु छपाई ॥
 जो तन त्रिभुवनमाहँ छपावै । तत्त्वहि मिलि सो तत्त्व जो पावै ॥ १६ ॥
 थथा थाह थहो नहिं जाई । यह थीरे वह थीर रहाई ॥
 थोरे थोरे थिरहो भाई । विन थंभे जस मन्दिर जाई ॥ १७ ॥
 ददा देखौ विनशन हारा । जस देखौ तस करौ विचारा ॥
 दशौ द्वारमें तारी लावै । तव दयालको दर्शन पावै ॥ १८ ॥
 धधा अर्ध माहँ अँधियारी । जस देखै तस करै विचारी ॥
 अधो छोड़ि ऊरध मन लावै । अपा मेटि कै प्रेम बढ़ावै ॥ १९ ॥
 नना वो चौथेमें जाई । रामका गद्दह है खरखाई ॥
 नाह छोड़ि किय नरक बसेरा । अजौं मूढ़ चित चेतु सवेरा ॥ २० ॥
 पपा पाप करै सब कोई । पापके धरे धर्म नहिं होई ॥
 पपा कहै सुनौरे भाई । हमरेसे ये कछू न पाई ॥ २१ ॥
 फफा फल लागो बड़ दूरी । चाखै सतगुरु देव न तूरी ॥
 फफा कहै सुनौरे भाई । स्वर्ग पताल कि खवारि न पाई ॥ २२ ॥
 ववा वर वर कर सब कोई । वर वर किये काज नहिं होई ॥
 ववा बात कहै अरथाई । फलका मर्म न जानेहु भाई ॥ २३ ॥
 भभा भर्म रहा भरि पूरी । भभरेते है नियरे दूरी ॥
 भभा कहै सुनौरे भाई । भभरे आवै भभरे जाई ॥ २४ ॥
 ममा सेये मर्म न पाई । हमरे ते इन मूल गवाँई ॥
 ममा मूल गहल मन माना । ममीं होहि सो मर्महि जाना ॥ २५ ॥
 यया जगत रहा भरि पूरी । जगतहु ते ययाहै दूरी ॥
 यया कहै सुनौरे भाई । हमरे सेये जै जै पाई ॥ २६ ॥

ररा रारि रहा अरु झाई । राम कहै दुख दारिद जाई ॥
 ररा कहै सुनौरे भाई । सतगुरु पूछि कै सेवहु जाई ॥२७॥
 लला तुतरे वात जनाई । तुतरे पावै परचै पाई ॥
 अपना तुतुर और को कहई । एकै खेत दुनों निरबहई ॥२८॥
 ववा वह वह कह सब कोई । वह वह कहे काज नहिं होई ॥
 ववा कहै सुनहुरे भाई । स्वर्ग पतालकी खवरि न पाई २९
 शशा शरद देखै नहिं कोई । शर शीतलता एकहि होई ॥
 शशा कहै सुनौ रे भाई । शून्य समान चला जग जाई ॥३०॥
 षषा षर षर कह सब कोई । षर षर कहे काज नहिं होई ॥
 षषा कहै सुनहुरे भाई । राम नाम लै जाहु पराई ॥ ३१ ॥
 ससा सरा रचो वरिआई । सर बेधे सब लोग तवाई ॥
 ससाके घर सुन गुन होई । यतनी वात न जानै कोई ३२
 हहा होइ होत नहिं जानै । जवहीं होइ तवै मन मानै ॥
 है तौ सही लहै सब कोई । जव वा होइ तव या नहिं होई ३३
 क्षक्षा क्षण परलै मिटि जाई । क्षेव परे तव को समुझाई ॥
 क्षेव परे कोउ अंत न पाया । कह कबीर अगमन गोहराया ३४

उँकार आदिहि जो जाने । लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै ॥
 वै उँकार कहौ सब कोई । जिनहुँ लखा सो विरला सोई ॥१॥

ओंकारको आदि जो रामनाम ताको जो कोई जानै पिंडाण्ड ब्रह्माण्डको
 चाहे लिखिके कहे उत्पत्तिके मेटे कहे नाशकरै फिरि मानै कहे पालनकरै ।
 सो वह ओंकारको तो सबै कोई कहै हैं परन्तु जिन बाको लखाहै सो कोई

बिरला है । तांके लखिबेको प्रकारहीं कहौहीं । अकार लक्ष्मणको स्वरूप उकार शत्रुघ्नको स्वरूप मकार भरतको स्वरूप अर्द्धमात्रा श्रीरामचन्द्रको स्वरूप संपूर्ण प्रणव श्री जानकीजीको स्वरूप । यहि रीतिते जो कोई प्रणवको जानै सो बिरला है । कौनी रीतिते जपकरै त्रिकुटीमें अकार कंठमें उकार हृदय में मकार नाभिमें अर्द्धमात्रा गैबगुफामें संपूर्ण प्रणव ऐसो एक एक मात्राको अर्थ बिचारत घंटानादकी नाई जप करनवारो बिरला है साहबमुख यह अर्थ हम दिग्दर्शन करादियो है और विस्तार ते अर्थ हमारे रहस्य त्रयग्रन्थमें है और सब जगत्मुखार्थ है ॥ १ ॥

**कका कमल किरणिमें पावै।शशि विकसितसंपुटनहिंआवै॥
तहां कुसुम्भ रंग जो पावै । औगह गहकै गगन रहावै ॥२॥**

क कहिये सुखको सो कका कहे सुखको सुख जो साहब तिनको किरणि जो अर्द्धमात्रा ताको नाभि कमलमें ध्यान करि जीव जानै । औ शशि जो चंद्र नाड़ी तौनेको अमृत सींचिकै विकसित कियेरहै संपुटित न होनपावै । औ तहैं कुसुम्भ रङ्ग जो प्रेम ताको पावै तौ अगह जो साहब जे मन वचन करिकै नहीं गहे जाई तिनको गहिकै गगन जो हृदय आकाश तामें राखै । याके आवरण के मंत्र औ ध्यानको प्रकार हमारे "शान्तशतक"में लिख्यो है । ककार सुखको कहै हैं तामें प्रमाण । "कः प्रजापति रुद्रिष्ठः को वायुरिति शब्दितः॥कश्चात्मनि समाख्यातः कस्सामान्य उदाहृतः ॥ १ ॥ कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखेऽपि प्रकीर्तितम् ॥ पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः शब्देऽपि प्रकीर्तितः " ॥ २ ॥

**खखा चाहै खोरि मनावै । खसमहिं छोड़ि दशहु दिशि धावै॥
खसमहिं छोड़ि क्षमा है रहई।होइ अखीन अक्षयपद गहई ३**

खा जो चैतन्याकाश ताहूको चैतन्याकाश अर्थात् ब्रह्महूको ब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तौ अपना खोरि जो चूकसो मनावै कहे बकसावै । कौन चूक ?

१- 'क' ब्रह्मा, वायु, आत्मा और साधारणको कहतेहैं ।

'क' शिर, पानी, और सुखको कहतेहैं । शब्द और भूमिको 'कु' कहतेहैं ।

जौन खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै जो दशौ दिशामें धावै है कहे नाना उपासना करै है सो या चूकबकसावै । औ ख जो चैतन्याकाश सम कहे सर्वत्र पूर्ण ऐसो जो धोखा ब्रह्म ताको छोड़िकै तैं क्षमा हैरहु ब्रह्मको बाद विवाद न करु होइ अखीन कहे आपनो स्वरूप जानिकै कि मैं साहबको हौं अक्षय हौं ब्रह्महूमें लीन भये मेरो जीवत्व नहीं जायहै ऐसो हंस रूप हैकै अक्षय पद जे साहब तिनको गहु ख कहे आकाशतामें प्रमाण ॥ “खमिन्द्रिये खमाकाशेखः स्वर्गऽपिमकीर्तितः” ॥ ३ ॥

गगा गुरुके वचनै मानै । दूसर शब्द करै नहिं कानै ।
तहां बिहङ्गम कतहुं न जाई।औगहि गहिकै गगन रहाई॥४॥

ग जो है साहबको गीत ताको गा कहे ते गवैयाहै । सो हेजीव ! तैं गुरु जे साहब हैं तिनके वचन मानु कौनबचन ? कि ॥ “अजहूं छेउ छड़ाइ कालसे जो घट सुरति सँभारै ” ॥ और दूसर शब्द न कान करु जो घट सुरति सँभारैगो तौ बिहङ्गम जो जीवात्मा सो कतौ न जाइगो । औगह कहे अवगाह जे साहब हैं तिनको गहिकै गगन जो हृदयाकाश ताहीमें रहैगो । अर्थात् जो साहबको गुण गान करैगो तौ तेरो मन जो सर्वत्र डोलै है सो कतौ न जाइगो तामें प्रमाण॥ “गो गणेशः समुद्दिष्टो गन्धर्वो गः प्रकीर्तितः। गं गीतं गाचगाथा स्याद्गौ-श्चधेनुस्सरस्वती ” ॥ ४ ॥

घघा घट विनशे घट होई । घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै । घटहीमें फिरि घटै समावै॥५॥

घ जो घट है ताको घा जो नाश है सो करन वारो अर्थात् जनन मरण वारे हे घघा जीव ! घट जे पांचौ शरीर ताके विनशे घट जो है हंस शरीर सो होइहै ? कैसे होइहै ताको साधन कहै हैं “घटही में घट राखु समोई ” कहे स्थूल सूक्ष्ममें, सूक्ष्म कारणमें, कारण महाकारण कैवल्यमें, कैवल्य हंसस्वरूपमें, समोइ राखुः अर्थात् एक एक में लीन कै देइ । जो यही रीतिसे घट जे पांचौ शरीर तिनको घटै घटै फिरि आवै तौ घट जो है हृदयाकाश ताहीमें घट जो हंस शरीर सो

१-ख । इन्द्रिग, आकाश, स्वर्गको कहते हैं ।

२-ग गणेश, गन्धर्व, ‘ गं ’ गीत, ‘ ग ’ गाथा, ‘ गौ ’ गाय और सरस्वतीको कहते हैं ।

समावै अर्थात् जीतै । यहीशरीर में हंसस्वरूप पायजाय । घ घातको कहै हैं ॥
 “घोषटेऽपिसमाख्यातःकिंकिणीवा प्रकीर्तितः । वा हनुमति विख्यातोऽधुमूर्द्धनि-
 प्रकीर्तितः ” ॥ ५ ॥

**डङा निरखत निशिदिन जाई।निरखत नय न रहत रतनाई
 निमिष एक लौं निरखै पावै।ताहि निमिषमें नयन छिपावैद**

ड कहे भयानक डङा कहे विषय बांछा । सो डङा भयानक विषय बांछा निर-
 खत कहे बिचारत तोको दिनौ राति जाईहै वाहीके निरखत में कहे बिचारतमें नय
 जो नीति सो नहीं रहत रतनाई जो अनुराग विषयमें सोई रहि जाईहै।कैसीहै वह वि-
 षय कि एक निमिष लौं निरखै पावै कहे वामें लगै तौ तौनेन निमिषमें भोगोपरान्त
 नयन छिपावैहै नहीं नीक लगैहै । अर्थात् रूपको देख्यो फिरिनयनमें नीर भारि
 आवैहै नहीं नीक लगैहै । सुगन्ध बहुत सूंघ्यो उपरांत नाक बरि उठैहै, अच्छो
 भोजन कियो तृप्त भये पर बिरस परि जाईहै, गान बहुत सुन्यो फिरि बक
 बाधि लगै है । स्पर्श बहुत सुन्दर स्त्री कियो फिरि वीर्य पात भये, नहीं
 नीकालगै है, गरम लागन लगै है । सो ये सब तृप्तिके उपरांत जो निमिष है
 तौने निमिष नहीं नीक लगै है । ड विषय बांछाको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥
 “ङकारो भैरवः ख्यातो ङो ध्वनावपि कीर्तितः ॥ ङकारस्मरणे प्रोक्तो ङकारो
 विषयस्पृहा” ॥ ६ ॥

**च चा चित्र रचो बहु भारी।चित्र छोड़ि तू चेतु चित्र कारी ॥
 जिन यह चित्रविचित्र उखेला।चित्र छोड़ तू चेतु चितेला ७**

च कहे मन काहेते कि, मनको देवता चंद्रमा यांते मनको कही । औ
 दूसर चा चोरको कही सो तेरोमन जो चोर सो तेरे स्वरूपको चोराय लीन्हो
 साहबको भुलायदीन्हो सो यह जगतरूपचित्र जो रच्योहै चित्रविचित्र सो तू

१-‘घ’ धड़ा अथवा घुँघरू को कहते हैं ‘वा’ हनुमान और ‘घृ’ शिरको कहतेहैं ।

२-‘ङ’ भैरवको किसीकी याद करनेको और भोगकी इच्छाको कहतेहैं ‘ङा’
 झन्दकरनेको कहतेहैं ।

छोड़िदे हे जीव ! चित्रकारी जो मन ताको चेतकरु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियोहै च चंद्रमा को चोरको कहैहैं ॥ “चैवंदशच समाख्यातस्तस्करे मास्करेमतः” ॥ ७ ॥

छछा आहि छत्र पति पासा।छकि किन रहै छोड़ि सबआशा।
मैं तोहीं क्षण क्षण समुझाया।खसमछोड़िकसआपुवँधाया ८

छ कहै निर्मल जीव तैं आपने स्वरूपको भूलिकै साहबको भूलिगयो ताते छाकेहे छेदरु ही द्वैगयो तेरे स्वरूपकी क्षयैद्वैगई सो तैं तो छत्रपती जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको आहि तिनके पास जायकै ई सब नाना देवनकी आशाछोड़िकै छकिरहु।या बात मैं तोको क्षणक्षण समुझायो परन्तु तुमखसमजे साहबहैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगत् में अपनपौ बँधाया।छनिर्मल को औ खेद छ को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “निर्मले छस्समाख्यातस्तरणि इछः प्रकीर्तितः ॥ छेदे च छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्दशासने” ॥ ८ ॥

जजा ई तन जियतहि जारो । यौवन जारि युक्ति जो पारो ॥
घटहि ज्योति उजियारी करे।जो कछु जानि जानि पर जरै ९

ज कहिये वेगवंतको औ जा कहिये जघनको सो हे जीव ! वेगवारो जोमनहै सोई तेरो जघनहै ताहीते बागत फिरै है अर्थात् जननमरण होतरहैहै । सो यातनको कहे मन रूप तनको तैं जीतैं में कहे यही शरीरको साधनकरके जा रिदे मरेते न जरैगो दूसर शरीर देइगो। यौवन कहे युवावस्थाको जारिकै बहुयुक्तिको पारो कहे धारणकरो फिरि वृद्धावस्थामें साधनकरिबेकी सामर्थ्य नहीं रहैहै ताते युव अवस्थामें इन्द्रिनको विषय साधनकरि जारु कौनी तरहते जारु कि जो कछु पदार्थ जगत्में जानि राख्यो है ते जानिपरैं कि जरिगये अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छूटि जाइ तबहीं ज्योति जो मनहै सोघटमें साहबकी ओर उजियारी करैहै । ज्योति मनको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ “जीवरू-

१-‘च’ चंद्रमा सूर्य, और चोरको कहतेहैं ।

२-‘छ’ निर्मल, छेद, सूर्य और नावको कहते है ।

पयकअंतरबासा । अंतरज्योतिकीनपरकासा ॥ औ जकार बेगवारको औ जवनको कहै हैं “वेगिनि जैः समाख्यातो जवने जः प्रकीर्तितः” ॥ ९ ॥

**झझा अरुझि सरुझि कित जाना।हीठत दूंदत जाहि पराना।
कोटि सुमेरु दूंदि फिरि आवै।जो गढ़ गढ़ा गढ़हि सोपावै १०**

झ कहिये झंझापवनको, औ झा कहिये नष्टको सो तैं विषयझंझामें परिकै नष्ट होइगये । सो यामें अरुझिकै तैं कहां सरुझिकै जैहै । झ कहिये पीठिको झा कहिये विषयबयारिको।सो विषयबयारिमें अरुझिकै साहबको पीठिदैकै सरुझिकै कितजान चाहैहै । हिठत दूंदत तेरो परान जाइहै । नाना उपासना नानामतकरै है । अथवा हीठत दूंदत तेरोपरान जाइहै नानामतनमें, पै तोको विषय बयारि न छाड़िगी वाहीमें अरुझो रहैगो । कोटिसुमेरुकहे कोटिन ब्रह्माण्ड भटकि आवो परन्तु जौन मन शरीरगढ़को गढ़ाहै कहे बनावा तौनेनको औगढ़कहे शरीरको तपावैगो याते तैं विषयबयारिको छांडु साहबके सम्मुख होइ । झ झंझावातको औ नष्टको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ “झंझावाते झकारःस्यान्नेष्टे झस्समुदाहृतः” ॥ १० ॥

**जजा निरखत नगर सनेहू । आपन करु निरुवारु सदेहू ॥
नहिं देखोनहिं आपु भजाऊ।जहां नहीत दूतन मन लाऊ ॥ ११ ॥**

ज कहिये सोइबेको जा कहिये झर्झर ध्वनिको । सो झर्झरनाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूपको भूलो जीव नाना मतनमें बाद विवाद करत नगर जो जगत् औ शरीर ताहीको निरखै है औ वाहीमें सनेह करै है आपने जो सदेहकी में साहबकोहौं कि और को हौं ताको तो निरवारुकह नयबातते नहीं देखी जेहिमें साहब मिलै हैं औ न आप भजाऊ कहे न अपनपौ जाने कि मैं कौनकोहौं जिन जिन मतनमें न साहिबै जानिपरै न आपने स्वरूप जानिपरै तामें तैं तनमनको लगाये है । औ जशयनको औ झर्झरध्वनिकोकहै हैं तामेंप्रमाण ॥ “जकारः शयने प्रोक्तो जकारो झर्झरध्वनौ” ॥ ११ ॥

१-‘ज’ बेगवाले और जाँव को कहते हैं ।

२-‘झ’ आँधी और खोजानेको कहते हैं ।

३-‘ज’ सोने (शयनकरने) औ झर्झर शब्दमें कहाजाता है ।

टटाविकट बात मन माहीं । खोलि कपाट महलमें जाहीं ॥
रहेलटपटे जुटितेहि माहीं । होहि अटल तेहि कतहुं न जाहीं १२ ॥

एक ट कहे जो नाभीमें रेफकी ध्वनि उठै है औ दूसरो टाकहे जो सुरति कमलमें गुरुरकार ध्वनिकरै है । सोदूनों ध्वनि जामें होई सो टाकहावै है सोहे-टटाजीव ! बिकटबातकी जेबासना तेरेमनमें तेई कपाटहैं ताकोखोलिकै दूनों रकारकी ध्वनि एक कै रामनामकी छइउ मात्रा जपत अर्थ बिचारत महल जो साकेत तहांको जाइ रहै । लटपटे कहे जैसे होय तैसे राम नाममें जुटिरहु तौ साकेतमें जाई कै तैं अटलहै है । अथवा बिकट बासननको तेरे मनमें टटाहै रहा है सो टटाको खोलिकै महलमें जा । हे लटपटे ! जौने संसारमें लटपट हैरहे है कहे नरक स्वर्गमें तैं गिरे उठै है सो तैं साकेतमें जुटिरहु जे साकेत में जुटिरहे हैं कहे प्रवेश करिरहे ह तेई अटल हैरहे हैं उनको जनन मरण नहीं होय । वे कतहुं नहीं जाय हैं । टध्वनिको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “टः पृथिव्यां च करके टो ध्वनौ च प्रकीर्तितः” ॥ १२ ॥

ठठा ठौर दूरि ठग नीरे । नितके निठुर कीन्ह मन धीरे ॥
जेहि ठग ठग सब लोग सयाना । सो ठग चीन्हि ठौर पहिचाना १३

ठ कहिये बृहद्ध्वनिको औ ठाकहिये चंद्रमंडलको । सो बृहत्तहै ध्वनिकहे कीर्त्तिजिनकी तीनों तापके हरणहारे चंद्रमण्डलकी नाई ऐसे परमपुरुषपरजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ठौर दूरि है । औ ठग जो मनहै सोनेरे है अथवा हेठ-डुहा मसखराजीव साहबसों मसखरी करनवारो जाते जननमरण छूटै है वा साहबको ठौर दूरि है । ठगजे मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ते नेरे हैं । तैं नित्यको निठुरहै याजो माया ताको ना धीरे करत भे सोकहे तेजकरते भये एसो जो ठग मन जौनसब सयाने लोगनको ठगतभो तौने ठगमनको चीन्हिकै साहब के ठौरको पहिचानौ । अथवा ठग जे हैं गुहवालोग ते साहबते छोड़ायकै और औरमें लगायो ते कहां तेरे मनको धीरे किये नाहीं किये । औ ठ बृहद्ध्वनिको औ चंद्रमंडलको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “बृहद्ध्वनिश्च ठः प्रोक्तस्तथा चंद्र-स्यमंडले” ॥ १३ ॥

१-‘ट’ भूमि, करकपात्र और शब्दकरनेमें कहागया है ।

२-‘ठ’ बड़े शब्द और चन्द्रमाके धरेको कहते हैं ।

डडा डर कीन्हें डर होई । डरहीमें डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरै फिरिआवै। डरहीमें पुनि डरहि समावै॥ १४॥

एक ड कहिये ध्वनिको औ डा कहिये त्रासको सो मायारूप बाणीकी त्रास कहे डर सो या डर तेरे कीन्हें ते होइ है अर्थात् ये मिथ्या हैं तैहीं बनाय लियो है समोइदे । कैसे मिटै सो जिनको तैं डरै है । विषयन को तिनको इन्द्रिनमें समोइदे, इन्द्रिनको डरै है सो मनजो महा डर है तामें समोइदे, औ मनको चित्तन्मा-त्र ब्रह्म में समोइदे या रीतिते डरको डरमें समोइके तैं फिरिआउ साधन करि साहबको जानु । डकार ध्वनिको औ त्रासको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “डकारः शंकरे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते ” ॥ १४ ॥

ढढा ढूढत ई कत जाना । ढीगर ढोलहि जाइ लोभाना ॥
जहां नहीं तहँ सब कछु जानी। तहां नहीं जहँ ले पहिंचानी १५

ढ कहिये बाणीको ढा कहिये निर्गुण ब्रह्म को । सो हे जीव ! बाणीमें लगिकै निर्गुण ब्रह्मको ढूढत तोको कहां जाना है अर्थात् उहाँ कुछ नहीं है तैं तो साहबको है वा ढीगर जा पुरुषके है तौनेको ढोल बाजा बानीरूप पानी तौनेमें लोभाने तैं नाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोल बाजा है अहं ब्रह्म बुद्धि बतावै है सो दूरिकों ढोल सुहावन है वामें कुछ नहीं । देशकालवस्तु परिच्छेदते शून्य है हाथ एकौ न लगैगो । सो हे जीव ! जहां कहे जौने साधनमें साहब नहीं हैं तौनेन साधन को तैं सब कछु जानिलीन्हें है । सो जहां नहीं कहे जहां माया ब्रह्म ये एक हू नहीं हैं तहा साहबको तैं पहिंचानले । ढ निर्गुणको औ ध्वनि को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “डकारः कीर्त्तितो ढक्का निर्गुणे च ध्वनावपि ” ॥ १५ ॥

णणा दूरि वसौ रे गाऊं । रे णणा दूटै तेरे नाऊं ॥
मुये येते जिय जाही घना । मुये यतादिक केतिक बना १६

ण कहिये निष्फलको णा कहिये ज्ञानको । सो हे जीव ! या धोखा ब्रह्मको ज्ञान तेरो निष्फल है या ज्ञानते साहब न मिलेंगे साहब को गाउंजो साकेत है

१-‘ड’ श्री महादेव भयं और शब्द में कहा गया है ।

२-‘ढ’ ढक्का गुणरहित और शब्दको कहते हैं ।

सो दरि बसै है सोरे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीव ! टूटै तेर नाउं कहे वा धोखा ब्रह्ममें जगै तेरो जीवत्व को नाउं टूटि जाइगो अर्थात् तैंहं धोखा ब्रह्म कहावन लगैगा । सों या ज्ञान में केतौ मरिगये हैं औघना कहे बहुत जीव मुये जाहि हैं । औ केतेजैन यही रीति मरिजै हैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञानते साहब न मिलेंगे । ण निष्फलको औ ज्ञानको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “ णकारः कीर्त्तितो ज्ञाने निष्फलेऽपि प्रकीर्त्तितः ” ॥ १६ ॥

**तता अति त्रियो नहिं जाई । तन त्रिभुवनमें राखु छपाई ॥
जो तन त्रिभुवन माहं छपावै तत्त्वहि मिले तत्त्व सो पावे १७**

त कहिये चोरको ता कहिये सींगटकी पूंछको सो हे जीव ! साहबते चोराइकै आंखी छपाइकै सिंहजो साहब ताकी शरण छोड़िकै सींगटकी पूंछजो धोखाब्रह्म तौनेको तैं गहे सो अतित्रियो कहे आसमता ताते कहे अत्यंत चारिउ ओर व्याप्ति त्रिगुणात्मिका माया तौनौ भरितेरी नहीं जाइहै मुक्तिहोबे की कहा कहिये । सो तन कहे अणुमात्र जो तैं है ताको त्रिभुवनमें छपाय राखतिभै माया । सो येजे तेरे पांचौ तन हैं तिनको तैं त्रिभुवनमें छपायदे अर्थात् चारिउ शरीरहैं तिनको संसारी मानिले औ मैं इनते भिन्नहौं वा शरीर को अभिमान जो तैं छाँड़िदे तौ तत्त्व जो साहबको यथार्थज्ञान कि मैं साहबकोहौं तौन जब तोको मिलै तब तत्त्व जे साहबहैं तिनको पावै । तत्त्व यथार्थ को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “ तत्त्वं ब्रह्म-णि याथार्थं ॥ औ साहब तत्त्व कहावै हैं तामें प्रमाण ॥ “ राम एव परं तत्त्वं राम एव-परंतपः ” ॥ ता चोरको औ सींगटकी पूंछको कहै हैं तामे प्रमाण ॥ “ तकारः कीर्त्तितश्चौरः क्रोष्टुपुच्छेपि तः स्मृतः ” ॥ १७ ॥

**थथा थाह थहो नहिं जाई । इह थोरे वह थीर रहाई ॥
थोरे २ थिर रहु भाई । विनु थंभे जस मँदिल थँभाई ॥ १८ ॥**

थ कहिये शिला समूहको औ था कहिये रक्षाको । सो हे जीव ! शिलासमूह जो मन जोनेके भयते अपनी रक्षाकरु काहेते थाहहे अर्थात् बिचार कीन्हें कुछ-

१-‘ण’ ज्ञान और प्रयोजन रहित (बेफायदा) को कहते हैं ।

२-‘त’ चोर और शृगालकी पूंछको कहते हैं ।

वस्तु नहीं है परन्तु काहूके थहाये नहीं थहाय जायहै । शिलासमूह मनहै सो आगेपदमें कहिआये हैं ॥ “पाहनफोरि गंगयकनिकसी चहुंदिशि पानीपानी” ॥ सो यह मनथिर होइ तो वह जीवहू थिररहै । ताते तैं थोरे थोर साधन करु जाते मन थिर होइ । जो साधन न करैगो तौ मन न थिर रहैगो कैसे ? जैसे बिना धंभकहे खंभा देवाऊ और जो कौनौ यशौवाली बात न करै तौवह यश बनै रहतहै ? मन्दिरथंभै है ? अर्थात् नहींथंभै है । अथवा थोरे थोरे साधनकरि मन थिर कैले जब मन थिर है जाइगो तब साधन न करन परैगो। कैसे जैसे कौनौ यशवाली बातकियो फिर वा यश रूप मंदिर बिना थंभै बनोरहै है । थ शिलासमूहको औ रक्षाकोकहे हैं तामें प्रमाण ॥ “शिलो-च्चये थंकारस्स्यात्थकारोभयरक्षणे” ॥ १८ ॥

**ददा देखो विनशनहारा । जस देखौ तस करौ विचारा ॥
दशौ द्वारमें तारी लावै । तब दयालको दर्शन पावै ॥१९॥**

द कहिये कलत्रको औ दा कहिये दानको। सोहेजीव ! या सबकहे यहलोकमें जो कलत्रादि औ वहलोक स्वर्गादिक विनशनहारा है अर्थात् सब नाशमानहै । सो जस देखो कहे जैसा नाशवान् देखतेहौ तैसा तुहं आपने को बिचारकरो कि, हमहूं नाश है जै हैं । दशौ द्वारको महा मुद्रा करि बंदकरि ताली लावै कहे समाधिकरै तबदयालु जे साहबहैं तिनको दर्शन तैं पावैगो । द कलत्रको औ दान को कहै हैं तामें प्रमाण॥ “दःकलत्रे बुधैरुक्तो छेदेदानेपि दातरि” ॥ १९॥

**धधा अधे माहँ अंधियारी । जस देखै तस करै विचारी ॥
अधौ छोड़ि उरध मनलावै । अ पा मेटिकै प्रेम बढ़ावै ॥२०॥**

ध कहिये बंधनको औ धा कहिये धाताको । सोहेजीव ! मायाके बंधनमें परिकै अपनेको धाताकहे ब्रह्मा मानिलियो है। सोहेजीव ! तैं अधः कहे अधोग-तिकी अंधियारीमें परो है । तोकोनहीं सूझिपरै अज्ञानमें परो है । सो जस हेखैहै सुनैहै तैसही बिचार अज्ञान पूर्वक करैहै सो तैं न करु अधो जो है अधो-

१-‘थ’ पर्वत और सङ्कटसे बचाने को कहतेहैं ।

२-‘द’ स्त्री, काटना, देना और दानकरनेवालेको कहते हैं ।

गतिकी राह ताको छोड़िकै ऊर्ध्व कहे साहबके इहां जाबेकी जोराहहै तामेंमन लगाउ अपामेटिकै कहे जो आपन सब मानि राख्यो है सो सबसाहबको मानिकै औ आपनेहंको साहबको मानिकै प्रेमको बढावै । ध बंधनको औ धाता को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “धो बंधने धनाध्यक्षे धाता धीर्महतावपि” ॥ २० ॥

नना वो चौथेमें जाई । रामको गदहहै खर खाई ॥
नाहछोड़ि कियेनकवसेरा । नीचअजौंचितचेतुसबेरा ॥ २१ ॥

न कहिये गुणको औ ना कहिये निंदाको सो हेजीव ! तैंत्रिगुण में बँधिकै निन्दारूप द्वैगयो अर्थात् निंदा करिबेलायक द्वैकैमन बुद्धि चित्तमें अहंकार जो चौथ तामें परिकै अर्थात् आपने को ब्रह्ममानिकै रामको तैं द्वैकै अर्थात् तैंतो श्रीरामचन्द्रको है परन्तु अवरे २ में गदहा द्वै खर खात फिरै है । अर्थात् झूर ज्ञानमें परोहै सो नाह जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको छोड़िकै नरकमें बसेराकियो सोहेनीच ! अबै सबेरो है अजहं चेतु । न गुणको औ निन्दाको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ “नकारः स्याद्गुणे चंदेदुःस्तुतौ च प्रकीर्तितः” ॥ २१ ॥

पपा पाप करै सब कोई । पापके धरे धर्म नहिं होई ।
पपा कहै सुनहु रे भाई । हमरेसेये कछू न पाई ॥ २२ ॥

प कहिये श्रेष्ठको पा कहिये रक्षकको । सो हेजीव ! तैं साहबको द्वैकै औरै औरै देवतनको श्रेष्ठ मानै है औ रक्षक मानेहे । सो पापई करै है पापके किये-ते धर्म नहीं होयगो अर्थात् औरै देवतनके किये तेरी रक्षा न होयगी काहेते पपा अहैं श्रेष्ठ रक्षक जिनको तैं मानै है तेई कहै हैं “हे भाई ! सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो, मुक्ति हमारी दीनि नहीं दैजाइ मुक्ति श्रीरामचन्द्रही की दई दैजाइ है तामें प्रमाण ॥ “मुक्तिप्रदाता सर्वेषां विष्णुरेव न संशयः” । विष्णु-श्रीरामचन्द्रको नामहै सो हमारे सर्वसिद्धान्तमें लिखेहै । प श्रेष्ठको औ रक्षकको कहैहैंतामेंप्रमाण ॥ “परमे पःसमाख्यातो पापाने चैव पातरि” ॥ २२ ॥

१-‘ध’ बाँधना, कुबेर, ब्रह्मा बुद्धि और वायुको कहतेहैं ।

२-‘न’ गुण, चन्द्रमा और निन्दामें कहाजाताहै ।

३-‘प’ श्रेष्ठको, ‘पा’ पीने, रक्षाकरनेवाले और पीनेवालेको कहतेहैं ।

फफा फल लागो वड़ दूरी । चखैं सतगुरु देइ न तूरी ॥

फफा कहैं सुनुहुँ रे भाई । स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई २३

फ कहिये फलको फा कहिये निष्फल भाषण को । सो हे जीव ! जौने फल-को तैं भाषण करैहै कि ऐसोफल होइगो सो या तेरो भाषणो निष्फल है फल जे साहब हैं ते बहुत दूरि हैं सतगुरु जेहैं जे साहब को जानै हैं तेईचाखैं हैं व फल बे तूरिकै काहूको नहीं देइहैं काहे ते बे साहब मन बचन के परे हैं आपही ते आप जाने जाइ हैं आपनी दई इन्द्रि ते आप देखे जाइहैं सतगुरु जे बतावै हैं ते साहबके प्रसन्न होबेकी राह बतावै हैं सो हे भाई ! लोकनमें फल की चाहकरिकै निष्फल के भाषणवाले जे गुरुवा लोगहैं ते कहै हैं कि स्वर्ग पाताल में साहब की खबरि हमहूँ कहूँ नहीं पाई अर्थात् साहब हई नहीं हैं । फ फल को औ फा निष्फल भाषण को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “इंशावातेफकारः स्यात्फःफलेऽपिप्रकीर्तितः । फकारेऽपि च फःप्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे” ॥ २३ ॥

बबा बर बर कर सब कोई । बर बर किये काज नहिं होई ॥

बबा बात कहै अरथाई । फलके मर्म न जानेहु भाई ॥ २४ ॥

ब कहिये बरुणको बा कहिये घटको । सो बरुण जलके भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव ! तुहं बाणी के भीतर द्वैकै घटकी नाई भक्तभकाइ बरबर सब कोई करौहौ सो बरबर के किये काजनहीं होइ है अर्थात् साहब नहीं मिलैहैं । सो हे बबा ! घटकी नाई भक्तभक्तान वारे बात तो बहुत अर्यायकै कहै हैं परन्तु हे भाई ! लोकनके फलको मर्म नहीं जानैहौ कि वा फल भोगकरि कछुदिन में गिरही परेंगे । ब बरुणको औ कलशको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “प्रचेता बः समाख्यातः कलशो ब उदाहृतः” ॥ २४ ॥

भभा भर्म रहा भरि पूरी । भभरेते है नियरे दूरी ॥

भभा कह सुनौ रे भाई । भभरे आवै भभरे जाई ॥ २५ ॥

१-‘फ’ ऑंधी, फल, फ अक्षर और, व्यर्थभाषीको कहतेहैं ।

२-‘ब’ बरुण और कलशको कहतेहैं ।

भ कहिये आकाश शून्यको भा कहिये भ्रमणको । सो हे जीव ! भ भरिबो कहावै है, डेराबो धोखा या ज्यहि मतन में फल शून्य है तेही मतनमें तैं भ्रमण करि रहो है कहे सो विचार को भ्रमण तेरे पूरि रहो है, सो तोको गुरुवा लोग साहबते डेरवाइ दियो औ धोखा में लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्वत्र देखो परै है जब आवै कहे जन्महोइहै तबहुं भभरे आवैहै कहे डरैमें आवैहै औ जब जाइहै तबहुं भभरे कहे डरैमें जाइहै वोहू नानाप्रकारके दुःख होइहैं । सो या भभरे ते नियरे जे साहबहैं ते दूरिहैगये । सो भभाजहैं धोखा ब्रह्मके भ्रमणवाले तेई कहैहैं सो हे भाई ! सुनो भ्रमैते आवैहै भ्रमते जाइहै महा-प्रलयमें लीनहोइहै पुनिसृष्टि समयमें संसारमें आये है । भ आकाशको औ भ्रमणको कहैहैं तामें प्रमाण ॥ “ नैक्षत्रं भं तथाकाशेभ्रमणेभः प्रकीर्तितः । दीप्ति-र्भाभूस्तथाभूमिर्भीर्भयेकथिता बुधैः ” ॥ २५ ॥

**ममा से ये मर्म न पाई । हमरेते इन्ह मूल गँवाई ॥
ममा मूल गहल मन माना।ममीं होइ सो मर्महि जाना॥२६॥**

म कहिये लक्ष्मीको मा कहिये बन्धन को । सो हे जीव तैं लक्ष्मीके बन्धन में परिकै ऐश्वर्य में परिकै साहब को मर्म तू न पायो हमरेते कहे यह सब हमारहै कहे यह विचारते यह सब साहब को पहन जानोइहै आपनमानते इन्हमूल जे साहब हैं तिनको गवाँइदियो सो हे ममा ! मायाबन्धनमें बँधो जीव ! जौन तेरमन में मानाहै ताहीको मूलमानि गहि लीन्होहै सो तैं मूल न पायो-कहे ते कि ममीं कहे जो कोई साहबको मर्मिं होइ है सोई साहब के मर्मको जानैहै । म लक्ष्मीको औ बन्धनको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “ मः शिरश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्तिता । मश्च मातरि माने च बन्धने मः प्रकीर्तितः ” ॥ २६ ॥

**यया जगत रहा भरि पूरी । जगतहु ते यया है दूरी ॥
यया कहै सुनौ रे भाई । हमरे सेये जय जय पाई ॥२७॥**

१-‘भ’ भं उक्षत्र और आकाशको, ‘भः’ घूमनेको, ‘भाः’ शोभाको ‘भी’ डरको कहते हैं ।

२-‘म’ शिर, चन्द्रमा, ब्रह्मा, माता, तौल, और बांधनेको कहते हैं ‘मा’ लक्ष्मीको कहते हैं ।

य कहिये त्यागको या कहिये प्राप्तको । सो हे जीव ! त्यागते नामसंन्यासते प्राप्तने साहब होई हैं ते साहब जगत् में पूरि रहे हैं । जैन भरि पूरि कह्यो सो साहबको सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत्ते दुरि है अर्थात् बाहर है । ते यया जे साहब हैं ते कहै हैं कि, हे भाई ! सुनो हमरे सेयेते कहे हमरेन सेवाते सबको जय करनेवाला जो काल ताहूते जय पावै औरी तरहतै कालते जय नहीं पावै है साहब त्यागहीते मिलैं हैं तामें प्रमाण ॥ दोहा ॥ “विगरीजन्म अनेककी सुधरै अबहीं आज । होय रामको रामजपि तुलसी तजि कुसमाज” ॥ य त्यागको औ प्राप्त को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “यमोर्यः कीर्तितः शिष्टैर्यो वायुरिति विश्रुतः । याने यातरि या त्यागेकथितः शब्दवेदिभिः” ॥ २७ ॥

ररा रारि रहा अरु झाई । राम कहे दुख दारिद जाई ॥
ररा कहै सुनौ रे भाई । सत गुरु पूछिकै सेवहु आई ॥ २८ ॥

र कहिये कामको स कहिये अग्रिको । सो हे जीव तैं कामाग्रिमें अरुझि रहो है तामें जरो जाइ है यामें दुःख दरिद्र न जाइगो रामनाम कहते दुःख दरिद्र जाइ है । सो हे भाई ! सुनो रराकहे रसरूप जे साहब तिनको ज्ञानागिते कर्मलायकै सतगुरु जे साहबके जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनामको सेवहु । रामनाम के सेवनकी युक्ति बुझिकै रको काम अर्थ छोड़िकै र कामको औ अग्रिको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “रश्च कामेऽनले सूर्ये रुश्च शब्दे प्रकीर्तितः” ॥ २८ ॥

लला तुतरे वात जनाई । ततुरे पावै परचै पाई ॥
अपना ततुर और को कहई । एकै खेत दुनो निरवहई ॥ २९ ॥

ल कही इन्द्रको ला कही लक्ष्मीको । सो हे जीव ! तैं इन्द्रकी नाई लक्ष्मी पाइकै तत्त्वकी बातें जनावै है सो तत्त्व तब पावैगो जब साधुनते परचै पावैगो । सो हे जीव ! “तत्त्वंराति गृह्णातीति तत्त्वरः” अपना तत्त्व जेहैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानै है और औरको ज्ञान सिखवै है सो एकखेत जो है एकहृदय तेरो तामें दोनों निर्व है अर्थात् का दोनों निर्व हैं हैं ? नहीं निर्व है हैं कि, तैं अज्ञानी बनोरहे है । और को ज्ञानकथै है तौका और के ज्ञानलगे है ? नहीं लगे है । जो तैंहूं ज्ञानीहोइ है तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरको लगे औ जो ततुरे पाठ

१-‘य’ यम, वायु, ‘या’ सवारी, जानेवाले और छोड़नेको कहते हैं ।

२-‘र’ कामदेव, अग्नि और सूर्यको कहते हैं । ‘रु’ शब्दकरनेमें होता है ।

होई तो याअर्थ है। “ला इन्द्रको औ छेदनकोकहै हैं । सो हैं जीव ! जो यज्ञादिककारि इन्द्रादिक देवतनके संतुष्टिके वास्ते पशुछेदन करौहौ सो वेद या तुतरे-बात जनाई है । जेसे लरिका रोटीको टोटीकहैहै परन्तु माता तात्पर्य जानै है कि रोटीही मांगी है । ऐसेवेद जो यज्ञादिक कहै हैं सो दुष्कर्म छुड़ाइके यज्ञादिक में लगायो । फेरिज्ञानदैके येऊकर्म छुड़ाइके तात्पर्यते साहबको बतावै हैं । सो तुतर जो है वेद तौनेको अर्थ तब पावै जब वाके तात्पर्य को पावै सो आपतो तुतरहै वेद परदा कैके बात कहै है सब जीवनको ए कहे हैं कि, जीव औरको औरई कहै है मेरो तात्पर्य नहीं समझैहै सो एकै खेत जो संसार है तामें दूनों निबहै हैं” । अथवा साहबके इहां वेदनहीं पहुंचि सकैहै न प्रकट वर्णन करि सकैहै तात्पर्यही करिकै कहै है जगत औ कर्म याही-को प्रकट वर्णन करैहै । औजीवजेहैं ते जगतही में पर रहै हैं जे तात्पर्य जानै-हैं तेई साहबके समीप पहुंचै हैं ताते वेदौ जीवौ एक खेत जो जगत है ताही-मों निबहै हैं जो जगत न रहै तो बद्ध विषयी मुमुक्षुई न रहिजायँ मुक्तभरि रहिजायँ औ चारिउ वेद रकारमकार में रहिजायँ । ल इन्द्र को लक्ष्मी को छेदन को कहैहैं तामें प्रमाण ॥ “ल इन्द्रो लवनो लश्च ला च लक्ष्मीः प्रकीर्तिताः” ॥ २९ ॥

ववा वह वह कह सब कोई । वह वह कहे काज नहिं होई ॥

ववा कहै सुनौ रे भाई । स्वर्ग पताल किं खबरि न पाई ३०

वकहिये भक्तको वा कहिये वायुको सो हेजीव ! तैं तो साहबको भक्तहै वायु की नाई जगत्में बहतफिरौहौ ! वहहै ईश्वर, वहहै ईश्वर या कहा सब कोई कहौहौ । सो वे नाना ईश्वरनके कहे काज कहे मुक्ति न होइहै । सोहे ववा कहनेवारे भाई ! सुनते जाउ तुम स्वर्ग पातालकी खबरि नहीं पाई अर्थात् सबके रखवार साहबको नहीं जानौ हौ तामें प्रमाण ॥ “स्वर्गपतालभूमिलौंबारी । एकै रामसकल रखवारी” ॥ वा सात्वतको औवायुको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ “सात्वतेवरुणे वातेवैकारः समुदाहृतः” ॥ ३० ॥

शशा सरदेखै नहिं कोई । सरशीतलता एकै होई ॥

शशाखै सुनौ रे भाई । शून्यसमान चला जगजाई ॥ ३१ ॥

१-‘ल’ इन्द्र और काटनेवाले को, ‘ला’ लक्ष्मीको कहते हैं ।

२-‘व’ सत्वगुणी, वरुण और वायुको कहतेहैं ।

शकहिये सुखको शकहिये शेषको सो हे जीव ! तैंतो सुखसागरजे साहबहैं तिनको शेषहै अर्थात् अंशहै सो सुखसर जे साहब हैं तिनको तुमकोई नहीं देखौहैं कैसो है वा सर कि जाकी शीतलता एकई है वा शीतलता पावे फिरि जनन मरणनहीं होइहै सो शशा जे साहबके शेषसाधुहैं तेकहै हैं कि जिनको अंशजीव तिनको नहीं जानै है शून्यजो धोखाब्रह्म ताहीमें जगत समानजाइहै। श शेषको औ सुखको कहै हैं ॥ “वदन्ति शं बुधाः शेषे शः शांतदच निगद्यते॥ शदच शयन-मित्याहुः हिंसा शः समुदाहृतः ॥ ३१ ॥

**षषा षरषर कहै सब कोई । षर षर कहै काज नहिं होई ॥
षषा कहै सुनौरे भाई । राम नाम लै जाहु पराई ॥ ३२ ॥**

ष कहिये श्रेष्ठको । सो षा दूसरी है सो हे जीव ! श्रेष्ठते श्रेष्ठजे साहबहैं तिनको षरषर सांचसांच सबै कहै हैं औरको खोटामानै हैं परंतु षर षर कहैते काज जो है मुक्ति सो न होगी बिना रामनामके साधनकीन्हे । औ बिना नीकी प्रकार साहबके जाने । काहेते षषा कहे श्रेष्ठते श्रेष्ठ जे साहब हैं ते कहै हैं कि, हे भाई ! सुनौ ! तुम राम नामको लैकै मायाब्रह्म ते पराई जाउ अर्थात् सब को छोड़िकै रामनाम जपौ । ख श्रेष्ठको कहै हैं ॥ “षकारः कीर्तितः श्रेष्ठषु-श्च गर्भविमोचने” ॥ ३२ ॥

**ससा सरा रचो वरिआई । सर बेधे सब लोग तवाई ॥
ससाके घर सुन गुन होई । यतनी बात न जानै कोई ३३ ॥**

स कहिये लक्ष्मी को सा कहिये परोक्षको । सो हे जीव ! तेरो ऐश्वर्य परोक्षमें है अर्थात् साहबके यहां है या देखबेकी लक्ष्मी तेरी नहीं है सो तैं सरा-जो कर्म है ताको बरिआई रचिलियो सो वाही सरारूपीशरहै कहे कर्मरूपीशरमें लोग बेधे हैं ते सब तवाईमें परे हैं नरक स्वर्गमें जाय आवै हैं। सो ससा जो जीव ताके घर कहे हृदयमें काहूको शून्यकहे धोखा ब्रह्म समान है, काहूके गुण जो

१-‘श’ शं- सुख, मङ्गल, श- शेषनाग, शान्त प्रकृति, सोना और हिंसाकरने को कहते हैं ।

२-‘ष’ श्रेष्ठको और ‘षु’ गर्भसे प्राणीकी उत्पत्ति होनेको कहते हैं ।

माया सो समानैह सो यतनी बात कोई नहीं जानैहै कि, येई जाहब के चीन्हन न देखैं । स लक्ष्मीको औ परोक्षको कहैहैं ॥ “सःपरोक्षे समाख्यातः-साच लक्ष्मीःप्रकीर्तिता” ॥ ३३ ॥

हहा होइ होत नहिं जानै । जबहीं होइ तवै मन मानै ॥
है तो सही लहै सब कोई । जब वा हो तब या नहिं होई ॥ ३४ ॥

ह कहिये बिष्कम्भको हा कहिये त्यागको । सो हे जीव या बिष्कम्भ शरीरको त्यागहोत कोई नहीं जानै है । जब शरीरत्याग द्वैजाइ है तबहीं जानैह कि, शरीरत्याग द्वैगयो । जामें जीव थँभारैहैहै सो शरीरमें हंसरूप सही है । ता जीवको । परंतु सबकोई नहीं लगैहै कहे नहीं पावैहै । जब वा हंसशरीरहोइ जब या शरीर-नहीं होइहै वाही हंसशरीरमें थँभारैहै है । ह बिष्कम्भको औ त्यागको कहैहैं तामें प्रमाण ॥ “हैःकोपवारणे प्रोक्तो हस्स्यादपि च शूलिनि । हानेपि हः प्रकथितो हो बिष्कम्भः प्रकीर्तितः” ॥ ३४ ॥

क्षक्ष क्षण परलय मिटि जाई । क्षेव परे तब को समुझाई १
क्षेवपरे कोउ अंत न पाया । कह कबीर अगमन गोहराया ३५

क्ष कहिये क्षत्रको क्षा कहिये वक्षस्थलको । सो हे जीव ! तैं क्षत्रपति जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको वक्षस्थलमें तौ ध्यान करु तौ तेरी प्रलय जनन मरण क्षणमें मिटिजाई । जब क्षेव कहे तेरो शरीर क्षय द्वै जाइगो तब तोको को समुझावैगो । क्षेव परे कहे शरीर क्षय द्वैगये कोउ अंत साहबको नहीं पायो है । सो कबीरजी कहैहैं कि, याहीते तोको हम आगेते गोहरावैहैं कि फिरि क्या करैगो । क्ष क्षत्रको औ वक्षस्थलको कहैहैं तामें प्रमाण ॥ “क्षश्च क्षत्र क्षत्रपतौक्षो वक्षसि निगद्यते” ॥ क्षत्रकहे क्षत्रपतीको बोधद्वैजाइ जैसेबल कहे बलरामको बोधद्वैजाइहै ॥ ३५ ॥

इति चौंतीसी संपूर्ण ।

१-‘स’ आँखोंके पीछेकी बात और लक्ष्मीको कहते हैं ।

२-‘ह’ क्रोधकेरोकने और शूलयुक्तको कहते हैं छोड़ने और रोकनेकोभी कहते हैं ।

३-‘क्ष’ दुःखसे बचाने वाले और छातीको कहते हैं ।



॥ सत्पुरुषाय नमः ॥

अथ विप्रमतीसी ।



सुनहु सवन मिलि विप्र मतीसी॥हरि बिनु बूढ़ीनावभरीसी १
 ब्राह्मण हैकै ब्रह्म न जानैं । घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं ॥२॥
 जे सिरजा तेहि नहिं पहिचानैं।कर्म भर्म लै वैठि बखानैं ३॥
 ग्रहण अभावस सायर पूजा।स्वातीके पात परहु जनिदूजा ४
 प्रेत कर्म मुख अंतर बासा । आहुति सहितहोमकीआसा५
 कुल उत्तम कुल माहँकहावैं।फिरिफिरि मध्यमकर्मकरावैं ६
 कर्म अशुचि उच्छिष्टै खाहीं।मति भरिष्टयमलोकहिजाहीं ७
 सुतदारा मिलि जूठो खाहीं । हरिभगतनकी छूतिकराहीं ८
 न्हायखोरि उत्तम है आवैं।विष्णुभक्त देखे दुख पावैं॥९॥
 स्वारथलागिरहे वे आढ़ा । नामलेत जस पावक डाढ़ा १०
 रामकृष्णकीछोड़िनिआसा।पढ़िगुणिभयेकृत्तिमकेदासा ११
 कर्मकरहिं कर्महिंको धावैं।जो पूछै तेहि कर्मदढ़ावैं ॥१२॥
 निष्कर्मीकै निन्दा कीजै । करैकर्मताही चितदीजै ॥१३॥
 असभगती भगवतकी लावैं।हरिणाकुशको पन्थचलावैं १४
 देखहुकुमतिनरकपरगासा॥बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५
 जाके पूजे पाप न ऊढ़ै । नाम सुमिरितेभवमेंबूढ़ै ॥१६॥

पापपुण्यकै हाथेहिपासा । मारि जगतको कीन्हविनासा १७
 येवहनी दोऊ वहनि न छाड़ै। यहगृहजारैं वहगृह माड़ै॥ १८॥
 बैठेते घर शाहु कहावै । भितरभेदमनसुसहि लगावै ॥ १९॥
 ऐसीविधि सुरविप्र भनीजै। नामलेत पंचासन दीजै ॥ २०॥
 ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा। बूड़िगयेनहिआपुसँभारा॥ २१॥
 ऊंचनीचहै मध्यमबानी । एकैपवन एकहै पानी ॥ २२ ॥
 एकैमटियाएककुम्हारा । एकसवनकासिरजनहारा ॥ २३॥
 एकचाक बहुचित्र बनाया। नादबिंदुके बीच समाया ॥ २४॥
 व्यापीएकसकलकी ज्योती । नामधरे क्याकहिये मोती २५
 राक्षसकरणी देवकहावै । वादकरै भवपार न पावै ॥ २६॥
 हंस देह तजि न्यारा होई ॥ ताकी जाति कहै धौं कोई॥ २७॥
 श्यामसुपेतकि, रातापियरा। अबरणवरणकितातासियरा २८
 हिंदू तुरुक कि बूढ़ा वारा। नारि पुरुष मिलि करौ विचारा २९
 कहिये काहि कहा नहिं माना। दास कबीर सोई पहिचाना ३०
 साखी—वहा अहै वहिजातुहै, करगहि ऐंचहु ठौर ।

समुझाये समुझै नहीं, दे धक्कादुइ और ॥ ३१ ॥

सुनहु सवनमिलिविप्र मतीसी। हरि बिन बूड़ी नाव भरीसी १
 ब्राह्मण ह्वैकै ब्रह्म न जानैं । घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं॥ २ ॥
 जे सिरजातेहि नहिंपहिचानैं। करमभरम लैवैठि बखानैं॥ ३॥
 ग्रहण अमावस सायर पूजा। स्वातीके पात परहु जनि दूजा ४

विप्रके वर्णनमें हम तीस चौपाई कहै हैं सो सवन मिलि सुनते जाउ कैसे
 ब्राह्मण हीतभये कि, जिनको जन्म हरिविना भरी नाव ऐसी बूड़िगई ॥ १ ॥

ब्रह्मईके जानते ब्राह्मणकहावै है सो ब्रह्म को तो न जान्यो यज्ञादिकनके प्रति-
ग्रह घरमें लैआवै हैं आदिते दानों आयो ॥ २ ॥ जौन उत्पत्ति कियो है ताको
तो जानतई नहीं हैं कर्मकाण्डको भरम नाना प्रकारके बैठिकै बखानै हैं ॥ ३ ॥
सों हे दूना कहे दुःखग्रहणमें अमावस में सायर कहे समुद्रादिक तीर्थन में जैसे
स्वाती के जलको पपीहा दौरै है ऐसे तुम्हीं ग्रहण अमावसमें समुद्रादिक तीर्थन
में दान लेन को ताके रहौ हौ परन्तु आशा नहीं पूनै है ॥ ४ ॥

**प्रेत कर्म मुख अंतर बासा । आहुति सहित होम की आसा ५
कुल उत्तम कुल माहँ कहावैं।फिरि फिरि मध्यम कर्म करावैं**

मुखते प्रेत कर्म करावै हैं कि, ऐसो पिंडदान करो तौ प्रेतत्व छूटिजाइ ।
औ अंतःकरणमें या आशा बसै है कि, जो या होमकरै तौ हम दक्षिणा पावैं
॥ ५ ॥ औ ब्राह्मण तो बड़े उत्तमकुलके कहावै हैं कि, हमबड़े कुलके हैं परन्तु
फिरिफिरि कहे बारबार मध्यम कहे नरक जायवाके कर्मकरावै हैं ॥ ६ ॥

**कर्म अशुचि उच्छिष्टै खाहीं।मति भरिष्ट यमलोकहि जाहीं ७
सुत दारा मिलि जूठो खाहीं।हरिभगतनकी छूति कराहीं ८
नहाय खोरि उत्तम है आवैं । विष्णु भक्त देखे दुख पावैं ॥ ९ ॥**

नाना प्रकारके अपावनकर्म कैकै भैरव दुलहा देवादिकनको उच्छिष्टखाय हैं
सो मतिभ्रष्टहैके यमलोकहि जाइहैं ॥ ७ ॥ तौने प्रेतनको जूठसुत दाराकहे पुत्र स्त्री
त्यहि समेत सब मिलि खाइहैं औ हरिभक्तन की छूति मानै हैं ॥ ८ ॥ औ नहा
य खोरि कै आपने जान पवित्रहै आवैं औ जिनके दर्शनते पवित्र होयहैं ऐसे
विष्णुभक्त तिनको देखिकै दुःखपावै हैं। ई बड़े तिलकदिये शङ्ख चक्र दीन्हे कहां रहे
उनको मुख देखेंगे तो पापलगै है या कहै हैं ॥ ९ ॥

**स्वारथ लागि रहे वे आढ़ा । नाम लेत जस पावक डाढ़ा १०
राम कृष्णकीछोड़िनि आसा।पढ़ि गुणिभे किरतिमके दासा**

अपने स्त्री पुत्र यहीके स्वारथ में वे अर्थ आढ़ति लगायरहे हैं जिनके अंश हैं
ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके नामलेतमें मानों जीभ पावकमें जरी जाइहै ॥ १० ॥

रामकृष्ण जे हैं तिनकी आशा छोड़िकै पढ़ि गुणिकै किरतिम कहें आपनी बनाई
मूर्ति अथवा किरतम माया तिनको दास कहावैं हैं ॥ ११ ॥

कर्म करहिं कर्महिको धावैं । जो पूछैत्यहि कर्म दृढ़ावैं ॥ १२ ॥

निःकर्मिकै निंदा करहीं । कर्म करै ताही चित धरहीं ॥ १३ ॥

अस भक्ती भगवतकी लावैं । हिरणाकुशको पंथ चलावैं ॥ १४ ॥

कर्म नाना प्रकारके करै हैं औ कर्मफल जो स्वर्गादिकनको भोग ताहीको
धावैं हैं औ जो कोई मुक्तिहूकी बात पूछै है ताको कर्मही दृढ़ावैं हैं ॥ १२ ॥

निःकर्मि जे साधु हैं तिनकी तौ निन्दा करै हैं औ कोई कर्मकरै है ताको सत्कार
करै हैं ॥ १३ ॥ सो या रीतिते भगवत्की भक्ति करै हैं या कहै हैं

कि ईश्वर तो अजा गल थनकी नाई है वाते कौन कामहोय है । औ कोई
हिरणाकुशको पंथ तामसी मत चलावैं हैं कहै हैं कि हमहीब्रह्महैं ऐसो दैत्यनको
ज्ञानहै तामें प्रमाण ॥ “ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी आढ्या-
भिजनवानस्मि कोन्योऽस्ति सदृशो मया ॥ १४ ॥

देखहुकुमतिनरकपरगासा । विनुलखिअंतरकिरतिमदासा ॥ १५ ॥

सो या कुमतिनको प्रकाशतो देखौ बिनु अन्तरके लखे कि हम कौनके हैं या
बिनाजाने किरतिम जो माया ताके दास है रहे हैं रक्षक को न माने रक्षा कौनकरे ॥ १५ ॥

जाके पूजै पाप न ऊढ़ै । नाम सुमिरितैं भवमें बूढ़ै ॥ १६ ॥

पापपुण्यकेहाथहिपासा । मारिजक्तसबकीनविनासा ॥ १७ ॥

ये वहनी दोउ वहनिनछाड़ै । यहगृह जारै वहगृहमाड़ै ॥ १८ ॥

औ जौने देवताके पूजै न पापछूटै ना मुक्तिहोइ तेई देवतन को पूजैहैं उन-
हींको नाम सुमिरि सुमिरि संसारमें बूढ़ै हैं ॥ १६ ॥ औ नाना प्रकारके कर्म

बताइकै पाप पुण्य रूप फांसी डारिकै जगत्को विनाश करिदेत भये ॥ १७ ॥

औ कोई विप्र जे हैं ते वहनी कहे संसारमें बहनवारी जो विद्या अविद्या माया
पाप पुण्य रूप ताको वहनिन कहे ढोवनवारो जो विप्र सो ऊपरते छांडिकै यह
गृह जारिकै कहे छांडिकै वहगृह कहे वहांके महन्त भये ध्यान लगायकै बैठे ॥ १८ ॥

बैठते घर शाहु कहावैं । भितर भेद मन मुसहि लगावैं ॥ १९ ॥
 ऐसीविधि सुर विप्र भनीजै । नामलेत पंचासन दीजै ॥ २० ॥
 बूढ़ि गयेनहि आपसँभारा । ऊंचनीच कहुकाहि जोहारा ॥ २१ ॥
 ऊंचनीच है मध्यमवानी । एकै पवन एकहै पानी ॥ २२ ॥
 एकै मटिया एक कुम्हारा । एक सवनको सिरजनहारा ॥ २३ ॥
 एकै चाक बहुचित्र बनाया । नाद बिन्दुके बीच समाया ॥ २४ ॥

सो ऊपरते ऐसो ध्यान लगायकै घरमें बैठे बड़े साधुकहावैं औ अन्तःकरण
 में मनते पराई द्रव्य मूसैको भेद लगाये हैं ॥ १९ ॥ सोयहि रीति विप्रनकें
 सुरनकी विधिकहै हैं नामको लेइहैं कहे मन्त्रजपै हैं औ पंचासनकहे पंच आसन
 देइहैं अर्थात् पंचांगोपासना करै हैं ॥ २० ॥ सो आपै मायाकी धारमें बूढ़िगये
 न सँभारत भये तो ऊंचनीच कहे पांच देवतनमें काको जोहारयो कहे काकेभये
 अर्थात् काहूके न भये ॥ २१ ॥ सो विप्रनको उत्तम मध्यम नीच बाणी करिकै
 होइहैं बास्तव तो सबके शरीरनमें एकै पानी है एकै पवनहै ॥ २२ ॥ औ एकै
 सबकी माटीहै कहे सब पांचभौतिक हैं औ सबके सिरजनहार कुम्हार मन एकैहैं
 ॥ २३ ॥ एकचाक जो जगतहै तामें बहुत विधिके चित्र बनावत भयो मन औ
 नाद बिन्दुके बीचमें आपै समातभयो ॥ २४ ॥

व्यापी एक सकलमें ज्योती । नामधरेका कहिये मोती ॥ २५ ॥
 राक्षसकरणी देव कहावै । दाद करै भवपार न पावै ॥ २६ ॥
 हंस देह तजि न्यारा होई । ताकी जाति कहै धौं कोई ॥ २७ ॥
 श्यामसुपेदकि, रातापियरा । अवरणवरणकि तातासियरा ॥ २८ ॥

सो एक ज्योति जो आत्मा सो सबमें व्यापि रही है ब्राह्मण नामधरयो सो
 ताहीते मोतीकही अर्थात् न कही बिना ब्रह्म जाने ब्राह्मण नहीं कहावै है ॥ २५ ॥
 औ करणी तौ राक्षसकी नाई करे हैं औ जगतमें ब्राह्मण देवता भूसुर कहावै हैं

औ बादविवाद नानाप्रकारके करैहैं परंतु संसार समुद्रको पारनहीं पावैहैं ॥ २६ ॥
 सो हंसजो जीव है सो देहको त्यागिकै न्यारो द्वैजाइ है ताकी जाति कोई कहै
 तो वह कौन बर्णहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ॥ २७ ॥ औ वह आत्मा कि,
 श्याम है कि सुपेद है कि लालहै किपियरहै कि अवर्ण है कि वर्ण में है कि गर्म है
 कि शीतल है ॥ २८ ॥

हिन्दू तुरुक कि बूढ़ावारा । नारिपुरुष मिलिकरहु विचारा २९
 कहिये काहि कहा नहि माना । दासकबीर सोई पहिचाना ३०

साखी । वहिआ है वहि जातुहै, करगहि ऐंचहु ठौर ।

समुझाये समुझै नहीं, दे धक्का दुइ और ॥ ३१ ॥

पुनि हिन्दू है कि, तुरुकहै कि बूढ़ा है कि लडिकाहै या नारि पुरुष मि-
 लिकै सबजने बिचारकरो ॥ २९ ॥ सो या बात कासों कहों कोई नहीं मानैहै
 सबके रक्षक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको दासकबीर कहै हैं कि, मैं
 सोई पहिचान्यों है कि उनको अंशजीव है वे स्वामी हैं ॥ ३० ॥ या जीव
 और २ में लगिकै बहत आयो है औ बहा जाइ है सो करगहि कहे एकबे-
 उपदेशकरिके और ऐंचौ हौं कि साहब में लागु समुझावत आयो हैं औ समु-
 झावतहौं जो समुझाये न समुझै तो लाचार हैकै दुइ धक्का और महुं दैदेउँ कि
 बहा जाय ॥ ३१ ॥

इति विप्रमत्तसी सम्पूर्णा ।



अथ कहरा प्रारभ्यते ।



कहरा पहिला ॥ १ ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके वचन समाई हो ।
 मेली सिष्ट चराचित राखो रहो दृष्टि लोलार्ई हो ॥ १ ॥
 जो खुटकार वेगि नहिं लागो हृदय निवारहु कोहु हो ।
 मुक्तिकी डोरि गांठि जनि खैंचो तव वाझी बड़ रोहु हो ॥ २ ॥
 मनुवो कहौ रहै मन मारे खीझो खीझि न बोलै हो ।
 मनुवो मीत मिताइ न छोड़ै कवहुं गांठि न खोलै हो ॥ ३ ॥
 भूलौ भोग मुक्ति जनि भूलौ योगयुक्ति तन साधो हो ।
 जो यहि भांति करहु मतवारी ता मतके चित बांधो हो ॥ ४ ॥
 नहिं तौ ठाकुर है अति दारुण करिहै चालु कुचाली हो ।
 बांधि मारि डारि सब लेहै छूटी सब मतवाली हो ॥ ५ ॥
 जवहीं सामत आइ पहुंचे पीठि सांट भल टूटै हो ।
 ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखै कहे काहु किन छूटै हो ॥ ६ ॥
 एक तो अनिष्ट पाउं परि विनवै विनती किये न मानै हो ।
 अन चिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिचानै हो ॥ ७ ॥
 लेइ बोलाय बात नहिं पूछै केवट गर्भ तन बोलै हो ।
 जेकरि गांठि सबल कछु नहिं निराधार है डोलै हो ॥ ८ ॥

जिन्ह सम युक्ति अगमनकै राखिन धरणिमांझ धर डेहरि हो ।
 जेकरे हाथ पाउं कछु नहिं धरणि लाग तनसे हरि हो ॥ ९ ॥
 पेलना अक्षत पेलि चलु बौरे तीर तीर कह टोवहु हो ।
 उथले रहौ परो जानि गहिरे मति हाथै कै खोवहु हो ॥ १० ॥
 तर कै घाम उपरकै भूभुरि छांह कतहुं नहि पावहु हो ।
 ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कस न छतरिया छावहु हो ११
 जो कछु खेल कियो सो कीयो वदुरि खेल कस होई हो ।
 सासु ननंद दोउ देत उलाटन रहहु लाज मुख गोई हो १२ ॥
 गुरु भो ढील गोन भो लचपच कहा न मानेहु मोरा हो ।
 ताजी तुरुकी कवहुं न साजेहु चढ़यो काठके वोरा हो ॥ १३ ॥
 ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचै हो ।
 जेहि रँग दुलहा ब्याहन आये तेहि रँग दुलहिन राचै हो १४
 नौका अछत खेवै नहिं जान्यो कैसे लागहु तीरा हो
 कहै कबीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो ॥ १५ ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके बचन समाई हो ।
 मेली सिष्ट चराचित राखौ रहौ दृष्टि लौ लाई हो ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे जीव ! तैं गुरुके बचनमें समाइकै सहज ध्यान
 तैं करुगुरुके बचन जो आगे लिखि आये हैं कि, सुरति कमलमें गुरु बैठे रकार
 मकार जैपैं तामें समाइ जाइ । अर्थात् दलदलमें बाढ़िकै इक्कीस हजार छसै
 श्वास जे चलै हैं तिनमें तेतने राम नाम जैपैं । कौनी रीतिते जैपैं तामें प्रमाण ॥
 श्री कबीरजी को पद ।

षट् चक्र निरूपण ।

संतौ योग अध्यातम सोई ।

एकै ब्रह्म सकल घट व्यापै दितिया और न कोई ॥
 प्रथम कमल जहँ ज्ञान चारि दल देव गणेशको बासा ।
 रिधि सिधि जाकी शक्ति उपासी जपते होत प्रकासा ॥
 षट दल कमल ब्रह्मको बासा सावित्री सँग सेवा ।
 षट सहस्र जहँ जाप जपतहैं इंद्र सहित सब देवा ॥
 अष्ट कमल जहँ हरि सँग लक्ष्मी तीजो सेवक पवना ।
 षट् सहस्र जहँ जाप जपतहैं मिटिगो आवा गवना ॥
 द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजा शक्ती सारंग ।
 षट सहस्र जहँ जाप जपत हैं ज्ञान सुरति लै पारंग ॥
 षोडश कमल में जीवको बासा शक्ति अविद्या जानै ।
 एक सहस्र जहँ जाप जपतहैं ऐसा भेद बखानै ॥
 भँवर गुफा जहँ दुइ दल कमला परमहंस कर वासा ।
 एक सहस्र जाके जाप जपतहैं करम भरमको नासा ॥
 सहस्र कमलमें झिल मिल दर्शो आपुइ बसत अपारा ।
 ज्योति स्वरूप सकल जग व्यापी अक्षय पुरुष है प्यारा ॥
 सुरति कमल परसत गुरु बोलै सहज जाप जप सोई ।
 छसै इकइस सहसहि जापिले बूझै अजग कोई ॥
 यही ज्ञानको कोई बूझै भेद अगोचर भाई ।
 जो बूझै सो मनका पेखै कह कबीर समुझाई ॥ १ ॥

औ यही रामनाम मनबचनके परे है सो आगे कहि आये हैं और सब मनके भितरै है यही रामनाम सबके ऊपरहै ताहीमें मतौ तबही पारै जाउगे । औ मेली सिष्ट कहे सिष्टजो संसार ताको मेलि देउ कहे छोड़ि देउ । औ चरचित राखौ कहे सहज समाधि आगे कहि आयै हैं ताको चरचित राखौ कहे वही जानतरहु । अथवा वाहीमें जो आपने चितको चरा कहे चलत राखौ दलदल

यकतो अनिष्ट पांय परि विनवै विनती किये न मानै हो ।
अनचिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिचानै हो ७

एक जे साहब हैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्ट रहे कहे उनको इष्ट न मानत रहे । औ वहां यमदूतनसों पांय परि परि विनवै है, सब देवतनते विनवै है, वे विनतीहू किये नहीं मानै हैं । काहेते कि, दयाहीन हैं । औ साहब जे दयालु छुड़ावनवारे तिनसों अन चिन्हार रहै चिन्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै । भाव यह है कि जो, अजहूं स्मरणकरो तौ साहब छुड़ाइही लेइगो ॥ ७ ॥

लेइ बुलाय बात नहिं पूछै केवट गर्भ तन बोलै हो ।
जेकरी गांठि सबल कछु नाहीं निराधार है डोलै हो ८

औ केवट जे गुरुवा लोगहैं ते तब तो गर्भ कहे अहंकार तनमें कैकै तुमको बोलाय आपने मतमें मिलाय लीन्हेनि । अब जब यमदूत मारन लगे तब तुमको बात नहीं पूछै हैं । गुरुवा लोग सो जाके सबल कहे खर्च राम नाम रह्यो सो पार भयो औ जाके राम नाम सबल कछु नहीं रह्यो सो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलैहै अथवा निराधार जो ब्रह्म ताहीम डोलैहै ॥ ८ ॥

जिन सम युक्ति अगमनकै राखिन घरणि मांझ घर डेहरिहो ।
जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं धरन लागु तन सेहरि हो ॥ ९ ॥

जौने स्त्री पुत्रादिकन को नाना युक्तिकैकै पालन कियोहै तौन घरणि कहे स्त्री शरीर छूटे डेहरी भरि जायहै आगे नहीं जायहै । सम जो पाठहोय तौ जिनका अपने सम बनाय राखिन तौन स्त्री डेहरीलौं पडुंचाई है । धुनिते या आयो कि पुत्र चिता लौं जायहै सो जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं कहे जेकरे हाथपाउँ नहीं है ऐसो जो जीवात्मा ताको जब यमदूत धरनलागु तब तनमें सेहरि है आवै है तन विकल है जाइहै, वे कोऊ नहीं सहाय करै हैं । ताते साहबको जानौ जो कहो यमदूत कैसे धरेंगे ? तौ लिंग शरीरते धरेंगे अर्थात् जाको जैसो कर्म है बाके संस्कारते वा लोकमें कर्म शरीर बनैहै ॥ ९ ॥

पेलना अक्षत पेलि चलु वौरे तीर तीर कहँ टोवहु हो ।

उथले रहौ परौ जनि गहिरै मति हाथै कै खोवहु हो १०

सो कबीरजी कहैहैं कि, पेलना जो राम नाम सो अक्षत बनै है ताको संसार समुद्रमें पेलिकै हे जीव ! संसारसमुद्र उतरिजा । तीर तीर कहे नाना मतनको का टोवत फिरै है उथले में रहौ अर्थात् साहब को ज्ञान कीन्हे रहौ । गहिर जो धोखा ब्रह्म कठिन तामें न जाउ । वहां गये तुम्हार हाथहुको जीवत्त्व सो जातरहैगो ताते तुम न खोवौ उथले कहे साहबको ज्ञान जानौ ॥ १० ॥

तरकै घाम उपरकै भूभुरि छांह कतहुं नहिं पावहु हो ।

ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कस न छतरियाछावहु हो ११

तरके घाम कहे नाना कर्म जे नीकौ नागा कियो ताकी जो ताप संसारमें ऊपरकी भूभुरि कहे नरक में गये तौ वहाँ तपै है, स्वर्ग में गये तौ गिरनकी भय बनी है, काहू को अधिक ऐश्वर्य देख्यो तो ईर्ष्या बनी रहैहै कि, ऐसो कर्म हम न किये । ये दोऊ तापमें साहबको ज्ञान रूप छांह कतहुं नहीं पावैहै ऐसो तुम जानतैहौ पै वही में पसीजौ हौ कहे श्रम करौ है पसीना चलैहै औ छीजौहौ साहबकी ज्ञान रूप छतरिया काहे नहीं छावहुहौ ॥ ११ ॥

जो कछु खेल कियो सो कीयो वदुरि खेल कस होई हो ।

सासु ननँद दोउ देत उलाटन रहहु लाज मुख गोई हो १२

जो कछु खेल कियो कहे जो कछु कर्म कियो सोई भोग कियो । अथवा जौन खेल माया ब्रह्मको साथ करिकै कियो सोई फल भोग कियो । सो बिना राम नाम लीन्हे इनको छोड़िकै फेर खेल कियो चाहौ मुक्तिवाला सो कैसें होइगो । सासु जो है मूल प्रकृति औ ननँदि जो है विद्या माया सो ये दूनों तुमको उलाटन कहे उलटिकै जवाब देइहै कि, विद्या माया करिकै मुमुक्षुहै मुक्तिकी इच्छा करत रह्यो । सो अब हम तुमहींको लपेटि लियो तुम हमको त्यागत रह्यो है अब नहीं छूटि सकौहौ । या जवाब सुनि तुम लाजिकै मुखगोइ रहौहौ लाचार है छूटि नहीं सकौहौ ॥ १२ ॥

गुरु भो ढील गोन भो लचपच कहा न मानहु मोरा हो ।
ताजी तुरकी कबहूं न साजेहु चढ़े न काठके घोरा हो ॥ १३ ॥

जो गुरुवा लोग तुमको उपदेश कियो ते गुरु ढील है गये काहेते कि, जौन जौन उपासना की गोन तुम्हारे ऊपर लादि दियो तेते देवता लचपच हैगये कहे उनके छुड़ायेते ना छूटे संसारमें परेजाय । देवता के फुरते न उत फुर होइ है नइत; जब देवते न फुरे तब गुरुवा ढील परिगयो । सो कबीरजी कहै हैं कि, जो मैं कहत रह्यो सो तुम ना मान्यो कि, रकार मकार जपौ याहीते छूटैगे ताजी तुरकी जो रकार मकार ताको कबहूं न साज्यो कहे कबहूं राम नाम ना लियो जो साहबके पास लैजाय । काठको घोरा जो है मन जड़ तामें चढ़्यो सो कूदिकै संसार गाड़में डारि दियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामें चढ़्यो तो तुमको कूदिकै साहब के पास पहुंचावतो ॥ १३ ॥

ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचै हो ।
जेहि रंग दुलहा व्याहन आये तेहि रंग दुलहिनि राचै हो १४

गुरुवा लोगनकी ओठ झांझ है औ नीम ताल देइ है वही ब्रह्मही में ताल देइ है कहे नाना बाणी करिकै नाना मतन करिकै वही ब्रह्ममें चुवावै है । अथवा जाको जौन उपासना बतावै है ताको तौन इष्ट देवता है ताहीको ब्रह्म कहै हैं ताहीको सब कुछ कहै हैं, उहै तालको मान देइ हैं अर्थात् सब शास्त्रको अर्थ वाहीमें पर्यावसानकरै हैं । और गुरुवनमें लगिकै सुखवाचक जौ कतौ न हरा गयो कहे परम पुरुष श्रीरामचंद्र को भूलि गये । संसार में सब जीव दुखिया है नाचन लगे । कोई रजोगुणी उपासनामें राचत भये, कोई तमोगुणी उपासनामें राचत भये, कोई सतोगुणी उपासना में राचत भये । जेहि रंग दुलहा जे उपासना वारे जीव व्याहन आये कहे गुरुवा लोग जौन रंगमें लगायो तेहि रंगमें दुलहिनि बुद्धि रचत भई ॥ १४ ॥

नौका अक्षत खेवै नहिं जान्यो कैसेहु लागहु तीरा हो ।
कहै कबीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो ॥ १५ ॥

अक्षत नौका जो राम नाम है ताको खेवै न जान्यो कहे जौने विधिते संसार सागरते पार कै देइ है सो विधि राम नाम जपिवेकी न जान्यो । सो कैसे संसार सागरते पार हैकै तीर लागौगे ? सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जोलहा कहे जो कोई राम रस लहाहै अर्थात् राम रस पाय मातो है सोई संसार सागरको पार पायो है, सोई कायाको बीर जीव परम पुरुष श्रीरामचन्द्रको दास भयो है । १ जो “ माते ” पाठ होय तो या अर्थ है कि, कबीरजी कहै हैं कि, जातिको मैं जोलहा सो राम के रसमें मातेते मैं दास कबीर कहवावन लग्यो । पार्षदरूप जो हंस स्वरूप याही शरीरमें पाय गयो, संसारको पार हैगयो । परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास है गयो । तुम ब्राह्मणादिक जो रामरस में मतौगे तौकैसे संसारसागरते ना पार होउगे, पारही है जाउगे । कबीरजी रामरसमें मतिकै बचिगये तामें प्रमाण ॥ सायरबीजकको ॥ “हम न मरैं मरिहै संसारा । हमको मिला जियावन हारा ॥ अब ना मरौ मोर मन माना । तेई मुवा जिन राम न जाना ॥ साकत भै संत जन जीवै । भरि भरि राम रसायन पीवै” ॥ १५ ॥
इति पहिलाकहरा समाप्त ।

अथ दूसरा कहरा ॥ २ ॥

मति सुनु माणिक मति सुनुमाणिक हृदया वंदि निवारौहो १
अटपट कुम्हरा करै कुम्हरिया चमरा गाउ न बाँचैहो ।
नित उठि कोरिया वेष्ट भरतुहै छिपिया आंगन नाचैहो ॥ २ ॥
नित उठि नौवा नाव चढ़त है बरही वेरा वारिउ हो ।
राउरकी कछु खवरि न जान्यो कैसे झगर निवारिउहो ॥ ३ ॥

१ याग्रन्थमें भी और और ग्रन्थनमें भी टीकाकार बारबार कबीरजीको अजन्मा कह गये हैं संसारमें कंदल साहबकी आज्ञाते आवै हैं ते कोई गर्भ ते उनको आवनो होय नहीं है याते ऊपर को अर्थ ही ठीक है नीचे को अर्थ क्षेपक जानपरत है पीछे से कोई लिखि दियो है ।

एक गांवमें पांच तरुणि वसैं तिनमें जेठ जेठानी हो ।
 आपन आपन झगर पसारिनि प्रियसों प्रीति नशानीहो ४
 भैंसिन माहँ रहत नित वकुला तकुला ताकि न लीन्हाहो ।
 गाइन माहँ वसेउं नहिं कवहुं कैसेकै पद चीन्हा हो ॥५॥
 पथिका पंथ बूझि नहिं लीन्हो मूढ़हि मूढ़ गवाराहो ।
 घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु कैसे लगबेहु पाराहो ॥ ६ ॥
 जत इतके धन हेरिनि ललइच कोदइतके मन दोराहो ।
 दुइ चकरी जिन दरन पसारिहु तब पैहौ ठिक ठोराहो ॥७॥
 प्रेम वान एक सतगुरु दीन्ह्यो गाढो तीर कमानाहो ।
 दासकवीर कियो यह कहरा महरा माहि समानाहो ॥ ८ ॥

मति सुनु माणिक मति सुनु माणिक हृदया बंदिनिवारोहो १

श्री कबीरजी कहैं कि हेजीव ! तैंतो माणिक है माणिक लाल होयहैं सोतैं
 कहां संसारमें अनुराग करिकै लाल ह्वैरे साहब में अनुराग करि लाल होइ
 गुरुवा लोगनकी वाणी तैं मति सुनु मतिसुनु आपने हृदयकी जो संसाररूपी
 बंदि ताको निवारु ॥ १ ॥

अटपट कुम्हरा करै कुम्हरिया चमरा गाउ न वाचैहो ।
नित उठिकोरिया बेट भरतुहै छिपिया आंगन नाचैहो २॥

काहेते कि अटपट कुम्हरा जो या मन है सो कुम्हरिया करै है कहे नाना
 शरीर रचैहै जैसे कुम्हार नाना बासन बनावै है ऐसे या मन नाना शरीर रचैहै
 सो शरीर जो गाउं है तौन चमरा कालके मारे नहीं बचैहै मन रचत जाइहै
 शरीर काल खात जाइ औ कोरिया जे मुनि लोग हैं सत रज तम ग्रन्थ प्रवर्त-
 नवारे ते बेट भरत हैं कहे बनावत जाइहैं तेई ग्रन्थनको लैकै छिपिया जे
 गुरुवा लोगहैं ते आंगन आंगन नाचै हैं अर्थात् चेला हेरत फिरै हैं नाना मतमें
 होकै औरनको नाना मतमें लगावत फिरै हैं ॥ २ ॥

नित उठि नौवा नाव चढ़तहै वरही बेरा वारिउ हो ।

राउरकी कछु खवारि न जान्यो कैसेकै झगर निवारिउहो ३

नौवा जो संन्यासी जौन आपनो मूढ़ मुड़ावैहै आनौ को मूढ़ि कै चेला बनाइ लेइहै सो वेषमात्र जो नाव तामें चढ़िकै संसार समुद्र पार होवा चाहै हैं औ नाना देवतन प्रतिपाद्य जे ग्रन्थ तेई हैं वरही कहे बोझा ताहीको बेरा रचि वारी जे नाना उपासना वारे हैं ते संसार समुद्रको पार होवा चाहै हैं । राउर जो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको घर ताको जानतई नहीं या झगरा कैसेकै निवारण होइ । साहबते तो चिन्हारिनि नहीं है कबहुं माया पकरि लेइहै कबहुं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहुं मन पकरिलेइ है इत्यादिक जेई पावैहैं तेई धरि लेइ हैं सो कैसेकै झगड़ा निवारण होइ ॥ ३ ॥

एक ग्राममें पांच तरुणि बसैं तिनमें जेठ जेठानी हो ।

आपन आपन झगर पसारिनि प्रियसों प्रीति नशानीहो ४॥

एकगांउ जो या संसार तामें पांच तरुणि जे ज्ञानेंद्री ते बसै हैं ज्ञानेंद्री कहेंते कर्मोन्द्रिउ आइ गई, तिनमें जेठ मन जेठानी माया है सोई दशौ इंद्री आपन आपन झगर कहे अपने अपने विषय ओर मनको खेंचत भई सो मनके अधीनहै जीव सोऊ वही कत चलो गयो परम पुरुष पर जे श्री रामचंद्र प्रीतम हैं तिन सों प्रीति नशाइ गई ॥ ४ ॥

भैंसिन माहँ रहत नित बकुला तकुला ताकि न लीन्हाहो ।

गाइन माहँ वसेहु नहिं कबहुं कैसेकै पद चीन्हाहो ॥ ५ ॥

सो भैंसीजे दशौ इंद्री हैं तिनमें बकुला जो मन सो रहैहै जैसे भैंसी जब जलमें पैरैहैं तब बकुला वाके ऊपर बैठ रहैहै जो मछरी भैंसिनके किलनी खाबेको आई सो बकुला खाय लीनो ऐसी इन्द्री जब विषय ओर चली तब मनहीं भोग करै है इंद्रीद्वारा ताते मनको बकुला कह्यो है सो हे जीव ! तैंतो तकुलाहै कहे ताकनवारो है काहे न ताकि लीन्हा औ साहब के गावन वारे जे संत तिन गाइन में कबहुं बसै न कियो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र को पद कैसेकै चीन्हो ॥ ५ ॥

पथिका पंथ बूझि नहिं लीन्हो मूढ़हि मूढ़ गवांराहो ।
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु कैसेकै लगिहौ पाराहो ॥ ६ ॥

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिनके पंथके चलनवारे जे पंथी संतजन निनसों तौ पंथ बूझि न लीन्हें मूढ़ जे गुरुवा लोग तिनकी बाणीमें परिकै मूढ़ द्वैगयो गवांर द्वैगयो सो साहबके पहुंचवे को जो घाट ताको छोड़ि औघट जो माया ब्रह्म तामें चलीहौ सो कैसे कै पार लागौगे ॥ ६ ॥

जतइतके धन हेरिनि ललइच कोदइतके मन दोराहो ।
दुइ चकरी जिन दरन पसारेहु तहँ पैहहु ठिक ठोराहो ॥ ७ ॥

जत इतके कहे जिनके जतवा चलै है सो जतइत कहावै है सो धोखा ब्रह्म है जो सबको दरि डारै है सबको मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहाँ न पाइन तब कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासनारूपको दौरा जाय है तिनके इहांगये कि इहां मुक्तिधन मिलैगो सो कबीर जी कहै हैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तौ कोदइत जे भाटीके दुइ चकरी बनाइ दरना पसारै हैं तहां ठीकठौर पैहौ ? अर्थात् न पैहौ साहब को जानोगे तबहीं ठिकान लागैगो ॥ ७ ॥

प्रेम बाण यक सतगुरु दीन्हो गाढ़ो खैंचि कमाना हो ।
दास कबीर कियो या कहरा पहरा माहिं समाना हो ॥ ८ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे जीवौ ! तुम यामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तब पारै जाउगे। प्रेमको तो बाण करु औ सतगुरु जो ज्ञान दीन्हो है ताको कमान करि गाढ़ो खैंचि साहबरूप जो निशान है तामें प्रेमबाण मारु अर्थात् प्रेम लगाउ । हे साहब को सदाको दास ! कायाकेबीर जीव या कहरा में संसार को कहर है सो कहा कियो है, महरा माहिं समाना कहे जे साहब के महरमी हैं तेहीमें समाय अर्थात् उनहींको सत्संग करु । कहू गाढ़ो खैंचि कमाना यही पाठ है। अथवा हे कबीर ! कायाके बीर जीव मन माया ब्रह्मके दास द्वै यहि संसार तैं

किये सो कहरा कहे कहर करनवारो है सो तैं आपनो रूपतौ विचारु कहाँ
माया दास द्वैरहै है तैं महरा कहे मायाके हरनवारो जे हैं साधु तेही माहिं समाना
कहे तैं तिनके बरोबर है जो तैं आपने स्व स्वरूपको जानै है ॥ ८ ॥

इति दूसरा कहरा समाप्त ।

अथ तीसरा कहरा ॥ ३ ॥

रामनामको सेवहु वीरा दूरि नहीं दुरि आशाहो ।
और देव का पूजहु वौरे ई सब झूठी आशाहो ॥ १ ॥
उपरके उजरे कहभो वौरे भीतर अजहूं कारोहो ।
तनको वृद्ध कहा भो वौरे ई मन अजहूं वारोहो ॥ २ ॥
मुखके दांत गये का वौरे अंदर दांत लोहेके हो ।
फिरि फिरि चना चवाउ विषयके काम क्रोध मद लोभेहो ३
तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनीहो ।
कहै कबीर सुनो हो संतो सकल सयानप उनीहो ॥ ४ ॥

राम नामको सेवहु वीरा दूरि नहीं दुरि आशाहो ।

और देव का पूजहु वौरे ई सब झूठी आशाहो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे कायाके बीरौ जीवो ! रामनाम को सेवन करो
राम नाम दूरि नहीं है तुम्हारी आशा दूरिहै और देवको हे वौरे का पूजहुहो
इनकी आशा सब झूठी है ॥ १ ॥

उपरके उजरे कह भो वौरे भीतर अजहूं कारोहो ।

तनको वृद्ध कहाभो वौरे या मन अजहूं वारोहो ॥ २ ॥

मुखके दांत गयेका वौरे अंदर दांत लोहेके हो ।

फिरि फिरि चना चवाउ विषयके काम क्रोध मद लोभेहो ३

हे बौर जो ऊपर बहुत ऊजर बनेरह्यो बहुत आचार कियो तौ कहा भयो
भीतर तो अजहूं करिये हो औ तनकी बड़ी वृद्धता मान्यो तौ हे बौर ! कहा भयो
मनतो अजहूं बारो कहे लरिकवा बनाहै वही चाल चलैहै ॥ २ ॥ औ मुखके
दांत गिरिगये तौ हे बौर कहा भयो अन्तःकरणके जे बिषय के चना चाबन-
वारे ऐसे लोहेके दांततो गैषे न भये काम क्रोध मद लोभ बनेनहैं मिटबै न भये ॥ ३ ॥

तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनीहो ।
कहै कबीर सुनोहो संतो सकल सयानप ऊनीहो ॥ ४ ॥

हे बौर ! तनकी सकल कहे रूप बिषय करनवाली सामर्थ्य घटिगई औ संगी
मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतौ घटिबे न भई सो कबीरजी कहै
हैं कि हे संतो ! तुम सुनो या सब जीवनकी सयानपऊनी है अर्थात् तुच्छ है
बिना रामनाम के जाने जनन मरण न छूटैहै तामें प्रमाण कबीरजीका ॥
“ जोतै रसना राम न कहिहै । उपजत बिनशत भरमत रहिहै ॥ जस देखी
तरुवरकी छाया । प्राणगये कहु काकी माया ॥ जीवत कछु न किये परमाना ।
मुये मर्म कहु काकर जाना । अंत काल सुख कोउ न सोवैं । राजा रंक दोऊ मिलि
रोवैं ॥ हंस सरोवर कमल शरीरा । राम रसायन पिवै कबीरा ॥ ४ ॥ ”

इति तीसरा कहरा समाप्ता ।

अथ चौथा कहरा ॥ ४ ॥

ओढ़न मेरा रामनाम मैं रामहि को वनिजारा हो ।
रामनामका करौ वनिजमैं हरि मोरा हटवाराहो ॥ १ ॥
सहस नामको करौ पसारा दिन दिन होत सवाईहो ।
कान तराजू सेर तिन पौवा डहकिन ढोल बजाईहो ॥ २ ॥
सर पसेरी पूरा करिले पासंघ कतहुं न जाईहो ।
कहै कबीर सुनोहो संतो जोरि चले जहडाई हो ॥ ३ ॥

ओढ़न मेरो रामनाम मैं रामहिंको बनिजारा हो ।

रामनामको करौं बनिजमैं हरि मोरा हटवारा हो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि पांखड़ी लोग जे हैं ते कहै हैं हमारो ओढ़न राम-नामही है अर्थात् राम नामही के ओढ़नते ठगि लेहिहैं । परम तत्त्व जो रामनामहैं तौनेको ठगिवेको ओढ़र बनाये हैं काहे न मारे परै ? कौन तरहते कि बड़े बड़े टीका दैलिये माला जपै हैं न रामनाम को तत्त्व जानैं न अर्थ जानैं न जपैकै विधि जानैं न नामापराध दश जानैं औ या कहै हैं कि हम रामनामको बनिजारा हैं औ रामनामकी बनिज करैहैं औ हरि जे हैं तेई हमारे हटवारे हैं कहे दलालहैं अर्थात् हम उनहीके द्वारा सब रामनामको सौदा लेहिहैं उनकी प्रेरणाते हम मन्त्र देइ हैं जो वाके भागमें होयगो सो होयगो हमारो पैसा धोतीतो हाथको न जायगो । जो कोई कहै है कि शिष्य परीक्षा कै लेउ तो या कहै हैं कि कहांको बखेड़ा लगायो है हम मन्त्र दैदियो वह जो चाहै सो करै मुक्त होइ जाइगो ॥ १ ॥

सहस नामको किये पसारा दिन दिन होत सवाईहो ।

कान तराजू सेर तिन पौवा डहकिन ढोल बजाईहो ॥ २ ॥

औ या कहै हैं कि एक नामके लीन्हेंते सर्व कर्म छूटि जाइहैं हम तो हजारन नाम लेइहैं कर्म कहां रहेंगे सब छूटि जायेंगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाई बढेंगे । सो दोऊ गुरु चेलनको ऐसो हवालहै चेलनके कान जे हैं तेई फेरहा तर जुवा है औ तीनपावका सेरहै अर्थात् त्रिगुणात्मक मन है सो मन बचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलि दियो अर्थात् मन्त्र दियो । डहकिन ढोल बजाई कहे चेला लोग चारिउ ओर कहि आये कि हम मन्त्र लियो है कै डहकाइ गये ढोल बजाइ ॥ २ ॥

सेर पसेरी पूरा करिले पासँघ कतहुं न जाईहो ।

कहै कबीर सुनोहो संतो जोरि चले जहडाईहो ॥ ३ ॥

गुरुवनके उपदेशते सेर जो है मन पसेरी जो है ब्रह्मज्ञान सो पूरा करीलै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्मको पूर्ण मानै परंतु पसंघा जो मूलाज्ञान सो कतहुं न जायगो वाहीमें परिकै अन्तकाल में जहडायकै कहे डहकाय चले जायेंगे ॥ ३ ॥

इति चौथा कहरा समाप्त ।

अथ पांचवां कहरा ॥ ५ ॥

राम नाम भजु राम नाम भजु चेति देखु मन माहींहो ।
 लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े चले डोलावत बाहींहो ॥ १ ॥
 दाऊ दादा औ परपाजा उइ गाड़े भुइ भाड़ेहो ।
 आँधरे भये हियाकी फूटी तिन काहे सब छाँड़ेहो ॥ २ ॥
 ई संसार असार को धन्धा अंतकाल कोइ नाहींहो ।
 उपजत बिनशत बार न लागै ज्यों वादरकी छाहींहो ॥ ३ ॥
 नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाईहो ।
 कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़ी सब चतुराईहो ॥ ४ ॥

राम नाम भजु राम नाम भजु चेति देखु मन माहींहो ।

लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े चले डोलावत बाहींहो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे मूढ़ ! परमपुरुष श्री रामचन्द्रको रामनाम है
 ताको भजु भजु। भज सेवायां धातुहै सो याही रामनामको सेवा कर । रामनाम
 मन बचनके परै है सो आगै छिखि आये हैं आपने मनमें चेति कहे बिचारिकै
 देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिकै गाड़ि २ धरचो जब मरन लाग्यो यमदूत
 लै जान लगे तब बाहीं डोलावत चलैहो कि वे धन हमारे नहीं हैं ॥ १ ॥

दाऊ दादा औ परपाजा उइ गाड़े भुइ भाड़ेहो ।

आँधरे भये हियोकी फूटी तिनकाहे सब छाँड़ेहो ॥ २ ॥

जो कहे वा जन्म कब देख्योह तो तेरे दाऊ दादा औ परपाजा वे भुइ
 में केतौ भाड़े गाड़ि गाड़ि मरिगये हैं उनहीं के साथ कबै धन गयो है सो तैं
 आँधरे द्वैगये तेरे हियोकी फूटि गई हैं जैसे सब धन छोड़िकै वे चले गये हैं
 धनको मालिक तुहीं भयो ऐसे तुहं धन छोड़िकै चलो जायगो तेरो धन औरही
 को होयगो तेरे हाथ कुछ न लगैगो ॥ २ ॥

या संसार असारको धंधा अन्तकाल कोई नहींहो ।

उपजत विनशत बार न लागै ज्यों वादरकी छाहींहो॥३॥

या संसार असार कहे झूठहीको धंधाहै अंतकालमें कोई आपनो नहीं है जोकहो कि हम जाबही न करेंगे बनेही रहेंगे तो शरीरके उपजत विनशत में बार नहीं लगैहै जैसे बादरकी छाहीं भई औ पुनि मिटिगई ॥ ३ ॥

नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाईहो ।

कह कबीर यक राम भजे विन बूढ़ी सब चतुराईहो॥४॥

बड़े गोतके भये बड़े कुल के भये बड़ी बड़ी जातिके नात भये तिनकी कौन बड़ाईहै ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरही कोई न छुवैगो ताते ये सब नात गोत जबभर शरीर बनोहै तबहीं भरेके हैं शरीर छूटे ये सब छूटि जाइहैं इनकी कौन बड़ाई है । सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, एकजे परमपुरुष परश्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामनाम के भजे कहे सेवा किये विन सब चतुराई तिहारी बूढ़ि जायगी नरकहीको जाउगो । जेजे आपनी २ कल्पना ते नाना उपासना कैलियेहो तिनते चाहोहो कि हमारी मुक्ति है जायगी ते एकहू काम न आवैगो तामें प्रमाण श्री गोसाईंजी को पद ॥ “ राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाईरे।नाहिं तो भव बेगारि में परिहौ पुनि छूटब अति कठिनाईरे । बाँस पुरान साजु सब अटपट सरल त्रिकोण खटोलारे । हमहिं दिहल कारि कुटिल करमचंद मंद मोल विन डोलारे।विषम कहारमार मदमाते चलैं न पाय बटोरेरे । मंद बैलंद अभेरा दलकनि पाई दुख झकझोरेरे । कांट कुराय लपेटन लोटन ठामहिं ठाम बझाउरे । जस जस चलिये दूरि निज तस तस बांसन भेंट लकाउरे । मारग अगम संग नहिं संबल नाम गामकर भूलारे । तुलसि दास भवआश हरहु अब होहु राम अनुकूलारे ॥ १ ॥

अर्थ—राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे॥ गोसाईंजी जीवन को उपदेश करैहैं इहां राम कहतचलु तीनि बारकह्यो सो मुक्त मुमुक्षु विषयी तीनों जीवन को कहैहैं सो गोसाईंजी अपनी रामायणमें कह्योहै चौ०॥ “विषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥ राम सनेह

सरस मन जासू । साधुसभा बड़ आदर तासू ॥ सिद्ध विरक्त महामुनि
 योगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुखभोगी ॥ या ते यह कि राम बिना मुक्तहुनकी
 गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीवके नाते कहै हैं कि हम सब यकीहैं
 अरु इहां एकबचन कहैहैं सो प्रति जीव सो पृथक् २ कहै हैं कि हे भैया या
 दुःखमार्ग त्यागि देउ यामें दुःख पावोगे ताते राम कहते चलो ॥ नाहिं तो
 भव बेगारिमें परिहौ पुनि छूटव अति कठिनाईरे ॥ नहीं तो भव जो संसार
 है ताके बेगारिमें परोगे बेगारि परिबो कहाहै जाते संसारते कबहू न उद्धार
 होइ ऐसे कर्म माया तुमको धारैकरावैगी जो शरीररूप डोलाको गुमान
 कियेहोहु कि डोला चढि बेगारि न परैगे तो धरनवारो समरथ है डोलामें
 चढेहू धरि लेइगो तब कठिन है जायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवाले
 को बेगारि पकरै है तब कोई कहै हैं कि येतो बड़े आदमी हैं इनको सड़क
 खोदाना चाहिये तब अंगरेजलोग कहैहैं कि हमारे इहां दस्तूरहै म्याना चढेजाइ
 वही में फरहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढे बेगारि धरि जाइ है औ डोलहू
 तिहारो जर्जरहै सो कहै हैं ॥ “बांस पुरान साजु सब अटखट सरल तिकोन खटो-
 लारे । हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचंद मंद मोल बिन डोलारे ॥ प्रारब्ध जो है
 सोई पुरान बांस है काहे ते कि संचित तो प्रारब्ध भै है तेहिते महापुरानहै ।
 औ सब साज अटखट कह्यो सो आठ औ षट् कहे चौदह साज हैं शरीररूपी
 डोलाकी सो कहैहैं “त्वचा, रुधिर, मांस, अस्थि, मेद, मज्जा, शुक्र, केश, रोम,
 नस, नख, दंत, मल, मूत्र, सो त्वचा डोलाको बोहारहै रुधिर बोहार को रंग औ
 मांस बोहारकी तुई है औ अस्थिडोलाको काठहै औ मेद मज्जा डोलाको तकिया
 बिछौनाहै औ नस रसरीहै औ नख लोहेकी पतुरी है औ दांत खीला है औ
 मलमूत्र लघुत है औ घुनको कीरा है काहेते कि कीरनहू में पानी होय है ।
 अथवा साजु सब अटखट जो यह पाठ होइ तौ पुरजा पुरजा जो रै है यही
 अर्थ है औ सरल जो कह्यो सो सरोहै कहे रोगनते ग्रसितहै औ तिकोन खटो-
 ला जो कह्यो डोलामें सो शरीर की तीन अवस्थाहैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति याहीमें
 परेरहै है सोई तिकोन खटोला है अथवा बालापन युवापन वृद्धापन ई तीनों-
 पन तिकोन खटोलाहैं शरीर रूपी डोलामें सो ऐसो डोला कुटिल करमचंद

कहे कुटिल कलंकी करम करिकै कहे बनाइकै हम सबको दीन्हो है औ ऐसो निबल डोलाहै । औ मंद मोलबिन जो कह्यो सो औरको मांस भोजनहूंमें काम आवै है यह मानुष शरीरको मांस बेचबेहूते कोऊ नहीं लेइ याते मंद मोल कहे थोरहू मोल बिनाहै सो ऐसो डोला में चढिकै हे भैया ! या संसार मार्ग में चलौगे तो कलंकी करम को दियोहै डोला तुमहूं को कलंक लागि जाइगो । यह जर्जर डोला जो संसार मार्गमें टूटैगो तौ फँसि जाउगे फिर न निकसौगे जो नाम सड़क चलौगे तौ या सड़क राम घाटही लगैहै डोला टूट्यो दिव्य रूप ते आंखी मुंदेहू चले जाउगे अथवा दिव्य रूपते विमान चढ़ि चले जाउगे कैसो है डोला सो कहैहैं ॥ “बिषम कहार मार मद माते चलहिं न पाय बटोरे रे । मंद बिलंद अभेरा दलकनि पाई दुख झक झोरेरे” ॥ बिषम कहे कहार जेहिको पांचों इंद्रिय सो एकतो सम नहीं है दूसरे स्वभावहीते बिषमहैं तीसरे मार मदमातेहैं सो मतवारे के पांय सम नहीं पैं हैं चलत में पांय बगरि जाइहैं पांय बगरिबे कहे रूप रस गंध स्पर्श शब्द इनमें जाय रहैहै । फिरि मार्ग कैसो है मंद कहे नीचहै बिलंद कहे ऊंचहै अर्थात् कहुं अपमानते दीन द्वै जाइहै अपनेको नीच मानै है कहुं मानते अपनेको बड़ो ऊंच मानैहै औ कहुं अभेरा कहे धक्का लगि-जायहै। धक्का कहा है कहुं पुत्र मरिगयो भाई मरिगयो चोर चोराय लियो सो या लोकमें लोग कहैहैं कि हमको बड़ो धक्का लगो। दलकनि कहाहै कि विषय सुख देत में अच्छो लगैहै जब वामेंररयो तब विषय दलदल में फँसि जाय है औ पाई दुःख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरा लगैहै सो इंद्रिरूप कहार गिरै हैं कहुं उठै हैं ताते विकलताई झकझोरा का दुःख पाइतैं ॥ “कांट कुरायल पेटन लोटन ठांवहिं ठांव बझाउरे । जस जस चलिय दूरि निज तस तस बासन भेटल काउरे” ॥ कहीं कांटहैं कहे सुन्दर रूपहै सो नयनरूपी कहारनके छेदिजायहैं तब गिरि जाय हैं कहे आसक्त द्वै जाय हैं औ कुराय सजल होइ है सो रस है तामें रसनारूप कहार बूडिजाय है औ लपेटन फूली लताहै तेई गन्धहैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरि पैं है लोटन लोकमें सर्पको कहैहैं सो स्पर्श है त्वचारूप कहारनको डसि डारै है कामिनीके एक अङ्ग छुवतमें सर्वांग कामविष चढ़ि जाय है याते स्पर्शको लोटन सर्प कह्यो है

औ ठांवहिं ठांव बझाऊ कहे मोहरूप शिकारी सो नाना बिषय की कथा
औ नाना भूत यक्षादिक सेवनते सिद्धिकी प्राप्त तिनकी कथा औ नाना ता
मसमत तिनकी कथा सो शब्दरूप बागुरि ठामहि ठांव लगाय राख्यो है
तामें श्रवणरूप कहार अरुझिकै डोला डारि देइहै फिरि संसार मग कैसो
है ज्यों ज्यों संसार पथमें चलियतुहै त्यों त्यों दूरि रामपुर परतो जायहै
भैया रामपुरकी गैल नहीं है और राहहै फिरि कैसो ह यामें वास नहीं
है अर्थात् कल नहीं रहै है कर्म करतई जाइहै शांत हैकै कोई नहीं टिख्यो ॥

“मारग अगम संग नहिं संबल नाम ग्रामकर भूलारे । तुलसिदास भव त्रास हरहु
अब होहु राम अनुकूलारे ॥” सो या प्रकार यह मार्ग है संसार सोई पृथ्वी है
तामें विषयके हेतु नाना यतन करिबो अरु राजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसार
कर्म करिबो सोई चलिबो है ताको गोसाईंजी कहै हैं किं अगमहै कहे चलिबे
मुआफिक नहीं है औ नाम मार्गमें संतनको संगहै ते रामपुरको बिघ्न नाशिकै
पहुंचाइ देइहैं यहां कैसो है संगनहिं संबल कहे सम्यक् है बल जेहिके ऐसे
संत सङ्गमें नहीं है अथवा नानामार्ग में तो सात्विक श्रद्धा कलेवा मिलै है या
मार्गमें श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्यो
है जे श्रद्धा संबल रहित इत्यादिक औ जा गाउंको तुमको जानैहै ताको नामही
भूलि गयो है भूला जो कह्यो सो गर्भमें सुधि होइ है फिरि भूलि जायहै याते
भूला कह्यो है अथवा जीव नाम ग्राम कर भूलहै नाना देवतन को नाम लेइहै
औ तिनहीं के धाम जाइबेकी इच्छा करै है सो तेरो ते नामनते भव बन्धना छूटै
है न ते धामनमें गये तेरो जनन मरण त्रास छूटैगो सो अब गोसाईंजी कहैहैं कि
हे भैया ! अब अपने अपने जीवन पै दाया करि संसारकी त्रास हरो अब काहेते
कह्यो कि अनेक जन्म भटकि के अनेक शरीर पाइकै मनुष्यको शरीर पायो है
सो अबहूँ नाम मार्ग चलौ याते अब कह्यो है औ होहु राम अनुकूला जो कह्यो
सो उपक्रममें नाम मार्ग बतायो ताको चलिक्कै उपसंहार में होहु राम अनुकूला
कह्यो सो एक उपलक्षण है छः प्रकारकी शरणागती को सूचन कियो है उपक्रम
में नाम मार्ग बतायो उपसंहारमें शरणागती बतायी सोई श्री गोसाईं जी कहैहैं

कि हे भैया ! रघुनाथजी को नाम जपौ औ शरण जाउ याहीमें उबारहै औरमें नहीं है षट् विधि शरणागत को लक्षण ॥ “ अनुकूलस्य सङ्कल्पः प्रतिकूलस्य वर्जनम् ॥ रक्षिष्यतीति विश्वासो गोमृत्त्ववरणं तथा ॥ आत्मनिक्षेपकार्पण्यं षड्विधा शरणागतिः ” ॥ ४ ॥

इति पांचवां कहरा समाप्त ।

अथ छठवां कहरा ॥ ६ ॥

राम नाम बिनु राम नाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाईहो ॥ १ ॥
 सेमर सेइ सुवा जो जहड़े ऊनपरे पछिताईहो ।
 जैसे मदिप गांठि अर्थै दै घरहुकी अकिल गँवाई हो ॥ २ ॥
 स्वादे उदर भरत धौं कैसे ओसे प्यास न जाईहो ।
 द्रव्यक हीन कौन पुरषारथ मनहीं माहँ तवाईहो ॥ ३ ॥
 गांठी रतन मर्म नहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरी हो ।
 कह कबीर यह अवसर बीते रतनन मिलै बहोरी हो ॥ ४ ॥

राम नाम बिनु राम नाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाई हो ॥ १ ॥

उपासक जे हैं ते पंचांगोपासना करिकै औ कापालिकादिक मतवारे देवत-
 नके उपासना करिके नास्तिक मरबई मोक्ष मानिकै व्याकरणी शब्द ज्ञान
 करिकै ज्योतिषी कालज्ञान करिके सांख्यवाले प्रकृतिपुरुषज्ञान करिकै पूर्व
 मीमांसावारे कर्मही करिकै नैयादिक दुःखध्वंसही करिकै औ कणाद वाले नौगु-
 णध्वंसही करिकै औ शंकरवेदांतवाले ब्रह्मज्ञानही करिकै इत्यादिक मुक्त होब
 मानै हैं परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र तिनहीं बिना औ तिनके रामनाम बिना मिथ्य
 जन्म गँवाई दियो ॥ १ ॥

सेमर सेइ सुवा जो जहड़े ऊनपरे पछिताई हो ।
 जैसे मदिप गांठि अर्थै दै घरहुकी अकिल गँवाईहो ॥ २ ॥

जैसे सेमरके फलको सुवासेयो चोंच चलायो जब वामें धुवानिकस्यो तब भोजनते ऊन कहे खाली परचो भोजन न पायो तब पछितायकै कहे जहड़ि कै भोजन डहकायकै चलयो । ऐसे जीव नाना मतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जब मुक्ति न पायो तब मुक्ति डहकाइकै संसारमें परचो औ जैसे मदपि कहे मतवार गांठी को द्रव्य दैकै मद पियो घरौकी अकिल गँवायदियो तैसे गुरुवा लोगनको गांठी की द्रव्य दैकै मन्त्र लैकै औरै औरै मतनमें लगिगये घरोंकी अकिल गँवाइ दियो कहे साहबको सदा को दास है जीव सो आपने स्वरूपको भूलि गयो ॥ २ ॥

स्वादे उदर भरत धौं कैसे ओसै प्यास न जाईहो ।

द्रव्यक हीन कौन पुरषारथ मनहीं माहँ तवाईहो ॥ ३ ॥

जौने मतमें स्वादपायो सो तौनेही मतमें लग्यो सो ओसते कहूं पियास बुझाईहै ओसपरो सो ओसको जलको स्वाद मुखमें आयो सो कहा स्वादते पेट भरे है नहीं भरे है तैसे जीव नाना मतमें लग्यो नाना साधन करन लग्यो औ वे देवतन-के लोक न गयो अथवा ब्रह्मज्ञान सिद्ध भयो अथवा आत्मज्ञान सिद्धभयो इत्यादिक सब सिद्धि भयो किंचित सुख पायो तेतो ओसको चाटिबो है कहा मुक्तिहोइ है नहीं होय है औ द्रव्य का हीन जो पुरुषारथ है सो कौन पुरुषारथहै मनमें बहुत विचार करै है कि वाको दशहजारदेउं वाको पांच हजार देउं जब द्रव्य की सुधि आई सो द्रव्य तो हैई नहीं है तब मनै में तवाईहोयहै कि हाय का करौं ऐसे नाना मतनमें लगे पाछे पछिताउ होयहै अन्तकाल में मैं कहा कियो साहबमें न लाग्यो जाते मुक्तिहोती ॥ ३ ॥

गांठी रतन मर्म नहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरीहो ।

कह कबीर यह अवसर बीते रतन नमिलै बहोरी हो ॥ ४ ॥

या जीव सदाको साहबको अंशहै सो या रतन तुम्हारे गांठी में है ताको यह राम नामते पारख करिकै छोरि लेउ साहबके गुण जीवों में हैं वे बृहत् चैतन्यहैं यह अणुचैतन्यहैं वे घन रसरूपहैं या लघु रसरूपहैं ऐसो जो शुद्ध आपनो रूप जानै तौ रतन तेरे गांठीमें है ताको मर्म तुम रामनाम बिना नहीं जान्योकि वा साहब कोहै मन माया ब्रह्मको नहीं है काहेते कि गुरुवालोग तिहारी पारख

छोरि लियो और और तिहारो साहब बनाइ दियो सो कबीरजी कहै हैं कि जो ऐं सो मनुष्य शरीरमें साहबको ज्ञान न भयो किमें साहबको हों तो या अवसर बीति गये कहे या शरीर छूटिगये फेरि रतन जोहै आपने स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहब को अंशहों सो पुनि न मिलैगो औ साहबको ज्ञानकै देनवारो राम नाम न मिलैगो औ आगे जे कहि आये पंचांगोपासनवारे कापालिकादिक मतवारे व्याकरणी सांख्य मीमांसावारे नैयायिक कणादवारे शंकरवेदांती नास्तिक मतवारे जो या कहै हैं कि हमारे मतमें काहे मुक्ति नहीं होय है सो कहै हैं पंचांगोपासना तौ सगुणहै सो सत रज तम ये गुण माया के हैं सो मायाते माया नहीं छूटै है या असंभवहै औ कापालिकादिक व्याकरणादि भैरवको मानै हैं सो वेद विरुद्धहै ई मुक्तिदाता कोई नहीं हैं तामें प्रमाण ॥ “मुक्तिदाता च सर्वेषां राम एव न संशयः ॥” औ वैयाकरण शब्दब्रह्मते मुक्ति मानै हैं सो केवल शब्दब्रह्मके जाने मुक्ति नहीं होयहै जब शब्दब्रह्मको जानिकै परब्रह्मको जानै तब मुक्ति होइहै तामें प्रमाण ॥ “शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि । श्रमस्तस्य श्रमफलोह्यधेनुमिव रक्षतः ॥ ” औ ज्योतिषी कालज्ञानते मुक्ति मानै हैं सो कालहूके कालजे श्री रामचन्द्रहैं तिनके बिना जाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ “ यः कालकालो गुणी सर्ववेत्ता ” ॥ औ सांख्यवारे प्रकृति पुरुषते मुक्ति मानै हैं सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रहैं तिनके बिनाजाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ “ वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ ” औ पूर्वमीमांसावारे कर्म ते मुक्ति मानै हैं सो कर्म ते मुक्ति नहीं होय है कर्म त्यागेते मुक्ति होयहै तामें प्रमाण ॥ “न कर्मणा न प्रजयाधनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः ” इति श्रुतेः ॥ औ नैयायिक ईश्वर श्री रामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ “ तमीश्वराणां परमं महेश्वरं ” ॥ औ कणादवारे नौगुणध्वंस मुक्ति मानै हैं सो नौ गुणध्वंसही मुक्ति नहीं होयहै नौगुणध्वंस भये उपरांत जब भाक्ति होयहै तब मुक्ति होयहै तामें प्रमाण ॥ “ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते परां ” ॥ औ शङ्करवेदांती ब्रह्म ज्ञान करिकै मुक्ति मानै हैं सो जीव ब्रह्म कभी होतही नहीं है तामें प्रमाण ॥ “ सत्य आत्मा सत्यो जीवः सत्यंभिदः सत्यंभिदः ॥ औ नास्तिक चारि प्रकारके हैं-सौगत १ बिज्ञानवादी २ सौ-

त्रांत्रिक ३ चार्वाक ४ सो सौगतनामके आत्मा क्षणिक नाशमानमानै हैं जैसे घट, सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते कि आस्तिक आत्माको नित्य मानै है ॥ १ ॥ विज्ञानवादी पदार्थ मात्रका ज्ञान स्वरूप मानै है सो आस्तिक मतमें बाधक है काहेते कि जो क्षणिक ज्ञानके बाहर दूसर पदार्थ नहीं मानै है तौ ज्ञानाश्रय आत्मा केहितराते होइ ॥ २ ॥ औ सौत्रांत्रिक गुणरूप आत्मा मानै है कौन गुण सुख विशेषगुण सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते आस्तिक सुखरूप सुखाश्रय आत्माको मानै है ॥ ३ ॥ औ चार्वाक शरीरैको आत्मा मानै हैं काहेते प्रत्यक्ष है सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते शरीरते अभिन्न आत्माको मानै है याही रीति उदयनाचार्य बौद्धाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकनको खंडन कियो है ॥ ४ ॥ औ अलु हमहूँ कहै हैं औ सौगत जो आत्माको क्षणिक नाशवान् मानैगे औ चार्वाक जो शरीरको आत्मा मानैगे तो जो क्षणिक नाश मान् आत्मा होत तौ भूत कैसे होत याते सौगत निराकरण भयो औ जो शरीर आत्मा होयगो तौ मुर्दा कैसे होइगो शरीर काटिहू डारै चैतन्य रहैगो औ विज्ञानवादी जो आत्माको ज्ञानस्वरूप मानैगे तौ अज्ञान कैसे होयगो औ सौत्रांत्रिक सुख गुणस्वरूप आत्मा मानै है तौ गुणतो बिना गुणी रहतई नहीं है सो गुणी कोहै जो कहो अहंनको अथवा जिनको गुण मानै है जीवात्माको तौ गुण गुणी को समवाय है गुण गुणी को छोड़िकै नहीं रहै है सो जीव जो अज्ञानी भयो सो जाको गुण है जीव सोऊ अज्ञान भयो जो चार्वाक कालैकै प्रत्यक्ष मानै है गुण गुणी को नहीं मानै है वेद शास्त्रको कहो मिथ्या मानौहौ सो ग्रहण शास्त्रमें लिखै है सो परतही है सो वेदको कहो कैसे मिथ्या मानै तुम्हारे शास्त्र में लिखै है कि पृथ्वी नीचेको चली जाइ है सो जो पृथ्वी चली जाती तौ पाथर फेंकेते फेरि कैसे पृथ्वीमें मिलतो काहेसे कि पाथर हलुक है बिलम्ब पूर्वक आवाचाही पृथ्वी गरू है जल्दी जावा चाही ताते तुम्हारे ग्रन्थ झूठे हैं वेद शास्त्र सांचे हैं सो श्री रामचन्द्र बिना तुम मिथ्या जन्म गमाइ दिह्यो ॥ ४ ॥

इति छठवां कहरा समाप्त ।

अथ सातवां कहरा ॥ ७ ॥

रहहु सँभारे राम विचारे कहत अहौ जो पुकारेहो ॥ १ ॥
 मूढ़ मुढ़ाय फूलिकै बैठे मुद्रा पहिरि मँजूसाहो ।
 ताहि ऊपर कछु छार लपेटे भितर भितर घर मूसाहो ॥ २ ॥
 गाउँ वसतहै गर्व भारती माम काम हंकाराहो ।
 मोहिनि जहां तहां लै जैहै नहिं पति रहे तुम्हारा हो ॥ ३ ॥
 मांझ मँझरिया वसै जो जानै जन हैहै सो थीराहो ।
 निर्भय गुरु कि नगरिया तहँवां सुख सोवै दास कबीरा हो ॥ ४ ॥

रहहु सँभारे राम विचारे कहत अहौ जो पुकारे हो ॥ १ ॥
 मूढ़ मुढ़ाय फूलिकै बैठे मुद्रा पहिरि मँजूसा हो ।
 ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर घर मूसाहो ॥ २ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि पुकारे कहौ हौं कि श्री रामनाम को बिचारत हे जीवौ! यह मनको सँभारे रहौ अनत न जान पावै मैं पुकारे कहौ हौं अनत जायगो तौ मारो जायगो ॥ १ ॥ ऊपरते मूढ़ मुढ़ायकै कानेमें मुद्रा पहिरिकै अंगमें छार लपेटिकै मँजूसा कहे गुफामें बैठे औ प्राण चढ़ाइकै मानन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं सो ऊपरते तो बहुत रंग कियो पै भीतर भीतर उनको घर मूसि गयो कहे साहबको भूलिगये ॥ २ ॥

गाउँ वसतहै गर्व भारती माम काम हंकारा हो ।
 मोहिनि जहां तहां लै जैहै नहिं पति रहै तुम्हारा हो ॥ ३ ॥

यह शरीररूपी जो गाउँ है तामें गर्बको जो भाराहै सो थिर भयो कहे यह मान्यो कि यह शरीर मेरोहै तब माम जो है ममता औ कामादिक जे हैं अहं-कार तेहिते भरि गयो सो श्री कबीरजी कहै हैं कि मोहिनि जो है मोहि ल

नवारी माया सो जहां रहै है तहैं तोको ये सब कामादिक लैजैहैं जो यह मानि राख्योहै कि प्राण चढ़ाईक ब्रह्मांडमें लगये मायाते भिन्न द्वैगये सो या पति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि मायामें परि जाउगे ॥ ३ ॥

मांझ मँझारिया बसै जो जानै जन हैहै सो थीराहो ।

निर्भय गुरु कि नगरियातहँवांसुख सोवै दास कबीराहो४

सो मांझ जो है माया काहेते कि जीव साहब के बीचमें माया को आवरणहै तौने के मँझारिया में जो जन बसै जानैहै कि मायाके बीचमें बसोहै औ माया वाको ग्रहण नहीं करिसकै है जैसे जलमें कमल जल नहीं स्पर्श करि सकै है काहेते साहब को जानै है सहज समाधि लगाये है तेई जन थिर रहै हैं । अथवा साहब औ जीव के मांझ कहे बिचबादक रामनाम तौने मँझारिया कहे जाभिन है साहबके पास पहुंचाइबे को तौने रामनाम में जो कोई बसै जानैहै कि मकार रूप मैंहों रकाररूप साहब है मैं सदाको दास हों औ रामनाम सर्वत्र पूर्ण है ऐसो जो कोई जानै सो थिर रहै है तामें प्रमाण गोसाई की चौपाई ॥ “ अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥ ” फिरि प्रमाण श्लोक ॥ “ रकारदशेषलोकदच अकारोमर्त्यसंभवः । मकारदशून्यलोकदच त्रयो-लोकानिरामयाः ॥ ” तामें प्रमाण कबीर जीका पद ॥ “ क्या नांगे क्या बांधे चाम जो नहिं चीन्है आतम राम ॥ नांगे फिरै योग जो होई । बनको मृगा मुकु-ति गो कोई ॥ मूढ़ मुड़ाये जो सिधि होई । मूढ़ी भेड़ि मुक्ति क्यों न होई ॥ बिंद राखेजो खेलहि भाई । खुसैरे कौन परम गति पाई ॥ पढ़े गुने उपनै हंकारा । अधधर बूढ़े वार न पारा ॥ कहै कबीर सुनोरे भाई । राम नाम बिन किन सिधि पाई ॥ ” औ थिर हैकै गुरु कहे सबते श्रेष्ठ श्री रामच-न्द्रके नगर कहे साकेतमें कबीर जे जीव ते उनके दासहै तहां सुखसों सो वै हैं वहां और देवके उपासना वारे अहं ब्रह्मास्मि वारे जेहें ते नहीं जाइ सकैहैं वे मायाहीमें रहे आवै हैं ॥ ४ ॥

इति सातवां कहरा समाप्त ।

अथ आठवां कहरा ॥ ८ ॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौनको दीन्हा हो ।
 आवत जात दुनौ विधि लूटे सरब संग हरि लीन्हा हो ॥ १ ॥
 सुर नर मुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हाहो ।
 कहँलौं गिनैं अनंत कोटिलै सकल पयाना दीन्हाहो ॥ २ ॥
 पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र जाहिगो सूरहो ।
 वहभी जाहिगो यहभी जाहिगो परत काहुको न पूराहो ॥ ३ ॥
 कुशलै कहत कहत जग विनशै कुशल कालकी फांसीहो ।
 कह कबीर सब दुनियांविनशल रहलरामअविनाशीहो ॥ ४ ॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौनको दीन्हा हो ।

आवत जात दुनौ विधि लूटे सरब संग हरि लीन्हा हो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं क्षेम कहे कल्याण स्वरूप सदा रहै औ कुशल कहे सब बातमें कुशल होय अर्थात् सर्वज्ञ होय औ सही सलामत कहे जेहिंके सहीते जीव सलामत है जाय अर्थात् जेहिंके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटि जाय ऐसे जे अपने गुणहैं ते साहब कौने जीवको अपने बिना जाने दीन्हा है अर्थात् काहुको नहीं दीन ऐसे जे साहब हैं सरब संग कहे सब के अंत-र्यामी तिनको या काल जीवको आवत कहे जनन औ जात कहे मरन दुनौ विधिमें लूट्यो अर्थात् जब आयो तब गर्भको ज्ञान नाशकै दियो औ जब जाइगो तब वही को नाश हैगयो साहबते चिन्हारी ना करनदियो ॥ १ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हाहो ।

कहँलौं गिनैं अनंत कोटिलै सकल पायाना दीन्हाहो ॥ २ ॥

औ सुर नर मुनि जे हैं औ पीर जे हैं औ औलिया जे हैं औ मीर जे पादशा-
ह हैं तिनको पैदा करत भयो और कहाँलैं गिनैं अनंत कोटि जीवनको पैदा
करि पायना कराइ देतभयो ॥ २ ॥

पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र जाहिगो सूर्यो ।
वह भी जाहिगो यह भी जाहिगो परतकाहुको न पूराहो ॥ ३ ॥
कुशलै कहत कहत जग बिनशै कुशल कालकी फांसीहो ।
कहकबीरसबदुनियाबिनशलरहलरामअविनाशीहो ॥ ४ ॥

पानी औ पवन औ आकाश औ चन्द्रमा औ सूर्य कहे सूर्य औ यहभी
कहे यह जगत् औ वहभी कहे ब्रह्म सो ये सब चले जायँगे सबको काल खाय
लियो है काहुकी पूर नहीं परी है ॥ ३ ॥ सो कुशलै कहत कहत कहे कुशलै
मानेमाने जग सब मरिगयो कुशल कोई न रहे कुशल कालकी फांसी है जाकी
फांसीमें सब परे हैं सो कबीरजी कहै हैं कि सब दुनियां बिनशि जाय है जो
राम करिकै जन्म बिनाशी है सोई रहिगे अर्थात् रामके दासई अविनाशी हैं
इनका नाश नहीं होयहै सो या बाल्मीक रामायणमें प्रसिद्ध है अङ्गद हनुमान्
आदिकनको नाश नहीं भयो है ॥ ४ ॥

इति आठवां कहरा समाप्त ।

अथ नवां कहरा ॥ ९ ॥

ऐसन देह निरापन वौरे मुये छुवै नहिं कोईहो ।
डंडक डोरवा तोरि लै आइनि जो कोटिकध नहोईहो ॥ १ ॥
उरध स्वासा उपंजग तरासा हंकराइनि परि वाराहो ।
जो कोई आवै वेगि चलावै पल यक रहन न हाराहो ॥ २ ॥
चंदन चूर चतुर सब लेपैं गल गजमुक्ता हाराहो ।
चौंचन गीध मुये तन लूटै जंबुक वोदर फाराहो ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनोहो सन्तौ ज्ञानहीन मति हीनाहो ।

यक यक दिन यह गति सबही की कहा रावकादीनाहो ॥

ऐसी देह निरानप है कहे अपनी नहीं है और सब अर्थ मगई है श्री कबीरजी कहैहैं कि जे मतिते हीन मूर्ख परम पुरुष श्री रामचन्द्रके ज्ञानते हीन रहैं तिनके शरीरकी दशा ऐसे एक दिन सबकी है चाहै रंक होइ चाहै राउ होइहै ॥ ४ ॥

इति नवां कहरा समाप्त ।

अथ दशावां कहरा ॥ १० ॥

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं विलग विलग विलगाई हो ।

ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो ॥ १ ॥

एक निरंतर अंतर नाहीं ज्यों घट जल शशि झाईहो ।

यक समान कोई समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाईहो ॥ २ ॥

रौनि दिवस मैं तहँवो नाहीं नारि पुरुष समताई हो ।

नामैं बालक नामैं बूढ़ो नामोरे चेलिकाई हो ॥ ३ ॥

तिरविधि रहौं सबनमें वरतों नाम मोर रम राईहो ।

पठये न जाउँ आने नहिं आऊँ सहज रहौं दुनिआई हो ॥

जोलहा तान बान नहिं जानै फाट विनै दश ठाईहो ।

गुरुप्रताप जिन जैसो भाष्यो जिन विरले सुधिपाईहो ॥ ५ ॥

अनंत कोटि मन हीरा बेध्यो फिटकी मोल न आईहो ।

सुर नर मुनि वाके खोज परेहैं किछु किछु कविर न पाईहो ॥ ६ ॥

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं विलग विलग विलगाईहो ।

ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो ॥ १ ॥

गुरुमुख ।

मैं सबमें हौं औ सब न होउँ ऐसे मोको बिलग बिलग कहे जुदा जुदा बिलगाइकै बेद कह्यो । इहां दुइबार बिलग बिलग कह्यो सो एकतो चित् कहे जीव ब्रह्म ईश्वर अचित् कहै माया काल कर्म सुभाव पृथ्वी आदिक मायाके कार्य सब सो ये दोहुनमे अंतर्दामी रूपते व्यापक हौ सो जीव ब्रह्म ईश्वर चित् तत्त्व में व्यापक हौं तामेंप्रमाण ॥ “विष्ण्वाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताभवत् । मर्त्याद्यधर्मदेहेषु स्थितो भजति देवताः” ॥ इति श्रुतिः । “एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा इति श्रुतिः” ॥ “ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहमिति गीता-याम् ॥” अचित्तौमें व्यापक है तामेंप्रमाण ॥ “विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् इति गीतायाम्” ॥ सो चित् अचित् दोऊ व्याप्यपदार्थ हैं व्यापक मैं हौं सो चित् अचित्रूप पिछौरा दुइ छोरिया मेरो ओढ़नहै सर्वत्र महीहौं सो वेद को तात्पर्य न जानिकै लोग यकताई बोले हैं कि एकई ब्रह्म है पिछौरा ओटै याको एकही कहै हैं दूसरा नहीं कहै हैं लोगजो यकताई कहै हैं सो कौनी तरह ने कहै है सो कहै हैं ॥ १ ॥

एक निरंतर अंतर नाहीं ज्यों घट जल शशि झाईहो ।
यक समान कोइ समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाईहो ॥ २ ॥

वही ब्रह्म निरंतर एक सर्वत्र है या लोग बोलै हैं सो कहा अन्तर नहीं है अर्थात् अन्तरहै कैसे जैसे जलभरे घटनमें शशिकी छाया बामें व्याप्य व्यापक बनो है सो एक जो मैं सो समान कहे सबमें समव्यापकहौं ताको कोई व्याप्य व्यापक कोई नहीं समुझै है तौ कहा उनको जरा मरण भ्रम जाईहै अर्थात् नहीं जाईहै सो अंतर्दामी रूपते व्यापक साहब कहि चुके अब निज रूपते जहाँ रहै हैं तहांकी बात कहै हैं ॥ २ ॥

रौनि दिवस में तहँवों नाहीं नारि पुरुष समताईहो ।
नामैं बालक नामैं बूढ़ो ना मोरे चोलिकाईहो ॥ ३ ॥

जहांमें रहौ हौं तहां न रातिहै न दिनहै औ सब नारी रूपहैं जो पुरुषहू जाईहै सो नारिन रूपते रासमें प्राप्त होइहै पुरुष महीहौं औ समताई है जैसे सच्चिदानन्दरूप

ऐसे ओऊ सच्चिदानंद रूपहैं मैं न बालकहौं न बृद्धहौं सदा किशोररूप वनों
रहौहौं औ न मोरे चेल्किआई कहे कोऊ वह उपदेश्य नहीं है अर्थात् अज्ञानी
कोऊ नहीं हैं सब मेरे रूपको जानै हैं उहां राति दिन नहीं है तामें प्रमाण ॥
“न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः । यद्रूपा न निवर्तते तद्धाम
परमं मम ” ॥ ३ ॥

तिरविध रहौं सबनमें वरतौं नाम मोर रमराई हो ।

पठये न जाउँ आने नहिं आऊं सहज रहौं दुनिआई हो॥४॥

तिरविध रहौं कहे जीव ब्रह्म ईश्वरनमें जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं औ
सबनमें वरतौं कहे माया काल कर्म सुभाव इन में जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं
सो इनमें जो रमनवारो अंतर्यामी मेरो रूप ब्रह्म ताहूको मैं राईहौं सो पठये
नहीं जाउहौं न आनेते आऊंहौं अर्थात् जो कहूं नहोउं तौ ना आने आऊं
न पठये जाउँ सर्वत्रै तो हौं सो यही रीतिते सहजही या दुनियामें अंतर्यामीके
अंतर्यामी रूपते पूर्णहौं ॥ ४ ॥

जोलहा तान बान नहिं जानैं फाट बिनै दश ठाईहो ।

गुरु प्रताप जिन जैसो भाष्यो जन विरले सुधि पाई हो॥५॥

जोलहा जे हैं जीव ते तान बान नहीं जानैं अर्थात् वा हंसस्वरूप पोसाक
बनै नहीं जानैं जो पहिरिके मेरे समीप आवै फाटबिनै दश ठाई कहे दशहैं
छिद्र जिनमें ऐसो जो शरीर ताहीको बिनै है कहे नाना मतनमें परिकै वही
कर्म करैहै जामें अनेक जन्म शरीर धारण करत जायहै जो कहो कोऊ जान-
तही नहीं है तौ गुरुके प्रतापते जो कोऊ मेरो रूप भाष्यो है जैसो सो तौ कोई
बिरला जन सुधि पायो है अर्थात् जाको सतगुरु मिल्यो है सोई पायो है ॥ ५ ॥

अनंत कोटि मन हीरा बेध्यो फिटकी मोल न आईहो ।

सुर नर मुनि वाके खोज परेहैं किछु किछु कबिरन पाईहो ६

अनंत कोटि जे जीव हीराहैं तिनमें मन बेध्यो है सो या हीरारूप
जीवको फिटकिरिउ को मोल न रहिगयो सो सुर जेहैं मुनि जेहैं नर जेहैं

ते वही अपने स्वरूपको खोजैहैं सो किछु किछु कहे थोरहूते थोर जीव
पाइनहै और कोई नहीं पायो जे आपनो रूप मेरो रूप गुरुप्रताप जानि
शरीरको बिनैया मनको त्याग्यो है तेई पायो है अथवा किछु किछु कबिरन पाई
कहे साकल्य करिकै हमारो भेद तौ कोई जानतही नहीं है जे अपनो रूप मेरोरूप
जानत जे जीव ते किछु किछु भेद पायो है ॥ ६ ॥

इति दशवां कहरा समाप्त ।

अथ ग्यारहवां कहरा ॥११॥

ननँदी गे तै विषम सोहागिनि तैं निदले संसारागे ।
आवत देखि एक सँग सूती तैं अरु खसम हमारागे ॥ १ ॥
मोरे बापकि दोय मेहरिया मैं अरु मोर जेठानीगे ।
जब हम ऐलि रसिकके जगमें तवहिं वात जग जानीगे २
माई मोर मुवल पिताके संगहि सर रचि मुवल संघातागे ।
अपनो मुई और ले मुवली लोग कुटुम्ब सँग साथागे ॥ ३ ॥
जौ लौं सांस रहै घट भीतर तौ लग कुशल परैहैगे ।
कह कबीर जब श्वास निसरिगै मंदिर अनल जरैहैगे ॥ ४ ॥

कबीर जी जीवनपर दया कैकै ज्ञान शक्ति कहै हैं कि, मगहमें मिथिला
देशमें परस्पर स्त्री लोग बत्नतीहैं आदर कैकै तब गे संबोधन देती हैं सो या
पदमें गे संबोधनहै अथवा गे बिगरे जीवको कहै हैं, हे गये जीवसों
कबीरजी जीवजों चित् शक्ति साहबकी स्त्री सो ज्ञानशक्ति जो साहबकी
बहिनी तासों कहै हैं ननँदी याते कहै हैं कि प्रथम साहबको ज्ञान प्रगट
होयहै पीछे साहब प्रगट होयहै सो साहबकी बहिनी भई सो
चित् शक्ति जीव कहै हैं कि तैं हमते सब जीवहै तिन पर तैं विषम द्वै गई
औ पतिकी सोहागिनि द्वै गई कैसीहै तैं कि निदले संसारा कहै तैं तो संसारको

निदरेनहै हम पर विषम है गई है काहूको ज्ञानकारि साहबको मिलाय दियो काहूको ज्ञानहरि संसारी करिदियो । गेजो कहै हैं सो साहबको पतिमानि बाको ननँदिमानि गारीदै कहै है कीन्ही तैं कहा कि सम्प्रिते व्यष्टि करैवाली ऐसी मायाको आवत देखिकैं हमार खसमजो साहबहै तिनके सङ्ग सूती जाइ तैं अपने भाईकों पति बनाये तैं अर्थात् साहबको ज्ञान काहू जीवके न रहिगयो साहबको ज्ञान साहबै को रहिगयो ॥ १ ॥ सो जौने धोखा ब्रह्मको मानि हम संसारी भयेहैं सो जो हमारो बापहै धोखाब्रह्म ताके दोय मेहरियाहैं जीव चित शक्ति कहे हैं कि एक मैं औ एक मोर जेठानी जौन साहब अज्ञानमूल प्रकृति धोखा ब्रह्मते जेठ समष्टिक रहीहै सो तब कारण रूपा है अब कार्य रूपा भई अर्थात् चितशक्ति जीव कहै है कि वही मायामें परिकै अहं ब्रह्मास्मि हम सब मानत भये जो कहो तुम या बात कसैक जान्यो । तौ जब हम ऐलि रसिकके जगमें कहे जब हम रसिक जे साहब तिनके लोकमें आये तब हम या बात जान्यो कि अहं ब्रह्मास्मि हम मानेन रहे औ संसारमें परिवेही कियो साहबको ज्ञान हमारे नहीं भयो सो साहब या लोकके मालिक जेहैं तेईहैं जिनके जाने संसार छूटैहै ब्रह्मसाहब नहीं है ॥ २ ॥ सो पिता जो हमारो धोखा ब्रह्म जौनेके द्वारा हम व्यष्टिभये सो जब भित्यौ तब मोर माई जो मूल प्रकृति सो सर कहे चिंता वशीकार बैराग रचिकै पिताके साथ वाहू सती हैगई अर्थात् जब धोखाब्रह्म भित्यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटिगई साहबको ज्ञान हैगयो सो अपना मरी और जेतने नाता मानि राख्यौ लोग कुटुम्ब तिनहं को साथही लैजात भई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़ि दियो जगत्के नाते छोड़िदियो एक साहबको जान लियो उन्हीं नाता मानलियो सो हे ज्ञानशक्ति ! जब तू या मोको जनायो तब मैं जान्यो ॥ ३ ॥ सो जबलौं श्वास है तबलौं कुशल है तू काहे बिषम है गई जबलौं श्वास ह तबलौं इनके आइकै साहबको प्राप्ति करायकै इनको दुःख छुड़ाइदेउ श्वास निसरि गयेपर यम धरि लैजायंगे अनेक योनिमें भटकरत बागौ गे शरीर जाइगो । सो हे ज्ञान शक्ति ! तब तू न आय सकौगी तेहिते ई जीवन पर तुम आय सकी हो साहबको ज्ञान है सकैहै ॥ ४ ॥

इति ग्यारवां कहरा समाप्त ।

अथ बारहवां कहरा ॥ १२ ॥

या माया रघुनाथ कि बौरी खेलन चली अहेरा हो ।
 चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेराहो ॥ १ ॥
 मौनी वीर दिगम्बर मारै ध्यान धरंते योगीहो ।
 जंगल मेंके जंगम मारे माया किनहुं न भोगीहो ॥ २ ॥
 वेद पढ़ंता पांडे मारे पूजा करते स्वामीहो ।
 अर्थ विचारे पंडित मारे बांध्यो सकल लगामीहो ॥ ३ ॥
 शृंगीऋषि बन भीतर मारे शिर ब्रह्माके फोरीहो ।
 नाथमछंदर चले पीठद्वै सिंहलहूमें बौरीहो ॥ ४ ॥
 साकठके घर कर्ता धर्ता हरि भक्तनकी चेरीहो ।
 कहै कबीर सुनोहो संतो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीर को जवाब दियो मैं कहा करौं मोको कोई जीवनेके उदय
 होन नहीं देखै माया सबको बांधि लियो है सो कबीरजी जीवनसों कहै हैं
 यह माया छुड़ जान न पावै जबहीं आवै तबहीं यासों मुंह फेरिलेउ तबहीं बचौगे
 या सबको बांधि लियो है तुमहुंको बांधि लेइगी औ इहां रघुनाथकी बौरी जो
 माया कह्यो सो रघुहै जीव ताके नाथ जे श्री रामचन्द्र तिनकी या माया है सो
 जीवनको धरि धरिकै शिकार खेलै है सो जब अपने नाथको या जीव जानै
 जिनकी या मायाहै तब तब या मायाते छूटैगो अपने बल ते जीव न छूटि
 सकैगो अवधवा या माया रघुनाथकी बौरी है रघुनाथकी बौरी कहै रघुनाथको
 न जानिबो यहै याको स्वरूप है १ ॥ ५ ॥

इति बारहवां कहरा समाप्त

इति कहरा सम्पूर्ण ।



अथ वसंत ।

पहिला वसंत ॥ १ ॥

जहँ वारहि मास वसंत होय। परमारथ बूझै विरल कोय॥ १॥
जहँ वर्षै अग्नि अखंड धारा। वन हरियर भो अट्ठार भार २॥
पनिया अन्दर तेहि धरे न कोय। वह पवन गहे कश्मल न धोय ३
बिनु तरुवर जहँ फूलो अकास। शिव औ विरंचितहँ लेहि वास ४
सनकादिक भूले भवैर भोय । तहँ लख चौरासी जीव जोय ५
तोहि जो सतगुरु सत सो लखावा। तुम तासु न छांड़हु चरणभाव
वह अमर लोक फल लगे चाय। यह हक कवीर बूझै सो खाय ७

जहँ वारहि मास वसंत होय। परमारथ बूझै विरल कोय॥ १॥
जहँ वर्ष अग्नि अखंड धार । वन हरियर भो अट्ठार भार २

जाके कहे जौने साहबके लोकमें बारहौ मास वसंत बनो रहै है सो या
परमार्थ कोई विरला बूझै है। सो वा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करिकहै हैं॥ १॥
औ वसंत ऋतुमें सूर्यते अग्नि वर्षै है अखंडधार वन जो है अट्ठारह भार बन-
स्पती सो हरियर होत जाइ हैं औ साहबके लोकमें कोटिन सूर्यको प्रकाशहै
परंतु सबको ताप हरि लेनवारो है बहांके सब बन संतानक आदिक हरियर
रहै हैं ॥ २ ॥

पनिया अंदर तेहि धरे न कोया। वह पवन गहे कश्मल न धोय
विनु तरुवर जहँ फूलो अकास। शिव औ विरंचितहँ लोहि वास

औ बसंत ऋतुमें वृक्षनके अंदरनमें कोई पानी नहीं धरै है चन्द्र जो है सो अमृतको श्रवै है ताहीको गहे पवन वृक्षनके कश्मलन को धोय डारै है । औ साहबको लोक कैसा है कि, पनिया अंदर कहे वा रसरूप है ताको कोई नहीं जानै है । वही रसरूप लोकको स्मरण पवन है ताके गहे कहे कियेते कश्मल जे पाप हैं ते धोय जात हैं । अथवा कामादि जे कश्मल हैं ते धोय जात हैं ॥ ३ ॥ औ बसंत ऋतुमें जहां तरुवर नहीं हैं ऐसो जो आकाश सोऊ पुहुपन के परागन करिके फूटो देखो परै है । कैसा है आकाश जहां शिव विरंचि वास लेहि हैं अर्थात् वास कीन्हे हैं सुगंधित द्वैरह्यो है । औ साहबको लोक कैसा है कि जेहिका प्रकाश चैतन्याकाश, बिना तरुवर जगत् रूप फूल फूलै है शिव विरंचि आदिक वास लेहि हैं ॥ ४ ॥

सनकादिक भूले भँवर भोया। तहँ लख चौरासी जीव जोय ५॥

बसंत ऋतुमें चौरासी लाख योनि जीवनकी कौन गनती । सनकादिक जे मुनि हैं तेऊ पुष्पमकरंद में भोयकै भँवरकी नाइ भूलि जाहि हैं । औ साहबको लोक प्रकाश ब्रह्म कैसा है कि, सनक सनन्दन सनत्कुमार जाके भँवर में भोयकै कहे परिकै भूलै हैं चौरासी लाख योनि जीवनकी कौन गिनती है ॥ ५ ॥

तोहि जो सतगुरु सतकै लखावा। तुम ता सुन छाँड़हु चरण भाव ६॥
वह अमर लोक फल लगे चाया। यह कह कबीर बूझै सोखाय ७॥

सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, ऐसो जो साहब को लोक जहां बरहौ मास बसंत बनो रहै है तौन जो सतगुरु कहे साहबके बताय देन वारे तोको सत्यकै लखायो होय तो तुम ताके चरणको भाव न छाँड़ौ । भाव यह है कि, वा लोक के मालिक जो साहब हैं तिनहूँको बताय देईने । वह अमर लोक कैसा है कि, जहां चारिउ फल अर्थ धर्म काम मोक्ष आनंदकै फल लगे हैं । सो हे जीवो ! या बात जो कोई बूझै सोई खाय है । साहब के धाम में बारहा मास बसंत रहै है । तामें प्रमाण कबीरजीकी साखी ज्ञान सागरकी ॥ “सदा बसंत होत

तेहि ठाऊं । संशय रहित अमरपुर गाऊं ॥ जहँवां रोग शोक नहिं होई ।
सदा अनन्द करै सब कोई ॥ चन्द्र सूर्य दिवस नहिं राती । वरण भेद नहिं
जाति अजाती ॥ तहँवां जरा मरण नहिं होई । क्रीड़ा विनोद करै सब कोई ॥
पुहुप विमान सदा उजियारा । अमृत भोजन करै अहारा ॥ काया सुन्दरको
परवाना । उदित भये जिमि षोड़श भाना ॥ येता एक हंस उजियारा ।
शोभित चिकुर उदय जनु तारा ॥ बिमल वास जहँवां पौढ़ाही । योजन चार
घान जो जाही ॥ श्वेत मनोहर छत्र शिर छाजा । बूझि न परै रंक अरु
राजा ॥ नहिं तहँ नरक स्वर्गकी खानी । अमृत बचन बोलै भल बानी ॥
अस सुख हमरे घन महुँ, कहैं कबीर बुझाय । सत्य शब्दको जानै, सो
अस्थिर बैठै आय” ॥ ६ ॥ ७ ॥

इति पहिला बसंत समाप्त ।

अथ दूसरा बसंत ॥ २ ॥

रसनापढ़िभूले श्रीबसंत । पुनि जाइ परिहौ तुम यमके अंत ॥ १ ॥
जो मेरुदण्ड पर डंक दीन्ह । सो अष्टकमल पर जारि लीन्ह ॥ २ ॥
तब ब्रह्म अग्निकीन्हो प्रकास । तहँ अद्ध ऊर्ध्ववहती वतास ॥ ३ ॥
तहँ नवनारी परिमल सो गावँ । मिलि सखी पांच तहँ देखन जावँ ॥ ४ ॥
जहँ अनहदवाजार हल पूर । तहँ पुरुष वहतारि खेलै धूर ॥ ५ ॥
तैं माया देखि कसरहसि भूलि । जसवनस्पती बन रहल फूलि ॥ ६ ॥
यह कहकबीरये हरिके दास । फगुवामांगै बैकुंठवास ॥ ७ ॥

रसना पढ़ि भूल श्रीबसंत । पुनि जाइ परिहौ तुम यमके अंत १

श्रीबसंत कहे ऐश्वर्यरूप जो बसंत ताको रसना में पढ़िकै मन बचनके
परे जो साहबके लोकको बसंत ताको तुम भूलि गयो । रसनामें पढ़ि जो कह्यो

तामें धुनियहै कि, औरै देवतन की उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य्य प्राप्तिहोइहै यह पोथिनमें पढ़ि पढ़ि भुलाइगयो । बाहूको जीभैभरेते कह्यो कछुप्राप्ति नहीं भै सो तुम फेरि यमके अंत कहे संसारमें परिहौ । औ जो लेहू पाठहोय तौ रसनामें श्रीबसंतको पढ़िलेहुनहीं तो पुनि यमके अंत कहे फंदमें परिहौ ॥ १ ॥

जो मेरुदंड पर डंक दीन्ह । सो अष्ट कमल परजारि लीन्ह २

औ जो या गुमान करो कि हम योगबारे हैं हम यमके अंतमें न परैंगे । सो जो तुम मेरुदंडमें प्राणखैचिकै मेरुदंडपर डंका दीन्ह्यो, औ अष्टजो हैं आठों कमल मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहद, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र, अठयें सुरतिकमल जहां परमपुरुषहै तामें पढ़ुचिकै जारि दीन्ह अर्थात् योगौ की खबरि भूलिगई ॥ २ ॥

तहँ ब्रह्म अग्नि कीन्हो प्रकास । तहँ अद्धो ऊर्ध्व बहती वतास ३
तहँ नवनारी परिमल सो गावँ । मिलिसखी पांचतहँ देखन जावँ ४

सो वा ज्योतिमें लीनभयो जीवतहँ ब्रह्मअग्नि प्रकाश करत भई औ बतास-जो अधोऊर्ध्व श्वास सो वहै बहतभै अर्थात् बहिरे न आवत भै श्वास वहाँ रहत भै याभांति जीव तखतमें बैठि मालिक भयो गांउकारा बसंतदेखैहै ॥ ३ ॥ सो-यहां परिमल कहे गंधका गांव है शरीरमें पृथ्वीतत्त्व अधिकहै सो गंधका गांव शरीरहै तौने में नौ नारी हैं कहे नौ राहैं तहां पांचो जे ज्ञानेन्द्री हैं तेई सखी देखन जायहैं अर्थात् वहाँ लीन द्वै गई हैं ॥ ४ ॥

तहँ अनहद बाजा रहल पूरा । तहँ पुरुष बहत्तरि खेलै धूरा ५ ॥
तैं माया देखिकस रहसि भूलि । जस बनस्पती वन रहल फूलि ६

बसंतमें बाजा बजै है सो अनहद बाजा जहां पूरि रह्यो है तहां बहत्तरि पुरुष जे बहत्तरिकोठाहैं ते धूरि खेलैहैं अर्थात् चैतन्यता न रहिगै ॥ ५ ॥ सो बसंतमें बनस्पती फूलै हैं ऐसे या माया फूलि रही है । तामें समाधि उतरे फिरि काहे भूले । अथवा जैसे बनस्पती फूलैहैं ऐसे गैवगुफामें सुधापीकै नागिनी फूली है तामेंतैं काहे भूलिरहै है । कहा वा माया के बहिरे है समाधि नागिनि-होके आधार तो समाधिउहै ॥ ६ ॥

यह कह कवीर ये हरिके दास । फगुवा मागै वैकुण्ठ वास ॥

सो या हठयोग करिकै जानै कि मैं मुक्त होउँगो, तौ या समाधिमें मायाहीते नहीं छूख्यो मुक्त कहां होइगो । ताते श्रीकवीरजी कहै हैं कि, हे जीवात्मा ! हरिके दास तैं वैकुण्ठवासको फगुवामागै अर्थात् फगुहार फगुवा खेलाइकै फगुवामागै हैं सोतैंहठयोगकियो ताको फल फगुवा राजयोग मांगु जाते वैकुण्ठ वासहोई ॥ ७ ॥

इति दूसरा बसंत समाप्त ।

अथ तीसरा बसंत ॥ ३ ॥

मैं आयउँ मेहतर मिलन तोहिं । अवऋतुवसन्त पहिराउ मोहिं १
हैं लंबी पुरिया पाइ झीन । तेहि सूत पुरा ना खुंटा तीन ॥२॥
शर लागे सै तीनि साठि । तहँ कस न वहत्तरि लागगांठि ॥३॥
खुर खुर खुर खुर चलै नारि । वह बैठि जोलाहिनि पलथि मारि ४
सो करि गहमें दुइ चलहि गोड़ । ऊपर नचनी नचि करै कोड़ ५
हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार । सखी पांच तहँ रची धमार ॥६॥
वें रंग विरंगी पहिरै चीर । धरि हरिके चरण गावै कबीर ॥७॥

मैं आयउँ मेहतर मिलन तोहिं । अवऋतुवसन्त पहिराउ मोहिं १
हैं लंबी पुरिया पाइ झीन । तेहि सूत पुरा ना खुंटा तीन ॥२॥

जीव कहै हैं मेह कही बड़ेको औ जो बड़ाते बड़ा होइ ताको मेहतर कहै हैं फारसीमें । सो ईश्वरनते ब्रह्मते जो बड़े श्रीरामचंद्र हैं तिनसों जीव कहै है कि, मैं तुमको मिलन आयोहौं । सो जौने लोकमें सदा बसंत रहै है सो मोको पहिराओ अर्थात् मेरो प्रवेश कराइ दीजे । ताना रूप जो मेरे शरीरको बसंत ताते छुड़ाइये ॥ १ ॥ सो लम्बी पुरिया कौन कहावै जो ताना तनै है पूरै है

सो मैं बासननि करिकै बहुत लम्बा द्वै रह्योहैं । कहे बासननि करिकै मैं संसारमें फैलिरह्योहैं । औ पाई वा कहावैहै जो ताना साफ करैहै सो या आत्माको साफ करिबो बहुत झीनहै कहे जब कोई बिरलें संत मिलैं तब आत्मा शुद्ध होइ काहेते कि, यह सूतजीव पुरान कहे अनादि कालते तीन खूटा जो हैं सत १ रज २ तम ३ तामें बँधो है ॥ २ ॥

**शर लागै सै तीनि साठि । तहँ कसनि बहत्तारि लाग गांठि ३
खुर खुर खुर खुर चलै नारि । वह बैठि जोलाहिनि पलथि मारि ४**

पाई में शर लागैहै सो शरीरमें तीनिसै साठि हाड़हैं तेई शरहैं बहत्तारि जे कोठाहैं तिनमें बहत्तारि हजार नसनकी गांठि एक एककोठनमें लागहैं तेई कसनी हैं ॥ ३ ॥ औ बिनतमें जौन बीच द्वै चलावै है सो नारि कहावै है सो या शरीरमें नाड़ी जो है सो खुर खुर खुर खुर चलैहै । औ जोलाहिनि जो है बुद्धि सो पलथी मारिकै बैठी है अर्थात् देहही में निश्चय करिकै बैठी है ॥ ४ ॥

सो करिगहमें दुइ चलहि गोड़ । ऊपर नचनीनचि करै कोड़ ५

सो यह तरहको जो शरीर है सो करिगह है जहां जोलाहिनि बैठै है धमारि महलमें होयहै सोशरीर महलहै सो करिगहमें जोलाहिनि दोऊ अंगूठा चलावै है ऊपर तानामें नचनी कोड़ करै है कहे नाचै है । इहां शरीररूपी करिगहमें बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्म में निश्चय करै है कहूं अशुभ कर्ममें निश्चय करै है यही दोऊ अंगूठाको लचाइबोहै । औ वृत्तिबुद्धिकी कहूंशुभमें कहूं अशुभमें जायहै यही नचनी है सो नाचै है औ धमारि पक्षमें नाचत में नचनी को गोड़ चलैहै ऊपर कोड़ करै है कहे भावबतावै है ॥ ५ ॥

हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार । सखी पांच तहँ रची धमार ॥ ६ ॥

औ कषाय पांच जे हैं १ अविद्या २ आस्मिता ३ राग ४ द्वेष ५ अभिनिवेश । औ पचीसौ जे तत्त्व हैं १ जीव २ माया ३ महत्तत्त्व ४ अहंकार ५ शब्द ६ रूप ७ रस ८ गन्ध ९ स्पर्श दशौं इंद्रिय एकमन २० पंच भूत ई २५ औ ताहीमें दशौ द्वार ऐसे शरीर में पांच सखी जे हैं पंचप्राण ते धमारि

रचतभई । औ ताना पक्षमें पांच पचीस तत्त्वकेकहे सबकोरीकै साजु आइगै
औ धरिकहे सबअपने अपने धमारमें लगिगे कैड़ावारे माडीवारे पुरियावारे
करिगहवारे तानासाफकरैवारे औ धमारिपक्षमें पांच सखी धमारि रचैहैं दुइ
एकबार कियो एकदेखैया भो ॥ ६ ॥

वे रंग विरंगी पहिरैं चीर । धरि हरिके चरण गावै कबीर ॥ ७ ॥

पांचो जे सखीहैं पांच तत्त्वनका रंग विरंग चीर पहिरैं । स्वर्गोदय में लिखै
है श्वास तत्त्वनके रंग जुदेजुदे देखे परै हैं औ कोरीके घरके अनेक रंगकेचीर
पहिरै हैं । औ धमारि पक्षमें केशरि कस्तूरी करिकै गुलाल भोड़र करिकै चीर
रंग बेरंग होयहैं ते पहिरै हैं । सो यहि तरहकी धमारि या संसारमें है ताते
हरिको चरण धरिकै कबीर गावै है कहै है । या धमारिको प्रथम या कहि
आये हैं जौने लोकमें सदा बसंत है तहांप्रवेश करावो । औ इहां धमारि कहै
हैं तात्पर्य यह कि, या शरीरको ताना बाना जनन मरण में परिरह्यो है या
धमारि तुमको देखायो जो रीझे होहु तो मैं फगुवा यही मांगौहों कि जहां
सदा बसंत है वा लोक में प्रवेश करावो औ न रीझ्यो होहु तौ तुम हरिहौ
या ताना बाना धमारि हरिलेउ । या कहो कि, “ऐसी धमारि तैं न रचु”
कबीर कहै हैं कि हे जीव हरिके चरणधारि ऐसी बिनयकर ॥ ७ ॥

इति तीसराबसंत समाप्त ।

अथ चौथा बसन्त ॥ ४ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमै नितहिवारि । मोहिंऐसितरुणिकहुकौननारि १
ये दांत गये मोर पान खात । औ केश गयल मोर गँगनहात २
औ नयनगयल मोरकजल देत । अरुवैस गयलपरपुरुषलेत ३
औ जान पुरुष वा मोर अहारामैं अन जानेको कर शृंगार ४
कह कबीर बुढ़ि या आनँद गाय । पूत भतारहि वैठी खाय ५ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिवारि।मोहिंऐसितरुणिकहुकौनिनारि १

बुढ़िया जो मायाहै सो हँसिकै कहैहै कि मैं नित्यही बारीहौं माया अनादि है याते बुढ़िहाकह्यो है तामें प्रमाण ॥ “अनामेकांलोहित” इत्यादि । औ हँसिकै कह्यो याते या आयो कि साधनकरिकै छोटे छोटे या कहै हैं कि,हमको माया जीर्ण द्वैगई है अर्थात् अब छूटि जाइहै मैं नित्यही बारीहौं सबके कार्य रूपते उत्पन्न होत रहौं हैं । ओ मोहिं अस तरुणि कौनि नारि है जो सब जीवनको संग करौहौं औ बुढ़ाउँ कबौं नहीं हैं ॥ १ ॥

दांत गये मोर पान खात।औ केश गयल मोर गँग नहात॥२॥

औ दांत गये पान खात जो कह्यो सो पान जो है वेद ताको तात्पर्य जो जानै है यही खाब है । सो वेद तात्पर्यार्थ जानेते कामादिकजे मेरे दांतहैं जिनते जीव सज्जनको ज्ञानखाय लेइहै ते दांत मेरे जातरहे काम क्रोधादिक मायाके दांतहैं तामें प्रमाण ॥ रत्नयोग ग्रंथ कबीरजीको ॥ “काम क्रोध लोभ मोह माया । इन दांतनसों सब जग खाया ” ॥ औ साहबको जो कथा चरित्र रूप गंगा तामें जो नहायहै अर्थात् सुनैहै सो कुमति रूप केश मेरे जातरहे हैं ॥ २ ॥

औनयनगयलमोरकजलदेत । अरुबैसगयलपरपुरुषलेत३

साहबको ज्ञानरूप कज्जल जो कोई दियो तो भेरे नयन जो निरंजनहैं सो जातरहे हैं । अर्थात् चैतन्यके योग करिकै माया देखै है औ । नयनको निरंजन कहै हैं । तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ “नयन निरंजन जानि भरममें मतपैरे” ॥ औ बैस जो मोर है सो परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको लेत अपने बशकै बैस मोर जात रहै है अर्थात् चारिउ शरीर मोर नहीं रहतेहै ॥ ३ ॥

औ जान पुरुषवा मोर अहार।मैं अन जानेको कर शृंगार ४

औ जान पुरुषवा कहे जो या कहैहैं कि, हम ब्रह्मको जानिलियो, हमहीं ब्रह्म हैं । तेतो हमार अहारहीहैं आपने आत्मैको भूलिगये औ अजान जे हैं तिनको शृंगारै किये हैं नाना विषदैकै लोभाय लेउहौं । अर्थात् जानौ अजानको

विद्या अविद्या रूपीते बशकर लियो है धुनि याहै, जिनको साहब आपनो
हंसरूप दियो है तेई बचे हैं या उपसंहार कियो ॥ ४ ॥

कह कवीर बुढ़िया अनंद गाय। पूत भतारहि बैठि खाय ॥ ५ ॥

सो श्रीकवीरजी कहै हैं कि बुढ़िया जो माया है सो जैसो या पद कहि
आये तैसो आनंदसों गावैहै । वेद शास्त्रादिकनमें बाणीरूपते सबजीव सुनैहैं
परन्तु या नहीं जानैहैं कि, जीव औ ब्रह्म माया के भितरै है । पूत जो जीव
है औ भतार जो ब्रह्म है ताको बैठिखाय है अर्थात् जबजीव संसारी भयो तब
संसारमें डारिके खायो जब ब्रह्म में लीनभयो औ सृष्टि समय आयो तब वा
ब्रह्मज्ञानहूं नहीं रहि जाइहै ब्रह्महूंको खायो ॥ ५ ॥

इति चौथा बसंत समाप्त ।

अथ पांचवां बसंत ॥ ५ ॥

तुम बूझहु पण्डित कौन नारि ।

कोइ नाहिं विआहल रहल कुमारि ॥ १ ॥

यहि सब देवन मिलि हरिहि दीन्ह ।

तेहि चारिहु युग हरि संग लीन्ह ॥ २ ॥

यह प्रथमहि पद्मिनि रूप आय ।

है सांपिनि सब जग खेदि खाय ॥ ३ ॥

या वर युवती वे वारनाह । अति तेज तिया है रौनि ताह ॥ ४ ॥

कह कवीर सब जग पियारि । यह अपनेवल कवै रहल मारि ॥ ५ ॥

तुम बूझहु पण्डित कौन नारि । कोइ नाहिं विआहल रहल कुमारि १

यहि सब देवन मिलि हरिहि दीन्ह । तेहि चारिहु युग हरि संग लीन्ह २

श्रीकवीरजी कहै हैं कि, हे पण्डित ! तुम बूझौ तो या शङ्खिनी हस्तिनी
चित्रिणी पद्मिनी चारि प्रकारकी नारिनमें कौन नारि है या माया है ? अर्थात् एकौकें

लक्षण नहीं मिलत एकौके लक्षण जो मिलते तौ कुमारि न रहती बिआहि जाती याहीते अब तक कुमारि है ॥ १ ॥ जब समुद्र मधिगयो लक्ष्मीकदी सो सवदेवमिलि हरिको देतभये सो हरि चारिदुयुग सङ्गही राखतभये ॥ २ ॥

यह प्रथमहि पद्मिनिरूपआयाहै सांपिनिसब जग खेदि खाय याबर युवती वे वार नाह । अति तेज तिया है रैनिताह ॥ ४ ॥

प्रथमतो ब्रह्मजे हैं विष्णु तिनकी नाभिमें कमलिनीहै सो लक्ष्मी रूपहै सो आय अब धन रूप सांपिनि है संसारको खेदिखाय है ॥ ३ ॥ या माया बरयुवती है कहे श्रेष्ठ है वार जे लरिका ब्रह्मा विष्णु महेश तेई याके नाह हैं औ ताह कहे तौन जो संसार रूपी रैनि है तौने में अति तेजहै ॥ ४ ॥

कह कबीर सब जगपियारि। यह अपने बलकवै रहल मारि ५

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि या माया सबजगत्को पियारिहै आपन बालक जे जीव तिनको मारि रही है अर्थात् सब जीवनको बांधे है जनन मरण करावै है ॥ ५ ॥

इति पांचवां वसंत समाप्त ।

अथ छठवां वसंत ॥ ६ ॥

माई मोर मनुष है अति सुजान। धंधा कुटि कुटि करै बिहान १
बड़े भोर उठि अँगन बहार । बड़ी खांच लै गोबर डार ॥ २ ॥
बासी भात मनुष ल खाय । बड़ घैला लै पानी जाय ॥ ३ ॥
अपने सैयां बांधी पाट । लैरे वेंचौ हाटै हाट ॥ ४ ॥

कह कबीर ये हरिकेकाज । जोइयाके ढिंंगर कौन है लाज ५

जीव शक्ति कहै है कि, हे माई माया ! मोर मनुष जो मन सो बड़ा सुजान है । धंधा जो बाल पौगंड किशोर ताहीको कूटिकूटि कहै कैकै बिहान-कहे देहांत कै देइहै । सुजान याते कह्यो कि, मोको नहीं जान देइहै । आपही

जानै है बड़े भोर कहे जबदूसर भयो तब आंगन बहार कहे गर्भवासमें ज्ञान-
दियो अंतःकरण साफकियो यहीबहारबो है औ बड़ीखांच जो प्रसूत वायु तौने-
ते गर्भरूप गोबरटारचो अर्थात् बाहर निकारचो । औ वासीभात जो पूर्व कर्म
ताको दुःख सुख आपही भोगै है । औ बैलानो बुद्धिहै ताको लैकै गुरुवन के
इहां नाना बानी रूप पानी ताको लेनजाइ है अर्थात् बुद्धिते निश्चयकरै है ।
ऐसोजो मोर सैंयां है ताको पाट जो ज्ञान तामें बांधे पाऊं तौ हाट हाट में बेंचौं
अर्थात् साधुनको संगकरिकै अपनो औ याको सम्बन्ध छोड़ायदेउं । सो श्रीकबी
रजी कहै हैं कि, जोइया जो जीव तौनेको ढिंगरा जोमन सो हरि जे श्रीरामचन्द्र
तिनको काज में जो नहीं लागै तौ याको कौन लाज है । धुनि याहै जो साह-
बमें लगै तौ यह शुद्ध होइजाय ॥ १-५ ॥

इति छठवां वसंत समाप्त ।

अथ सातवां वसंत ॥ ७ ॥

घरहीमें बाबुल बढी रारि। अँग उठि उठि लागै चपल नारि १
वह बडी एक जेहि पांच हाथ । तेहि पचहुनके पच्चीस साथर
पच्चीस बतावैं और और । वे और बतावैं कई ठौर ॥ ३ ॥
सो अंतर मध्ये अंत लेइ । झकझेलि झुलावैं जीव देह ॥ ४ ॥
सब आपन आपन चहैं भोग । कहु कैसे परिहै कुशल योग ५
विवेक विचार न करै कोइ । सब खलक तमाशा देख सोइ ६
मुख फारिहैंसैं सब राव रंक । तेहि धरे न पैहौ एक अंक ॥ ७ ॥
नियरे बतावैं खोजैं दूरि । वह चहुँ दिशि बागुरि रहल पूरि ८
हे लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउ पीउ ॥ ९ ॥
अबकी वारै जो होय चुकाव । ताकी कबीर कहपूरिदाव १०

घरहीमें बाबुल बड़ी रारि । अंग उठि उठि लागै चपलनारि १
वह बड़ी एक जेहि पांच हाथतेहि पचहुनके पच्चीससाथ २॥

हे बाबू ! जीव तुम्हारे घटहीमें कहे शरीरहीमें रारि बड़ीहै काहेते कि, हमेशा उठि उठि चपल नारि जो माया सो तेरे पीछू लगैहै ॥ १ ॥ तामें वह एक सबते बड़ी काया जाके पांच हाथकहे पांच तत्त्वहैं पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, पुनि एक एक तत्त्वनके साथ पांच पांच प्रकृतिहैं । सो असकैकै पच्चीस प्रकृतिहैं कहैहैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार चौथ, पांचों अन्तःकरण जामें चारचोरहैहैं । ये सब निराकारहैं । ऐसे आकाशके साथहैं । औप्राण अपान समान व्यान उदान ये कर्म करावैहैं एते वायुके साथहैं । औ आंखी कान नाक जिह्वा त्वचा येऊ बिषयको प्रकाश करै हैं एते अग्निके साथ हैं । औ शब्द स्पर्श रूप रस गंध सो येऊ पांचौ तृप्ति कर्त्ता हैं । एते जल पंचक हैं जलकेसाथहैं । औ हाथ पांव मुख गुदा लिंग येऊ आधार-भूत हैं एते पृथ्वीकेसाथहैं । यही रीति पचहुन तत्त्वनके साथ पच्चीसौ प्रकृति हैं ॥ २ ॥

पच्चीस बतावैं और और । वे और बतावैं कई ठौर ॥ ३ ॥

सो ये पच्चीसौ प्रकृति जे हैं ते और और अपने विषयको बतावै हैं । सो कहैहैं अंतःकरणको विषय निर्विकल्प । मन को विषय संकल्प विकल्प । चित्तको विषय बासना ! बुद्धि को विषय निश्चय । अहंकारको विषय करतू-ति । प्राणको विषय चलब । अपानको विषय छोड़ब । समानको विषय बैठब । उदानको विषय उठब । व्यानको विषय पौढ़ब । क्लानको विषय सुनब । आंखीको विषय रूप । नाकको विषय सुंघबो । जीभको विषय बोलिबो । त्वचा को विषय स्पर्श । शब्दको विषय राग रस । स्पर्श को विषय कोमलत्व कठिनत्व शीतलत्व उष्णत्व । रूपकोविषय सुंदरत्व । रसकोविषय स्वाद । गंधको विषय सुवास । इनको वे पच्चीसौ प्रकृतिबतावैं हैं ईसब कई ठौर और बतावै हैं कहे चौरासीलक्षयोनि जीवको बतावैहैं ॥ ३ ॥

सो अंतर मध्ये अन्त लेइ। झक झेलि झुलाउब जीव देख ४॥

सब आपन आपन चाहें भोग । कह कैसे परिहैं कुशलयोग ५
विवेक विचार न करै कोइ । सब खलक तमाशा लखै सोइ ६

सोये विषय कैसे हैं कि अंतरमें अंत लेइहैं कहे गड़ि जाते हैं । झकझेलि कैकहे जोरवारी झुलाउव जो आवागमनहै सोजीवको देइहै ॥ ४ ॥ सो ये सब आपन आपन भोगचाह्यो तबजीवको कुशल को योग कैसे परै अर्थात् कैसे कल्याण पावै ॥ ५ ॥ सो ये बंधनको विवेककहे विचार कोई नहीं करै है कि क्या सांचहै क्या झूठहै सब खलक कहे सब संसारके लोग बाणी विषयनों तमाशा देखैहैं औ वहीमें अरुझि रहैहैं ॥ ६ ॥

मुख फारि हँसैं सब राव रंक । तेहि धरन न पैहौ एक अंक ७
नियरे बतावैं खोजैं दूरि । वह चहुँ दिशि बागुरि रहलपूरि ८
है लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउ पीउ ॥ ९ ॥

सो वही विषयमें परिकै मुख फारिकै राव रंक सब हँसैं हैं या दुःखदायीहैं विषय या अंक कोऊ नहीं धरन पावै है तेहिको ॥ ७ ॥ सो वेद शास्त्र पुराण साहबको तौ नियरेही बतावैहैं औ दूरिखोजैं हैं काहेते कि, मायारूप बागुरि सर्वत्र पूरिहै ॥ ८ ॥ सो येतो सब शिकारी हैं औ लक्ष कहे निशाना एकजीवही है ताते हे जीव ! तैं पीउ पीउ पुकारै तबहीं तेरो बचाउहै ॥ ९ ॥

अबकी बारै जो होय चुकाव । ताकी कवीर कह पूरिदाव १०

सो श्रीकबीरजी कहैं हैं कि, अबकी बार जो मानुष शरीरमें चुकाव होयगो औ साहबको न जानैगो तौ ताकी पूरिदावहै काहेते कि अबकीबारके चूकेफेरि ठिकाना न लगैगो चौरासीलाख योनिन में भटकैगो फेरि जो भागन शरीर पावैगो तब पुनि नाना मतनमें लगिकै चौरासी लाख योनिमें भटकैगो उद्धार न होइगो । ताते अबकी बार जो समुझै ओ साहबको जानै तौ तेरो पूरो दांव परै तामें प्रमाण कबीरजीकीसाखी ॥ “लख चौरासी भटकै कै, पौमें अटको आय ॥ अबकी पौ जो ना परै, तौ फिरि चौरासी जाय ” ॥ १० ॥

अथ आठवां बसन्त ॥ ८ ॥

कर पल्लवके बलखेलैनारि। पण्डित जो होय सोलेइ बिचारि १
 कपरा नहिं पहिरै रह उधारि। निरजीवै सो धन अति पियारि २
 उलटी पलटी बाजै सो तार। काहुहि मारै काहुहि उवार ॥ ३ ॥
 कह कबीर दासन के दास। काहुहि सुख दे काहुहि उदास ॥ ४ ॥
 कर पल्लवके बलखेलैनारि। पण्डित जो होय सोलेइ बिचारि १

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, नारि जो माया सो पल्लव जो राम नाम से
 करमें लैकै वाहीके बल खेलै है । जब प्रथम यह जगत् की उत्पत्ति भई तब
 राम नाम लैकै बाणी निकसी है तामें प्रमाण ॥ “ रामनामलै उचरी बाणी ॥ ”
 ताही जगत मुख अर्थ में चारिउ वेद ईश्वर ब्रह्म सब संसार निकसे हैं तामें
 प्रमाण सायरको ॥ “ रामनामके दोई अक्षर चारिउ वेद कहानी ” ॥ सो तौनेहीके
 बलते सब संसार बांधि लियो है । सो जो कोई पंडित होइ सो बिचारिकै लैलेइ ।
 जगत मुख साहब मुख यामें दोऊ अर्थ हैं सो साहब मुख अर्थ रामनाममें लेइ
 जगत मुख अर्थ केवल माया खेलै है ताको छोड़ि देइ ॥ १ ॥

कपरा नहिं पहिरै रह उधारि। निरजीवै सो धन अति पियारि २
 उलटी पलटी बाजै सो तार । काहुहि मारै काहुहि उवार ॥ ३ ॥

सो वा नारि माया कैसी है कि कपरा नहीं पहिरै उवारही रहै है अर्थात्
 वह माया सबको मूदे है वाको मूंदनवारो कोई नहीं है । जो कहो वाको ब्रह्म
 मूंदे होइगो तौ निर्जीव जो ब्रह्म सो धन जो माया ताको अति पियारै है
 अर्थात् वाहूको सबलित किये है ॥ २ ॥ औ पुनि कैसा है कि उलटी पलटी
 तार बाजै है कहे काहूको अविद्यामें डारिकै नरक देइ है औ काहूको विद्यारूपते
 स्वर्ग सत्यलोकादि देइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर दासनके दास। काहु सुख दे काहु उदास ॥ ४ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि, दासनके दास कहे ब्रह्मादिक जे माया के
 दास तिनहूँके दास जीव तुम्हारी माया कैसे छूटे वे ब्रह्मादिके मायाते नहीं

छूटे । या माया कैसीहै काहूको तौ सुखदहै काहू कैति उदास है । कहे
उनको स्पर्शनहीं करिसकैहै । अर्थात् जे साहब को जानैहैं तिनकी कैति उदासहै
तिनहींके दास तुमहूं होउ तब उबार होइगो माया ब्रह्मजीवके परे श्रीरामच-
न्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ “ राम एव परं ब्रह्म राम एव परंतपः । राम एव परंतत्त्वं
श्रीरामो ब्रह्म तारकं ” इतिश्रुतेः ॥ ४ ॥

इति आठवां वसन्त समाप्त ।

अथ नवां वसन्त ॥ १ ॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर । रामनाम भजु लागै तीर ॥ १ ॥
गये वेणु बलि गेहैं कंस । दुर्योधन गये बूढ़े वंस ॥ २ ॥
पृथु गयै पृथ्वी के राव । विक्रम गये रहे नहिंकाव ॥ ३ ॥
छौ चकवे मंडलीके झार । अजहूं हो नर देखु विचार ॥ ४ ॥
हनुमत कश्यप जनकौ वार । ईं सब रोंके यमके धार ॥ ५ ॥
गोपिचंद भल कीन्हों योग । रावण मरिगो करतै भोग ॥ ६ ॥
जात देखु अस सबके जाम । कह कबीर भजु रामै नाम ॥ ७ ॥

चौरासी लाख योनिनमें भटकत भटकत यह शरीर पायो दुर्लभ सो वृथाही
जायहै सो राम नामको भजु सेवा करु जाते तीर लगै । छौ चकवे कहिये १ वेणु
२ बलि ३ कंस ४ दुर्योधन ५ पृथु ६ विक्रमये छवो चक्रवर्ती भूमिमंडल के, ते शरीर
छोड़िके जातभये। सो हे नर अजहूं बिचारिकै तू देखु औ हनुमत कश्यप अदिति जनक
कहे ब्रह्मा, बार कहे सनकादिक ते ये अबलैं रामनाम कहि यमको धाररोकेहैं ।
अर्थात् जे उनके मतमें जाय रामनाम कहैहैं ते संसारते छूटिही जायहैं उनपै यम-
को बल नहीं चलैहै । औ गोपीचन्द योगीरहे रावण भोगीरह्यो पै रामनाम
नहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्री कबीरजी कहै हैं कि याही भांति

१ अन्य प्रतियों में वेणुके स्थानमें विष्णु लिखाहै ।

२ दूसरी प्रतियोंमें धारकी जगह द्वार लिखाहै ।

सबके जामा जे शरीर ते जात देखै हैं ताते रामनाम भजु । भजसे वाया
धातुहै ताते तहूं रामनामकी सेवा करु तबही संसार समुद्रकै तीरलगैगो नहीं तो
बहि जायगो । रामनामके जपैया नहीं मरै हैं तामें प्रमाण कबीरजी को पद
॥ “हम न मरैं मरि है संसारा । हमको मिळा जियावनवारा ॥ अबनामरौमोरम-
नमाना । सोइ मुवा जिन राम न जाना । साकतमरै संतजन जीवै । भरिभरि
रामरसायन पीवै ॥ हरि मरिहैं तौ हमहूं मरि हैं । हरि न मरैं हम काहेको मरि हैं ॥
कह कबीर मन मनहिं मिलावा । अमर भये सुख सागर पावा” ॥ १-७ ॥

इति नवौ बसंत समाप्त ।

अथ दशवां बसंत ॥ १० ॥

सवहीमदमातेकोईनजाग।सोसँगहिचोरघरमुसनलाग ॥१॥
योगीमदमातेयोगध्यान । पंडितमदमातेपढ़िपुरान ॥ २ ॥
तपसीमदमातेतपकेभेव । संन्यासीमातेकरिहमेव ॥ ३ ॥
मोलनामदमातेपढ़िसुसाफ।काजीमदमातेकैनिसाफ ॥ ४ ॥
शुकदेवमतेऊधोअकूर । हनुमतमदमातेलियेलँगूर ॥ ५ ॥
संसारमत्योमायाकेधार । राजामदमातेकरिहँकार ॥ ६ ॥
शिवमातिरहेहारिचरणसेव । कलिमातेनामदेवजयदेव ॥७॥
वहसत्यसत्यकहसुंमृतिवेद । जसरावणमारेघरकेभेद ॥ ८ ॥
यहचंचलमनकेअधमकाम।सोकहकबीरभजुरामनाम ॥९॥

यहि पदको समेटिके अर्थ करै है यहसंसारमें सबकोई मदमे माततभयो,
जागतकोई न भयो । सो जिनको जिनको यह पदमें गनायआये तेते प्रथम जैसे
रावण घरके भेदते मारे गयो, तैसे मनके भेदते मारे गये । परन्तु इनसबमें
जे रामनामको जप्यो तेई छूटै हैं । हनुमदादि शुकादि जे कहिआये । यह मन-
के तो अधम काम हैं जे रामनामको नहीं जाने ते संसारहीमें परे । ताते तैं हूं
रामनामको भजु तबहीं तेरो उबार होइगो, औरीभांति संसारहीमें परेरहैगो । औ

१ इनसाफ को पूर्वी भाषामें निसाफ बोलते हैं इसका अर्थ है न्याय । २ स्मृति ।

संसार सागरको पार करनवारो एक राम नामही है त्ममें प्रमाण पद ॥ “माधव
दुख दारुण सहि न जाइ । मेरी चपल बुद्धि ताते का बसाइ ॥ तन मन
भीतर बस मदन चोर । तब ज्ञान रतन हरि लीन मोर ॥ हौं मैं अनाथ प्रभु
कहौं काहि । अनेक बिगूंचे मैं को आहि ॥ औ सनकसनंदन शिव गुकादि ।
आपुन कमला पति भो ब्रह्मादि ॥ योगी जंगम यति जटाधारि अपने अवसर
सब गयेहारि ॥ सो कह कबीर करि संत सात । अभिअंतर हरिसों करहु बात ॥
मन ज्ञान जान करि करि बिचार । श्री राम नाम भजु होउ पार” ॥ १-६ ॥

इति दशवां वसंत समाप्त ।

अथ ग्यारहवां वसन्त ॥ ११ ॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि । अजहुं होशिव देखहु विचारि ॥ १ ॥
चोवा अरु चन्दन अगर पान । सब घर घर स्मृति होइ पुरान ॥ २ ॥
बहुविधि भवनन में लगै भोग । असनगर को लाहल करत लोग ३
बहुविधि परजानि भय है तोर । तेहि कारण चित है ढीठ मोर ॥ ४ ॥
हमरे बालक करय है ज्ञान । तोही हरिको समुझवै आन ॥ ५ ॥
जग जो जेहिसों मन रहल लाय । सो जिव के मरे कहु कहँ समाय ६
तहं जो कछु जाकर होय अकाज । है ताहि दोष नहि साहब लाज ७
तब हर हरि तसोक हल भेव । जहँ हमहीं है तहँ दुसर केव ॥ ८ ॥
तुम दिनाचारि मन धरहु धीर । पुनि जस देखहु तसक कह कबीर ९ ॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि । अजहुं होशिव देखहु विचारि ॥ १ ॥
चोवा अरु चन्दन अगर पान । सब घर घर स्मृति होइ पुरान ॥ २ ॥
बहुविधि भवनन में लगै भोग । असनगर को लाहल करत लोग ३
बहुविधि परजा निभय है तोर । तेहि कारण चित है ढीठ मोर ॥ ४ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि जब मैं बालापन में साधन करत रह्यो है तबहीं
देवतनको दर्शन होत रह्यो है । सो मैं महादेवजीते पूछ्यो कि, यह काशी

तुम्हारी कैसी भई है, अजहूं तो बिचारि देखो । तुम्हारी काशीमें चन्दन चोवा अगर लगावै हैं, पान खायहैं घर घर स्मृति पुरान होइहैं, विविध भांतिके मेवा पकवान भोग लगावै हैं, यही रीतिते नगरमें कोलाहल लोग करिरहे हैं ऐसे परजा तुम्हारे निर्भय होइ रहै हैं तौने कारणते मोरौ चित ढीठ होइगयो है १-४

हमरेबालककोयहैज्ञान । तोहींहरिकोसमुझावैआन ॥ ५ ॥

जगजोजेहिसौमनरहललाय।सोजिवकेमरेकहुकहँसमायद॥

सो हम जे सब बालक हैं तिनकर यहै ज्ञान है तुम जे हौ महादेव औ हरि जे हैं श्रीरामचन्द्र तिनको तो समुझावै आनहैं काहेते कि, वेद द्वार यह कहते हैं कि, जब संसारछूटै है ज्ञान होइहै तब मुक्ति होइहै और ये सब काशमें जे नाना विषय भोग करै हैं संसारमें लिप्त रहै हैं सो यहू वेदके प्रमाणसे मुक्त हो यबो मानत है ॥ ५ ॥ और जगत् में जो जौनेमें मनलगावै है सो शरीरछूटे कहो कहां समायहै अर्थात् जाहीमें मन लगावै है ताहीमें समाय है यहू वेद में लिखै है ॥ “अन्ते या मतिः सा गतिः ॥” सोहम तुमसों पूछै हैं कि विषयमें मन लगाये मरे जे काशीके लोग ते कहां जायहैं ? ॥ ६ ॥

तँहजोकछुजाकरहोइअकाजहैताहिदोषसाहवनलाज ॥ ७ ॥

हरहर्षितहैतवकहलभेव । जहँहमहीहैतहँदुसरकेव ॥ ८ ॥

तुमदिनाचारमनधरहुधीर।पुनिजसदेखहुतसकहकवीर॥ ९ ॥

सो जाकर अकाज होइहै ताहीको दोष है काहेते, वाके कर्मही ते अकाज होइहै । साहब जो आपहै श्रीरामचन्द्र तिनको कौन लाज है जो आप काशीके जीवनको मुक्ति देइहैं सो कौने हेतुते कहा ? और संसार क्या आपका नहीं है काशी ही आपकी है ? ॥ ७ ॥ तब हर्षित द्वैके हर मोसे भेद बतायो कि, जहां हमहैं तहां दूसरको है काशीमें औ सब संसारमें जहां हमहैं अर्थात् हमको जे जानै हैं तेके कर्म औ कालई कैसे जोर कैसेकैं काहेते कि जब हम ब्रह्माते राम नाम पायो है तब जान्यो है ताहीते मुक्त करै हैं राम नामको उपदेश करि श्रीरघुनाथजीको ज्ञानदेइहै वाको तब मुक्त होइहै । सोकाशीहूमें रामनाम दै मुक्त करै है । औरहू देशमें राम नाम पाइके मुक्तहै जाइहै ॥ ८ ॥ सो दिन-चार तुम मनमें धीर धरो पुनि जस देख्यो तस हे कबीर तुम कह्यो अर्थात्

जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करते हैं तैसे तुमहूं करौंगे । तब तस देखोगे कि राम नामते कैसेहू विषयी होइ पै वाको उद्धारई होइ जाइहै। औ काशीमें रामनामही ते मुक्तिहोइहै रामई नाम महादेव देइहैं तामेंप्रमाण ॥ “ पेयं पेयं-श्रवणपुटके रामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् । जल्पं जल्पं प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोपि काशी निवासी । इति स्कादे’ ॥ ९ ॥

इति ग्यारहवां बसंत समाप्त ।

अथ बारहवां बसंत ॥ १२ ॥

हमरे कहल कर नहिं पतियार। आपु बूढ़े नर सलिलै धार ॥
अंधा कहै अंध पतिआय । जस बिश्वा के लगनै जाय ॥ २ ॥
सो तो कहिये अतिहि अबूझ। खसम ठाढ़ ढिग नहिं सूझ ॥
आपन आपन चाहहिं मान । झुठ परपंच सांचकै जाना ॥ ४ ॥
झुठा कवहुं करौ नहिं काज । मै तोहिं बरजौं सुनु निरलाज ॥
छाड़हु पाखंड मानहुं वात । नहिंतौ परिहौं यमके हात ॥ ६ ॥
कहै कबीर नर चले न सोझ। भटकि मुये जस वनके रोझ ॥ ७ ॥

हमरे कहल कर नहिं पतियार। आपु बूढ़े नर सलिलै धार ॥
अंधा कहै अंध पतिआय । जस बिश्वाके लगनै जाय ॥ २ ॥
सो तो कहिये अतिहि अबूझ । खसम ठाढ़ ढिग नहिं सूझ ॥ ३ ॥

श्री कबीरजीं कहै हैं कि, हमरे कहे ये जीव कोई नहीं पतिआयहैं साहब में कोई नहीं लगते हैं; आपने खुशीते बानी रूप सलिलमें बूढ़े जाते हैं बानी को पानी आगे कहि आये हैं ॥ १ ॥ आंधर जे गुरुवा लोगहैं ते नाना मतनको बतावै हैं और आंधर जे जीव ते ग्रहण करै हैं साहब को नहीं जानै हैं जैसे बेइया की लगन, वह तो नाना पुरुषते रमै है एकको जानतिही नहीं है ऐसे नाना उपासना मानै हैं सो साहब को मानतही नहीं हैं ॥ २ ॥ सो ते जीवन को

छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात ।
 करि लीनो बश आपने, फिरि फिरि चितवत जात ॥ १॥
 ज्ञान गाढ़ लै रोपिया, त्रिगुण लियो है हाथ ।
 शिव सन ब्रह्मा लीनिया, और लिये सब साथ ॥ १०॥
 एक ओर सुर मुनि खड़े, एक अकेली आप ।
 दृष्टि परे छोड़ै नहीं, करि लीनो यक छाप ॥ ११॥
 जेते थे ते ते लियो, घूंघुट माहँ समोय ।
 कज्जल वाके रेखहै, अदग गया नहिं कोय ॥ १२॥
 इंद्र कृष्ण द्वारे खड़े, लोचन दोउ ललचाय ।
 कह कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समाय ॥ १३॥

खेलति माया मोहनी, जेर कियो संसार ।
 कटि केहरि गज गामिनी, संशय कियो शृंगार ॥ १॥
 रचै रँगकी चूनरी, सुन्दरि पहिरै आय ।
 शोभा अद्भुत रूपकी, महिमा वरणि न जाय ॥ २॥

जौन माया सब संसार को जेर कियो है सो मोहिनी माया चाचरि खेलै है । केहरि जो है काल सब को खाइलेनवारो सो वाकी कटिह कहें मध्यभाग है । मध्य में बैठिकै अधो ऊर्ध्व को खाय है । औ मन गज है तेही करिकै चलै है । औ संशय रूप शृङ्गार किये अर्थात् जहें बहुत संशय होइहै तहें माया बहुत शोभित होइ है ॥ १ ॥ नारी लोग रचैकहे जो पीउ को रचैहै सो चूनरी पहिरे हैं औ माया नाना विषय जो जीवन को नीक लगै ताकी चूनरी पहिरे हैं अद्भुत शोभा स्त्रियनहूं की होइहै यहै मायौकी अद्भुत शोभा है ॥ २ ॥

चन्द्र बदनि मृग लोचनी, बिन्दुक दियो उवालि ।
 यती सती सब मोहिया, गज गति वाकी चालि ॥ ३॥

नारदको मुखमाड़िकै, लीन्हो वदन छिपाय ।

गर्व गहेली गर्वते, उलटि चली मुसकाय ॥ ४ ॥

औ नारी चंद्र बदनी मृग नयनी बिंदुक दीन्हे घूँवुट उचारि गज की नाई छलि सबको मोहै हैं । माया कैसी है कि, चंद्रबदनी है चन्द्रमाके समान याहू आपने पदार्थते सबको आनन्द देय है । मृगनयनी कहे यहू चंचल है । बिंदुक दीन्हे उचारि कहे आपने रागको फैलाय देइहै गजगति कहे धीरे धीरे यती सती सबको मोहै है ॥ ३ ॥ वै स्त्री नारद कहे जाके रद कहे दांत नहीं हैं ऐसे जे वृद्ध पुरुष तिनको मुख माड़िकै बदन कहे बोलिबो छिनाय लेती हैं । अर्थात् और बोलिबो सो छूटि जाइहै नारी नारी यहै कहै हैं । चाचरि वोऊ गावै लगै हैं । अथवा माया जो है सो नारद ऐसे मुनिको बांदरकी नाई मुख कै दियो । शीलनिधि राजाकी कन्याको काज करै चले । और स्त्री गर्व को गहे लोगनके मोहिने को चाचरि में मुसकयाय चलैहै । औ माया जो है सोऊ नारदके गर्वको गहिकै मुसकयायकै चली है ॥ ४ ॥

शिव अरु ब्रह्मा दौरिकै, दोनों पकरे जाय । फगुवा लीन

छिनायकै, बहुरि दियो छिटकाय ॥ ५ ॥ अनहद धुनि

बाजा बजै, श्रवण सुनत भो चाव । खेलनि हारी खेलिहै,

जैसी वाकी दाव ॥ ६ ॥

स्त्री जेहैं ते पुरुषनते चाचरि में पकरि फगुवा लैकै आपुस में छिटकाय कहे बांटिलेय हैं तैसेही मायाजो है सोऊ ब्रह्मा शिव तिन को पकरिकै फगुवा जो नाना मत सो लैकै अनेक ब्रह्मांडनमें छिटकाय दीन्हों ॥ ५ ॥ चाचरि में बाजा बजै है ताको सुनिकै चाव होइ है खेलनिहारी आपनो दाव ताकि ताकि खेलै हैं । औ माया जो है सोऊ अनहद बाजा बजाइ जौनेके सुनतमें योगिन के चाव होइहै सो खेलनिहारी जो कुंडलिनी शक्ति सो जैसो वाको दाव है तैसो खेलै है जीवको चढ़ावै औ उतारै है ॥ ६ ॥

आगे ढाल अज्ञानकी, टारे टरत न पाव । खेलनिहारी खे

लिहै, बहुरि न ऐसी दाव असुरनर मुनि भूदेवता, गोरख दत्ता

व्यास।सनक सनन्दनहारिया, और कि केतिक आस ॥ ८ ॥

चाचरिमें स्त्री भोडरकी ढाल आगेकरि पांव पीछेको नहीं टारै हैं सो खेल-
निहारी जे हैं ते जब पतिको पाय जाय हैं तब कहै हैं कि, खेलि लेउ अब
ऐसो दांव न मिलैगो । औ यहां मायाजो है सोऊ अज्ञानकी ढाल आगे लीन्है है,
जाको पांव ज्ञानभक्ति बैराग्यकरि टारे नहीं टारै सो, खेलनिहारी जो माया सो
खेलैव करी ऐसो दांव वाको फिरि न मिलैगो अपने बशकरि पायोहै ॥ ७ ॥ औ
चाचरि में खिनते पुरुष हारि जाइहैं सुख मानै हैं औ माया जो है ताहूँसों
सुर जेहैं देवता, नर जेहैं मनुष्य, मुनि जेहैं ज्ञानी, भूदेव जे हैं ब्राह्मण, गोरख
जे हैं योगी कवि, दत्तात्रेयजे हैं अवधूत, व्यास जे हैं कवि, सनकसनंदनजे हैं
त्यागी ते सब हारिगये औरकी कौन गिनती है ॥ ८ ॥

छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात ।

करि लीनो वश आपने, फिरि फिरि चितवत जात ९ ॥

ज्ञान गाड़ लै रोपिया, त्रिगुण लिये है हाथ ।

शिव सँग ब्रह्मा लीनिया, और लिये सब साथ ॥ १० ॥

चाचरि में नारी रंगकी पिचकारी गात में सींचि आपने बश करि फिरि
फिरि चितवत कहे कटाक्ष करै हैं इसी प्रकार मायाजोहै सोऊ थोथे कहे झूठे-
प्रेमसो संसार राग सबको गातसींचैहै आपनेबश करिलियोहै औ फिरिफिरि
चितवत जातै है कहे सबको ताकरहै है कि कोऊ बाच्यौतौ नहीं ॥ ९ ॥ औचाच
रिमें स्त्री लोग रंगकेहौदमें डारिदेइ हैं औ फूलनके मालामें हाथबांधै हैं पुरुष-
को वैसेही माया जोहै सोऊ ज्ञानके गाड़में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुण
की फांसीमें बांधि लियो ॥ १० ॥

एक ओर सुर मुनि खड़े, एक अकेली आप ।

दृष्टि परे छोड़ै नहीं, करिलिय एकै छाप ॥ ११ ॥

जेते थे तेते लियो, घूंघुट माहूँ समाय ।

कज्जल वाके रेख हैं, अदग न कोई जाय ॥ १२ ॥

इन्द्र कृष्ण द्वारे खड़े, लोचन निज ललचाय ।

कह कबीर ते ऊवरे, जाहि न मोह समाय ॥ १३ ॥

औ चाचरिमें दुइ पारा होयहैं एकओर स्त्री एकओर पुरुष होइहैं ऐसे सुर
नर मुनि सब एक ओर माया अकेली आप है दृष्टिपरे काहूको नहीं छोड़ैहै ॥ ११ ॥
वैसे स्त्री जे हैं ते आपने घूंघुट में सबको मन समाय लेइहैं सबके काजर
लगाइदेइ हैं अदगकोई नहीं जायहै वैसे माया जो है सोऊ आपनेमें सबको
समाय लियो है सबके एकदाग लगाइ दियो है अदग कोई नहीं बच्यो ॥ १२ ॥
चाचरि में स्त्रिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सबखड़े रहै हैं लोचन देखिबको ललचायहैं
ऐसे माया जोहै ताहूके द्वारमें इन्द्रकृष्णजे हैं उपेन्द्र ते खड़ेहैं मायाके देखिबे
को लोचन ललचाय हैं सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि तेई पुरुष उबरे हैं जे मोहमें
नहीं समाने हैं ॥ १३ ॥

इति पहिली चाचर समाप्त ।

अथ दूसरी चाचर ।

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो ।
जामें शोक संताप समुझ मन बौराहो ॥ १ ॥
काल बूतको हस्तिनी मन बौराहो ।
चित्र रचौ जगदीश समुझ मन बौराहो ॥ २ ॥
बिना नेइको देवघरा मन बौराहो ।
विन कहगिलकै ईंट समुझ मन बौराहो ॥ ३ ॥
तन धन सो क्या गर्व समुझ मन बौराहो ।
भसम क्रीमकी साजु समुझ मन बौराहो ॥ ४ ॥
काम अन्ध गज बश परे मन बौराहो ।
अंकुश सहिया शीश समुझ मन बौराहो ॥ ५ ॥
ऊँच नीच जानेहु नहीं मन बौराहो ।
घर घर नाचेहु द्वार समुझ मन बौराहो ॥ ६ ॥

मरकट मूठी स्वादकी मन बौराहो ।
 लीन्हों भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ॥ ७ ॥
 छूटनकी संशय परी मन बौराहो ।
 घर घर खायो डांग मन बौराहो ॥ ८ ॥
 ज्यों सुवना नलिनी गह्वो मन बौराहो ।
 ऐसा मर्म विचारि समुझ मन बौराहो ॥ ९ ॥
 पढ़े गुने का कीजिये मन बौराहो ।
 अंत विलैया खाय समुझ मन बौराहो ॥ १० ॥
 सूने घरका पाहुना मन बौराहो ।
 ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मन बौराहो ॥ ११ ॥
 न्हाने को तीरथघनी मन बौराहो ।
 पूजैका बहुदेव समुझ मन बौराहो ॥ १२ ॥
 विनपानी नर बूड़िया मन बौराहो ।
 तुम टेकहु राम जहाज समुझ मन बौराहो ॥ १३ ॥
 कह कबीर जग भर्मिया मन बौराहो ।
 तुम छोड़े हरिका सेव समुझ मन बौराहो ॥ १४ ॥

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो ।
 जामें शोक संताप समुझ मन बौराहो ॥ १ ॥
 कालबूतकी हस्तिनी मन बौराहो ।
 चित्र रचो जगदीश समुझ मन बौराहो ॥ २ ॥

विना नेइ को देवघरा मन बौराहो ।

बिन कहगिलकै ईंट समुझ मन बौराहो ॥ ३ ॥

हे मन करिकै बौरा जीव ! जौनेमें शोक संताप अनेक पावै है ते सब ऐसे जगत्को नेहरा समुझिकै जारिदे ॥ १ ॥ औ या जगत्कालबूत जो धोखा ताकी हस्तिनी है अर्थात् झूठा है जौनरूपते देखै जगदीश जो साहब ताको एचो यह चित्रहै सो बिचारिकै छांडो । औ या देह कैसीहै जैसे बिना नेइको देवाला औ धन कैसो है जैसे बिना गिलावाकी ईंट अर्थात् देवालकी नाई या तन गिरिही जायगो ईंट की नाई जैसेईंट खरकिजाइहै तैसेतन खरकिही जायगो २ । ३ ॥

तन धन सों क्या गर्ब समुझ मन बौराहो ।

भसम क्रीमकी साजु समुझ मन बौराहो ॥ ४ ॥

काम अन्ध गज बश परे मन बौराहो ।

अंकुश सहिया शीश समुझ मन बौराहो ॥ ५ ॥

ऊंच नीच जानेहु नहीं मन बौराहो ।

घर घर नाचेहु द्वार समुझ मन बौराहो ॥ ६ ॥

सों ऐसे नाशवान् तनधनको क्या गर्बकरै है भस्म औ कीराकी साजु है । सोतैं जैसे कामते आंधर द्वैकै हाथी हथिनी वास्ते बँधिकै अंकुश शीशमें सहै हैं ऐसे तैं बिषयको बश परिकै नाना प्रकारके दुःखसहै है ऊंचनीच न पहिचाने द्वार द्वार बागत फिरै है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मरकट मूठी स्वादकी मन बौराहो ।

लीन्हों भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ॥ ७ ॥

छूटनकी संशय परी मन बौराहो ।

घर घर खायो डांग समुझ मन बौराहो ॥ ८ ॥

जैसे मर्कट स्वादके लिये भुजा पसारि चंभा लेइहै मूठी नहीं छांडै है ऐसे तैं मुक्तिके लिये नानामतनमें परिकै दड़कैलियो है साहब को नहीं जानै है सो तोको

संसारतैं छूटिबेकी संशय आइपरी है यमकें घर लाठी खायहै पै मतनहीं छांड़े
है सो हे बौरा जीव ! मन करिकै समुझतौ ॥ ७ ॥ ८ ॥

ज्यों सुवना नलिगी गह्यो मन बौराहो ।

ऐसा भर्म विचारि समुझ मन बौराहो ॥ ९ ॥

पढ़े गुने का कीजिये मन बौराहो ।

अंत विलैया खाय समुझ मन बौराहो ॥ १० ॥

जैसे नलिनीको सुवा भ्रमते गहै है कोऊ धरै नहीं है ऐसे तुहं आपने भ्रमते
बँधो है सो साहबको जानै विचार करै तौ छूटिही जायहै । जो सुवा पढ़े गुने
बहुत भयो तौ का भयो विलैया तो अंतमें खाय है सो ऐसेतैं बहुत पढ़ि गुनि
नाना मत कीन्हें परन्तु जौने में मीचते बचै सोतौ करबही न कियो ॥ ९।१० ॥

सूने घरका पाहुना मन बौराहो ।

ज्यों आवै त्यों जाइ समुझ मन बौराहो ॥ ११ ॥

न्हानेका तीरथ घना मन बौराहो ।

पूजैको बहु देव समुझ मन बौराहो ॥ १२ ॥

विन पानी नर बूड़िया मन बौराहो ।

टेकहुराम जहाज समुझ मन बौराहो ॥ १३ ॥

कह कबीर जग भर्मिया मन बौराहो ।

छोड़े हरिको सेव समुझ मन बौराहो ॥ १४ ॥

सो तैं शून्य धोखा ब्रह्ममें लगिकै सूना घरको पाहुना भयो जैसे आयो
तैसे चर्यो मुक्ति न भई । सो जो मुक्ति न भई तौ का बहुत तीर्थ नहाये
भयो का बहुत देव पूजे भयो तैंतो बिना पानी को जो संसार समुद्र तौनेन में
बूड़िगयो । सो तैं श्रीरामनामरूपी जहाज समुझिकै धरु । श्रीकबीरजी कहै हैं
कि, हे मन करिकै बौराजीव ! जगत्में भर्मिया कहे भ्रमत फिरै है हरिजे साह-
बहैं तिनकी सेवाछोड़िकै सो हे मन बौरा अबहूं समुझ ॥ ११।१२।१३।१४ ॥

इति चाचरि समाप्त ।

ॐ

अथ बेलि प्रारम्भ ।



हंसा सरवर सरिरहो रमैया राम ।
जगत चोर घर मूसल हो रमैया राम ॥ १ ॥
जो जागल सो भागल हो रमैया राम ।
सोवत गैल बिगोय हो रमैया राम ॥ २ ॥
आज वसेरा नियरे हो रमैया राम ।
काहिह वसेरा दूरि हो रमैया राम ॥ ३ ॥
परेहु विराने देश हो रमैया राम ।
नैन मरैंगे हूँढ़ि हो रमैया राम ॥ ४ ॥
त्रास मथन दधि मथन कियो हो रमैया राम ।
भवन मथ्यो भारि पूरि हो रमैया राम ॥ ५ ॥
हंसा पाहन भयल हो रमैया राम ।
बेधिं न पद निरवान हो रमैया राम ॥ ६ ॥
तुम हंसा मन मानिक हो रमैया राम ।
हटल न मानल मोर हो रमैया राम ॥ ७ ॥
जस रे कियो तस पायो हो रमैया राम ।
हमर दोष जनि देहु हो रमैया राम ॥ ८ ॥
अगम काटि गम कीन्हो हो रमैया राम ।
सहज कियो बैपार हो रमैया राम ॥ ९ ॥

राम नाम धन बनिजहु हो रमैया राम ।
 लादेहु वस्तु अमोल हो रमैया राम ॥ १० ॥
 नौ बहिया दश गौन हो रमैया राम ।
 पांच लदनवा लादे साथ हो रमैया राम ॥ ११ ॥
 पांच लदनवा परे हो रमैया राम ।
 खाखरि डारिनि खोरि हो रमैया राम ॥ १२ ॥
 शिर धुनि हंसा चले हो रमैया राम ।
 सरवर मीत जोहार हो रमैया राम ॥ १३ ॥
 आगी सरवर लागि हो रमैया राम ।
 सरवर भो जरिहार हो रमैया राम ॥ १४ ॥
 कहै कबीर सुनो सन्तो हो रमैया राम ।
 परखिलेहु खर खोट हो रमैया राम ॥ १५ ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम । जागतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १
 जोजागलसोभागलहोरमैयाराम । सोवतगैलबियोगहोरमैयाराम २

सो हे राम नामके रमनवारे हंसा ! या शरीर रूप सरवरमें तेरो ज्ञान जाग-
 तमें चोरमूसि लियो ॥ १ ॥ जो जागतहै मोहनिशाते सो भागै है संसारते सो
 हे राममें रमनवारे मोहनिशामें सोवत सब बिगोय गये हैं कहे नानायोनिमें
 संसारस्वप्नमें भटकत फिरै हैं ॥ २ ॥

आजबसेरानियरेहो रमैयाराम । काल्हिबसेरा दूरि होरमैयाराम ३
 परेहु विराने देश हो रमैयाराम । नैन मरैगे टूटिहो रमैयाराम ४

सो हे राममें रमनवारे ! आजु बसेरा नेरे है कहे मानुष शरीरई में ज्ञान होइ
 है सो पायेहै काल्हि कहे जब या शरीर छूटि जायगो तब बसेरा दूरि है जायगो

अर्थात् अनेक योनिनमें भटकत फिरौंगे तब मेरो ज्ञान होयगों ? तैं जागते में लूटिगयो है तैं का जागत रहे है नहीं जागत रहे ॥ ३ ॥ हे राममें रमनवारे ! आपनो देश साकेत ताको छोड़िके बिराने कहे मनकेदेशमें परचोहै तैसो अनेक योनिनमें तेरी आंखी आंशू ढारिढारि फूटिजायँगी ॥ ४ ॥

त्रास मथन दधि मथन हो रमैया राम ।

भवन मथ्यो भरि पूरि हो रमैया राम ॥ ५ ॥

हंसा पाहन भयल हो रमैयाराम ।

बेधि न पद निर्वाण हो रमैयाराम ॥ ६ ॥

तुम हंसा मन मानिक हो रमैयाराम ।

हटल न मानेहु मोर हो रमैयाराम ॥ ७ ॥

त्रास मथन जो है रामनाम तैने है दधिमथन कहे मथानी तौनेते हे राम-नामके रमनवारे ! भव समुद्र जो तेरे हृदयमें भरिपूर है ताको काहे नहीं मथ्यो ? ॥ ५ ॥ हे रामनामके रमनवारे ! तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहं जड़हैगये है काहेते कि निर्वाणपदको न बेधि के तैं जड़ हैगये है जो निर्वाणपद को बंधते तो मेरे साकेत को जाते ॥ ६ ॥ हे हंसा तुमहीं मन में मानिकै कहो तो जब तुम राम नामको जगतमुख अर्थ करन लग्यो है तब मैं हटक्यों है सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनाम के रमैयाहो परंतु राम नाम जो मोको वर्णनकरै ताको अर्थ नहीं जान्यो संसारमें परचो है ॥ ७ ॥

जसरे कियो तस पायो हो रमैयाराम ।

हमर दोष जनि देहु हो रमैयाराम ॥ ८ ॥

अगम काटि गम कीन्हों हो रमैयाराम ।

सहज कियो वैपार हो रमैयाराम ॥ ९ ॥

राम नाम धन वनिजहु हो रमैयाराम ।

लादेहु वस्तु अमोल हो रमैयाराम ॥ १० ॥

हे रामनामके रमनवारे हंसा ! जिस कियो तस पायो हमारो दोष
जनि देहु ॥ ८ ॥ अगम जो राम नाम ताको काटि गम कीन्हों अर्थात् साहब
मुख अर्थ छांड़ि जगत् मुख अर्थ कियो फिरि वही रामनाम को ब्रह्ममुख अर्थ-
करि सहज व्यापार कहे सहज समाधि लगावनलगे कि, हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ६ ॥
हे रामनाम के रमनवारे ! रामनाम धनको बनिज करिकै रामनाम अमोल बस्तु
लादेहु परंतु अर्थ न जान्यो । जो “ बनिजहु लादहु ” पाठहोइ तो
यहअर्थ है अगम जो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजक में बनाइकै तुमको
गमकै दियो कहे सुगम कैदियो समुझनलगे रामनाम को व्यापार तुम को
सहज कै दियो अर्थात् रामनाम की सहज समाधि तुमको कौउ बतायदियो सो
रामनाम अमोल है ताको बनिज करो औ वही धनको लादो यह सांच है
और सब झूठहै ॥ १० ॥

पांच लदनवा लादे हो रमैयाराम ।

नौ बहिया दश गोन हो रमैयाराम ॥ ११ ॥

पांच लदनवा आगे हो रमैयाराम ।

खाखरि डारिनि खोरि हो रमैयाराम ॥ १२ ॥

शिर धुनि हंसा उड़ि चले हो रमैयाराम ।

सरवर मीत जोहार हो रमैयाराम ॥ १३ ॥

ताही ते पांच लदनवा लादे अर्थात् पांचभौतिक शरीर धारण कीन्हे ते जौने-
में दशौ गोन दश इंद्रिय हैं तांमें मन बुद्धि चित्त अहंकार पांचौ प्राण ते बहि-
या हैं अर्थात् बहनवारे हैं चलावन वारे हैं ॥ ११ ॥ खाखरि जो शरीर तौन
जब खोरिमें डारेनि अर्थात् नाश भयो तब पांच लदनवा कहे वही पांचभौतिक शरीर
आगे मिलै है। “पांच लदनवा गिरि परे” पाठ होइ तो यह अर्थ है कि जब इंद्रिय
न रहिगई तब शरीरौ छूटिजाई है ॥ १२ ॥ सो हंसा जो जीव है सो शिर-
धुनिकै सरवर जो शरीर मीत तौने को जोहारिकै उड़ि चलै है ॥ १३ ॥

आगि लगी सरवरमें हो रमैयाराम ।

सरवर जरिभो क्षार हो रमेयाराम ॥ १४ ॥

कहै कबीर सुनो संत हो रमैयाराम ।

परंख लेहु खर खोट हो रमैयाराम ॥ १५ ॥

जब हंसा उड़ि चलेहै तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगै है सरवर जरिकै क्षारहै जाइ है सो हे रामनाम के रमनवारे तुम तो संसारमुख अर्थकैकै संसारमें परचो सो तुम्हारी यहदशा होतभई ॥ १४ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे सन्तो! साहब जो कहै हैं ताको सुनते जाउ । तुम तो रामनाममें रमन-वारेहो सो रामनामको जगतमुख अर्थ छांडिकै साहब मुख अर्थ करिकै साहब में लागो साहब की बाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खराहै कौन खोटहै साहबमुख अर्थ खराहै काहेते साहिबै अपने मुख कहै हैं जगतमुख अर्थ खोटहै सो खोट छांडिकै साहबमें लागो ॥ १५ ॥

इति प्रथम बेलि समाप्त ।

अथ द्वितीयबेलि ।

भल सुस्मृति जहडायहु हो रमैयाराम ।

धोखा कियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ १ ॥

सोतोहैं बन सीकसि हो रमैयाराम ।

शिरकै लियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ २ ॥

ईतौ हैं विधि भाग हो रमैयाराम ।

गुरु दीन्हों मोहिं थापि हो रमैयाराम ॥ ३ ॥

गोबर कोट उठायहु हो रमैयाराम ।

परिहारि जैहो खेत हो रमैयाराम ॥ ४ ॥

बुधि बल तहां न पहुंचै हो रमैयाराम ।
 खोज कहाँते होय हो रमैयाराम ॥ ५ ॥
 सुनि मन धीरज भयल हो रमैयाराम ।
 मन बढ़ि रहल लजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥
 फिरि पाछे जनि हेरहु हो रमैयाराम ।
 काल बूत सब आय हो रमैयाराम ॥ ७ ॥
 कह कबीर सुनौ संतौ हो रमैयाराम ।
 मति ढिगही फैलाव हो रमैयाराम ॥ ८ ॥
 भल सुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम ।
 धोखा कियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ ९ ॥

साहब कहै हैं हे रामनामके रमनवारो जीव तुम भली तरहते स्मृतिमें जह-
 डाय गयो । स्मृतिको तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहेतेकि धोखा
 ब्रह्ममें विश्वास कीन्हो ॥ १ ॥

सो तौ है बनसी कसि हो रमैयाराम ।
 शिर कै लियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ २ ॥

सोतौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंशीकी नाई है जो मछरीबंशीमें लगै है ताका
 प्राण छूटजाइहै, ऐसे तुहं वामें लगैहै सो तेरो जीवत्व न रहैगो । अर्थात् तेरो
 स्वरूप भुलि जाइगो मुरदाकी नाईटंगो रहैगो । तौनेधोखा ब्रह्ममें शिरकै बिश्वास
 कै लिये है । अथवा जे गुरुवालोग तोको धोखा ब्रह्ममें बिश्वास कराइ देइहैं
 स्मृतिन का अर्थ फेरिकै ते बनके सीगट हैं । उहां हैं वा जो ब्रह्महै सो तैं आहे
 यही कहै हैं अथवा हुआहै हुआ है या कहै हैं कि तैं लगा सो ब्रह्महुआ जैसे
 सीगटनकी बाणीमें अर्थ नहींहै ऐसे गुरुवा लोगनकी बाणी में अर्थनहीं है तैं
 ब्रह्म कबहूँ न होइगो तैं रामनाममें रमनवारो है सो ताहीमें रमै तबहीं
 तेरोबनैगो ॥ २ ॥

ई तो है विधि भाग हो रमैयाराम ।

गुरुदीन्हो मोहिं थापि हो रमैयाराम ॥ ३ ॥

गोवर कोट उठायहु हो रमैयाराम ।

परिहारि जैहो खेत हो रमैयाराम ॥ ४ ॥

साहब कहै हैं कि रामनामके रमनवारे यहस्मृति विधि निषेधका भागकहावै है तौने भागवश मोको गुरुवा लोग बहँकाइ दियो में काकरोँ मेरोदोष कौन है तौ हमारो महल छोड़ि तहीं गोवरको कोट उठायहुहै जो तैं गुरुवालोगनके न जाते और उपासना न पूछते तौ वे काहेको बतौते सो मोको परिहारिकै तैं संसाररूप खेत में जाय है जहां सब उत्पत्तिहोइहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुधि बल तहां न पहुंचै हो रमैयाराम ।

खोज कहांते होय हो रमैयाराम ॥ ५ ॥

सुनि मन धीरज भयल हो रमैयाराम ।

मन बढ़िरहल लजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुद्धि बल नहीं पहुंचै है शून्य है खोज कहां ते होई । जो कहो कि आपै में तो बुद्धि बल नहीं पहुंचै है तौ जो कोई मेरे रामनाममें रमैहै मोको जानै है ताकोमहीं बताइ देउँ हौं नयनइन्द्रिय देउँहौं ताहीमें मोहिंदेखै है ॥ ५ ॥ गुरुवनकी बाणी सुनिकै जो तेरे मनमें धैर्य भयो कि हम ब्रह्म है जाइंगे सो हे राम में रमन वारे वा ब्रह्ममें मन बढ़िकै कहे बिचार करत करत लजाय गयो ब्रह्म न भयो मन आपनी गति जब नहीं देखै है तब सकुचिकै वाही में रहिजाइहै मनको नाश नहीं होयहै ॥ ६ ॥

फिरि पाछे जनि हेरौ हो रमैयाराम ।

काल बूत सब आय हो रमैयाराम ॥ ७ ॥

कह कबीर सुनौ संतौ हो रमैयाराम ।

मति ढिगही फैलाव हो रमैयाराम ॥ ८ ॥

तुम तो रामनाममें रमनवारे होई तो सब तुमते पाछे हैं तिनकी ओर जनि हेरौ । माया ब्रह्म कालके पराक्रम आय जो इनके ओर हेरोगे तौ ये कालके बूत आय कहै कालके पराक्रम हैं अर्थात् मायै ब्रह्म द्वारा काल नाश सबको कै देइ है ॥ ७ ॥ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हेसंतौ ! साहब कहै हैं सो सुनते जाउ तुम तो राम नाम में रमन वारेहौ दूरिदूरि कहां खोजौहौ, मतिको ढिगहीमें फैलाव अर्थात् अपने स्वरूपको बिचारु कि मैं कौन को हौं तौ या जानि लेइ तैं कि मैं राममें रमनवारो हौं रामनाम स्मरण करौगे तबहीं मुक्ति होयगी तामें प्रमाण ॥

श्रीकबीरजीको पद ।

“असचरित देखि मन भ्रमै मोर । ताते निशि दिन गुण रमा तोर ॥
 एक पढ़हिं पाठ एक भ्रम उदास । एक नगन निरंतर रह निवास ॥
 एक योग युक्ति तिन होहिं खीन । एक राम नाम सँग रहल लीन ॥
 एक होहिं दीन एक देहिं दान । एक कलपि कलपि कै होयँ हरान ॥
 एक तन्त्र मंत्र औषधीवान । एक सकल सिद्धि राखैं अपान ॥
 एक तीरथ व्रत करि काय जीति । एक राम नामसों करत प्रीति ॥
 एक धूम घोटि तन होहिं श्याम । तेरी मुक्ति नहीं बिन राम नाम ॥
 सतगुरु शब्द तोहि कह पुकार । अब मूल गहो अनुभव विचार ॥
 मैं जरा मरणते भयउँ थीर । मैं राम कृपा यह कह कबीर ॥ ८ ॥

इति बेलि समाप्ता ।

अथ विरहुली ।



आदि अंत नहिं होत विरहुली ।

नहिं जड़ पल्लव पेड़ विरहुली ॥ १ ॥

निशिवासरनहिं होत विरहुली । पानीपवनन होत विरहुली २
 ब्रह्म आदिसनकादिविरहुली । कथिगयेयोग अपार विरहुली ३
 मास असाढ़ हिशीत विरहुली । वोइन सातौ बीज विरहुली ४
 नित गोड़ै नित सिंचै विरहुली । नित नव पल्लव पेड़ विरहुली ५
 छिछिल विरहुली छिछिल विरहुली । छिछिल रही तिहुँ लोक विरहुली
 फूल एक भल फूल ल विरहुली । फूलि रहल संसार विरहुली ७
 ते फूल बंदै भक्त विरहुली । बांधि कै राउर जाहि विरहुली ॥ ८ ॥
 ते फूल लेहीं संत विरहुली । डसि गोवेतल सांप विरहुली ॥ ९ ॥
 विषहर मंत्र न मान विरहुली । गाड़ि बोले आर विरहुली १०
 विष की क्यारी बोयो विरहुली । लोरत काप छिताय विरहुली ११
 जन्म जन्म अवतरे विरहुली । फलयक कनयल डार विरहुली १२
 कह कबीर सचु पाय विरहुली । जो फल चाखहु मोर विरहुली १३

आदि अंत नहिं होत विरहुली । नहिं जड़ पल्लव पेड़ विरहुली १
 निशिवासरनहिं होत विरहुली । पानीपवनन होत विरहुली २
 ब्रह्म आदिसनकादिविरहुली । कथिगयेयोग अपार विरहुली ३

बी कहें दुइ विद्या अविद्या रूपको, रहली कहे रहनवाली जो माया ताको ।
 सो कबीरजी कहै हैं कि, विद्या अविद्या दुहुनको न आदि है न अंत है अर्थात्
 विचार कीन्हे भ्रममात्र है जीव छूटि मात्र जाइ है । सो बिरहुली जो माया
 ताके न जड़ है न पेड़ है न पल्लव है अर्थात् विचार कीन्हे मिथ्या है ॥ १ ॥
 जब निशिवासर नहीं होत है तबहूँ बिरहुली माया रही है जब पानी पवन
 नहीं रह्यो तबहूँ बिरहुली माया रही है औ ब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुली
 है औ जौन योग अपार कथि गये हैं सोऊ बिरहुली है ॥ २ ॥ ३ ॥

मासअसाढ़हिशीतबिरहुली।बोइनसातौबीजबिरहुली ॥४॥
नितगोड़ैनितसिंचैबिरहुली।नितनवपल्लवपेड़बिरहुली॥५॥

जब प्रथम उत्पत्ति भई है सोई आषाढमास है काहेते चौमास को आदि
 आषाढ है । तैसे युगनको आदि सतयुग है सो कैसा है शीतकहे शुद्ध सतोगुण
 है तौनेमें जीव को जो सातौ सुरति तेई हैं बीज तेके बोवत भये तेसब बिरहुलिन
 आइ सो मंगलमें लिखि आये हैं कि ॥ “ सात सुरति सब मूल हैं । प्रलयहु
 इनहीं माहँ ” ॥ सो जीव नितगोड़ै है गुरुवनते वोई कर्म पूछै है खोदि
 खोदि नित सिंचै है कहे वोई कर्म करै है जाते बिरहुली कहे माया बढ़तै
 जाइ है ॥४॥ ५ ॥

छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली।छिछिलरहलतिहुँलोकबिरहुली६
फूलएकभलफुललबिरहुली।फूलिरहलसंसारबिरहुली॥७॥

कहूं विद्यारूपते छिछिली है बिरहुली माया; कहूं अविद्या रूपते छिछिली
 है बिरहुली माया । यही रीतिते तीनों लोकमें बिरहुली छिछिलरही है । सो
 यही माया बिरहुली में कहूं कर्मत्यागरूप एक फूल धोखा ब्रह्म फूलि रह्यो है
 ताही में सब संसार लगिकै फूलि रहे कहे आनन्द मानि लिये हैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

तेफुलवन्दैभक्तिबिरहुली । बांधिकैराउरजायबिरहुली ॥८॥
तेफुललेहींसंतबिरहुली । डसिगोबेतलसांपबिरहुली ॥९॥

ते फूल कहे तौन जो धोखा ब्रह्म सो भक्तनको बन्दै है अर्थात् खुलो नहीं है वै धोखा में नहीं परै है काहेते वाको बांधिकै कहे खण्डन करिकै राउर जो साहबको महल है तहांको जाहि हैं औ जे सन्त धोखा ब्रह्म रूप फूल लेहि हैं अर्थात् ब्रह्म विचारमें जे शांत भे साहबको भूलिगे ते बेतल कहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखा ब्रह्म तौनेते डसिगे । धुनि या है जाको सांप डसै है ताको स्वरूप भुलि जाइ है सांपै बोलै है ऐसे जे धोखा ब्रह्मवारे हैं तिनहूं आप-नोस्वरूप भूलिगये कहै हैं हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ८ । ९ ॥

विषहरमंत्रनमानबिरहुली।गाडुरिबोलेआरबिरहुली ॥१०॥

विषकीकियारीबोयोबिरहुली।अवलोरतपछितायबिरहुली ॥११॥

जाको ब्रह्मरूप सर्प डस्यो सो ब्रह्मरूप सर्पको विषहरनवारो जो रामनाम ताको नहीं मानै है । गाडुरि जे हैं ते आर बोले हैं झारै हैं । इहां सतगुरु जेहें ते रामनाम उपदेश करै हैं परंतु नहीं मानै हैं सो विषयकी कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुली कहे मायैआय सो अवलोरत कहे काटतमें का पछिताय है । अबका विषम छाड़ै है ! नहीं छाड़ै है । कहूं ब्रह्मानन्दकी कहूं विषयानन्दकी चाह । विद्यामें ब्रह्मानन्दकी चाह अविद्यामें विषयानन्दकी चाह तोको नहीं छाड़ै है ॥ १० ॥ ११ ॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली।फलयककनयलडारबिरहुली ॥१२॥

कहकवीरसचुपायबिरहुली।जोफलचाखहुमोरबिरहुली ॥१३॥

सो हे जीव बिरहुली जो माया ताहीमें तुम जन्मजन्म अवतरचो । जौने बिरहुलीको फल धोखाब्रह्म । औ वह कर्मफल कैसो है कि, कनयल कैसो फल है अर्थात् निरसहै रस नहीं है औविषधरहै सो कौनीतरहते सचुपावोगे । सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, तब सचुको पावै जब फल मोर चाखै कहे जौने रामनाममें मैं जपौ हौं ताही फलको चाखै तो सुचित्तई पावै या कनयल का फल न चाखै ॥ १२ ॥ १३ ॥

इति बिरहुली समाप्त ।



अथ हिंडोला ।

भर्म हिंडोलना झूलै सब जग आय ॥
 जहँ पाप पुण्यके खंभ दोऊ मेरु माया नाय ।
 तहँ कर्म पटुली बैठिकै को को न झूलै आय ॥ १ ॥
 यह लोभ मरुवा विषय भमरा काम कीला ठानि ।
 दोउ शुभौ अशुभ बनाय डांड़ी गह्यो दूनौ पानि ॥ २ ॥
 झूले सो गण गंधर्व मुनि नर झुले सुर गण इन्द्र ।
 झूलत सु नारद शारदा हो झुलत व्यास फणिन्द्र ॥ ३ ॥
 झूलत विरंचि महेश मुनि हो झुलत सूरज इन्दु ।
 औ आप निरगुण सगुण ह्वैकै झूलिया गोविंदु ॥ ४ ॥
 छ चारि चौदह सात यकइस तीन लोक बनाय ।
 चौ खानि बानी खोजि देखौ थिर न कोइ रहाय ॥ ५ ॥
 शशि सूर निशि दिन संधि औ तहँ तत्त्व पांचों नाहिं ।
 कालहु अकालहु प्रलय नहिं तहँ संत विरले जाहिं ॥ ६ ॥
 खण्डहु ब्रह्मण्डहु खोजि षट दरशन ये छूटे नाहिं ।
 यह साधु संग विचारि देखौ जीउ निसतरि जाहिं ॥ ७ ॥
 तहँके बिछुरि बहु कल्प बीते परे भूमि भुलाय ।
 अब साधु संगति शोचि देखौ बहुरि उलटि समाय ॥ ८ ॥

तेहि झूलबेकी भय नाहिं जो संत होहिं सुजान ।
कह कवीर सत सुकृत मिलै तौ फिरि न झूलै आन॥

भर्म हिंडोलना झूलै सब जग आय ॥
जहँ पाप पुण्यके खम्भ दोऊ मेरु माया नाय ।
तहँ कर्म पटुली बैठिकै को को न झूलै आय ॥ १ ॥
यह लोभ मरुवा विषय भमरा काम कीला ठानि ।
दोउ शुभौ अशुभ वनाय डांडी गहे दूनौ पानि ॥ २ ॥

परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के बिनाजाने भ्रमको हिंडोला सब संसार झूलै है कैसे है हिंडोला; जहां पाप पुण्य रूप दोऊ खंभ हैं, माया जो है सो मेरु-कहे गोला है, जौनेमें कर्मरूपी पटुली है, ताहींमें बैठिकै को नहीं झूल्यो अर्थात् सब झूल्यो है ॥ १ ॥ लोभ जो है सोई मरुवा लगो है, विषय जो है सोई भमरा है, काम जो है सोई कीला है, औ शुभ औ अशुभ जे उपासना हैं तेई हांडी हैं ताको पाणिते गहिकै सब झूलै हैं ? को को झूलै हैं ताका आगे कहे हैं ॥ २ ॥

झूले सो गण गन्धर्व मुनि नर झूले सुर गण इन्द्र ।
झूलत सु नारद शारदा हो झूलत व्यास फणिन्द्र ॥ ३ ॥
झूलत विरंचि महेश मुनि हो झूलत सूरज इंदु ।
औ आपु निर्गुण सगुण ह्वैकै झूलिया गोविंदु ॥ ४ ॥

गन्धर्व मुनि नर सुरगण इंद्र नारद शारदा व्यास फणीन्द्र जे हैं शेष महेश जे हैं विरञ्चि सूर्य चंद्रमा ये सब झूलै हैं और कहां तक कहैं सगुण निर्गुण रूपते अर्थात् चित् अचित् के अंतर्धामी ह्वैकै गोविंद जे हैं तेऊ झूलै हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥

छ चारि चौदह सात यकइस तीन लोक बनाय ।
चौखानि वानी खोजि देखौ थिर न कोइ रहाय ॥ ५ ॥

छ: जे शास्त्र हैं, चारि जे वेद हैं चौदह जे विद्या हैं, सात जे द्वीप हैं, औ इक्कीसौ जे हैं सात शून्य सात सुरति सात कलम, यतनेमें परे जे तीनिउ लोक की

रचना भई सो इनमें चारिउ खानिके परे जे जीव तिनकी हम चारिउ बानीते
वेदशास्त्रादिकनते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिर नहीं रहे हैं सबै झूलैहैं ।
सो तैं यहां को नहीं है तैं तो बाहर को है जहां इहां की साजु उहां एको
नहीं है ॥ ५ ॥

शशि सूर निशि दिन संधि औ तहँ तत्त्व पांचों नाहिं ।

कालौ अकालौ प्रलयनाहिं तहँ सन्तविरले जाहिं ॥६॥

खण्डौ ब्रह्मण्डौ खोजि षट दरशन ये छूटे नाहिं ।

यहसाधुसंग बिचारि देखौ जीउ निस्तारि जाहिं ॥७॥

न उहां सूर्य है, न चन्द्र है, न दिन है, न राति है, न संध्या है न पांचौ
तत्व हैं, न काल है, न अकाल है, न उहां प्रलय है, ऐसी जगहमें कोई विरले संत
जाइहैं ॥ ६ ॥ पुनि कैसो है जाको खण्ड जो शरीर ब्रह्माण्ड जो जगत् तामें
बाको छड़उ दर्शन वारे खोजि खोजिहारे परन्तु पाये नहीं न संसारते छूटे ।
सो ऐसे लोकको साधुजे हैं तिनको सङ्गकरिके बिचारिके देखै जाते जीव यहीं
संसारते निस्तारि जाइ ॥ ७ ॥

तहँ केबिछुर बहु कल्प बीते परे भूमि भुलाय ।

अवसाधु संगति शोचिदेखौ बहुरि उलटि सनाय ॥८॥

तेहि झूलवे की भय नहीं जो संत होहिं सुजान ।

कह कबीर सतसुकृत मिलै तौ फिरि न झूलै आन ॥९॥

सो ऐसे लोकते बिछुरे तोको केतन्यों कल्प व्यतीत भये तैं संसारमें भुला
यकै परे आय सो तैं अब साधु सङ्गति करि बिचारि कै रामनामको जानै जाते
बहुरिके वहाँ समाय अर्थात् जहांते आये है तहँ जाय । या संसार हिंडोला छांडु
जो कोई साहबके जाननवारे सुजान साधु हैं तिनको या हिंडोला में झूलवे की
भय नहीं है। तिनसों श्री कबीरजी कहै हैं कि, जो याको सतसुकृतराम नाम मिलै
तो फिर आनि बार न झूलै। रामनाम को जपिबो जो है सोई सत्य सुकृतह वही
बाडू मनो गोचरातीत जे श्रीरामचन्द्र हैं । तिनके और जे सुकृत हैं ते क्षयमा-
न हैं औ रामनाम पास पहुँचावे है जहांते नहीं लौटे है तामें प्रमाण ॥ “सप्तको-

टिमहामंत्रादिचतुर्विधमकारकाः ॥ एक एव परो मंत्रो रामइत्यक्षरद्वयम् ॥
इतिसारस्वततंत्रे ॥ दूसराप्रमाण ॥ “इममेवपरमन्त्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः ॥ कषयञ्च
महात्मानो मुक्ता जप्त्वाभवाम्बुधेः” ॥ इति पुलहसंहितास्मृतिः ॥ ८ ॥ ९ ॥
इति प्रथम हिंडोला समाप्त ।

अथ दूसरा हिंडोला ।

बहुविधिके चित्र बनाइकै हरिरच्यो क्रीडा रास ।
ज्याहि नाहिं इच्छा झूलवे अस बुद्धि केहिके पास ॥१॥
झूलत झूलत बहु कल्प बीते मन न छोड़ै आस ।
यह रच्यो रहस हिंडोलना निशि चारि युगचौमास ॥२॥
कवहुंक ऊँच नीचे कवहुं स्वर्ग भूलौं जाय ।
अति भ्रमत भ्रमहिं हिंडोलना सो नेकु नहिं ठहराय ॥३॥
डरपत रहौ यहि झूलिवेकौ राखु यादवराय ।
कह कबिर सुनु गोपाल बिनती शरण हौं तुवपाय ॥४॥

बहुविधि चित्र बनाइकै या जगत् हरि जे हैं गोलोकबासी कृष्णचन्द्र
आपनी क्रीडा बनाइ राख्यो है अर्थात् अन्तर्यामी रूपते आपही बिहार करै हैं ।
सो या जगतरूप हिंडोला में झूलिवेकी बुद्धि केहिके नहीं आई अर्थात् सबके है
न झूलिवेकी बुद्धि कोई विरले सन्तन के है । सो ऐसी हिंडोलाना चारि युग
जे हैं चौमास तामें रच्यो है जीवनके झूलत झूलत कोटिन कल्प व्यतीत भये
तऊ झूलिवेकी आशा मन नहीं छोड़ै है । हिंडोलाके चढ़ैया कहूं नीचे आवै है
कहूं ऊँचे जायैं ऐसे अति भ्रमत जो जगत् रूप हिंडोला तामें परे जे जीव त
कहूं नरकको जायैं हैं, कहूं स्वर्गको जाय है । सो हे जीवौ ! या जगतरूप हिंडोला
झूलिवेको डरत रहौ राखु यादवराय या कहौ कि हे यादवराय कृष्णचंद्र हमको
बचायो । सो हे कायाके वीरौ जीवौ ! यह कहौ कि, हे गोपाल ! गो जे हैं इन्द्रिय
तिनके रक्षा करनवारे हमारी बिनती सुनो हमतुम्हारे चरण शरण हैं ॥ -४॥

अथ तीसराहिंडोला ॥ ३ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भ दोऊ मन रच्योहौ हिंडोर ।
 तहँ झुलहिं जीव जहान जहँ लगि कतहुँ नहिं थिति ठोर ॥
 चतुरा झुलै चतुराइया औ झुलै राजा सेव ।
 अरु चन्द्र सूरज दोऊ झुलहिं नाहिं पायो भेव ॥ २ ॥
 चौरासि लक्षहु जीव झुलै धरहिं रविसुत धाय ।
 कोटिन कल्प युग बीतिया मानै न अजहूँ हाय ॥ ३ ॥
 धरणी अकाशहु दोऊ झुलै झुलै पवनहुँ नीर ।
 धरि देह हरि आपहु झुलहिं लखहिं हंस कबीर ॥ ४ ॥

जौन जगत्में लोभ मोहके खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिंडोल ताहिमें सब जहानके जीव झुलै हैं धिर नहीं कौनो ठौर में रहै हैं । चतुर चतुराईते झुलै हैं, राजा झुलै हैं, सेवक झुलै हैं, चंद्र, सूर्यतेऊ झुलै हैं । हिंडोलाको भेद नहीं पावैहैं । चौरासी लक्ष योनिके जीव झुलैहैं तिनको सबको रवि सुत जे यमराज ते धरै हैं । सो कोटिन कल्प बीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहूँ नहीं मानै है औ धरणी आकाश पवन पानी ये सब वही हिंडोलामें झुलै हैं औ देहधरिकै कहे अवतारलैकै जौनी रीति सब झुलै हैं तौनी रीति हरि आपहु झुलै हैं । जीवनको यह दिखाइबे को कि, जैसे तुमहूँ झुलैहौ तैसे हमहूँ झुलै हैं सो देहधरेको फल यह है इन को हेतु कोई जानि नहीं सकै है कि, जविनपर दयाकरिकै उद्धार करिबे को हेतु दिखावै हैं कि, देहको फल यह संसारई है ताते देहको अभिमान छोड़ि हमारे अवतारके नाम लीलादिकनमें लागि, मनको त्याग करिकै चारों शरीरनको त्याग करिदेउ । जब तुम आपने स्वरूप में स्थित रहौगे तब हंस स्वरूप दै आपने धामको लै आवौंगो । यह बात कोई नहीं लखै है कहे जानै है । जे हंसस्वरूप पाये कायाके बीर जीवहैं तेई जानै हैं याते साहबकी दया-लुता व्यंजितभई ॥ १-४ ॥

इति तीसरा हिंडोला ।

हिंडोला समाप्त ।



अथ साखी ।

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोइ ॥
छठी तिहारी हो जगा तू कहँ चला विगोइ ॥ १ ॥

गुरुमुख ॥ जीवसों साहब कहै हैं जहिया कहे प्रथम जब तुम जन्मते मुक्त रह्यो है कहे जन्ममरणते छूटे रह्यो है तहिया कहे तब हता न कोय कहे ये मनादिक नहीं रहे । जो जहिया जन मुक्ता हता या पाठ होय तो साहब कहै हैं कि हे जन हमारे दास जब तुम मुक्त रह्यो है तब ये मनादिक कोई नहीं रहे । अरु बिज्वर गुणातीत चिन्मात्र मेरो अंश सनातनको या स्वरूपते रह्यो है । छठई देइ हमारे पास है तू कहां विगरो जाइ है मनादिक नमें छगिके तैं कैवल्य शरीरमें ठिकिके हमारे प्रकाशमें स्थित रहे हमको नहीं जाने याहीते माया

तोको धरिकै संसारमें डारिदियो । सो तुम कैवल्य तनने महाकारणमें, महाकारणते कारणमें, कारणते सूक्ष्ममें, सूक्ष्मते स्थूल शरीर में गयो । सो जो अजहूं मनादिकनको त्यागिकै मोको जानै तौ मैं तोको हंसशरीरदेऊँ, तामें टिकि मेरे पास आवै । प्रथम साहब बरज्यो है ताको प्रमाण आगे बेलिमें लिखिआये हैं । जो कोई कहै हैं कि, “ हंसस्वरूपइते माया तोधरिलेआई है औ भूलि भई है सो बिना बिचारेकहै है । पारिखकारिकैदेखो तो जो हंस स्वरूपइते माया धरि लेआवती; तौ पुनि जब हंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि लेआवैगी ? काहेते कि एक बार तो धरिही लेआई । ताते हंस शरीरते माया नहीं धरिल्यावैहै । जीव कैवल्य शरीरमें सदा स्थित रहै है तहां मनकी उत्पत्ति होइहै । तब माया धरिल्यावैहै । जीव संसारी हैजाइहै । पुनि जब महाप्रलय होइहै तब फेरि वही ब्रह्म प्रकाशमें जाइकै एकरूपते सब रहै है तामें प्रमाण ॥ “ परेव्ययेसर्व एकीभवति ” ॥ औसब वहै उत्पत्ति होइहै तामें प्रमाण ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीत् एकमेवाद्वितीयम् । तदैक्षत एकोहं बहुस्याम् ” इतिश्रुतेः ॥ औ जब जीव संसारते मुक्त है जायैहै तब साहब हंस स्वरूप देइहैं, तामें स्थित हैकै साहब के पास जाइहै ताकोप्रमाण आगे लिखिआये हैं, साहबके पास जाय फेरि नहीं आवै ॥ तामें प्रमाण “ नतद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः । यद्रत्वा- न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ इतिगीतायाम् ” ॥ औ जब जीव कैवल्य शरीरमें रहै है सो सच्चिदानन्दरूप प्रकाशमें भरोरहै है, तहां जब मनको अंकुर वह चित् होइ है तब तुरीय अवस्था को स्मरणहोइ है, सो याको महाकारणशरीर है । औ जब वह सुख के स्मरणते बासना उपजी तब सुषुप्ति अवस्थामें मगनहोइहै जागै है तब कहै है कि, आज खूब सोयो याको या कारण शरीर है । औ जब वह बासना संकल्प विकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीरहै स्वप्न अवस्थाको सुख भयो । औ जब संकल्प विकल्पते नाना कर्मनके फलते पृथ्वी अपू तेज वायु आकाशादिकते स्थूल शरीर पावै है तहां जागृत अवस्था सों सुख होइहै तामें प्रमाण कबीर जी के ग्रन्थ पंचदेहकी निर्णयको ।

पंचदेहका निर्णय ॥

एकजीवको स्वतःपद, बुद्धिभ्रांति सोकाल ।
 कालहोइ यहकाल-रचि, तामें भये बिहाल ॥
 बीहाले को मतो जो, देउ सकल बतलाय ।
 जाते पारख प्रौढ़ लहि, जीव नष्ट नहिं जाय ॥
 करि अनुमान जो शून्यभो, सूझै कतहूं नाहिं ।
 आपु आप बिसरो जबै तन बिज्ञान कहिताहि ॥
 ज्ञान भयो जाग्यो जबै, करि आपन अनुमान ।
 प्रतिबिंबित झाई लखै, साक्षी रूप बखान ॥
 साक्षी होय प्रकाश भो, महा कारण त्यहि नाम ।
 मसुर प्रमाण सो बिम्बभो, नील बरण घन श्याम ॥
 बड़यो बिम्ब अध पर्व भो, शून्याकार स्वरूप ।
 ताको कारण कहतहैं, महुँ अधियारी कूप ॥
 कारणसों आकार भो, श्वेत अँगुष्ठ प्रमान ।
 वेद शास्त्र सब कहतहैं, सूक्ष्म रूप बखान ॥
 सूक्ष्मरूपते कर्मभो, कर्महिते यह अस्थूल ।
 परा जीव या रहटमें, सहै घनेरी शूल ॥
 संतौ षट प्रकारकी देही ।

स्थूल सूक्ष्म कारण महँकारण केवल हंस कि लेही ॥
 साढ़े तीन हाथ परमाना देह स्थूल बखानी ।
 राता वर्ण बैखरी बाचा जागृत अवस्था जानी ॥
 रजोगुणी ओंकार मात्रुका त्रिकुटी है अस्थाना ।
 मुक्तिश्लोक प्रथम पद गाइत्री ब्रह्मा वेद बखाना ॥
 पृथ्वी तत्त्व खेचरी मुद्रा मग पपील घट कासा ।
 क्षण निर्णय बड़वाग्नि दशेंद्री देव चतुर्दश वासा ॥

१ इस ग्रन्थमें षटदेह को वर्णन है पर याको नाम पंचदेहका निर्णयमें याका कारण यह है कि, हंसदेह को दूसरे देहन के साथन मिलाय अलग माने हैं ।

और अहै ऋग्वेद बतायू अर्द्ध शुनि संचारा ।
 सत्यलोक विषयका अभिमानी विषयानंद हंकारा ॥
 आदि अंत औ मध्य शब्द या लखै कोइ बुधिवारा ।
 कहै कबीर सुनो हो संतो इति स्थूल शरीरा ॥ १ ॥

संतौ सुक्ष्म देह प्रमाना ।

सूक्ष्म देह अंगुष्ठ बराबर स्वप्न अवस्था जाना ॥
 श्वेत वर्ण ओंकार मात्रुका सतोगुण विष्णू देवा ।
 ऊर्ध्व सुन्न औ यजुर्वेद है कण्ठ स्थान अहेवा ॥
 मुक्ति सामीप लोक बैकुण्ठ पालन किरिया राखी ।
 मार्ग बिहंग भूचरी मुद्रा अक्षर निर्णय भाखी ॥
 आव तत्त्व को हं हंकारा मंदाअग्नी कहिये ।
 पंच प्राण द्वितीया पद गाइत्री मध्यम बाणी लहिये ॥
 शब्द स्पर्श रूप रस गंध मन बुद्धि चित हंकारा ।
 कहै कबीर सुनौ भाइ संतौ यह तन सूक्ष्म सारा ॥ २ ॥

संतौ कारण देह सेरेखा ।

आधा पर्व प्रमाण तमोगुण कारा वर्ण परेखा ॥
 मध्य शून्य मकार मात्रुका हृदया सो अस्थाना ।
 महदाकाश चाचरी मुद्रा इच्छा शक्ती जाना ॥
 उदरा अग्नि सुषुप्ति अवस्था निर्णय कंठ स्थानी ।
 कपि मारग तृतीय पद गाइत्री अहै प्राज्ञ अभिमानी ॥
 सामवेद पश्यन्ती बाचा मुक्त स्वरूप बखानी ।
 तेज तत्त्व अद्वैतानन्द अहंकार निरबानी ॥
 अहैं विशुद्ध महातम जामें तामें कछु न समाई ।
 कारण देह इती सम्पूर्ण कहै कबीर बुझाई ॥ ३ ॥

सन्तौ महकारण तन जाना ।

नील बरण औ ईश्वर देवा है मसूर परमाना ॥
 नाभि स्थान बिकार मात्रुका चिदाकाश परवानी ।

मारग मीन अगोचर मुद्रा वेद अर्थबन जानी ॥
ज्वाला कल चतुर्थ पद गायत्री आदि शक्ति ततु बाऊ ।
आश्रय लोक बिदेहानंद मुक्ति साजोजि बताऊ ॥
नृणै प्रकाशिक तुरी अवस्था प्रत्यज्ञात्मतु अभिमानी ।
शीव अहंकार महाकारण तन इहो कबीरबखानी ॥ ४ ॥

संतौ केवल देह बखाना ।

केवल सकल देहका साक्षी भमर गुफा अस्थाना ॥
निराकाश औ लोक निराश्रय निर्णय ज्ञान वसेखा ।
सूक्ष्म वेद है उनमुन मुद्रा उनमुन बाणी लेखा ॥
ब्रह्मानंद कही हंकारा ब्रह्मज्ञानको माना ।
पूरण बोध अवस्था कहिये ज्योतिस्वरूपी जाना ॥
पुण्य गिरी अरु चारुमात्रुका निरंजन अभिमानी ।
परमारथ पंचम पद गायत्री परामुक्ति पहिचानी ॥
सदाशीव औ मार्ग सिखाहै लहै संत मत धीरा ।
कालेतीत कला सम्पूरण केवल कहै कबीरा ॥ ५ ॥

संतौ सुनौ हंस तन ब्याना ।

अवरण बरण रूप नहिं रेखा ज्ञान रहित विज्ञाना ॥
नहिं उपजै नहिं बिनशै कबहूं नहिं आवै नहिं जाहीं ।
इच्छ अनिच्छ न दृष्ट अदृष्टी नहिं बाहर नहिं माहीं ॥
मैं तू रहित न करता भोगता नहीं मान अपमाना ।
नहीं ब्रह्म नहिं जीव न माया ज्यों का त्यों वह जाना ॥
मन बुधि गुन इंद्रिय नहिं जाना अलख अकह निर्बाना ।
अकल अनीह अनादि अभेदा निगम नीति फिरि जाना ॥
तत्त्व रहित रबि चंद्र न तारा नहिं देबी नहिं देवा ।
स्वयं सिद्धि परकाशक सोई नहिं स्वामी नहिं सेवा ॥
हंस देह विज्ञान भाव यह सकल बासना त्यागे ।
नहिं आगे नहिं पाछे कोई निज प्रकाशमें पागे ॥

निज प्रकाशमें आप अपनपौ भूलि भये विज्ञानी ।
 उनमत बाल पिशाच मूक जड़ दशा पांच इह लानी ॥
 खोये आपु अपन पौ सब रस निज स्वरूप नहिं जाने ।
 फिरि केवल महकारण कारण सूक्ष्म स्थूल समाने ॥
 स्थूल सूक्ष्म कारण महा कारण केवल पुनि विज्ञाना ।
 भये नष्ट ये हेर फेरमें कतौं नहीं कल्याना ॥
 कहै कबीर सुनोहो संतो खोज करो गुरु ऐसा ।
 ज्यहिते आप अपन पौ जानो मेटो खटकारैसा ॥ ६ ॥

इति पंच देह निर्णय ।

औ जब पांचौशरीर ते भिन्न अपने को मान्यो अरु आपनेको ब्रह्मरूप न मान्यो यह मान्यो कि, मैं साहबको अंशहौ यह जान्यो तब साहब याको हंस-शरीर देइहै । सो जैसे साहब अनिर्बचनीय रस रूप है ऐसे जीवो है रकार रूप साहब है मकाररूप जीव है न्यूनता येती है साहब स्वामी है, जीव सेवक है, साहब स्वतन्त्र है यह परतन्त्रहै साहब की मरजी ते सब काम करै है। जैसे गुण साहबके हैं तैसे याहूके हैं, जैसे साहब नहीं आवै जायहै ऐसे यहो नहीं आवै जायहै साहबके पासते । जैसे साहबकी सर्वत्र गति है ऐसे याहू की सर्वत्र गति है साहब के बराबरयाको भोगहै तामें प्रमाणव्याससूत्रम् ॥ “ भोग-मात्रसाम्यलिगात् ” तामें प्रमाण षट्दोहांवलीको शब्दभी कबीरजीका ॥ “ तत्त्व भिन्न निस्तत्त्व निरक्षर मनो पवनते न्यारा । नाद बिंदु अनहद अगोचर सत्य शब्द निरधारा ॥ ” औ स्थूल शरीर पञ्चास तत्त्वको है पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दश इन्द्री पञ्च प्राण मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव । सो जाग्रत अवस्था में अनुभव होइहै औ ऋग्वेदहै प्रथमपद गायत्री । औ सूक्ष्मशरीर सत्रह तत्त्वकोहै पञ्चप्राण, दशइन्द्री मन, बुद्धि, सो स्वप्न अवस्थामें अनुभव होइहै औ यजुर्वेदहै द्वितीयपदगायत्री । औ कारण शरीर तीनितत्त्वको है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्ति अवस्था में अनुभवहोइहै सामवेद है तृतीयपद गायत्री । और महाकारण शरीर दुइ तत्त्व कोहै अहंकार जीवात्मा सो तुरीया-वस्था में अनुभव होइहै अथर्वणवेद है चतुर्थपदगायत्री है । जीव सूक्ष्मवेद

है नी ओंकार पञ्चमपद गायत्री है बचनमें नहीं आवैहै ॥४॥ पंचम पद गायत्री नाम वेदहै तामें प्रमाण ॥ “निद्रादौ जागरस्याति यो भाव उपपद्यते ॥ तम्भा-
वं भावयेन्नित्यमक्षयानंदमश्नुते” ॥ औ कैवल्य शरीर एक तत्त्वको है चिद मात्र है औ जौन ब्रह्मको छठौं शरीर मानि राख्यो सो निस्तत्त्व है सो वाको भ्रमैहै, कुछबस्तु नहीं है । सो जो कोई रामनामको स्मरण करत साहबको जान्यो औ पांचो शरीरको त्यागकियो तब साहब हंसशरीर जीवको देइहै जो मनवचनमें नहीं आवै है । सो हंसशरीर अनिर्वचनीयहै रसरूप है वह निस्तत्त्वहूसे परैहै जब प्राकृत रसजोहै सोऊ व्यंजनावृत्ति करिकै जानोपरैहै तौ अमाकृत जो मनवचनके परैहै वाको कोई कैसेजानै । सो तौने हंसशरीरमें प्राप्त हूँ कै साहबके पासजाइकै फिरि नहीं आवैहै । उहां मायामनादिकनकी पहुंच-
नहीं है सो साहबकहै हैं कि हे जीव ! हंसस्वरूप जो छठौं शरीर तिहारो सो हमारे पास है तू कहां मनादिकन में लगिकै बिगरे जाउहौ तुम हमारेपास आवो । और अर्थ इनको स्पष्टै है अंतमें कछु अर्थ खोले देइ हैं । सो श्रीक-
बीरजी कहै हैं कि, षट जे हैं छयो शरीर तिनको रैसा कहे झगरा है सो मेठो । जौने ब्रह्म प्रकाशमें तुम भरे रहेहौ सो वाको छठौं शरीर आपनो मानो हौ सो तिहारो शरीर नहीं है, वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् है जाइहै जाको भूत लगै है औ जो उन्मत्त होइ है ताको यथार्थ ज्ञान नहीं होइ है । सो ऐसा गुरु करो जो साहबको बतावै तब आपनो छठा शरीर हंसस्व-
रूप पावोगे लोकमें जो साहब देइ है तौने इहां साहब कह्यो है कि, छठी तिहारीही जगा कहे छठौं शरीर हंसस्वरूप हमारी जगह में कहे हमारे पास है सो हमको जानोगे कि, वही ब्रह्म है तब हमारे दिये पावोगे जौन छठौं शरीर तुम मानिराख्यो है औ खोजौहौ सो तिहारो नहीं है ताते तुम्हारो कार्य न सरेगो ॥ १ ॥

शब्द हमारा तुम शब्दका, सुनि मति जाहु सरखिख ।

जो चाहो निज तत्त्व को, तौ शब्दै लेहु परखिख ॥२॥

साहब कहै हैं कि, शब्द जोहै हमारा रामनाम तौनिही शब्द के तुमहो सो रामनाम को सेरेखिकै कहे बिचारिकै माया ब्रह्म में मतिनाहु । जो निज-

तत्त्वको चाहो कि, मैं कौन तत्त्व यथार्थहों तो शब्द जो रामनाम ताको परखि लेउ, अनादि शब्द यही है । मेरे धाममें यह नाम मेरो सदा बनो रहै हैं जब आदि उत्पत्ति प्रकरण होइ है तब यही नाम लैकै यहीको अर्थ वेदशास्त्र औ सब जगत् निकासिकै बाणी जगत की उत्पत्ति करै है रामनाम को अर्थ मोमें रूढ़ है सो अर्थ बाणी गुप्तकै देइ है तौन अर्थ साधुजानै है कि, रकारजे हैं साहब तिनको अकार जो है आचार्य सतगुरु सो मकार जो है जीव ताको शरण करावै है सो तुम मकार तत्त्वहो ताको जानो चाहें तो शब्द जो है मेरो रामनाम ताको परखो । जो ककारके समीप मकार होइ तो वो मकार काम रूप सजै है औ जो दकारके समीप मकार होइ तो दाम रूप सजेहैं इत्यादिक नाना शब्द सजै हैं तहां तौने रूप द्वैजाय है वतनी शुद्ध ता नहीं रहि जाय है । जब वहै मकार रकार के समीप सजै है तबहीं शुद्ध ता होइ है । ऐसे तुम मेरे समीप सजौहो सो मेरे पास आवो मोको जानो तो तुमहूं शुद्ध द्वै जाउ । जैसे रकार के समीप मकार सदा रहै है तैसे तुमहूं सदाके मेरे समीप हो ताते मेरे समीप आवो औरै २ में न लगे । रकार के शरण मकार को अकार करावे तामें प्रमाण ॥ “रकारो रामरूपोयं मकारस्तस्यसेवकः । अकारश्चामकारस्य रकारे योजनीमता ॥” इति शम्भु संहितायाम् ॥२॥

शब्द हमारा आदिका, शब्दहि पैठा जीव ॥

फूल रहनकी टोकनी, घोरा खाया घीवं ॥ ३ ॥

साहब कहै हैं कि हमारा शब्द जो रामनाम सो आदि को है आदिहीते-यहि शब्द में जीव पैठा है सो शब्द रामनाम जीवके रहिबेको पात्र है; जैसे फूल के रहनकी टोकनी पात्र है । सो राम नामको लैकै निर्भय सुखपूर्वक बिचरै, कछु भय न लगे । तौने रामनामको सार जो अर्थ है सोई घी है ताको घोरे जे पशु हैं गुरुवा लोग अज्ञानी ते खाइलियो । अथवा पूर्व में छांछको घोरा कहै हैं जामें सार नहीं है ऐसे जे हैं छांछ गुरुवा लोग ते साहब को यथार्थ ज्ञान जो घी ताको खाइलियो कहे वाको और और अर्थ करिकै नाना मतनमें लगाइ दियो । जो रामनाम मोको बतावै है सो अर्थ भुछायदियो गुरु वा लोग बड़े घोर हैं येई संसारमें तोको डारि दियो है ॥ २ ॥

शब्द बिना श्रुति आंधरी, कहौ कहांको जाय ॥

द्वार न पावै शब्दको, फिरि फिरि भटका खाय ॥ ४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, श्रुति जो है सो शब्द जो है रामनाम ताके बिना आंधरी है । काहेते कि, रकार मकार श्रुति की आंखी हैं ताके बिना कहांको जाय । सो शब्द जो रामनाम है तौनेको द्वार नहीं पावै अर्थात् अर्थ नहीं जानै । रामनाम तो साहबमुख अर्थमें मन बचनके परे पदार्थ बतावै है और या श्रुति नेति नेति कहि बतावै है । याते रामनामको साहब मुख अर्थ नहीं कहि सकै है । याते यामें परिकै जीव फिरि २ भटका खाय है । ज्ञान, भक्ति, बिज्ञान, योग; बतावै है फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइ है, याते जीव भटकाखा-इ है । उहां वस्तु कुछ नहीं पावै है जो रामनामको साहबमुख अर्थ जीव जानि-कै लगावै तौ सब श्रुति लागि जायँ । औ सबके परे पदार्थ सो जानि जाहिं । काहेते बिना आंखी कोई नहीं देखै । जौनी तरहते राम नामते सब श्रुति लागिजाय हैं औ अनिर्वचनीय पदार्थ मालूम होय है सो पीछे लिखि आये हैं ॥ ४ ॥

शब्द शब्द बहु अंतर हीमें, सार शब्द मथि लीजै ॥

कह कबीर जेहि सार शब्द नहिं, धिग जीवन तेहि दीजै ५

जहां जहां अन्तर तहां तहां बहुत शब्द देखे हैं । औ तुम रामनामको अनि-र्वचनीय है श्रुति की आंखी हैं या कहौ हौ सो कैसे होइगो ? एकशब्द - बोहू होइगो ? सो या ऐसो नहीं है सार शब्द है जब सब शब्दनको मथै तब बा जानि परै । सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, जेहि को सार जो रामनाम सो नहीं मथि-लियो है, ताको जीवन संसार में धिग है । “ सारशब्द मतलीजै ” जो यह पाठ होइ तौ सारशब्द रामनाम ताको मतिलेइ । और जे मति हैं ते कुमति हैं तेहिको छोड़ि दे । रामनाम वर्णन सब श्रुति की आंखी हैं तामें प्रमाण ॥ “ आखर मधुर मनोहर दोऊ । वरण बिलोचन जन जिय जोउ ” ॥ १ ॥ “ मुक्तिस्त्रीकर्णपूरै-मुनिहृदयवयः पक्षतीतीरभूमिः संसारापारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कविम्बे । उन्मीलत्पुण्यपुंजद्रुमललितदलेलोचनेचश्रुतीनां कामरामेतिवर्णौशमिहकलयतां ततंसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

शब्दै मारा गिरि गया, शब्दै छाड़ा राज ॥

जिन जिन शब्द विवेकिया, तिनको सरिया काज ॥६॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि शब्दजो रामनामतौनेको जगत्मुख अर्थमें वेदशास्त्र पुराण नानामतजे निकसे हैं तामें जो परचो सो गिरगया अर्थात् संसारमें परचो औ जिन जिन शब्द विवेकिया कहे सब शब्दनते बिचारकरि सारशब्दजो रामनाम ताकोजानि लियो सोई संसाररूप राजको छोड़िदिये हैं औ तिनहीं को काजसरियाकहे सिद्धभयो है ॥ ६ ॥

शब्द हमारा आदि का, पल पल करै जो यादि ॥

अंत फलैगी माहली, ऊपरकी सब वादि ॥ ७ ॥

गुरुमुख । साहबकहैहैं हे जीवो ! हमारा शब्द जो रामनाम सोई आदिको हैं अर्थात् याहीते प्रणव वेदशास्त्र बाणी सब निकसे हैं सो याको आदिकहे स्मरण जो पल पल कहे निरन्तर करैगो तौ अन्तमें फलैगी साकेत जो हमारो महलताको माहली होइगो वसैया होइमो अर्थात् तहांको जाइगो और ऊपरके जे सब नाना मतहैं ते वादि कहे मिथ्या हैं अथवा और सब ऊपरके मत बाद विवादहैं ॥ ७ ॥

जिन जिन संबल ना किया, अस पुर पाटन पाय ॥

झाल परे दिन पाथये, संबल किया न जाय ॥ ८ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि, अस पुरपाटन जो या मानुष शरीर तौने को पाय कै, जिन जिन पुरुष संबल न किया कहे सम्यक् प्रकार बल न कियो अर्थात् मनादिकनको न जाति लियो, साहब को न जान्यो । अथवा संबलकहे जमा, सो परलोककी जमा रामनामको न जानि लियो । 'अथवा सन्बलकहे कलेवा सो जो कलेवा साधन लै न लियो अर्थात् भजन न कै लियो सो दिन अथये कहे शरीर छूटे झालिपरे अर्थात् चौरासी लाख योनि में परचो अब सबल कियो नहीं जायहै ॥ ८ ॥

इहई सम्बल करिले, आगै विषमी वाट ॥

सरग विसाहन सब चले, जहँ बनियां नहिं हाट ॥ ९ ॥

इहई कहें यहीं संसारमें सम्बल कह कलेवा सम्पन्न करिले आगे ।
विषमी बाट कहे कठिन दुखदाई बाटको, सो श्री कबीरजी कहैं हैं कि,
आगे न जागे कौनी योनि में परैगो और वहाँ कुछ किये होइगो कि नहीं ।
अथवा जो या कहो कि, स्वर्गमें विसाहन करि लेइंगे अर्थात् सौदा करि-
लेइंगे अर्थात् वहाँ साहबको जानन वारो कर्म करिलेइंगे । तो वहाँ न बनियाँ
है न हाट है अर्थात् वह तो भोगभूमि है कर्म भूमि नहीं है स्वर्ग के शरीर
से केवल मृत्यु लोकमें किये कर्मनको भोग होइहै कर्म करिवे को स्थानतो या
मनुष्य शरीर और या मृत्यु लोकही है । ताते श्री कबीरजी कहै है हे जीवो !
यहांहीं सुकर्म करि लेउ ॥ ९ ॥

जो जानौ जिव आपना, तो करहु जीवको सार ।

जियरा ऐसा पाहुना, मिलै न दूजी बार ॥ १० ॥

हे जीवो ! जो अपने स्वरूप को जानो तो जीव का सार जो सार शब्द
तामें रकारके समीप मकार आपने स्वरूपको करौ अर्थात् साहबको जानि साहबको
होउ । सो हे जीवो ! रा अर्थात् रामनाम ऐसा पाहुना दूजी बार ना मिलैगो । भाव
यह है कि, याही मनुष्य शरीर में मिलैगो और कहीं ना मिलैगो ॥ १० ॥

जो जानहु पिव आपना, तो जानौ सो जीव ।

पानिपचाबहु आपना, पानी मांगि न पीव ॥ ११ ॥

जो आपना पीव जे साहब हैं तिनको जानौ तो हम तुमको जानैं कि, तुम
जीव हो । पानिप जो शोभा सो जो आपनी शोभा (प्रतिष्ठा) चाहो तो
पानी जे गुरुवा लोगोंकी नाना वाणी है तिनको मांगिके नाँ पिउ अर्थात् गुरुवन
ते अपने साहबको ज्ञान मत लेउ वे तो ठग हैं तुझे ठग लेइंगे ॥ ११ ॥

पानि पियावत क्या फिरो, घर घर सायर बारि ।

तृषावन्त जो होयगा, पीवेगा झख मारि ॥ १२ ॥

साहब कहैं हैं श्रीकबीरजीसे । हे कबीर ! मेरो उपदेश रूप पानी जीवन
को पियावत घर घर का (क्या) फिरो हो । सबके समुद्र भरो है अर्थात्

सब अपनी २ वाणी और कल्पना में मस्त हैं । जो तृप्ति होइँगे अर्थात् मुक्तिको चाहेंगे तो तुम्हार उपदेश रूपानी झख मारिके कहे लाचार है कै आपै पियैगे । समुद्रका खाराजल त्यागि देंगे ॥ १२ ॥

हंसा मोती विकानिया, कंचन थार भराय ।

जो जस मर्म न जानिया, सो तस काह कराय ॥ १३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे विवेकी जीवो ! हे हंसो ! कंचन थार रूप जो तुम्हारे अन्त करनः तामें मोती रूप साहब को ज्ञान मोते भराओ अर्थात् मैं तो तुमको उपदेश देऊँहों तुम कहा बिकत फिरौ हो । जौन जस पदार्थ होइ है तौने को तस न जानत है तौ वाको लैकै का करै ।

अथवा—कबीरजी कहै हैं हे हंसो ! हे जीवो ! मोती जो निर्मल शुद्धरूप अपना स्वरूप तौनेको कंचन थार जो माया तौने में भरिके विकनिडारे अर्थात् कनक कामिनीमें लगाई कै मायाके हाथ बेचिडारे । सो जो जौने तराते आपने स्वरूपको न जानि सक्यो सो जाहिमें जैसौ लग्यो ताहिमें तैसो है अज्ञान भयो । अब कहा करै मायामें फंसिकै मरिगै ॥ १३ ॥

हंसा तुम सुवरण वर्ण, का वरणौ मैं तोहि ।

तरवर पाय पहेलि हो, तबै सराहौँ छोहि ॥ १४ ॥

हे हंसा जीव ! तुम सुवरण जे मकार ताके वर्णहौ, मैं तौही का वरणौ अर्थात् तुमहूँ मन बचनेके परे हौ सो तरिवर जो या संसार ताको जब पाइके पहेलिहो कहे ठेलि जैहो अर्थात् संसार को दूर करि दैहो तबही मैं तौको छोड़ करिके सराहौँ गौ कि बड़े बन्धनमें बंधिके छूट्यो ॥ १४ ॥

हंसा तू तो सबल था, हलकी अपनी चार ।

रंग कुरंगी रंगिया, किया और लगवार ॥ १५ ॥

हे हंसा जीवो ! तुमतो सबल कहे सम्यक् प्रकार बलवाले थे (तेहोरो साहबौ सबलहै) परंतु अपनी चार कहे अपनी चालते हलुक कहे निबल है गयो काहेते कि रंग कुरंग जो या संसार है तौनेमें रंगिगै कहै राग करि लियो ।

और राग करिकै और लगवार कहे नाना मतनमें जाइके नाना मालिक बना-
वतभै । धुनि यहहै कि, आपने स्वरूपको देखु ॥ १५ ॥

हंसा सरवर तजिचले, देही परिगै सुनि ॥

कहै कबीर पुकारिकै, तेई दर तेइ थुनि ॥ १६ ॥

हे हंसाजीव! बिना साहबके जाने या सरवररूपी शरीर तजिकै जाउगे तब
या देही सुनि परिनायगो अर्थात् मरिजायगी । सो श्री कबीरजी कहै हैं कि,
हम पुकारिकै कहै हैं बिना साहबके जाने तेई दर तेई थूनी बने हैं अर्थात्
नये तलायेमें लाठि गाड़ि जाइहै सो जहैं जायगो तहैं देहरूपी सरवरमें बासन ।
रूपी दरमें कर्मरूपी थूनिह गाड़ि लेउगे । पुनि पैदा होइगो जनन मरण न
छूटैगो ॥ १६ ॥

हंसा बक यक रँग लखिये, चरैं एकही ताल ॥

क्षीर नीर ते जानिये, बक उघरै तेहि काल ॥ १७ ॥

बकुला और हंस एकही रंग होइहैं और एकही ताल में चरै हैं; परन्तु जब
नीरक्षीर एक करिकै धरिदियो वे दूध पीलिये पानी रहिगयो तब जानिपरो
हंसहै । औ नीर क्षीर जुदो कीन न भयो तब जान्यो कि बगुला है । ऐसे
टीका कंठी माला टोपी सब बराबर होइ हैं जब बिचार करनल्यो मन माया
ब्रह्म जीव इनते साहबको अलग मान्यो तौ जान्यो कि ये हंस हैं जो मनमाया
ब्रह्म जीव ते अलग न कियो साहब को तौ जान्यो कि ये बगुलाहैं ॥ १० ॥

काहे हरिणी दूबरी, चरै हरियरे ताल ॥

लक्ष अहेरी एक मृगा, केतिक टोरो भाल ॥ १८ ॥

जीव कहै है कि हे हरिणी! बुद्धि तैं काहे दूबरी द्वै रही है । संसार रूपी
हरियरे तालमें चरिकें यह संसारतालमें लक्ष तौ अहेरी कहे मारनवारोहै सो
तैं केतिक भार टारोगे मरिही जाइगो । सो हरियर है जौने जौने तौनेमें काहे

मकार है। सो जरदबुन्द कहे जरद रज स्त्रीको और बुन्द वीर्य्य पुरुषको ये दुन-
हुनके संयोगते शरीररूप कूकुही जीवके लगी गई । जैसे खेतनमें कूकुही लगी
जाइ है सो कबीरजी कहै हैं कि, याको भीतर विचार करि देखो तो यहि जीव
को स्वरूप जानि परै । कूकुही छड़ाइवो जैसे कूकुहीते अन्ननाश है जाइ है
ऐसे याहु शरीररूप कूकुही जीवके लगी है सो एकही शुद्धता को नाश कै
देइ है ॥ २५ ॥

**पांच तत्त्व लै या तन कीन्हा, सो तन लै कह कीन्ह ।
कर्महिके वश जीव कहत है, कर्महिको जिय दीन्ह २६**

या पांच तत्त्वनको लैकै या शरीर कियो सो या शरीर लैकै तैं कौन काम
कीन्ह्यो, कर्मके वश हैकै मेरो अंश जो जीव सो कर्महि को देत भयो । मेरो
हैकै अर्थात् कर्मके वश हैकै संसारी भो जीव सो कौन बड़ो काम कियो जीव
कहवावन लग्यो ॥ २६ ॥

पांच तत्त्वके भीतरे गुप्त वस्तु अस्थान ॥

विरल मर्म कोइ पाइहै, गुरुके शब्द प्रमान ॥ २७ ॥

पांच तत्त्वको जो या शरीर ताके भीतर जो गुप्तवस्तु जीवात्मा है ताको
स्थान है ताको मर्म कोई विरला पावै है कि, यह नित्य कौनको है यामें गुरु
जे साहब हैं तिनका शब्द जो रामनाम सोई प्रमाण है । तौनेको अर्थ विचार
करै तौ या जानि लेहि कि जीव साहबैको है ॥ २७ ॥

अशुनत खत अड़ि आसनै, पिण्ड झरोखे नूर ॥

ताके दिलमें हौं वसौं, सैना लिये हजूर ॥ २८ ॥

अशुन कहे शून्य नहीं वा निराकारके परे अशून्य जो साहबको तरुत आडिकै
तामें आसन कैकै अर्थात् ध्यानमें रत पिण्ड जो है शरीर ताके झरोखा जे हैं
नेत्र तिनते साहबको जो कोई नूरदेखै कि, सब साहबैको प्रकाश पूर्ण है सर्वत्र
ताके दिलमें आपने परिकरते सहित बसौहौं ॥ २८ ॥

हृदया भीतर आरसी, मुखतो देखि न जाय ॥

मुखतो तबहीं देखिहौं, जब दिलकी द्विविधा जाय ॥ २९ ॥

हृदय भीतर जौ आरसी है तौनेमें आपनेरूपको जो मुख सो नहीं देखों जाय है वा बिचारकरिके देखो जाइ है सो मुख जो तुम्हारो स्वरूप सो तबहीं देखिहौं जब मैं मोर या द्विविधा जात रही कि, चित अचित रूप सब साहबैके देखो गे ॥ २९ ॥

ऊँचे गाँव पहाड़ पर, औ मोटे की बाँह ॥

ऐसो ठाकुर सेइये, उवरिये जाकी छाँह ॥ ३० ॥

जोगांव ऊँचेपर होइ है तहां बूड़ाकी भयनहीं होइ है, जाके जबरकी बांह होइ है ताको डर नहीं होय है ऐसे ऊँचो गांव जो साकेत, तहां साहब जे हैं तिनकी जहां बांह है ऐसे जे साहब हैं तिनकी बाहँकी छाँहमें टिकौ जाते उबरौ । उहां मायाके बूड़ाको डर नहीं है इहाँ मन मायादिकनमें परेहौ इनमें कालते न बचोगे ॥ ३० ॥

ज्यहि मारग गे पण्डिता, तेही गई वहीर ॥

ऊँची घाटी रामकी, त्यहि चढ़ि रहे कबीर ॥ ३१ ॥

जौने मार्गमें राम नाम जाने बिना पण्डित गये, वही मार्ग है मुखौ जात भये अर्थात् पापीपुण्यवानं सबवहीयमपुरी गये । कबीर जी कहै हैं कि, ऊँची घाटी जो रामनाम तामें आरूढ़हैके हे कायाके वीर कबीर माया के बूड़ाते बचिजाऊ ॥ ३१ ॥

हे कबीरतैं उतरि रहु, सबल परोह न साथ ॥

सबल घटे औ पग थके, जीव विराने हाथ ॥ ३२ ॥

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर ! तैं ऊँचीघाटी जो राम नाम तौनेते उतरिरहु न तेरे सबलकहे कलेवा है न परोहनकहे बाहन साथ है । सो सबल औ पग जब थकैगो तब जीव तो विराने हाथ है जाइगो । जो हमारेपास आवोगे तो ज्ञान योगादिक सम्बल बतावैंगे । अहं ब्रह्मास्मि बाहनदेयंगे तामें आरूढ़हैके संसारसमुद्र पार है जाइगो ॥ ३२ ॥

घर कबीरका शिखर पर, जहां सिलि हिली गैल ॥
पांय न टिकैं पिपीलिका, खलक न लादे बैल ॥ ३३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे गुरुवा लोगौ ! हमारा घर शिखर जो रामनाम है तामें है । तहांगैल चिकनीहै चींटी जो बुद्धिहै ताहीके पांय नहीं टिकैहैं अर्थात् वा मन बचनकेपरेहैं रामनाम औरस्वरूपहै । तहां तुम पहुंचि न सकौ हो ताते बिछुल गैल हो उहां नाना मत शास्त्र रूप लाद लादे बैल जे हैं गुरुवा ते नहीं जाइ सकैहैं । अर्थात् सूक्ष्म बुद्धिहू नहीं जाइसकै हैं तौ तुम जे नाना मतनको लाद लादेहो सो कैसे जाइ सकौहो जहां मैं टिकौहौं तहांभरि तुमहूं पहुंचि सकतै नहींहो कहां कलेवा देउगे कहां बाहन देउगे ॥ ३३ ॥

बिन देखे वहि देशकी, बातैं कहै सो क्रूर ॥
आपैं खारी खात हौ, बेचत फिर कपूर ॥ ३४ ॥

श्रीकबीरजीकहैहैं कि, जोने शिखरमें हम चढ़े हैं तौने देशको बिना सतगुरु द्वारा देखे जे बात वहांकी कहैहैं ते क्रूरहैं । अर्थात् तुम हमको उतरन शिखरते बिना जाने कहौहो सो तुमहीं क्रूरहो । कैसे हो आपतोखारी जे नाना मत तिनको ग्रहण कीन्हैहो स्वच्छ उज्ज्वल कपूर जो है ज्ञान ताको बेचत फिरौहो । अर्थात् द्रव्य लैकै चेला बनावत फिरौहो । भाव यहैहै कि, नामको भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुंचौगे ॥ ३४ ॥

शब्द शब्द सबको कहैं, वातो शब्द विदेह ॥
जिह्वा पर आवैं नहीं, निरखि परखि कर लेह ॥ ३५ ॥

शब्द शब्द सबकोई कहैहैं परन्तु वा शब्द जो रामनामहै सो विदेहहै बिना शरीरका है जिह्वा में नहीं आवै है मन बचन के परे है ताको ज्ञानदृष्टिने निरखिके पारिख करिलेहु ॥ ३५ ॥

परवत ऊपर हर बसै, घोड़ा चढ़ि वस गाउँ ॥
बिन फुल भौरा रस चखै, कहु विरवाको नाउँ ॥ ३६ ॥

पर्वत आगे जीव ब्रह्मको कहिआये हैं सो पर्वत जो ब्रह्म ताके ऊपर हर जो माया सो है अर्थात् सबलित द्वैकै संसारकी उत्पत्ति करै है । सो घोड़ा जो है मन तौनेमें गाँउ जो संसार है सो बसै है अर्थात् मनमें सब संसारहै बिनफुल कहे या संसार तरु को फूल विषयहै सो मिथ्याहै कछु बस्तु नहीं है तौनेको रसभौरारूप जीव चाखैहै सो वा बिरवाको नाउँ तो कहु ? नाम संसार मिथ्याहै जौन याको सांचनाम है ताको कहु। ताको तैं ध्वनी यहहै नहीं जानै है ॥ ३६ ॥

चन्दन वास निवारहू, तुझ कारण बन काटिया ॥

जिवत जीवजनि मारहू, मुयेते सवै निपातिया ॥ ३७ ॥

हे चन्दन जीव ! अपनी बासना तू निवारणकर । काहेते कि, मैं तेरे कारण जौने गुरुवनकी नाना बाणी नाना मतनमें तुम लाग्यो तिनकी बाणी रूप बन काटि डारयो अर्थात् खण्डन करिडारयो जाते तुमको ज्ञानहोय । सो बासना में परिकै जीवत जीव तुम अपनो न मारो । जो वामें लागि जाहुगे तौ तुम्हारो जीवत्व जात रहै गो मरिजाहुगे । वाही धोखामें लगिकै आपको ब्रह्म मानन लागोगे तब निपातिया कहे सब साहबके ज्ञानको निपात द्वैजाइगो ॥ ३७ ॥

चन्दन सर्प लपेटिया, चन्दन काह कराय ॥

रोम रोम विष भीनिया, अमृत कहाँ समाय ॥ ३८ ॥

चन्दन जो जीवहै सो कहाकरै है । सर्प जेगुरुवालोगहैं ते लपटिरहे हैं सो उनकी बाणी को जो है विष सो रोमरोम विषे भेदि गयो है हमारो उपदेश जो अमृत सो कहाँ समाय ॥ ३८ ॥

ज्यों मुदादि समसानसिल, सव यक रूप समाहि ॥

कह कबीर साउज गतिहि, तबकी देखि भुकाहि ॥ ३९ ॥

जैसे मुदादि समसानसिल होइहै सो जो कोई देखै है ताको मुरैलैरूप देखि-परै है । सो कबीरजी कहै हैं कि, गुरुवालोगनकी बाणीरूप सिलमें तबकी कहे सृष्टिके आदिमें आपनीगतिदेखै हैं कि, तबहूँहम ब्रह्मरहेहैं या मानिके भोकै हैं कि, हमहीं ब्रह्महैं । अथवा ज्यों मुदादि कहे मुदको आदि ब्रह्म ज्योंकहे कैसे जैसे मसानते सहित सिल पाथरकेभुतहा चौरा, जेई वा चौरामें बैठै हैं सांभु-

आइहैं कहै हैं मैं फलानो भूतहौं आपनो रूप भूलिजाइहैं ऐसे जेई गुरुवालोगन-
की बाणी उपदेश में परै हैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाइ है यही कहै हैं कि,
मैहीं ब्रह्म हौं औ सब ब्रह्मही है एकरूप दूसरो पदार्थ नहीं है । सो श्रीकबीरजी
कहै हैं साउज जो जीवहै ताकी तबकी गति गुरुवालोग कहै हैं तब तुम ब्रह्मही
रहेहो आपने अज्ञानते तुम जीवत्वको धारणकीन्हैहो अबहूं जो ज्ञानकरो तो
ब्रह्मही है जाहु या मानिके उपदेश जीव भोकै है कि हमहीं ब्रह्महैं अर्थात् जैसे वा
पण्डा भूतनहीं है जाइहै जीवहीरहै है ऐसे न ब्रह्म रहे हैं न ब्रह्म होइगो । भोकै-
पदके शक्तिते दूसरो दृष्टांत ध्वनित होइहै जैसे कृकुर कांचके मन्दिरमें आपनो
प्रतिबिम्ब देखि भूंकै है ऐसे अपने भ्रमते गुरुवनकी बाणीरूप ऐनामें आपनो
रूप ब्रह्महीदेखै हैं भूंकै हैं, यह नहींजानै हैं कि हम साहबके हैं या गुरुवालो-
गनकी बाणी में ब्रह्मदेखोपरै है सो हमारे मनहींको अनुभवहै ॥ ३९ ॥

गही टेक छोडै नहीं, चोंच जीभ जरिजाय ॥

मीठो काह अँगारहै, ताहि चकोर चवायः ॥ ४० ॥

ब्रह्मवादिन की टेक कैसी है जैसे चकोर को ओठ जीभ जै है परन्तु
अँगारै को चाबै है ॥ ४० ॥*

झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटी न काहु ॥

गोरख अँटके कालपुर, कौन कहावै साहु ॥ ४१ ॥

झिलमिल झगरा कहे दशमुद्रा करिकै बंकनालते खिरकीकेराह लेजाइकै
बहज्योति जो झिलमिलाइहै तामें आत्माको मिलाइ देइहै पुनि षट्चक्रते झिलिकै
गैवगुफा में जो ब्रह्मज्योतिहै तामें मिलिकै औ झगराकरिकै कहे कामक्रोधादि-
कनको दूरिकरिकै पुनि संसारमें झूलिपरै है अर्थात् जबसमाधि उतरि आई तब-
फेरि वही झगरामें झूलिपरे सो कर्मकीबाकी काहूकी नहीं छूटै है सब कर्म भोग-
करै है । जो गोरख कालपुरमें अँटके अर्थात् उनहींको जो काल खाइलियो तो
और दूसरो कौन शाहु कहावै है कौनकालते बच्यो है । जो बहुत जियो योगी

* और २ प्रतियों में ४१ वीं साखी यह है । चकोर भरोसे चन्दके, निगले तल
अँगार । कहै कबीर दाह नहीं; ऐसीवस्तु लगार ॥ ४१ ॥

तो कल्पान्तमें कोई नहीं रहिजाय है जो कोई रहिगयो जलबढ़यो तो जलमें मिलिकै रहिगये अग्नि बढ़ी अग्नि में मिलिकै रहिजाइ है तो महाप्रलय में नहीं रहि जाइ है ॥ ४१ ॥

गोरखरसिया योगके, मुये न जारी देह ॥

माँसगली माटी मिली, कोरो माँजी देह ॥ ४२ ॥

जो कहौ गोरख तो बने हैं तो प्रलयादिकनमें वोऊ न रहेंगे । योग के रसिया जे हैं गोरख ते ऐसो योग हजारन वर्ष कियो कि मरचोतौ देहको न जायचो माँसगलिकै माटीमें मिलिगयो तब कोरो कहे माँजी कहे शुद्धचर्म देह गोरखकी कढ़िआई आखिरपर वही प्रलयादिकनमें न रहेंगी । सो उनकीदेह मुयो कहैं ऐसो योग कियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसार छुटि गयो संसारते मरिगये कै उनकी सूक्ष्मादिक देहौ मरचो पर न जरी जब देह न जरी तब पुनि २ संसार में आवते भये कल्पांतरनमें सो कल्पान्तरमें गोरख आदिदिकै योगी सब आवैं हैं सो आगे कहै हैं ॥ ४२ ॥

बनते भगि बिहडे परा, करहा अपनी बानि ॥

वेदन करह क सों कहै, को करहाको जानि ॥ ४३ ॥

बन जो है संसार तौनेते भगिकै बिहड़ जो है अटपट गैले ब्रह्म तामें परचो-जाइ । सो यह जीवको सदा स्वभावई है कि, प्रलयादिकनमें ब्रह्ममें गयो औ पुनि करहा कहै करहि आयो संसार में जन्म लियो शरीर धारणकियो । सो यहजीव संसार योगादिक साधन कियो । सो यह वेदन कहे पीड़ा जीव कासों कहै औ शरीर काहेते करहि आयो यह को जानै जैसे आम्नादिक वृक्ष करहि आवैं हैं कहे फूलिआवैं हैं फेरि फरै हैं आपनी ऋतुपाइकै तैस जब महाप्रलयादिकभये तब लीन होइ गयो जब उत्पत्ति प्रकरणभयो तब फेरि करहिआये कहे शरीर धारणकिये पुनि नानाकर्म करिकै नाना फल पावन लगे ॥ ४३ ॥

बहुत दिवस सों हीठिया, शून्य समाधि लगाय ॥

करहा परिगा गाड़में, दूरि परे पछिताय ॥ ४४ ॥

जीव बहुत दिन समाधि लगाइके शून्यमें हीठिया कहे भ्रमत भये कि, हमारो जन्म मरण छूटे । सो हजारन कल्प समाधि लगाये रहे जब समाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसे हूँगये । अथवा हजारन वर्ष ब्रह्ममें लीनरहे जब सृष्टि भई तब पुनि संसाररूपी गाड़में परिकै पछितान लगे । पछिताइबो कहा है कि वही बासना लगीरही ताते पुनि नाना साधन करनलगे कि हमारो जन्म मरण छूटे ॥ ४४ ॥

कविराभर्भनभाजिया, बहुविधि धरियाभेरव ॥

साईके परिचयविना, अन्तररहिगोरेख ॥ ४५ ॥

कबीर जे हैं कायाके बीर यहजीव सो बहुत भांतिके वेष धरत भयो योगी हैंके योग करत भयो, ज्ञानी हैंके ज्ञान करत भयो, भक्त हैंके भक्ति करत भयो कर्मकाण्डी हैंके, कर्म करत भयो पै जिनको यहजीव अंश है ऐसे जे हैं साई परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके बिना जाने याको भ्रम न भाजत भयो । जो मुक्त हू है गयो आपने को ब्रह्महू मानतभयो तो मूलाज्ञानरेख याके रहीगई काहेते कि, यह जाको है ताको तो जान्यो नहीं योग कियो, ज्ञान कियो भक्ति कियो, औ नाना कर्म कियो, ताते पुनि संसारहीमें परयो, कौन रक्षा करै, रक्षकको तो बिसराइ दियो ॥ ४५ ॥

विनडांड़े जग डाँड़िया, सोरठ परिया डांड ॥

बांटन हारा लोभिया, गुरते मीठी खांड ॥ ४६ ॥

यह संसारमें जीव विना काहूके डांड़े डाँड़िया कहे सब डारि जाते भये । अर्थात् आपनेही कर्मते साहबको ज्ञान भूलिगये । औ सोरठ या देश बोली है । सोरठै फल देउ दशउ फल देउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारि वेद छःवेदांग छःशास्त्र, ई सोरठते ब्रह्मा साहब को उपदेश इनको कियो, पै ये सब अपने अपने कर्ममें लगिगये । उनको वा सोरठकहे सोरठै जौन ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उनको डांडपरयो । डांड वह कहावै है जौन बन कटिके मैदान हैजाय है सो उनको चारि वेद छःवेदांग छःशास्त्र ई जे सोरठ हैं ते डांडपरयो कहे वामें साहब को खोज न पायो । साहबको बिचार उनको दिखाइ न परयो । अनतही

अनतही लगावैहै वेद शास्त्रका अर्थ करि काहेते न पायो कि बांटनहारोजो ब्रह्मा हैं सो लोभी रह्यो है कहे रजो गुणीहै सो बहुत चोराइकै कह्यो परोक्ष कह्यो जाते कोई न पावै । औ जे जानतभये ब्रह्माको उपदेश ते गुरु जे ब्रह्माहैं तिनहूँते अधिकद्वैगये अर्थात् गुरुगुरुही रह्यो चेला खांड द्वैगयो अर्थात् गुरते मीठी खांड होइहै काहेते ब्रह्माते अधिक द्वैगये कि, ब्रह्मा गुणको धारण किये हैं औ वे सगुण निर्गुणके परेकी बात जानै हैं ॥ ४६ ॥

मलयागिरिके बासमें, वृक्ष रहा सब गोइ ॥

कहिबेको चंदन भया, मलयागिरि ना होइ ॥ ४७ ॥

मलयागिरि चन्दनके वृक्षके बासमें सब वृक्ष गोइरहे कहे मलयागिरिकै बास सबमें आँगई, कछू मलयागिरि नहीं द्वैगई । ऐसे तिनको साहबको ज्ञानभयो तिनमें साहबको गुण आइगये शुद्धहै गये कछू साहब न द्वैगयो । जो कहे ब्रह्मातो चारिवेद छःवेदांग छःशास्त्र जे सोरठहैं तिनते सबको उपदेश कियो ताको गुप्तार्थ और लेग काहे न समझ्यो एक साहबको जनैये काहेते जान्यो तोने को अर्थ दूसरी साखीमें दिखावै हैं ॥ ४७ ॥

मलया गिरिके बासमें, वेधा ढाक पलाश ॥

बेनाकबहूँन बेधिया, युगयुगरहियापास ॥ ४८ ॥

मलयागिरिके बासमें ढाक पलाश सब बेधि गये औ बेना जो है बांस सो युगयुग मलयागिरि के पासरहै है पै वामें बास न बेधत भई । अर्थात् और वृक्षन भीतर सार रह्यो तेहिते बास बेधिगई । औ बांसके भीतर सार न रह्यो ताते बास न बेधत भई । अर्थात् और जे अज्ञानिउ रहे तिनके अन्तःकरणमें शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेश कियो तो साँच मानिकै समुझि लिये औ जिनके भीतर वह शून्य ब्रह्मधोखा घुसो रह्यो ते और ऊपरते खण्डन कर-नलगे और और अर्थ वेदशास्त्र के बनाइ लियो ते न बासि गये कहे उनको साहबको रंग न लग्यो चारों युगमें वेदशास्त्र सब पढ़तई रहे ॥ ४८ ॥

चलते चलते पगुथका, नगर रहा नौ कोस ॥

बीचहिमें डेरा परचो, कहौ कौनको दोस ॥ ४९ ॥

चलत चलत थकि गयो वह नगर नव कोश रह्यो । सो नवकोशमें एको कोश न चलि सक्यो, तौ दशौ कोश जहां साहबको मुकाम है तहां कैसे जाय-सकै । दशौ कोश दशौ मुकाम रेखतामें लिखिआये हैं । सो बीचै में याको डेरा परचो बीचही में रहिगयो ताते जन्म मरण होन लग्यो, तो कौन को दोषहै । साहबके पास भर तो पहुँचिबोई न कियो । औ मुसल्माननके मतमें बहन्तर हजार परदाके ऊपर जब गयो तब नव परदा बाकी रहिजाय हैं तौनै कोश है दशयें में साहबहै ॥ ४९ ॥

झालि परे दिन आँथये, अन्तर परिगै साँझ ॥

बहुत रसिकके लागते, बेइया रहिगै बाँझ ॥ ५० ॥

यहि साखी में अर्थ कोऊ यह कहै हैं कि, प्रपंच करतेकरते औ बिषय रस लेते लेते बुढ़ाई आई । औ वेदशास्त्र पुराण नानाबाणी पढ़तेपढ़ते औ कर्म उपासना तपस्या योग बैराग्य करते करते थके । आखिर गुरुपद पारिखकी प्राप्ति नहीं भई यकदिन मौत आइ पहुँची तब आँखिन पर झालिपरी कहे अधियारीपरी । औ दिनकहिये ज्ञान सो गाफिली में डूबि गया । औ हमारो अर्थ यहहै ॥

झालि पर कहे जब दिन अथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे कहे तब बीमारहुये इन्द्रिय शिथिलभई तब अन्तःकरणमें अधियार द्वैगयो कहे कुछ न सूझि परन लग्यो तब जैसे बहुत रसिकके संग ते बेइया बाँझ रहि जाइ है तैसे गुरुवा लोगनकी नाना प्रकारकी बाणी को उपदेश सुनि सुनिकै शून्य द्वैगये । न ज्ञान भक्ति उत्पत्ति भई औ साहब न प्राप्त भये ॥ ५० ॥

मन तो कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जाउँ ॥

छा मासेके हीठते, आध कोश पर गाउँ ॥ ५१ ॥

मन संकल्प बिकल्प करिकै आत्मा को स्वरूप खोजै है कि आत्मा कैसो है ? औ चित्त स्मरण करै है कि आत्माको स्वरूप कैसो है ? सो छा मास जो हैं छयू शास्त्र तौनेमें हीठत कहे स्वरूपको खोजतई गये, पै वह गाउँ आत्माको स्वरूप मकार आध कोश में कहे अर्धनाम रकार ताके निकटही रह्यो पै खोजे न पायो ॥ ५१ ॥

गिरही तजिके भये उदासी, वन खँड तपको जाय ॥

चोली थाकी मारिया, बरइनि चुनि चुनि खाय ॥ ५२ ॥

घर छोड़िकै जगत्ते उदास भये, वन पहारमें बैठे जाय । साहब को तो न जान्यो । शरीर औटिकै तपस्या करन लगे । सो या मारते कहे कन्दर्प ते चोली थकिगई कहे वीर्यकी हानि द्वै गई जब बृद्ध द्वै गये तब जैसे चोली बरइनि की थकिगई तब बरइनि सरे सरे पान निकारिडारै है नये नये पान चुनिचुनिकै खायै । तैसे माया जो है बरइनि कहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरि करनवारी सो पुरान पुरान जे शरीर हैं तिनको निकारि डारचों नये नये सुन्दर दैकै स्वर्गादिकनको सुख दियो । राजाबनायो, धनवान् बनायो भोग कराइ कराइके उनको माया मृत्युरूप खाय लियो । ज्ञानी भक्तियोगी तपस्वी कोई नहीं बचै हैं जे साहब को जानै हैं ते बचै हैं ॥ ५२ ॥

राम नाम जिन चीन्हिया, झीने पिंजर तासु ॥

नयन न आवै नींदरी, अंग न जाँमै माँसु ॥ ५३ ॥

जिन रामनामको चीन्ह्यो है तिनके पिंजर झीने द्वैगये हैं । पांचो शरीर उनके छूटिगये । यह स्थूल शरीर कैसो बन्यो है जैसे सूमा जरिजाय ऐंठनि बनी रहै जब यहौ शरीर छूटिगो तब हंस शरीर में स्थित द्वैकै साहब के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिंजरा झीन द्वै गयो है औ नयनन में नींद नहीं आवै है कहे सोवायदेनवारी जो माया है सो उनको स्पर्श नहीं करै है औ अङ्गमें पुनि माँस नहीं जाँमै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करै हैं ॥ ५३ ॥

जे जन भीजे राम रस, विकसित कबहुं न रुख ॥

अनुभव भाव न दरशै, ते नर सुख न दुख ॥ ५४ ॥

जे जन श्रीरामचन्द्रके रसमें भीजे रहै हैं ते सदा विकसित रहै हैं. उनको हृदय कमल सदा प्रफुल्लित रहै है रुख कबहुं नहीं रहै है । औ रुख जो है अनुभव भाव वह धोखा ब्रह्म सो उनको कबहुं नहीं दर्शै है । औ ते नरनको न संसारको सुख होइहै न दुःखहोइहै वै रामरसही में मग रहैहैं ॥ ५४ ॥

सुखे मग्रा दैत्याश्चहारिणा हताः । तज्ज्योतिर्भेदनेसक्ता रसिका हरिवेदिनः ॥ औ
साहब के लोकमें जे हैं तिनकी सर्वत्र गति है तामें प्रमाण ॥ “समृत्युन्त
रतिससर्वेषु लोकेषुकामचारो भवति ॥” इति श्रुतेः ॥ ६० ॥

दोहरा तो नव तन भया, पदहि न चीन्है कोइ ॥

जिन यह शब्द विवेकिया, क्षत्र धनी है सोइ ॥ ६१ ॥

सेव्य सेवक भाव मान्यो साहबको जान्यो तब दोहरा नव तन भया कहे
हंस शरीर पायो, परा भक्ति पायो तौने पदकहे साहबके लोकमें प्रवेशकरै है
सो वो लोकको नहीं चीन्है । जो कहौ ब्रह्मरूप द्वैक कैसे सेव्य सेवक भाव
साहबते कियो तुम बनायकै कहौ हौ तौ श्रीकबीरजी कहे हैं जिन यहशब्द
विवेकिया कहे जिन साहब यह विवेककरि शब्द बतायो सोई क्षत्रधनी है
अर्थात् साहिवै मोको बतायो है मैं बनायकै नहीं कहौ हौ तामें प्रमाण ॥
श्रीकबीरजीको “ज्ञानी बेगि जाहु संसारा । अमी शब्द करि जीव
उबारा ॥ पुरुष हुक्म जब जब मैं पावा । तब तब जीवको आनिचेतावा” ॥
गीतामेंभी लिखाहै ॥ “ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समस्तसर्वेषु
भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्” ॥ ६१ ॥

कविरा जात पुकारिया, चढ़ि चन्दनकी डार ॥

बाट लगाये ना लगै, फिरि का लेत हमार ॥ ६२ ॥

श्री कबीरजी कहैहैं कि जब मैं चन्दनकी डारमें चढ़िकै कहे वह ब्रह्मके
परे द्वैक साहबके लोकको जान लग्यो तब मैं पुकार्यों औ अबहं पुकारौ हौ
सो पीछे लिखि आये हैं कि, बिरवा चन्दनते बासिजाइहै कछुचंदन नहीं द्वै
जाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञान किये जीव शुद्ध द्वै जाइहै कछु ब्रह्म न होइहै । सो ब्रह्म
जो है चन्दन तौनेकी डार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञान करिकै शुद्ध द्वैक वाको
जानिकै पुकार्यों हौ कि, साहबके होउ ब्रह्महीमें जनि अटकेरहौ । इतनाही
नहीं है साहब ब्रह्मके आगे है सो सबको मैं बाट लगावौ हौ कि, तुम साहब के
होउ तुम हमारे लगाये उस राहमें जो नहीं लगतेहो तो हमरो कहाजायहै ।

अथवा हम जौनचाल बतावैं हैं तौनै चाल नहींचलते हो औ हमारो नामलेतेहो कि, हम कबीरपंथी हैं । सो लम्बी टोपी दीन्हे औ बिना छिद्रको चंदन दिये औ बहुत साखी शब्द कण्ठ करलिये हमारे फिरका न पावोगे मतको न पावोगे यमके धक्काते न बचोगे । तामें प्रमाण॥ “हमारा गाया गावैगा । अजगैबी धक्कापावैगा ॥ मेराबूझायबूझैगा । सोतीनलोकमेंसूझैगा” ॥ १॥ कबीर की साखी शब्दी पढ़िकै और बितण्डावाद अनर्थ करनेलगे औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूठकरनलगे आपने जीवै को सत्य करनलगे ते यमको धक्का पावै चाहैं । औ जे कबीरकी साखी बुझिकै औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अंशहै जीव श्रीरामचन्द्र याके रक्षकहैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीनलोकमें सूझवई करैगे काहेते उनके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तो बनेई हैं सर्वत्र रक्षा करिलेइहैं ॥ ६२ ॥

सबते साँचा है भला, जो साँचा दिल होइ ॥

साँच बिना सुख नाहिं ना, कोटि करै जो कोइ ॥ ६३ ॥

जो अपना साँचादिलहोइ तो सबते साँचे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र औ उनहींको अंशजीवहै औ उन्हींको मैं साँचो दासहौं यह मत सबते साँचहै सोई भलाहै । सो यह साँच मत बिना सुख काहूको नहीं है कोटिन उपायकरै । औ श्रीरामचन्द्र सत्यहैं औ जीव सत्यहै औ जीवको औ श्रीरामचन्द्रको भेदसत्यहै तामें प्रणाम ॥ “सत्यंभिदः सत्यंभिदः” ॥ इत्यादि औ श्रीकबीरजीकी साखिहूको प्रमाण ॥ “सत्य सत्य समर्थ धनी सत्य करो परकाश । सत्यलोक पहुँचावहू, छूटै भवकी आश ॥ ६३ ॥

साँचा सौदा कीजिये, अपने मनमें जानि ॥

साँचे हीरा पाइये, झूठे मूरौ हानि ॥ ६४ ॥

आपने मनमें पारिखकै लीजिये तब साँचा सौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते साँचे हीरा पाइये वही में कच्चे हीरा निकसै हैं तिनको छाड़ि दीजिये । ऐसे वेदपुराण खानिहैं तिनमें साहबको मत निकासि लीजिये यह साँचो सौदा कीजिये और मतनको त्यागि दीजिये काहेते झूठे मत में लागे आपनो स्वरूप जो है साहब को अन्त मूर ताकी हानि है जायहै अर्थात् भलिजायहै ॥ ६४ ॥

सुकृत वचन मानै नहीं, आपु न करै विचार ॥

कहै कबीर पुकारिकै, सपन्यो गो संसार ? ॥ ६५ ॥

सुकृतसाहब अथवा सुकृतसन्त अथवा सुकृत वचन जो मैं कहौहैं कि साहबको भजनकरो सो नहीं मानै हैं जो मनमें आवै है सो विचारकरै हैं । सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं का उनको स्वप्न्यो में संसार गयो ? अर्थात् स्वप्नेहमें संसार नहीं गयो यह काकुहै ॥ ६५ ॥

लागी आगि समुद्रमें, धुआँ प्रकट नहिं होइ ॥

की जानै जो जरि मुवा, की ज्यहि लाई होइ ॥ ६६ ॥

समुद्रमें आगिबड़वाग्नि लगी है औ वाको धुआँ नहीं प्रकट होइहै सो वाको सो जानै है जो वामें जरिजाय कि जाकी वह बड़वाग्नि लाई कहे लगाई होय सो जानै अर्थात् संसारमें मायाब्रह्म की अग्नि लगिरही है ताको वही जानै जाकोज्ञान भयोहोय या समझै कि माया ब्रह्मकी अग्निमें हम जरेजाय हैं । अथवा सो जानै जाकी अग्नि बनाई है संसार रच्यो है ॥ ६६ ॥

लाई लावनहारकी, जाकी लाई पर जरै ॥

बलिहारी लावन हारकी, छप्पर वाचै घर जरै ॥ ६७ ॥

यहअग्नि किसकी लगाई है ताकेलायेते सगुणनिर्गुण जेदोनो परहैं ते जरै हैं औ बरजे हैं पांचों शरीरते जरिजाते हैं तामें प्रमाण ॥

श्रीकबीरजीको पद ।

“ अबतौ अनुभव अग्निहि लागी । घेरि घेरि तन जारन लागी ॥

यह अनुभव हम कासों कहिये बूझै कोउ बैरागी ॥

ज्येठरी लहुरी दोनों जरिया जरी कामकी बारी ।

अगम अगोचर समुझि परै नहिं भयो अचम्भौ भारी ॥

सम्पति जरी सम्पदा उबरी ब्रह्म अग्नि पसारी ।

कहै कबीर सुनो हो सन्तौ बड़ी सो कुशल परी ॥ ६७ ॥

बुन्द जो परा समुद्रमें, सो जानै सब कोइ ।

समुद्र समाना बुन्दमें, बूझै विरला लोइ ॥ ६८ ॥

यहब्रह्म ईश्वर माया आदिदैकै जो संसारसागरहै तामें बुन्द जो जीवहै सो परयो या सबै जानैहैं कि जीव संसारी द्वैगयो है वेदशास्त्रमें सर्वत्र लिखैहै अरु यह सिंगरो संसारसमुद्र बुन्दरूप जीवमें समायजाय है अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभव करे लियोहै सो जबजीव याभांतिते अनुभवत्यागै कि विषय इंद्रिमें इंद्रिमनमें मन चित्तमें चित्त प्राणमें प्राण जीवात्मामें लीनकै देद तब संसारसागर बुन्दरूप जीवमें समायजायहै अर्थात् संसार मिटिजायहै जीव साहबको जानि जाय है ॥ ६८ ॥

जहर जिमी दै रोपिया, अमि सींचै सौ वार ॥

कविरा खलकै ना तजै, जामें जौन विचार ॥ ६९ ॥

जिमीमें जहर को थलहादैकै जो बीज बौवे है सो वामें जो सैकड़ों बार अमृतौ सींचै तो वहि बीजा में जहरको असर आयबोई करैगो तैसे यह खलक कहे संसारमें मायाकी जिमी है विषय को थलहा है ताते केतिकौ कोई उपदेश करै परन्तु मायाको असर कविरा जे जीव हैं तिनके आयही जाय है नोई विचारआवै है सोई करै हैं सो संसार नहीं छोड़ैं ॥ ६९ ॥

दाँकी दाही लाकरी, वाभी करै पुकार ॥

अबजो जाउँ लोहार घर, दाहै दूजी बार ॥ ७० ॥

दावानलकी दाही कहे जरी जो लकरी है सोई लाई भई वहै पुकारिकै कहै है कि अब जो लोहारके घरजाउं तो दूजी बार लोहार मोको दाहै कहे जावै । सो दावाग्नि जोहै ब्रह्माग्नि तौनेते जो सम्पूर्ण कर्म जरिहुगे तौ कोयला रहिजायहै कहे वहै कैवल्य शरीर रहिजायहै । सो कहै हैं कि, जो अब लोहार जे सतगुरु हैं तिनके इहां जाउं तौ कैवल्यी शरीर छूटै मुक्त द्वै जाउँ अर्थात् जो साहब को न जान्यो औ कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात् सब संसारहीमें आवैहैं । जो कैवल्य शरीर छूटै तो हंस शरीर मुक्त द्वै जाय काहेते कर्मनके जरे कैवल्यशरीर नहींछूटैहै ॥ ७० ॥

विरहकि ओदी लाकरी, सपचै औ गुंगुआय ॥

दुखते तवही वाचिहौ, जब सगरो जरिजाय ॥ ७१ ॥

विरहकी जरी लांकारी है अर्थात् याको साहब को विरहभयो है सोवह विरहते ओदी है याहीते सपचै है औगुंगुआयहै नानादुःखपावैहै सो जब पांचौशरीर जरिजायहैं हंसशरीरपाय साहब के पासजायहै तब दुःखते बचैहै । जो कहौ इहांतो सगरेशरीर को जरिजायबो कह्यो हंस शरीरको जरिबो काहे न कह्यो तो हंसशरीर याको न होय वा साहबके दिये मिलै हैं त्यहिते याहीके पांचौ शरीर जबजरैहैं तब सतई जगह भूमिकाते नाविकै आठई भूमिकामें जायहै तब चितमात्र रहिजायहै तब साहब हंसशरीर देखैं तामें टिकिकै साहबके पासजायहै सो पाछे लिखि आये हैं ॥ ७१ ॥

विरह वाण ज्यहि लागिआ, औषध लगत न ताहि ॥

सुसुकि सुसुकि मरि मरि जियैं, उठै कराहि कराहि ॥ ७२ ॥

साहबको विरहरूपीबाण जाकेलग्यो अर्थात् जिनको यहजानिपरचो कि हमते साहबते बिछोहुहै गयोहै ते विरहवारनको ज्ञान योगादिक औषध नहींलगे है विरहबाणाग्निते तप्त जरै है मरिमरि जियैहै । याजो कह्यो सो विरहाग्निते जरै है स्थूलशरीरको जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीरमें जियो, जबसूक्ष्म शरीर छूट्यो तब कारण शरीरमें जियो, जब कारणशरीरछूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियो, जब महाकारण शरीर छूट्यो तब कैवल्यशरीरमें जियो, यही मरिमरिजीबोहै । औ तहाँ कराहि कराहि उठैहै कहे एकौ शरीर नहीं आछै लगै हैं ॥ ७२ ॥

साँचा शब्द कबीरका, हृदया देखु बिचार ॥

चितदै समझै मोहिं नहिं, कहत भयल युगचार ॥ ७३ ॥

साहब कहै हैं कि साँचाशब्द जो कबीरका राम नाम ताको हृदयमें बिचारिकै देखु तो तैं चित्तदैकै नहीं समझै है । मोको चारोंयुग वेद शास्त्रमें कहतभयो । औ कबीरजे हैं तेऊ चारोंयुगमें कहतआये हैं । सतयुगमें सत्यसुकृत नामते त्रेतामें मुनीन्द्रनामते । द्वापर में करुणामय ना-

मते । औ कलियुगमें कबीर नामते एक रामनामै को उपदेशकियो सो जो तैं वह रामनामको जानते तो तेरे समीप मोको आवननपरतो हंसशरीरदै अपनेपास लैआवतो ॥ ७३ ॥

जो तू साँचा बानियाँ, साँची हाट लगाउ ॥

अंदर झारू दैकै, कूरा दूरि बहाउ ॥ ७४ ॥

हेजीव! जो तैं अपने स्वरूपको चीन्है तो तैंसाँचा बानियाँ है सो साँची हाट-लगाउ कहे साँचे जे साहब तिनकोजानु औ उनके नामरूप लीलाधाम सब साँचेहैं तिनकीहाट लगाउ कहे स्मरणकरु । औ अन्दरमें झारूदैकै विषय बासना औ नाना मत जे कूरा हैं तिनको दूरि बहायदे तू साँचा है साहबको है असाँचिन मान लागु ॥ ७४ ॥

कोठी तौ है काठकी, ढिग ढिग दीन्ही आगि ॥

पण्डित तो झोलाभये, साकठ उबरे भागि ॥ ७५ ॥

कोठीजे हैं चारौ शरीर ते तो काठकी हैं जरन वारी हैं ज्ञानाग्नि ढिग ढिग उनके लगी है । वेदशास्त्र पुराण साहबको बतावै हैं सो जे पण्डितरहे तें सारासारको विचारकर साहब जे सार तिनको जान्यो ते उसअग्निमें परिकै झोलाद्वैगये । ये कहे उनके सबशरीरजरिगये । अर्थात् संसारते मुक्तद्वैगये । औ साकठ जे हैं शाक्तते भागिकै उबरेकहे जो वेदशास्त्र साहबको प्रतिपादनकरै है ताके डांडे नहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसारमें परे मायामें लपेटे हैं भायैको स्मरण करनलगे ॥ ७५ ॥

सावन केरा मेहरा, बुंद परा असमान ॥

सब दुनियाँ वैष्णव भई, गुरू न लाग्यो कान ॥ ७६ ॥

जैसे श्रावणके मेहको असमान बुन्द परै है तैसे सब दुनिया वैष्णवहोत भई । सब बीज मन्त्र लेत भये जैसे लोक में को गुरु हजारनचेला एकैबार बैठा-यकै मन्त्र गोहरायदेय हैं याही भाँति श्रावण कैसोमेह सबको मन्त्रदेइ हैं चेला-मन्त्रलेइहैं । याही रीति गुरुवालोग उपदेश करतभये कोटिन वैष्णवहोत भये

गुरु कबै कानलग्यो? अर्थात् नहीं लग्यो । अरु गुरुतो वाको कहै हैं जो अज्ञानको नाशकरै सो जो चेलाको अज्ञान न नाशभयो तौ गुरुचेला दोऊ नरकको जायहैं तामेंप्रमाण ॥ “हरैं शिष्य धन शोक न हरहीं । ते गुरु घोर नरकमें पर-हीं ॥ ” सो जो वो चेलाको अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु है औ जौन गुरुते ज्ञानलै अज्ञान न नाशकियो तो वह कौन चेला है अर्थात् वह गुरुनहीं है कायरकूर है और वह चेलानहीं है टूट मसखराहै और जो आज्ञानको नाशै सोई गुरुहै तामेंप्रमाण ॥ “ अज्ञानतिगिरान्धस्यज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मी-लितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ” औ जो संसार दूरि नहीं करै है सो गुरुनहीं है तामेंप्रमाण ॥ “ गुरुर्न स स्यात् स्वजनोन स स्यात् पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ॥ दैवन्न तत्स्यान्नृपतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम् ॥ ” श्रीकबीरजीकी गुरुपारख अंग की साखी ॥ “ गुरु सीख देवे नहीं, चेला गहै न खूट । लोक वेद भांवे नहीं, गुरु शिष्य कायर टूट ” ॥ ७६ ॥

ढिग बूड़ा उसला नहीं, यहै अँदेशा मोहिं ॥

सलिल मोहकी धारमें, क्या निंद आई तोहिं ॥ ७७ ॥

साहब कहै हैं कि हे जीवो! तुम सब संसार सागर के तीरही में बूड़िगये एकद्वार न उसले, यहै मोको अँदेशाहै या संसारसागरके मोहरूपी सलिल धार-में क्या तोको नींद आई है भला एक बारतो मूड़निकासि उसलि मोको पुकार-तो तौ मैं तोको पारही लगावतो सर्वत्र पूर्णमें बनोहौं तैं मेरे ढिगही बूड़ों जातोहै अबहूँ जो जानतो मैं पारही लगाय देहुं ॥ ७७ ॥

साखी कहैं गहैं नहीं, चाल चली नहिं जाय ॥

सलिल मोह नदिया वहै, पायँ नहीं ठहराय ॥ ७८ ॥

कबीरजी कहै हैं कि साखीतो कहै हैं औ जो मैं साखी कहो है ताको गहैं नहीं हैं वाको विचारै नहीं हैं । औ जो मैं चाललिख्यो है सोऊ नहीं चली-जाय संसाररूपी नदियामें मोहरूपी सलिलबैह है तामें पाँवे नहीं टहराय जीव विचारा क्याकरै या साहब सों अर्जकै जीवको क्षमापन करावै है ॥ ७८ ॥

कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ ।

सो कहता वहि जानदे, जो नहिं गहता होइ ॥ ७९ ॥

साहब कहे हैं याही भांति कहता तो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलैहै
सो जो कोई गहता न होय ताको तैं बहिजानदे तोको कहापरी है ॥ ७९ ॥

एक एक निर्वारिया, जो निरवारी जाय ॥

दुइ दुइ मुखको बोलना, घने तमाचा खाय ॥ ८० ॥

तामें पुनि कबीरजी कहै हैं कि हेसाहब! याको जीवको दोष नहीं है एक २
जो निरवारतो तौ वेद शास्त्र ते याको निरवार द्वैजातो अर्थात् जो एकमालिक
आपही ठहराय देतो तौ जीव गहिलेतो । दुइदुइ मुखको बोलना वेद शास्त्रको
अर्थात् कहीं ब्रह्मको, कहीं ईश्वरको, कहीं जीवको, कहीं कालको, कहीं कर्मको
मालिक बतायो सो या दुइमुख के बोलेते जीवघने तमाचा खायहै तुम को
नहीं जानिसकै ॥ ८० ॥

जिह्वाको दै बंधनै, बहु बोलना निवारि ॥

सो परखी सों संग करु, गुरु मुख शब्द विचारि ॥ ८१ ॥

सोकबीरजी कहै हैं कि हेजीव! मैं साहबसों बिनती करिलियो है सो तुम
यहिग्राह चलो तुम्हारो उबार साहब करिलेइगो आपनी जिह्वाबंधनकरो असत्
वाक्य न बोलनेपावे एकरामनामहीं कहो औनाना मत जोकहौ हौ सो कहिबो
निवारि देउ । औ जौन सबमतनते पारिखकारिकै साहबको ठहरायो होय ऐसे
पारखीको संगकरु औगुरुमुख जोशब्दहै ताको तू बिचारकरु काहेते साहब या
कह्यो है ॥ “अबहूँ लेहुँ छुड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारै ” ॥ सो तैं
सुरतिसँभारि साहबमें लगायदे अनत न जानदे साहब तोको संसार सागरते
उबारिही लेइगे ॥ ८१ ॥

जाकी जिह्वा बंद नहिं, हृदया नहिं सांच ॥

ताके संग न लागिये, घालै बटिया कांच ॥ ८२ ॥

जाकी जिह्वा बंद नहीं है जौने मतको चाहै तौनेन मतको प्रतिपादन करै है
औजिनके हृदयमें साहबके नामरूपादिक नहीं हैं तिनके संग कबहुं न लागिये
वे कच्चे हैं उनके संग लागेते संसारमें परौगे ॥ ८२ ॥

पानी तो जिह्वे ढिगै, क्षण क्षण बोल कुबोल ॥

मन घाले भरमत फिरैं, काल देत हींडोल ॥ ८३ ॥

पानीरूप जो बानी है सो याके जीभके ढिगै है छिन छिनमें कुबोलई
बोलबोलै है असतबाणी बोलि २ बानीरूप पांनीमें भूड़िगयो अथवा ब्रह्ममायाकी
आगी बुझावनवारो पानी याके जीभहीके ढिगैहै सो नहीं कहै है छिन छिन
कुबोलही बोलै है सो मनके घालेकहे फेरि संसारमें भरमत फिरै है काल जो
है सो याको हिंडोल रूप शरीर दियाहै सो झूलत फिरै है कबहुं मानुष होय है
कबहुं पशु पक्षी इत्यादिक शरीर धारण करै है ॥ ८३ ॥

हिलगैं भाल शरीरमें, तीर रहीहै टूटि ॥

चुम्बक विन निकसैं नहीं, कोटि पहन गये फूटि ॥ ८४ ॥

जिन मतनमें श्रीरघुनाथजी नहीं मिलै हैं तेई मतनके बाण याके लगै हैं
नाना कुमतिरूपी गौंसी याके अटकी हैं सो रामनाम चुम्बक बिना वे नहीं
निकसै हैं ॥ ८४ ॥

आगे सीढ़ी साँकरी, पाछे चकना चूर ॥

परदा तरकी सुन्दरी, रही धका दै दूर ॥ ८५ ॥

साहबके यहां की गैल बहुते साँकरी है कोई कोई पावै है औ पाछे संसार-
में गिरै तौ चकनाचूर होजाय परदातरकी सुन्दरी जो माया सो जो को
साहबसों लगनलगावन लागैहै ताको धका देइहै औ जो कोई साहबके सम्मुख-
भयो वही राह चढ़यो तेहिते दूरिरहै है धुनि या है। कि, जो वाके जायगी तौ
गैलसाँकरी है दूसरे की समाई नहीं है पीसिजायगी यहडैरहै ॥ ८५ ॥

संसारी समय विचारिया, क्या गिरही क्या योग ॥

अवसर मारो जात है, चेतु बिराने लोग ॥ ८६ ॥

क्या गिरही कहे गृहस्थ औ क्या योमवारे कहे योगी ज्ञानी ते श्रीरामचन्द्र को छोड़ि छोड़ि और औरसाहब बिचारै हैं ते सब संसारीसमय बिचारते हैं परमा-
रथ कोई नहीं बिचारै हैं अर्थात् संसारहीमेंरहै हैं अर्थात् आपने इष्ट देवतन के
लोकगये अथवा ब्रह्म में लीन भये ज्योतिमें लीनभये पुनि संसार में आयगये
सो हे जीव ! तैं बिरानाहै साहबको है और काहूको नहीं है और मतनमें लागे
तैं न छूटैगो । जौनजाको होयहै तौन ताहीके छुड़ाये छूटे है सोया मानुष शरीर
पायकै अवसर मारो जायहै चेतुतौ तैं परमपुरुषश्री रामचन्द्रकोहै तिनहीकेछुड़ाये
संसारते छूटैगो । औ संसारी देवतनको कहा परी है जो आपनेते छुड़ायेकै
संसारते छुड़ावैंगे वे तौ और संसारही में डारैंगे ॥ ८६ ॥

संशय सब जग खंधिया, संशय खँधै न कोय ॥

संशय खँधै सो जना, जो शब्द विवेकी होय ॥ ८७ ॥

संशय जो है मनको सङ्कल्प विकल्प सो सब जगको खँधाइ लियोहै
कहे फँदाय लियो है औ संशय जो है मनको सङ्कल्प विकल्प ताको कोई नहीं
खँधि सकैहै अर्थात् मनको सङ्कल्पविकल्प काहूको नहीं छूटे है जो साहबके
शब्द रामनामको अर्थ बिचारत रहै हैं सोई संशयको खँधिसकैहै अर्थात् ताहीके
मनको सङ्कल्पविकल्प छूटे है, संशय छूटिबे को उपाय याहीमें है ॥ ८७ ॥

बोलनाहै बहु भाँतिके, नयन कछू नहिं झूझ ॥

कहै कवीर बिचारिकै, घट २ बाणी बूझ ॥ ८८ ॥

सो बोलना तो बहुत प्रकारके हैं कहे बहुत प्रकारके शब्दहैं बहुत प्रका-
रके मतहैं तिन मतनमें ज्ञान नयनते सार पदार्थ जो जनन मरण छुड़ावे सो
कछू न सूझतभयो । सो श्रीकवीरजी कहै हैं कि तैं बिचारिकै तौ देखु येजे
बाणी ते नानामत घटघटते निकसै हैं ते मनैके सङ्कल्प विकल्पते हैं, सो तौनेते
संकल्प विकल्प मनको कैसे छूटैगो येतो मनबचनमें है । वह घटघटकी बाणी
तो झूठकी कहातिं निकसीहै वह बाणीको मूल औ मनबचनके परे ऐसो जो
रामनाम ताको बिचारकरि जानैगो तबहीं छूटैगो । यह सब बाणीको मूल रेफ
है सो नाभि स्थानमें है तहाँते बाणी उठै है सो जो मूल है सो तो साहबके

बतावै है रामनामही प्रथम प्रकटकरै है । औमूलाधार चक्रमें मूलजो रामनाम है मनबचनकेपरे त्यहिते जो अनुसार भयो बाणीको ताहीको आभास परा बाणी प्रकट भईरेफ, ताहीते अकार जब जारचो तब रकार रूप हृदयमें पड़यन्ती प्रकट होइ है । औ फेरि जब एक अकार और आयो तब कण्ठ में मध्यमा प्रकट होइ है । औ पुनि जब बैखरीमें एक अकार और प्रकट भयो जब ओठलग्यो तब व्यंजन मकार भई तब वहै मन बचन के परे राम नाम सो आपने रूप को आभास बैखरी में प्रकटकरै है सोई प्रथमभी कबीरजी लिख्यो कि ॥ “ रामनाम लै उचरीबाणी ” ॥ सो प्रथम याको प्रतिलोम क्रमते जप करत चारिउ बाणी को स्वरूप जानै औ फेरि अनुलोम क्रमते रामनाम को उच्चारकरै घण्टा नाद बत या भांतिते जो जपकरै तौ जानै कि, मन बचनके परे जो रामनाम ताको आभास जो रामनाम है सो प्रथम याहीको लै कै बाणी उचरी है । फेरि प्रणवादिक मन्त्र भये हैं यही घटघट बाणी को मूल तैं बूझ औ मन बचनते परे जे साहब हैं तिनको पायजाय सो या भांतिते बाणीको मूल जो तैं घटघटमें बिचारै तो ये सब बाणी ऊपरते नानामत नाना सिद्धांत कहै हैं याको मूल सिद्धांत तौ साहिबै को बतावै है त्यहिते चारोवेद छःशास्त्र तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को बतावै हैं सो मेरे सर्व सिद्धांत ग्रन्थमें प्रसिद्ध है ॥ ८८ ॥

मूल गहेते काम है, तू मति भर्म भुलाय ॥

मनसा पर मन लहरि है, वहि कतहूं मति जाय ॥ ८९ ॥

मन जो है सोई समुद्रहै मनसा कहें मनोरथ ताकी लहरि में बहिकै तैं मतिजा अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छोड़ि दे । नाना बाणी नानामत में तैं न भूलिजाय, मूल जो रामनाम ताही को ग्रहणकरु, याही के गहेते तेरो उबार होइगो संसार छूटैगो ॥ ८९ ॥

भँवर बिलम्बै वागमें, बहु फूलवनकी आश ॥

जीव बिलम्बै विषयमें, अन्तहु चलै निराश ॥ ९० ॥

जैसे भँवर बागमें बहुत फूलनकी आश करिकै बिलंबै है तैसे जीव संसारमें बहुत विषयकी आशके परचो । सो ऐसो फूल भ्रमर न पायो कि एकैफूल

सूँघते संतोषद्वैजाय । औ न ऐसे विषय जीवही पायों कि जामें संतुष्ट द्वैजाय ।
अर्थात् विषयसुख जीव कियो परन्तु अन्तमें निराशही द्वैजाय है सो प्रकटही है
वह सुख नहीं रहिजायहै परन्तु मूढ़जीव नहीं छोड़ै है ॥ ९० ॥

भंवर जाल बगु जाल है, बूड़े जीव अनेक ॥

कह कबीर ते वाचिहैं, जिनके हृदय विवेक ॥ ९१ ॥

भ्रमर जाल जो हैं संसारसागरके विषयको अनेक फेरो सो कैसे हैं कि
बकुलाजे जीव हैं तिनके बोरिबको जालहैं, तामें बहुतजीव बूड़िगये । सो कबी-
रजी कहै हैं कि, जिनके हृदयमें विवेकहै असार बाणीको छोड़िकै सारजो
रामनामरूपी जहाज ताको विवेक करि गहि लियो है तेई संसारसागर के
पारजाइहैं ॥ ९१ ॥

तीनि लोक टीडी भई, उड़िया मनके साथ ॥

हरि जन हरि जाने विना, परे कालके हाथ ॥ ९२ ॥

टींङ्गिके जब पखना जामा तब जहैं जाइहै तहैं मरिही जायहै सो तीनिलोकके
जीवनके मनरूपी पखनाजामे सो जहां जाय हैं तहां मरिही जायहैं सो हैं तो ये
हरिकेजन हरिके अंश पै अपनो स्वामी औरक्षक हरिजे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र
सबके क्लेश हरनेवाले तिनके बिना जाने कालके हाथमें परे औ मनके साथ
उड़ैहैं सो मरतमें जहैं मनजायहै तौनैरूप द्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ “अंते या मतिः
सा गतिः” ॥ औ कबीरजी हूको प्रमाण ॥ “जाकी सुरति लागिहै जहँवां। कहैकबीर
सो पहुँचै तहँवां” ॥ ९२ ॥

नाना रंग तरंग हैं, मन मकरन्द असूझ ॥

कहै कबीर पुकारिकै अकिल कला लै बूझ ॥ ९३ ॥

सङ्कल्प विकल्परूप नानारङ्गकी हैं तरंगे जामें ऐसो जो मन तामें काहेते
तरंग उठै है कि, मकरन्द जो विषयरस ताको पान करिकै मतवालो द्वै गयो
है सो जो मतवालो होय है सो औरको और करै चाहै । श्रीकबीरजी पुकारिकै
कहै हैं कि, अकिल जो बुद्धि तामें निश्चय करिकै कला जो है रेफ अर्ध-
मात्रा ताको लैके बूझ अर्थात् वही अर्ध मात्रामें स्थितिकी विधि पाछे लिखि

आये हैं अथवा नानारंगकी जामें तरङ्ग उठतीं हैं ऐसा जो मकरन्द पुष्परस कहावै है सो महुवाके फूलका रस मदिआ समुद्र मनसो अमूझकहें अपारहै वारपार नहीं सूझिपै है सो कहा ते मनरूपी मद भरचो है सो आपनी अकिलते कहें बुद्धिते वह कलाल कहे कलार को तो वूझ ॥ ९३ ॥

बाजीगरका बंदरा, ऐसा जिउ मन साथ ॥

नाना नाच नचायकै, राखै अपने हाथ ॥ ९४ ॥

ये मन चंचल चोर ई, ई मन शुद्ध ठहार ॥

मनकरि सुर मुनि जहाड़िया, मनके लक्ष दुवार ॥ ९५ ॥

ये दूनों साखिनको अर्थ स्पष्टई है ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

विरह भुवंगम तन डसा, मन्त्र न मानै कोइ ॥

राम वियोगी ना जियै जियै सो बाउर होइ ॥ ९६ ॥

विरह भुवङ्गम कहे जिनको साहबकी अप्राप्तिहै तिन जीवनको अज्ञान भुवङ्गम डस्यो है ताते ज्ञान भक्ति वैराग्य योग ये मन्त्र नहीं मानै हैं काहेते कि जिनमें साहबको ज्ञान नहीं है तैं भक्ति वैराग्य ते विमुखहै । सो कबीरजी कहै हैं कि रामके वियोगी जे जीवहैं ते जियै नहीं हैं बिषयमें लागेहैं काल उनको खायलेइहै । औ जे योग करिकै बैराग्य करिकै भक्तिकरिकै जियेहैं बिषय छाड़िके संसारको छोड़ै हैं ते बाउर द्वैजायहैं । कहे बहुत दिन जीवो-किये ब्रह्महूमें लीन भये तौ पुनि संसारमें तो आवही करैंगे । काहेते कि, अपने स्वामीको तो चान्हबही न किये अर्थात् बैकल द्वैगये हैं जो बैकलाय है सो औरको और करैहै यथार्थ बात नहीं करै है ॥ ९६ ॥

राम वियोगी बिकल तन, जनि दुखबो इन कोइ ॥

छूवतही मरि जायँगे, ताला बेली होइ ॥ ९७ ॥

श्रीकबीरजी गुरुवालोगनते कहै हैं जे साहबके वियोगीजीव द्वैरहेहैं तिनको तुम काहे दुखावतेहो अर्थात् नाना मतनमें नाना उपासनामें काहे भटकावतेहो जैरमें लेंन मीजतेहो इनके भीतर आपहीते तालाबेली परिरही है नाना मत

खोजैहैं ये छुवतही मारि जायेंगे । अर्थात् धोखा ब्रह्म उपदेशदेतै में गहि लेइंगे सो अबै तौ भला बद्धे भरिहैं नित्यबद्ध नहीं हैं जो कहूं साधुते भेंट द्वैजाय तो उबारहू द्वैजाय जब धोखा ब्रह्म में लगैगो तब वाको न छाड़ैगो साहब को मत खण्डन करैगो सो तुम ऐसे मरेनको काहे मारौहौ ॥ ९७ ॥

बिरह भुवंगम पैठिकै, कीन करेजे घाव ॥

साधुन अंग न मोरिहै, जब भावै तब खाव ॥ ९८ ॥

बिरहरूपी भुवङ्गम कहे साहबको अप्राप्त्यरूपी जो भुवङ्गम है सो पैठिकै करैजेमें घाव करतभयो अर्थात् उत्पत्ति प्रकरणमें साहबकी अप्राप्ति जीवनको होत भई जेहि ते साहबते विमुख संसारी द्वै गये । अथवा गुरुवालोग कानमें लगिकै नाना मत नाना उपासना बताय करेजेमें घाव करिदियेहैं । अर्थात् औरैईमें लगाइके साहबके मिलबेके द्वारको निरोध करिके साहबकी अप्राप्तिको उपाय अच्छी प्रकार करते भये अर्थात् साहब ते विमुख करिदिये । सो जेत असाधुरहे साहबकी भक्तिको कौने जन्मको संस्कार उनको न रह्यो तेतो मरेपरे औ जे कौनेहू जन्ममें साहबको पुकार्योहै उपासना कियो है धोखेहु कबइ एकबार सत्यप्रेम के साथ साहब को स्मरण कियोहै सो वाकी वासना बढत बढत बढ जायगी आखिर साहबको जानिकै साहबको प्राप्त होय जायेंगे । गुरुवा लोग जब चाहें तब उनको खातरहें, धोखामें लगावतरहें धोखामें कबहूं न लगैंगे । ऐसो जो साधु सो साधु कबहूं न अङ्गमोरैगो काल उनको जब चाहै तब खाव, वे जब जन्मधरैंगे तब साहबै की उपासना करैंगे उपासना भये सिद्ध करि साहबके पास पहुंचैंगे । तामें प्रमाण “अनेक जन्म संसिद्धिस्ततो याति परां गतिम्” ॥ जे धोखेहू साहबको जान्यो है ते शरीर धारुन करिके चौरासीमें नहीं जाइ हैं और जो साहबको नहीं जानै हैं साहब को स्मरण नहीं कियोहै जे संसार मेंही लगेरैहैं ते चौरासीमें बारम्बार पडैंगे । साहबको भजन करनवारो चौरासी नहीं जाइहै तामें प्रमाण । चौरासी अंगकी साखीको ॥ “ भक्त बीज पलटै नहीं, जो युग जाहि अनंत ॥ नीच ऊंच घर अवतरै, होय संतको संत ” । अथवा साहबकी अप्राप्तिते जीव सब संसारी भये । ते जीवनमें जे साधु भये साहब

कों जान्यों उनके शरीरको जब चाहे तब काल खाये उनको पीड़ा नहीं होय है उनको साहेबै सर्वत्र देखि परै है साहबकी प्राप्तिही बनी रहै है ॥ ९८ ॥

करक करेजे गड़ि रही, वचन वृक्षकी फाँस ॥

निकसाये निकसै नहीं, रही सो काहू गाँस ॥ ९९ ॥

विरह रूप कहे, सब जीवको साहब की अप्राप्ति रूप जो भुवंगम है करककहे पीड़ा गड़िरही है कहे गुरुवनके बैन वृक्षकी फाँसको लगोद छोलिकै काठ के बाण बनावै है ताकी फाँस अथवा वृक्षते शरइव आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरही है सो निकसेते नहीं निकसै है अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखाब्रह्ममें लगायदिये हैं ते पलटाये नहीं पलटै हैं वाहीकों गहै हैं । काहूके तो बाण सहित गाँसी के अटकिरहै हैं ते वही ब्रह्मको प्रतिपादन करै हैं सत् मतको खंडन करै हैं औ वे जे ऊपरते बेष बनाये हैं भीतर धोखाब्रह्मही घुसो है तिनके भीतर करेजे में गाँसिही भर अटकी है तामें प्रमाण ॥ अन्तश्शक्ता ब-
हिदशैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः । नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले ।' अथवा गुरुवालोग जो और और देवतन को मत सुनायो है सोई उनके अंतःकरणमें जाइके अज्ञानरूपी वृक्ष जाम्यो है तौनेकी कुमतिरूपी फाँस याके करेजे में गड़िरही है सो वह करक कहे जनन मरणरोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उपदेश कोई करै सो कबीरजी कहै हैं कि काहू गुरुवनकी यहजीव के कहा गाँस कहै बैररह्यो है जो ऐसी फाँस मारचो जो अबलौ निकासी नहीं निकसै ॥ ९९ ॥

काला सर्प शरीरमें, सव जग खाइसि झारि ॥

बिरलै जन वचिहैं जोई, रामहिं भजै विचारि ॥ १०० ॥

कालरूप जो सर्प सो सबजीवन के शरीरमें बसे है शरीरके साथै उत्पन्न भयो है जेती अवस्थाजायहै तेतीकाल खातोजाय है जब आयुर्दाय पूरिगई तब सबकाल खायलियो याहीभाँति बस जगत्को कालझारादै खाये लेइहै जे सबमतको छोड़ि परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको विचारिकै भजै हैं तेई बिरलैजाचै हैं तामें प्रमाण

कबीर जीको पद ॥

सन्तौ रामनाम जो पावैं । तौ बों बहुरि न भवजल आवैं ॥
 जंगमतो सिद्धिहिको धावैं । निशिबासर शिव ध्यानलगावैं ॥
 शिवशिवकरतगयेशिवद्वारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 पण्डित चारिउ वेदबखानैं । पढ़ैं गुनैं कछु भेदनआनैं ॥
 संध्या तर्पण नेम अचारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 सिद्धएकजो दूधअधारा । कामक्रोधनहिंतजैं बिकारा ॥
 खोजतफिरैराजको द्वारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 बैरागी बहुवेष बनावैं । करमधरमकी युगुतिलगावैं ॥
 धण्टबजाय करै झनकारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 जंगमजीवकबौनहिंमारैं । पढ़ैंगुनैं नहिं नामउचारैं ॥
 कायहिको थापै करतारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 योगी एकयोग चितधरहीं । उलटे पवन साधना करहीं ॥
 योगयुगुतिलै मनमें धारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 तपसी एकजो तनकोदहई । बस्तीत्यागिजंगलमें रहई ॥
 कन्दमूलफलकरआहारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 मौनी एकजों मौनरहावैं । और गाउँमें धुनीलगावैं ॥
 दूध पूत दैचले लवारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 यती एक बहुयुगुतिबनावैं । पेटकारणे जटाबढ़ावैं ॥
 निशिबासर जो करहङ्कारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 फुकरा लैजिय जबे कराहीं । मुखते सबतर खुदाकहांहीं ॥
 लैकुतकाकहैं द्रम्ममदारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥
 कहैकबीरसुनोटकसारा । सारशब्द हम प्रकटपुकारा ॥
 जोनहिं मानहिं कहाहभारा । रामरहे उनहूँते न्यारा ॥ १०० ॥

काल खड़ा शिर ऊपरे, जाग विराने मीत ॥

जाको घर है गैलमें, क्या सोवै निश्चीत ॥ १०१ ॥

मानुष हैकै ना मुवा, मुवा सो डाँगर ढोर ॥

एकौ जीव ठौर नहिं लाग्यो, भया सो हाथी घोर १०८॥

जो कोई साहबके पास पहुँचै सोई मानुषहै अर्थात् साहब दिभुजहैं यहौ दिभुज हैकै साहबके पास जाइहै औ कबहूँ मरै नहीं है सो साहबके जाननवारे नहीं मरै या पीछे लिखि आयेहैं औ जे साहबको नहीं जानै हैं तेई मरै हैं ते वे डाँगरढोरहैं ते मानुष नहीं हैं अर्थात् पशुहैं एकौ ठौर में नहीं लागैहैं कहे साहबके पास नहीं पहुँचै हैं हाथी घोर इत्यादिक नाना योनिमें भटकै हैं ॥ १०८ ॥

मानुष तैं वड़ पापिया, अक्षर गुरुहि न मानि ॥

बार बार बन कूकुही, गर्भ धरे चौखानि ॥ १०९ ॥

हेमानुष ! तैंतो श्रीरामचन्द्रको अंशहै तेरो स्वरूप मानुष को है सो तैं बड़ो पापी हैगयो काहे ते किं साहब तोको बारबार गोहरायोःकि तैं मेरो है मेरे पास आउ सो उनके कहे अक्षर न मान्यो आज्ञा भंगकियो तौने पापते बारबार जो बनकी कुकुही कहे मुर्गी तिनके कैसोगर्भ चारिउ खानिके जीवनमें परिवारके पालन पोषणमें लागिकै पुनि पुनि जन्मधरत भयो नानादुःख सहत भयो इहाँ मुर्गी याते कह्योहैं कि बच्चा बहुतहोयहैं ॥ १०९ ॥

मनुष बिचारा क्या करै, कहे न खुले कपाट ॥

इवान चौक बैठायकै, पुनि पुनि ऐपन चाट ॥ ११० ॥

वेद शास्त्र पुराण इनकेकहे जो कपाटनहीं खुलै हैं अर्थात् ज्ञाननहीं होयहै तौ मानुष बिचारा क्याकरै प्रथम साहबको कह्यो नहीं मान्यो याते मानुष पशुवत् हैगयो अज्ञान घेरे है सो जो कूकुर कुकुरिया को बिवाहकरै चौकमें बैठाइये तौ वे पुनि पुनि ऐपन चाटै हैं तैसे जीवनको पशुवत् ज्ञान हैगयो है फेरि फेरि वही बिषयमें लागै हैं साहबकी ओर नहीं लागै हैं ॥ ११० ॥

मनुष बिचारा क्याकरै, जाके शून्य शरीर ॥

जो जिउ झाँकि न ऊपजै, काहि पुकार कबीर ॥ १११ ॥

या मानुष बिचारा क्याकरै जाके शरीरमें शून्य जो धोखाब्रह्म सो समाय रह्यो है सो धोखाब्रह्मको झाँकिउ कहे देखिउ चुक्यो कि इहां कुछ बस्तुनहीं है औ साहबको ज्ञान न उपज्यो तौ कबीरजी कहै हैं कि मैं काको पुकारौं वहतौ बड़ो अज्ञानी है बुढ़िगयो जो प्रत्यक्ष देखों नहीं मानैहै किं यह शून्यही है यामें कछु न मिलैगो तो मेरो कह्यौ कैसे सुनैगो ॥ १११ ॥

मानुष जन्महिं पायकै, चूकै अबकी घात ॥

जायपरै भवचक्रमें, सहै घनेरी लात ॥ ११२ ॥

चौरासीलाख योनिनमें भटकत भटकत ऐसो मानुष शरीरपायकै अबकी जो घातचूक्यो साहबको न जान्यो तौ संसारचक्र में परैगो और यमकी घनेरी लातें सहैगो ॥ ११२ ॥

ज्ञान रतनको यतन करु, माटी का शृंगार ॥

आया कविरा फिरिगया, झूठा है हंकार ॥ ११३ ॥

साहबके ज्ञानरतनको यतनकरु जाते साहब को ज्ञानहोय यहजो माटीकहें शरीरको शृङ्गार करै है सो अनित्यहै कबिराकहे कायाको बीर जीव यह संसारमें आया और फिरिगया तबशरीर पराय जाताहै यह जो अहंकार करताहै कि हम शरीरहैं हमब्राह्मणहैं क्षत्रियहैं वैश्यहैं शूद्रहैं सोसब झूठेहैं औ जो फीका है संसार यह जो पाठहोय तौ यह अर्थ है कि साहब के ज्ञानरतनको जो यतन करै है ताको या संसार फीकै लगेहै जो कोई दाखको खानवारो है ताको महुवा फीकै लगै है ॥ ११३ ॥

मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न दूजीवार ॥

पक्का फल जो गिरिपरा, बहुरि न लागैडार ॥ ११४ ॥

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभहै जोन अबैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरिपरै है तौ पुनि वह डारमें नहींलगै है अबै साहबके जानिबेको समयहै सो साहबको जानिलेउ ॥ ११४ ॥

बांइ मरोरे जातहौ, मोहिं सोवत लियो जगाय ॥

कहै कबीर पुकारिकै, यहि पैडे हैकै जाय ॥ ११५ ॥

मुसलमाननमें जे साहबके भक्त होयहैं तेन जब भजन न करै हैं तब उनको पीर दस्तते दस्त मिलावै है सो दस्तमिलायकै साहब को बताइ देइहैं पास पहुँचाय देयहैं तिनसों जीव कहै हैं कि हमारी बांहमरोरे चले जाउहौ हम संसारमें सोवत रहे सो जगाय लियो तब उनके पीर जे हैं कबीर ते कहै हैं कि यहि पैडे हैकै-जाउ या कहिकै साहबके जायबेको राहवताय देइहैं तब उनके परमगुरु जे हैं महम्मद आदिदैकै पैगम्बर तिनके इहां पहुँचाय देय हैं तब उनके चेला वह राहचलि महम्मद के पास पहुँचै हैं तब महम्मद साहबके पास पहुँचावै हैं औ हिंदुनमें जे श्रीरघुनाथजी को स्मरणकरै हैं ते गुरुद्वारा हैकै सुमिरनकरै हैं ते गुरु परमगुरुको मिलावै हैं परमगुरु आचार्यको मिलावै हैं ते साहब को मिलाय देइहैं जैसे रामानुज मतवारे आपने गुरुको प्राप्तभये औ गुरु शठकोपाचार्यको प्राप्तभये औ वे विष्वक्सेनको प्राप्तकियो जीवको औ वे संकर्षणको प्राप्तकियो औ वे जानकीजी को प्राप्त कियो जानकीजी श्री रामचन्द्रको प्राप्त कियो कबीरजी रामानन्दके सम्प्रदायके हैं तेहिते यह सम्प्रदाय संक्षेपते लिखि दियो है ऐसे सब आचार्य लोग आपने आपने चलनको साहबमें लगाय देइहैं ॥ ११५ ॥

औरे^१ औरें प्रतिमें इसके पश्चात् एक औरि साखी है पर इसमें नहीं दिया ।

बेरा वांघिन सर्पको, भवसागरके माहि ॥

छोड़ै तौ बृद्धत अहै, गहै तौ डसिहैवाहि ॥ ११६ ॥

पंचमुखी सर्प अहंकार ताके पांचमुखन में पांचप्रकारकी बाणी निकरी है प्रथममुख विश्वहै ताते कर्मकांड निकरा औ दूसरामुख तजस ताते योगकांड निकरा औ तीसरामुख प्राज्ञ ताते उपासनाकांड निकरा औ चौथामुख प्रत्यगात्मा

१ दूसरी प्रतियोंमें यहाँ पर यह साखी है । पूरन साहबकी टीकाकी ११७वीं साखी है ।

“साखि पुलंदर ढहि परे, विवि अक्षर गुनचार ।

रसना रम्भन होत है, कै न सकै निरुआर”

ताते ज्ञानकांड निकरा औ पाचोमुख निरंजन ताते अद्वैतविज्ञान निकरा सो ऐसे पंचमुखी सर्पमें बेराको बांध्यो आपने मनसे कल्पिकै भवसागर अनुमानाकियों ताको मान्यो तब ये नरदेहमें पंचमुखी सर्प अहंकार उठा तौने अहंकारको पहिरिकै वामें सब जीवचढ़े भवसागरपार होनके वास्ते सो अब जो बिचार करिकै छोड़ाचाहै तौ भवसागरकी भय लागै है कि बूढ़ि जायँगे औ धरे रहै हैं तौ सर्पडसै हैं सो पंचशरीराहंकार सर्पको बेराबने पर सब वाहिमें आरूढ़ हुये बेरा समुद्रके पार नहीं जायसकै हैं तीरहीमें रहिगये सो न बेराको गहिसकै न बेराको छोड़िसकै संसारसागरमें बूढ़ते उतराते हैं ॥ ११६ ॥

कर खोरा खोवा भरा, भग जोहत दिन जाय ॥

कविरा उतरा चित्तसों, छाँछ दियो नहिं जाय ॥ ११७ ॥

गुरुमुख—जे साहबके जनहैं ते कौनी भांतिते जाने जायहैं कि पूरहैं सर्वत्र साहब को देखै हैं हाथमें खोवा भरा कटोरा छीन्हे राह जोहै हैं कि कोई आवै खाय सो सर्वत्र तो साहबैको देखै हैं ताते जोई आयकै खायहै ताको साहबै जानै है औ साहबै मानिकै आदरकरै हैं औ खोवा खवावै हैं औ कबहूँ पुरुषबचन नहीं बोलैहैं ते जीव साहबके प्यारे हैं औ जिनसों मारै दारै हैं ते कबीर कायाके बीर जीव साहबके चित्तते उतारि जाय हैं अर्थात् वे मुक्ति कबहूँ नहीं पावै हैं संसार हीमें परै हैं । अथवा यह साखी गुरुमुख है ताते यह अर्थ है साहबकहै हैं कि खोवा भरा कटोरा हाथमें लियेहौं रामनाम उपदेश करौहौं यह कैसा है कि कहतमें सरल है फिर कायाको कलेश कौनौ न करनपरै औ सबको अधिकार है जैसे खोवा खातमें न कौनो अरसाहै न कौनौ श्रमहै ऐसे रामनाम रूपी खोवा उपदेशरूप लियेहौं जो कोई याको खाय अर्थात् स्मरणकरै तो मैं वाको संसारते छोड़ायेउँ जो मेरे पास आवै तौनेको । सोहे कायाके बीर कबीरजीव ! जो नहीं ग्रहणकरै हैं तेमेरे चित्तमें उतारि जायहैं उनको छाँछऊ मोसों दियो नहीं जाय अरु ज्ञानादिक कर्मादिक के फलतौ मैं देउहौं सो उनके उत्तम कर्महूँके फलभोंसो नहीं दिये दै जायँ अर्थात् मेरो चित्तनहीं चाहै है कि छाँछ जे हैं ज्ञानादिक ते उनके उत्तम कर्मादिकके फलदेउँ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि अबै साहब समुझावै

हैं सो मानिकै रामनाम कहिकै संसार छोड़िदें फेरि जब यमके सोटा लगैगें तब न कहो कहि जायगो तामें प्रमाण ॥ “बहुरि न बनि है कहत कछु जब शिरछगिहै चोट ॥ अबहीं सब यकठौरहै दूधकटोराटोट” ॥ ११७ ॥

एक कहाँ तो है नहीं, दोय कहाँ तो गारि ॥

है जैसा तैसा रहै, कहै कबीर विचारि ॥ ११८ ॥

साहब कहै हैं कि हेजीव! जोमें तोको एककहाँ कि ब्रह्मई है सब तैहां है तो वेदमें लिखै है किं ॥ “सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म इति श्रुतिः” ॥ ब्रह्म तो ज्ञानमयहै सो जो ब्रह्म हो तो तौ मायामें बद्ध द्वैकै कैसे संसारी होतो औ जो दोय कहाँ कि तैं काहू ईश्वरकोदास है तौ गारी तोको परैहै काहेते कि तैं तो मेरो अंशहै सो हेकबीर कायाके बीर जीव विचारिकै देखु तो तैं सनातनको मेरो अंश है दासहै औरको नहीं है तामें प्रमाण ॥ “ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः” ॥ औ मैं मालिक एकईहाँ दूजो नहीं है तामें प्रमाणचौरासीअंगकीसाखी ॥ “साई मेरा एक तू और न दूजा कोइ ॥ जो साहब दूजा कहै, सो दूजा कुलको होइ ॥ ११८ ॥

अमृत केरी पूरिया, बहु विधि लीन्हे छोरि ॥

आप सरीखा जो मिलै, ताहि पिआऊं घोरि ॥ ११९ ॥

साहब कहै हैं कि अमृतपुरिया जो या रामनाम सो मैं बहुत भाँतिते छोरे लीन्हेहौं । और जो दीन्ही पाठहोय तौ यह रामनामकी पुरिया छोरि दीन्ह्यो है कहे बहुतविधिते प्रकट करिदीन्ह्यो है कि यही संसारते छोड़ावनवारो है दूसरो नहीं है सो आपसरीखा जो मोको मिलै ऐसी भावना करतहोय किं मैं साहब को अंशहौं दासहौं सखाहौं दूसरेको नहींहौं ताको मैं रामनामकी पुरिया घोरिकै पिआइदेउँ कहे अर्थ समेत बताय देउँ औ पुरिया रामनामकी दैकै संसाररोग-मियायदेउँ औ रामनाम औषध है तामेंप्रमाण ॥ “राम नाम एक औषधी सत-गुरु दिया बताय ॥ औषध खावै पथकरै, ताकी वेदन जाय ॥ ११९ ॥

अमृत केरी मोटरी, शिरसे धरी उतारि ॥

जाहि कहाँ मैं एक हौं, मोहिं कहै द्वै चारि ॥ १२० ॥

साहबकहै हैं कि अमृतकी मोटरी जो रामनाम ताको तौ शिर ते उतारि धरयो कहे बाको तौ कोई बिचारकरै है नहीं जासों में कहौहों कि एक मालिक महींहों सो मोको दुइचारि बतावै हैं कहे छःबतावै हैं अर्थात् पञ्चांगोपासना औछठौं ब्रह्म सबको मालिक जो मैंहों ताको भूलिगये कोई देवीको कोई सूर्यको कोई गणेश को कोई विष्णुको कोई महादेवको मालिक कहै हैं ॥ १२० ॥

जाको मुनिवर तपकरै, वेद पढ़ै गुण गाय ॥

सोई देव सिखापना, नहिं कोई पतिआय ॥ १२१ ॥

जाके हेतु मुनिवर तपस्या करै हैं परन्तु नहींपावै हैं औ जाको चारों वेदगा-वै हैं परन्तु गुणको पारनहीं पावै हैं तौनेन साहबको श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं सिखापनदैकै बताऊँहों कि उनहींके रामनामको जपौ तबहीं संसारते छूटौगें ताहू में मोको कोई नहीं पतिआयहै अथवा वोई जौन सिखापन दियो है कि मेरो नाम जपै तौ संसारते उद्धारहैजाय तौने मैं सिखापनदै बताऊँ हों परन्तु पतिआय नहीं है सो महामूढ़है ॥ १२१ ॥*

एक शब्द गुरुदेवका, ताको अनंत विचार ॥

थाके पण्डित मुनि जना, वेद न पावैं पार ॥ १२२ ॥

एक शब्द जो है रामनाम ताको अनन्त विचार है अर्थात् ताहीते वेद शास्त्र पुराण नानामत सबनिकसे हैं सो हमारे राममन्त्रार्थ में लिखो है तौने रामनामको अर्थ करतकरत पंडित मुनिवेद थकिगये पार न पाये अर्थात् अनन्तकोटि ब्रह्मांड में वेद शास्त्र सब याहीते निकसे हैं ये कैसे पारपावैं॥ १२२ ॥

राउर को पिछवारकै, गावैं चारो सेन ॥

जीव परा बहु लूटमें, ना कछु लेन न देन ॥ १२३ ॥

राउर जो है साहबको धाम ताको पिछवारे कैदिये हैं चारोसेन जे चारोवेद तिनके श्रुतिनको नाना उपासनामें नानामतमें लगायकै तिनहीं मतनको उपास-

* अन्य प्रतियों में इस साखीके आगे यह साखी है सो यहां छोड़ दिया है। साखी एकते हुआ अनन्त, अनन्त एकैहै आया । परचे भई जब एकते, एके माहिं समाया” ॥

नाकरि जीव लूटमें परयो न कछु लेनहै न कछु देनहै अर्थात् कछुबस्तु हाथ-
नहीं लगे है ॥ १२३ ॥

चौ गोड़ाके देखतै, व्याधा भागा जाय ॥

अचरज हो यक देखौ, सन्तौ मुवा कालको खाय १२४ ॥

चौगोड़ा जोहै जीवात्मा ताके चारिगोड़ जेहें मन बुद्धि चित्त अहङ्कार
इनहीति जीवचलैहै तौनेके देखतै कहे जब अपने स्वरूपको चीन्ह्यो कि मैं साह-
बकोअंशहौं तबव्याधा जो है काल सो भागि जायहै निकट नहीं आवै है सो
हैसन्तौ! एकबड़ो अचरजहै जब जीवात्मा स्वरूपको जान्यो तबतो काल भागतहीं
भर है औमुंवाकहे मन बुद्धि चित्त अहङ्कार जे चारो गोड़ तिनको औ पांचोश-
रीरछोड़यो तब कालखायही जाय है कहे कालकी भयनहीं रहि जायहै हंसशरी-
रमें बैठिके साहबकेपास जायहै उहाँकालकीभय नहीं है तामें प्रमाण ॥ “ नय-
त्रशोकोनजरानमृत्युर्नात्तिर्नचेद्वेगकृतेकुतश्चित् । यच्चित्ततोदःकृपयानिदंविदां-
दुरंतदुःखप्रभवानुदर्शनात् ॥ इतिभागवते ॥ यस्यब्रह्मचक्षत्रञ्चउभेभवतओदनम॥
मृत्युर्यस्योपसेवेत क इत्यावेद यत्र सः ॥औ वा लोकमें कौनौ शोकनहीं हैं तामेंप्रमाण

धर्मदासजीको पद नामलीलाग्रंथको ॥

“ जहाँ पुरुष सतिमाव तहाँहंसनकीबासा । नहींयमनको नाम नहींह्वां तृष्णआसा ॥
हर्षशोकवाघरनहीं नहींलाभनहिंहानं । हंसापरमअनन्दमें धरै पुरुषकोध्यान ॥
नहिंदेवी नहिंदेव नहीं ह्वावेदउचारा । नहिं तीरथ नहिंबर्त्त नहींषट्कर्मअचारा ॥
उतपतिपरलयह्वांनहीं नहीं पुण्य नहिं पाप । हंसापरम अनंदमें सुभिरैसतगुरुआप ॥
नहिंसागर संसारनहीं ह्वां पवनहुँ पानी । नहिं धरती आकाश नहीं ह्वांऔर निशानी ॥
चौद सूर वा घरनहीं नहीं कर्म नहिं काल । मगन होय नामै गहै छूटि गयो जंजाल ॥
सुरति सनेही होइतासु यम निकट न आवै । परमतत्त्व पहिचानि सत्य साहब मनभावै ॥
अजर अमर विनशै नहीं परम पुरुष परकास । केवल नामकबीरका गाय कहै धर्मदास

तीनि लोक चोरी भई, सबका सरवस लीन्ह ॥

बिना मूढ़का चोरवा, परां न काहू चीन्ह ॥ १२५ ॥

तीनलोकमें चोरीहोत भई सबको सर्वस्वलैलियो सो ऐसों जो बिना मूड़को चोर निराकार ब्रह्म सो काहू को न चीन्हिपरयो अथवा बिनमूड़को चोर छिन्नमस्ता देवीके उपासक ते अपनेहुं को भावना करै हैं कि, हमारो मूड़ नहीं है काहेते कि ॥ “देवो भूत्वा देवं यजेत्” ॥ यह लिखै है ते शक्त काहूको नहीं चीन्हिपरै हैं मायामें डारिकै सब जीवको भरमाइ देइ हैं ॥ १२५ ॥

चक्की चलती देखि कै, नयनन आया रोइ ॥

दो पट भीतर आयकै, साबित गया न कोइ ॥ १२६ ॥

पुण्य औ पाप दूनों चक्की हैं कहे चकरी हैं तामें दैत जो है हम हमार सो किल्ली है तौनै चक्कीके दूनों पटके भीतर आयकै साबित कोई नहीं गया है पीसिही गयो है जो कोई साहबको सर्वत्र चिदाचित् रूपते देखै है सोई बाचै है तामें प्रमाण ॥ “पापपुण्य दुइ चक्की कहिये खूँटा दैत लगाया है । तेहि चक्की तर सबै पीसिगे सुरनरमुनि न बचाया है” ॥ और प्रमाण स्यायर बीजकको ।

“ चक्की चली राम की, सब जगषीसाझारि ॥

कह कबीर ते ऊबरे, जे किल्ली दियो उखारि ” ॥ १२६ ॥

चारि चोर चोरी चले, पग पनहींउतारि ॥

चारो दर थून्हीं हनी, पण्डित कहहु विचारि ॥ १२७ ॥

चारि चोर जे हैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय ते चोरीको चले आपनी आपनी पनहीं जो है बिचार ताको उतारिकै कहे छोड़िकै औ चोर चले है तब पनहीं उतारिकै चुपाजाय है तैसे येऊ चलै हैं सो विश्वाभिमान कर्मकाण्डकी थून्हीं गाड़ी औ तैजस अभिमान उपासनाकाण्डकी थून्हीं गाड़ी औ प्राज्ञाभिमान योगकी थून्हीं गाड़ी औ प्रत्यगात्मा तुरीय अभिमानने ज्ञानकाण्डकी थून्हीं गाड़ी सो ताही को बिचार पण्डितजन करने लगे। अथवा चोर जो है मन बुद्धि चित् अहङ्कार तें बिचार रूप पनहींको उतारिकै चोरीको चले सो मन सङ्कल्प बिकल्पकी थून्हीं गाड़ी औ चित्त अनुसंधानकी थून्हींगाड़ी औ बुद्धि निश्चयकी थून्हीं गाड़ी औ अहंकार अहंब्रह्मकी थून्हींगाड़ी सो ताहीको सब पण्डित बिचार करने लगे सो कहै हैं । मनतो सङ्कल्प बिकल्प करने लग्यो कि संसार कौनी भांति ते छूटै, औ

चित्त अनुसंधान और और ईश्वरनपर करने लग्यो, औ बुद्धि और और ईश्वर नपर निश्चय करनलागी औ अहंकार अहंब्रह्मको बिचार करने लग्यो कि मैं ब्रह्म हूँ । सो हे पण्डितो ! बिचार तौ करो ये चारो जे हैं ते चारोदरमें थून्ही गाड़ दिये बिचार रूप पनहीं उतारिकै कहे साहब को बिचार न करत भये साहबके बिचारको पनहीं काहेते कह्यो कि पनहीं पदत्राण कहावै हैं पांय की रक्षा करै हैं सो बिचार रूप पनहीं उतारि डारयो ताते जैसे कांटा बेधि जाय है तैसे नाना मत नानाप्रकारके भ्रमबेधि गये ॥ १२७ ॥

बलिहारी वहि दूधकी, जामें निकसै घीव ॥

आधी साखि कबीरकी, चारि वेदका जीव ॥ १२८ ॥

वहदूध जो है चारो वेद अथवा और जे भक्तिशास्त्र तिनकी बलिहारी है जामें घीव रामनाम निकसै है आधी साखी जो है कबीरकी रामनाम सो चारो वेदका जीव है काहेते जीव है कि चारों वेद याही ते निकसे हैं औ आधी साखी रामनामै को कह्यो है तामें प्रमाण ॥ “ रामनामलेशचरीबाणी ” । सबको आदि रामनामही है ॥ १२८ ॥

बलिहारी तिहि पुरुषकी, पर चित परखनहार ॥

साई दीन्ह्यो खांडको, खारी बूझ गवाँर ॥ १२९ ॥

कबीरजी कहैहैं कि परचित कहे सबते परे चिद्रूप जो साहब ताको परखन-हार जो अणुचित् पुरुष है ताकी बलिहारी है औ जे साई कहे बयाना तो खांडको दीन्ह्यो कि वेदनमें श्रीरामचन्द्रको बूझै ताको छोड़ि खारी जोहैं नाना मत तिनको वेदन में बूझै हैं वोई मतनकी उपासना करै हैं ते गँवार हैं खारी जो बहुत खाय तौ पेट काटि देइ है सो नाना मतनमें परिकै नाना दुःख सहे हैं ॥ १२९ ॥

बिषके बिरवा घर किया, रहा सर्पलपटाय ॥

ताते जियरै डर भया, जागत रैन विहाय ॥ १३० ॥

बिषको बिरवा जोहै संसार तामें जीव घरकियो जामें कालरूपी सर्प लप-टाय रह्योहै तेहिते जाके हृदयमें डरभयोहै जागि कै साहबको जान्यो ताको

मोहरूपी निशा बिहाय जायहै औ जे नहीं जागै हैं तिनको काल डसिखायहै सो-
जिनको रामोपासना सिद्धहै गईहै ऐसे जे भक्तहैं तिनके शरीर नहीं छूटै हैं सो
हनुमान् कबीरजी प्रकटै हैं ॥ १३० ॥

जो ई घर है सर्पका, सो घर साधुन होइ ॥

सकल संपदा लै भई, विष भर लागी सोइ ॥ १३१ ॥

जो घर सर्पकोहै सो घर साधुको न होइ अर्थात् सर्पको घरबेमोरहै तामें
बहुतछिद्र होइहैं सो या शरीरौ बहुत छिद्रकी बाँबी है तामें काल बसैहै सो
बेमोरमें जो जीव जायहै तिनको सर्प खाय लेइहै औ जे या शरीर में कौनौ
जीव बसैहै तिनको काल खाइलेइहै ॥ १३१ ॥ *

मन भरके वोये कवों, घुंघुची भर ना होइ ॥

कहा हमार मानैं नहीं, अन्तहु चले विगोइ ॥ १३२ ॥

शरीरमें जो घुंघुची भर बासना उठै तौ मन भर की हैजातीहै कहे मनसं-
कल्पविकल्पकारिकै और बढ़ाइ देइहै मनमें वही भरि रहती है औ मनभर उप-
देशकरै तौ घुंघुची भर ज्ञाननहीं रहै यह मननीचि में जायहै ऊंचेको नहींजाय
सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हम केतौ उपदेश करैं परंतु कोई नहीं मानैहैं ताते
अन्तमें विगोइकै कहे बिगरिकै मरिक्के नरकमें जायहैं ॥ १३२ ॥

आपा तजो औ हरि भजो, नख शिख तजो विकार ॥

सब जिउते निरबैर रहु, साधु मता है सार ॥ १३३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जबभर तैं यहि शरीरको आपनो मानैगो तब भर
तेरो जनन मरण न छूटैगो ताते“अहंशरीरः”में शरीर हौं यह जोहै आपा ताका
छोड़िदे तैं तो साहबको पार्षदस्वरूपहै तामें टिक्कि तिनको भजनकरु औ नख
शिखमें तेरे कामक्रोधादिक बिकारई देखे परैहैं तिनको छोड़िदे औ चिदचित

* इसके आगे की यह साखी छोड़दी है ।

“घुंघुची भर जो बै इया, उपजपसेरि आठ । डेरा परा काल घर, सांझ सकारे बाठ”

विग्रहते सर्वत्र साहिबहीहैं यह भावना करिकै सब जीवनते निर्बैररहु साधु मतकों
यही सारांशहै सब साहबके शरीरहैं तामें प्रमाण ॥ “खं वायुमग्निं सलिलंमहीश्व
ज्योतींषि सत्त्वानि दिशोद्गुमादीन् । सरित्समुद्राँश्च हरेःशरीरं यत्किञ्चभूतं प्रण-
मेदनन्यः । ” चित् जो है जीव सोऊ शरीरहै तामें प्रमाण ॥ “यश्चात्मनि तिष्ठ
न्यमात्मानं वेद यस्य आत्मा शरीरम्” ॥ १३३ ॥

पक्षा पक्षी कारणे, सब जग रहा भुलान ॥

निरपक्षै ह्वै हरि भजैं, तेई संत सुजान ॥ १३४ ॥

और तो सबमायैमें भुलानहै जिनके कछू समुझहै ते आपने आपने मतकों
पक्ष कीन्हें हैं आनको पक्ष खण्डन करि डारै हैं सो जे पक्षापक्षी छोड़िकै साहबकों
भजैं हैं तेई सुजान सन्तहैं ॥ १३४ ॥

माया त्यागे क्या भया, मान तजा नहिं जाय ॥

जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सबनको खाय ॥ १३५ ॥

सन्तलोग जो मायाको छोड़िउ दिये तौ कहा भयो मान बढ़ाई तौ छोड़िबे
न कियो याही चाहै हैं कि, हमारो मान होय सो जौने मानमें मुनिवर ठगिये
हैं सोई सबको खाये लेइहै सो हम पूछै हैं कि जो तिहारो बड़ो मान भयो बड़ी
बढ़ाई भई कि फलानेके समान उपासनामें कोई नहीं है ज्ञानमें विद्यामें कोई
नहीं है तौ यासों कहाभयो जाके निमित्त घरछोड़यो सोतो मिलबई न भयो तेहितें
जो कोई साहबके मिलिबे की संसार छूटिबेकी बात कहै तौ मानिलेइ चाहै
आपने मतको होइ चाहै बिराने मतको होइ काहेते कि साधुको मत यही है
कि संसारछूटै साहब मिलैं औ मानै प्रतिष्ठा भये साधुकहावै या कौने शास्त्रमें-
लिखाहै तेहिते साधु वही है जो साहबको जानै ॥ १३५ ॥

धुंधुची भरजो बोइया, उपज पसेरी आठ ॥

डेरा परा काल घर, सांझ सकारे बाठ ॥ १३६ ॥

— यहशरीररूपी क्षेत्रकैसो है कि जो धुंधुची भर बोइ जाय अर्थात् उठै तौ आठ
पसेरी कहे मन उत्पत्ति होयहै कालके घरमें डेरा परयो है तेहिते यहशरीरकों

कहूँसांझ होइ है कहूँ सकार होइहै अर्थात् कबहूँ मरिजायहै कबहूँ उत्पत्ति होइहै औ बाठकहावै बरेठ सो मनमायामें मिलो जो आत्मा सो बरेठ होइगयो बरेठमें तीनलहर होयहैं यामें त्रिगुणात्मिका माया बरिगई है सो एककैतिपुण्यकी गैलहै जप यज्ञ दानते खैचिकै स्वर्गको लैजायहैं औ एककैति पापकी गैलहै कामक्रोधादिकते खैचिकै नरकमें डारिदेइ हैं जब बरेठ टूटिजायहै तब ख्याल गुलहैजायहै अर्थात् मुक्ति है जाय है ॥ १३६ ॥

बड़े ते गयो बड़ापनो, रोम रोम हंकार ॥

सतगुरुकी परिचय बिना, चारचो वर्ण चमार॥१३७॥

सबते बड़े कोहैं साधु जे संसारको त्याग कीन्हे हैं तिनमें और दोषतो हई- नहीं हैं काहेते कि संसारको छोडे हैं परन्तु ये चित्अचित् रूप साहबको नहीं देखै हैं सर्वत्र ते आपने बड़ापनहीं में गये कि हमारी बराबरीको साधु कोई नहीं है या अहङ्कार रोमरोम बेधि गयो सो सतगुरुतो पायोइ नहीं जो रामनामको बतायदेइ जाते साहब याकी रक्षा करें सो साहबके जाननवारे जेसाधु तिनके बिना परिचय चारिउं वर्ण चमारके तुल्यहैं ॥ १३७ ॥

मायाकी झक जग जरै, कनक कामिनी लागि ॥

कह कबीर कस बाचिहौ, रुई लपेटी आगि ॥ १३८ ॥

झकवाकोकहै हैं कि जैसे या कहै हैं कि भूतकी झकलगी है सो कनक कामिनी में लागि मायाकी झकमें बैकलायकै जरै है सो श्री कबीरजी कहैहैं कि कनक कामिनीरूप रुई में लपटिकै बिषय आगिसेवन करौ हौ सोकैसे बाचिहौ अर्थात् जरिही जायगो ॥ १३८ ॥

माया जग साँपिनि भई, बिष लै बैठी बाट ॥

सब जगं फंदे फंदिया, गया कबीरा काट ॥ १३९ ॥

संसारमें माया साँपिनिभई है सो बिषलैकै संसार की जे हैं सबराहै तन धन कर्म तिनमें बैठी है सो सम्पूर्ण जग वाके फंदे में फंदिगयो जोई कबीर कहें जीव वे राहनमें चलै है सोई काटा जाय है अथवा कबीरजी कहै हैं कि

मैं जौनजौने राहनमें वहसाँपनि बैठी रहीं है तौने तौने राहनको काटिकै कहें
बरायकै और राह है चलो गयो ॥ १३९ ॥

साँप बीछिको मंत्र है, माहुर झारे जाय ॥

विकट नारिके पाले परा, काटि करेजा खाय ॥ १४० ॥

साँपबीछीको विषमंत्रन ते झारे जायहै औ वह विकट नारि जो माया है
ताकेपाले जो परयो ताको करेजा काटिकै खायलेइ है अर्थात् साहबके ज्ञाना-
दिक जे अंतःकरणमें हैं तिनकोखाय है सोई मायाको रूप कहै हैं ॥ १४० ॥

तामस केरे तीन गुण; भौंर लेइ तहँ वास ॥

एकै डारी तीन फल, भाँटा ऊँख कपास ॥ १४१ ॥

आदितामस जो है अज्ञान मूल प्रकृति तामें रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी
तीनफल लगेहैं सो सतोगुणी ऊँखहै जो ऊँखचुह्यो तौ पंहिले रस पान कियो
कहे यज्ञादिक कर्म कियो स्वर्ग में जायकै अप्सरानके साथ सुखकियो जब
पुण्यक्षीणभयो तब फेरिसंसारमें परे सो यहै हाथमें लग्यो फिरि चौरासीमें भटक-
नलग्यो । औ रजोगुणी कपास है कपासकोलियो कपरा विनायो पंहिरयो ह्यौई
फटिगयो तैसे रजोगुणी कर्म कियो तामें राजाभयो सुख भोगकियो दियो
लियो बड़ो यश कियो फेरि फेरि मरिकै जैसो कर्मकियो तैसो भयोजाय । औ
तमोगुणी कर्मभाँटाहै टोरयो तब कांटालग्यो औ जब खायो तब पुरुष शक्ति
की हानि हैगई अखाद्य लिखै हैं द्वादशी त्रयोदशी इत्यादिक दिनमें जो खायों
ते नरक को गयो ऐसे तमोगुणी कर्मते काहूको मारयो तौ मरिगयो औ
पापलग्यो राजाबाँधिकै शूली दियो मारो गयो दुःख पायो सो इहां दुःख पायो
औ वहां नरकमें दुःखपायो ॥ १४१ ॥

मन मतंग गैयर हनै, मनसा भई सचान ॥

यंत्र मंत्र मानै नहीं, लागी उड़ि उड़ि खान ॥ १४२ ॥

मनरूपी जो हाथी है मतवार सो गैयर कहे आपने अरतेकहे हंठते गवा जो
है जीव अर्थात् साहबको भुलिययो जो है जीव अथवा गैयर कहे बड़ा जो है

जीव ताको हनै है सो जब जीव मारे परयो तब मनसा जो है मनोरथ सोई सचानभयो है कहे शार्दूल भयो सो उड़ि उड़ि याको खायहै अर्थात् जब मरन-लागै है तब जहैं मनोरथ जायहै तहैं जीव जायहै सोई खायबो है औ यन्त्र मन्त्र जो नाना उपदेश वेदशास्त्र कहै है सो नहीं मानै है ॥ १४२ ॥

मन गयंद मानै नहीं, चलै सुरतिके साथ ॥

दीन महावत क्या करै, अंकुश नाहीं हाथ ॥ १४३ ॥

मनरूपी जो मतंगहै सो नहीं मानै है सुरतिरूपी जो हाथिनी है ताके साथ चलै है महावत जो है जीव सो कहाकरै अंकुश जो नामका ज्ञान सो याके-हाथई नहीं है ॥ १४३ ॥

या माया है चूहरी, औ चूहरकी जोइ ॥

बाप पूत अरुझायकै, संग न काहुकी होइ ॥ १४४ ॥

या माया चूहरी कहे चाण्डालिनी है औ चूहरैकी जोइहै कहे जीवकी जोइ हैकै जीवहूको घूहर बनायलियो अर्थात् आपने बश कैलियो सो यह माया काहूकी संगनहीं है । मन जो है बाप, पूत जो है ब्रह्म ताको पतिजो है जीव तासों अरुझाय दियो है ॥ १४४ ॥

कनक कामिनी देखिकै, तू मति भूल सुरंग ॥

विछुरन मिलन दुहेलरा, केचुलि तजै भुजंग ॥ १४५ ॥

साहब कहै हैं कि कनक कामिनीरूप मायाको देखि तू मतिभुलाय तैं तो सुरङ्गहै साहब कहै हैं कि मेरे अनुरागमें रंगनवारो है सो आपने स्वरूप तो बिचारु यह कनक कामिनीरूप जो मायाहै तौनेमें जो रँग्योहै ताको जो छोड़िदे तौ जैसे भुजंग केचुलि छोड़ि देइहै तब बाको स्वरूप निकारि आवै है तैसे तेरे चारो शरीर छूटि जायँ तब हंसशरीरपाय मेरे पास आवै ॥ १४५ ॥

मायाके बश सब परे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

नारद शारद सनक औ, गौरी सुत्त गत्रेश ॥ १४६ ॥

अर्थ याको स्पष्टही है ॥ १४६ ॥

पीपर एकजो मँहगे मान । ताकर मम न कोऊ जान ॥

डारलफायनकोऊखाय।खसमअछतबहुपीपरजाय॥१४७॥

एकपीपरके वृक्षको सबै मँहगे मानिलियो है सो वह ब्रह्महै अनुभवगम्य है वाको मर्म कोई नहीं जानै है कि पीपरको डार लफायकै कोई नहीं खायहै अर्थात् वा अलखहै कैसेमिली वातो कथनमात्रही है सो साहब कहै हैं कि जीवनको खसम अछतमें बनैहाँ ताको तौ नहीं प्राप्ति होय वहपीपरजो ब्रह्म ताहीमें सब चलेजातेहैं सो वह ब्रह्म झाँई है तामें प्रमाण मूल रमैनीको ॥

“ निर्गुणअलख अकह निरवाना । मन बुधि इन्द्री जाहि न जाना ॥

बिधिनिषेध जहँवाँ नहीं होई । कह कबीरपद झाँई सोई ॥

पहिले झाँई झाँकते, पैठो सन्धिककाल ।

झाँईकी झाँई रही, गुरुबिन सँकैको टाल” ॥ १४७ ॥

शाहू ते भो चोरवा, चोरन ते भो जुज्झ ॥

तब जानैगो जीयरा, मार परैगो तुज्झ ॥ १४८ ॥

प्रथम शाहू रहे कहे शुद्धरहेहौ सो ब्रह्ममाया मनचोरहैं तिनमें लगिकै तैंहूँ चोर द्वैगये अर्थात् उपदेश करिकै जीवन के साहब को ज्ञान चोराय लियो काहूको कह्यो कि ब्रह्म तूही है काहूको कह्यो कि आदिशक्तिको भजु जगत्को कर्त्ता वही है काहूको कह्यो जो मनमें आवै सो करु बन्धमोक्षको कारण मनै है याही रीति गुरुवाचोरन ते जुज्झ भयो सो तुज्झ कहे तोहीं तबहीं समुझि परैगो जब यमको सोंटा शीशमें लगैगो तब तब जानैगो कि रक्षकको भुलाय दियो ॥ १४८ ॥

ताकी पूरी क्यों परै; गुरु न लखाई वाट ॥

ताको बेरा बूढ़िहै, फिरि फिरि अवघट घाट ॥१४९॥

जाको गुरुने साहब के पास पहुँचिबे की बाट नहीं लखाई ताकी पूरि कैसे परै ताकी बेरा जो है ज्ञान सो अवघटघाटमें बूढ़ि जाइगो अर्थात् जब उनके शरीर छूटजायँगे पुनि पुनि जनम मरण होइगो तब वा ज्ञान भूलिजायगो १४९॥

जाना नहिं बूझा नही, समुझि किया नहिं गौन ॥

अन्धेको अन्धा मिला, राह बतावै कौन ॥ १५० ॥

मनमायादिक जो जगद्वै ताको न जान्यो कि यह जड़ है मैं इनको नहीं हों इनते भिन्नहों वा ब्रह्मको न बूझ्यो बिचारई करत रहिगये अपने स्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंशहों समुझिकै नाना मतनमें गौन न किये कि ये नरक लैजानवारे हैं सो आँधर जे जीव तिनको आँधरै गुरुवालोग मिले साहब के यहाँकी राह कौन बतावै ॥ १५० ॥

जाको गुरु है आँधरा, चेला कहा कराय ॥

अंधे अंधा ठेलिया, दोऊ कूप पराय ॥ १५१ ॥

याको अर्थ स्पष्टही है ॥ १५१ ॥

मानस केरी अथाइया, मति कोइ पैठै धाय ॥

एकइ खेते चरत हैं, बाघ गदहरा गाय ॥ १५२ ॥

या संसारमें मनुष्यकी अथाई है तामें धाय कै कोई मति पैठे काहेते कि एकइ खेत जो है संसार तामें बाघ जो है जीव औ गदहा जो है मन औ गाय जो है माया सो एकई संग चरै हैं गदहा मनको कह्यो सो कर्मको बोझा याहीमें लादिजायहै औ जीव बाघहै समर्थ जो साहबको जानै तौ गायजो है माया ताको खायजाय अर्थात् नाशकरदेइ ॥ १५२ ॥

चारि मास घन बरसिया, अति अपूर्व शरनीर ॥

पहिरे जड़तर बरुतरी, चुभै न एकौ तीर ॥ १५३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि घन जोहों मैं सो चारि मास जेहें चारियुग तामें अतिअपूर्व जो है शरकहे बाणरूपी नीरज्ञान ताको बरसत भयो कहे उपदेश करतभयो सबजीवनको परन्तु ऐसो जड़तरकहे जड़ौते जड़ बरुतर पहिरे है कि तीरकहे एकौ ज्ञान नहीं चुभै है अथवा चारिमास हैं चारिउ वेद ते घनकहे बहुतज्ञानकी वर्षा कियो कहे सबजीवनको उपदेश कियो परन्तु साहब को

कोई न समुझत भयो वेदको अर्थ औरईमें लगाय दियो सब शब्द को सार राम नाम न जाने सब नरकको चलेगये तामें प्रमाण ॥ “ नाम लिया सो सब किया, वेद शास्त्रको भेद ॥ विनानाम नरकै गये, पढ़ि पढ़ि चारौ वेद ” ॥ १५३ ॥

गुरुके भेला जिव डरै, काया छी जन हार ॥

कुमति कमाई मन बसै, लागु जुवाकी लार ॥ १५४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि गुरुके भेलेमें जिउ डरै है वहगुरुकी भेली कैसी है कि काया जे हैं पांचौ शरीर तिनको छीजनकहे छोड़ायेदेन वारी है सो ये संसारी जीवनके मनमें कुमतिकी कमाई लगी है ताते जुवाकी लार मानुष शरीर में लागै न कर्म करतबन्यो तौ नरकगयो कर्म करत बन्यो तौ स्वर्गगये कर्म छूटनको उपाय नहीं करै हैं लारसंगको कहै हैं पश्चिमकी बोली है ॥ १५४ ॥

तन संशय मन सोनहा, काल अहेरी नित्त ॥

एकै डाँग वसेरवा, कुशल पुछौ का मित्त ॥ १५५ ॥

साहब कहै हैं संशय जो मन सोई तनमें सोनहाहै जीवन को शिकारखेलै है औ एक यह काल अहेरी है अर्थात् जब कालमारै है तब मनकी सुरति जहां मर-तमें जायहै तहां आत्मा जात रहै है तैनै शरीर धारण करै है सो मन सोनहा काल अहेरी जीव सावज ये तीनों एकैडांग जो शरीर तामें बसे हैं सो हे मित्र! तुमतौ हमारे सखाहौ मूलिकै यहडाँग जो शरीर तामें कहाँ बसेहौ चारौ शरीरन का छोड़ि हंसशरीरमें बैठि मेरे पास आवो ॥ १५५ ॥

शाहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मतिका हीन ॥

पारिख बिना बिनाशहै, करि विचार हो भीन ॥ १५६ ॥

हे अंधा ! हेज्ञाननयनकोहीन तैंतो शाहुरह्यो है चोरजौ है मन ताको तैं न चीन्हें ताते तैंहूं चोर द्वैगये सो बिचार न कियो कि पारिख बिना बिनाशहै सो पारिखतो करु तैंतो चितहै औ यह मन जड़हैं तेरो वाको साथ नहीं बनिरै है सो जैसे तैं अणुचितहै तैसे साहब विभुचितहैं चितचितको साथ होइहै सो बिचारकरि यहि मनसे भिन्नहै मेरे पास आउ ॥ १५६ ॥

गुरु सिकिली गर कीजिये, मनहि मसकला देइ ॥

शब्द छोलना छोलिकै, चित दर्पण करिलेइ ॥१५७॥

जो कहौ मनते हम कौनी भाँतिते भिन्नहोई तौ गुरु सिकिलीगरहै आत्मा तरवारि है मनादिकनकी काटनवारी है तामें साहबको ज्ञानरूपी मसकलादै रामनाम छोलनाते अज्ञानरूपी मुरचाछोलि प्रेमकी बाढ़िधरि मनादिकनके काटिबेको समर्थ करिदेइ अर्थात्चारिउ शरीरको छोड़ि स्वरूपरूपी दर्पण में आपनो हंसशरीर जानिलेइ कि मैं साहबको अंशहौं ॥ १५७ ॥

मूरुखके समुझावते, ज्ञान गाँठिको जाय ॥

कोइला होइ न ऊजरो, नौ मन साबुन खाय ॥१५८॥

यहसाखी को अर्थ प्रसिद्ध है ॥ १५८ ॥

मूढ़ करमिया मानवा, नख शिख पाखर आहि ॥

वाहनहारा का करै, वाण न लागै ताहि ॥ १५९ ॥

मूढ़कर्मि कहे मूढ़ है औ कर्मि है कर्म त्यागको उपाय नहीं करै है ऐसो जो ह मानुष्य सो नखशिखलौं अज्ञानरूपी पाखरपहिरै है । औ जो मूढ़कर्मि पाठहोय तौ बानरकी नाई बाँध्यो है हठ नहीं छाँडै ॥ १५९ ॥

सेमर केरा सूवना, सिहुले बैठा जाय ॥

चोंच चहोरै शिर धुनै, यह वाहीको भाय ॥ १६० ॥

सेमरका सुवा जोसिहुले कहेमदारेमें बैठिकै चोंच मारयो जब घुवा निकरचो- तबशिर धुनै है या कहै है कि या वहीको भाई है अर्थात् जीव संसार मुख लागि- रह्यो जब कुछ न पायो तब ब्रह्म सुखमें लग्यो कि मोको ब्रह्मानन्द होयगो सो वही विचार करत जब अठई भूमिकामें गयो तब अनुभवौ न रहिगयो तब जान्यो कि जैसे संसारी सुख मिथ्या है तैसे ब्रह्मसुखौ मिथ्या है कुछ नहीं रहि जाय है अथवा घरछोड़िकै बैरागी भये महन्ती लिये मठ बाँधे चेला भये सो घरमें एकै मेहरी रही एकै बेठा रहो इहां बहुत चेला भई बहुत चेला भये

बहुत घर भये न गृहस्थमें बन्यो न बैराग्यमें बन्यो तामें प्रमाण चौरासी
अङ्गकी साखी ॥

“ घरहु तजिनि तौ अस्थल बाँधिनि अस्थल तजिनि तौ फेरी ॥
फेरी तजिनि तौ चेला मूढ़िनि यहि बिधि माया घेरी ” ॥ १६० ॥

सेमर सुवना बेगि तजु, घनी बिगुर्चन पाँख ॥

ऐसा सेमर जो सेवे, हृदया नार्ही आँख ॥ १६१ ॥

हे सुवा जीव संसार रूप सेमर को तैं छोड़िदे तैं तो पक्षी है तेरे मेरे पास
आवनको पक्ष है कहे तेरे स्वरूपमें मेरे पास आवनको ज्ञान बनो है जो संसारी
है जायगो माया ब्रह्म में लगैगो तौ मेरे पास आवनेको तेरे पखना बिगुर्चन
है जायंगे कहे घुवा ऐसो चोँथि डारैंगे नाम नाना ज्ञानमें लगाय देईंगे वाज्ञान
न रहि जायगो सो ऐसे संसाररूपी सेमरको सेवे है जाके हृदयमें आँखी नहीं हैं
मेरो ज्ञान नहीं है ॥ १६१ ॥

सेमर सुवना सेइये, दुइ ढेढीकी आश ॥

ढेढी फूटी चटाक दै, सुवना चले निराश ॥ १६२ ॥

हे सुवना ! जीव संसार सेमरकी दुइ ढेढीकी आश सेवे है सेमरकी दुइ ढेढी
कौनि हैं एक फूलकी है एक फलकी है औ या संसारमें एक तौ संसारी सुख
है एक परलोक सुख है सो सेमरमें रसकी चाह कियो जब चोँच चहोरचो तब
ढेढी चटाकदै फूटिगई घुवा निकस्योसुवा निराश हैकै चले गये रसकी प्राप्ति न
भई तैसे तैं संसारमें परचो जनन मरण छुटावे के वास्ते धोखा ब्रह्ममें लाग्यो
परन्तु जनन मरण न छूट्यो ॥ १६२ ॥

लोग भरोसे कौनके, जग बैठि रहे अरगाय ॥

ऐसे जियरै यम लुटै, जस मेढै लुटै कसाय ॥ १६३ ॥

अरे लोगौ यहि संसार में कौनके भरोसे अरगायकै कहे चुपाय कै बैठि रहें
हौ ज्ञान करिकै कि मैहीं ब्रह्महौ अथवा या मानिकै कि मैहीं जीवका मालिक हौ
अथवा योग करिकै कुंडलिनी के साथ प्राणको चढ़ायकै ज्योतिमें मिलायकै औ

चुप बैठे बैठे रहे सो हम पूछे हैं कि तुम कौनके भरोसे बैठे रहे साहबको
तौ जानि बोई न कियो जब उत्पत्ति भई तब ब्रह्मते माया तुमको धरिले आई
औ पुण्यक्षीण भई तब स्वर्गादिकनते उतरि आये औ जब समाधि छूटी तब
जीव उतरि आयो पुनि जसके तस ढैगये औ आपनेहीं को मालिक मान्यो तौ
जब शरीर छूट्यो तब यम खूब छूट्यो जैसे मेढ़ाको कसाई छूटे हैं तैसे बिना
रक्षक कौन बचावै ॥ १६३ ॥

समुझि बूझि दृढ़ हैरहे, बल तजि निर्व्वल होय ॥

कह कबीर ता संतको, पला न पकरै कोय ॥ १६४ ॥

सर्वत्र साहबको समुझिकै औ साहब को रूपबूझिकै कि या भांतिको है
जड़वत है रहे कि जो करै है सो साहब करै है ऐसे साहब को जो जानै है
ताके बहुत सामर्थ्य है जायहै जो चाहै सो करिलेइ तौने आपने बलको छपाय
कै आपको निर्व्वलै मानै है कि हम कहा करै हैं जौन काम करै है तौन साहबै
करै है वे समर्थ हैं सो श्री कबीरजी कहै हैं कि ऐसे संतको पला कोई नहीं
पकरै है कहे बाधा कोई नहीं करिसकै है सब साहबै करै हैं तामें प्रमाण
कबीरजीके ज्ञान संबोधनकी साखी ॥

“पाप पुण्य फल दोय, सबै समर्थ समर्थै ॥

निज मन शक्ति न होय, मनसा बाचा कर्मणा” ॥ १६४ ॥

हीरा वही सराहिये, सहै घननकी चोट ॥

कपट कुरंगी मानवा, परखत निकसा खोट ॥ १६५ ॥

हीरा जो है साहबका ज्ञान सोई सराहा जायहै जो घन चोट सहै कहे
मानामत करिकैकोई बादीखंडन न करिसकै औमानुष जे कपटकुरंगी कहे
हरिणी है रहे हैं अर्थात् चंचल है रहे हैं सो जब घनकी चोटलगी कहे गुरु-
बालोग आपनोमत समुझायो तब हृदय फूटिगयो साहबको ज्ञान तो जानो न
रहै तामेंप्रमाण कबीरपरिचयकी साखी ॥

“झूठ जवाहिरको बनिज, तब लागि परि है पूर ।

जबलगि मिलै न पारखी, घने चढ़ा नहिं कूर” ॥

सो या मायाके रंगवारे मानुष परखतमें खोटही निकसे हैं ॥ १६५ ॥

हरि हीरा जन जौहरी, सबन पसारी हाट ॥

जब आवै जन जौहरी, तबही रोकी साट ॥ १६६ ॥

हरि जे हैं तेई हीरा हैं औ जन जेहैं तेई जौहरी हैं कहे जाननवारे हैं सो सब जीव हाट लगावन लगे कहे साहब को जानन लगे ज्ञान कथनलगे गुरुवा-लोग आपने मतमें खँचिगये सो जब साहबके जाननवारे जनाय देनवारे साहब जन जौहरी आये तब सबके मत खंडन करि हीराके—समीप कनी जे जीव तिनको पहुँचाय देतभये अर्थात् जीवनको या जनाय दिये कि तुम साहबके हौ साहब में लगौ या हीरौ के साटको अर्थ है और मतनमें परे जननमरण न छूटै-गो ये कनफुका संसारही को लैजायगो तामेंप्रमाण॥ “कनफुका गुरु हृदका बेहदका गुरु और ॥ बेहदका गुरु जो मिलै, तब पावै निज ठौर ॥ १६६ ॥

हीरा तहां न खोलिये, जहँ कुंजरोंकी हाट ॥

सहजै गांठी बांधिकै, लगो आपनी बाट ॥ १६७ ॥

जहां कुंजरों की हाट है तहां हीरा न खोलिये काहेते कि वे भांटा खीराके बेंचनवारे हीराको भेद कहांजानैं अर्थात् जहां आपने आपने मतमें काउ काउ करि रहे हैं तहां साहबके ज्ञानरूपी हीरा न खोलिये साहब में मनलगायें एकान्त बैठि रहिये यही आपने बाटमें लगे रहिये ॥ १६७ ॥

हीरा परा बजारमें, रहा छार लपटाय ॥

बहुतक मूरख चलि गये, पारिख लिया उठाय ॥ १६८ ॥

हीरा जो है रामनाम जेहिते साहबको ज्ञान होइहै । सो बजारमें पराहै कहे सब संसार के लोग कहै हैं छारमें लपटाय रह्यो है । अर्थात् नानामत नाना-ज्ञान रामनामहीते निकसे हैं, औ सब मत रामनामही ते सिद्ध होय हैं यह राम नाम साहबको बतावै है ते कोई नहीं जानै हैं । या नहीं जानैं ते ऐसे जे

मूरख ते केते संसार बजारमें चलिगये पै जाते साहब को ज्ञान होई ऐसो जो रामनाम हीरासो न लीन्हे अर्थात् यह रामनाम साहबको बतावन वारो है सो कोई न समझ्यो । सो जाते साहबको ज्ञान होयहै ऐसो रामनाम हीरा ताके जे पारखी रहे ते राम नाम हीराको जानिकै उठायो जाते साहबको पहिंचानिकै मुक्त द्वै गये । अथवा रामनाम ऐसो हीरा बजार में कहे संसार में परि छार में लपट्यो है अर्थात् ज्ञान कांड, कर्म कांड और योग कांडमें लग्यो है और राम नाम में नहीं लग्यो हैं, जो साहब को बतावन वारो है जाते मुक्ति द्वै जाई छार में कहा लपटो है ? कि, ज्ञान काण्ड कर्म काण्ड आदि कर्मनमें राम नामई को मानै हैं याही ते काहू को नहीं जानि पारै है । राम नाम को और और सिद्धि में लगाई देइ हैं तामें प्रमाण श्रीगोसाईं जीको ।

नाम जीह जपि जागहि योगी । विरति बिरंचि प्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्म सुखहि अनु भवहि अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहै गूढ मत जोऊ । नाम जीह जपि जानहि तेऊ ॥
साधक नाम जपहि लै लाये । होइ सिद्ध अणि यादिक पाये ॥
जपहि नाम जन आरत भारी । मिटहि कुसंकट होंहि सुखारी ॥
सो येही रामानामको लैकै सब साहबको जान्यो है तामें प्रमाण ॥

श्रीकबीर जीको रेखता ।

रामको नाम चौ मुक्तिका मूल है निचोर रस तत्त्व छानी ।
रामको नाम षट शास्त्रमें मथलिया राम षट दर्शमें है कहानी ॥
रामको नाम लै ध्यान ब्रह्मा किया रंकरै धुनि सुनि मानी ।
कहैं कबीर अवगाह लीला बड़ी रामको नाम निर्बाण बानी ॥
रामको नाम लै विष्णु पूजा करै रामको नाम शिव योग ध्यानी ।
रामको नाम लै सिद्ध साधक जियो जियो सनकादि नारदहु ज्ञानी ॥
रामको नाम लै राम दीक्षा लिया गुरु वाशिष्ठ मिलि मंत्र दानी ।

रामको नाम लै कृष्ण गीता कथी मथी पारथ नहिं ममजानी ॥ १६८ ॥

हीराकी ओवरी नहीं, मलयागिरि नहिं पांति ॥

सिंहनके लेहड़ा नहीं, साधु न चलैं जमाति ॥ १६९ ॥

सबको मालिक साहबएकही है औ साहब के जाननवारे बिरलेसाधुहैं जे रामनाम को जपै हैं वेसब साधुनके शिरमौरहैं तामें प्रमाण ॥ “ साधु हमारे सब खड़े, अपनी अपनी ठौर । शब्द बिबेकी पारखी, सो माथेको मौर ” ॥ तामें या दृष्टान्त है जैसे मलैगिरी चन्दन एकहै, सिंहएकहै तैसे हीरा जो राम नामहै तेहिते साहब को ज्ञान होयहै सो एकही है औ ताके जाननवारे साधु एकही हैं, वे जमाति में नहीं चले हैं ऐसेतो सब साधुही कहावै हैं औ राम नाम वस्त्र दु-खोयकै औरमें लगै हैं ते गँवारहैं तामें प्रमाण ॥ “ वह हीरा मतिजा, नेये, जेहिलादै वनजार ॥ यह हीरा है मुक्तिको, खोये जात गँवार ॥ १६९ ॥

अपने अपने शीश की, सबन लीन है मानि ॥

हरिकी बात दुरंतरी, परी न काहू जानि ॥ १७० ॥

जौनजाकोमतनीकलाग्यौ सोतौनेनमतको शीशचढ़ाय मानि लीन्हो हरिकी जो दुरंतरी बातहै सबते दूरकहेपरे सो काहूको न जानिपरी कि सबके रक्षक साहबै हैं ॥ १७० ॥

हाड़ जरैं जस लाकड़ी, तनवा जरै जस घास ॥

कविरा जरै सो रामरस, जस कोठी जरै कपास ॥ १७१ ॥

कबीर जे जीवहैं तिनके रामरसजो है रामभक्ति सो कैसे उनके अंतःकरणमें जरै है जैसे कोठीमेंकपास भितरैजरै है याहीते उनके हाड़बार लकड़ी घासकी नाई जरै हैं ॥ १७१ ॥

घाट भुलाना वाट विन, भेष भुलाना कानि ॥

जाकी माड़ी जगत में, सो न परां पहिचानि ॥ १७२ ॥

घाटकहे सत्संग बाट जो है बिचार ताके बिना भूलिगयो अर्थात् साहबको तौ जान्यो न अपनेहीको ब्रह्म माननलग्यो बिचारभूलि गयो सत्संग काहेको करै आपने गुरुवनकी कानिमानि भ्रमवारे मत न छाड़तभये भेषवारे साधु सबभुला-यगये सो जाकी माड़ी कहे माया जगतमें पूरिरही ऐसेजो साहब सो न पहिचानिपरचों माड़ी मायामें भूलिगये ॥ १७२ ॥

मूरुख सा क्या बोलिये, शठसों कहा बसाय ॥

पाहनमें क्या मारिये, चोखा तीर नशाय ॥ १७३ ॥

मूरुख कौन कहावै है कि साधुनके समुझायेतें सूझै परन्तु बूझै नहीं है तासों क्याबोलिये । शठकौनकहावै है कि चाहे नीकौ कोऊ बतावै परन्तुछाड़ै न हठकीन्हे वाहीमें लागरहै । जौन गुरुवा लोग पहिले बतायनिहै चाहे कूपैमा गिरिपरै पै छाड़ै न सोऐसेलोगन ते कहा बसाय उनको ज्ञानदीन्हे जानौ खराब होयंगो पाहनके मारे तीरही टूटैगो शठ मूरुख नहीं समुझै तामें प्रमाण ॥ “पानी कोपाषाण, भीजै तौ बेधै नहीं ॥ त्यों मूरुखको ज्ञान, सूझै तौ बूझै नहीं” ॥ १७३ ॥

जैसे गोली गुमजकी, नीच परे दुरि जाय ॥

ऐसे हृदया मूर्खके, शब्द नहीं ठहराय ॥ १७४ ॥

जैसे गुम्मजमें जो गोलीमारिये तौ उंचेपरे ढरकिजायहै ऐसे मूरुखके हृदयमेंशब्द रामनाम केतौ उपदेशकारिये परन्तु ठहराय नहीं है एकघरीभर तौ ज्ञानरह्यो फिरि ज्योंकोत्यों है गयो ॥ १७४ ॥

ऊपरकी दोऊ गई, हियकी गई हेराय ॥

कह कवीर चारिउगई, तासों कहा बसाय ॥ १७५ ॥

ऊपरकी आँखिनते यादेख हैं कि साहबको भजिकै हनुमानादिक अजर अमर हैगये जिनकी पूजा देवता करै हैं सब सिद्धिको प्राप्तहैं कालशक्र विष्णु सबते अधिकहैं औ हियेकी आँखिनते देखै हैं कि हाथिनको पति ऐरावतहै पक्षिनको पति गरुड़है भक्तनमें महादेवपति हैं मनुष्यनमें भूपति है ऐसे सब ईश्वरनके मालिक श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं भजन करै है सो श्रीकवीरजी कहै हैं कि जाकीभीतरौबाहरकी आँखिफूटिगई तासोंकहाबसाय ॥ १७५ ॥

केते दिन ऐसे गये, अन रूचे को नेह ॥

बोये उसर न ऊपजै, जो घन वरसैं मेह ॥ १७६ ॥

जैसे ऊसरमें बोवै घन बहुतौ बरसैं परन्तु जामै नहीं है तैसे निराकार
धोखामेळग्यो फलकछू न हाथलग्यो वातो कुछ वस्तु ही नहीं है अनरुचेको नेह
है अर्थात् धावड़ी प्रीतिकियो वातोप्रीति ही नहीं करै ॥ १७६ ॥

मैं रोऊँ सब जगतको, मोको रोवैं न कोइ ॥

मोको रोवै सो जना, जो शब्द विवेकी होय ॥ १७७ ॥

साहब कहै हैं कि मैं सब जगतपर दया करिकैं रोऊँहों कि मेरो वंश
जीवमोको भूलिगयो ताते जगतमें जनन मरणरूपी दुःखसहै है औ जीवमोको
नहीं रोवै है कि हम अपने मालिकको भूलिगये नाना मालिक मानि नाना
दुःख पावै हैं सो मोको सो जन रोवै है जो शब्द जो रामनाम ताको विवेकीहो
य कि एकारके समीप मकार शोभित होइहै मैं साहबको हों ॥ १७७ ॥

साहब साहब सब कहैं, मोहि अँदेशा और ॥

साहबसों परिचय नहीं, बैठेगा केहि ठौर ॥ १७८ ॥

कबीरजी कहै हैं कि साहब साहब तो सब जीव कहै हैं अर्थात् आपने
आपने इष्टदेवताको सबते परे कहै हैं कि येई सबके मालिकहैं सो येतो सब
एक एक मालिक बनाये हैं पै मोको या और अन्देशाहै कि जौन रामनाम
साहबको बतावै है तौने रामनामको जानि साहबते परिचयतो करिबै न किये
ये कौने ठौर बैठैगे काके पास जायँगे अर्थात् जनन मरण न छूटैगो ॥ १७८ ॥

जिव बिन जिव वाचै नहीं, जिवका जीव अधार ॥

जीव दया करि पालिये, पंडित करहु विचार ॥ १७९ ॥

या जीव बिना जीव कहे सतगुरु बिना नहीं बाचै है जीवको जीव जो
सतगुरुहै सोई आधारहै सो जीवपर दया करि अर्थात् सतगुरुके शरणहै जीव
उद्धारकरो हे पंडित ! तुम बिचारकर देखो तो बिना सतगुरु संसार पार
न होउगे ॥ १७९ ॥

हमतो सबहीकी कही, मोको कोइ न जान ॥

तबभी अच्छा अच्छा अबभी, युग युग होंदुँनआन १८०

साहब कहै हैं कि हमतो सबके अच्छेकी कही जाते कालते बचिजायँ परंतु मोको कोई न जानत भयो सो तब भी अच्छा है अबभी अच्छाहै काहेते कि युगयुगमें मैं आन नहीं होउँहों वहीवही बनोहों जो अबहूं मोको जानै तौ मैं कालते बचायलेउँ तामें प्रमाण गोसाईंजीको ॥

दोहा ॥ “बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अबहीं आज ॥

होय रामको राम जपि, तुलसी तजि कुसमाज” ॥

औ कबीरजीने कह्यो है ॥

“कह कबीर हम युग युग कही । जवही चेतो तवहीं सही” १८०

प्रकट कहौं तौ मारिया, परदा लखै न कोइ ॥

सहनाछपापयारतर,को कहिवैरी होइ ॥ १८१ ॥

श्रीकबीरजीकहै हैं कि जो मैं प्रकट कहौहों कि तुम साहबके हो और के नहीं हो तौ मारन पावै है अर्थात् बादबिवाद करै है औ जो परदे सों कहौ हों तौ कोई समुझतै नहीं है काहेते नहीं समुझै है कि सहना जो है मन जौन संसारको रचिलियो है सो शरीर जो प्यार तामें छपा है साहबको नहीं जानन देइ है प्यार शरीर याते कह्यो कि सार जो साहबको ज्ञान सो निकसि गयो है सो याको कहिकै बैरी होइ ब्रह्म बादिनते औ सहना वो कहावै है जो सरकारते पयादा आवै है सो ब्रह्म मायाके साथ या मन आयो है साहबका ज्ञान छिदेहै साहबको जानन नहीं देइहै या मनहीं सब संसार रचिलियो है तामें प्रमाण ।

कबीर जीको पद ॥

संतो या मन है बड़ जालिम ।

जासों मनसों काम परो है तिसही द्वैह भालुम ॥

मन कारणकी इनकी छाया तेहि छायामें अटके ।

निरगुण सरगुण मनकी बाजी खरे सयाने भटके ॥

मनहीं चौदह लोक बनाया पाँच तत्त्व गुण कीन्हे ।

तीनि लोक जीवन बश कीन्हे परे न काहू चीन्हे ॥

जो कोउ कहै हम मनको मारा जाके रूप न रेखा ।
 छिन छिनमें केतनौ रँग ल्यावै जे सपनेहुं नहिं देखा ॥
 रासातल यकईश ब्रह्मण्डा सब पर अदल चलावै ।
 षट रसमें भोगी मन राजा सो कैसे कै पावै ॥
 सबके ऊपर नाम निरक्षर तहँ लै मनको राखै ।
 तब मनकी गति जानि परै यह सत्य कविर मुख भाखै ॥ १८१ ॥

देश विदेशन हौं फिरा, मनहीं भरा सुकाल ॥

जाको दूंदत हौं फिरौं, ताको परा दुकाल ॥ १८२ ॥

देशकहे संसार विदेशकहे ब्रह्म तौने में फिराहै सो ये दूनों मायाको सुकाल-
 लभराहै अर्थात् वह ब्रह्म मनहीं को अनुभवहै औ संसार मनहीं को कल्पनाहै
 जौन बस्तु को मैं दूंदत फिरौं हौं जो मन बचनके परे है ताको दुकालपर्यो
 वा न ब्रह्ममें है न संसार में है ॥ १८२ ॥

कलिखोटा जग आंधरा, शब्द न मानै कोइ ॥

जाहि कहौं हित आपना, सो उठि बैरी होइ ॥ १८३ ॥

जगत् तो आँधराहै ज्ञानदृष्टि याके नहीं है कुछ समुझै नहीं है तौने में या
 कलिखोटा प्राप्त भयो सो जाको शब्द जो राम नाम में बताऊँहों सोई बैरी
 होइहै कहे शास्त्रार्थ करै है मानै नहीं है ॥ १८३ ॥

मसि कागद तो छुवों नहिं, कलम गहो नहिं हाथ ॥

चारिहु युग माहात्म्य जेहि, करिकै जनायो नाथ १८४

गुरुमुख ॥ चारिउ युग में है माहात्म्य जिनको ऐसे जे नाथ रघुनाथहैं
 तिनको कबीरजी सबकों जनायो न कलमगहीं न कागद लियो न मसि लियो
 मुखहीतें कह्यो ये तो सरल करिकै कह्यो कि जामें एकौ साधन न करनपरै
 सो साहब कहै हैं कि जो मोको जानिलेइ तौ संसारते तरिजाय जो कहों
 कबीर जी मुखही तें कह्यो है ग्रन्थकैसे भयें हैं तौ कबीर जी कहते गये हैं
 शिष्यलोग लिखतें गये हैं ॥ १८४ ॥

फहमै आगे फहमै पाछे, फहमै दहिने डेरी ॥

फहमै परजो फहम करत है, सोई फहम है मेरी ॥ १८५ ॥

गुरुमुख ।

फहमजो है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म सोई आगे है सोई पाछे है सोई दहिने है सोई डेरी कहे बायें है अर्थात् सर्वत्रपूर्ण है सो यहजो फहम है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म तौनेके ऊपर ब्रह्मयाहूके परे साहब है फहम करै है कि वह ज्ञानरूप उनहींको प्रकाश है याहूके परे साहब हैं तौन फहम मेरी है कहे वहज्ञान मेरोहै ॥ १८५ ॥

हद चलै सो मानवा, बेहद चलै सो साध ॥

हद बेहद दोनों तजै, ताको मता अगाध ॥ १८६ ॥

हद जो चलै है सो मानवाहै कहे उनको मान कहे प्रमाण है अर्थात् जो जोने देवता की उपासना कियो सो तौने देवता के लोकगये वाको वहैभर प्रमाणहै वतनैज्ञान होइहै औ जे बेहद चलै हैं ब्रह्ममें लगै हैं ते साधुहैं जो ब्रह्मको साधन करिकै सिद्धि करिलेइ सो साधु सो हद जो है सगुणसंसार औ बेहद जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दोनोंको जे तजिकै निर्गुण सगुणके परे परम पुरुष श्री रामचन्द्र के सेवक हैरहे हैं ऐसे जे रामोपासक हैं तिनहीं के मत अगाधहैं ॥ १८६ ॥

समुझैकी गति एकहै, जिन समुझा सब ठौर ॥

कह कबीर जे बीचके, बल कहि औरै और ॥ १८७ ॥

जे रामोपासक निर्गुण सगुणको समुझिकै ताहूते परे साहब को जान्यो तिनकी गति एकहै कहे एक साहबहीको सबठौर निर्गुण सगुणमें समुझै हैं कबीरजी कहै हैं कि जे बीचकेहैं ते और और उपासना करै हैं और और ज्ञानकरै हैं औ आपने आपनेदेवतनमें बलकै हैं कि येई सबके मालिकहैं ॥ १८७ ॥

राह बिचारी का करै, पथिक न चलै बिचारि ॥

आपन मारग छोड़िकै, फिरहि उजारि उजारि ॥ १८८ ॥

पथिक जो विचारिकै न चले तौ राह विचारी कहाकरै वेद पुराण शास्त्र
येई सब राहैं हैं तिनको तात्पर्य्य यही है यहजीव साहबको अंशहै उनहींके
जाने संसारते छूटै है सो रामनाम को जपिकै साहबको द्वैरहै यह जो है आपनों
मारग तौनको छोड़िकै उजारि उजारि कहे कोई ब्रह्ममें कोई ईश्वरमें कोई नाना
देवतन की उपासनामें फिरै हैं सोउनके जननमरण रूप कण्टक लागिबोई चाहैं
नरकरूप खोह गिरैचाहै औ जीवसाहबको अंशहै तामें प्रमाण ॥ “ममैवांशो-
जीवलोके जीवभूतः सनातनः” ॥ औ ब्रह्ममाया ईश्वर जगत् इनको विचारकरै
तौ भ्रममात्रहै कछू इनते जीवको उद्धारनहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ “ब्रह्मजीव
ईश्वरजगत ईसब अनमिलसैन ॥ निरबारे ठहैर नही भाखत झाईबैन” ॥ १८८ ॥

मूआहै मरि जाहुगे, बिन शर थोथे भाल ॥

परे कल्हारै वृक्षतर, आजु मरै की काल ॥ १८९ ॥

अरेजीवी ! तुम केतनौ बार भरतआये हो औ मरिजाउगे बिना शरकाहेते कि
तुम्हारे भालमें थोथे लिखे हैं बिना फलके बाणसों तुम यहि संसार वृक्षतरे जो
बोलते बताते हो सो परे कल्हारते हो आजु मरिजाउ कि काल्हिमरिजाउ बाड़ा
कछू नहीं है ॥ १८९ ॥

बोली हमारी पूर्वकी, हमें लखा नहिं कोई ॥

हमकोतो सोई लखै, घर पूरुबका होइ ॥ १९० ॥

हमारी जो पूर्वकहे पहिलेकी बोली जो साहबकोरूप उपदेश करिआये
जीवको स्वरूप बतायआये सो कोई नहीं लखै है न हम को लखै है सो हमारी-
बाणीको तो सोई लखै है जो कोई पूरुबको कहे शुद्धजीव हैजाय जल पूर्वही
रह्यो है ॥ १९० ॥

जेहि चलते रबदे परा, धरती होइ विहार ॥

सोइ सावज घामें जरै, पण्डित करो विचार ॥ १९१ ॥

जेहि जीवके चलतकहे निकसतमें यहशरीर रबदे कहे धूरिमें मिलिजाय है
पुनि वहीजीव जो कहूं अवतरै है तब यहै शरीर को पाइकै धरती में विहा-

रकरैहै औ बहै साउज जो है जीव सो शरीरनको पायके आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक जे तीनों तापहैं तेई घाम हैं तिनहींमें जरै है सो हे पण्डित तुम बिचारकरिकै असारको त्यागकरायकै सार जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोबता ओ तौ तीनों तापते जीव छूटै ॥ १९१ ॥

पायँन पुहुमी नापते, दरिया करते फाल ॥

हाथन परबत तौलते, तेहि धरि खायो काल ॥ १९२ ॥

जे हाथनते पर्वत तौलते रहे औ पायँनते पुहुमी नापते रहे औ समुद्रको एकफाल करते रहे हिरण्याक्षदिक तिनहूँको काल खरिखायो ॥ १९२ ॥

नव मन दूध बटोरिकै, टिपका किया विनाश ॥

दूध फाटि कांजी हुआ, भया घीव का नाश ॥ १९३ ॥

नवमन कहे नवीन नवीन जायें होते आये मन ऐसो कै तौ देह धरि अब यहदूध मनुष्यशरीर पायो सो कांजीका टिपका जो धोखाब्रह्ममें लागिवो ताते दूध जो मनुष्य शरीर सो कांजी भया कहे पशुतुल्य भया घीवजो साहबकोशाय है ताको नाशहै गयो ।

अथवा—ऊपरकी साखीमें बड़ेबड़े पराक्रमीको कालखाइ जाइ है ते कहि आये हैं । अब या साखीमें कहैं हैं हे दूध जीव ! तैं या शरीरको अभिमान करिके कहा नाना विषयन कहे मतनमें लागि गये । सो हे दूधजीव ! तैं कहा नौ मनको बटोरियो, अर्थात् नौ कहिय नवीन मन कहिय मनकी मानी हुई मनते तैं नाना प्रकारके नवीन मतनको गुरुवनेत सुनिके बाहीमें लगिके अन जो है कांजीकाटिपका (चिन्दु) ताको आश्रय करिओपर वही मुझको मारि डारयो अपने में मिलायलियो तूहू मनमें मिलिके मन है गयो । ताते जौन मनमें साहबको मिलनकी शक्ति होती घीवसो नाश है गई । सो आगे तैं शुद्धरहे स्वच्छ रहे तेरो संग कियो सब जीव सुधरि जाते रहे हैं अर्थात् शुद्धरूप आपनो जानिके जीव साहबको होते रहे हैं सो तोको गुरुबालोग नाना मतनमें लगायके काजी (पानी) बनाई डारयो । अथवा जो छाछको घास पेटनमें डारिदेई तौ घास जरि जाइ है तैसे तेरो संगकरिके जीव जरि जाइहै कहे

साहबको ज्ञान त रहित है जाइहै । सोतैं ऐसों बिगारि गयो है कि जो अब दूध भयों चाहै तो आपने किये ते कौने हू भांति न होइ सकै है फिर जो होन चाहै तो होइ कैसे ताको या युक्ति है कि, जाको वा छाछ है ताहीको पियाई देइ तौ फिर वा दूध बनि जाइ है । तैसे जौने साहबको तू है तिनको जो रूप गुरु बताइ देइ और तैं ओई साहब श्रीरामचन्द्रमें लगि जाई तौ पुनि तैं शुद्ध जीव है जाइ ॥ १९३ ॥

केत्यो मनावैं पायँ परि, केत्यो मनावैं रोइ ॥

हिन्दू पूजै देवता, तुरुक न काहुक होइ ॥ ३९४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि केतन्यो हिन्दू ते देवतनके पायँ परि मनावैं हैं कि हमारी मुक्ति हैजाय औ नाना देवतनको पूजते हैं औ केतन्यो जे मुसल्मान तिनको हाल आवती है औ साहब के इश्कमें रोवते हैं औ मानते हैं कि साहब बेचून बेचिगून बेसुवा बेनिमून निराकारहैं सो जे देवतनको मनावतेहौ पाँय परिकै तिनहीं की मुक्ति नहीं भई तिहारी मुक्ति कैसे होयगी देवता तो सब सगुणहैं विष्णु सतोगुण के ब्रह्मा रजोगुणके रुद्र तमोगुणके अभिमानी हैं मुक्त नहीं भये तौ तुमको कैसे मुक्त करेंगे सो जौन तीनों देवतनको अधिकार दिये हैं सबको मालिक श्रीरामचंद्र तिनको भजनकरु तब मुक्ति पावैगो तहां प्रमाण गोसाईंजीको ॥ “हरिहि हरिता विधिहिं विधिता शिवहि शिवता जिन दयो । सो जानकी पति मधुर मूरति मोदमय मंगल भयो” ॥ और मुसल्मानौ ! तुम निराकार तौ मानौ हौ इश्क काकेपर करौ हौ सो जो साहबको रूप न मानौगे तौ इश्क तुम्हारा झूटा ठहरि जायगा ताते बिचारौ तौ साहब रूप न होता तौ मूसा पैगम्बर को छिगुनी कैसे देखावता ताते उसके रूपहैं परंतु मायाकृत पाश्चमौतिक नहीं हैं दिव्यरूपहैं याते निराकारकहै हैं सगुण निर्गुणके परे जो साहब श्रीरामचंद्र ताको बन्दाहोउ आपनेको जो मालिक मानौगे तौ बड़ी मार सहौगे तामें प्रमाण ॥ “स्वामी तो कोई नहीं स्वामी सिरजन हार ॥ स्वामी है जो बैठिहैं घनी परैगी मार” ॥ १ ॥ औ साहब निर्गुण सगुणके परे हैं तामें प्रमाण ॥ सर्गुणकी सेवाकरौ निर्गुणका करुज्ञान ॥ निर्गुण सर्गुणके परे तहैं हमारा जान ॥ १९४ ॥

मानुष तेरा गुण बढ़ा, मांस न आवै काज ॥

हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज ॥ १९५ ॥

हे मानुष ! जो तैं देहको अभिमान करै है सो नाहक करै है यह देह तेरी कौने कामकी है तेरो मांस काम नहीं आवै कोई नहीं खायहै हाड़नके आभरण नहीं होते हैं त्वचाके बाजन नहीं बाजते हैं सो तेरे एकगुण है या देहते साहब मिलते हैं सो मिलिबे की यतन करु ॥ १९५ ॥

जौलगि ढोला तवलगि बोला, तौलगि धनव्यवहार ॥

ढोलाफूटाधनगया, कोई न झाँकै द्वार ॥ १९६ ॥

सबकी उत्पत्ति धरणिमें, सब जीवन प्रतिपाल ॥

धरती न जानै आपगुण, ऐसा गुरुदयाल ॥ १९७ ॥

एकको अर्थ प्रकटै हैं एकको कहै हैं दुःखसुख नीकनागा सबकी उत्पत्ति धरतीहीते है कहे शरीरहीते है जौने ज्ञानते सब जीवनको प्रतिपाल है ऐसे ज्ञानको तू जान अपने गुणको धरती जो शरीर ताको न मानु ते पांचो शरीर दे बाहिरे हैं ऐसे गुरु दयालुहैं साहब छुड़ावन वारे ताको जानु तैं अंशहै साहब अंशी हैं ॥ १९६ ॥ १९७ ॥

धरती जानत आपगुण, तौ कधी न होत अडोल ॥

तिलतिल होतो गारुवा, ह्वै रहत ठिकौ कीमोल ॥ १९८ ॥

धरती जो शरीर ताके धरैया जो जीव धरती सो आपनो गुण नहीं जानत कि मोमें साहबकी प्राप्ति होयबो यही गुणह उत्पत्ति जो करौहौ सो साहबकी शक्तिते मेरीशक्ति नहीं है तौ कधी डोल न होतो अर्थात् मनादिकनको उत्पत्ति करि संसारी न होतो शुद्ध बनो रहतो धरती जीव आपनो गुण कहा जानै जो आपनो गुण साहबको प्राप्त होइबो जानते । ता तिल तिलमें गरुई होतजातो कहे तिलतिल वह ज्ञान बाढ़तौ औ ठीक जो है शुद्ध साहबके जनैया जीवात्मा ताके मोल द्वै जातो कहे यही अमर द्वै जातो जे साहबसों मेल किये रहै हैं शरीरहू

सांचहै जायहै तामें प्रमाण ॥ श्रीकबीरजीकी साखी “जाकी सांची सुरति है,
सांची साखी खेल ॥ आठ पहर चौंसठ घरी, है साहब सो मेल ॥ १९८ ॥

जहिया किरतिम ना हता, धरती हतो न नीर ॥

उतपति परलय नाहती, तबकी कही कबीर ॥ १९९ ॥

कबीरजी कहै हैं कि जब येरहबै नहीं भयें तबकी कहै हैं ॥ १९९ ॥

जहांबोलअक्षरनहिंआया,जहँअक्षरतहंमनहिंदृढाया ॥

बोलअबोलएकहैसोई, जिनयालखासोविरलाहोई२००

जहां बोल जो शब्दभया तहां अक्षर आपही जायहै जब अक्षर भया तब मन दृढ़ावही करै है कहे मनकी उत्पत्ति होतही है सो तब तो आकाशही नहीं रह्यो शब्द कहाते निकसा सो प्रथम जो बाणी रामनाम लैके उचरी सो अबोलहै कहे अनिर्वचनीय है सोई कहे तौने जो है रामनाम सोई बोलहै कहे वहीते सब अक्षर निकसे हैं सो वही अबोलहै कहे अनिर्वचनीयहै सो यह बात कोई बिरला जानै है काहे ते कि जब कुछ नहीं रहे तब एक साहबही रहे है तिनहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है वहतो सबको मूळहै वाको कोई कैसे कहिसकै जब यह साहब को है जाय और आशाछोड़ देइ तब साहबही प्रसन्न हैकै सब बनाय लेइहैं तामें प्रमाण साहबकी उक्ति ॥ “जानै सो जो महीं जनाऊं । बांह पकारि लोके पडुं चाऊं ॥ यही प्रतीति मानु तैं मेरी । यह सुयुक्ति काहू नहिं हेरी ॥ सत्य कहौ तो सो मै टेरी । भवसागरकी टूटै बेरी” ॥ २०० ॥

जौ लौं तारा जग मगै, तौ लौं उगै न सूर ॥

तौलौं जिय जग कर्म बश, जौलौं ज्ञान न पूर ॥ २०१ ॥

जौलौं सूर्य नहीं उगै हैं तौ लगि तारा जग मगायहैं ऐसे जौलौं साहबक पूरो ज्ञान नहीं होयहै तौ लौं जीव नाना कर्मनके बश है नाना मतनमें लगै है जबजीव साहबको जान्यो औ साहब को हैगयो तब साहबै अपनो ज्ञान देयहै कर्म छूटि जाय है ॥ २०१ ॥

नाम न जानै ग्रामको, भूला मारग जाय ॥

काल गड़ैगा कांटा, अगमन कस न खोराय ॥२०२॥

अरे साहबके तो नगरको नामही नहीं जानै है और मतन मारगमें काहे भूला जायहै यह काल रूप कांटा तेरे गड़ैगा काल तोको मारि डारैगा तेहिते अगमन कहे आगे वह खोरिकहे राहमें आवै जेहिते कालते बचिजाय ॥ २०२ ॥

संगति की जै साधुकी, हरै और की व्याधि ॥

ओछी संगति क्रूरकी, आठौं पहर उपाधि ॥ २०३ ॥

जो साधुकी संगति करिये जे साहबको जनाय देनवारे हैं तौ साहबको जानिकै औरकी व्याधि हरै औजो क्रूर जे असाधु तिन की संगति करै तौ आठौ पहर उपाधिही लगी रहै है ॥ २०३ ॥

जैसी लागी औरकी, तैसी निबहै थोरि ॥

कौड़ी कौड़ी जोरिकै, पूज्यो लक्ष करोरि ॥ २०४ ॥

और ते जो थोरहूथोर साहबमें लगे भक्ति करै औ तैसे छोरलों निबहिजा यहै तो जो थोरऊ थोर साहबमें लगे औ साहबकी भक्तिकरै तौ जैसे कौड़ी कौड़ी जोरे केतो करोरि है जायहै ऐसे वाकी भक्ति हू हैजायहै अनेक जन्मकी संसिद्धिते मुक्तहै जायहै ॥ २०४ ॥

आजु कालिह दिन एकमें, अस्थिर नहीं शरीर ॥

केते दिनलों राखिहौ, काचे बासन नीर ॥ २०५ ॥

आजु कालिह यहि कलिकालमें एकौ दिनमें शरीर स्थिर नहीं है केतनोबेरधौं शरीर छूटिजाय आगे तो प्रमाण रह्यो है कि येती आयुर्दाय गनुष्यकी है अबतो कछू प्रमाणै नहीं है केती बेर शरीर छूटिजाय तेहिते साहब को भजन करो कच्चे बासन शरीरमें केते दिन नीर राखौगे ॥ २०५ ॥

करु बहियां बल आपनी, छाडुबिरानी आस ॥

जाके आंगननदीब है, सो कसमरै पिआस ॥२०६॥

अरे और औरें मतनमें जो लगैहै तिनमें न लागु बिरानी आशा छोड़िदे
तैं काहूके छुड़ाये न छूटैगो आपनी बहियांको बल करु तेरे उद्धार करिबेको
तेरी बहियां श्रीरामचन्द्रहैं सो आगे कहिआये हैं कि मोटे की बाँहले औ जाके
आँगन में नदिया है सो का पिआसन मरै है तेरा तो साहब ऐसो रक्षकबनोहै तैं
काहे साहब को भूलि औरें औरें मतनमें लगै है ॥ २०६ ॥

बहु बन्धनते बाँधिया, एक विचारा जीव ॥

का बल छूटै आपने, जो न छुड़ावै पीव ॥ २०७ ॥

कबीरजी कहै हैं कि ये विचारे जीव तैं बहुत बंधन ते बंध्यो है बहुत
गरीबहैं सो जो तैं आपने विचारते छूटा चाहै तौ तैं न छूटैगो बिना श्रीराम-
चन्द्रके छोड़ाये वाई तेरे पीउ हैं उनकी या प्रतिज्ञा है कि जो एकहू बार
मोको जीव गोहरावै तौ मैं वाको छुड़ाय लेवहाँ ताते तैं साहबकी शरण जाय
जाते संसार ते छूटि जाय जे साहबकी शरण जाय हैं ते कालहूके माथ पै लात
दै चले जाय हैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको ॥

कालके माथे पग धरी; सतगुरुके उपदेश ।

साहब अङ्क पसारिकै, लैगे अपने देश ॥ १ ॥

गगन मँडल दृग महलमें, द्वे घाटीके ईश ।

नाम लेत हंसा चले, काल नबावें शीश ॥ २ ॥

औ जे राम नाम नहीं लेइ हैं ते नहीं मुक्त होय हैं तामें प्रमाण ।

यहि औतार चेतो नहीं, पशु ज्यों पाली देह ।

रामनाम जान्यो नहीं, अन्त परा मुख खेह ॥ २०७ ॥

जिवमति मारहु बापुरा, सबका एकै प्राण ॥

हत्या कबहुँ न छूटि है, कोटि न सुनै पुराण ॥ २०८ ॥

जीव घात ना कीजिये, वदुरिलेत वह कान ॥

तीरथ गये न बाचिहौ, कोटि हिरादे दान ॥ २०९ ॥

तीरथ गये सो तीन जन, चितचंचल मन चौर ॥

एकौ पाप न काटिया, लादे दशमन और ॥ २१० ॥

इनके अर्थ स्पष्ट हैं ॥ २०८ । २०९ । २१० ॥

तीरथ गये ते बहि मुये, जूड़े पानी न्हाय ॥

कह कबीर संतौ सुनौ, राक्षस है पछिताय ॥ २११ ॥

तीर्थ में जे जायें हैं ते तीर्थके जूड़े पानी में नहायकै बहि मुये कहे खराबहैं मुये काहे ते कि जौन तीर्थजाबे नहाबेकी विधि है सो एकौ न किये काहूको धक्का मारयो काहूपै कोप कियो सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ सुनौ ते नर राक्षक होइकै पछिताय हैं कि हम सों न बनी ॥ २११ ॥

तीरथ भै बिष बेलरी, रही युगन युग छाय ॥

कबिर न मूल निकन्दिया, कौन हलाहल खाय ॥ २१२ ॥

तीरथ कहे तीन हैं रथ जाके सतरजतम ऐसी जो त्रिगुणात्मिका माया सों बिष बेलरीभै चारिउयुगमें छाय रही है कबिरन मूलनिकन्दिया कहे मूल जो रामनाम है ताको कबिरा जे जीव हैं ते निकन्दिया कहे न ग्रहण करते भये जो कोई कहबौकियो ताहूको खण्ड डारत भये सो या नाना कुमति रूप हलाहल खाय जीव क्यों न नरकै जाय जाबेही चाहै ॥ २१२ ॥

हे गुणवन्ती बेलरी, तव गुण बरणि न जाय ॥

जर काटेते हरि अरी, सींचेते कुंभिलाय ॥ २१३ ॥

हे गुणवन्ती बेलरी माया बाणी तेरो गुण बरणि नहीं जाय है कहाँलों वर्णन करैं जब तेरी जर काटन चलैं हैं तीर्थ करिकै अहंब्रह्मास्मिकै तौ अधिक हरिअरी होय है महीं ब्रह्महैं या अभिमान बढ़यो अधिक हरि अरी भई तामें प्रमाण ॥ “ कुशलाब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः सुराणिः ॥ तेपि यान्ति-मौनं पुनरायान्तियान्ति च ” ॥ २१३ ॥

बेलि कुटंगी फलबुरो, फुलवा कुबुधि वसाय ॥

मूल विनाशी तूमरी, सरोपात करुआय ॥२१४॥

यह मायारूपी जो बेलि है सो कुटंगी है काहेते कि याको दुःख रूपी फल बुरो है औ कुबुधि जो है सोई फूलहें वाकी नाना वासना जें हैं सोई बास बसायैहै सो यह मूल विनाशीहै अर्थात् मिथ्याहै याको मूल नहीं है आपहीते उत्पत्ति भईहै औ जेते भर मायिक पदार्थ हैं ते पातहैं तिनमें सबमें करुआई है अर्थात् साँचे सुख नहीं हैं ॥ २१४ ॥

पानीते अति पातला, धूवाँते अति झीन ॥

पवनहुँते अति ऊतला, दोस्त कबीरा कीन ॥२१५॥

पानिहुँते पातर धूमों ते झीन औ पवनोंते चंचल ऐसो जो छुद्रमन ताको कबीराजे जीब ते दोस्त किये हैं सो चौरासी लक्ष्योनिमें डारदियो ॥२१५॥

सतगुरुवचनसुनौहोसन्तौ, मतिलीजैशिरभार ॥

होहजूर ठाढ़ाकहाँ, अबतैं समर संभार ॥ २१६ ॥

साहब कहै हैं सतगुरु जो कबीर तिनको वचन सुनिकै हे संतौ आपनेमें मनको भारा मति लेहु तुमसों समर है रह्यो है सो मनको जीति लेहु भैं हजूरमें ठाढ़ाकहाँ हों अर्थात् दूरि नहींहो जो तुम मनको जीतौ तौ भैं अपनायलेहुं ॥ २१६ ॥

ये करुआई बेलरी, औ करुवा फलतोर ॥

सिंधुनाम जब पाइये, बेलबिछोहा होर ॥ २१७ ॥

हे कल्पनारूपबेलि! तेरा फल बहुतकडुवाहै जो कल्पना करैहै सो नरकहीको जायहै सो तब सिंधुनाम पावैगो जौने जगतमुख अर्थवेद शास्त्रमाया ब्रह्मजीब सब जगतभरोहै तौनेको जब पावैगो तब साहबमुख अर्थ जानिकै साहब रत्नको पावैगो तब कल्पना बेलि को बिछोह है जायगो ॥ २१७ ॥

परदे पानी ढारिया, संतौ करहु विचार ॥

शरमी शरमा पचि मुआ, काल घसीटन हारा ॥२१८॥

गुरुमुख ॥ परदेते पानी ढरियाकहे गुरुवालोग नये मंत्र वनायकै परदे परदे उपदेशकियो औ सिखापनदियो कि काहूसों कहियो नहीं सब वेदशास्त्र झूठे हैं जीवात्मै सत्य है ताही मानो या समुझायदियो सो वही धरे धरे जीव नर कको गये जो साँचो राम नामहै ताको न जान्यो वही गुरुवनको बताओ मंत्र ताहीके भरोसे सब पूजापाठ धर्मकर्म सब झांडिदियो कहैहै हमनिष्कर्म हैं और यहबात नहीं जानै है कि भगवान् पूजादिक ये कर्मनमें नहीं हैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको ॥ “और कर्म सब कर्म हैं भक्ति कर्म निष्कर्म। कहैं कबीर पुकारिकै भक्ति करौ तजि भर्म” ॥ सो देखो तो भाजीके लियेतौ बाजारमें मूडफोरै हैं भगवान् की भक्ति करिबेको कहैहैं हम निष्कर्म हैं पिसानकै चौकडारि मालपुवा धरिकै चौकाकरै हैं आरतीकरै हैं औ भगवान् की आरती करिबेको कहैहैं हमहीं मालिक हैं हमारी आरती सब जने करते जाउ सो हे सन्तौ! विचारते तौ जाउ यह अपने शरमा शरमीमें षचिमुवाहै या कहैहै कि हम गुरुवन को उपदेश न छाड़ेंगे या नहीं जानै हैं कि या शरम में हमको औ हमारे गुरुवौ को यम घसीटिदारेंगे नरकमें डारि देयहैं तब मालिक द्वै कै न बचौगे तब कौन रक्षा करेगो साहबको तो जनबै न कियो । जिन साहबको जान्यो है हनुमान् अंगद कबीरतैं अबलौबने है तेहि ते साहबको भजन करो जेहिते कालते वचिजाउ नहीं तो शरमा शरमीमें नरकमें पचिमरौगे । औ तुम भगवान् को नहीं मानौहौ भगवान् के पाछे नहीं चलौ हौ सो ब्रह्म राक्षस होइगो तामें प्रमाण ॥ “नानुव्रजति यो मोहाद्भ्रजन्तं जगदीश्वरम् । ज्ञानाग्निदग्धकर्मापि स भवेद् ब्रह्मराक्षसः” ॥ इति पुरुषोत्तम माहात्म्ये ॥ औ सब झूठा है साहबको भजन साँचा है तामें प्रमाण कबीरजीको ॥

“ कश्चन केवल हरि भजन, दूजी कथा कथीर ।

झूठा आल जंजाल तजि, पकरो साँच कबीर ॥ १ ॥

जो रक्षक है जीवको, नाहिं करो पहिंचान ।

रक्षकके चीन्हे बिना, अंत होइगी हान” ॥ २ ॥

तेहिते तुम साहबको भजनकरो जाते साहब के लोकैजाउ जहां कालकी गम्यनहीं है तामें प्रमाण ॥

“ जहां कालकी गमि नहीं, मुआन सुनिये कोई ।

जो कोई गमि ताको करै, अजर अमर सो होइ ” ॥ १ ॥

साहबते बिमुख करनवाले गुरुवालोग यम दूतहैं तामेंप्रमाण ॥“ ॥ नानारू-
पधरा दूता जीवानांज्ञानहारकाः ॥ कालाज्ञांसमनुप्राप्य विचरन्तिमहीतले ” ॥२॥
औ कबीरजी चौकामेंरघुनाथजीकी पूजा षोडशही प्रकारकी लिख्यो है तामें
प्रमाण ॥

चौकाविधानका शब्द ।

अगर चंदन घसि चौक पुरावा सत सुकृत मन भावा ॥
भर झारी चरणामृत कीन्हा हंसनको बरतावा ।
पूरन मौज और रखवारा सतगुरु शब्द लखावा ॥
लौंग लायची नरियल आरति धोती कलशलसावा ।
श्वेत सिंहासन अगम अपारा सो अति बर ठहराया ॥
छांडे लोक अमृतकी काया जगमें जोलह कहाया ।
चौरासीकी बंदि छोड़ाया निर अक्षर बतलाया ॥
साधु सबै मिलि आरति गावैं सुकृत भोग लगाया ।
कहै कबीर शब्द टकसारा यमसों जीव छुड़ाया ॥ १ ॥
पूरण मासी आदि जो मङ्गल गाइये ।
सतगुरुके पद परशि परम पद पाइये ।
प्रथमै मँदिर झराय कै चँदन लिपाइये ॥
नूतन बख्ख अनेक चँदोवा तनाइये ॥
तब पूरण गुरु के हेतु तौ आसन बिछाइये ॥
गुरुके चरण परछालि तहाँ बैठाइये ।
गज मोतिनकी चौक सु तहां पुराइये ॥
तापर नरियल धोती मिष्टान्न धराइये ।
केला और कपूर तौ बहु बिधि ल्याइये ॥
अष्ट सुगंध सुपारी लो पान मँगाइये ।
पलौ सहित सो कलश सँवारिकै ज्योति बराइये ॥

ताल मृदङ्ग बजाइके मङ्गल गाइये ।
 साधु सङ्ग लै आरति तबहिं उतारिये ॥
 आरति करि पुनि नरियल तबहिं मोराइये ।
 पुरुषको भोग लगाइ सखा मिलि खाइये ॥
 युग युग क्षुधा बुझाइ तौ पाइ अघाइये ।
 परम अनंदित होइ तौ गुरुहि मनाइये ॥
 कहै कबीर सत भाय सो लोक सिधाइये ।

इहांपूजा के मंत्रनहीं लिख्यो सो पुरुष सूक्तनके मंत्र हैं ताते नहीं लिख्यो है॥

“ दशौ दिशा कर मेटौ धोखा । सो कड़हार बैठही चोखा ।
 दशौ दिशा कर लेखा जानै । सो कड़हार आरती ठानै ॥
 दशइंद्रीके पारिख पावै । सो कड़हार आरती गावै ।
 जो नहिं जानै एतिक साजै । चौका युक्ति करै क्यहि काजै ॥
 हिंसै कारण करहिं गुरुआई । बिगैर ज्ञान जो पंथ पराई ।
 पद साखी अरु ग्रंथ दढ़ावै । बिन परखन उत्तम घर पावै ॥
 शब्द साखीसिखिपारस करहीं । होय भूत पुनि नरकहि परहीं ।
 बिना भेद कड़हार कहावै । आगिल जन्म श्वानको पावै ॥
 पद साखी नहिं करहि बिचारा । भुंकि २ जस मरै सियारा ।
 पद साखी है भेद हमारा । जो बूझै सो उतरहि पारा ॥
 जबलग पूरा गुरु न पावै । तब लग भवजल फिरिफिरि आवै ।
 पूरा गुरु जो होय लखावै । शब्द निरखि परगट दिखलावै ॥
 एक बार जिय परचौ पावै । भव जल तरै बार नहिं लावै ।

साखी-शब्द भेद जो जानहीं, सो पूरा कड़हार ॥

कह कबीर धूमक्ष है, सोहं शब्दहि पार ॥ २१८ ॥

आस्ति कहो तो कोइ न पतीजै, बिना अस्ति को सिद्ध ॥
 कहै कबीर सुनो हो सन्तौ, हीरै हीरा विद्ध ॥ २१९ ॥

कबीरजी कहै हैं कि आस्तिकमत जो मैं सबको बताऊँहीं तो कोई नहीं पति
आयहैं काहेते कि गुरुवा लोगनकी बाणी मानि उनको सिद्धजानै हैं या नहीं
जानै हैं कि ये आस्तिकनहीं हैं साहब को नहीं जानै हैं इनते संसार न छूटैगो
साहबके जाननवारे जे सांचे साधु हैं तिनहीं ते संसार छूटै है काहेते हीरा ही
रैते बेधि जाय है ॥ २१९ ॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार ॥

दुर्जन कुम्भ कुम्हारके, एकै धका दरार ॥ २२० ॥

सज्जन साधुजन जे हैं ते सोनाहै जो सैकरनवार टूटै फिरि फिरि जुरिजायहै
औ दुर्जन जे हैं कुम्हारके कुम्भ कहे घड़ा जो फूटा तो फिरि नहीं जुरै है अर्थात्
जो साधुजन कहूं मांगमें भूलिहूजायँ परंतु फिरि समझाये वाहीमें लगिजायहैं
खोटी राह छांड़ि देइ हैं औ दुर्जन जे हैं ते घड़ासे फूटिजायहैं अर्थात् जोने
कुसंगमें परे तौनेहीके भये फिरि नहीं बूझै हैं ॥ २२० ॥

काजर केरी कोठरी, बूड़न्ता संसार ॥

बलिहारी तेहि पुरुषकी, पैठिकै निकसन हार ॥ २२१ ॥

यह काजरकै कोठरी मायाहै तौने में यह संसार बूड़िगयो सो वह जीवकी
बलिहारी है जो मायामें आय निकसि जाय ॥ २२१ ॥

काजरही की कोठरी, काजरहीका कोट ॥

तौभी काराना भया, रहाजो ओटहि ओट ॥ २२२ ॥

गुरुमुख ।

साहबकहै हैं कि यह माया काया काजरकी कोठरी है याके काजरहीके कोट
बनेहैं नाना आशा नानामत माने हैं सो यद्यपि ऐसेहू रह्यो परंतु मोको रक्षक
माने रह्यो मेरी भक्तिकी ओट ही ओट बचि गयो अर्थात् मायाते बचिगयो ॥ २२२ ॥

अर्बखर्व लौं दर्बहै, उदय अस्तलौं राज ॥

भक्ति महातम ना तुलै, ये सब कौने काज ॥ २२३ ॥

अर्बखर्बलौं द्रव्यभई अथवा अर्बखर्बलौं विद्याको पटजाता भयो साखी शब्द चौपाई दोहा कंठ भये सब शास्त्र कंठभये औ उदय अस्तलौं राज्यभयो बड़ों बादशाह भयो सबको अपने बश कैलियो अथवा महंत भयो पंडित भयो सबको उदय अस्तलौं चेला करिलियो औ शास्त्रार्थ करिकै जीतिलियो औ मन न जीत्यो तौ कहा कियो भक्तिके माहात्म्यको नहीं तुलैहै ॥ २२३ ॥

मच्छ बिकाने सब चले, ढीमरके दरबार ॥

रतनारी आँखियांतरि, तूँ क्यों पहिराजार ॥ २२४ ॥

मनमें लगिकै सबजीव मच्छमायाको अनुभव ब्रह्म है ताहीके हाथ जीव बिकाय गये औ ढीमरके दरबार सब चले जायहैं अर्थात् काल मनरूपी जालमें सबको फँदायलेहै ताहीके दरबार सब चलेजायहैं अर्थात् मायाके मारिबेकों सब उपायकरै हैं कि माया को नाशकैकै ब्रह्महैजायँ मनरूपी जालमें फन्दे मछरी जो मायाको अनुभव ब्रह्म ताही के साथ बिकाय गये अर्थात् वही में लीनभये ताहूपै कालते न बचे सो साहब कहै हैं कि तैतो मेराहै तेरे ज्ञान नयन रतनार रहेहैं कहे मोमें तेरो अनुराग रह्यो है तैं काहे मनरूपी जालमें पारिकै कालके दरबार चलो जायहै जामें मेरो अनुरागहै वे आपनो ज्ञान नयन खोलु मेरी निर्गुण भक्ति छा गुणवारी है सो करु मेरे पास आइकै मन मायां कालते बचि जायगो ॥ २२४ ॥

पानी भीतर घरकिया, शय्या किया पतार ॥

पांसापराकरमको, तबमैं पहिरा जार ॥ २२५ ॥

जीवमुख ।

“जीवकहै हैं कि मैं बाणीरूप पानीमें घरकियोहै गुरुबालोगं बाणीको उपदेश करिकै वही बाणीरूप पानीमें डारि दिये औ संसाररूपी जोपतारहै बन तामें शय्याकिया तब कर्मको पांसापरयो तामें मनरूपी जाल में पहिरयो अर्थात् मनरूपजाल में फँदिगयो ॥ २२५ ॥

मच्छ होय ना वाचिहो, ढीमरतेरे काल ॥

जेहि जेहि डावर तुम फिरौ, तहँ तहँ मेलै जाल २२६ ॥

हे जीव ! जो तुम मच्छ जोहै मायाको अनुभव ब्रह्म सोई द्वैकै जो बाचा-
चाहौ तौ न बाचौगे तेरो फँदावनवारो ढीमर जोहै मन सोई कालहै सो तुमको
फँदायकै कालके घर पहुँचाय देइगो अर्थात् जो ज्ञानकरि ब्रह्महू द्वैजाउगे तबहू
माया धरिही लै आवैगी अथवा समाधि करिकै प्राणको ब्रह्मांड में पठायकै
ज्योति में लीनौ होउगे तबहू माया धरिलै आवैगी तेहिते जौने जौने मत
जे डावर तामें फिरौगे कहे मतमें लागौगे तहाँतहाँ या मनरूपी ढीमर जाल
फँकिकै तुमको धरिही लै आवैगो तेहिते मन बचनके परे जो भक्तियोग तौनेको
जानौ तब वह कालते बचौगे सो भक्तिके गुण पाछे कहिआये हैं औ भक्तियोग
मन बचनके परै है तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दावली ग्रन्थको ॥

शब्द ।

अबधू ऐसा योग बिचारा । जो अक्षरहू सों है न्यारा ॥
जौन पवन तुम गङ्ग चढ़ावो करौ गुफामें बासा ।
सोतो पवन गगन जब बिनशै तब कह योग तमासा ॥
जबहीं बिनशै इंगलापिंगला बिनशै सुषुमन नारी ।
जो उनमुनि सो नाडी लागी सो कह रहै तुम्हारी ॥
मेरु दण्डमें डारि दुलैचा योगी आसन त्याया ।
मेरु दण्डकी खाक उठैगी कच्चे योग कमाया ॥
सोतो ज्योतिगगनमें दरशै पानीमें ज्यों तारा ।
बिनशो नीरनसों जब तारा निसरौगे केहि द्वारा ॥
द्वैतलाग बैराग कठिन है अटके मुनि जन योगी ।
अक्षरलौं सब खबरि बतावै जहँलौं मुक्ति बियोगी ॥
सोपद कहो कहे सो न्यारा सत्य असत्य निबेरा ।
कहै कबीरताहि लखुयोगी बहुरि न करिये फेरा ॥ २२६ ॥

बिन रसरी गरसव बँध्यो, तामें बँधा अलेख ॥
दीन्हो दर्पण हाथमें, चशमविना क्यादेख ॥ २२७ ॥

गुरुमुख ।

बिनरसरी सबकेगर बाँधिलियो ऐसों जो है धोखाब्रह्म तामें अलेख जे जीव हैं ते बँधे हैं साहब कहै हैं तिनके हाथमें दर्पणदियो रामनाम बताइ दियो सो चशम तो हैं नहीं कहे रामनामको ज्ञानतो है नहीं आपनोरूप कैसे देखैं किमें साहबको अंशहों मकार स्वरूपहों जब आपनोरूप न जान्यो तब मोको कहा जानै ॥ २२७ ॥

समुझाये समुझै नहीं, परहथ आप विकाय ॥
मैंखैंचतहाँ आपको, चला सो यमपुर जाय ॥ २२८ ॥

साहब कहै हैं कि मैं बहुत समझाऊँहों कि तैं मेरो है मेरे पास आउ आनके हाथ कहां बिकान जायहै नानामतनमें लागै है ब्रह्ममें लागै है कि आपहीको मालिक मानै है सो मैं बहुत खैंचौहों आपनी ओर कि तैं मेरे पास आउ यह यमपुरहीको चलोजायहै ॥ २२८ ॥

लोहे केरी नावरी, पाहन गरुवा भार ॥
शिरमें विषकी मोटरी, उतरन चाहै पार ॥ २२९ ॥

या काया लोहेकी नाव संसारसमुद्र पारजाबेको है मन पाहन ताको गरुवाभार भरो है तापर विषयरूप विषकी मोटरी शिरपर लीन्है है सो जीव कैसेकै पारजाय ॥ २२९ ॥

कृष्णसमीपी पाण्डवा, गले हेवारहि जाय ॥
लोहाको पारसमिलै, काई काहेक खाय ॥ २३० ॥

कृष्णसमीपके बसनवारे पाण्डवा ते हेवारमें गलेजाय सो कृष्णचन्द्रको जो वे जानते तो हेवारमें काहेको जाते काहेते जो पारसमें लोहा छुड़ जातो है तामें काई नहीं लगै है अर्थात् सोनाहै जायहै साहबको जाननवारी पारसही है जायहै

यामें या हेतुहै कि जे नीकी तरह साहबको जानै हैं तेँ यही दे है जायहैं सो गोपी याही देहै गई हैं सो ब्रह्मवैवर्तक में प्रसिद्ध है सो गोपिका नीकी प्रकार जान्यो है ॥ २३० ॥

पूरवऊगै पश्चिम अथवै, भखै पवनको फूल ॥

ताहूको तो राहुगरासै, मानुषकाहेकभूल ॥ २३१ ॥

पूरवते सूर्य उगै हैं औ पश्चिम अथवै हैं पवनको फूलभखै हैं अर्थात् प्रबल पवन चले है वाही भ्रमतरहै हैं ऐसे सूर्य हैं तिनहूं सूर्य को राहुगरासै है अरे मनुष्य जो तैं भूलै है कि पवनतेमें आत्माको चढ़ाय लेउंगो हजारन वर्षपवनै खाय जिवोंगो मुक्त है जायगो सो तैं केतेदिन पवनखायगो जे सूर्य केतौदिन पवनखायो ताहूको कालराहु गरासै है तैं कैसे कालते बचौंगे ॥ २३१ ॥

नैनके आगे मन बसै, पलपलकरै जो दौर ॥

तीनि लोक मन भूपहै, मन पूजा सब ठौर ॥ २३२ ॥

ज्ञाननयनके आगे मनहीं बसै है वह धोखाब्रह्म मनहीं को अनुभव है पलपलमें दौरै है नयन विषयनमें लगै है नाना मतनमें लगै हैं नानाज्ञान विचारकरै हैं तीनि लोकमें या मनहीं भूपहै मनहीं की पूजा सब ठौर होइहै अर्थात् मनहीं ब्रह्म है पुजवै है मनहीं जीवात्माको ज्ञान करै है किं मैहीं मालिकहों जो मनके परे साहब हैं ताको कोई नहीं जानै हैं ॥ २३२ ॥

मन स्वारथ आपहि रसिक, विषय लहरि फहराय ॥

मनके चलतै तन चलत, ताते सरबसुजाय ॥ २३३ ॥

या आपनो स्वारथ मनहींको मानिलियो मनको रसिक आपही भयो अर्थात् मनको रस आपही लेइ है मनके किये जे पाप पुण्य तिनको भोगैया आपही बन्यो है याही हेतुते याके विषय लहरि फहरायरही है सोई विषयनको जब मनचल्यो तब जीवहु चल्यो मनके चलते तनहूं चल्यो जाय है विषय करनको ताते सरबसुहानि या जीवकी होती है अर्थात् विषय लिये पापादिक कर्मकियो नरकको गयो औ येई विषयन लिये अप्सरनको भोगकरै है नानायाज्ञादिक कियो

स्वर्गको चलो गयो सो सर्वसु याको साहबहै तिनके ज्ञानकी हानि द्वैगई
पाण्डवनके दृष्टांतते उपासनाकाण्ड औ सूर्यके दृष्टांतते योगकाण्ड औ मनके
अनुभवके दृष्टांतते ज्ञानकाण्ड औ विषय लहरिके दृष्टांतते कर्म काण्ड कह्यो सो
इनमें लगिकै नित्यबिहारी साकेत निवासी जे श्रीरामचंद्र तिन को जीव
भूलिगये याहीते जीवनको जरा मरण नहीं छूटै है ॥ २३३ ॥

ऐसी गति संसारकी, ज्यों गाड़रकी ठाट ॥

एक पराजो गाड़में, सबै जात तेहिवाट ॥ २३४ ॥

या संसारकी ऐसी गति है जैसे गाड़रकी पाँति जो एक गाड़में गिरै तौ
बाहीराह सिगरी गिरंती जायहैं सो या संसारको भेड़ियाधसान यही है एक
जो कौनौ मत गहै तौ सिगरे वा मतगहैं नीकनागा को बिचार न करैं ॥ २३४ ॥

वा मारगतो कठिनहै, तहँ मति कोई जाय ॥

जे गै ते बहुरे नहीं, कुशलकहै को आय ॥ २३५ ॥

वामार्गतो महाकठिन है जे साहबके पास जायहैं ते नहीं लोटै हैं उनको
जनन मरण नहीं होयहै इहां फिरि आइकै वा मार्गकी खबरिको कहै अर्थात्
कुशल को बतावै रहिगे कुसंगी तिनको संग करिकै जीव नरक को चले जाय
हैं साहबको न जाने ॥ २३५ ॥

मारी मरै कुसंगकी, केराके ढिग बेर ॥

वह हालै वह अँगचिरै, विधिने संगानिबेर ॥ २३६ ॥

केराके साथ बैर जाँमै है तौ जैसे बैरके हाले केराको अंग फटिजाय है
वाके काँटाते तैसे कुसंगकीन्हे साहबको ज्ञान जातरहै है गुरुवन के वचनजे हैं
तेई काँटाहैं गुरुवालोग बैरहैं ॥ २३६ ॥

केरा तबहिं न चेतिया, जब ढिगलागी बेरि ॥

अबके चेते क्या भया, काँटन लीन्हो घेरि ॥ २३७ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि अरेकेरा ! अरेजीवौ तैंतो बड़ोकोमल है तब न चेतकियो जब तेरे समीप बैरलागी अर्थात् गुरुवा लोग उपदेश करनलगे अब तेरे चेते कहाभयो अबतो उपदेश रूप काँटा तोको घेरिलियो मेरे ज्ञानको फारिडारयो अब कहा चेते है तामें प्रमाण ॥ “आछेदिन पाछे गये कियो न हरिसोहेत” ॥ अब क्या चेते मूढ़तैं, चिडिया चुनिगई खेत ॥ २३७ ॥

जीव मरण जानै नहीं, अंधभया सब जाय ॥

बादीद्वारेदादिनहिं, जन्मजन्मपँछिताय ॥ २३८ ॥

सों कबीरजी कहै हैं कि साहब या प्रकारते उपदेश करै हैं पै जीवको कोई मरण नहीं जानै है कि हम मरि जायँगे हमारो जनन मरण न छूटैगो सो एकतौ आंधरही रहे साहबको ज्ञान नहीं रहो तापै गुरुवनको उपदेश भयो आँधरते आँधर होत जायँ हैं बादीके द्वारे दादि नहीं पावै अर्थात् जासों पूछै हैं कि हम कौनके हैं हमारो जनन मरण कैसे छूटै नरकते कौन हमारी रक्षा करै तौ वेतौ बादी हैं साहबको कैसे बतावैं और और मतमें लगाय दियो फिरि यादिहू कियो साहबको न पायो तातें जगतमें पँछितायहैं जनन मरण न छूटयो गुरुवासाहबको ज्ञान भुलाय दियो तामें प्रमाण ।

बिप्रमतीसीको ।

बिन परशन दरशन बहुतेरे द्वै हैं ब्रह्म ज्ञानी ।

बीज बिना बिज्ञान कथैगो धोखाकी सहिदानी ॥

कृतिम उपासी कर्म बिलासी जायँ ते जन यमद्वारं ।

हम करता भाजि करता द्वैरहे औरै के उपकारं ॥

राम कहैगा सो निबहैगा उलटि रहै जो गाड़ा ।

धोखा दुंदुर बहुत उटैगा राम भक्तिके आड़ा ।

हिंदू तुरुक दोऊ दल भूले लोक बेद बटपारं ॥

सत गुरु बिना सिद्धि नहिं कोई खिरकी केन उधारं ॥ २३८ ॥

जाकोसतगुरुनामिल्यो, व्याकुलचहुँदिशिधाय ॥
आँखिनसूझैवावरा, घरजारैघूरबुताय ॥ २३९ ॥

गुरुमुख ।

जाको सतगुरु नहीं मिलै हैं सो व्याकुल द्वैक चारों ओर धावै है कहूँ ब्रह्ममें कहूँ नाना ईश्वरनमें नानामतनमें लगै है कि हमारी मुक्ति द्वैजाय सो अरे बावरे तेरी आँखिनमें नहीं सूझै है और और मतनमें निदवय करै है सो घूरै है ताको कहा बुतावै है मेरोरूप औ आपनोरूप ताको तौ जानु या घरतो जरोजाय है ताको-बुताउ जातें जनन मरण छूटै घूर बुताये कहा है ॥ २३९ ॥

अनतवस्तुजोअनतैखोजै, केहिविधिआवैहाथ ॥

ज्ञानीसोईसराहिये, पारिखराखैसाथ ॥ २४० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनतकी वस्तु अनतै खोजै है केहयह जीव साहबको अंशहै सदाको दास है तौनेको कहै हैं कि ब्रह्म को है देवतनको है ईश्वरनको दासहै सो जौने साहबको दासहै ताको तो जानबही न कियो आपनो स्वरूप कौनी रीतिते जानै सो हम तो सोई ज्ञानीको सराहते हैं जो पारिख अपने साथ राखै है कि हम साहबके हैं दूसरे के नहीं हैं न ब्रह्मके न मायाके न ईश्वरन के हैं सोई सांचे ज्ञानीको हम सराहते हैं ॥ २४० ॥

सुनिये सबकी, निवेरिये अपनी ॥

सिन्धुरको सेंदोरा, झपनीकी झपनी ॥ २४१ ॥

जहाँ जहाँ सुनिये तहाँ तहाँ साहबहीकी बात निवेरि लीजिये और मत खण्डन करि डारिये काहेते कि वेदशास्त्र सोई है जामे साहबको परत्वहोइ जो कहूँ वेदशास्त्रकरिकै साहबको न जान्यो ताको उपदेश यहि रीतिते जैसे सिंधुर जो हाथी ताको सेंदुर शृङ्गारकियो वे शुण्डते धूरिभरियो झपनीकी झपनी कहै जैसे रज झपिगई तैसे जबलौं उपदेश सुन्यो तबलो ज्ञानरह्यो फिरि नहींरहै जौने वेद शास्त्रमें साहबको परत्वहोइ सोई अर्थ । तामें प्रमाण चौरासी अंगकी साखी ॥ “राम नाम निज जानिले, येही बड़ा अरत्थ ॥ काहेको पढ़ि पढ़ि मरै, कोटिन ज्ञान गरत्थ” ॥ २४१ ॥

बाजनदेवायंत्ररी, कलिं कुकुरी मति छेर ॥

तुझे बिरानी क्या परी, तू अपनी निवेर ॥ २४२ ॥

जे और और बातें सबकहै हैं सो या शरीर यंत्रकहे बीणा है जैसों बनवैया बजावै है तैसोबाजै है ऐसे या शरीरमनके आधीन है जहां चलावैहै तहां चलै है कहूं बक बक करावै है कहूं ब्रह्ममें लगावै है नानामतनको सिद्धांतकरै है सो वा यंत्रको बाजनदे मन बैकलकुकुरिया है वाको विष जो तेरे चढ़ेगो तै तुहूं बैकलहैमरि जाइगो अर्थात् चौरासी योनिमें परैगो सो तोको बिरानी कह परी है तैं अपनी निवेरु जो तेरे यन्त्र बाजै है सुरति कमलमें गुरु राम नाम ध्वनि उपदेश देई हैं ताको ध्यान करु राम नाम शब्द सब शब्दते अलगहै सोई साँचै और सब मिथ्याहै सो तैं राम नाम ते सनेहकरु राम नामको सनेही मरत नहीं है तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ “शुन्य मरै अजपा मरै अनहदहू मरि जाय ॥ राम सनेही नाम मरै, कह कबीर समुझाय” ॥ २४२ ॥

गावैं कथैं विचारैं नाहीं, अन जानैको दोहा ॥

कहकबीरपारसपरशेबिन,ज्योपाहनविचलोहा ॥ २४३ ॥

नाना पुराण नाना शास्त्र नाना मत गावैं हैं औ उनको कथनी करै हैं और औरको समुझावैं है परन्तु सर्व शास्त्रको अर्थ साहबही हैं यह नहीं बिचारै हैं जैसे शुक चित्रकूटी राम कहि दिये न चित्रकूटको अर्थ न रामको अर्थ जानै है आनैं में आन साजै है रसाभाव करि देयहै ऐसे सब शास्त्रको सिद्धांत जो जो साहब पारस रूप तिनको तो जानतही नहीं है कौनी रीति जीव लोहा कश्चन होइ अर्थात् जब स्पर्श होय उनको जानि उनमें लगे भजन करै तब कन्चन होय ॥ २४३ ॥

प्रथमैं एक जो हौ किया,भयासो बारह बाट ॥

कसत कसौटी ना टिका, पीतर भया निराट ॥ २४४ ॥

प्रथममें यह जीवको एक कियो कहे एक राहमें लगायो कि मेरी भाक्ति करै गो तौ संसारते छूटि जायगो औ यह बारह बन भयो कहे आपने रूपी बाणको

बारह लक्षमें लगायो अर्थात् छःशस्त्रके सिद्धांतमें छःदरशनमें लगाय दियो
बारह बाट भयो मोको न जान्यो सो जब ज्ञानरूपी कसौटीमें कस्यो कि साहब
को ज्ञानहै कि नहीं तब पीतरही द्वैगयो जगदमुखै ठहरयो साहबमुख न ठहरयो
साहबको ज्ञान सोना न ठहरयो ॥ २४४ ॥

कविरन भक्ति बिगारिया, कंकर पत्थर धोय ॥

अन्दरमें बिषराखिकै, अमृत डारै खोय ॥ २४५ ॥

कविरा जे जीव हैं ते भक्ति को बिगारि डारयो कंकर जो है जौने को पत्थर
जो हे मन तामें धोयकै ॥ “पाहन फोरि गंगयक निकरी चहुँदिशि पानी पानी ॥”
या पदमें पाहन मनको लिखि आये हैं सो पाषाणमें जो कंकरधोवै तौ और
चूरचूरहै जाय सो मेरे भक्तिरूपी जलमें आपने अणुजीव कंकरको तैं नहीं धोये
पाथरमें धोये ताते चूरचूरहै नानामत नानादेवमें लागे आपने स्वरूपको न जाने
अन्दरमें बिषयरूपी बिषराखि अमृतरूप साहबको ज्ञानताको खोइ डारयो ॥ २४५ ॥

रही एककी भई अनेककी, बेइया बहुत भतारी ॥

कहकवीर काके सँगजरिहै, बहुत पुरुषकी नारी २४६ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहे हैं कि हैं जीव! तैं तो मेरो रह्यो है सो तैं अब बहुत मतनमें
लगिकै बहुत मालिक मानन लग्यो सौ कौन तेरो उद्धार करैगो बहुत भतारी बेइया
काके काके साथ जैरगी ॥ २४६ ॥

तनबोहित मन कागहै, लखयोजन उड़ि जाय ॥

कबहीं दरिया अगमवह, कबहीं गगन समाय ॥ २४७ ॥

ये चारिउ शरीर बोहित कहे नावहैं तामें मनरूपी काग बैठाहै सो लख यो
जनलों उड़ि जायहै कबहूँ संसार समुद्रमें वहत रहै है औ कबहूँ पँचवां शरीर जो
कैवल्य चैतन्यकाश अगम जायबे लायक नहीं तामें महाभलयादिकनमें समायहै
सों जे हरिकी शरण जायहैं ते यहि संसार समुद्रको गोखुरकी तुल्य उतरि

जाय है तामें प्रमाण ॥ “इच्छाकर भवसागर बोहित राम अधार॥ कह कबीर
हरि शरण गहु गोबछ खुर बिस्तार ॥ २४७ ॥

ज्ञान रत्नकी कोठरी, चुपकारि दीन्हो ताल ॥

पारखि आगे खोलिये, कुंजी वचनरसाल ॥ २४८ ॥

ज्ञान रत्नकी जो कोठरी है तामें चुपको तारा दीन्हे ही रहिये जो कोई
समुझनेवारो पारखीहोइ ताहीके आगे रसालवचन कुंजीते चुपको तारा खोलिकै
ज्ञानको प्रकटकरिये काहेते कि जे नहीं समुझै हैं तिनके आगे न कहिये साह-
बको ज्ञानरत्न वे कहाजानैं ॥ २४८ ॥

स्वर्गपतालके बीचमें, द्वैतुमरीयकबिद्ध ॥

षट्दर्शन संशयपरो, लखचौरासीसिद्ध ॥ २४९ ॥

यह स्वर्ग पतालरूपी वृक्षमें जीव ईश्वररूप दुइतुमरीलगा हैं तामें जीवरूपी
तुमरीबेधी है कहे जीवहीते नानाशब्द निकसै हैं शरीर सारी हैं सो येई जे
जीवहैं षट्दर्शनआदिदिकै तिनको नाना मतकरिकै संशयपरो है साहबको नहीं
जानै हैं एक सिद्धांत नहीं पावै हैं तिनको चौरासी लाख योनि सिद्धि बनी हैं
भटकतही रहै हैं ॥ २४९ ॥

सकलौदुरमतिदूरिकरु, अच्छाजन्मबनाउ ॥

कागगवन बुधिछोड़िदे, हंसगवनचलिआउ ॥ २५० ॥

साहब कहै हैं कि अरे जीव ! तेरो जो सकलहै शरीर सोई दुर्मति है सो
पांचौ शरीरनको छोड़िदे औ आपनो अच्छो जन्म बनाउ कागबुद्धि को त्यागु
मेरो दियो हंस शरीर तामें टिकिकै मेरे पास आउ ॥ २५० ॥

जैसीकहै करै जो तैसी, रागद्वेष निरुवारै ॥

तामें घटै बढै रतिऔ नहिं, यहिविधिआपसँभारै ॥ २५१ ॥

गुरुमुख ।

साहबक कहै हैं कि जैसो उपाय मैं तेरे छूटिबेको कहि आयो है तैसोकरै
औ संसारमें नाना रागद्वेष करिराखै हैं ताको निरुवारै मोमें प्रीति रतिउभर
घटै न पावै एकरसही आवै ॥ २५१ ॥

द्वारे तेरे राम जी, मिला कबीरा मोहिं ॥

तूतो सबमें मिलि रहा, मैं न मिलौंगा तोहिं ॥ २५२ ॥

साहब कहै हैं कि हे जीव! तेरे मुखद्वारमें मेरो राम असनाम बनो है ताको भजन करि हे कबीर! जीवौ मोको मिलौ जा कहौ कि साहब दयालु हैं वोई मिलिबेकी सामर्थ्य देइंगे सो सत्यहै तेरी दया मोको लगै है परन्तु तैं सबमें मिलिरहा है ताते मैं तोको न मिलूंगा तैं सब छोड़िदे तो मैं तोको आपसे मिलौं आइ ॥ २५२ ॥

भर्मपरातिहुँलोकमें, भर्मवसा सब ठाउँ ॥

कहहि कबीर पुकारिकै, वसै भर्मके गाउँ ॥ २५३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे जीव! साहब को तैं कैसे मिलै काहेते कि तीन लोकमें कर्म भर्म जो है धोखाब्रह्म सो भरो है तिनमें भर्म बसो है भर्महीमें सब मिलिरहे हैं भर्मके पार जे साहबहैं तिन को तो जानबेही न कियो ॥ २५३ ॥

रतन लड़ाइनिरेतमें, कङ्कर चुनिचुनि खाय ॥

कहकबीरयहअवसरवीते, बहुरिचलेपछिताय ॥ २५४ ॥

रतन जो है साहब को ज्ञान ताको रेतमें लड़ाय कहे लगाय दियो अति-कठोर जो है कङ्कर ब्रह्मज्ञान तामें आत्माको लगायो चुनिचुनि खानलग्यो सो कबीर जी कहै हैं कि जब या अवसर बीति जायगो अर्थात् शरीर छूटिजायगो तब पछितायगो वा धोखाब्रह्म में कुछ न मिलैगो ॥ २५४ ॥

जेते पत्रवनस्पती, औ गङ्गाकी रेणु ॥

पण्डितविचारा क्याकहै, कविरकहै सुखवेणु ॥ २५५ ॥

सारासारके बिचार करनेवारे पण्डित तोको केतो समुझावेंगे कबीरजी कहैहैं कि जेतो मैं समुझायो है कि वनस्पती पत्र गिनि जायँ औ गंगाकीरेणु गनी-गनिजायँ परन्तु मेरे मुखकेबैन गने नहीं गिनिजायहैं तऊन तुम बूझचो ॥ २५५ ॥

हमजान्यो कुलहंसहौ, ताते कीन्हो संग ॥

जो जनत्यों बकवरणहौ, छुवन न देत्यों अंग ॥ २५६ ॥

कबीरजीकहै हैं कि हमतो तुमको हंसके कुलमें जानते रहे हैं ताते तुमको उपदेश कियो तुम्हारो सङ्ग कियो है जो तुमको बक के बर्ण जानते कि हंस नहींहो तो एकौ अंग छुवन न देत्यों अर्थात् उपदेशकी बातहू न चलावतो उपदेश को कौन कहै ॥ २५६ ॥

गुणिया तो गुणको गहै, निगुण गुणहि विनाय ॥

बैलहि दीजै जायफर, क्या बूझै क्या खाय ॥ २५७ ॥

गुणियाकहै जोसगुणहोय है सो गुणको गहै है सत रज तमको जो धारण करै है सो अशुद्धई रहै है ते मायाते नहीं छूटे हैं औजो निर्गुण उपासकहोइ है सो सगुणको विनाय है सो निर्गुणवाले सगुणवाले साहबके गुणको कहा-जानैं वेतो सगुण निर्गुणके परे हैं मायाकृत गुणते रहित हैं दिव्यगुण सहित हैं काहेते कहै हैं कि बैलके आगे जो जायफर धरिदीजिये तौ कहा बूझै क्याखाय ऐसे वे साहबके गुणको कहाजानैं ॥ २५७ ॥

अहिरहु तजि खसमहु तज्यो, विना दाँतको ठोर ॥

मुक्तिपरी विललातिहै, वृन्दावनकी खोर ॥ २५८ ॥

विनादाँतको ठोरजो है बूढा गाय बैल ताको अहिरौ चराइबो छाँड़िदेइ है और खसम जो है बैलको मालिक सोऊ छोड़ि देइ है अर्थात् बूढाजानिकै कि मेरे कामको नहीं है तब वह बैल वृन्दावनकी खोरि विललानलग्यो ऐसे जब मनरूपीदाँत उखारिहारयो तब अज्ञानअहिर याको छोड़िदियो औ याको खसम जो है माया सबलित ब्रह्म सो जब मन न रहिगयो तब याहू छाँड़िदियो तब आपहीआप मुक्त है गयो सर्वत्र साहबहीको देखन लग्यो जैसे वृन्दावनमें डारमें पातमें कृष्णदेखिपरै हैं मुक्ति परीधिललाइहै काको मुक्तकरै ऐसे यहू सर्वत्र साहबको देखनेलग्यो मुक्तही हैगयो मुक्तिकाको मुक्तकरै तामेंप्रमाण ॥ “सबन-दियाँ गङ्गाभई, सब शिल शालिग्राम ॥ सकलौ बन तुलसी भयो, चीन्ह्यौ आत्माराम” ॥ २५८ ॥

मुखकी मीठी जे कहैं, हृदयाहै मति आन ॥

कहकबीर तेहिलोगसों, रामौ बड़े सयान ॥ २५९ ॥

जो या भाँति ते मनको त्यागिकै सर्वत्र साहब को देखै हैं तिनको साहब सर्वत्र देखिपारै हैं औ जिनके मनमें औ मुख में आनै आन है तिनको कबीरजी कहै हैं कि रामऊ बड़े सयानहैं अर्थात् उनते दूरिरहैं हैं ॥ २५९ ॥

इतते सबतौ जातहैं, भार लदाय लदाय ॥

उतते कोइ न आइया, जासों पूछौं धाय ॥ २६० ॥

नानाकर्मके नाना उपासनाके नानाज्ञानके भार लदाय-लदाय इतते सबजात हैं परंतु उहांते ऐसाकोई न आया जासों धायकै उहांकी खबरिपूछौ कि कौन फल-पाया सो आपनेहीं जन्मकी खबरि नहीं जानै साहबकी खबरि कहा जानै ॥ २६० ॥

भक्तिपियारीरामकी, जैसी प्यारी आगि ॥

सारा पाटन जरिगया, फिरि फिरि ल्यावै माँगि ॥ २६१ ॥

यह भक्ति साहबकी बहुत पियारी है जैसे आगि पियारी होइ है कि आंगि लगी औ सारा पाटन कहे शहर जरिजाय पुनि आगीकी चाहना बनी हीरहै है पुनि पुनि माँगिलै आवै है आपनी करै है काम लोग ऐसे साहबकी भक्ति केतौ लोग साहबकी भक्ति करि संसारते पारद्वै गये परंतु अबतक जो कोई भक्ति करै है सो पिआरै होत जाय है संसारते उतरिजाय है ॥ २६१ ॥

नारिकहावै पीउकी, रहे और सँग सोइ ॥

जारमीत हिरदै वसै, खसम खुशीक्या होइ ॥ २६२ ॥

नारितौ अपने प्रीतमकी कहावै है औ आनपति लैकै सोइ रहै है तौ खसम कैसे खुशी होय ऐसे यह जीव साहब को अंश है और और मतमें लग्यो कहीं ब्रह्म में कहीं माया में सो साहब कैसे खुशी होय ॥ २६२ ॥

सज्जनतौ दुर्जनभया, सुनि काहूकोबोल ॥

काँसाताँवाहैरहा, नहिं हिरण्यका मोल ॥ २६३ ॥

‘सज्जन शुद्ध जीव हैं ते गुरुवालोगन के बोल सुनिकै दुर्जन द्वैगये सो जो
हिरण्यका मोल है सो जातरहा काँसा तौबाकी तुल्य द्वैरहा है ॥ २६३ ॥

विरहिन साजी आरती, दर्शनदीजै राम ॥

मुयेते दरशनदेहुगे, आवै कौने काम ॥ २६४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचन्द्रके बिरही जीवहैं ते आरतीसाजे खड़े हैं
कि जो रामजी मिलैं तौ आरतीकरैं संसार छाँड़ि एक तुम्हारे मिलिबेकी आशा
किये हैं सो हेसाहब ! दर्शनदीजै मुयेते दर्शनतो देवही करोगे परन्तु औरे जीवन
के काम न आवोगे काहेते वेतौ उपदेश करही न आवैंगे साहब बिरहीको मिलै
है तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ “विरहिन जरती देखिकै, साईं आये-
धाय ॥ प्रेमबुन्दते सींचिकै, हियमें लई लगाय” ॥ २६४ ॥

पलमें परलयवीतिया, लोगन लगी तमारि ॥

आगिल शोच निवारिकै, पाछे करो गोहारि ॥ २६५ ॥

पलभरेमें प्रलयतेरी होती जायहै आयुक्षीण होती जायहै यही तमारि लोगनके
लगी है फिरि वा घरी नहीं मिलै ताते आगिल शोच छाँड़िदेव जौन धन जोरि
जोरि स्त्री लरिकनहेत धरचोहै पाछिल गोहारिकरौ साहब को जानो जाते जनन
मरण छूटै ॥ २६५ ॥

एकसमाना सकलमें, सकलसमाना ताहि ॥

कविरसमाना बूझमें, तहाँ दूसरा नाहि ॥ २६६ ॥

एक जो ब्रह्महै सो सब जीवनमें समाय रह्यो है औ कबीरजी कहै हैं कि
मैं बूझमें समान्यो है ब्रह्मके प्रकाशी औ सब जगत् के अन्तर्यामी ऐसे जे
श्रीरामचन्द्र तिनको जब बूझ्यो तब वही बूझमें समायरह्यो है सर्वत्र साहबही
को देखनलग्यो दूसरा न देखत भयो मुक्तद्वै सांचा दासभयो तामें प्रमाण
कबीरजी को ॥ “जीवन मुक्तै द्वैरहै, तजै खलककी आस ॥ आगे पीछे हरिफिरैं,
क्यों दुखपावै दास ” ॥ २६६ ॥

यकसाधे सबसाधिया, सबसाधे यकजाय ॥

उलटिजो सींचै मूलको, फूलै फलै अघाय ॥ २६७ ॥

एक जो साहबकी भक्तिहै ताके साधे सब सधिजायहै अर्थात् लोकौ परलोक बनिजायहै और सब साधेते अर्थात् नानामतनमें लागेते एक जो साहबकी भक्ति सो जातरहै है औ ऊपरते वृक्षके जलमें डारिराखै तौ पत्ता फूलफल सरिजायहै औ जो वृक्ष को मूलते सींचै तौ फूलैफलै अघायकै ऐसे सबके मूल साहबहैं तिनकी भक्ति कीन्हे सब फूलैफलै है दूसरेकी चाह नहीं रहिजायहै दूसरे की उपासना में संसार नहीं छूटै है ॥ २६७ ॥

जेहि बन सिंह न संचरै, पक्षी नहिं उड़िजाय ॥

सोबन कबिरन हीठिया, शून्यसमाधि लगाय ॥ २६८ ॥

जेहि बाणी रूप बनमें कहे जेहि बाणीते ब्रह्म ज्ञानौ कथै है तौनी बाणीमें सिंहजे हैं शुद्धजीव साहबके जाननवारे ते नहीं संचरै हैं कहे नहीं जायहैं औ पक्षी जे हैं नानामतवारे नानाशाखवारे ते आपने आपने पक्षकारि ब्रह्मको बिचारकरै हैं उड़ै हैं पार कोई नहीं पावै हैं सो तौने बनको कबीर जे हैं जीव सोही ठिया कहे हीठत भयो वही शून्य समाधि लगायकै साहबकी प्राप्ति न भई तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ “ शून्य महलमें सुन्दरी, रही अकेले सोइ । पीउ मिल्यो ना सुखभयो, चली निराशा रोइ ” ॥ २६८ ॥

बोली एकअमोलहै, जो कोइ बोलै जानि ॥

हिये तराजू तौलिकै, तब मुख बाहर आनि ॥ २६९ ॥

सो वे शून्य समाधि लगायकै शून्य ब्रह्ममें जायहैं तिनको कहि आये अब ज्ञान कारिकै जे ब्रह्ममें लीनहै हैं तिनको कहै हैं कि वह बोली सोहं अमोल ताको जो कोई जानिकै हियेके तराजूमें तौलिकै मुखके बाहर लैआइकै बोलै कहे श्वास श्वासमें यही जपे जातमें सो आवत में हृदय तराजूमें यही तौले कि सो पार्षदरूप हंस साहब को है ॥ २६९ ॥

बोहूतौवैसहिभया, तू मतिहोइ अयान ॥

तूगुणवंता वे निरगुणी, मतिएकैमें सान ॥ २७० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि योगी तौ समाधि करिकै शून्यमें गये औ बहू जे हैं वह ज्ञानी सहजसमाधिवारे तौनौ ज्ञानकरिकै वैसेभये कहे वही शून्यमें समाय रह्यो तू मति अयान होय कहे अज्ञानी होइ तूतो गुणवंता कहे दिव्यगुण सहित जे साहब हैं तिनको है दिव्यगुण तेरेहूहै निर्गुण जो धोखा ब्रह्म तामें तू काहे सानै है तू मतिसान साँचाहैकै तू असाँच काहे होइहै ॥ २७० ॥

साधू होना चहहुजो, पक्काके संगखेल ॥

कच्चासरसों पेरिकै, खरी भया नहिं तेल ॥ २७१ ॥

जो तुम साधु होना चाहो तौ पके जे साहबके जाननवारे तिनके संग खेल कहे सत्संगकरौ जो तुम और नाना देवता नाना मतनमें लंगौगे तौ तुम्हारो न लोकै बनैगो न परलोकै बनैगो जैसे कच्चे सरसों को पेरनो न तेल भयो न खरी भई ॥ २७१ ॥

सिंहैकेरीखालरी, मेढ़ा ओढ़े जाय ॥

बाणीते पहिंचानिया, शब्दहि देत बताय ॥ २७२ ॥

सिंहकी खालरीकहे शुद्ध जीवनको वेष गुरुवालोग संसार में बनाये कण्ठी छापा टोपी दीन्हें हैं सबलोग जानैं कि बड़े साधुहैं जैसे सिंहकी खालरी मेढ़ाको बढ़ायदेइ अर्थात् मढ़िदेइ तो सब सिंहकी नाई जानैं हैं परंतु जब भ्याँ भ्याँ बोलन लग्यो तब बाणी ते जानि परेउ कि सिंह नहीं है मेढ़ाहै ऐसे जब गुरुवनको सत् सङ्गकीन्ह्यो तब बाणीते जानिपरे कि ये साहबको नहीं जानैं हैं बेधैभरि बनाये हैं इनते संसार न छूटैगो तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ “ स्वामी भया तो का भया, जान्यो नहीं बिबेक ॥ छापा तिलक बनायकै, दगै जन्म अनेक ॥ १ ॥ जप माला छापा तिलक, सैर न एकौ काम ॥ मन कांचे नाचे बृथा, साँचे राचे राम ” ॥ २७२ ॥

ज्यहि खोजत कल्पनभया, घटहीमें सो पूर ॥

बाढ़ेगर्वगुमानते, ताते परिगो दूर ॥ २७३ ॥

जौने मुक्तिको खोजत खोजत कल्पभयो अर्थात् कल्पनाकरत करत कल्पना रूप द्वैगया ब्रह्ममें लीनभया मुक्तिको मूल जो रामनाम सो तेरे घटही में है ताको अहंब्रह्मास्मिके गर्बते तोको दूरि परिगयो अबहं समुझ तौ तेरे समीपही हैं ॥ २७३ ॥

दश द्वारेका पीपरा, तामें पक्षी पौन ॥

रहिवेको आश्चर्य है, जायतो अचरज कौन ॥ २७४ ॥

रामहि सुमिराहिं रणभिरैं, फिरैं औरकी गैल ॥

मानुषकेरीखालरी, ओढ़िफिरतहैं बैल ॥ २७५ ॥

२६७ । रामनामको तौसुमिरै है परन्तु रामनामजापिवे की विधिगुरुते नहीं पाये बादविवाद करत साधुनते भिरतफिरैं हैं साहबको नहीं जानै हैं ते मानुषकी खाल ओढ़ेतौ हैं परन्तु बैलहैं अर्थात् पशु हैं जानै नहीं हैं ॥ २७५ ॥

खेत भला बीजौ भला, बोइये मूठीफेर ॥

काहे बिरवारूखरा, या गुणखेतै केर ॥ २७६ ॥

खेती तो नौ कई है परन्तु तृणादिकनके जरको कारण वामें बनो है त्यहिते बिरवा उठै नहीं पावै तृणछाय जायहै सो या गुण खेतै को है ऐसे खेत अंतः करणमें नाना बासनारूप तृण जानिरहे हैं तामें रामनामरूपी बीज फेरि फेरि बोवै हैं परन्तु तृण बासननके मारे लगै नहीं पावैं साहबमें प्रीति नहीं होय देइ जब सत्संग करि कै निराय डारे तौ तृणऔ रामनामरूप अंकुर दृढ़ हैजाय साहब को जाननलगै संसार छूटिजाय पापजारेमें नामकी बड़ी शक्ति है तामें प्रमाण ॥ “यावती नान्मिवै शक्तिः पापनिर्दहनेहरेः ॥ तावत्कर्तुनशक्नोति पातकम्पातकीजनः” ॥ २७६ ॥

गुरु सीढ़ीते उतरै, शब्द विमूखा होइ ॥

ताको काल घसीटिहै, राखिसकै नहिं कोइ ॥ २७७ ॥

गुरुके बताये साधनसीढ़ीमें चढ़ो फिर उतरि और और साधनमें लगो राम नामते बिमुख द्वैगयो ताको कालनरकमें घसीटकै डारिही देइगो कोई नहीं राखिसकैगो ॥ २७७ ॥

आगि जो लगी समुद्रमें; जरै सो कांदौ झारि ॥

पूरव पश्चिम पाण्डिता, मुये बिचारि बिचारि ॥२७८॥

या संसार समुद्रमें अज्ञानरूपी अग्नि लगीहै सोपूरबपश्चिमके पंडित कहे उदय अस्तेके पाण्डित बिचारि बिचारिमरे परंतु अज्ञान रूपी अग्नि न बुतानि उपासना करिकै ज्ञानहू करिकै संसार समुद्र सूखि हू गयो परंतुवामूल अज्ञानरूप कांदौमें फँसेजरे जायहैं ॥ २७८ ॥

जो मोहिं जानै त्यहिमें जानौ।लोक वेदका कहा न मानौ ॥

भूभुरघाम सबै घटमाहीं।सबकोउबसै शोककी छाहीं॥२७९॥

गुरुमुख ।

अज्ञानरूपी घामते अंतःकरणरूपी भूमि सबकै तपिरही है शोकरूपीजे नाना उपासना तिनकी छाया चाहै है परंतु बहीते और तप्त होयहै शतिल नहीं होइहै सो मोको तो जानतही नहीं हैं मैं वाको काहेको जानौ जो कोई मोको जानै तौ मैं वाको जानौ जानबही करौ लोकवेदतो कहतही है कि जो जाको है सो ताहूको जानै है सो या लोक वेदको कहा मानबहीकरौ अथवा कैसो पापी होइ जो मेरी शरण आवै तौ मैं लोक वेदका कहा न मानूं वाको शरणमें राख बई करौ वाके सम्पूर्ण पापमैंहीं छुड़ाये देऊं तामें प्रमाण ॥ “ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च या चते ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्रतम्मम ” ॥ २७९ ॥

जौन मिलासो गुरुमिला, चेलामिला न कोइ ॥

छइउलाखछानबे रमैनी, एकजीव परहोइ ॥ २८० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि एकजीवके उपदेशपर मैं छः लाखछानबे रमैनी युगयुग कह्यो पै मेरो कह्यो कोई न समझ्यो जो मिलो सो गुरुही मिलो चेला कोई न मिलो जो मेरो कहो बूझै साहबको जानै संसारते छूटै छानबे रमैनी में प्रमाण ॥ “ सहस्रछानबे और छःलाखा ॥ युगपरमाण रमैनी भाखा ॥२८०॥

जहँ गाहक तहँहों नाहिं, हों जहँ गाहक नाहिं ॥

विनबिबेकभटकताफिरै, पकरिशब्दकीछाहिं ॥ २८१ ॥

गुरुमुख ।

जहां नाना ईश्वर नाना उपासना नाना ज्ञान इन एकहूको जहां गाहकहै तहां में नहीं हौ अथवा जहां कौनिहूं बस्तुकी चाहहै तहां में नहीं हों जहां कौनिहूं बस्तुकी चाह नहीं है तहांमें हों सो बिना बिबेक कहे बिना सांच असांचके जाने अर्थात् सांच जो रामनाम तांके बिना जाने गुरुवालोगनके शब्दकी छांह पकरिकै संसार भटकत फिरै है जनन मरण नहीं छूटै है जब रामनाम जानै तब संसारते छूटै तामें प्रमाण “सप्तकोटि महामन्त्रादिचत्तवि भ्रम कारकाः ॥ एक एव परो मन्त्रो राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ २८१ ॥

शब्दहमाराआदिका, इनते बली न कोइ ॥

आगे पाछे जोकरै, सो बलहीना होइ ॥ २८२ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि शब्द जो है हमारों रामनाम सो आदिकाहै अर्थात् राम नामहीं तें सबकी उत्पत्ति भई है सो या रामनामते बली कोई नहीं है यह आदि शब्द जो रामनाम तांके जपिबेमें जो आगे पीछे करै है अर्थात् याको बल छोड़ि और देवतनको बल मान है सो बलहीन होइहै अर्थात् मुक्ति होनेको बल नहीं रहि जाय ॥ २८२ ॥

नगपषाणजगसकलहै, लखिआवै सब कोइ ॥

नगते उत्तमपारखी; जगमें बिरला कोइ ॥ २८३ ॥

या जगमें नग जो है तिहारों मन सो पाषाण है रह्यो है त्यहितें तुमहूं पाषाण मैगयो मनमें मिलिकै जग हैगये सो वहीमें आवै है वहीमें जाइहै सो नग जो हे मन त्यहितें उत्तम जे पारखी जीव हैं अर्थात् मनते न्यारे जे जीव हैं तौन जक्तमें कोई बिरलहै औ मनको माणिक पीछे बेलिमें कहि आयेहैं ॥ २८३ ॥

ताहि नकहिये पारखी, पाहनलखै जो कोइ ॥

नग नल या दिलसों लखै, रतनपारखी सोइ ॥२८४॥

जो कोई पाहनरूपी मनको देखै है अर्थात् जब भ्रम जाके मन बनो रहे ताको पारखी न कहिये औ जो कोई नर आपनो आत्मारूप जो है नग स्वस्वरूप सो आपने दिलमें रामनाममें देखै है अर्थात् मकार स्वरूप जो है आपनो स्वस्वरूप ताको रकार रूप जै हैं साहब तिनके समीप देखै सोई पारखी है जब नग मुन्दरी मे जड़ि जाय है तबहीं शोभा होय है नहीं तो पाहनै है ॥ २८४ ॥

सारीदुनियाँ विनशती, अपनी अपनी आगि ॥

ऐसा जियरा नामिला, जासों रहिये लागि ॥२८५॥

सारी दुनियाँ आपनी आपनी आगिमें कहे कोई ब्रह्ममें लागि कै कोई नाना देवतनमें लागि कै कोई नाना मतनमें लागि कै विशेषते विनशि रहे है साहब को नहीं जानै हैं सो कबीरजी कहै हैं ऐसा जियरा कहे रामोपासक सन्त कोई न मिला जासों लागि रहे अर्थात् सत् सङ्ग करौं कहे जे साहब को नहीं जानै ते विनशि जाय हैं तामें प्रमाण ॥ “यश्चरामनपश्येतयंचरामोनपश्यति ॥ निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते ॥ २८५ ॥

सपने सोया मानवा, खोलि देखै जो नैन ॥

जीव परा बहु लूटमें, ना कछु लेन न देन ॥ २८६ ॥

जो मानुष आपनी आँखि खोलिकै देखै तो सब स्वप्न है यह जीव बहुत लूटमें परयो है नाना मतनमें नाना उपासननमें लग्यो है साहब को नहीं जानै ताते न कछु लेन है न देन है यांते या आयो कि इनमें बृथै लागे हैं मुक्ति काहूकी दई नहीं दैजाय है या सब स्वप्न है तामें प्रमाण गोरख गोष्ठीको कबीरजी को गोरख पूछे हैं ॥

कर्ताको स्वरूप कौन! अण्डका स्वरूप कौन! अण्ड पार बसै कौन! नादविन्दुयोग कौन ? जीव ईश्वर भोग कौन ? भूमी अवतार कौन ? निराकार पार कौन ? पाप पुण्य करै कौन ? वेद औ बेदान्त कौन ? बाचा औ अबाचा कौन ? चंद्र सूर्य भास कौन ? पञ्चमें प्रपंच कौन ? ओहं औ सोहं कौन ? स्वर्ग नरक

बसै कौन ? पिण्ड औ ब्रह्मांड कौन ? आत्म परमात्म कौन ? जरा मरण काल कौन ? गुरु शिष्य बंध कौन ? क्षर अक्षर निरक्षर कौन ? तबकबीरजीबोले ।

नाद बिंदु योग स्वप्न, जीव ईश्वर भोग स्वप्न, भौमी अवतार स्वप्न, निराकार स्वप्न है ।

पाप पुण्य करै स्वप्न वेद औ बेदान्त स्वप्न बाचा औ अबाचा स्वप्न चंद्र सूर स्वप्न है ॥ इत्यादिक बहुत बाक्यहैं ॥ २८६ ॥

नष्टैका यह राज्यहै, नफरक वरतै द्वैक ॥

सारशब्द टकसारहै, हिरदयमार्हि विवेक ॥ २८७ ॥

नष्टजो है धोखा ताहीको यहराज्यहै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि कहिकै सब नष्टभये औ नफरजो है काल ताही को छेक संसार बरत रह्यो है अर्थात् सब संसारको काल छेकिछेकि खाये जायहै सारशब्दजो रामनाम टकसार ताको हृदय में कोई कोई विवेक करतभये अर्थात् कोई साहेबको न जानतभये संसारते न छूटतभये ॥ २८७ ॥

दृष्टमान सब बीनशै, अदृष्टलखै ना कोइ ॥

हीनकोइ गाहकमिलै, बहुतैसुख सो होइ ॥ २८८ ॥

जहांभरदृष्टमानहै सो सबबिनशै है नाशहोयहै औ मनबचन के अगोचर जो ब्रह्महै ताकोतौ कोई देखतै नहीं है धोखही है सो दृष्ट अदृष्ट के परे हीन कोई कहे कोई हीनहोइ अर्थात् दीन होइ ताको गाहक ऐसे जे साहब श्रीराम-चन्द्रते मिलैं जो जीवको तौ बहुतसुख सो होय अर्थात् जननमरण छूटिजाय साहबके समीप सेवामें बनोरहै तामें प्रमाण ॥ गोसाईजीकोदोहा ॥ “ पदगहि कहति सुलोचना, सुनहु बचनरघुवीर ॥ तुमहिं मिले नहिं होइ भव, यथा सिन्धु-करनीर ” ॥ २८८ ॥

दृष्टिहि मार्हि विचारहै, बूझै बिरला कोइ ॥

चरमदृष्टि छूटै नहीं, ताते शब्दी होइ ॥ २८९ ॥

जोकहो साहबको देखै कैसे हैं तौ दृष्टिही में बिचारहै साहब को देखै है या चर्मदृष्टिकरिकै साहबको नहीं देखै या बात कोई बिरला बूझै है या जीवकी

हंसजीव बसै है सो या जीवठौरमें न लग्यो कहे साहबके पास न गयो वहीमन-
के ओटमें रहिगयो अर्थात् मनरूपी सरोवरमें रहिगयो ॥ २९७ ॥

मधुरबचनहैं औषधी, कटुकबचनहैं तीर ॥

श्रवणद्वार है संचरै, शालैं सकल शरीर ॥ २९८ ॥

कटुकबचन तीरहैं औ अधुरबचन औषधहैं ते ये दोऊ श्रवण द्वारहैंकै सञ्चरै
हैं कहे जाइहैं औसिगरे शरीरमें शालैं हैं कहे व्याप्त हैजायहैं जो कोई मीठ बचन
कह्यो तौ वासों रागभयो औ जो कोई कटुकबचन कह्यो तौ वामें द्वेषभयो औ
मधुरबचन ते जहां राग कियो जहांमन लग्यो तहै जन्मतभयो औ कटुकबचन
सुनि कोप करि बधादिक कियो तेहि ते आयु हानिभई मरतभयो याते मधुर
बचन कटुकबचन दोऊ बरोबर शालैं हैं ॥ २९८ ॥

ई जगतो जहडेगया, भया योग ना भोग ॥

तिलतिलझारिकबीरलिय, तिलठीझारैलोग ॥ २९९ ॥

या जगतो जहडेगयो कहे हैगयो काहेते कि न याको योगही सिद्ध भयो
न भोगही सिद्धभयो कैसेउ हजारन वर्षलों योगकै जिये महामलय भररहे
आखिर नाशही हैजाइहै जो धर्मकरि दिविको भोगकियो तौ जब पुण्यक्षीण
हैजाइहै तबतौ मृत्युही लोकको आवै है याते न भोग सिद्धभयो न योग सिद्ध-
भयो सो तिलजो है रसरूपाभक्ति साहबकी ताको तौ श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं
झारिलियो तिलेठी जो है नानाउपासना तिनकी और लोग झारै हैं नामकै हैं
जामें रस नहीं है ॥ २९९ ॥

ढाढसदेखुमरजीवको, धसिके पैठिपताल ॥

जीवअटकमानैनहीं, गहिलैनिकरयो लाल ॥ ३०० ॥

मरजीवते कहावै हैं जेसमुद्रमें पैठिरत्र निकारै हैं ताको ढाढस देखो ढाढस
करिकै पातालमें पैठै हैं जीवको अटक नहीं मानै हैं समुद्रते लालगाहि लैआवै हैं
तैसे जीव तैहूँ मनादिकनको त्यागिदे मरिबेको नडेराय विदवासकरिकै साहब
रसरूपसागरमें पैठु ॥ ३०० ॥

येमरजीवाअमृतपीवा, काधसिमरैपताल ॥

गुरुकीदयासाधुकीसंगति, निकसिआउ यहिकाल ३०१

ये मरजीवा कहे तैं तो अमृतको पीवनवारो पातालमें धसिकै कहे संसार में परिकै कहामैर है औ जियै है नरकको चलाजाइ है सो गुरुकी दयातें साधुनकी संगतिते तू यंहीकालमें संसारते निकसिआउ जो तैं साहबके जाननवारें साधुनकी शरणहोइ वाही चालचलै ॥ ३०१ ॥

केते बुंद हलफे गये, केते गयो बिलोइ ॥

एक बुंदके कारणे, मानुष काहेको रोइ ॥ ३०२ ॥

हा इति कष्टमें है सो कबीरजी कहै हैं कि हाय केतन्यो जीव लफेकहे नैगये अर्थात् दरकि गये अर्थात् साहबके मार्गचले साहबकी उपासनाकियो पै गुरुवाळोग जो नानामत लखायो तिनहींमें लफेकहे नैगये सो केतौ तौ याप्रकारसों गये औ केतौ पहिलेहीते बिगोयगये कहे बिगरिगये सो हे मानुष! श्रीरामचन्द्रको जो आनन्दसमुद्र ताके एकबुन्दके कारण हे संसारीजीव ! तैं काहेरोवै है धोखाब्रह्मको छांडि साहबको जानु जाते जननमरणछूटे ॥ ३०२ ॥

आगिजो लगीसमुद्रमें, टुटिटुटि खसै जो झोल ॥

रोवै कविरा डिम्भिया, मोरहीरा जरै अमोल ॥ ३०३ ॥

या संसारसमुद्रमें अज्ञानरूपी आगिलगी कर्मरूप झोल जे शरीरके कारणहैं ते या देहते टुटिटुटि वा देहमें गये या देह जरिगई याही रीतिते नानादेह धरै हैं संसार नहीं छूटैहै सो कबीर जी रोवै हैं कि दम्भीहैंकै मोर अमोल हीरा-जीव ते अज्ञानरूपी अग्निमें जरेजायहैं ॥ ३०३ ॥

साँचे शाप न लागिया, साँचे काल न खाय ॥

साँचेसाँचे जो चलै, ताको कहा नशाय ॥ ३०४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि दम्भकरिकै काहे अज्ञानरूपी आगिमें जरे जाउहौ जोसाँचे साहबमें लगिकै साँचे साधुहोउ तौ वे सबते जबर होइहैं न वाकोशापलगै न वाकोकाल खायहै सो जाम्बवंतहनुमानादिक अबनकबने हैं ॥ ३०४ ॥

पूरासाहब सैइये, सबविधि पूरा होइ ॥

ओछे नेह लगाइये, मूलौआवै खोइ ॥ ३०५ ॥

पूरा साहब जे सर्वत्र पूर्ण हैं तिनको जो सैइये तो सबविधि पूराहोइ औ ओछे जेहें नानामत धोखा तौने में जो लगाइये तो नफाकी कौनचाले मूलौकी हानिहैजाय है ॥ ३०५ ॥

जाहुबैद्य घरआपने, बात न पूछै कोइ ॥

जिन यहभार लदाइया, निरबाहै वा सोइ ॥ ३०६ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे बैद्य ! गुरुवालोगौ तुम आपने घरको जाहु तुमको बात कोई नहीं पूछै है जिन यह संसाररूपी भारलदाया है कहे संसार उत्पत्ति कियाहै तौने निर्बाहैगा अर्थात् न निर्बाहैगा येतो सबमायिकहैं अधिक बाँधनेवारे हैं छुड़ावनेवारे नहीं हैं ॥ ३०६ ॥

औरनके समुझावते मुखमें परिगो रेत ॥

राशिं विरानी राखते, खाये घरको खेत ॥ ३०७ ॥

औरनको उपदेश करत करत तुम्हारे मुखमें रेतकहे धूरिपरिगई अर्थात् कुछ न तुमसौं बनिपरचो विरानी राशि तो तुम राखतेहौ कहे औरे औरेकों उपदेश करिके समुझावतेहौ आपने घरको खेत जो स्वरूप ताको नहीं ताकतेहौ काल खाये लेइहै सो तुम्हारो स्वरूपखेततौ ताको नहीं रहै औरकी राशिकहे आत्मा तुमकैसे ताकौगे ॥ ३०७ ॥

मैं चितवतहौं तोहिंको, तुम कह चितवै और ॥

नालत ऐसे चित्तको, चित्त एक दुइ ठौर ॥ ३०८ ॥

गुरुमुख ।

साहब जीवसौं कहै हैं कि मैंतो तेरी ओर चितवौ हौं सदा सन्मुख बनेरहौ हौं औ तू कहा और और में चित्त लगावै है सो ऐसे तेरे चित्तको नालति है कि एक आपने चित्तको माया में औ ब्रह्ममें दुइठौर लगाये है ॥ ३०८ ॥

तकत तकावत तकिरहे, सके न बेझामारि ॥

सबै तीर खालीपरे, चले कमानी डारि ॥ ३०९ ॥

साहब कहै हैं कि जेजीव!मोको तकै हैं अर्थात् मेरे सन्मुख भये हैं तिनको माया कालादिक जे हैं ते काम क्रोधादिकनते तकावै हैं कि जबहीं संधिपावै तबहीं मारिलेई औ आपहू ताके रहै हैं परन्तु जे जेमोको तके रहे चारचो युग तिनको ये कबहू न बेझा मारिसकै हैं सो जबसबैतीर खाली परे माया कालादिकनते तब कमानी डारिकै चलेगये अर्थात् मोको जे हंसजीव जानै हैं तिन में माया कालादिकनको जोर नहीं चलै है ॥ ३०९ ॥

जस कथनी तस करनियो, जस चुम्बक तस नाम ॥

कह कबीर चुम्बक विना, क्यों छूटै संग्राम ॥ ३१० ॥

जस साधुनकी कथनी कहे कहै हैं तस करनिउहै कैसे जैसे चुम्बक श्रीरामचन्द्रहैं तैसे उनको नामहू है सो कबीरजी कहै हैं कि रामनाम चुम्बकविना कामादिकनको संग्राम याको कैसे छूटै जैसे लोहेकोकना धूरिमें मिलोरहै है जब चुम्बक देखावो तौ वाही में लपटि आवै है धूरिमें नहीं रहै ऐसे या जीव साहबको है साहबको नाम लेइहै तबहीं संसारते छूटै है नहीं भटकते रहै है ॥ ३१० ॥

अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिलि एकै होइ ॥

मेरे देखत जगगया, ऐसा मिला न कोइ ॥ ३११ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि आपनी शंका मोसों कहै पुनि जौन मैं वेदशास्त्रादिकनमें कह्यो है ताको सुनै औ वह मेरे वाक्यमें मिलवै देखैतो कोई शंका रहिजाती है अर्थात् न रहिजायगी तब एकै मत द्वैजाय एकैजो मैं हों ताहीको जानिलेइ और सब छोड़ि देइ सो ऐसा मोको कोई न मिला जो मेरे देखत जगगया होइ कहे जगतते दूर भया होइ ॥ ३११ ॥

देशदेशहमवागिया, ग्रामग्रामकी खोरि ॥

ऐसाजियराना मिला, जोलेइफटकपछोरि ॥ ३१२ ॥

कबीरजी कहै हैं कि मैं देशदेश गाउँ गाउँ खोरि खोरि बाग्यो परन्तु ऐसा जियरा मोको कोई न मिला कि जो मैं कहौ हौं ताको फटक पछोरि लेइ ॥ ३१२ ॥

लोहे चुम्बक प्रीति जस, लोहा लेत उठाय ॥

ऐसा शब्द कबीरको, कालते लेइ छुड़ाय ॥ ३१३ ॥

लोहेकी औ चुम्बककी प्रीतिहै जो लोहको चुम्बक देखै है सो उठाय लेइहै ऐसे कबीर जो है कायाको बीर जीव ताको या शब्द रामनामहै जौन जीवनको कालते छुड़ाय लेयहै जैसे चुम्बक लोहे के किणकाको आपने में लगाय लेइहै ऐसे रामनाम जीवको में लगाय लेइहै ॥ ३१३ ॥

गुरु विचारा क्या करै, शिष्यहिमेंहैचूक ॥

शब्द बाण बेधै नहीं, बाँसवजावैं फूंक ॥ ३१४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि गुरु जो है साहब सो विचारा कहा करै शिष्य जो है जीव ताहीमें चूकहै कौन चूकहै यासों कि रामनामरूपा जो शब्दबाण ताके साथ छइउजेचक्रहैं तिनको बेधिकै सातों चक्र जे हैं सुरतिचक्र ताको बेधिकै उहां जो गुरुबतावैं हैं मकरतारडोरि ताही चढ़िकै रामनाम रूपीबाणके साथ साहबके पास जायबो न जान्यो वहु निर्गुण ब्रह्म जो है झूरबाँस ताहीमें लगिकै फूँकि-फूँकि बजावै हैं अर्थात् वोहीको ज्ञानकथै हैं ॥ ३१४ ॥

दादाबाबाभाई कै लेखै, चरनहोइगे बंधा ॥

अबकी बेरिया जोना समुझयो, सोईसदाहै अंधा ॥ ३१५ ॥

मानुष शरीर पायकै दादा बाबा भाई सब साहिबको मानै है सोई साहबके चरणको बंधा होइहै कहे साहबके चरणमें सदा लगे रहै हैं सो अबकी बेरिया कहे या मानुष शरीर पायके साहबको न जान्यो सोई सदाको अंधाहै ॥ ३१५ ॥

लघुताई सबते भली, लघुताइहिसबहोइ ॥

जसद्रितियाकोचन्द्रमा, शीशानवै सबकोइ ॥ ३१६ ॥

लघुताई सबते भली है लघुताइन ते सब होइहै सर्वत्र साहब को देखै आपनेको दासमानै तौ वाकी प्रीति साहबमें बढ़ते जाय है औ सब माथनावै हैं तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ “लघुताते प्रभुता मिलै, प्रभुताते प्रभु दूरि ॥ चींटीलै शक्करचली, हाथी के शिरधूरि” ॥ ३१६ ॥

मरतेमरते जगमुवा, मरण न जानै कोइ ॥

ऐसा है के नामुवाजो, बहुरि न मरना होइ ॥ ३१७ ॥

मरते मरते सब जग मराजायहै मरण कोई नहीं जानै है ऐसा हैकै कोई न मुवा जाते फेरि मरण न होय अर्थात् इन्द्रिनते मन ते शरीरते भिन्न हैकै साहबमें न लगे जाते पुनि जनन मरण नहीं होय ॥ ३१७ ॥

वस्तुअहै गाहकनहीं, वस्तु सो गरुवामोल ॥

बिनादामको मानवा, फिरै सो डामाडोल ॥ ३१८ ॥

वह गुरुवा मोलको जो साहबहै सर्वत्र पूर्ण है परंतु वाको गाहक कोई नहीं मिलै है औ बिना दामको कहे बिना मोलको यह जीव साहबके ज्ञान बिना डामाडोलमें फिरै है अर्थात् जैसे बाजार में गयो औ सब साज उहां बनी है औ हाथमें दाम नहीं है तौ डामाडोल फिरै है लै नहीं सकैहै तैसे साहब सर्वत्र पूर्ण हैं परंतु सतगुरुको उपदेश रूप दाम नहीं है डामाडोल फिरै है ॥ ३१८ ॥

सिंह अकेला वनरमै, पलकपलककैदौर ॥

जैसा बनहै आपना, तैसा बनहै और ॥ ३१९ ॥

बन जो है शरीर तामें सिंह जो है जीव सो अकेला रमै है औ पलक पलकमें दौरकारिकै गुरुवनसों पूछै है सो असनहीं बिचारै है कि जैसा बन कहें शरीर मेरोहै तैसे औरहूको है जैसे मोको अज्ञानहै तैसे इनहूको अज्ञानहै येई नहीं संसारते छूटें हमको कैसे छड़ावेंगे ॥ ३१९ ॥

मरतेमरते जगमुवा, बहुरि न किया विचार ॥

एकसयानी आपनी, परबशमुवा संसार ॥ ३२० ॥

मरत मरत सबजग मरिगया औ मरत चलोजायहै पै बहुरि कै कहे उल-
टिकै कोई न बिचार कियो कि काहेते मरे जाय हैं आपनी आपनी सयानी ते
एकएक खाविंद खोजि लियो साहब को न जान्यो जे जीवके मालिक हैं तेहिने
काल के बशहै सब मरे जायँ हैं ॥ ३२० ॥

पैठाहै घर भीतरै, बैठाहै साचेत ॥

जब जैसी गति चाहता, तब तैसीमति देत ॥ ३२१ ॥

साहब जो है सो सब के घटमें पैठाहै औ साचेत बैठाहै जब जैसी गति
जीवचाहै है तबतैसीमति जीवको देइहै जीव अणुचैतन्य है साहब बिभुचैतन्यहैं
सो जीव जौनेकर्मको सम्मुख होइहै तब चैतन्यता बढ़ाय देइहै तैसेमति बढ़ाय
देइहै औ बिना साहब के समर्थ जीव कछुनहीं करिसकै तामें प्रमाण ॥ “कर्तृ-
त्वं करणत्वं च स्वभावश्चेतनाधृतिः ॥ यत्प्रसादादिमे संति न संति यदुपेक्षया ॥
इतिश्रुतेः ” ॥ ३२१ ॥

बोलतहीपहिंचानिये, चोरशाहुके घाट ॥

अंतरकी करणी सबै, निकसै मुखकी बाट ॥ ३२२ ॥

जे साहब में लगै हैं ते औ जे धोखाब्रह्म में लगै हैं ते इनको कैसे पहिंचानि-
ये तौ उनके बोलते अन्तरकी करणी मुखकी बाट निकसै है तबहीं चोर शाहु
पहिंचाने परै हैं इहां चोर जो कह्यो सो यह जीव साहबको है तिनको चोराइके
कहे छोड़िके धोखामें लग्यो ताते चोरकह्यो है तामें प्रमाण ॥ “ नारिकहावैपी-
उकी, रहै और संग सोइ ॥ जारपुरुष हिरदे बसै, खसमुखशीक्योहोइ ” ॥ ३२२ ॥

दिलकामहरमकोइनमिलिया, जो मिलियासोगरजी ॥

कहकबीरअसमानैफाटा, क्योंकरिसीवै दरजी ॥ ३२३ ॥

मन दिलका महरमी कहे निःकामहै साहब में लगैया कोई न मिल्यो जो
मिल्यो सो गरजवाला मिल्यो ताको तेतनै मँजूरी दैके साहब अनृण हैजाय हैं

सो कबीरजी कहै हैं कि जो जीव साहबको है तो जौन जौन बस्तु साहबकी ह तौनतौन बस्तुजीवहूकी है पै आपनेको असफाया कहे जुदाजुदामानै है कि साह-
बसों मांगै है कि फलानी बस्तु मोको देउ या मूर्ख नहीं समुझै है कि साहबकी
शरणभये कौनौ बातकोटोटे न रहिजायगी सो दरजी जो साहबहै सो कहांतक
सीवै कहे आपने में मिलवै ॥ ३२३ ॥

बनाबनायामानवा, विनाबुद्धि बेतूल ॥

कहा लाललै कीजिये, विनावासका फूल ॥ ३२४ ॥

यह मानवा जो है मनुष्य सो बनै बनावा औ बेतूल है कहे कौनौ देवता
याकी बराबरीको नहीं है पै बिना बुद्धिको है याही ते सबते नीच द्वैरह्यो है
बिनाबासको कहे बिना सुगंधको लाल फूल लैकै कहाकरै ऐसे जीव बहुत सुंदर
भयो औ साहबको न जान्यो औरे मतनमें लगिकै लालद्वैरह्यो वा बुद्धिनहीं
जाते साहबको बूझै तौ कहाभयो तामेंप्रमाण ॥ “कहाभयो जो बड़कुल उपजे
बड़ीबुद्धि है नाहिं ॥ जैसे फूलउजारिके वृथालालझरिजाहिं ॥ ३२४ ॥

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ॥

जाकेभीतरसाँचहै, ताके भीतरआप ॥ ३२५ ॥

या साखीको अर्थस्पष्ट है ॥ ३२५ ॥

करतैकियानविधिकिया, रविशशिपरीनदृष्टि ॥

तीनलोकमें है नहीं, जानतसकलौमृष्टि ॥ ३२६ ॥

कर्ता पुरुष भगवान् नहीं किया न करतार किया न रवि शशि दृष्टि परी-
न तीन लोक में खोजेमिलै परंतु सबसृष्टि जानै है सो कबीरजी कहै हैंकि या
झूठ कहाते आई है ॥ ३२६ ॥

आगे आगे दव बरै, पीछे हरियर होइ ॥

बलिहारी वा वृक्षकी, जर काटे फल होइ ॥ ३२७ ॥

कर्ता जगत्को बनायो सो कैसो है ताको कहैहैं आगे आगे दव बरै आगे शरीर
सबके जरत जायहै औ पीछे हरियर होयहै कहे नये नये शरीर धारण होत हैं

सो ऐसे संसाररूपी बिटपकी बलिहारी है जामें जरकाटे फलहोइ है अर्थात् जौने जीवको संसार निर्मूल द्वैगयो तौने जीवको साहब रूपा फल मिलै है ॥३२७॥

सरहर पेड़ अगाध फल, अरु बैठा है पूर ॥

बहुत लाल पचि पचि मरे, फल मीठा पै दूर ॥३२८॥

या शरीर रूपी सरहर वृक्ष बड़ा ऊँचाहै सरलहूहै सबको मिलै है और शरीर वृक्षको फल कहा है साहबको जानै सरअगाध है औ सर्वत्र पूर्ण है अन्तर्यामी रूपते सबके हियेमें बैठाहै सो ऐसो साहबको ज्ञानरूपी फल मीठाहै परन्तु दूरि है बहुत लाल कहे बहुत जे जीव हैं ते पचिपचि मरे पै पाये नहीं अथवा साहबको ज्ञानरूपी फल सरहरहै कहे चीकनहै चढ़ने माफिक नहीं है खसिलि परै है तामे प्रमाण कबीरजी को ॥

बहुतकलोगचढ़े बिनभेदा देखाशिख गहिपानी ।

खसिला पाउं ऊर्ध्वमुख झूले परेनरककीखानी ॥

औशरीरकोफल साहबको भजनहै तामें प्रमाण गोसाईंजीको ।

देहधरेको या फलभाई, भजोराम सबकाम बिहाई ॥ ३२८ ॥

बैठ रहै सो वानियाँ, खड़ा रहे सो ग्वाल ॥

जागत रहे सो पाहरू, तिनहुंन खायो काल ॥३२९॥

बनियाँ बैठ रहे हैं दुकानलगाय ते गुरुवालोंहैं जे जौने देवताको मन्त्र मांगै हैं ताको तौनहीं मन्त्र देइहैं औ ग्वालखड़े गौवनको चरावै हैं तेवे हैं जे आत्मैको मालिक मानै हैं इन्द्रिनको चरावै हैं जौने विषय चाहै हैं तौने भांगै हैं दूसरो लोक नहीं मानै हैं शरीरहीको मानै हैं औ जे जागत रहै हैं ते पाहरू हैं आपनी वस्तु ताकै हैं ते योगी हैं आपनी इन्द्रीको ताके रहै हैं समाधि लगाये सदा जागत रहैहैं सोये तीनों साहबको न जान्यो ताते तिनहुंनको काल धरिखायो ॥३२९॥

युवा जरा वालापन बीत्यो, चौथि अवस्थाआई ॥

जस मूसवाको तकैबिलैया, तस यम घातलगाई ॥३३०॥

तीनिउं अवस्था बीत गई चौथि अवस्था आय गई जैसे मूसको बिलारी ताकै है ताको घात लगायेहै तैसे यम तोको घातलगाये हैं सो अजहूं साहबको चेतु ३३०

भूलासो भूला बहुरिकै चेतु ॥

शब्दकी छुरी संशयको रेतु ॥ ३३१ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि हे जीव ! तैं भूला सो भूला भला यह संसार ते बहुरि कहे उलटिकै तौ चेत करौ सारशब्द जो रामनाम छुरी तेहितैं आपनी संशय रेतु डारु कहे काटिडारु अर्थात् रामनामको अर्थ तो बिचारु तैं भरोई है और पदार्थ छोड़िदे तामेप्रमाण ॥ “यक रामनाम जाने बिना भव बूड़िमुवा संसार” ॥ ३३१ ॥

सबही तरुतर जायकै, सबफल लीन्हो चीखि ॥

फिरिफिरि मांगत कबिरहै, दर्शनहींकी भीखि ॥ ३३२ ॥

सबही तरुतर जायकै कहे शरीर धारण करिकै सुख दुःखरूप फल सब चारुयो नाना उपासना योगज्ञान बैराग्य सब कैचुक्यो शरीरधरेको फल कोई न पायो सो शरीर धरे को फल साहब को दर्शन है सो फिर फिर कबीर मांगै है ॥ ३३२ ॥

श्रोता तो घरही नहीं, वक्ता वदै सो वाद ॥

श्रोता वक्ता एकघर, तब कथनीको स्वाद ॥ ३३३ ॥

श्रोतातो घरहीमें नहीं है अर्थात् सुनतै नहीं है औवक्ता आपनो मत बादि-बादिबदै है श्रोताको समुझावै है सो जब श्रोतावक्ता एक घरहोइ कहेएकै उपासनाहोइ एकै मतहोय तब कथनीको स्वाद है कहे कथाको स्वादत-बहीं मिलै है जैसे याज्ञवल्क्य भरद्वाज इत्यादिक तामें प्रमाण ॥ “इष्ट मिलै अरु मन मिलै, मिलै भजन रस रीति । तुलसिदास सोइ संतसों, हठ करि कीजै प्रीति” १ ॥ दूसरो प्रमाण राम सखेजीको ॥ “शिष्य सांच गुरु सांचहै, अंठन नियत न मान ॥ बध्यो शिष्य साची प्रकृति, छोरत गुरुदै ज्ञान” २ ॥ औ कबीर-हूजीको प्रमाण । साखी चौरासी अंगकी । “नाम सत्य गुरु सत्यहै, आप सत्य जब होइ ॥ तीन सत्य प्रकटैं जबै, गुरुका अमृत होइ” ॥ ३३३ ॥

कंचन भो पारस परसि, बहुरि न लोहा होइ ॥

चंदन बास पलास बिधि, ढाक कहै नहिं कोइ ॥३३४॥

पारसको परसिकै कंचनभयो जो लोह है सो फिर लोहा नहीं होइ है औ चंदनके बासते पलाश जो छिउल है सो बेधिगयो ताको ढाख कोई नहीं कहै है चंदनै कहै है ऐसे जो जीव साहबको द्वैगयो साहब के पासगयो ताको जीव नहीं कहै है पार्षद रूप कहन लगै है ॥ ३३४ ॥

बेचूने जग राचिया, साईं नूर निनार ॥

तब आखिरके बखतमें, किसका करौ दिदार ॥३३५॥

बेचून निराकार जौन जगत्को रचिसि है सो साईं के नूरते कहे प्रकाशते निनारहै जुदा है अर्थात् साहबको प्रकाश न होइ वा नूरही अल्लाह है ऐसा जो मानो तो हे मुसल्मानों मैं पूछता हौं कि आखिरके बखतमें कहे क्या मतके बखतमें वह इनसाफ करैगा ऐसा कुरानमें लिखता है सो उसको बेचून मानते हौ निराकार मानते हौ तौ भला वा किसतरहसे इनसाफ करैगा औ किसका दीदार करौगे अर्थात् किसकी सूरति देखौगे भावयै कि वा निराकार नहीं है साकार है तुमको भ्रम भया है सो या बात सच्चाईस रमैनीके मूलमें ह साहबको नूरजो है प्रकाश सो सबके भीतर बाहर भराहै कोई जगह उससे खाली नहीं है औ साहब औ साहबकी सामग्री औ साहबको लोक सब नूरही-नूर कहै वहां बहुतसा नूर समिटिकै एकसल देखि पारै है जिसतरहकी मिसाल कि जैसा साहबहै तैसासाहब है दृष्टांतकाकोदेइ सो कबीरजी पूछै हैं कि भला तुमहूँ तो विचारिदेखो कि जो उसके हाथै पांड न होते तौ जगत्को कैसे रचतौ सो साहबसाकार है तुमको निराकारकी भ्रमभई है तामें प्रमाण ।

कलिमा बाँग निमाज गुजरै । भरम भई अल्लाह पुकारै ॥

अजब भरम यक भई तमासा । ला मकान बेचून निवासा ।

बे निमून वै सबके पारा । आखिर काको करौ दिदारा ॥

रगैर महजिद नाक अचेता । भरमाने बुत पूजाहोता ।

बावनतीसवरण निरमाना । हिन्दूतुरुक दोऊ परमाना ॥

भरमिरहे सब बरणमहँ, हिन्दुतुरुक बखान ।

कहै कबीर बिचारिकै, बिनगुरुकी पहिंचान ॥

भरमत भरमत सब भरमाना, रामसनेही बिरला जाना ॥ ३३५ ॥

साई नूरदिल एकहै, सोई नूर पहिंचानि ॥

जाके करते जगभया, सो बेचून क्यों जानि ॥ ३३६ ॥

साई जो है साहब श्रीरामचन्द्र ताहिको एक नूर सबके दिलमें है सोई नूर तैं प्रकाश पहिंचानु जौनेके करते जग सब उत्पन्न भया है ऐसो जो साहब ताको तू बेचून कहे निराकार न जान वे साहब साकारहैं औनिर्गुणसगुणके-परे हैं । तामें प्रमाण कबीरजीको साक्षी ॥

श्रूप अखण्डित व्यापी चैतन्य श्वैतन्य ।

ऊंचे नीचे आगे पीछे दाहिन बायँ अनन्य ॥

बड़ा ते बड़ा छोटते छोटा मीहीते सब लेखा ।

सबके मध्य निरन्तर साई दृष्टि दृष्टि सों देखा ।

चाम चदमसों नजरिन आवै खोजु रूहके नैना ॥

चून चगून बजुद न मानु तैं सुभा नमूना ऐना ।

ऐना जैसे सब दरशावै जो कछु वेष बनावै ।

ज्यों अनुमान करै साहबको त्यों साहब दरशावै ॥

जाहि रूह अल्लाहके भीतर तेहि भीतरके ठाई ।

रूप अरूप हमारि आश है हम दूनहुंके साई ॥

जो कोउ रूह आपनी देखै सो साहबको पेखा ।

कहैं कबीर स्वरूप हमारा साहबको दिल देखा ॥ ३३६ ॥

रेख रूप जेहि है नहीं, अधर धरो नहि देह ॥

गगन मँडलके मध्यमें, रहता पुरुष बिदेह ॥ ३३७ ॥

कैसो साहब है कि जाके रूप रेखा नहीं है औ विशेषिके देह धारण कीन्हें है अर्थात् रसहीरस देह धारण किये है पाञ्चभौतिक नहीं है । औ अधर जो आकाश तामें देह कबहुं नहीं धरै अर्थात् जो कबहुं न रहै तब न देह धारै

वातो सर्वत्र पूर्ण है गगनमण्डल के मध्यमें कहें तीन आकाश हैं एक नीचे एक मध्यमें एक ऊपर सो तीनों आकाशमें वा विदेह पुरुष पूर्ण है ॥३३७॥

धरयो ध्यान वा पुरुषको, लाये वज्र केवाल ॥

देखिकै प्रतिमा आपनी, तीनों भये निहाल ॥३३८॥

वह परम पुरुष साहब जे श्रीरामचन्द्र हैं, नव दूर्वा दल जिनको रसरूप शरीर है तिनको ध्यान धरो जो कहो आनन्द को रूप तो सपेदको द्वै है नव दूर्वादल दयाम कैसे कहौ हो तो जहां बहुत श्वेताई है तहां हरित रंग देखही परै है जो कहो यह कैसे अनुभव होइ तो सुनौ सब ते श्वेत स्वच्छ गंगाको जल है सो जहां गंगाहूमें बहुत जल है बड़ी गहिराई है तहां हरितई देखि परै है । जो कहौ साहबको कैसे जानैं सो वज्र कपाट लगाइबेकी विधि आगे लिखि आयें हैं जलन्धर बन्ध लगायकै झटकादिकै वज्र कपाट लगायो सुरति कमलमें जो रकारको उद्गार ओझरै है सो सुनि परी है तब वही रकार को जो ध्यान करै तब सो ध्यान किये साहब आपही प्रकट होय है । यही ध्यान करिकै तीनों ब्रह्मा विष्णु महेश आपनी आपनी प्रतिमा देखिकै निहाल भये हैं अर्थात् साहबके समीप हजारन ब्रह्मा विष्णु महेश देखिकै या निहाल भये कि धन्य हमारी भाग्य है कि श्रीरामचन्द्रके द्वारमें हमहूँ हैं यहां तो कोटिन ब्रह्मांडके ब्रह्मा विष्णु महादेव मौजूद हैं ठाढ़े स्तुति करै हैं ॥ ३३८ ॥

यह मनतो शीतल भया, जब उपजा ब्रह्म ज्ञात ॥

जेहि बैसन्दर जग जरै, सो पुनि उदक समान ॥३३९॥

जब ब्रह्मज्ञान भयो तब यह मन शीतल द्वैगयो अर्थात् संकल्प विकल्प छोड़ि दियो तपिबो मिटि गयो सो जौने बैसन्दरते कहे ब्रह्म ज्ञानते मनको संकल्प विकल्प छूटि गयो जग जरि गयो अर्थात् न रह्यो तौन जो ब्रह्म ज्ञान सो उदक जो साहबकी प्रेमा भक्ति तामें समान अर्थात् जब साहबकी भक्ति भई तब वा ब्रह्माभि न रहि गई यामें ते या आयो कि ज्ञानको फल साहबकी भक्ति है तामें प्रमाण ॥ “ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ॥ समः

सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिभते पराम् ॥ १ ॥ भक्तिमेंछागुण हैं ॥ “ क्लेशघ्नी शुभदामोक्षलघुताकृत्सु दुर्लभा । सांद्रानन्दविशेषात्मा श्रीकृष्णाकर्षणी मता ” ॥ भक्तिमें छे गुण हैं । १। एक तो सम्पूर्ण क्लेशको दूर कर देइ है । अर्थात् संसार दूर करि देइ है । फिर भक्ति कैसी है २ कि शुभदा है कहे सम्पूर्ण शुभ गुण दिव्य गुण देई है । और ३ अपने आनन्द ते मोक्षके सुखको लघु करि देई है । और ४ दुर्लभा है अर्थात् जब ब्रह्म द्वैगयेद्व के ऊपर होइ है । और सान्द्रानन्द विशेष आत्मा है कहे परमानन्द रूपा है और श्रीकृष्ण को आकर्षण करिलै आवै है कहे जाकी भक्ति होइ है तो श्रीरघुनाथजीको दर्शन होइ है । सो श्री-कबीरजी भक्ति को सिद्धान्त राख्यो है कि, बिना भक्ति रघुनाथजी कोई प्रकार से मिलि सकते नहीं हैं और जहां भक्त पहुंचै है तहां दूसरो पहुंचि सकै नहीं है । सब ते ऊंची भक्तिकी सीढ़ी है । बिना भक्ति साहब नहीं मिलैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको भवतरण ग्रन्थको ॥ “ सुनु धर्मदास भक्ति पद ऊंचा । तिन सीढ़ी नहिंकोउ पहुंचा ॥ वर्त एक है भक्तिको पूरा । और वर्त सब कीजै दूरा ॥ और वर्त सब जमकी फाँसी । भक्तिहि वर्त मिलैं अविनासी ३३९

जासों नाता आदिको, विसरि गयो सब ठौर ॥

चौरासीके वश परे, कहत औरको और ॥ ३४० ॥

जौनें साहबको आदिको नातारहै कहे जाको सदाको दास अंश तौने राम चन्द्रको भक्ति बिसरी गयो मायामें परि चौरासी लाख योनिके वश है और को और कहै हैं अर्थात् कहां कहै हैं कि वा ब्रह्म मेंहीं हौं कहां आत्मैको मालिक मानै हैं कहां नाना देवतन को स्वामी मानै हैं परंतु संसार काहूको छुड़ायो न छूट्यो ॥ ३४० ॥

१ अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश यही पाँच क्लेश हैं अनित्य पदार्थोंमें नित्य बुद्धि अनात्म पदार्थोंमें आत्म बुद्धिका नाम अविद्या है तात्पर्य यह कि अज्ञान जन्य जो २ कार्य हैं सब अविद्या कृत है । मैं राजा, मैं पण्डित मैं ज्ञानी मैं कुलीन इत्यादि अहङ्कार युक्त कार्यको अस्मिता कहते हैं । प्रिय वस्तुमें प्रीति होना राग । और अनिष्ट पदार्थमें अप्रीति होना द्वेष । एवं बिना विचारे किसी कार्यको एक प्रकारका मान कर उस में आग्रह बुद्धिको अभिनिवेश कहते हैं ।

लीन्हो फटक पछोरि यह साखी भर सब पोथिनको पाठ मिलि आवा है
औ लोहे चुंबक प्रीति जस यह साखीते चौरासीके वश यह साखी भी उन्तिस
साखी एक पोथीके क्रमते है आवा अब एक पोथीमें अट्ठाइस साखी औरई
और हैं तिनहूनको अर्थ लिखै हैं ॥

बूझौ शब्द कहांते आया, कहां शब्द ठहराय ॥

कह कबीर हम शब्द सनेही, दीन्हा अलख लखाय ३४१

यह शब्द जो रामनाम है सो बूझौ कहे बिचारौ कहांते आयाहै औ कहा
ठहरायहै सोहम वही शब्दके सनेही हैं वाशब्द तुम नहीं बूझते हौ कैसेहै
शब्द कि साहब के इहां ते आयो है ॥ रामनामलै उचरीबाणी ॥ यह रमैनीमें
लिखि आये हैं सो जब कुछ नहीं रह्यो तब रामनामहीते सबकी उत्पत्ति भई है
सो राम नाम मंत्रार्थ जो भैं बनायो है तामें बिस्तारते लिखि दियो है । इहां संक्षे-
पते जनाये देउहैं “अ इ उ ण् ऋ लृ क् ए ओ ङ् ऐ औ च् ह य व र ट् ल ण् ज म ङ् ण-
नम् झ भ ञ् घ ढ ध ष् जब ग ङ द श् ख फ छ उ थ च ट त व क प य् श ष स र ह ल ये ॥ सबवर्ण
चौदह सूत्रमें पाणिनि लिखिंदियो ॥ आदिरन्त्येन सेहता । अन्त्येने ता सहित आदि
र्मध्यगानां स्वस्य च संज्ञास्यात्” यह सूत्र करिकै अकार आदिकालीन औलकार
अंतकालीन तब अल् प्रत्याहारकीन तेहिते बीच के वरण सब आयगये । सो अल्
प्रत्याहार रामनामको एकदेश ते निकसै है सो रामनामके रकारको वर्ण विपर्यय
कियो तब अकारको यह कैतिलै औ रकारको वह कैतिलै गये तब अर भयो
सो रकार लकारको अभेदहै तेहिते अलभयो तेहिते राम नामके एक देश ते सब
निकसि आये तेहिते सबको आदि राम नाम है । सो राम नामको अर्थ
साहिबके ठहरायहै, अर्थात् राम नाम साहबही को बतावै है । सो श्री कबी-
रजी कहै हैं कि, हम वही शब्दके सनेही हैं । कैसेहै शब्द कि, अलखैहै
वा सबको लखावै है वाको कोई नहीं लखै है जैसे आंखीते सबको देखै औ
आंखी आपनी कोई नहीं देखै है । जो कहो कबीर कैसे कहै हैं कि हम अल-
खको लखायदियो तौ सुनो जैसे ऐना लैकै देखै तौ आपनी आंखीको प्रतिबिंब
देखि परै है सो यह बीजरूप ऐनाहै तामें अनिर्वचनीय जो राम नाम ताको

प्रतिबिंब बीजकमें दिखायो अर्थात् यह बतायदियो कि, रामनामहीते जगत मुख अर्थ में सबकी उत्पत्ति भई है । औ रामनामही साहबको बतावै है साहब मुख अर्थमें । औ अनिर्वचनीय साहबको रामनामही देखाय देइहै यह भी कबीरजी अलखके देखिबेको उपाय बताय दियो यही अलखको लखावनों है सो जब साहब को द्वैजाय तब या लखै तामें प्रमाण सुखसागरको ॥ “ अलख अपार लखै केहि भांती । अलखलखै अलखैकी जाती ॥ ३४१ ॥

बूझौ करता आपना, मानौ बचन हमार ॥

पंचतत्त्वके भीतरै, जिसका यह विस्तार ॥ ३४२ ॥

तुम कहति आये औ तुमको को कियो सो अपने कर्त्ताको तुम बूझौ वह साखी में तो बचन हम कहि आये ताको तुम मानौ तुम वह शब्द रामनामही ते भये हौ जिसका यह विस्तार सब देखतेहौ औ जौन जौन मानिदी तुम मानिराखेहौ सो सब पंचतत्त्वकेभीतरहै एकवह रामनामही पंचतत्त्वके बाहिर है औ वही तुम्हारो आदि कर्त्ता है ॥ ३४२ ॥

हमकर्त्ताहैं सकल सृष्टिके, हम पर दूसर नाहि ॥

कहै कबीर हमै नहिं चीन्है, सकल समानाताहि ॥ ३४३ ॥

हमहीं सम्पूर्ण सृष्टिके कर्त्ता हैं हमें मालिक दूसर नहीं है हमहीं सबके मालिकहैं सबमेरेहीं में समानहै हमहीं ब्रह्महैं ऐसा कोई कोई कबीर कायाके बीरजीव कहै हैं ताको आपै खंडन करै हैं ॥ ३४३ ॥

सुतनहिं मानै वातपिताकी, सेवै पुरुष बिदेह ॥

कहै कबीर अबहुँ किन चेतौ, छांडो झूठ सनेह ॥ ३४४ ॥

तैं सुतहै रामनाम प्रतिपाद्य जे साहबहैं ते तेरे पिताहैं तिन की बात तैं नहीं मानै है औ बिदेह पुरुष जो है ब्रह्म ताको सेवै है कहे आपही ब्रह्म द्वै बैठै है सो अबहुँ चेतकरु साहब कहि आये हैं कि ॥ “अजहं लेहुँ छड़ाय कालसों जो घट

सुरातिसंभारै” ॥ सो ऐसे पिताकी बातमानु यह झूठसनेह छोड़िदे जो आपने को ब्रह्म मानिकै बैठे हैं कि महीं ब्रह्महैं यह ब्रह्मतो मनको अनुभवहै झूठा है जीव ब्रह्म कबहू नहीं होयहै ॥ ३४४ ॥

सबै आशकरशून्यनगरकी, जहां न कर्ता कोई ॥

कह कबीर बूझौ जियअपने, जातेभरम न होई ॥ ३४५ ॥

सबै वह शून्यनगरकी आशाकरै हैं जहां कोई कर्ता नहीं है सो वह तो झूठाहै सो कबीरजी कहै हैं कि तुम आपने मनमें बूझौ तौ उहांतौ कर्ता हई नहीं है औ जगत् बनैहै तौ कौन जगत को कियो है तेहिते निराकार अकर्ता ब्रह्म कहनूति जो कहो हौ सो सब झूठी है सो यह तुम आपने जियमें बूझौ जेहिते ब्रह्मवालो भ्रम तुमको न होइ ॥ ३४५ ॥

भक्तिभक्ति सबकोई कहै, भक्ति न आई काज ॥

जहँको किया भरोसवा, तहँते आई गाज ॥ ३४६ ॥

भक्तिभक्ति सबकोई कहै हैं औरे औरे देवतनकी भक्ति करै हैं सो वा भक्ति कौनौ काज न आई जेहि जेहि देवको भरोसा कियो तहांते गाजआई कहे वे सब काल स्वरूपहैं सब याको मारिकै आपने लोक लैगये जब महाप्रलय भई तब इष्ट औ उपासक दोऊ न रहे पुनि जब जगत्की उत्पत्ति भई तब कर्म्म-नुसार वोऊ उत्पन्न भये ॥ ३४६ ॥

समुझौ भाई ज्ञानियो, काहु न कहा सँदेश ॥

जेइ गये बहुरे नहीं, है वह कैसा देश ॥ ३४७ ॥

हे भाई ज्ञानिउ तुम समुझते जाउ तौन तुम ब्रह्म ब्रह्मकहौ हौ तहां को सँदेश कोई न कह्यो कहे सब वेदांती ब्रह्मज्ञानी कहै हैं कि वाको तो हमकही नहीं सँकेहैं धौंकेसाहै औ जे उहां गये ते बहुरिकै न आये जो बहां को सन्देश बतावैं अर्थात् कुछ न हाथ लग्यो ॥ ३४७ ॥

धोखे सबजग बीतिया, धोखे गई सिराइ ॥

स्थितिनाकरै सो आपनी, यहदुख कहा न जाइ ॥ ३४८ ॥

धोखाही ते सम्पूर्ण जगत् व्यतीत होगया और धोखाही ते सिराय गया औ
यह मन अपनी स्थिति नहीं पक़रै है स्थिर नहीं होयहै सो आपनी भूल कासों
कहै यादुःख काहूसों नहीं कइयो ॥ ३४८ ॥

मायाते मन ऊपजै, मनते दश अवतार ॥

ब्रह्माविष्णु धोखेगये, भरमपरा संसार ॥ ३४९ ॥

साहब औ साहबके पास पहुँचै जे तिनको छोड़े और सब मनके फन्दमें
परे हैं और अर्थ स्पष्टही है ॥ ३४९ ॥

रामकहतजगबीते सिगरे, कोई भये न राम ॥

कइकबीर जिनरामहिं जाना, तिनके भे सबकाम ३५०

हमहीं रामहैं हमही रामहैं या कहत कहत सब सब जग बीतिगये कहे
मरिगये परन्तु कोई राम न भये औ कबीरजी कहैहैं कि जिन श्रीरामचन्द्रको
मालिक जान्यो है तिनके सब काम ह्वैगये हैं ॥ ३५० ॥

यहदुनिया भै बावरी, अदृश्यसों बाँध्यो नेह ॥

दृश्यमानको छोड़िकै, सेवै पुरुष विदेह ॥ ३५१ ॥

यह दुनिया बावरी है गई अदृश्य जो निराकार ब्रह्म तासों नेहबाँध्यो है सो
वातो धोखाहै काको मिलै जीव ब्रह्म होतही नहीं है सो दृश्यमान जे साहब
श्रीरामचन्द्रहैं तिनको छोड़िकै वा बिदेह पुरुष निराकार ब्रह्मको सेवै है अर्थात्
वाहीमें लगैहै ॥ ३५१ ॥

राजा रैयत हैरहा, रैयत लीन्हीं राज ॥

रैयतचाहै सबलिया, ताते भया अकाज ॥ ३५२ ॥

राजा जो साहब है सो रैयत है रहा है अर्थात् वाको कोई जानतही नहीं
है औ रैयत जो धोखाब्रह्म सो सब लेत भयो अर्थात् सब जगत् वाही में लग-
त भयो सो रैयत जो है अहम्ब्रह्मास्मि सो साहबको सब लियो चाहै है अर्थात्
आपै बह्म होन चाहै है ताते अकाज भयो माया के बश है आपनेनको
मालिक मानन लग्यो ॥ ३५२ ॥

जिसका मंत्रजपैं सब सिखिकै, तिसके हाथ न पाऊं ॥

कहैकबीर मातुसुतकाही, दिया निरञ्जन नाऊं॥३५३॥

जिसका मन्त्र सब सिखिकै जैप हैं प्रणव उसका अर्थ ब्रह्मही है जिसके हाथ पांउ नहीं हैं औ निरञ्जन जो है ब्रह्म ताको निरञ्जनाम मायैको धरायो है भाया वा निरञ्जन ब्रह्मकी माता है काहेते कि या निरञ्जन नाम बचन में आवै है बिज्ञान करिकै अनुभव जो ब्रह्म होइहै सो मनका अनुभवहै मायैको पुत्रहै वह माया मनमें मिलि इच्छारूपहै सो जाको तुम ब्रह्म कहौहौ सोई माया ते रहित नहीं है तुम कैसे अहम्ब्रह्म मानि माया ते रहित होउगे तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दको ॥ “मनपरपञ्ची मनैनिरञ्जन मनही है ओङ्कारा । तीनलोक मनफांसिलियाहै कोई न मनते न्यारा ॥ ३५३ ॥

जनि भूलौरे ब्रह्मज्ञानी, लोकवेदके साथ ॥

कहकबीर यह बूझहमारी, सो दीपकलियेहाथ ३५४॥

कबीरजी कहै हैं कि रे ब्रह्मज्ञानी तुम जनि भूलौ लोक वेदके साथ लोकमें सरहना पायकै वेद में धोखाब्रह्ममें लगिकै अर्थात् तुम यामें न खराब होउ । सो कह कबीर यह बूझ हमारी कहे कायाके बीर जीवौ परमपुरुष जे साहब श्रीरामचन्द्र तिनमें तन मन ते लागे जो हमारी बूझहै सोई साहबके अनुराग रूप दीपकहाथमें लेउ जाते संसाररूप अन्धकारते पारहोउ ॥ ३५४ ॥

देव न देखा सेवकहि, सेवक देवनदीख ॥

कहकबीर इन मरते देखो, यह गुरु देई सीख॥३५५॥

देवता आपने सेवकको सेवक आपने इष्ट देवताको न दीख तिनको कबीरजी कहै हैं कि हम दूनों को मरते देखा है अर्थात् महाप्रलय में नहीं रहैं ताते हम गुरुकी सीख इनको देतें हैं कि धोखा औ नाना मतको त्यागि साहब को जानो जाते जनन मरण छूटै या सीख देते हैं ॥ ३५५ ॥

तेरीगति तैं जानै देवा, हममें समरथ नाहीं ॥

कहकबीर यहभूल सबनकी,सबपरे संशय माहीं॥३५६॥

सब लोग या कहै हैं तुम्हारी गति तुम्हीं जानो हममें सामर्थ्य नहीं है जौन हमको गुरु बताय दियो है ताही मे लगे हैं :तिनको कबीरजी कहै हैं कि इन सबकी भूल ईश्वर तो बतावै न आवेंगे औ जीवका तो आपने साहबको जानवै चाही नाहक संशयमें परे हैं साहबको जानै तौ साहब छुड़ाइ लेईंगे ॥ ३५६ ॥

खालीदेखिकै भरमभा, दूंदतफिरै चहुँ देश ॥

दूंदत दूंदतमरगया, मिला न निर्गुणभेश ॥ ३५७ ॥

जौने संशयमें सब बूझिगये हैं सो संशय कबीरजी देखावै हैं खाली कहें शून्य देखिकै सब जीवन को भरम भयो सो देवता परोक्षहै वाको अर्थ जानै नहीं हैं औ चारों देशमें दूंदत फिरै हैं औ केते वा निर्गुण धोखाब्रह्म को दूंदत दूंदत मरि गये खोज न लाग्यो ॥ ३५७ ॥

बूझ आपनी थिररहै, योगी अमर सो होइ ॥

अब बूझै भरमै तजै, आपै और न कोइ ॥ ३५८ ॥

देखादेखी सबजग भरमा, मिला न सतगुरु कोइ ॥

कहै कबीर करत नितसंशय, जियरा डाराघोइ ॥ ३५९ ॥

गुरुवा लोग कहै हैं कि जो बूझ थिर रहै तौ योगी अमर है जाय जो जग-तके नाना भ्रमछोड़िकै अबहुं बूझै तौ एक आपही है दूसरानहीं है मारैगा कौन ऐसे कहि कहि देखादेखी श्रीकबीरजी कहै हैं कि सबजगत् भरमि गयो सतगुरु-कहे साहबके जाननवारे इनको कोई न मिलो हमहीं ब्रह्महैं यही संशय में डारिकै आपने जीवन को खोइ डारे अर्थात् नरकमें डारिदीन्हे ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥

ह्वांकी आश लगाइया, झूठी ह्वांकी आश ॥

गृहतजि बनखँड मानिया, युगयुग फिरै निराश ॥ ३६० ॥

वा ब्रह्म जो धोखा ताकीआश लगाये है सो आश तेरी झूठी है गृहत्या-गिकै जाके हेत तुम बनखण्डमें टिकेहु सो युग युग निराश फिरैगो अर्थात् ठिकान न लगैगो वह मिथ्याहै बिना साहबके जाने संसारते न छूटैगो ॥ ३६० ॥

नेइके विचले सबघर विचला, अब कछु नार्हि वसाइ ॥

कहैकबीरजोअवकीसमुझै, ताकोकालनखाइ ॥ ३६१ ॥

कबीर जी कहै हैं कि नेइ जब बिगिरि जायैह तब सगरौ घर बिगिरि जायैह ऐसे नेइ जो है धोखाब्रह्म जौनेको गुरुवालोग समुझावै है सोई जब मिथ्या ठहरयो तब और सब लोकके देवता येई घरहैं ते बिगरिबोई चाहैं अर्थात् इनते अब कौन सांचफल मिलै सो श्री कबीर जी कहै हैं जो कोई साहब को समुझै अर्थात् तन मन ते लागै ताको काल नहीं खाय है और सब कालको कलेवा हैं ॥ ३६१ ॥

रामरहे बनभीतरे, गुरुकी पूजि न आश ॥

कहकबीर पाखंडसब, झूठे सदा निराश ॥ ३६२ ॥

बन जो है संसार तौनेके भीतर जब जीव भयो रामरहे कहे वह जीव रामते राहत भयो रामको पुनि बरिआई पावै है अथवा रामते रहित जब जीव भयो तब संसारी है जायैह और परमगुरु जे सुरति कमलमें बैठे रामनाम बतावै हैं तिनकी आश न पूजतभई वे रामनाम बतावै हैं यह नहीं सुनै हैं वे छुड़ावन चहै हैं सो नहीं छूटे हैं औ जे साहबको छोड़ि और औरमें लगावै हैं ते सब पाखण्डी हैं झूठे हैं औ पाखण्डी जे हैं और औरमें लागै हैं तिनकी मुक्ति कबहूँ नहीं होइहै वे सदा निराशरहैं तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ “चकई बिछुरी रैन की जाय मिली परभात ॥ जे जन बिछुरे रामते दिवस मिलैं नहिं रात” ॥ ३६२ ॥

बिनारूप बिनरेखको, जगत नचावै सोइ ॥

मारै पांचौजोनहीं, ताहिडरै सबकोइ ॥ ३६३ ॥

जोमन जगत् को नचावै है सो बिनारूपको है औ बिनारेखको है आकाश वायु आदिक जेहैं तिनमें रूपनहीं है पै रेख देखी पौरै है औ बायुको स्पर्श होय है सोई रेखहै औ मनके रेखऊ नहीं है सो जे पांचौ पांचो ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रियकों नहीं मारै हैं ऐसे गुरुवन को सबजने डेराते जाउ नहीं तौ तुमहूँ को संसार में डारि देइगे ॥ ३६३ ॥

डरउपजा जिय है डरा, डरते परा न चैन ॥

देखा रामहि हैनहीं, यही कहै दिनरैन ॥ ३६४ ॥

यही मनते डरउपजा कहे यहीके अनुभवते ब्रह्मभयो सो भूत ब्रह्मको सबै डेंरा-
यहैं सो यही ब्रह्मके डरमें जीव पराहै कहे हराहै सो यह ब्रह्मके डरते चैन न
याको परा अर्थात् यह ब्रह्मको डूंदतही रहिगये न पायो न ब्रह्म भयो न
चैन भयो यह कहै हैं कि राम को कोई देखा है हमतो नहीं देखा जो कोई
हमको देखाइ देइ तौ हम मानैं सो ओर मूढ़ौ तुमतो डरमें परेहौ तुमको कैसें
देखाइदेइ जाको साहब कृपाकरै हैं ताको देखाइ देइहौ ॥ ३६४ ॥

सुखको सागर मैं रचा, दुखदुख मेलो पांव ॥

स्थिति ना पकरै आपनी, चले रङ्ग औ राव ॥३६५॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैतो या बीजक ग्रन्थमें सुखको सागर रच्यो है
कहे साहबको बताइ दियो है तामें नहीं लगै दुःखमें पाँउ मेलै है अर्थात् कहूं
ब्रह्ममें कहूं ईश्वरनमें कहूं नानामत में लगै है जहां याकी स्थिति है साहबमें
तिनको नहीं पकरै याही ते राजा रंक सब चले जायहैं कालखाये लेइहै ॥ ३६५ ॥

दुख न हता संसारमें, हता न शोक वियोग ॥

सुखहीमें दुखलादिया, बोलै बोली लोग ॥ ३६६ ॥

या संसार जो है सो चित अचितरूप साहबको है सो जो कोई साहबरूप
करि संसारको देखै है ताको न दुःख न शोकहै न वियोगहै साहबतो सर्वत्रपूर्ण है
ऐसो सुखरूप जो है संसार तामें मोर तोरमें परिकै दुखलादिया कहे दुःखभोगन
लग्यो औ वही मोर तोरकी बोली लोग बोलै हैं साहबको नहीं जानैं हैं ॥ ३६६ ॥

लिखापढ़ीमें परे सब, यहगुण तजै न कोइ ॥

सबै परे भ्रमजालमें, डारा यह जिय खोइ ॥ ३६७ ॥

सब लिखापढ़ीमें परे हैं वेदशास्त्र तात्पर्य करिकै साहब को बतावै हैं सो
तो न जान्यो वादविवाद पढ़िपढ़ि करनलगे नये नये ग्रन्थ बनाय लेनलगे लिख-
नलगे वेदशास्त्रको अर्थ फेरि डारनलगे साहब मुख अर्थ जौन तात्पर्य करिकै
वेदशास्त्र बतावै हैं ताको छोड़ि अर्थ बदलै हैं या गुणको कोई नहीं छाड़ै
याही ते सब भ्रमजालमें परे आपने जियको खोइ डारयो ॥ ३६७ ॥

बहु परचै परतीति दृढ़ावै सांचिको विसरावै ।
 कलपत कोटि जन्म युग वागै दर्शन कतहुं न पावै ॥
 परम दयालु परम पुरुषोत्तम ताहि चीन्ह नर कोई ।
 तत्पर हाल निहाल करतहै रीझतहै निज सोई ॥
 बधिक कर्म कारि भक्ति दृढ़ावै नाना मतको ज्ञानी ।
 बीजक मत कोइ बिरला जानै भूलि फिरे अभिमानी ॥
 कह कबीर कर्तामें सबहै कर्ता सकल समाना ।
 भेद बिना सब भरम परे कोउ बूझै संत सुजाना ॥ ३६१ ॥

इति श्रीकबीरजी विरचित बीजक तथा सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा
 श्रीराजा बहादुर श्री सीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथसिंहजूदेवकृत-
 पाखण्डखण्डनी टीकासमाप्ता । शुभमस्तु ।





बघेलवंशागमनिर्देश ।

दोहा-बंदों वाणी वीण कर, विधिरानी विख्यात ॥
 वरदानी ज्ञानी सुयश, हरि गानी दिन रात ॥ १ ॥
 मदन कदन सुत मुद सदन, वारण वदन गणेश ॥
 वंदतहों अरविंद पद, प्रद उर बुद्धि विशेश ॥ २ ॥
 सवैया-श्रीरघुनंदन श्रीयदुनंदन औध द्वारकाधीसविलासी ।
 रावणकंसविध्वंस किये जिन अंश भयअवतारप्रकाशी
 पारकयाभवसिंधु अपारको वोहितनामजासंतसुपासी ।
 वंदत हों तिनके पद द्वंद्व सुमैं अरविंद अनंदकेरासी ॥
 दोहा-शंकर शंकर पद कमल, वंदन करौं निशंक ॥
 शिर मयंक शुचि वंक जेहिं, लसति शैलजा अंक ॥ ३ ॥
 प्रियादास पद पद्म युग, पुनि पुनि करहुँ प्रणाम ॥
 विश्वनाथ नरनाथ गुरु, हरि स्वरूप सुखधाम ॥ ४ ॥
 सांच मकुंद स्वरूपजे, नाम मुकुंदाचार्य्य ॥
 वंदौं नृप रघुराज गुरु, करन सिद्धि सब कार्य्य ॥ ५ ॥

रामभक्त शिरताज जे, महाराज विश्वनाथ ॥

करन अनाथ सनाथ पद, पुनि पुनि नाऊं माथ ॥ ६ ॥

सवैया-भूपशिरोमणिश्रीविश्वनाथतनैरघुराजअनाथनिनाथै ।

श्रीयदुनाथकोभक्त अनूपमसेवी सदाद्विजसाधुनगाथै ॥

तेज तपै दिननाथसों जासु यशो निशि नाथ दिपै महिमाथै

तापद पाथजमें सुख साथ है जोरि कैहाथनवावतमाथै ॥ १ ॥

दोहा-पवनपूत जय दुखदवन, राम दूत सुखधाम ॥

शमन धूत सुकृपाभवन, बल अकूथ सब ठाम ॥ ७ ॥

जय कबीर मतिधीर अति, रति जेहिं पद रघुवीर ॥

क्षीर नीर सत असत कर, विवरण हंस शरीर ॥ ८ ॥

जय हरि गुरु हरि दास पद, पंकज मोहिं भरोस ॥

जाकी कृपा कटाक्षते, मिटत सकल अफसोस ॥ ९ ॥

संतत संतन भूसुरण, चरण कमल शिरनाथ ॥

बार बार विनती करौं, सब मिलि करो सहाय ॥ १० ॥

रच्यो रामरसिकावली, ग्रंथ भूप रघुराज ॥

तामें बहु भक्तन कथा, वरण्यो भरि सुखसाज ॥ ११ ॥

भक्तमाल नाभा जुकृत, ताहीके अनुसार ॥

श्रीकबीरहू की कथा, तामें रची उदार ॥ १२ ॥

छप्पय-जो कबीर बांधव नरेश वंजावलि भाखी ॥

अरु आगमनिर्देश भविष्यहु जो रचि राखी ॥

सोउ समास सहुलास तासु मैं वर्णन कीनो ॥

सुनत गुणत जेहिं सुकवि संत संतत सुख भीनो ॥

तेहितुम वरणौ विस्तार युत, शासन नृप रघुराज दियो ॥

कह युगलदास धरि शीश सो, वर्णन हों आरंभकियो ॥ १॥

घनाक्षरी ।

प्रथम कबीरजी सिधारि पुरी मथुरामें संतन सहित अति हरष बढ़ायकै ॥

तहां धर्मदास आय प्रभु पदपंकजमें बैठो बार बार शीश सादर नवायकै ॥

ज्ञान उपदेश ताको कीन्ह्यो श्रीकबीर तहां कह्यो सो न इति भीति विस्तर बुझायकै ॥
मानिकै यथारथ कृतारथ द्वै धर्मदास चलि मथुरा ते पथ गौन्यों चिते चायकै ॥ १ ॥

दोहा—धर्मदास आवत भये, बांधौगढ़ सहुलास ॥

गुरु विश्वास दृढ़ वास किय, जासु हिये आवास ॥ १३ ॥

पुनि कछु दिन बीते सुख छाये । श्रीकबीर बांधव गढ़ आये ॥
तहँ चौहट बजार मधिमाहीं । निराखि एक सेमर तरु काहीं ॥
तहाँ आठ दिन आसन कीन्ह्यो । सेमर तरु उड़ाय पुनि दीन्ह्यो ॥
निराखि लोग सब अचरज माने । भूपति सों सब जाय बखाने ॥
महाराज साधू यक आई । सेमरतरुको दियो उड़ाई ॥
गुणि अचरज भूपति अतुराई । प्रभु पद किय दंडवत सिधाय ॥
सादर नृप कर जोरि सुहाये । पूंछयो नाथ कहाँसे आये ॥
तब प्रभु बचन कह्यो अभिरामा । हम कबीर निवसे यहि ठामा ॥

दोहा—तब राजा पूंछत भयो, कैसे जानैं नाथ ॥

देहु परीक्षा हमहिं जो, तौ लखि होय सनाथ ॥ १४ ॥

होत अज्ञान नाश जेहिं तेरे । कहिय नाथ सों ज्ञान निवेरे ॥
देवी आदि वेदकी जोई । आदि निरंकारहु जो होई ॥
सादर पूंछत भयो भुआला । दियो बताय कबीरकृपाला ॥
राजाराम कह्यो पुनि वैना । कहिय जो आदि बधेल सचैना ॥
तब तुमको कबीर हम जानैं । अपनो जन्म सफल करि मानैं ॥
सुनि कबीर तब मृदु मुसक्याई । उत्पत्ति जौन बधेल सोहाई ॥
लागे कहन भूपसों सो सब । हम साकेत रहे निवसे जब ॥
तब मोसों कह श्रीरघुराई । तुम कबीर संसारहि जाई ॥

दोहा—जीवनको उपदेश करि, मेरो ज्ञान अशोक ॥

हमरे लोकपठावहू, जो प्रद आनंद थोक ॥ १५ ॥

छंद—द्वापर अंत आदि कलियुगमें कृष्ण प्रकाश अनूपा ॥
पूरुब दिशि सागरके तटमें धरिहै बोध स्वरूपा ॥

तहां जाय तुम प्रकट होउ यह रघुवर आयसु पाई ॥
 प्रगटि वोडैसा जगपतिकेरो दरशन लीन्ह्यो जाई ॥ १ ॥
 सागर तीर गाड़ि कुबरी पुनि बाँधि तासु मर्यादा ॥
 पुनि परबोधि सिंधुको बहु विधि गमन्यों युत अह्लादा ॥
 चलत चलत गुजरात आयकै नगर विलोक्यो जाई ॥
 जहां सुलंक भूप बहु साधुन राखे रहो टिकाई ॥ २ ॥
 भक्तिवान अति रही रानि अति नित सब साधुन केरो ।
 दर्शन करिलै तिन चरणामृत निज घर करै बसेरो ॥
 ते साधुनको दर्शन करिकै एक वृक्षतर जाई ॥
 वसि आसन बिछायकै बैठ्यो हरिको ध्यान लगाई ॥ ३ ॥
 एक दिन रानी सब साधुनको भोजन हित बोलवाई ॥
 पंगति दिय बैठाय गयो मैं नहिं तहँवां हरषाई ॥
 रानी तब मेरे आश्रममें आवतभै अतुराई ॥
 महि तजि अंतरिक्ष आसन मम निरखि परम सुख पाई ॥ ४ ॥
 विनती किय प्रभु आपहु चलिकै मम घर भोजन कीजै ॥
 मैं तब कह नहिं भूख प्यास मोहि हरि आधार गुलि लीजै ।
 रानी कह यकतो सुत विन मैं दुखित राज्य सब सूनी ॥
 दूजे जो न आप पगुधारे तपी ताप तो दूनी ॥ ५ ॥
 मैं कह सोच करै नहिं राजा द्वै सुत हैहैं तेरे ॥
 संतनको चरणामृत अबहीं लै आवे ढिग मेरे ॥
 साधुन चरण धोय चरणोदक लै आई जब रानी ॥
 दियो पियाय रानिको तब मैं निज चरणोदक सानी ॥ ६ ॥
 लहि मेरो वर साधुनकेरो बहु विधि करि सतकारा ॥
 परम प्रमोद पायउर रानी गमनत भई अगारा ॥
 कह्यो हवाल भूपसों सो सब सुनि नृप अति सुखपाई ।
 लै फल फूल द्रव्य बहु सादर मम समीप द्रुत आई ॥ ७ ॥

करि दंडवत प्रणाम विनय किय नाथ दया उर धारी ।
कछु दिन आप वास इत कीजै तौ मैं होहुँ सुखारी ॥
कुटी दियो बनवाय भूप तँहँ करतभयो मैं वासां ॥
कछु वासरमें गर्भवतीमै रानी सहित हुलासा ॥ ८ ॥

दोहा—ज्यों ज्यों रानीके उदर, बढ़यो गर्भ करि वास ॥
त्यों त्यों रानीके वपुष, बाढ़यो परम प्रकाश ॥ १६ ॥

कछु दिन बीते सुदिन जब आयो । तब रानी दुइ सुत उपजायो ॥
भयो जो जेठ पुत्र तेहि आनन । होत भयो सम मुख पंचानन ॥
लहुरो तनय होत जो भयऊ । तेहि नर तनु अति सुंदर ठयऊ ॥
लखि रानी अति अचरज मानी । दिय देखाय भूपति कहँ आनी ॥
मानि शंक भूपालउदासा । कह कबीर आयो मम पासा ॥
सादर करि दंडवत प्रणामा । कीन्हीं विनय भूप मतिधामा ॥
नाथ भये मेरै सुत दोई । है अति कृपा आपकी सोई ॥
पै जो भयो जेठ सुत स्वामी । व्याघ्र वदन सो यह बदनामी ॥

दोहा--सो सुनि मैं वाणी कही, करिकै बहुत प्रशंस ॥
यह सुत वंश वतंसभो, रामलोकको हंस ॥ १७ ॥

व्याघ्र वदन परतो दग जोई । नाम बघेल ख्याति जग होई ॥
याते वंश बयालिस ताई । अटल राज्य रहि है महि ठाई ॥
तेजवान यह होय महाना । पूरण भक्तिमान भगवाना ॥
वंश बयालिसलों अभिरामा । चलिहै तुब बघेल कुल नामा ॥
यह वर लहि सो मेरे मुखते । भूपति आय महल अति सुखते ॥
द्विजन दान दै तोपन काहीं । दगवायो बहु बार तहाँहीं ॥
पुनि मोकहँ सो नृपति सुजाना । करि बहु विनय लाय निजथाना ॥
ऊंचे आसन पर बैठाई । पूजन किय अति आनंद छाई ॥

दोहा—रानीलै दोउ पुत्रको, मेरे पग दिय डारि ॥
तब मैं पुनि देतो भयों, बहु अशीसचित धारि १८

कियो शङ्क नहि कोष न देशू । नहिं चाकर यह बड़ो अँदेशू ॥
चलिहै किमि जग नाम हमारो । नहिं कबीर वर मृषा विचारो ॥
करत करत यहि भांति विचारा । होतभयो जबही भिनसारा ॥
दोहा-सपदि भूप जयसिद्ध तब, जाय जनकके पास ॥

विनय कियो करजोरिकै, मोहिं यह परमहुलास २४
करि महि अटन तीर्थ सब करहूँ । परम प्रमोद हिये महुँ भरहूँ ॥
कौरे न धर्म धरै धन जोरी । क्षत्री द्वै करतो धन चोरी ॥
तेहि नृप तेजअंश घटिजाई । ताते धर्म कौरे मनलाई ॥
कौरे नीति रण पीठि न देई । सो नृप अनुपम यश महि लेई ॥
यह सुनि सब बघेल सुख पायो । पितु प्रसन्नहै वचन सुनायो ॥
जाहु हमारे पितुके पासा । कहौ कौरे जस हुकुम प्रकासा ॥
यह सुनिकै नयसिद्ध भुवाला । जाय पितामह निकट उताला ॥
शीश नवाय उभय कर जोरी । विनय कियो यह इच्छा मोरी ॥
दोहा-जात अहाँ तीरथ करन, दीजै नाथ रजाय ॥

तब सुलंक नृप पौत्रसौं, कह्यो गोद बैठाय ॥ २५ ॥
कौन कलेश परचो तुमकाहीं । जो निज राज्य रहतहौ नाहीं ॥
यह तुब सिगरी राज्य ललामा । का परदेश जानको कामा ॥
सुनि जयसिद्ध कही तब बाता । देहु राज्य दोउ पुत्रन ताता ॥
काम न मम तुब राज्यहि तेरे । करिये विदा यही मन मेरे ॥
तिहरो यश जगमें अति होई । नहिं निंदा करिहै जन कोई ॥
तब कबीर वरदान प्रभाउ । गुणि सुलङ्क नृप भरि अति चाऊ ॥
युगल उतंग मतंग निवेरे । तीस तुरंग तबेले केरे ॥
तिनको नीकी भांति सजाई । द्रव्य ऊन्ट द्वै तुरत भराई ॥
दोहा-वीर महारणधीर जे, काल सरिस सरदार ॥

तिनको तिन सँग करत भे, औरहु चमू अपार २६
सुदिन शोधि जयसिद्ध नरेशा । पितु मातहिं किय खातिर वेशा ॥
सुनि रानी अतिशय विलखानी । महुँ संग चलिहौं कह बानी ॥

जहाँ धर्म रहती तहँ माया । जहाँ रूप रहती तहँ छाया ॥
 लै तिय सँग मोहिं शीश नवाई । मोसों बहुत आशिषा पाई ॥
 दशरकें दिन किय प्रस्थाना । पुरलोगनको करि सन्माना ॥
 कह कबीर पुनि मो ढिग आई । कीन्ही विनय प्रमोद बढ़ाई ॥
 प्रभु मोहिं जिमि दीन्ह्यो वरदाना । तिमि मम सँग कीजिये पयाना ॥
 तब मैं सुनि यह ताकरि बानी । हँसिकै वचन कह्यो सुखमानी ॥

दोहा—तुम सेवा अति मम करी, दोउ जन्मके मोर ॥
 भक्त अहौ ताते चलहुँ, संग तजौं नहिं तोर ॥२७॥
 विजय मुहूरत अबहिं नृप, गुणि मम वचन प्रमान ॥
 मुदित निसान बजायकै, बेगिहिं करहु पयान ॥२८॥

छंद—वर मानि मोर निदेश, जयसिद्ध नाम नरेश ॥
 पितु पितामह ढिग जाय, बहु भौंति शीशानवाय ॥१॥
 स्वरदाहिनो नृप साधि, चढ़ि चल्यो हय सुख कांधि ॥
 तेहिं समय पुरजन यह, झुरि दिय अशीस समूह ॥२॥
 जस देश यह गुजरात, तसदेश लहो विख्यात ॥
 तुब पर देवी मात, रक्षक रहै दिन रात ॥ ३ ॥
 तिमिरानिभरि अति चाउ, परि सासु ससुराह पाँउ ॥
 कह छोंड़ियो नहिं छोह, नहिं किह्यो कबहुं कोह ॥४॥
 पुनि रानि युत जयसिद्ध, यश जासु जगत् प्रसिद्ध ॥
 मोहिं सहित साधु समाज, संग लै चमू छबि छाज ॥५॥
 किय गवन मग रणधीर, तनु धरे मनु रसबीर ॥
 बिच बीच पथ करि वास, पुरगढ़ा कोसहुलास ॥६॥
 पहुँच्यो महीश सुजान, लिय भूप तहँ अगवान ॥
 निज महल गयो लेवाय, दिय नजर बहु सुख छाय ॥७॥
 जयसिद्ध पुनि नरराय, सरि नर्मदामें जाय ॥
 तिय सहित करि स्नान, धन अमित दीन्ह्यो दान ॥८॥

तुमहीं राजा अहौ हमोर । निशि दिन सेवन करब तिहारे ॥
 भये खुशी केहरीसिंह सुनि । करि नवाबको अति खातिर पुनि ॥
 भवन जानकी दई बिदाई । गयो सो बार बार शिरनाई ॥
 नृप केहरीसिंह सहुलासा । कछु वासर तहँ कियो निवासा ॥
 सरदारनको करि सन्माना । सब चकरनको सहित विधाना ॥
 दिय चिट्ठा चाकरी चुकाई । वसे सबै सेवा मनलाई ॥

दोहा--तहां केहरी सिंहके, माल केसरी पूत ॥

होत भयो जाके वदन, वसी सरस्वता पूत ॥३७॥

उभय मल्लको जोर तनु, सुंदर तेज विधान ॥

कछु दिनमें तेहि व्याहकरि दीन्ह्यो दान महान ३८॥

फेरि व्यतीत भये कछुकाला । तनु तजि करि केहरी भुवाला ॥
 वास कियो वासवपुर मांही । मालकेसरी सपदि तहांही ॥
 विधि युतमृतकक्रिया पितुकेरो । करि दीन्ह्यो तहँ दान घनेरो ॥
 मालकेसरी कछु दिन माहीं । उपजायो सुंदर सुत काहीं ॥
 सारंग देव नाम तेहि भयऊ । सुयश प्रताप नाम तेहि ठयउ ॥
 भीमलदेव भयो सुत तासू । फैलि रह्यो जगमें यश जासू ॥
 हरिगुरुको भो भक्त महाना । पाल्यो परजन प्राण समाना ॥
 ब्रह्मदेव ताके सुत जायो । सो निज पितुसों वचन सुनायो ॥

दोहा--आप कीजिये भजन हरि, सुचित भौन करि वास ॥

मोहिं दीजिये फौज सब, करि उर कृपा प्रकाश ॥३९॥

कछु दिन सैर करौं महि माहीं । प्रकटहुँ नाम रावरे काहीं ॥
 सुनि नृप भीमलदेव उदारा । ब्रह्मसूनु सों वचन उचारा ॥
 मनमें यह विचार किय नीको । करै सुगुती सोइ सुत ठीको ॥
 जगमें नहिं कुपूत कहवायो । अस करतूति करन मन लायो ॥
 ब्रह्मदेव सुनि ये पितु वैना । करी तयारी भरि अतिचैना ॥
 चतुरंगिनी चमू सँग लैकै । कियो पयान वीररस म्वैकै ॥
 राज्य गहरवारनके आयें । कछु वासर तहँ वसि सुख छाये ॥
 पुनि सिधाय शिरनेतन देगू । तहँ विवाह किय ब्रह्म बरेशू ॥

दोहा-कछुक दिवस शिरनेतनृप, सेवा करि युत प्रीति ॥

ब्रह्मदेव सों समय गुणि, कह्यो विनयकी रीति ॥ ४० ॥

यक मम भाई देश हमारे । गनत न हमहिं भये बलवारे ॥

तिनको दंड दीजिये नाथा । तौ हम वसैं राज्य सुख साथी ॥

ब्रह्मदेव यह सुनि तेहिं वानी । कह नर पठैलेहिं हम जानी ॥

पुनि नृप ब्रह्मदेव रिस छायो । पाती यक ऐसी लिखवायो ॥

ग्यारहसै नेजा सँग लीन्हे । आवत तुब दरशन मन दीन्हे ॥

हैं बघेल हम विदित जहाना । तुम शिरनेत अनुज बलवाना ॥

यह हवाल लिख पत्री काहीं । दै पठयो यक मनुज तहाँहिं ॥

सो पाती दिये तिन कर जाई । बांचत गयो कोपमें छाई ॥

दोहा-तुरत जवाब लिखायकै, दीन्ह्यो तेहिं कर धारि ॥

आप दरश पावें जो हम, धनि धनि भाग्य हमारि ॥ ४१ ॥

सुन्यो न हम बघेलको नामा । निराखि होहिं अब पूरण कामा ॥

पाती असि लिखाय शिरनेता । बांध्यो युद्ध करनको नेता ॥

फौज जोरि आगे कछु जाई । ठढ़े भये रोष अति छाई ॥

इतते ब्रह्मदेवकी सैना । काल समान गई कछु मैना ॥

भगी फौज शिरनेतन केरी । नृप शिरनेत बन्धु तहँ घेरी ॥

पकरि भूष शिरनेतहिं काहीं । सौंप्यो सो अतिहीं सुख माहीं ॥

ब्रह्मदेवको निज सब देशू । सौंपिदियो शिरनेत नरेशू ॥

तहँ नृप ब्रह्मदेव सहुलासा । करत भये कछु वासर वासा ॥

दोहा-ब्रह्मदेवके होतभयो, तनय सिंह जेहिं नाम

सिंहदेवके पुनि भये, वेणीसिंह ललाम ॥ ४२ ॥

भूपति वेणीसिंहके, नरहरिसिंह सुजान ॥

नरहरि हरिके होतभे, भैददेव मतिवान ॥ ४३ ॥

शिरनेतनके सहित उछाहा । भैददेवको कियो विवाहा ॥

भैददेवको परम प्रतापा । बाढ़्यो रिपुन देत अति तापा ॥

भैददेव पुनि पितु ढिग जाई । सादर विनती कियो सुहाई ॥

सँग चलीसैन्य विशाल, सेनप लसे सम काल ॥
 सुत सहित सैन समेत, विरसिंह नृप सुख सेत ॥ ९ ॥
 नियरान चित्रहि कूट, तब सुन्यो शाह अटूट ॥
 निज फौज दियो निदेश, तहँ भै तयारी वेस ॥ १० ॥
 पयस्वनी सरिके पार, विरसिंह भूप उदार ॥
 जब गयो हलकारान, किय विनय जोरे पान ॥ ११ ॥
 सुनु खोदावंद हवाल, बड़ी सैन्य आवति हाल ॥
 सुनि बादशाह उमाह, भरिबैठ तखतहिं माह ॥ १२ ॥
 विरसिंहदेव भुवाल, गजते उतरि तेहिं काल ॥
 ठिग शाह चलि अभिराम, बहुभांति कियो सलाम ॥ १३ ॥
 समभानु पुनि विरभान, हयको उघाटि महान ॥
 गजमस्त कै परजाय, बैठत भयो सुख छाया ॥ १४ ॥
 लिखि साह तब हरषाय, तेहि तुरत निकट बोलाय ॥
 लिय तखत में बैठाय, बहु विधि सराहि सुभाय ॥ १५ ॥
 पुनि कह्यो बाँकेवीर, तुम सम ननिडर सुधीर ॥
 तुम कहँके अहौ नरेश, काहे चल्यो परदेश ॥ १६ ॥

सौरठा—केहि कारण मम देश, लूट्यो सो नहिं नीक किय ॥
 शाह वचन सुनि वेस, वीरभानु बोलत भयो ॥ ४९ ॥

हम क्षत्री बघेल हैं रूरे । वासी थल गुजरातहि केरे ॥
 आप हमारे हैं सति स्वामी । हम चाकर राउर अनुगामी ॥
 निज करतब देखायवे काहों । आये हम यहि देशहिं माहीं ॥
 जो रिपुता करि हमको मारयो । ताको हमहूँ सपदि सँहारयो ॥
 तुव देशहिको द्रव्य न खायो । निज कोषहिको वित्त उठायो ॥
 जो नृप हमको तेज देखायो । ताहि दंडदै फेरि बसायो ॥
 सो आपहिकी बदि करि दीन्ह्यो । वृथाकोप हमपर प्रभु कीन्ह्यो ॥
 यह सुनि बादशाह कह वानी । यहि बालक की बुद्धि महानी ॥

दोहा-पुनि कह विरसिंह देवसों, तुव सुत बड़ो निशंक ॥

रणरिपुगण जीतन प्रबल, वीर धीर अतिवंक ॥ ५० ॥

छंदहरिगीतिका-तुव पूत बड़ो सुपूत है है वंशतिहरे माहिं ॥

नृप द्वादशैको भूप होई अचल भूमिसदाहिं ॥

यह भाषि शाह उछाह भरि वारहों नृपकी राजि ॥

दियवखशिसादर नानकारहि कह्यो भाई भ्राजि ॥

गिरि विंध्य बाँधव दुर्गके तुम ईश होहु प्रसिद्ध ॥

नृप सकल महिके करहि सेवा होयसिद्धि समृद्ध ॥

लिखिदियो विरसिंहदेवको पुनि भूप शाहसमेत ॥

चलि प्राग करि स्नान दिय बहुदान द्विजनसचेत ॥

तहँ भूप बहु सन्मानकरि कीन्ह्योनिमंत्रण शाह ॥

पुनि शाह दिल्लीको गयो प्रागहि वस्यो नरनाह ॥

विरसिंहदेव विवाह किय सुत वीर भानुहिंकर ॥

सब जमींदारनको निमंत्रण दियो आये ढेर ॥ ३ ॥

दिय दान द्विजन महानयुत सन्मान मोद अमान ॥

सरसान सकल जहान बिच किय गायकन बहुगान ॥

गज बाजि धन मणिमाल वसन विशाल दै सब काह ॥

करि मान किय सबकी विदा विरसिंह सहित उछाह ॥

दोहा-जमींदार निज निज सदन, जातभये हर्षाय ॥

त्योहीं याचक गुणीजन, गये अमित धन पाय ॥ ५१ ॥

करिकै सविधि क्रिया पितु केरी । विरसिंहदेव द्विजन बहु हेरी ॥

विविध विधान दान बहु दीन्ह्यो । युत सन्मान विदा बहु कीन्ह्यो ॥

कछु वासर करि वास प्रयागा । विरसिंहदेव भूप बड़ भागा ॥

बोलि ज्योतिषिन सुदिन शोधाई । चकरनको चाकरी देवाई ॥

करि खातिरी कह्यो तिनपाहीं । काल्हि सुदिन हमरो सुख माहीं ॥

चलो सबै बाँधव गढ़ देखी । सुनत वीर है सयुग विशेषी ॥

कहे नाथ भल कीन सलाहा । हमरे उर महान उत्साहा ॥

पुनि विरसिंहदेव मुद भरिकै । वीरभानु युत मज्जन करिकै ॥

दोहा—वेणीमें बहु दान दै, युत सन्मान द्विजान ॥

लै सँग सैन्य पयान किय, विपुल बजाय निसान ५२॥

कवित्त ।

सोहत सवाव लाख संगमें सवार लोने युग लाख पैदरहु गौने जासु साथमें ॥

वेशुमारगज त्योंहीं सुतर अपार राजे योंहीं कूँच करि भरे आनंदके गाथमें ॥

बिच बिच पंथ वास करि बांधवदुर्ग, पास आय नीचे डेरा कियो धारे अखहाथमें ॥

विरसिंहदेव जाय लषणकी पूजा तहां करि सविधान धायो पद जल माथमें ॥ १ ॥

स०—सादर साधुन विप्रनको नृप छिप्र भली विधि बोलिजेवायो

फेरिसबै जमींदारन औ भुमियानको आपने पास बोलायो ॥

ते सब आय सलाम किये दिये भेट कह्यो नृप वैन सोहायो ॥

डेरा करो सब जाय सुखी दियो दण्ड तेहीं जो बोलाये न आयो ॥

दोहा—साँझ समय दरबारको, सादर सबहिं बोलाय ॥

कह रै यत तुम शाहकै, सुनहु सबै चित लाय ॥ ५३ ॥

कवित्त ।

शाह यह राज्य हमैं दियो है उछाह भरि प्रथम समीति वैन सबसों बखानै हैं ॥

रीति या बघेलवंशकी है कोष ठानै नाहिं येतेहुँ पै कोई जो न हुकुमको मानै हैं ॥

युद्ध करिवेको जो तयार होत ताको हम बावही है क्रुद्ध हैकै आसनको ठानै हैं ॥

ऐसे अवनीशवैन सुनि सुनि शीशनाय कहे हम रावरेके रैयत प्रमानै हैं ॥ १ ॥

सोरठा—ईश्वर आप हमार, हम सेवक हैं रावरे ॥

सुनि गढ़भूप उदार, आयो विरसिंहदेव ढिग ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

तेग धरि आगे विनय कियो अहैं बाल हम आपहैं हमारे पिता पालैं प्रीति ठानिकै ॥

सुनि विरसिंहदेव बाहैं गहि पुत्र कहि लीन्ह्यो बैठाय उर महामोद मानिकै ॥

कह्यो पुनि तूतो वीरभानुके समान मेरे कह्यो पुनि सोऊ पाणि जोरि सुख सानिकै ॥

महाराज किला चलि बैठैं राज्य आसनमें करो सोई दीजिये निदेश दास जानिकै १

दोहा—सुनत वयन विरसिंह नृप, बोलि ज्योतिबिन काह ॥
 सुदिन शोधि गुरु साधु द्विज, आगे करि सउछाह ५५
 चल्थो निसान बजायकरि, जायदुर्ग भरि चाय ॥
 द्वारपालको देतभो, बहु इनाम बोलवाय ॥ ५६ ॥
 पूजा करि सब सुरनकी, अति आदर युत भूप ॥
 विप्रन साधुनको कियो, निवता महाअनूप ॥ ५७ ॥

बाजन बाने विविध प्रकार । तोपैं छूटतभई अपारा ॥
 सुदिन शोधिसिंहासन पाहीं । विरसिंह भूप बैठ सुखमाहीं ॥
 जमीदार भूमियन बोलाई । बिदा कियो दै तिन्हैं बिदाई ॥
 रैयत साहु महाजन जेते । आयभेंट दिय नति करि तेते ॥
 शिरोपाउँदै तिन सब काहीं । खातिर करि किय बिदा तहाँहीं ॥
 राज्य करत बहु वर्ष बिताये । वीरभानु सुतयुत अति चाये ॥
 नृप विरसिंहदेव एक वासर । कीन्ह्यो मन विचार यह सुखकर ॥
 सुतहिं समीप राज्य यह सिगरी । भजन करौं चलि नहिं अब विगरी ॥

दोहा—बोलि साधु गुरुके सपदि, सुदिन शोधि नरराय ॥
 वीरभानुको शुभ दिवस, दिय गद्दी बैठाय ॥ ५८ ॥

आप भजन करिवेकें हेतू । मणिदै रानी-सहित सचेतू ॥
 विरसिंहदेव प्रागमें आई । वास कियो तिरवेणि नहाई ॥
 दिनप्रति ब्राह्मण साधुन काहीं । भोजन करवावै सुखमाहीं ॥
 आनंद मग्न रहै वसुयामा । सुमिरण करत जानकी रामा ॥
 वीरभानु बांधवगढ़में इत । पैठि राज्य आसन मन प्रमुदित ॥
 राज्य कियो बहु दिवस समाजा । तासु सुवन तुमराज विराजा ॥
 करहु निशंक राज्य सब काला । यह सुनि राजाराम निहाला ॥
 बहु विधि स्तुति करिकै मेरी । मोसों विनती करी बहुतेरी ॥

दोहा—कह कबीर साहेब गुरु, तुम हमरें कुलकेर ॥
 शिष्य कीजिये मोंहि प्रभु, अब न कीजिये देर ॥ ५९ ॥

यह सुनि तब मैं अति हर्षाई । राजारामहिं कह्यो बुझाई ॥
 द्वै है तुम्हरे दशयें वंसा । परमप्रकाशमान यक हंसा ॥
 कथिहै सो मुख अनुभव वानी । मोर शब्द गहि है मुखमानी ॥
 सोई तुव कुलको अवतंसा । विजक ग्रंथको करी प्रशंसा ॥
 ताको अर्थ अनूपम करि है । मम आश्रमहिं आय सुख भरि है ॥
 यह सुनि रामभूप शिरनाई । करि प्रशंसा जनन सुनाई ॥
 नंदपुराणिक तहँ सुख भीनी । करी दंडवत वंदना कीनी ॥
 राजाराम महलमें जाई । रानीसों सब गयो जनाई ॥

दोहा-रानी सुवचन कुँवरिसों, किय यह विनय ललाम ॥

श्रीगुरुको लै आइये, महाराज निज धाम ॥ ६० ॥

श्रीकबीर गुरुको मुदित, सादर रामभुवाल ॥

लैआये निज भवनमें, करि बहु विनय रसाल ६१ ॥

कवित्त ।

रहै जहाँ आसन तहाँई श्रीकबीरजीको गुफा बनवायो प्रीतियुत राजारामहै ।
 साज मँगवाय सब चौकाकै कबीर शिष्य राजा अरु रानिहूँके कीन्ह्यो तेहिं ठामहै ।
 औरों सब भूपके समीपी भये शिष्य सुखी पूजा जौन चढ़्यो तहाँ अगणित दामहै ।
 दियो भंडारा श्रीकबीर बोलि साधुनको जय जयरह्यो पूरि बांधवगढ़ धामहै ॥ १ ॥

दोहा-युगल गाँउ अरु गाँउ प्रति, रुपयाएक चढ़ाई ॥

दिय कागज लिखवायकै, रामभूप हर्षाय ॥ ६२ ॥

होय जो हमरे वंशमें, भूपति कोउ उदार ॥

लेय न कबहूँ शपथ तेहि, अर्पन कियो हमार ॥ ६३ ॥

श्रीकबीरजी द्वै प्रसन्न अति । त्रिकालज्ञ पुनि कह्यो महामति ॥

औरहु कछु भविष्य मैं भाखें । सो तुम सति निज मन गुणिराखो ॥

दशयें वंश हंसको रूपा । तुमहीं प्रगट होहुगे भूपा ॥

सुवचन कुँवरि रानि तुव जोई । सो परिहार भूप घरहोई ॥

तोसों तासु होयगो व्याहा । हरि पद रति अति करी उछाहा ॥

ताके वीरभद्र सुत तेरो । जन्मिदेयगो मोद वनेरो ॥

सो तेहिते इंग्यरहौ वंशा । होइहै नृपनमाहँ अवतंशा ॥
बिच बिच और भूप जे है हैं । ते हरिभक्ति हीन है जै हैं ॥

दोहा—ब्रह्मतेजते तपित अति, हैहै कोउ नरेश ॥

तजि यह बांधव दुर्ग को, वसिहै औरे देश ॥ ६४ ॥

ते सब भूपन को जस नामा । शिष्य मोर लिखिहैं अभिरामा ॥
दशै वंश तुव अंतहिकाला । संत वेषदै दरश विशाला ॥
तोको, रामधाम लैजैहौं । आवागमन रहित करिदैहौं ॥
अस कहि श्रीकबीर भगवाना । परमधामको कियोः पयाना ॥
श्रीकबीरके शिष्य सुजाना । धर्मदास भे विदित जहाना ॥
तिनके शिष्य प्रशिष्य घनरे । लिखे जे औरहुँ भूप बड़ेरे ॥
तिनको नाम सुयश परतापा । कहिहौं मैं सुखमानि अमापा ॥
कह्यो पूर्व जो संत कबीरा । वीरभानु नृप भो मतिधीरा ॥

दोहा—राम भूप सुत तासु भो, इन दूनों करतूति ॥

प्रथम कलुक वर्णन करौं, जग प्रसिद्धमजबूति ॥ ६५ ॥

दिल्ली रह्यो हुमायूँ शाह । मान्यो हुकुम सकल नरनाहा ॥
शेरशाह दिल्लीमें आई । दियो हुमायूँ शाह भगाई ॥
दिल्लीमें करि अमल सुहायो । सदल आपनो अदल चलायो ॥
शाह हुमायूँ बेगमकाहीं । गर्भवती सुनिकै श्रुतिमाहीं ॥
नरहरि महापात्र लिय मांगी । सब भूपन ढिगगे सुख पागी ॥
राख्यो नहिं कोउ भूपति ताहीं । आयो वीरभानु ढिग माहीं ॥
वीरभानु तेहिं भंगिनी भाखी । पाटन शरह देतभयो राखी ॥
बेगम सो दिल्लीपति जायो । अकबर शाह नामसो पायो ॥

दोहा—आई बाधा नगरमें, शेरसाह की सैन ॥

वीरभानु नृपसों कहे, लखि आये जे नैन ॥ ६६ ॥

तहँते नृपति पयान करि, बांधवगढ़गो धाय ॥

शेरशाह लिय छँकि तेहिं, अमित सैन्य लै आय ॥ ६७ ॥

छेंके रह्यो वर्ष सो बारा । खायो बोयो आम अपारा ॥
 दुर्ग अटूट मानि सो हारा । लै सब सैना सपदि सिधारा ॥
 वीरभानु वरवीर नरेश । छीनिछियो दल लै निज देशा ॥
 लै विछायती दल निज संग । चलो हुमायूं सहित उमंगा ॥
 इत अकबर यक दिवश उचारा । सुनिये बांधवनाह उदारा ॥
 भाई रामसिंह सँग माहीं । बैठतहौ नित भोजन काहीं ॥
 हमको क्यों बैठावत नाहीं । नृप कह आप खामिदै आहीं ॥
 पूछिलेहु मातासों जाई । पूछ्यो सो सब दियो बताई ॥

दोहा-खड्गचर्म लै हाथमें, सुनि अकबर सो हाल ॥

चल्यो कियो तिन संगमें, वीरभानु निज बाल६८॥

अकबरसों तहँ राम कह, कोस कोस करि वास ॥

चलिये दिल्लीनगरको, जुरै फौज अनयास ॥ ६९ ॥

जुरी चमू चतुरंग संग, अमित तुरंग मतंग ॥

रँगो रामसिंह जंगके, रंग अमंग उमंग ॥ ७० ॥

नातनको लिखवायो पानी । चारों नृप आये मुदमानी ॥

तिन सँग रामसिंह यशवाला । जातभयो भो जंग विशाला ॥

हृन्योशेरको तहाँ हुमाऊ । दिल्ली तरुत बैठ युत चाऊ ॥

इतै सुलेमैं राम सँहारी । दिल्लीको द्रुत गयो सिधारी ॥

ताकन तनय हेतु सुखधारी । चढ्यो हुमायूं ऊंचि अठारी ॥

मोद मगनसों गिरिगो नीचै । होत भयो तुरंत वश मीचै ॥

तनय हुमायूं अकबर काहीं । बैठायो तब तरुतहिं माहीं ॥

वीरभानु जब तज्यो शरीरा । रामसिंह नृप भों मतिधीरा ॥

दोहा-दिल्लीको पुनि राम नृप, गये अकबर शाह ॥

कीन्ह्यो अति सन्मानसो, अकसमानि नरनाह ॥ ७१ ॥

औचक मारनको गये, ते नृप रामहिं काहैं ॥

फिरे मानि विस्मय सबै, निरखि चारु चौवाहैं ॥ ७२ ॥

नापितसेन स्वरूप धरि, हरि जिनके तनु माहिं ॥
 तेल लगायो राम सो, कहियेकेहि नृप काहिं ॥ ७३ ॥
 वीरभद्र तेहि सुत भयो, वीरभद्र कर संत ॥
 आगे वणों औरहू, भये जे नृप मतिमंत ॥ ७४ ॥
 वीरभद्र सुतविक्रमा-दित्य भयो अबदात ॥
 नामहिंके अनुगुण भयो, जेहिं गुण जग विख्यात ॥ ७५ ॥
 लीन्ह्यो जाय रिझाय जो, निज करतूतिहि माहिं ॥
 ब्रह्मके मारे मरिलह्यो, सोन देव पुर काहिं ॥ ७६ ॥
 अमरसिंह ताको सुवन, सरिस अमरपति भोज ॥
 रीवां रजधानी करी, सींवा यश अरु वोज ॥ ७७ ॥
 दिल्लीको गमनत भयो, चुक्यो खर्च मग माहिं ॥
 लूटि दौलताबादको, गयो शाह ढिग पाहिं ॥ ७८ ॥
 उमरावन चुगुली करी, शाह निकट द्रुत जाय ॥
 बादशाह मान्यो नहीं, नृप पै खुशी बनाय ॥ ७९ ॥
 अमरसिंह भूपालके, भो अनूपसिंह भूप ॥
 भूपर जासु प्रताप यश, छायो परम अनूप ॥ ८० ॥
 भावसिंह ताको तनय, भयो भानु सम भास ॥
 दाता ज्ञाता वीरवर, ज्ञाता बुद्धि विलास ॥ ८१ ॥
 जगन्नाथजी जायकै, मूर्ति लाय जगनाथ ॥
 थापिव्यासके ग्रंथको, संच्यो भरि सुख गाथ ॥ ८२ ॥
 राना घरमें व्याहभो, तहँते मूरति दोय ॥
 लाये सरस्वति गरुड़की, थापित किय मुदमोय ॥ ८३ ॥
 विप्रन दान महानदै, कीन्हे बहु सन्मान ॥
 तिनके भे अनिरुद्ध सिंह, भूपति परम सुजान ॥ ८४ ॥
 ताके भो अवधूतसिंह, जाहिर दान जहान ॥
 ताके सुवन अजीतसिंह, दुवन अजीत महान ॥ ८५ ॥

जाके गौहरशाह बसि, जायो अकबर शाह ॥
 सैन्य साजि जेहिं तख्तमें, बैठावत नरनाह ॥८६॥
 जाजमऊलों जायकै, दिल्ली दियो पठाय ॥
 अंगरेजहुँ अठवर्नको, दीन्ह्यो जंगभगाय ॥८७॥
 तासु तनय जयसिंहभो, जयमें सिंह समान ॥
 जाहिर दान कृपानमें, भक्तिवान भगवान ॥८८॥
 दशहजार असवार लै, पूनाको हारोल ॥
 आवतभो यशवंत तेहिं, हत्यो प्रताप अतोल ॥८९॥
 गहरवार करि गर्व बहु, लीन्है देश दबाय ॥
 तिनको मारि भगाय दिय, बचे ते गिरिन लुकाय ९०
 देश आपने अमल करि, दै विप्रन बहु दान ॥
 अंत समय तनु प्राग तजि, हरिपुर कियो पयान ॥९१॥
 विश्वनाथ नरनाथभो, तासु तनय यशगाथ ॥
 रति अनन्य सियनाथपै, भई जासु महिमाथ ॥९२॥
 सारि सर घर घर पुर पथन, छयो राम गुणगाथ ॥
 कितो परीक्षित कै कियो, कलि कृतयुग विश्वनाथ ९३
 तासु तनय रघुराज भो, महाराज शिरताज ॥
 राजत राज समाज मधि, जाको सुयश दराज ॥९४॥
 श्रीकबीरजी कथित यह, है विचित्र नृप वंश ॥
 नहिं असत्य मानै कोऊ, जानि संत अवतंश ॥९५॥
 सतयुगमें सत नाम रह, अरु मुनींद्र चैताहिं ॥
 करुणामय द्वापर रह्यो, अब कबीर कलि माहिं ॥९६॥

कवित्त ।

नृपति उदार केते भये अनुसार मति तिनके अपार गुण यश कियो गानहै ॥
 जनम करम भूप रघुराजको अनूप धरमको जूप दिव्य जाहिर जहानहै ॥
 देख्यो निज नैन ताते भरो अति चैन उर करतहौं निज वैन सविधि बखानहै ॥
 कहै युगलेश अहै झूठको नलेश कहूं मानिहै विशेष सांच सोई बड़ो जान है ॥१॥

छंद-कह्यो कबीर भविष्य राम नृप सुनि सुखराशी ॥
 हंसिनि सुवचन कुँवरि रानि तू हंस प्रकाशी ॥
 वीरभद्र तुव सुतहु हंस नित हरि ढिग वासी ॥
 गुणगंभीर अति वीर धीर यश सुयश विलासी ॥
 जब दशै वंश अवतंस नृप, प्रगट होयहै तू अवशि ॥
 तब सति परिहरि नरेशकुल, जनमीयदतुवतियहुलसि ?

दोहा-तासों तेरो होयगो, सुखप्रद प्रथम विवाह ॥
 वीरभद्र यह तेहि उदर, वंश इग्यरहे माह ॥९७॥
 जनमि देयगो तुमहि अति, परमप्रमोद विख्यात ॥
 तेजवंत क्षिति छाये है यश अनंत अवदात ॥९८॥
 समय विजय करसिंहतो, भो जयसिंह भुआल ॥
 गंगलियो अगवान जेहि, तनु त्यागनके काल ॥९९॥
 प्रगट भयो ताके तनय, हंस जो कह्यो कबीर ॥
 विश्वनाथ तेहि नामभो, परमयशी रणधीर ॥१००॥
 रघुपति भक्त अनन्य अति, अरु ब्रह्मण्य शरन्य ॥
 अम्रगण्य क्षिति नृपनमें, तेग त्याग जेहि धन्य ॥ १ ॥
 तेहि आदिक गुण तेज यश, औरहु अमित चरित्र ॥
 मैं विचित्र वर्णन कियो, ग्रंथ सोपरमपवित्र ॥ २ ॥
 देखहिं श्रद्धावान जे, होवैं मनुज सुजान ॥
 औरहु करहुँ बखान कछु, निजमतिके अनुमान ॥ ३ ॥
 रानी सुवचन कुँवरिभै, पुरी उचहरा माहिं ॥
 सुता भई शिवराज नृप, व्याहिगई तेहि काहिं ॥ ४ ॥
 पद्यो भागवत ताहिमें, दृढ़भो तेहिं विश्वास ॥
 गुण यश अनुपम तासुभे, किय जो कबीर प्रकाश ॥ ५ ॥
 विश्वनाथ नरनाथकी, तिय सों अति अभिराम ॥
 कुँवरि सुभद्रा नाम जेहिं, सरिस सुभद्रा आम ॥ ६ ॥

छप्पय-वीरभद्र सुत रामभूपको हंस सुहायो ॥
 श्रीकवीर आगम निदेश निजग्रन्थहिं गायो ॥
 विश्वनाथ तेहिं तीय गर्भ जबते सो आयो ॥
 तबते बाँधवदेश धर्म परमानंद छायो ॥
 कहूँ रह्यो न अधरमलेश क्षिति विन कलेश पुरजन भयो
 कलि वेश छयो कृतयुतधरम सतयुगलेश सो कहि दयो १
 दोहा-रींवा घर घर सब प्रजा, सुखभरि करत उचार ॥

विश्वनाथके होय सुत, तौ धनि जन्म हमार ॥ ७ ॥

परमहंस जो ऋषभदेवसम । चतुरदास जेहि नाम शमन भ्रम ॥
 फिरतरहे रींवापुरमाहीं । रामभजनमें मग्न सदाहीं ॥
 डोलत मग औरही मुखबोलैं । निज हियकोअंतर नहिंखोलैं ॥
 वर्षाभ्रतु धारैं शिरवर्षा । जाड़े जलमें वसैं सहर्षा ॥
 ग्रीष्म तपत उपलमें सोवैं । प्रेमेते हँसैं कहूँ क्षण रौवैं ॥
 नृप रघुराज सुतासु चरित्रा । भक्तमालमें रच्यो पवित्रा ॥
 परमहंस सो सहज सुभाये । सुविश्वनाथ जन्मदिन आये ॥
 लगे बजावन मुदित नगारा । कहि मुख हंस लेतु अवतारा ॥

दोहा-यह हवाल जयासह नृप, मनि सुनित्यों पितु मात ॥

क्षण क्षण अति हरषातमे, हियमें सो न समात ॥ ८ ॥

अष्टादशसै असीको, साल सुकातिक मास ॥

कृष्णपक्ष तिथि चौथ शुभ, वासरदानि हुलास ॥ ९ ॥

वीरभद्र नृप हंसस्वरूपा । भयो भूप रघुराज अनूपा ॥
 कृष्णचंद्रको प्रिय अधिकारी । शर्मद धरा धर्म धुरधारी ॥
 नाम भागवतदास दुलारा । करहिं मातु पितु सदा उचारा ॥
 बालहिते भो ज्ञाननिधाना । भक्तिवान पूजक भगवान्ना ॥
 कछुदिनमें जननी मतिवारी । तनु ताजि पुरवैकुण्ठ सिधारी ॥
 पिता पितामह निकट सकारे । लैनित जाहिं खेलावन वारे ॥
 तिनसों कहि कहि सुंदर वानी । कथै ज्ञान मानहु बड़ ज्ञानी ॥

जगत शरीर अनित्यहि जानो । मरत सो जीव नित्य ध्रुव मानो ॥
अजर अमर तेहि गावत वेदा । वृथा करत तेहि हित नरखेदा ॥
दोहा-सुनि सुनि कहे प्रसन्न मन, ते अति हिय हर्षात ॥
हैं ये पुरुष पुरानकोउ, पाल रूप दर्शात ॥ ११० ॥

कछु दिनमें पुनि जाय प्रयागा । नृप जयासिंह तुरत तनु त्यागा ॥
श्रीविश्वनाथ राज पद पायो । रघुराजहु युवराज कहायो ॥
रहे उर्मिलादास सुसंता । भक्त अनन्द उर्मिलाकंता ॥
चलि चलि तिनके आश्रम माहीं । दर्शन तिनको करै सदाहीं ॥
मंत्र लेनको बड़े उमाहा । विनय कियो तिनसों सउछाहा ॥
प्रभु मोहिं मंत्र कृपाकरिं दाँजै । मेरो जन्म सफल जगकीजै ॥
नाथ कह्यो तबअति हरषाई । मेरे रूप संत यक आई ॥
देहैं तोहिं मंत्र सहलासा । द्वैहै सिंगरे जगत् प्रकासा ॥
दोहा-तोहिं देनको मंत्र मोहिं, है नहिं लखन नियोग ॥

मेटिहै तुव भव सोग सोई, ध्रुवलखिहै सब लोग ११ ॥
छंद-स्वामि मुकुंदाचार्य्य शिष्य यक संत रह्यो अभिरामा ॥
नाम जासु लक्ष्मी प्रपन्न ढिग विश्वनाथ निष्कामा ॥
मंत्र लेनकी इच्छा गुणि मन श्रीरघुराजहि केरो ॥
भाषि गयो भूपतिसों निज गुरु भक्ति प्रभाव घनेरो १॥
आश्रम परम मनोहर तिनको ब्रह्मशिला तट गंगा ॥
प्रियादास जे गुरु आपके तिनको रह सतसंगा ॥
भक्ति ग्रंथ पठे तिनके बहु वाल्मीकि रामायन ॥
श्रीभागवत भागवत पूरे पढ़त निरंतर चायन ॥ २ ॥
लायक गुरु विशेष होनेते नरनायक सुत केरे ॥
आयसु होय बोलिलै आऊं ऐहैं विनती मेरे ॥
विश्वनाथ कह आप सरिस शिष जिनके जगत सोहार्हीं
जो कहिसकै महामहिमा तिन कोहै अस महि माहीं ॥
श्रीराना जमानसिंह जासों लियो मंत्र उपदेशू ॥

ऐसे शिष्य आप जिनकेहैं तेतो संत विशेशू ॥
 जौलौं स्वामिहिं इतै न लावो तालौं मम सुतकाहीं ॥
 भक्तिभेद तुमहीं दरशावो करी सुकृपा डरमाहीं ॥४॥
 पुनि सुत श्रीरघुराज नामको एक वाग लगवायो ॥
 लक्ष्मण बाग सुनाम तासुको युत अनुराग धरायो ॥
 अति उत्तंग आयत विचित्र हरि मंदिर यक अभिरामा ॥
 निरखत प्रदमुद दाम जननको बनवायो तेहिं ठामा ॥
 श्रीरघुराज सुदिवस माहँ पुनि डर उछाह अति धारी ॥
 थापित किय सिय राम लषणकी मूराति तहँ मनहारी ॥
 औरहु अमित देवको प्रमुदित सादर तहँ बैठायो ॥
 दान महान द्विजन दै संतन करि सत्कार सोहायो ॥
 विश्वनाथ पितु पद शिरधरि पुनि विनय कियो कर जोरी ॥
 पूरणभो प्रसाद यह तिहरे अब यह इच्छा मोरी ॥
 पठइय प्रभु लक्ष्मी प्रपन्नको ब्रह्मशिलामें जाई ॥ ७ ॥
 बोलिलै आवैं सपदि स्वामिको लेहुं मंत्र हरषाई ॥
 वैन सुनत सुतके सचैन है विश्वनाथ नरनाथा ॥
 कह लक्ष्मी प्रपन्नसों सादर जोरे दोऊ हाथा ॥
 ब्रह्मशिला सुरसरि समीप जहँ स्वामि मुकुंदाचारी ॥
 वास करत तुम जाय आशु तहँ लावहु तिन्हें सुखारी ॥

दोहा-महाराज विश्वनाथके, सुनत वयन सुख पाय ॥

हुत लक्ष्मीपरपन्न तब, ब्रह्मशिलागो धाय ॥ १२ ॥

प्रभु ढिग चलि करि दंड प्रणामा । कुशल पूँछि पायो सुखधामा ॥
 विनय कियो पुनि दोउ कर जोरी । पुरवहु नाथ कामना मोरी ॥
 बांधवेश विश्वनाथ नरेश । रीवाँ रजधानी जेहिं वेशा ॥
 राम अनन्य भक्त जगदीनो । राम परत्व ग्रंथ बहु कीनो ॥
 प्रियादास भे संत महाना । तासु शिष्य सो विदित जहाना ॥

भान्क ग्रंथ ते बहुत बनाये । ते सब आप वदन निज गाये ॥
सो विगुनाथ तनय मतिवाना । है रघुराजसिंह जग जाना ॥
आप सों मंत्र लेनके हेतू । कीन्हे प्रण मन कृपानिकेतू ॥
दोहा-ताहि समाश्रय कीजिये, चलि रीवामें नाथ ॥

प्रभु कह मैं नहिं जाहुँ कहूँ, तजि तट सुरसरि पाथ ॥ १३ ॥

यह थल जो विहाय उत जैहौं । तौ अब परममोद नहिं पैहौं ॥
किय पुनि विनय सेव बहु ठानी । नाथ कह्यो पुनि सोई वानी ॥
सुनि लक्ष्मीप्रसन्न पुनि बोल्यो । निज अंतरको अंतर खोल्यो ॥
जो प्रभु रीवानगर न जै हैं । तौ सति मोहिं जिवत नहिं पै हैं ॥
सुनिहँसिकै कह दीनदयाला । जो अस तेरो अहै हवाला ॥
तौ अब आसु सुदिवंस विचारी । तहां जानकी करें तयारी ॥
सुनि लक्ष्मी प्रसन्न हरषाई । गणक बोलि द्रुत सुदिन शोधाई ॥
सादर प्रभुसों वचन बखाना । सुदिन आजु भल करियपयाना ॥

दोहा-सुनत बयन प्रिय शिष्य बहु, ले संग संत अपार ॥

रीवांको गमनत भये, प्रभु हरि प्रेम अगार ॥ १४ ॥

म्यानामें प्रभु मध्य सोहाहीं । संत अनंत लसैं चहुँ घाहीं ॥
रामकृष्ण हरिमुख उच्चारत । चहुँ ओरसों सोरपसारत ॥
जात जहां जहँ प्रभु पुर ग्रामा । होतं तहां तहँ शुचिजन ग्रामा ॥
यहि विधि आयस्वामि सुख छाकी । रीवां रह्यो कोस त्रय बांकी ॥
सुनि सुत युत नृप आगू लीन्ह्यो । हरिसम बहु सत्कारहि कीन्ह्यो ॥
पुनि रीवाहिं लायो युत रागा । वास देवायो लछिमन बागा ॥
मंदिर निरखि मुकुंदवारी । कह्यो रच्यो भल मंदिर भारी ॥
कलु वासर करिकै सुख वासा । पुनि मख ठान्यो कृपानिवासा ॥

दोहा-रंभ खम्भ गड़वाय करि, हरिमनु द्विजनजपाय ॥

सुदिन सोधाय सचाय प्रभु, अति उत्सव सरसाय ॥ १५ ॥

विश्वनाथ नरनाथ समेतू । बोलि कुँवर रघुराज सचेतू ॥
नारायण मनु किय उपदेशा । हरचो सकल कलिकलुष कलेशा ॥
भई समाश्रय तासु तिया सब । पूरि रह्यो पुर पर प्रमोद तब ॥

तोरथ चित्रकूट जे नाना । तहां पठै करि द्रव्य महाना ॥
सविधि कियो साधुन सत्कारा । ते सब जय जय किये अपारा ॥
लियो मन्त्र जबते युत प्रीती । तबते चलन लग्यो यह रीती ॥

दोहा—पाठ गजेंद्रहि मोक्ष अरु, मूल रामायण ख्यात ॥

करि नारायण कवचको, पाठ उठैं परभात ॥ १६ ॥

पण्डित जे नव कृष्ण निबेरे । बसनहार कलकत्ता केरे ॥
तिनहिं लाटसो कहि बोलवायो । विश्वनाथ नरनाथ सोहायो ॥
सौंपिदियो निज सुत रघुराजै । विद्या सुखद पढ़ावन काजै ॥
तिनसों श्रीरघुराज सुजाना । अङ्गरेजी पढ़ि बहु सुख माना ॥
मुग्धबोध व्याकरण विशाला । पुनि पढ़ि लियो थोरहो काला ॥
फेरि अयोध्यावासि महन्ता । जग जाहिर रामानुज सन्ता ॥
सौंप्यो तिन्हें पढ़ावन हेतू । नृप विश्वनाथ धर्मको सेतू ॥
तिनसों वाल्मीकि रामायन । श्रीरघुराज पढ़्यो अति चायन ॥

दोहा—सवालाख श्लोक जेहिं, महाभारत विख्यात ॥

विन श्रम ताको पढ़ि लियो, कहि सबसों हरषात ॥ १७ ॥

करि मजन विधियुत श्रीकन्ता । पूजन ठानि रोज सुखवन्ता ॥
वाल्मीकि रामायण सादर । श्रीभागवत सुनावत सुखकर ॥
वाल्मीकि भागवत विशोका । प्रति अध्याय जिते श्लोका ॥
जेहिं आगे श्लोक जो होई । पूछे बुधहि बतावत सोई ॥
महाभारतमें जे इतिहासा । ते पुस्तक विन करत प्रकासा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी । श्रीरघुराज केरि कवि वरणी ॥
गति जो कविता रचन नवीनी । बालहिते विरंचि तेहिं दीनी ॥
संस्कृत और भाषहू केरी । कविता बहु विधि रची घनेरी ॥

दोहा—विनयमालको प्रथम रचि, रुक्मिणि परिणय फेरि ॥

पितुहि सुनायो ते भये, अति प्रसन्न मुख डेरि ॥ १८ ॥

चित्रकूट गमनत भये, एक समय रघुराज ॥

रच्यो तहां सुंदर शतक, हनुमतचरित दराज ॥ १९ ॥

जो कौउ वांचत पत्रिका, देखि पिठौता तासु ॥
 वांचिआशु सबसों कहत, सुनि सब लहत हुलासु १२०
 लिखन शक्ति लखिनाथकी, विदित लिखारी जोउ ॥
 दीखन नृप अस चखन कहि, सिखन चहतहै सोउ २१ ॥
 कहूं चढ़ैती तुरंगकी, दरशावत सबकाहिं ॥
 कहूं मतंग सवारहै, सुरपति सरिस सोहाहिं ॥ २२ ॥
 कहूं दुनाली धनुष लै, गोली तीर चलाय ॥
 हनै निसाना रोपिकै, तुरतहि देहिं गिराय ॥ २३ ॥
 कहूं तेगको घालिकै, करहिं दूक चौरंग ॥
 सुनि लाखि पितु विशुनाथ नृप, होत मनहिं मनदंग २४ ॥
 कहूं वन जाय अहेरको, मारिशोर वनजीव ॥
 देखरावाहिं निज तातको, होहिं ते खुशी अतीव ॥ २५ ॥
 बहु वनराजनको हन्यो, वनहिं सिंह रघुराज ॥
 ते दराज विस्तर भयहि, वरण्यो नहीं समाज ॥ २६ ॥
 कवित्त ।

एक समय राना श्रीजमानसिंह हिंद भान गया करिवेको कीन्हो देश या पयानहै ॥
 जाय विश्वनाथ चित्रकूट मुलाकात करि रींवहि लेवायलाये करि सन्मानहै ॥
 भाई लछिमनसिंह कन्या तिन्हें व्याहि दीन्हो चीन्हो विश्वनाथै भलोभक्तभगवानहै
 तासु सुत रघुराज तिलक चढ़ायआसु जातभे हुलास भरि उदैपुर थानहै ॥ १ ॥

दोहा—कछु दिन माहि जमानसिंह, गे वैकुण्ठ सिधारि ॥
 रानाभो सरदारसिंह, तेउगे स्वर्ग पधारि ॥ २७ ॥
 भूपति भयो स्वरूपसिंह, तेग त्याग समरथ्य ॥
 राज काजमें निपुण अति, चलयो सुनीति सुपथ्य ॥ २८ ॥
 निज भगिनिनिके व्याह हित, करि सँदेह मनमाह ॥
 श्रीरघुराज सलाह करि, चलि ठिग पितु नरनाह ॥ २९ ॥
 महापात्र अजवेशको, खतलिखाय याहि भांति ॥
 पठयो दोगि उदयपुरै, नृप सुत अति मुदमाति १३० ॥

आपसयान सुजान सुठि, को करिसकै बखान ॥

जहँकीजै अनुमान तहँ, हमहिं प्रमाण न आन ॥३१॥

विश्वनाथ नरनाथ अरु, युवराजहु रघुराज ॥

वरनिदेशअजवेश लहि, सुकविनको शिरताज ॥३२॥

स०—चैन भरो चलयो ऐनते वेगि गयो अजवेश उदैपुरमाहीं ॥

राना स्वरूप अनूप जो भूप सुन्यो श्रुति आयो इते तेहिं काहीं ॥

सादर बोलि सुप्रेमते क्षेमको पूँछि कह्यो ठिग बैठो इहांहीं ॥

बैठि स्वनाथको पत्रसो हाथ दियो लिय माथते धारि' तहांहीं ॥

दोहा—श्रीस्वरूप राना सुघर, सुनि हवाल खत केर ॥

कह्यो सुकवि अजवेश सों, लहि प्रमोद उर ढेर ॥३३॥

लिख्यो जो सुता व्याहके हेतू । सो हम अवशि बांधि हैं नेतू ॥

पै राना जमानसिंह रूरे । गया करनगे जब सुख पूरे ॥

तब रींवा गवने सउछाहा । तिनको तहां होत भो व्याहा ॥

राजकुँवर रघुराज सुहायो । ताको तहँ ते तिलक चढ़ायो ॥

वेतिगये बहु दिवस सुजाना । इतको ते नहिं कियो पयाना ॥

सो अब ऐसी करहु उपाई । जाते इहौ वहौ सधिजाई ॥

महापात्र आपहु लिखि पाती । पठवहु द्रुत आवहिं जेहिं भाती ॥

हमहु लिखावतहँ खत आसू । आवहिं राजकुँवर सहलासू ॥

दोहा—काज होय रघुराज इत, हमरहु कारज होय ॥

जहँ को संमत देहिंगे, तहँको करबै सोय ॥३४॥

महापात्र सुनि भल कहि दीन्ह्यो । नाथ विचार भलो यह कीन्ह्यो ॥

अस कहि वेगि सुकवि अजवेश । पत्र लिखतभो इतको वेशा ॥

रानहु इतको खत लिखवायो । बोलि प्रठायो सो इत आयो ॥

खत सुनि विश्वनाथ नरनाथा । सुतसों कह्यो मानि सुख गाथा ॥

रानाको यह खत सुनिलेहू । लियो सो करहु वेगि युत नेहू ॥

तब रघुराजहु खत सुनि सोई । कहत भयो पितुसों मुद मोई ॥

यह हवाल मैं सब सुनि लीन्ह्यो । मोहिं बोलावनको लिखि दीन्ह्यो ॥

सों जस प्रभु मोहिं देहिं रजाई । सोइ करों सोइ नीक जनाई ॥

दोहा—विश्वनाथ नरनाथ तब, कह्यो भरे उत्साह ॥

जाहु उदयपुर व्याह हित, मेरो इहै सलाह ॥ ३५ ॥

बोलि ज्योतिषिन तुरत पुनि, गमनन सुदिन बनाय ॥

कह्यो सुवनसों यह भली, साइत दियो बताय ॥ ३६ ॥

सुनि रघुराज कह्यो हर्षाई । दीजै सब तदबीर कराई ॥

कौन देवान जान सँग योगू । ताकहँ दीजै नाथ नियोगू ॥

कौन कौन सरदार सुजाना । मेरे सँगमें करहिं पयाना ॥

नाथ कृपा करि सादर सोई । देहिं बताय सिद्धि सब होई ॥

भाष्यो महाराज सुख पाई । सभा सदनको सपदि सुनाई ॥

वीर धीर अरु होय उदारा । राज काजमें चतुर अपारा ॥

धर्मज्ञान पूजक भगवाना । द्विज साधुनमें प्रीति महाना ॥

स्वामिहि मानै प्राण समाना । ये लक्षणहैं विदित देवाना ॥

दोहा—ते लक्षणयुत सांच अब, दीनबंधु तुव पास ॥

लेहु साथ तिनको अवशि, तिनते सकल सुपास ॥ ३७ ॥

हैं सरदार सुजान सब, सावधान तुव सेव ॥

तिनको सबको लेहु सँग, जे जानत रणभेव ॥ ३८ ॥

सुनि रघुराज जनकेके वैना । दीनबंधु कहँ बोलि सचैना ॥

पुनि सरदारन निकट बोलाई । चतुरंगिणी चमू सजवाई ॥

सैनप दीनबंधुको करिकै । व्याह पोशाक किये सुखभरिकै ॥

बाजिरहे चहुँ ओर नगारा । वंदीजन वर विरद उचारा ॥

लहि रघुराज प्रमोद अपारा । भयो उतंग मतंग सवारा ॥

औरहु सखा वृद्ध सरदारा । चढ़ि चढ़ि हय गय रथनमेंझारा ॥

हरि गुरु गणपति हनुमतकाहीं । सुमिरि सुमिरि सब निज मनमाहीं ॥

गहि गहि अस्त्र शस्त्र निजहाथा । गमनत भये सबै एक साथ ॥

दोहा—जे मगमें भूपति परे, तिनसों लहि सतकार ॥

निकट उदयपुर जब गये, राना सुन्यो उदार ॥ ३९ ॥

कवित्त ।

करिकै पेसवाई महाराना श्री स्वरूपसिंह उदैपुर आनि मुदै उरकै दराजको ॥
 सकल सुपास जहां दीन्ह्यो जनवास तहां कीन्ह्यो सन्मान दे हुलास त्यों समाजको ॥
 लखि लखि नारी नयन नृपति किशोर सारी मैन बस भई छौंड़ी ऐन काज लाजको ॥
 कहैं ठाम ठाम कैधौं काम सुखधामधाम काम त्यागि जो हैं जन ग्राम रघुराजको १ ॥
 लगन विचारि कह्यो जादिन गणक गण तादिन पधारचो रघुराज द्वारमाह है ॥
 देखिकै वरात शोभा पुरजनवातलोभा रानहुको भा अथाह भारी उतसाह है ॥
 व्याह भयो छोनीमें उछाह छायो महा तहाँ याचक उमाह भरो यांचिभो अचाह है ॥
 राह राह कहत न ऐसो नर नाह कहूं सुन्यों सांच शाहनको करन पनाह है ॥

दोहा—रहस बहस युत होत भो, पुनि उदार जेवनार ॥

सरदारन युत फेरि भो, दरबारहुँ दरबार ॥ १४० ॥

कवित्त ।

जेते ऐंडदार राजा राजत पछाह माहँ शाहन सों अकस जे कीनोहै बनायैक ॥
 कलम विनाही लिखें हिम्माति न रही काहू महाराना सुता जो विवाहै सुख छायैक ॥
 महाराज विश्वनाथ सुत रघुराज सिंह अचरज कीनी करतूति तेज छायैक ॥
 सुनि सुनि ते बैन नरराय पछितायमहा हाथ मीजिरहे शरमाय शीशनाइकै ॥

दोहा—शिव यकलिंग प्रसिद्ध तहँ, तिनके दर्शन हेत ॥

जातभयो रघुराज पुनि, मंत्री सैन्य समेत ॥ ४१ ॥

हय गय अरु मुद्रा सहस, सादर तिनहिं चढ़ाय ॥

दर्शन लीन्ह्यो सरस उर, सरस हरस सरसाय ॥ ४२ ॥

महाराज विश्वनाथ सुत, श्रीरघुराज उदार ॥

फेरि नाथजी दरशहित, गये साथ सरदार ॥ ४३ ॥

साजि बाजि गज वसन वर, मोहर शत सुख साथ ॥

माथनाथ अर्पण कियो, पद पाथज श्रीनाथ ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी ।

सन्मुख बैठि छवि निरखन लागे चख अंग अंग केरी उर हरष वढायकै ॥
ताही समै नाथजीको हाथ लै पुजारी ऐना लग्यो दरशवै मोद गाथ हिये पाइकै ॥
ग्रीवानाय हरि तब बदन लखन लागे लखि रघुराजसिंह अचरज छायकै ॥
रण दवनसिंह सों कह्यो या तू देखी कला भाष्यो तिन होहूं लख्यो नैन टक लायकै १ ॥
दोहा-कृपानाथजी आपके, ऊपर करी महान ॥

सुनत पुजारीहूं कह्यो, यहां प्रगट भगवान ॥ ४५ ॥

राम सागराद्विक अहै, विश्वनाथ कृत जौन ॥

बखतावर गायक लगे, गावन तिन ठिग तौन ॥ ४६ ॥

गावत सन्मुख निरखिकै, तहां पुजारी कोय ॥

आयकह्यो अस बैठिबो, रानहुको नहिं होय ॥ ४७ ॥

कवित्त ।

दीन्ह्यो सो उठाय बखतावर विचारि यह हरिसर्वत्रअहै और ठौर जायकै ॥
प्रेम पूर पागे लागे गावै राग सागरको प्रभु को रिझाय लियो सुरनको छायकै ॥
उचरे कपाट सबै आपही सो ताही समै टेरीकै पुजारी कह्यो बाहेरहि आयकै ॥
नाथको निदेश अहै लेहू वह गायकको इतही बोलाय बैठि गावै हरषाइकै ॥
दोहा-कह पुजारि तुम्हरे उपर, रीझैहैं ब्रजराज ॥

सुनि बखतार कह्यो सति, यह प्रभाव रघुराज ॥ ४८ ॥

सहितचमू चतुरंगिनि भाई । पुनि रघुराज शिविर निजआई ॥

कछु वासर किय सुख युत वासा । राना मान्यो परम हुलासा ॥

सीखदेन अवसर जब आयो । तब राना निज निकट बोलायो ॥

श्रीरघुराज समाज समेतू । गमनत भयो तहां मति सेतू ॥

लै आगू राना चलि धामै । बैठायो गद्दी अभिरामै ॥

कीन्ह्यो सकल भांति सत्कारा । दीन्ह्यो हय गय वसन अपारा ॥

भूषण बहु पुनि दिये अमोले । ज्योतिमान माणि मोतिन नोले ॥

विश्वनाथ नरनाथ कुमारा । राना सो पुनि वचन उचारा ॥

दोहा-आप सुजान सयान हैं, मेरे पिता समान ॥

दीजै संमत तासु प्रभु, जो मैं करौं बखान ॥ ४९ ॥

स.द्वैभगिनी मम व्याहन योग्य जहां तिनव्याहन योग्यउचारी॥
 होय विवाह तहां तिनको ध्रुव जानत आप सबै बड़वारी ॥
 राना स्वरूप सराहि कह्यो सुनिहै हमहूँको खँभार या भारी ॥
 सो सम्बध कियो हम ठीक दियो महुँ जयपुर नाह विचारी॥१॥

घनाक्षरी ।

नाम जाहि रामसिंह रूप अभिराम जाकोतिलक चढ़ायो जोधपुर नाह सुता व्याह ॥
 षठवैवकील हमौ ढील नहीं हैहै काज आपहूँको रीवां जात जयपुर परैगो राह ॥
 महाराज विश्वनाथसिंहको कुमार रघुराज सिंह बोल्हो सुनि भलो या कियो सलाह ॥
 सहित उछाह कृपा करिकै अथाह अब दीजे सीख काह यहीहै उमाह मनमाह ॥१॥

दोहा—सुनि राना सुख पायकै, सुंदर दिवस शोधाय ॥
 सीख दियो रघुराज को, दै बहु धन समुदाय ॥१९०॥
 भूप स्वरूप अनूप सुनि, निज भगिनी हर्षाय ॥
 विदा कियो धन अमित दै, शिबिका रुचिर चढ़ाय ९१॥
 संग रहे सरदार जे, औ जे बंधु अपार ॥
 यथा उचित सब फौजको, कीन्ह्यो अति सत्कार ॥ ९२ ॥

महाराज विश्वनाथ किशोरा । अति प्रसन्न युत चमू अथोरा ॥
 विजय मुहूरतमें सुख छाई । हारे गुरु गणपति पद शिरनाई ॥
 सैन्य सहित द्रुत कियो पयाना । बाजे बड्ड गहगहे निसाना ॥
 चलत चलत जैपुर नियरान्यो । महाराज जयपुरको जान्यो ॥
 कोश भरेते लै अगुवाई । डेरा दिय देवाय पुर लाई ॥
 सैन्य समेत शिबिर पुनि आये । रामसिंह भूपति सुख छाये ॥
 श्रीरघुराज उदार अपारा । विविध भांति कीन्ह्यो सत्कारा ॥
 सो लहि जयपुरको नरनाहा । लह्यो ससैन्य मरम उदसाहा ॥

दोहा—फौज साजि पुनि मौज भरि, युत समाज रघुराज ॥
 जयपुरके महाराजमें, गमन्यो प्रभा दराज ॥ ९३ ॥

निरखि निरखि जयपुर नर नारी । पावतभे उर आनँद भारी ॥
 कछु दूरीते जयपुर राजा । आगू छै आवत रघुराजा ॥
 महल जाय गद्दी बैठायो । आपहुँ बैठि परमसुख पायो ॥
 विविध भाँति सत्कारहि कीन्ह्यो । पाय सो येऊ अति सुख भीन्यो ॥
 सैन्य सहित पुनि शिविर सिधार्ह । बात होन संबंध चलाई ॥
 ठहरिगयो सो विनहिं प्रयासा । गुन्यो कृपा यह रमा निवासा ॥
 रसम व्याह पूरब जो होई । सो दै करि सादर मुदमोई ॥
 वृन्दावन तीरथ करिवेको । बढ़ी लालसा वसु दीवेको ॥
 दोहा-सादर सब सरदारसों, अरु देवानहु पाहिं ॥

कहहिं सफल होतो जनम, लखि वृन्दावन काहिं ॥ ५४ ॥

सुदिन शोधाय ज्योतिषिन तेरे । श्रीरघुराज मोद लहि ठेरे ॥
 श्रीहरि गुरु पदपंकज सौरी । सैन्य सहित वृन्दावन ओरी ॥
 कीन्ह्यो होत प्रभात पयाना । बजे फौजमें अमित निसाना ॥
 बीच बीच वीथिन करि वासा । पहुँचत भये जैव व्रज पासा ॥
 सादर करिकै दंड प्रणामा । जातभये तुलसीवन ठामा ॥
 वृन्दावन मधुपुर दर्शाना । नंदगाँव जो विदित जहाना ॥
 मुख्य चारि तीरथ ये करिकै । दर्शन करि साधुन मुद भरिकै ॥
 पुनि चौरासी कोशहु केरी । किय प्रदक्षिणा लहि मुद ठेरी ॥

दोहा-हरिमंदिर जेते रहे, दर्शन किय पद जाय ॥

हय गय वसन अमोल अरु, मोहर अमित चढ़ाय ५५

राधा राधारमणकी, मूरति पुनि पधराय ॥

रागभोग हित गाँव यक, दीन्ह्यो तहां चढ़ाय ॥ ५६ ॥

पुनि विश्रांतघाटमें जाई । सुवरण तुला चढ्यो सुख छाई ॥
 सो सुवरण व्रजमंडल वासी । जेते रहे विप्र सुखरासी ॥
 तिनको दै कीन्ह्यो अति तोषु । ते माने सब भाँति सँमोषु ॥
 तिमि याचक जे रहे घनेरे । तिन्हें हेम बहु दिये निवेरे ॥
 नारी रोंकि रोंकि मंगमाहीं । कहि कहि लला छेहिं गहि बाहीं ॥
 तिनको मनवांछित धन दीन्हे । शीशनाय बहु मानहि कीन्हे ॥

देश देशके याचक आये । भये प्रसन्न हेम बहु पाये ॥
ब्रजमंडलमें नर औ नारी । सब थल ऐसो परचो निहारी ॥

दोहा-लहि लहि अभित हिरण्यको, भाषहिं ते कहि धन्य ॥

यह नवीन परजन्य नृप, वरस्थो ब्रजहिं हिरन्य ॥९७॥

कवित्त ।

दान्हे हैं द्विजान पंडितान हेम महादान रघुराजसिंह वृन्दा कानन मँझारी है ।
सुयश महान शीत भानुसों प्रकाशमान सुकवि प्रधानमें वखान जासु भारी है ।
मानिन अमानद अमानिनको मानदान ज्ञानिन प्रदान ज्ञान दीन त्राणकारी है ।
दान सनमानमें जहानमें न आन ऐसो भानुवंशमें निशान ज्ञान ध्यान धारी है ॥ १ ॥

दोहा-“सुदिवश ब्रजते कूच करि, चलि मगमें दरकूच ॥

रीवांनगर पहुंचिगो, संयुत सैन्य समूच” ॥

सोरठा-उधदि बंध यक चित्र, जामें यही चरित्र सब ॥

सोरचिचात विचित्र, लिखे देत चरचैं सुकवि ॥ १ ॥

पारसीके बैतका अर्थ-तन-
सरा कहे तन उसके तई पैरहन जो
कपरा सो भी उरियां कहे नंगा नहीं
देखताहै तोत जो कपरै उसके अंग-
को नहीं देखताहै तो और कोई
उसके अंगको नहीं देखताहै यह
कहा कहिवेको यह काव्यार्थापत्ति
अलंकार व्यंजित भयो कपरौ उसके
अंगको कैसे नहीं देखताहै बुजां दर-
तन कहे जैसे जान जो है जीव सो
बीचनके है व तन दरकहे तनके
बीच रहिहू कै जान जो है जीव सो
नहीं देखाता है यह उपमालंकारते
स्वकीया नायिका व्यंजित भई ॥

अंगरेजीके दोहाका अर्थ-दी
कहे प्रसिद्ध अमानि मीजंट कहे सर्व-
व्यापी जो है गाड कहे ईश्वर ताकी
अन कहे पृथ्वी अर्थ कहे ताके ऊपर
आई कहे हम प्रे कहे प्रार्थना करै हैं
न्यारो कहे सूक्ष्म माई कहे हमार
है हरट कहे चित्त ताके अन कहे
ऊपर डीवाइन कहे दिव्य मर्थ कहे
आनंद वृं कहे त्यावने को अर्थात्
जामें दिव्य आनंद जो है ब्रह्मानंद
सो भरे चित्तमें होय याके लिये मैं
प्रार्थना करौहौं इहां सर्वव्यापी ईश्व-
रको कह्यो ताते मैं ईश्वरहीके भरोसे
सर्वदा रहौहौं यह मेरे मनकी जान-
तई होयेंगे यह व्यंजित कियो ॥

दोहा—कछु दिनमें आवत भयो, जयपुरको नरनाह ॥

शाहन करन पनाहमे, भूपति जेहिं कुलमाह ॥ ५८ ॥

भगिनि उभय रह जानकी, कृष्ण कुवँरि जिन नाम ॥

व्याहि विदा कीन्ह्यो तिन्हैं, दै बहु धन अभिराम ॥ ५९ ॥

पुनि बीते कछु काल श्री, विश्वनाथ नरपाल ॥

है वश काल निवास किय, पास अवधपति लाल ॥ ६० ॥

श्रीरघुराज तनय तेहि केरो । हरिइच्छा गुणि बिन अवसेरो ॥

मानि राज्य सब यदुपति केरी । कामदार सों कह्यो निवेरी ॥

राजाराम राज्यके एकू । तिनकी कृपा न भय मोहिं नेकू ॥

स्वामि धर्मरत जन हितकारी । करिहैं कबहूँ न काम विगारी ॥

सुदिन अबै न राज अभिषेकू । कह्यो ज्योतिषी सहित विवेकू ॥

ताते मो मन भावत येहू । करो यज्ञ संमत करिदेहू ॥

सुनि दिवान कह बहुत सराही । प्रभु भल कह्यो ऐसहीं चाही ॥

तब रघुराज परम सुख पाई । आशु बनारस मनुज पठाई ॥

दोहा—विप्र वेद वित छिप्र बहु, रीवां नगर बोलाय ॥

सुदिन शोधाय सचाय गो, लछिमनबाग सिधाय ॥ ६१ ॥

तहँ किय कठिन कायको नेमा । पगो परम यदुपति पद प्रेमा ॥

मज्जन करि गायत्री जापा । प्रथम करै नितहै जो पापा ॥

पुनि षोडश प्रकार भरि चायन । पूजन करै रमा नारायन ॥

पुनि नारायण अष्टाक्षर मनु । बीसहजार जपैं निश्चल मनु ॥

यही भांति विप्रनहूँ जपावै । रहै यकांत अनत नहिं जावै ॥

पुरश्चरण सौ दिन करि यहि विधि । कृष्ण कृपा पात्रता लही सिधि ॥

कह्यो स्वप्नमें आय मुरारी । राज्य करै हूँ मम अधिकारी ॥

लहत मनहिं मन परमहुलासा । कोहुसों कबहूँ न कियो प्रकाशा ॥

दोहा—जप अष्टाक्षर मंत्रको, बीस हजारहिं केर ॥

जौलों रहै शरीर जग, किय संकल्प करेर ॥ ६२ ॥

रमा द्वारकाधीशकी, त्यों बलकी करि सूर्ति ॥
 हेम रजत रचवायकै, परम मनोहर मूर्ति ॥ ६३ ॥
 वेद विहित करवायकै, आसु प्रतिष्ठा वेश ॥
 बांधवेश विश्वनाथ सुत, पूजन करत हमेश ॥ ६४ ॥
 करन लगै जप जेहिं समय, तब भरि मोद अनंत ॥
 भजन सुनै भजनीनसों, निर्मित निज बहु संत ॥ ६५ ॥
 सुदिन राज्य अभिषेक को, आयो जब मुदवान ॥
 सब तदवीर महान भै, वेद विधान प्रमान ॥ ६६ ॥

श्रीरघुराज जाय मखशाला । वसु मंत्रिनते सहित उताला ॥
 रघुपति यदुपति मूरति काहीं । थिति कै हेमसिंहासन माहीं ॥
 महाराज अभिषेक कराई । अभिषेकित भो आर सोहाई ॥
 श्रीकृष्णहिके कृपापात्र कर । अधिकारी भो विदित अवनिपर ॥
 कर परताप छयो परतापा । सज्जन सुखप्रद सुयश अमापा ॥
 पितु सम पालत प्रजन सप्रीती । नीति रीति करि भेटि अनीती ॥
 सुनि सुनि शाहहु जाहि सराह्यो । आय अजंट लाट भल चाह्यो ॥
 राज्य करत बीत्यो कछु काला । दर्शन हित जगदीश कृपाला ॥

दोहा—करि लालसा विशाल लै, संग चमू चतुरंग ॥

रानिन युत जगपति पुरी, गमन्यो सहित उमंग ॥ ६७ ॥

बीच बीच बीथिन करि वासा । श्रीरघुराज राज सहलासा ॥
 शतक संस्कृत यक जगदीशा । विरच्यो मैं निज आँखिन दीसा ॥
 भाषा शतक कवितमें दूजो । विरचन लग्यो सो उमंग पूजो ॥
 परचो अमर कंटक मग माहीं । गमनत भयो नाथ तहँकाहीं ॥
 मेकल गिरिते कढ़ि तहँ प्रगटी । शिव प्रिय रेवा सरि अव निघटी ॥
 तहँ मज्जन करि दै बहु दाना । रेवा अष्टक रच्यो सुजाना ॥
 शिवअष्टक पुनि रच्यो तहांहीं । सिंहवलोकन छंदहिं माहीं ॥
 रहें जे संत विम तहँ वासी । तिनको देत भयो धन राशी ॥

दोहा-सहित सैन्य चतुरंगिणी, तहँते करि सु पयान ॥

सेवरी नारायण निकट, जातभयो मतिमान ॥ ६८ ॥

सेवरीनारायण करि दर्शन । किय सहस्र मुद्रा कहँ अर्पन ॥

तहँते प्रभु पयान करि आसू । पहुँच्यो साक्षिगोपालहि पासू ॥

मुद्रा सहस्र गयंद सुहायो । दर्शन लैकै तिन्हँ चढ़ायो ॥

दै सबको तिमि द्रव्य महाना । सादर चढ़वायो भगवाना ॥

पंडा गाड़िन लादि प्रसादा । लाय दिये लै युत अहलादा ॥

महाराज सबको विरताई । खायो स्वाद अपूर्व सुनाई ॥

श्रिरघुराज परमसुख भीनो । तहँते पुनि पयान द्रुत कीनो ॥

जगन्नाथ मंदिरके ऊपर । नीलचक्रपरश्यो जब अवहर ॥

सोरठा-करि दंडवत प्रमाण, कीन्ह्यो पुरी प्रवेश प्रभु ॥

डेरा किय गुरुधाम, रानिन सहित हुलास भरि ॥

दोहा-तहँते गमनतभो तुरत, दर्शन हित जगदीश ॥

अरुण खम्भ ढिग द्वारमें, जात भयो अवनीश ॥ ६९ ॥

रकबा चारचो दिशि बन्यो, मंदिर मध्य उत्तंग ॥

लसत दुर्ग सो उदधि तट, तकत करत अघ भंग ॥ १७० ॥

प्रथम अकेले आपहीं, युत भाइन सरदार ॥

सादर भीतर द्वारके, जाय नरेश उदार ॥ ७१ ॥

घनाक्षरी ।

जगपति मंदिरके चारों ओर देवनके मंदिर सुखद तिन दरशकै सुखकारि ॥

सहित समाज परदक्षिणकै चारि फेरि मंदिर सिधारि शिरनाय खम्भ पन्नगारि ॥

जाय कछु निकट सुभद्रा बलभद्र युत सखवि मुरारि वार वार नैन सों निहारि ॥

वारि मन प्रथम सँभारि तनु सुधि फेरि पलक नेवारि हेरि रहे धन वारि वारि ॥

स० आजुभयो सफलो मम जन्म गुन्यो यह जन्ममें पुण्य बढ़ायो
जानि लियो कियो पूरव जन्महुँ पुण्य महान विशेषि सुहायो ॥

सत्य कहै रघुराज हों आज अनेकन जन्मके पाप नशायो ॥
जो बलभद्र सुभद्रा सुदर्शन औ जगनाथको दर्शन पायो ॥
लोचन सामुहे होत जबै तब देखनकी नहिं चाह सिराती ॥
आनंद बाढ़ै जितो उरमें मिति तासु न मोसों कछू कहि जाती ॥
को रघुराज बखानि सकै जगदीशकी शोभा त्रिलोक विजाती ॥
ज्यों ज्यों समीप है हेरै त्यों त्यों क्षणहीं क्षणमें सरसै दरशाती ३

घनाक्षरी ।

कन्चनको छत्र उभय चौर विननादिनोल भूषण वसन त्या अमोल मोतिमालको ॥
मोहर अमित मुद्रा द्वै गयन्द त्यों तुरङ्ग प्रभुहिं समर्पि पायो परम निहालको ॥
भप रघुराज त्योंहि दैकै सबहीको वसु नजर देवायो तहां देवकीको लालको ॥
पंढा आ पुरीकै भये परमसुखारी पाय पाय धन भारी गाये सुयश विशालको ॥

सोरठा-कहत मनहिं मन नाथ, सो मैं करौं प्रकाश अब ॥
को समान जगनाथ, है कृपालु यहि जगतमें ॥ १ ॥
विविर जाय सुख पाय, पायो महाप्रसादपुनि ॥
तहँके तीर्थ निकाय, जाय जाय सादर कियो ॥ २ ॥
रानिहु सब सुखपाय, त्योंहीं नजर निकाइकै ॥
जगपति दरश सोहाय, करि मान्यो सफलै जनम ॥ ३ ॥

दोहा-बेखटका अटका अमित, चटकै दियो चढ़ाय ॥
मटका मटका लै गये, कोऊ सटका खाय ॥ ७२ ॥

महाराज रघुराज उदारा । अरुणखम्भ ढिग पुनि पगु धारा ॥
देश देशके जन बहु आई । जुरे पुरीके जन समुदाई ॥
पेखि अनूप भूपकी शोभा । सबहीको बरबस मन लोभा ॥
तहँ नृप नायक परम सुजाना । हेम तुला चढ़ि वेद विधाना ॥
सुवरण वृष्टि करी मन भाई । मानौ मघा मेघ झारि लाई ॥
रह्यो न पुरी कोउ द्विज बाकी । जो न सुवर्ण लहै सुख छाकी ॥
रानिहु त्यों सिगरी तहँ आई । रजत तुला चढ़ि चढ़ि सुख छाई ॥

दोहा--भये अयाचक पुरी के, रहे जे याचक वृद्ध ॥

पाय पाय सुवरण रजत, गाय सुयश मुदकंद ॥ ७३ ॥

घनाक्षरी ।

शतक बनायो जाय आपहि सुनायो सुनि जगदीश बलहु सुभद्रा मोद भीने हैं ॥

शिरते सुमनमाल तुरत खसाय रीझि अभिराम सादर इनाम करिदीन्हें हैं ॥

कहै युगलेश वेश दौरि बांधवेश तब सम्भृत कलेशहारी धन्य मानि लीन्है हैं ॥

महाराज रघुराज भक्तिको प्रभावपुरी प्रगट देखानों जानो भक्तराज वीनेहैं ॥

दाहा-लखि प्रभाव तेहि ठाँव यह, कहैं लोग भरिचाय ॥

भक्ति भाव रघुरावसति, कस न द्रवैं यदुराय ॥ ७४ ॥

श्रीरघुराज मोद भो जेतो । यक मुख सों कहिसकत न तेतो ॥

माने सब जन अरु सरदारा । पूर्व पुण्य कछु कियो अपारा ॥

जाते वश अस नृप ढिग माहीं । हरि प्रभाव निरखे चख माहीं ॥

परदेशी अरु पुरी निवासी । अरु जे रहे भूप संग वासी ॥

चढ्यो रोज नृप अटकाजोई । ताते सबको भोजन होई ॥

एक गाँव जगदीश चढ़ायो । पन्डा पाय परमसुख पायो ॥

पुरी सवाउ मास किय वासा । सबको सब विधि देत हुलासा ॥

युत समाज हरिमन्दिर जाई । लिय त्रिकाल दर्शन नृपराई ॥

दोहा-अर्द्धरात्रि नित जाय नृप, त्योंहीं दर्शन लेय ॥

पाय सुमहाप्रसादको, सबको सादर दैय ॥ ७५ ॥

फागुनकी पूर्णिमाको, फूलडोल गोपाल ॥

झलत निरखि निहाल है, को न तज्यो जगजाल ॥ ७६ ॥

छंद-शुभदिवस तहँते गौन करिकै गया तीरथको गयो ॥

करि श्राद्ध वेद विधान सो बहु दान विप्रनको दयो ॥

द्विज पाय धन समुदाय वांछित करत भये बखानहैं ॥

जस गया कीन्ह्यो बांधवेश न नरेश कीन्ह्यो आनहै ॥

तहँ सुन्यो नौकरहूँनके गे बिगरि कारन पायके ॥

अंगरेजके सब देश लूटे हनेगो रण धायके ॥
 ठिग वेगि बहु बागीन काहँ नरेश आसु मँगायके ॥
 यकमें चढ़ायो द्वारकेसहि वेश प्रीति बढ़ायके ॥
 पुनि नाथ सहित समाज है असवार बहु बागीनमें ॥
 चलिदियो परम निशंक परम प्रवीन परम प्रवीनमें ॥
 मिरजापुरै ठिग भूप आयो आय बागी वै तबै ॥
 बहु विनय कीनी आप करहि सहाय तौ सुधरै सबै ॥
 तब नाथ ऐसो कह्यो तिनसों हाथ यह यदुनाथहै ॥
 सब भांति मोहिं भरोस जाको जो अनाथन नाथहै ॥
 सुनि गये ते सब महाराजहुँ आय रींवापुर बसे ॥
 यकरच्यो नगर गोविंदगढ़ तहँ जायके कबहूँ लसे ॥
 अँगरेजके बागी तिलंगा बागि सिंगरे देशको ॥
 बश कियो कोहु नरेश को रहे डरत कोहुँ नरेशको ॥
 मैहर विजय राघवहुके गे विगारि तिनके दावते ॥
 मग रोंकि गोरनको हने बहु जोर जुलुम जमावते ॥
 तब आय बहु अँगरेज रींवा नगर कियो निवासहै ॥
 महाराज श्रीरघुराज तिनको कियो परम सुपासहै ॥
 डर मानि रींवा नगर को नहिं आय बागी कोउ सके ॥
 मतिवंत अति श्रीवंत गुणि सब संत नृपको सुखछके
 अंगरेज लखि वर तेज भाष्यो बांधवेश नरेशसों ॥
 लै खर्च हमसों राखि लीजै और सैना वेशसों ॥
 मैहर विजय राघवहुके बागी उपद्रव करत हैं ॥
 चलि मारि तिन्हें निकारि दीजै दुरग लीजै हम कहें ॥
 सुनि भूप तैसहि कियो सैनप दीनबंधु दिवानके ॥
 लिय घेरि मैहर प्रथम तोप लगाय आसु पयानके ॥
 भगि गये तहँके यूह योगी वेगि कारि तहँ थानहैं ॥

पुनि विजयराघव घेरि लीन्हो संग सैन्य महानहैं ॥
 तेउ भये वांवां करत भै करी थान तहँऊ करि लियो ॥
 महाराज श्रीरघुराज सुख भरि सोंपि अंगरेजहि दियो ॥
 यह कृपा गुणि यदुराजकी रघुराज परम उदारहैं ॥
 निज राजधानी आय कछु दिन बस्यो सुखित अपारहैं ॥

दोहा-रींवा ते जे कढ़ि गये, बहु सरदार सुखारि ॥
 वागी भेरण रारि कर, तिन भिसि न पहुँ विचारि ॥७७॥
 कोपित है जरनैल बहु, लै संग सैन्य अपार ॥
 चढ़ि आयो रींवानगर, गोरा कइक हजार ॥७८॥
 हुकुम दियो महाराजको, करि दुष्टता विचार ॥
 देखन हेतु कवाइदै, आवै आजु हमार ॥७९॥

सुनत कह्यो रघुराज उदारा । देखन चलिहैं कछु न खँभारा ॥
 हमरे सति सहाय यदुराई । का करिहैं अरि सैन्य महाई ॥
 तब रीवाँके लोग सुजाना । रह्यो जो और देवान पुराना ॥
 वरज्यो विनती करि बहु भांती । उचित न जाब प्रबल आराती ॥
 तहँ यक दीनबंधु जेहि नामा । रह्यो दिवान वीर मतिधामा ॥
 कहत भयो सो प्रण करि भारी । चलिये आप न कछू विचारी ॥
 क्षत्री है जो समर सकानो । कुलकलंक तेहिं पावर जानो ॥
 यह रिपु करिहै कहा हमारो । करिहै रोष जायगो मारो ॥

दोहा-दीनबंधु दीवानके, वचन सुनत नरनाथ ॥
 जात भयो रणसाज सजि, लिये सैन्य बहु साथ ॥१८०॥
 भूप संग बहु सैन्य करेरी । सो जरनैल नयन निज हेरी ॥
 भय अति मानि देखाय कवाइत । गमन्यो हारि मानिकै निजचित ॥
 महाराज रघुराज सचैनै । कृपा कृष्ण गुणि आयो ऐनै ॥
 सुधि करि दीनबंधुकी वानी । है प्रसन्न बहु विधि सनमानी ॥
 दीन्हो गाँव अनेक इनामा । गुणि मतिवान दिवान ललामा ॥

सुखयुत बीतिगये कछु काला । लाट हूनपति जौन विशाला ॥
 लै बहु सैन्य कानपुर आयो । सब राजनको खत लिखवायो ॥
 आवहिं इतै भेटके हेतू । सुनि सुनि सब नृप गये सचेतू ॥

दोहा-महाराज रघुराजको, लिखत भयो खत सोइ ॥

मुलाकात मम करनको, आवै इत मुद मोइ ॥ ८१ ॥

तहाँ चलन नृप कियो तयारी । बरजे तबहुँ इतै नर नारी ॥
 दीनबंधु तबहुँ मतिवाना । कह्यो पैज करि वचन प्रमाना ॥
 चलिये भूप संदेह न कीजे । विना चलेहीं भय गुणि लीजे ॥
 सत्य विचारि वचन तिनकेरे । काहूके दिशि तनक न हेरे ॥
 लै कछु सैन्य चैन भरि भूरी । चलो कानपुर यद्यपि दूरी ॥
 मगमें बहु जन किये निवारण । लाटबोलाये है कछु कारण ॥
 गुणि हरि उर भरोस नृप भारी । काहू ओर न नेकु निहारी ॥
 दीनबंधुके मग ज्वर भयऊ । सो न मानि कछु नृप सँग गयऊ ॥

दोहा-जाय सैन्य युत कानपुर, डेरा सुरसरि तीर ॥

करत भयो सुनि हूनपति, भयो मुदित मतिधीर ॥ ८२ ॥

दगी मुकामी फेरि सलामी । बँधी पंचदश जौन मुदामी ॥
 पैदर अरु असवारन काहीं । दिय नृप अरुण पोशाक तहांहीं ॥
 फूलसिरी अरुणै गज भासी । सूही साज वाजिगण गासी ॥
 सरिस वसंत सैन्य सुठि सोही । लखि लखि भूपहु गे मन मोही ॥
 लाट लखनऊ है जब आयो । मुलाकात हित नृपहि बोलायो ॥
 मुख्य अमात्य जौन अभिरामा । दीनबंधु है जाको नामा ॥
 श्रीरघुराज ताहि लै संगै । गये सैन्य युत भेट उमंगै ॥
 यक साहेब लैकै अगवाई । साहर भूपहि गयो लेवाई ॥

दोहा-शिविर हूनपतिके निकट, पहुँचे जब रघुराज ॥

पाय लाट साहेब खबरि, आगू लै महाराज ॥ ८३ ॥

करि सलाम दोउ परस्पर, पूछतभे कुशलात ॥

कहे कुशल सब भांति दोउ, बार बार हरषात ॥८४॥

वाम हाथ गहि दहिने हाथै । गयो लेवाय लाट सुख साथै ॥
तख्त उपर द्वै कंचन कुरसी । धरवायो जु हूँनपति डुलसी ॥
तामैं अपने दहिने ओरै । नृप बैठाय बैठ सुख वोरै ॥
नीचे तख्त सैकरन कुरसी । धरवावतभो साहेब विलसी ॥
तिनमें काशी चरकहरीके । रहे जे और भूप अवनीके ॥
औरहु जंमींदार सरदारन । बोलि पठायो आये तेहिं छन ॥
तिनको तुरत तहां बोलवाई । दै ताजीम सबै सुखदाई ॥
क्रम क्रमते दीन्ह्यो बैठाई । बैठे ते सब शीश नवाई ॥

दोहा--मंत्री मुख सरदार जेहिं, दियो अजंट लिखाय ॥

नृप सँग चलि तेहिं क्रमहिते, कुरसी बैठे जाय ॥८५॥

निकट हूँनपतिके जबै, भई सभा यहि भांति ॥

अति प्रसन्न रघुराज पै, भयो लाट मुदमाति ॥८६॥

तेहि पितु किस्ती जै लागि आई । तिनते अधिक तीनि लगवाई ॥
भूषण वसन विचित्र अमोले । तिनमें धरि धरि दियो अतोले ॥
पूर्व सलामी पंद्रह जोई । लाट हुकुम बिय दशवसु होई ॥
साजु नवीन भांति बहु साजी । दीन्ह्यो यक गयंद वियवाजी ॥
परगन दिय सोहागपुर नामा । होत लाख मुद्रा जेहिं ठामा ॥
जानि भूपको मुख्य सचिव चित । कियो पराक्रम गुनि हमरे हित ॥
दीनबंधु पै है प्रसन्न अति । खिलत तोपयुत दियो हूँनपति ॥
पद दीवान बहादुर केरो । दियो लाट करि मान घनेरो ॥

दोहा--पुनि नृप सँग सरदार जे, गये तासु दरबार ॥

यथा उचित तिन सबनको, दीन्ह्यो लिखित अपार ८७

क्रमते पुनि सब नृपनको, दीन्ह्यो खिलत सराहि ॥

ते शिर धरि धरि लेत भे, है मन परम उछाहि ॥८८॥

पुनि रघुराज भूप मतिवाना । मुदित लाटसों वचन बखाना ॥
 हम अस जहँ तहँ सुन्यो हवाला । लेन हेतु सबको करवाला ॥
 आवत लाटसो हम पहिलेहीं । सौहीं देहिं आप लैलेहीं ॥
 पुनि सौहीं लै लाट उवाही । देखि भली विधि कह्यो सराही ॥
 यह सौहीं केहिं देशहि केरी । कह नृप अहै फिरंग करेरी ॥
 सुनत हूँनपति मन मुसक्याई । सौहीं दै वाणी यह गाई ॥
 तुव हथियारहि केवल तेरे । सदा रहैं हम बिन अवसेरे ॥
 पुनि भूपति रघुराज उदारा । करि सलाम डेरै पगु धारा ॥

दोहा-सब भूपहुं पुनि नाय शिर, गमने शिबिर मझार ॥
 इतै हूँनपति सैन्य युत, है करि सपदि तयार ॥ ८९ ॥
 महाराज रघुराजके, आये शिबिर सिधारि ॥
 होत भयो जेहिं विधि सदा, तेहिते अधिक विचारि १९०
 करत भये सत्कार नृप, भो खुशलाट अपार ॥
 वरण्यो इत संक्षेपते, भीति ग्रंथ विस्तार ॥ ९१ ॥
 महाराज रघुराज पुनि, कूच तहाँ तेकीन ॥
 सैन्य सहित रीवां नगर, आय सबै सुख दीन ॥ ९२ ॥
 बाढ़ अठारहको दियो, लाट विशेष निदेश ॥
 दगै सलामि हमेश सो, आवत जात नरेश ॥ ९३ ॥
 कछु दिनमें अरजंट पुनि, चलि सोहागपुर काहिं ॥
 भूहि अमल कराय दिय, सुयश लाय जगमाहिं ॥ ९४ ॥

सवैया-एक समय पगमें व्रणभो न अधीर भयो भई पीर महाई ॥
 जाप करैं मनु बीस हजार करै तिमि राजको काज सदाई ॥
 हारि गये सब देश विदेशके वैद्य हकीम मिटी न मिटाई ॥
 दूरि व्यथा भै जबै रघुराज दियो शतकै रचि शम्भु सुनाई ॥

दोहा-औषध किय प्रहलाद द्विज, तासु अयोध्या सून ॥
 पायो मुद्रा शतसहस, गावैं उभय नहिं ऊन ॥ ९५ ॥

ज्वर विकारते यक समय, नृप किय विपुल उपास ॥

तज्यो न तबहूँ जप करब, पूजन रमानिवास ॥९६॥

बालहिते कविता मन लायो । चित्रकूट अष्टकहि बनायो ॥

ग्रंथ रच्यो रघुनंद बिलासा । हनुमत शतक कियो सहुलासा ॥

लीन्ह्यो मंत्र केर उपदेशू । तब जे ग्रंथ रच्योहै वेशू ॥

तिनको अब मैं देत सुनाई । विनयमाल दिय प्रथम बनाई ॥

रुक्मिणि परि पय विरच्यो ग्रंथा । जामें विदित काव्यकी पंथा ॥

व्यासदेव जो रच्यो पुराना । श्रीभागवत प्रसिद्ध जहाना ॥

भाषा विरच्यो भूप उदारा । अहै बयालिस जौन हजारा ॥

पुनि जगदीश शतक किय भाषा । जामें कवित बिचित्र सुराषा ॥

दोहा-रच्यो संस्कृत ग्रंथ विय, एक शतक जगदीश ॥

कियो सुधर्म विलास यक, श्रीरघुराज महीश ॥९७॥

तिलक बनायो तासु बुध, रंगाचारी वेश ॥

भजन कवित औरहु अमित, सादर रच्यो नरेश ९८॥

सोरठा-कानन जात शिकार, खेलत मारत शेरको ॥

और जे जीव अपार, तिनाहिं बचावत करि दया ॥१॥

कवित्तघनाक्षरी ।

फेरत न आनन जो ऐसे उच्च वारनपै द्वैकारि सवार जाय नेर वेर वेरहै ॥

ढेर सरदार पै न सकत उठायकोऊ ऐसो लै रफल घालि करै बाध जेरहै ॥

कहैं युगलेश गेर गेर कहूँ ढेर ढेर ह्वाँई ठहराय जहां हौंकत करेरहै ॥

हेर हेर मारै लगे देर नहीं दौरिमेर भूप रघुराजसिंह शेरन पै शेरहै ॥ १ ॥

सोरठा-चलि पहाड़ महाराज, बागि बागि जेहि बारिमें ॥

हने जिते मृगराज, ते गोकुल बुध पढ़ लिखे ॥ १ ॥

दोहा-महाराज रघुराजको, औरहु चारु चरित्र ॥

युगलदास वर्णन करत, जेहि यश छयो विचित्र ॥९९॥

शाह विलायतको दियो, सुक्का यक पठवाय ॥

लाट वजीर हमारसो, तकमा देहै आय ॥१००॥

माधौगढगे यक समय, तहँते आगू लाय ॥

सुनि हवाल भे अति खुशी, सभा मध्य बैचवाय ॥ १ ॥

खत लिखि पठयो लाट पुनि, जहाँ आप मन होय ॥

चलि लीजै तकमा तहाँ, बड़ी बड़ाई जोय ॥ २ ॥

नृपलिखि पठयो काशिको, सोउ लिख्यो है वेश ॥

बांधवेश वर सैन्य युत, गो महेशपुर देश ॥ ३ ॥

मुलाकात दरबार जन, भयो कानपुर माहिं ॥

तस भो काशी लाट दिय, कहों सो तकमा काहिं ॥ ४ ॥

छंद-भूषण सितारैहिंदको दीन्ह्यो किताबी एकहै ॥

सुबहादुरी भूषण दियो यक जटित रतन अनेकहै ॥

अति है प्रसन्न सुशाहजादी दियो रत्ननहारहै ॥

सो दियो नृप रघुराजको वरहूँनपति करि प्यारहै ॥ ५ ॥

किय कूच फेरि परेटते रघुराज भूप उदारहै ॥

जनयूह भये प्रसन्न अतिलखि सैन्य तासु अपारहै ॥

चलि असी सुरसारि संगमें तट वास करि सुखछायकै ॥

मणिकार्णिका अरु गंगमें सउमंग जाय नहायकै ॥ ६ ॥

यक गाउँ औ गो सहस भूषण वसन नोल अमोलहै ॥

उपरोहितै दिय दान करि सन्मान प्रीति अतोलहै ॥

पुनि दरश किय विश्वेशको दिय गावँएक चढ़ाइहै ॥

अरु सहस मुद्रा वसन भूषण अर्पणै किय चाइहै ॥ ७ ॥

अन्नपूरणा अरु बिंदुमाधव जाय निकट गोपालहै ॥

पद पंचशत शत अर्पि मुद्रा लियो दरश विशालहै ॥

पुनि कालभैरव हुंठिपाणिहि और सिंगरे देवको ॥

शत शत सु मुद्रा अर्पिकै दरशन लियो करि सेवको ॥

पुनि पंचगंगा आदि जेते घाट रहे महानहै ॥

करिमज्जनै तिनमें कियो जो दान करो बखानहै ॥

गज तुरंग गोशत वसन भूषण अन्नकी बहु राशिहै ॥

लहि विप्र काशि निवासि सब दिय आशिषैसहुलासिहै ॥

दाहा-महाराज रघुराज पुनि, दारु तुला मँगवाय ॥

यक पलरामें देतभे, सुवरण मनन धराय ॥ ५ ॥

ठाल कृपाण पाणि निज लैकै । निज भूषण वसनहुँ ढिग धैकै ॥
यक पलरामें सहित उछाहा । बैठयो बांधवेश नरनाहा ॥
सुवरण पलरा नीच लरूयो जब । दिय नरेश सुनि देश आशु तब ॥
अपनो गरू रफल्ल मँगार्इ । निज समीपही लियो धराई ॥
तबहुँ सो पलरा नीच लखाना । तबहुँ नृपति अस वचन वखाना ॥
द्वै थैली ये मोहरन केरी । उलदि देहु न करहु अब देरी ॥
कामदार ते सुनि सहुलासा । उलदि दियो मोहर अनयासा ॥
सुवरण पलरा महि लगि गयऊ । पलरा ऊँच भूपको भयऊ ॥
तुला चढ़े अस लखि नृपकाहीं । किये प्रशंसा लोग तहांहीं ॥
उतारि तुलाते नृप हरषाई । दशहजार मुद्रा मँगवाई ॥
दीनबन्धु दीवानहु भपा । यक पलरा बैठाय अनूपा ॥
यक पलराते रुपयन रूरे । दियो धराय मोद सों पूरे ॥

दोहा-भयो न ऐसो नृपति कोउ, कामदारको जोइ ॥

तुला चढ़ावै रजतमें, चढ़े हेममें सोइ ॥ ६ ॥

बढ़यो शोर सुनि जननको, तहाँ भूप शिरमोर ॥

कह्यो करै नहिँ शोर कोउ, कहो वचन यह मोर ॥ ७ ॥

पाँडे नंदकिशोर कह, सो सुनि भरि सुद थोक ॥

बंद न हल्ला होत यह, छयो तीनिहूलोक ॥ ८ ॥

राज राज पुनि श्रीरघुराजा । मानि मोद उरमाहिँ दराजा ॥

निज नामहिँ सुश्लोक बनाई । सो द्वै सहस आशु छपवाई ॥

प्रथम पंडितनको विरताई । भोर कमक्षा सपदि सिधाई ॥

काशिराजको तहां मकाना । अति आयत रह विदित जहाना ॥

तहँ मज्जन करि पूजन नीके । बोलि सहस द्वै विप्रन जीके ॥

द्वै द्वै मोहर दिय सबकाहीं । विविध भांति सन्मानि तहांहीं ॥

ते सब सुयश भूपको गावत । निजनिज गृह गवने सुख छावत ॥
 केरि आपने शिविर सिधारी । महाराज रघुराज सुखारी ॥
 रहे जे बाकी औरहु पंडित । सकल शास्त्रमें अतिही मंडित ॥
 सादर तिनको निकट बोलाई । करि सन्मान सभा बैठाई ॥
 दुइ दुइ मोहर और दुशाले । देतभयो युत प्रीति विशाले ॥
 त्यउ सब गावत सुयश भुआला । दै अशीश गृह गये उताला ॥

बोहा—कहत परस्पर बात यह, जात पंथ हरषात ॥

सभान किय अवदात असि, कोउ नृप व्रात विख्यात ॥९॥

रहे घाटिया विप्रजे, काशी कइक हजार ॥

सुवरण तनु तिनके किये, सुवरण वितरि अपार ॥२१०॥

हाट हाट हाटक विपुल, भयो बनारस सस्त ॥

रस्तन रस्तन बागते, पंडित मोहर मस्त ॥ ११ ॥

रहे जे संत, महंत तहँ, संन्यासी विख्यात ॥

सादर तिनको दरश लिय, दे धन बहु सहुलास ॥१२॥

देहरी बीस हजारहँ, काशी विप्रन केरि ॥

नृप तिनके सत्कार हित, नीके मनाहिं निबोरि ॥१३॥

पांडे नंदकिशोर सिंह, ईश्वरजीत बघेल ॥

तिमि शाहिजादहँ सिंहसों, कह्यो धर्मको वेल ॥१४॥

हम अब रींवाहिं जातहँ, रुपया बीसहजार ॥

लै देहरी सब द्विजन दै, अइयो निजहिं अगार ॥१५॥

अस कहि भूपति भोरही, तहँते तुरत पधारि ॥

निज पुरको आवतभयो, करि दरकूँच सुखारि ॥ १६ ॥

उत तीनों जन काशि बसि, विप्रन सहित विवेक ॥

दीन्ह्यो गनि देहरीनको, फरक पय्यो नहिं नेक ॥ १७ ॥

कवित्त ।

राना राठि उरहाडा बडे कछवाह राजा आय आय कीन्ही सभा दैकै धन राशी है ॥

दक्षिणके सुबा जे करोरिनके राज्यवारे आय तेऊ सभाकै सुकीरति प्रकाशी है ॥

सुवरण वृष्टि पै न कीनी कोऊ आजु तक जैसे करे वारि वृष्टि भादों मेघ खासी है ॥
 भूप विश्वनाथको अनूप तनय रघुराज जैसी जातरूप वृष्टि कीनी पुरी काशी है १
 घर घर बाट बाट गंगाजूके घाट घाट हाट हाट भाटहीं सों भापें जन राशी है ॥
 पंडित अखंडित की कीनीसभा मंडित ना ऐसी कोऊ भूपति उदंडित विकाशी है ॥
 कहैं युगलेश रहि गयो ना कलेशलेश याचक अशेषको विदेश देश वासी है ॥
 हम तुला भासी महाराज रघुराज यशी खासी कीर्ति अतुला प्रकाशी पुरी काशी है २
 भूपर घनेरे एक एकते बड़ेरे भूप भये हैं अनूप पै न ऐसी कोऊ कीनी है ॥
 जैसी करी महाराज विश्वनाथ तनय यह महाराज रघुराज मोद उर भीनी है ॥
 काशीपुरी असी गंग संगम निकट तट चढ़िकै हिरण्य तुला पुण्यके अक्षीनी है ॥
 कहे युगलेश देश देशके नरेशनकी जाईवो महेशपुरी राह रोकि दीनी है ॥ ३ ॥
 केते भूमिपाल भये भारी राज्यवारे भूमि केतको दिवान बड़े दानी सत्यसिन्ध हैं ॥
 आय आय काशीपुरी लाय लाय द्रव्य भूरी दैकै विप्र वृन्दनको पोष्यो पंगु अंधु है ॥
 पै न ऐसी भयो जौन हेम रौप्य तुला चढ़ि दान अतुलाकै छावै सुयश सुगन्धु है ॥
 राजा रघुराज राजै की तो या जमाने मध्य की देवान ताको श्रीदिवान दान बंधु है ४ ॥

कुंडलिया—सुवरण वृष्टि करी उतै, काशी नृप रघुराज ॥

तेहि प्रभाव तिहिं देशघन बरसे वारिदराज ॥

वरसे वारिदराज सकलमें भयो सुभिक्षै ॥

रह्यो न लेश कलेशवेश मिटिगो दुर्भिक्ष ॥

भिक्षै माँगत रहे रंक जे घर घर कुवरन ॥

तेऊ पाय अनाज भूरि ह्वैगे तनु सुवरन ॥ १ ॥

दोहा—महाराज रघुराजको, दृढ़ विश्वास य ॥

तेहि प्रभाव सुखसाज सज, सुकर दराजहु काज ॥ १८ ॥

कवित्त ।

जोधपुर महाराज राज्यहै दराज जाहि राज काज ऐशही में बीत दिनरैन है ॥

साहिबी सुरेशसी धनेश ऐसी मौज समै तेजमें दिनेश वेश विलसति शैनेह ॥

मैनकीसी मूरति मनोहर तखतसिंह बखत बुलन्द निरखत करै चनैह ॥

जाके उर ऐने युगलेशकहूं लेस भैन देखे बनै नैन वैन कहत बनैह ॥ १ ॥

दोहा-राना नृप कछवाह अरु, हाडा भूप विहाय ॥

जेती लसत पछाहमें, भूपन की ममुदाय ॥ १९ ॥

तिनके भेजि कटारजो, करत आपनो व्याह ॥

ऐसो प्रथित पछाहमें, जोधपुरी नरनाह ॥ २२० ॥

पुरुषनते संबंध गुणि, तख्तसिंह नरनाह ॥

रीवा करन विवाह को, कीन्ह्यो परम उछाह ॥ २२१ ॥

रानिन सुतन समेत भुवाला । निजपुरते किय गमन उताला ॥

जेठो कुँवर तासु रह जोई । चतुरङ्गिणी फौजलै सोई ॥

आवत भयो आगरे जबहीं । मिल्यो नृपति जयपुरको तबहीं ॥

तार्की तासु मित्रता भारी । तासों ऐसी गिरा उचारी ॥

जेहि कन्याको तिलक चढ़ौ तुव । सो द्वैगई कालके वश ध्रुव ॥

जो रघुराजसुता अब अहई । सो तुव भयऊ नृप घर रहई ॥

तासों तुव नहिं उचित विवाहा । रीवां जानन करहु उछाहा ॥

हमरे संग जयपुर पगु धारो । सुनि सो कह यह भलो उचारो ॥

दोहा-द्वै सवार बग्घी तुरत, जयपुरको नरनाह ॥

ताको संग चढ़ाय कै, लैगो जयपुरकाह ॥ २२ ॥

महाराज रघुराजकी, जेठि सुता वश काल ॥

होत भई तबइतहिते, सुमति दिवान उताल ॥ २३ ॥

लिख्यो जोधपुरको यह पाती । जहँ अजवेशर है विख्याती ॥

जासु तिलक जेठको चढ़ेऊ । सो नृपकी दुहिता जिय कढ़ेऊ ॥

ताते यह नृपसुता जो अहई । तासु व्याह जेठको चढ़ई ॥

ताम पक्काइत करिलीन्यो । तब तुम इतै पयानहिं कीन्ह्यो ॥

यह पाती लहि कवि अजवेशा । सो पक्काइन करि लियवेशा ॥

नृप दिवान कहँ पत्र पठायो । हम यह पक्काइत करि भायो ॥

सों आगरे सुरति विसरायो । जेठ कुँवरको नहिं लै आयो ॥

तख्तसिंह नृप रेल चढ़ाई । सबको तीरथपति नहवाई ॥

दोहा-सबको करिदीन्ह्यो बिदा, ते ह्वै रेल सवार ॥

रानी सुत सब सैन्यगे, निजपुरको विनवार ॥ २४ ॥

छरे संग सरदारलै, युग रानी सुत दोय ॥

तख्तसिंह आवतभये, रींवाको मुदमोय ॥ २४ ॥

नृप रघुराज मोद उर छाई । शिविर करायो ले अगुवाई ॥

सुदिवसमें त्रय भंयो विवाहा । छायो घर घर परमउछाहा ॥

जो पितृव्यकी सुता सयानी । तख्तसिंह व्याह्यो सुखमानी ॥

तख्तसिंह ल्याये सुत दोई । तिनमें जेठ कुँवर रह जोई ॥

ताको सुता आपनी व्याही । महाराज रघुराज उछाही ॥

तेहिते लहुरे कुँवरहिं काही । सुता विमातृ भगिनि कहँ व्याही ॥

दायज देन जु रह्यो करारा । पंचलक्ष दिय द्रव्य उदारा ॥

हय गज भूषण वसन अमोले । दियो तिन्हें रघुराज अतोले ॥

दोहा-मेवा सकल भँगायकै, अरु मिठाइ बहु भांति ॥

कैयो दिन सादर दियो, ऊंच नीच सब जाति ॥ २६ ॥

चारि रोजको नेम जग, रखि मास लों बरात ॥

पूरी साज सबै जनन, पूरी सुख सरसात ॥ २७ ॥

रत्न जटित सुवरण कटक, अरु बहु मोती माल ॥

निज सरदारनको दियो, छायो सुयश विशाल ॥ २८ ॥

कवित्त ।

एक सैम बांधवेश महाराज रघुराज छरे सरदारन औ संगलै देवानहै ॥

रेलमें सवार कलकत्ताको पयान कीनो हरिहर क्षेत्र आदि तीरथ महान है ॥

परेमग तहाँकै नहान दै द्विजान दान तीजे रोज जब कलकत्ता नगिचानहै ॥

हूनपति आज्ञा पाय हून मुख्य आगू आयलै गयो लेवाय डेरा देतभो मकानहै ॥ १ ॥

दोहा-डेरा आयो लाट पुनि, देखि भूपको रूप ॥

रूप न अस कोहु भूपको, भूपर गन्यो अनूप ॥ २९ ॥

मुद्रा सहस रसोंई काहीं । शिविर जाय पठयो सुखमाहीं ॥

दूजे दिन पुनि नृपति उदारा । सादर लाट शिविर पगुधारा ॥

सो आगूलै उच्च जो कुरसी । बैठायो तामें अति हुलसी ॥
 विविधभांति कीन्ह्यो सत्कारा । सो कहँलों कवि करै उचारा ॥
 बड़कीमतिकी उभय दुनाली । देत भयो शत्रुनको शाली ॥
 फेरिलाट असि गिरा उचारी । ईजा लही आप मग भारी ॥
 यहि पुर होत कलैते कामा । याते कलकत्ताहै नामा ॥
 द्वै चारिक चलि ठौर विशेषी । लेहिं आपहू आंखिन देखी ॥

दोहा—पांचलाख मुद्रा नितहिं, बनत कलैते ख्यात ॥

तूल सूत बिनिबो वसन, होत कलैते ब्रात ॥ २३० ॥

शहर फनूस बरै बुतै, निशि कलते यक साथ ॥

इत्यादिक बहु औरऊ, निरखि नंद विश्वनाथ ॥ ३१ ॥

कह्यो लाट साहेब सों जाई । यहि पुर कला अपूर्व लखाई ॥
 तकन तोपखानै पुंनि भूपा । गये लखे युग तोप अनूपा ॥
 रहैं अठारै पंनी केरी । तिनहि सराहतभो नृप डेरी ॥
 सो यक मनुज लाटसों कहेऊ । लाट खुशी है हुकुमहि दयऊ ॥
 महाराज ऐसी युगतोपा । तुमहिं देतहैं हम भरि चोपा ॥
 अहैं प्राग सो लेव मैगाई । दिये देत हम अहैं रजाई ॥
 दैशत फेरि तिलंगन काहीं । पथरकला दीन्ह्यो सुखमाहीं ॥
 पुनि कह तुव दिवान सरदारा । वीर बड़े अरु सुघर अपारा ॥

दोहा—बहुत रोज आये भये, अहै रुजी यह देश ॥

याते अब निज पुरीको, कीजै गमन नरेश ॥ ३२ ॥

लाट वचन तब भूप सुनि, है हुत रेल सवार ॥

मग नृप बहु सन्मान लहि, आयो पुरी मैझार ॥ ३३ ॥

दंडहु भरको हुकुम नहिं, तहँ असि लै सब ठाम ॥

इनके जन वागैं वचैं, और कसूरी नाम ॥ ३४ ॥

अरज कियो जो लाट सों, सो सब पूरण कीन ॥

कह्यो आपना राज्यमें, करो जो चहो प्रवीन ॥ ३५ ॥

चारि अश्व बग्घीनमें, चढ़त लाट नहिं कोय ॥
 चढ़ै जो कोऊ धोखेहूं, देइ दंड ध्रुव सोइ ॥ ३६ ॥
 सो पठयो महाराज पै, गुणि सो निजहिं समान ॥
 चढ़ि भूपति रघुराज तब, गुन्यो कृपा भगवान ॥ ३७ ॥
 मान्यो यह रघुराज नृप, सब यदुराज प्रभाव ॥
 और येक आगे चरित, वरणों भरि चित चाव ॥ ३८ ॥
 विजयनगर है नामजेहिं, ईजानगर विख्यात ॥
 तहँको गजपतिसिंहहै, भूपति मति अवदात ॥ ३९ ॥
 सादर सहित कुटुंब सो, बस्यो बनारस आय ॥
 ताके भै यक कन्यका, रति सम सुंदर काय ॥ २४० ॥

तेहि व्याहन हित सो उत्साहन । भेज्यो जन पछाह नरनाहन ॥
 ते सब दूरिदेश बहु मानी । अपनो जाब अगम मन जानी ॥
 ताते ते न कबूलहि कीने । मुद्रा लाखनहूँके दीने ॥
 तब सो : ईजानगर भुवाला । मनमें कीन्ह्यो शोच विशाला ॥
 पुनिकीन्ह्यो अस मनहिं विचारा । रीवां को है बड़ो भुवाला ॥
 तेहिते जो ममसुता विवाह । होय तो होवै महाउछाह ॥
 एक समय रघुराज उदारा । भेंट करन जयपुरहिं भुवारा ॥
 मिरजापुरको कियो पयाना । तहँ नृप ईजानगर सजाना ॥

शोहा-मुलाकात करि नजरदै, बहु विधि कीन्ह्यो सेव ॥
 पुनि जब तकमा लेनको, गयो काशि नरदेव ॥ ४१ ॥
 तबहूँ बहुविधि सेव करि, सुता व्याहकं हेत ॥
 विनयकियो बहुभाँति सों, सो नृप बड़ो सचेत ॥ ४२ ॥

नाथ कह्यो वकील करिदीजै । ज्वाब स्वाल तेहि मुख नृप कीजै ॥
 सुनि प्रसन्न गजपति नृप भयऊ । सादरनिजवकील करि दयऊ ॥
 भयो ज्वाब स्वाल युगवरषा । पैरिनयको टीको कछुनरषा ॥
 पूछ्यो प्रभु तेहि नृपकी आदी । भाषतभे वकील अह्लादी ॥

राना विदित उदयपुर केरे । तिन भाई करि लेहि निवेरे ॥
 सुनत उदयपुर खत लिखवायो । रानाजी लिखि तरत पठायो ॥
 ईजानगर भूप जो रहई । सो हमरो भाई सति अहई ॥
 सुनि खत बांधवेश महाराजा । कह वकील सों वयन दराजा ॥

दोहा-लै आवहु द्रुत तिलक इत, लै आये ते जाय ॥

टिके रहे बहु मासलों, तिलक न चढ़त जनाय ॥ ४३ ॥

रामराजसिंहको तिलक, चढ़नको कहै वकील ॥

भूप कहैं नाहिं बनत उन, कहैं ज्योतिषी ढील ॥ ४४ ॥

कतहुँ न तुव संबध तेहिं, तुव संबधी माहिं ॥

याते इत सब जन कहैं, व्याह योग उत नाहिं ॥ ४५ ॥

अति मतिवंत भूप रघुराजू । गुन्यो वृथा सब करत अकाजू ॥

पांचलाख मुद्रा यह देई । तिलक माहिं अति आनंद भेई ॥

उभय लाख द्वारे महुँ दे हैं । उभय लाख संग सुता पटै हैं ॥

हय गय भूषण वसन अमोला । और उपरते देइ अतोला ॥

दोषहु यागें कछु न जनाई । रानाको प्रसिद्धै भाई ॥

यह करि ठीक मनहिं मतिवाना । कलकत्ता जब कियो पयाना ॥

तहुँ किय लाट अग्रते ठीको । रामराजसिंह परिनय नीको ॥

दाइज लेन रही जो चाहा । ताहूको करि दियो निवाहा ॥

दोहा-रीवामें द्रुत आय प्रभु, कह पितृव्य सुत पाहिं ॥

साहेब ढिग सिद्धांत भो, तिहरो व्याह तहँहि ॥ ४६ ॥

कहत रहे जे होवे नाहीं । तेउ चुपभये न कछु बतराहीं ॥

नृप वकील ते कहि घर शाहू । पांच लाख धरवाय उछाहू ॥

रामराजसिंहको लै संगै । साजि बरात चलयो सउमंगै ॥

काशीको जब गये निराई । डेरा दिय सो ले अगुवाई ॥

तहँसो पुनि तिलक चढ़ायो । हय गय भूषण वसन मँगायो ॥

मुद्रा सहस पचास मँगाई । गजपति सिंह दियो सुख छाई ॥

होत भयों पुनि सविधि विवाहा । पूरि रह्यो काशी उत्साहा ॥
तहँ गजपति नरेशकी रानी । रूप भूप रघुराज लोभानी ॥

दोहा-कहत भई निजनाहसों, सो उरभरी उछाह ॥
महाराज रघुराजको, कस नहिं कियो विवाह ॥ ४७ ॥
सो कह जब तुमसों कह्यो, तब तुम मान्यो नाहिं ॥
अब न सोच संबंध जेहिं, पूरव होत तहाँहिं ॥ ४८ ॥

चारि रोज तहँ रही बराता । कीन्ह्यो सो सत्कार अघाता ॥
पुनि सादर जब कियो बिदाई । मुद्रा दिय दै लाख मँगाई ॥
हय गय भूषण वसन जमाती । बड़े मोलके दिय बहु भांती ॥
पुनि सरदारन और वकीलन । मुद्रा दिय पठाय धरि पीलन ॥
नृप रघुराज फेरि सुख छाई । रुपया मोहर अमित मँगाई ॥
सौंदर रामराजसिंह काहीं । तुला चढ़ाय गंग तट माहीं ॥
सब विप्रनको दियो देवाई । जय जय ध्वनि काशी महँ छाई ॥
राम निरंजन संत महाना । वसें बनारस विदित जहाना ॥

दोहा-सकल शास्त्रमें निपुण अरु, कामादिकते हीन ॥
राम निरंजन सो न अब, कतहूँ संत प्रवीन ॥ ४९ ॥

महाराज रघुराज उदारा । तिनके दरश हेतु पगु धारा ॥
भूपहि आवत जानि दुवारा । चलि सेवक अस वचन उचारा ॥
नाथ दरशहित बहु नृप आवैं । दरशि दूरिते सपदि सिधायैं ॥
सो आपहु दर्शन करि आवैं । बैठन कहैं बैठि तो जावैं ॥
सुनि बोल्यो रघुराज नरेशा । बैठव तबहिं जो होइ निदेशा ॥
अस कहि प्रभु ढिग चलि सुखधामा । वार वार किय दंड प्रणामा ॥
दै अशीश बहु बैठन कहेऊ । बैठि यामलों नृप सुख लहेऊ ॥
कह प्रभु नृप विशुनाथ समाना । रामभक्त नहिं भयो जहाना ॥

दोहा-सब विद्यनिमें निपुण तिमि, दानी विदित महान ॥
तासु तनयतैसहि तुमहुँ, सम अबहुँ ना आन ॥ ५० ॥

शम्भुशतक जगदीशहू शतकै । विरच्योतुमसुनि जेहिं बुधसुल्लकै ॥
 जस तुम भक्त अहौ नारायण । तस ईश्वरीप्रसाद नारायण ॥
 जस पूरण सुख तुमते भयऊ । तैसहि उनहूँ ते सुख ठयऊ ॥
 नृप पछाहियनमें कछु रूरो । बूँदी नृपति जानते पुरो ॥
 तेहिंके आये भो सुख आधो । तुम सम कोउ न कृष्ण अवराधो ॥
 अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा । गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥
 सकल देव संतन गृह जाई । यथा योग बहु द्रव्य चढ़ाई ॥
 रामनगर गो सुरसरि पारा । गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा-रामराजसिंहकोसतिय, घर दिय पठै ससैन ॥

आपरेल चढ़ि आयकै, मिरजापुराहिसचैन ॥ ५१ ॥

पुनि बगधी असवार द्वै, सेन्यसहितसुख पाय ॥

रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ५२ ॥

बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महाराव ॥

महाराज सों यक समय, विनय वचन सुखगाव ॥ ५३ ॥

नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥

विमुख आपते जो भये, यहां बड़ो डर सोग ॥ ५४ ॥

स.-आपहिके हमहैं करुणानिधि आप जो लीजिये मागहिपानी
 तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हें परै जानी ॥

दीजिये भात कृपाकारिकै सुधरै मम लीजिये सत्य या मानी ॥

श्रीरघुराज कह्यो हंसिकै यदुराज सुधारिहैं है सति वानी ॥ १ ॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, बरजे बहु जन वृंद ॥

महाराज कह मानिहैं, कहिहैं जस गोविंद ॥ ५५ ॥

अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्धहै नहिं ॥

अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहिं ॥ ५६ ॥

नयन मूँदि जगदीश ढिग, पंडा तुरतहिं जाय ॥

लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नहिं आय ॥ ५७ ॥

नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात ॥
वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ५८ ॥
पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
कियो अग्निहोत्री विदित, रह्यो सुयश जग छाया ॥ ५९ ॥
दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
दैं गोविंदगढ़ वास दिय, दैं शुभ धाम अराम ॥ ६० ॥

छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥
याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई मुख गाई ॥
विप्र जे याज्ञिक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
कवि वेश कहै युगलेश चलि, देशन देश नरेश मधि ॥
हैं विन कलेश मुख गाय यश, भये धनेश सुरेश सधि १
कुंडलिया-सब नरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान ॥
महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
कौन सुजान जहान, सुकवि करि सकै बखानै ॥
जो वखायो वसु वसन, जनन कहँ बे परमानै ॥
मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महुँ तब ॥
युगलदास यह कृपा जानि लीजै सतिके सब ॥ १ ॥

कविराज आक्षरी ।

वाजिन सवार राज राजिन कराय तहां निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥
लाट कोटि कुरसीमें बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥
देखि सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते बिशेषिहीं नवायो है ॥
सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज परजौन सब राजनते अधिक बनायो है ॥ १ ॥
दोहा-लाख लाय मुद्रा नज़र, देन चहे नरनाह ॥
तिनको लियो न मानि नृप, शाह सहित उत्साह ॥ ६१ ॥
मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥
लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निज हाथ ॥ ६२ ॥

शम्भुशतक जगदीशहू शतकै । विरच्यो^१ ~~तुम~~ ^{तुम} जेहिं बुधसुछकै ॥
 जस तुम भक्त अहौ नारायण । तस ईश्वरीमसाद नारायण ॥
 जस पूरण सुख तुमते भयऊ । तैसहि उनहूँ ते सुख ठयऊ ॥
 नृप पछाहियनमें कछु रूरो । बूंदी नृपति जानते पूरो ॥
 तेहिंके आये भो सुख आधो । तुम सम कोउ न कृष्ण अवराधो ॥
 अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा । गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥
 सकल देव संतन गृह जाई । यथा योग बहु द्रव्य चढ़ाई ॥
 रामनगर गो सुरसरि पारा । गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा-रामराजसिंहकोसतिय, घर दिय पठै ससैन ॥

आपरेल चढ़ि आयकै, मिरजापुराहिसचैन ॥ ५१ ॥

पुनि बगधी असवार है, सेन्यसहितसुख पाय ॥

रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ५२ ॥

बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महाराव ॥

महाराज सों यक समय, विनय वचन मुखगाव ॥ ५३ ॥

नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥

विमुख आपते जो भये, यहां बड़ो डर सोग ॥ ५४ ॥

स.-आपहिके हमहैं करुणानिधि आप जो लीजिये मागहिपानी
 तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हें परै जानी ॥

दीजिये भात कृपाकारिकै सुधरै ममलीजिये सत्य या मानी ॥

श्रीरघुराज कह्यो हंसिकै यदुराज सुधारिहैं है सति वानी ॥ १ ॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, बरजे बहु जन वृंद ॥

महाराज कह मानिहैं, कहिहैं जस गोविंद ॥ ५५ ॥

अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्धहै नाहि ॥

अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहि ॥ ५६ ॥

नयन मूँदि जगदीश ठिग, पंडा तुरतहिं जाय ॥

लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नहिं आय ॥ ५७ ॥

नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात ॥
वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ५८ ॥
पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
कियो अग्निहोत्री विदित, रघ्यो सुयश जग छाया ॥ ५९ ॥
दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
दैं गोविंदगढ़ बास दिय, दैं शुभ धाम अराम ॥ ६० ॥

छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥
याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई मुख गाई ॥
विप्र जे याज्ञिक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
कवि वेश कहै युगलेश चलि, देशन देशनरेश मधि ॥
हैं विन कलेश मुख गाय यश, भये धनेश सुरेश सधि १

कुंडलिया-सबनरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान ॥
महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
कौन सुजान जहान, सुकवि करि सकै बखानै ॥
जो वखइयो वसु वसन, जनन कहैं बे परमानै ॥
मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महैं तब ॥
युगलदास यह कृपा जानि लीजै सतिका सब ॥ १ ॥

कवित्तघनाक्षरी ।

वाजिन सवार राज राजिन कराय तहां निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥
लाट कोठि कुरसीमें बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥
देखि सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते बिशेषिहीं नवायो है ॥
सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज परजौन सब राजनते अधिक बनायो है ॥ १ ॥
दोहा-लाख लाय मुद्रा नज़र, देनचहे नरनाह ॥

तिनको लियो न मानि नृण, शाह सहित उत्साह ॥ ६१ ॥
मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥
लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निज हाथ ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

महादेवजीके सम देवनर दानवमें भयो ना त्रिलोकी माहिं राम भक्ति धारी है ॥
 सीयबेष कीन्ही सती ताहि त्यागि दीन्ह्यो जौन दक्षकी सुता जो रही प्राणनते प्यारी है ॥
 अब कलिकालतो कराल या कलुषमयो तामें वैसो होय नहिं परत निहारी है ॥ १ ॥
 महाराज विश्वनाथ तनै रघुराज वैसो भयो युगलेश कछु कहत उचारी है ॥ २ ॥
 छीतूदास भगत पधारे एक समै रीवां कातिकते फागुनलों रहे सुख छायेकै ॥
 फगुवाके रोज रैन निकसे बजार मग राम सिय लषणको गजमें चढ़ायकै ॥
 दीनबंधु धाम ढिग एक बनियाको घर रह्यो तासु सुत ले खेळौनादी चलायकै ॥
 चौंकि उठ्यो गज झूल जरी डोलि उठे द्रुत कोऊ जन जाय कह्यो नृपको सुनायकै ॥
 दोहा—भोर होत तेहिं वणिकको, भूपति लियो लुटाय ॥

द्वै हजारको वसनतेहिं, लीन्ह्यो तुरत भँगाय ॥ ६३ ॥

आधे आधे सो दियो, मोहन दशरथ काहिं ॥

दीनबंधु सो सुनि कियो, वणिक सहाय तहाँहिं ॥ ६४ ॥

वणिक पुत्र भगिजातभो, छीतूदासहि पास ॥

आय भक्त महाराज ढिग, शासन दिय सहलास ॥ ६५ ॥

क्षमि आगस यहि वणिकको, दीजै लूटि देवाय ॥

कुटी सिधारव कालिह हम, सुनि बोल्यो नरराय ॥ ६६ ॥

वह भगवत भागवतको, कियो महा अपराध ॥

याको देन न कहिय प्रभु, और न होई बाध ॥ ६७ ॥

यहि अपराधी वणिकको, कीन्ह्यो जौन सहाय ॥

उंचित दंड सोउ पायहै, यह प्रभु देहि सुनाय ॥ ६८ ॥

सुनि जिन कुटी भक्त पगु धारे । महाराज उर अति मुद धारे ॥

परममित्र मंत्री यशवारा । रह्यो जौन प्राणनको प्यारा ॥

मुख्य देवान कह्यो जेहिं काहीं । लाट खिलत दीन्ह्यो मुदमाहीं ॥

ताहूको गुणि वणिक सहाई । कामकाजते दियो छांड़ाई ॥

रहे जे कामकाजि तेहि संगी । तिनहुँ छोड़ाय दियो सउमंगी ॥

दाक्षण देउरा नगर ललामा । तँहुँ जेहिं थान ओहै सरैनामी ॥

लालशिवबकशसिंह तेहि नामा । धीर वीर अतिहीं मतिधामा ॥
 तासु अनुज भगवतसिंह तैसे । वचन जासु अंगद पग कैसे ॥
 तेहिं शिवबकश सिंह सुत रूरो । लालरणदवनसिंह गुण पूरो ॥
 कैयक अनुज तासुके जानो । तिनमें दिरगजसिंह सुजानो ॥
 लालरणदवनसिंह पर भीती । करि रघुराज भीत गुणि नीती ॥
 सकल बघेलखंड जो राजी । किये मुखतार परम है राजी ॥

दोहा—माधवगढ़ ढिग पार सरि, कछिया टोला गावँ ॥
 नावँ जासु दिलराजसिंह, मालिकहै तेहिं ठावँ ॥ ६९॥
 अमरसिंह कल्याणसिंह, तासु सुवन गुणग्राम ॥
 महाराज परसन्न है, तिनहूँको दिय काम ॥ ७०॥
 बाँकेधौवा सिंहको, कोष काम करिदीन ॥
 देशी परदेशी बहुत, काम दियो सुखभीन ॥ ७१॥
 तिन सबको मुखतारके, भूपति किय आधीन ॥
 ते सब अबलों करतहैं, काम लोभते हीन ॥ ७२॥

छंद—यक काल अकाल कराल मन्यो ॥
 विन अन्न दुखी बहु जीव मन्यो ॥
 माहिमें कँगला सहसान जुरे ॥
 सरि औसर राहन रोज फिरे ॥ १ ॥
 बहु पर्गन बांधवदेश ठये ॥
 विन अन्न दुखी सब जीव भये ॥
 रघुराज गरीबनेवाज महा ॥
 दिय अन्न तिन्हें मुदमें उमहा ॥ २ ॥
 अंगरेजहु जौन निदेश कियो ॥
 रुपया तेहिं पंचसहस्र दियो ॥
 जोहिं औरहु देशनके कँगला ॥
 विन अन्न न शोक लहैं अचला ॥ ३ ॥

दोहा-झूर अन्न केतेन दियो, केतेन दै पक्कान ॥

केतेनको पैसा दियो, केतेन मुद्रादान ॥ ७३ ॥

सोरठा-जौलों रह्यो अकाल, लाखन रुपया खर्च करि ॥

किय दीनन प्रतिपाल, को कृपालु रघुराज सम ॥ १ ॥

कौन गरीबनेवाज, महाराज रघुराज सम ॥

छायो सुयश दराज, समुद्रांतलों अवनि तल ॥ २ ॥

सवैया-तीक्ष्ण जासु प्रताप दिनेशको आतप तेज महीप सरै ॥

तापित है रिपु तासु महेश कलेशित वासु अरण्यकरै ॥

भाषतहै युगलेश सही यह मानै उरैमें विशेष नरै ॥

श्रीरघुराज नरेशके देशन शीतको पेस करै पसरै ॥ १ ॥

महाराज रघुराज सपूती । है अपूर्व जिनकी करतूती ॥

पितुते अधिकै राज्यबढ़ायो । पितुते अधिकै द्रव्य कमायो ॥

पितुते अधिक कोष किय भारी । भूपति श्रीरघुराज सुखारी ॥

एक अनूपम शहर बसायो । गोविंदगढ़ तेहिं नाम धरायो ॥

रीवांमें जस रहे मकाना । तिनते अधिक तहां निरमाना ॥

ताल विशाल एक बनवायो । विश्वनाथ नृप नाम सुहायो ॥

जाके तीर तीर सरमाहीं । विरचायो बहु मंदिर काहीं ॥

तिनमें रघुपति यदुपति मूरति । पधरायो परिकर युत अति रति ॥

दोहा-प्रति उत्सव जो करतहैं, साधुन सेवा वेश ॥

सीयव्याह उत्सव तहां, करत नरेश हमेश ॥ ७४ ॥

छीतूदास सुसंत यक, सादर तिनहिं बोलाय ॥

करत व्याह उत्सव सुखद, अगहन मास सोहाय ॥ ७५ ॥

संत महंतहुं विप्र अपारा । जुरैं नारि नर कइक हजार ॥

तिनको विविध भांति सन्मानी । वांछित अशन देत रति ठानी ॥

मांडव रुचिर रचाय उछाहा । सीय रामको करत विवाहा ॥

सबको मंडप तर बोलवाई । सादर विदा करत हरषाई ॥

मुद्रा अमित दुशालन जोरी । कोहुको देत हाथ युग जोरी ॥
कोहुको पट और बनाता । मुद्रन सहित देत हरषाता ॥
कोहुको लोइया और रजाई । देत रुपैन युत सुखदाई ॥
रुपिया और उपरना रासी । कोहुको भूपति देत हुलासी ॥

दोहा-देत रुपैया सबनको, बचै न कोउ नर नारि ॥
सुख छावत गावत सुयश, जात अयन पशु धारि ॥ ७६ ॥
भरत लषण रिपुदवन युत, सीय रामको फेरि ॥
भूषण वसन अमोल दै, विदा करत छवि हेरि ॥
छीतूदास सुसंतको, साधुन सेवा हेत ॥
द्वादशसै मुद्रा वसन, अमित मोद युत देत ॥ ७७ ॥
जनकपुरी मम सोपुरी, समय सो जनक प्रमोद ॥
जनक सरिस नृप जनकहैं, चलि चलि मग चहुँ कोद ॥ ७८ ॥

स०-औधपुरी मुद औध किधौं, किधौं वृंदावनै दिपै मंदिर भारी
जानकीरामकीझांकीकहूँकहूँराधिका माधवकीमनहारी ॥
झालंरी शंख बजै चहुँ ओर बसैं जहँ संत अनंत सुखारी ॥
भूपरच्योहै गोविंदगढ़ सो अनूपम में निज नैन निहारी ॥ १ ॥

दोहा-छन छन छन घन ध्यान मन, तनक न तन धन भान ॥
धन धन धन जन ज्ञान पन, कन कन वनकनसान ॥ ७९ ॥

छ	छ	छ	घ	ध्या	म	त	क	त	ध	भा
न	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
ध	ध	ध	ज	ग्या	प	क	क	व	क	सा

सोरठा-जेहि गोविंद गढ़माहिं, दुखहीको दुखदेखिये ॥
दर परलोक सदाहिं, जहँ सब लोगन को अहै ॥ २८० ॥

दंडनीय जहँ एक निसाना । रागरागिणी भेद विधाना ॥
 क्रोध जहां क्रोधहिं पर होई । लोभ करै यशकों सब कोई ॥
 जहां अर्धमहिं कोः है त्यागा । निज तियसों ठानब अनुरागा ॥
 जहँ गृह चित्र करैं चित चोरी । बंधन जहां पशुनकों जोरी ॥
 वचन असत्य कहत रोजगारी । सुताव्याह गावहिं तिय गारी ॥
 चलत कुपथं जहां गज माते । कुटिल धनुष जहँदग दरशाते ॥
 सुभटनके अँग जहां कठोरा । कर्कश जहँ झिल्ली गण शोरा ॥
 जहां निर्द्वनी यती निहारी । वारि नीचि गति जहां निहारी ॥

दोहा—कंपध्वजामें देखिये, बँधे धौरहर धौल ॥

शोभा सब संसारते, वसी भूप पुर नौल ॥ ८१ ॥

सोरठा—कहुँ गोविंदगढ़ माहिं, कबहूँ रीवाँ नगरमें ॥

श्रीरघुराज सोहाहिं, सब राजनके मुकुट मणि ॥ १॥

कवित्त घनाक्षरी ।

बंदी जे न ताकत मुसद्दी कामकाजी सबै बैठे दुहँओर दर्दी दीननको दिलराज ॥
 कदी दीहवारे औ अमदी सरदार आगे बैठे अरिकरन गरदी रणकै गराज ॥
 देवनदी कैसी किति दिपति विसदी जासु युगलेश साहिबी विहदी मनो देवराज ॥
 रद्दी कर दुर्जन अनंदी कर सज्जनको राजै राजगद्दी पर महाराज रघुराज ॥ १ ॥
 देन समै जोई जोई याचि राख्यो याचकहै सोई सोई देत सांच लगत न वारहै ॥
 भूषणअमोल गाँव वसन अमोल म्याना वाजि गज नोल मुदा कैयक हजारहै ॥
 कहै युगलेश ऐसी रीतिहै हमेश केरी देखत न देश कोष नेकुकै विचारहै ॥
 राजनके राज महाराज रघुराज ऐसो आजु तौन दूजो राजा राजत उदारहै ॥ २ ॥
 पटु सब विद्यन में हटत न काहूसों है निपट निशंक बुद्धि नेकु न हलति है ॥
 चटपट जानिलेत अटपट बात सब बात कपटीनकी न कंसहू चलतिहै ॥

महाराज रघुराज निकट पखंडी कोटि कुटिलऊ सटपटै थिति उसलति है ॥
 कवि नटखटनकी कूर बहुकटहनकी चुगुल चवाइनकी दाल ना गलतिहै ॥ ३ ॥
 सुमति गणेश लसै साहिबीमें त्यों सुरेश धनमें धनेश शत्रु नाशनमहेशहैं ॥
 तेजमें दिनेश मुदजनन प्रजेश प्रजापालनमें वेश सम राजत रमेशहैं ॥
 गावत नरेश दीह निजहिं निवेश सभां सुयश विशेष जासु छाजै देश देशहै ॥
 भन युगलेश रघुराजसे सुमतधारी सुत बांधवेश औ परेससेवा पेसहै ॥ ४ ॥
 करयुग जोरि कमलापतिसों कमलाजी कहै युगलेश बार बार कहैं वैन कल ॥
 रावरो भगत विद्वनाथ तनै रघुराज जन्यो तन्यो जासु यश चारु स्वच्छभल ॥
 असित पदारथ ते सित द्वैगये हैं सबै परत पिछानि नाहिं जाय जहांजौने थल ॥
 बसिये निरंतर की ताहि एके अंतरकी उदधिको अंतर न छोडि जैये छोनी तल ५
 भागवत पढ्यो भागवत को विदवास मान्यो जननि सुभद्रा श्रीसुभद्रारूप जानिये ॥
 रामभक्त परमअनन्य महा भागवत विद्वनाथसिंह जासु जनक बखानिये ॥
 भागवतदास नाम तिनहीं सों पायों भयो भागवत रूप कंठ भागवत गानिये ॥
 भागवत सेवी रघुराजसिंह भागवत जाके उर भौन भगवंत भौन मानिये ॥ ६ ॥

सवैया—याचक वृंद मलिंदनको गण पाय सुपास अनंदित हीमें ॥

आय मनोरथ पूरणकै यश गान करें चहुँ ओर महीमें ॥

भाषतहैं कवि देशानि जाय नरेशनके दरवारनहीमें ॥

दान करीके कपोलनमें कीहरी रघुराजके हाथनहीमें ७

दोहा—महाराज रानी सबै, गौरी सम महिमाथ ॥

लसैं पतिव्रत धर्मरत, तजैं न कबहूँ साथ ॥ ८२ ॥

महाराज रघुराजके, अमित चरित्र अनूप ॥

युगलदास वरण्यो कछुक, निजमतिके अनुरूप ॥ ८३ ॥

जामें सूचित चरित सब, ऐसो अष्टक वेश ॥

विरचतहै युगलेश यह, सुखप्रद सुकवि विशेष ॥ ८४ ॥

अष्टक नृप रघुराज कृत, युगलदास सुदकंद ॥

सार्थ गतागत चंद्र ऋषि, सिंहवलोकन छंद ॥८५॥

अथगतागत सवैया ।

तो यश शीश मही सरसाय यसारस हीम शशी सजतो ॥
तोमह तेज भसो विरमाहि हिमा रवि सो भजते हमतो ॥
तो जग नैरव सोहत चारु रुचा तहँ सो वरणै गजतो ॥
तो रघुराज भजै नहिँ लोग गलोहिनजै भज राघुरतो ॥१॥

अर्थ—हेरघुराजसिंह तिहारो श्रीवृंदावन अरु श्रीजगन्नाथपुरीमें सुवर्णतुलादानादि महादानरूप जो यह यशहै शीश मही कहे महीके शीशमें अथवा सब राजनके यश ते शीश कहे शिरा मंही कहे पृथ्वीमें सरसाय कहे अधिकायकै सारस हीम शशी सजतो. कहे सारस जो है कमल अरु हिम जोहै पाला अरु शशी जो है चंद्रमा ताको सजतो कहे आपनी शोभाते साजैहै कहै शोभित करै है यह प्रतीपालंकारते सारस अरु हिम अरु शशिकी शोभा सब ऋतुमें सब कालमें एकरस नहीं रहै है कमल झरिजाय है हिम गलिजाइहै शशी क्षीण द्वैजाइहै अरु सिकलंकहै अरु तिहारो यश सब कालमें एक रस रहै है अरु निःकलंकहै याते उन सबनते अधिकहै यह व्यतरेकालंकार व्यंजित भयो, अरु तोमह तेज भसो विरमाहि. कहे तिहारो जो महातेजहै सो वीर जे हैं बड़े २ राजा तिनमें भसो कहे भासितहै ताते तिहारे तेजते तेऊ शंकित रहै हैं कि हमारी राज्य न लैलें यह सूचितभयो अथवा विरमाहि कहे सब जगमें तिहारो तेज विशेषकै रमैहै ताते तुम्हारे तेज करिके सब राजा निस्तेज द्वैगये यह ध्वनित भयो याहीते, हिमा रविसो भजते हमतो. कहे आपने हियमें हम तो तुम्हारे तेज को रवि सो कहें सूर्यसे भजै हैं कहे भजन करै हैं अर्थात् वर्णन करै हैं यह उपमालंकारते सूर्य कमलनको आनंद देइहैं अरु तम नाश करै हैं अरु सबको सुधर्ममें प्रवृत्त करै हैं ॥ अरु आपको तेज सज्जनके हृदयकमलको आनंद देइहैं औ सब राजनके वीरताके मदको, अज्ञानको नाश करै हैं अरु

सबके अधर्म नाश करि सबको धर्ममें प्रवृत्त करै हैं यह अनुभया भेद रूप-
कालंकार ध्वनित भयो अरु, तोजग नै रव सोहत चारु. कहे जगमें तिहारो जो
है नै कहे नीति ताको जो रव कहे शोरकि रघुराजसिंह बड़े नीतिमानहैं सो चारु
कहे सुंदर सोहतहै अरु रुचा तहँ सो वरनै जगतों, तहाँ कहे तौने जगमें सो
नीतिको रव सबको रुचाहै कहे सबको नीक लगै है अर्थात् नीतिको बखान
जो कोई करत सुनै है सो तहँ खड़ा रहिजाइहै अरु वरनै गजतो कहे सोऊ
जन गजत कहे गर्जनाको करत अर्थात् बड़ो शोर करत सर्वत्र वर्णन करै हैं
कि रघुराजसिंह बड़े नीतिमानहैं ॥ ताते आपके नीतिके सुनिबेते सबको उत्कंठा
अतिशयरूप वस्तु व्यंजित भयो इससे जैसी आपकी नीतिहै तैसी आपहीकी
नीतिहै यह अनन्वयालंकार ध्वनित भयो ताते आपकी राज्यम अनीति नहीं है
यह वस्तु सूचित भयो अरु गर्जत वर्णन करै है ताते इनके बरोबर ऐसों
नीतिवारो पृथ्वीमें कोई नहीं है याते निःशंक यह हेतु व्यंजित भयो ताते,
रघुराज भजै नहिं लोग गलोहि. कहे या भांतिके जे तुम रघुराजसिंह हो तिन-
को जो कोई लोग गलोहि कहे गलते अरु हियते नहीं भजै हैं कहे नहीं भजन
करै हैं अर्थात् तुम्हारे नामको मुखते उच्चारण करत जाको गल नहीं चले है
अरु जो तुम्हारे नामको हियमें नहीं धारण करै हैं ॥ नजैभजरा कहे ताको
जरा कहे नेक कबहूँ जै नहीं भयो, अर्थात् वह सबसो हारिही गयो है अरु
घुरतो कहे घुरिजातहै अर्थात् वह नाश होजाइहै यह प्रस्तुत करि प्रस्तुत
प्रगट प्रस्तुत अंकुर नाम यह प्रमाण करिकै प्रथम प्रस्तुत कहे वर्णनीय जे हैं
आप तिनते दूजे प्रस्तुत जे हैं श्रीरघुनाथजी तिनको वर्णन कवित्तके चारिहूँ
तुकमें विदितई है यह प्रस्तुतांकुर अलंकारते आपकी श्रीरघुनाथजीकी उपमा
व्यंजित भई ॥ १ ॥

दोहा-जन्मअष्टमी आदिदै, उत्सव जे भगवान ॥

तिनमें वितरत जननको, मुद्रा पट सहसान ॥ ८६ ॥

अथ सिंहावलोकनके उदाहरण ॥

सवैया-वीरनमें जे गने अवनी अवनीके गुनेते चुने रणधीरन॥
 धीरन में जसहैहुलसीलसीसो तसहै जसमें जनभीरन ॥
 भीरनतेयुगलेश सुनै सुनै प्रीतिजगीनहिंदानअजीरन ॥
 जीरनसोंनहिंभौते भजै भजैजोहियरोनितश्रीरघुवीरन ॥ १ ॥
 जाकरजामैप्रतापदिवाकरवाकरतोप्रतिपाल प्रजाकर ॥
 जाकर तेज संऊगोंसुधाकर धाकरभाये मनैवसुधाकर ॥
 धाकरहूँवसुपाइकैताकरताकरआननताकेसुखाकर ॥
 खाकरहैदुखको कहै काकर काकर तार करै घर जाकर ॥ २ ॥
 कामनमेंअहै आलसनामन नामनमें चहतोपरवामन ॥
 वामन बोलत बैननसामन सामनरैसो तजै केहुँजामन॥
 जामनमेंवसतोअभिरामनरामनसो तेहिंमानैसदामन ॥
 दामनहै रघुराजकै ठामन ठामन सेवत संत अकामन ॥ ३ ॥
 कीरतिरंभाकिधौं हैशची शचीजामेंअछेहकविंदनकीरति ॥
 कीरतितौ तिन्होकी इती द्युति कौनि अहैमति मेरि ऊंचीरति॥
 चीरति यासिलधारे खरी खरी गर्ब भरी चहूँ छाचि खहीरति॥
 हीरति पूरतिहै महि माहिमें जानि परे रघुराजकी कीरति ४
 शाह सराहतभोजहि भूपर भूपरहो कितहूँ अब ना अस॥
 ना असते मुख भाषतवैनहैं बैनहैं त्रासन तामस राजस॥
 राजसमाज विराजत वासव वासव सो निगुणी गुणी पारस ॥
 पार सबै करतो जु भवै भवै सो रघुराज भजो कर साहस॥ ५ ॥
 सोहत भावसोंक्रीट शिरै दिये दीपत जासु शिषचु विमोहत॥
 मोह तमे को विनाश करै करै कांति भूबाय दृगानिसों जोहत॥

जोहत भाग है जात सभाग सभागतसों सब सोच विछोहत ॥
छोहत तापै सबै जगहै गहजो रघुराजपगे अजसोहत ॥ ६ ॥

घनाक्षरी ।

शारद शशीसों कोई शारद पयोदहीसो हीसो गुनि कहै कोई लस्यो सम पारद ॥
पारदरशाति नहिं कहि कहि काहु मति मति कहे कोई घनसारहुकी पारद ॥
भार दरशात पेन्हे भूप मोती हीरा हार हार गई द्युति भाषै कविवृंद मारद ॥
नारदकोहुते है बेहद रघुराज जस जस मही तस स्वर्ग गावती है शारद ॥ १ ॥

दोहा-अष्टक कष्ट करै न जग, जगत् पार धन नष्ट ॥

नष्ट नहीं चित पुष्ट कवि, कवित तुष्टकर अष्ट ॥ ८७ ॥

सवैया-भूप अजीत भयो लियो जीत रिपून नहीं कोउ बाचो ॥
तासु तनय नृप जयसिंह जयसिंह होत भयो रणरंगमें राचो ॥
तासुत श्रीविश्वनाथ भयो विश्वनाथहू दान कृपानमें सांचो ॥
तासुत जो रघुराज समै रघुराज भो तौन अचंभव सांचो ॥ १ ॥

कवित्त ।

जाहि जपि पतितहू पावन परम होत होहिंगे भये हैं गये केते हरिधामको ॥
जाको यश गावत न पावत सुकवि पार सबको अधार जो देवैया मन कामको ॥
जाके बल शंकर विरंचि सनकादि ऋषि जागत रहत जग यामिनि त्रियामको ॥
चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युगलेश वेश सोई राम नामको ॥ १ ॥
अंगनि सुछबिकोटि वारिने अनंग जासु कालको विहाल करै शोर धनु घोरको ॥
मार्तंड पावको प्रताप जासु ताप करै शशिहूको शीतल करैत यश ठोरको ॥
चारित अशेष जासु शेषहु न अशेष लहै नाम कहै पामर पुनीत होत जोरको ॥
चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युगलेश सोई कोशल किशोरको ॥ २ ॥
जौलौ राम निज नाम धाम गुण ग्राम राखौ कीबो काल कर्महु प्रपंच पंच भाषिये ॥
जौलौ विधि आदि सिधि देवनको अधिकार नित प्रीतिको विचार कीबे अबलाखिये ॥

जोलौं दीनबंधु दृग देखो दाया दीह दास तोलौं युगलेश विनय मोरि यश साखिये ॥
राज्यश्रीअखंड सुखयुत संयुत सुधर्मसाज भूप रघुराज महाराज आप राखिये ॥ ३ ॥

सोरठा-ग्रंथ भयो जब पूर, उचित मंगलाचरणपर ॥

श्रीहरि गुरु सुख पूर, चरण कमल वंदन करूं ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

निरत जासु नाम हरिदास हरिरूप सीय राम सेव हीमें जिन्हें जात रैन दिन ॥
कोहू सों न कहै देखि संत निज आश्रमै सादरकरत सत्कार आयो छिन छिन ॥
कहैं युगलेश मान रजोगुणि वाहननि चढें नहिं कबों या स्वभावरह्यो सब दिन ॥
कहों हरिरूप पर हरिते सरसरूप लिये द्वै अनूप श्री है येतो रहै तेहि विन ॥ १ ॥

दोहा-धरचो सर्प यक को विछी, यक को दुःखित कीन्ह ॥

हरिचरणामृत पाय तहँ, द्रुत निर्विष करिदीन्ह ॥ ८८ ॥

ऐसे चरित अनेक हैं, को कह आनन एक ॥

नेक कृपा लाहि नाथ में, वरण्यों है सविवेक ॥ ८९ ॥

जो करताहै ग्रंथको, सोउ वरणै निज वंश ॥

युगलदास याते करत, कछु निज मुख परशंस ॥ २९० ॥

कवित्त ।

देश गुजरात ते नरेश संग आये यहां पुस्तिबहु तिन्हें कहां लौं गिनाइये ॥

चैनसिंह भे दिवान अति मतिमान खास कलम सुवंश राय तिनकों सुनाइये ॥

लल्लू खास कलम कहायें नाम मंशाराम भूपति अजीत बहु मान्यो सो जनाइये ॥

कायत प्रसिद्ध साधु सुमति अगाध तासु वंश गिरिधारी लाल नाम जासु गाइये १

दोहा-महाराज विश्वनाथ तेहि, मान्यो करि अति प्यार ॥

सोय खास कलमहि कियो, लखि तिहि बुद्धि अपार ९१

भोदूलाल दिवान सुजाना । रहेतें अस मन किये अमाना ॥

यह संकोच पुरुषतें भारी । करौ न हमरौ इकुम सुखारी ॥

अस विचारि नरनाथहिं पाहीं । कह्यो सुघर इनही सुख माहीं ॥
 इन्हे खास कलमी रघुनाथी । दै राखिये निकट कर साथी ॥
 सुनि विश्वनाथ हियेकी जानी । राख्यो अपने ढिग सुखमानी ॥
 ग्रंथ अनूपम अमित बनायो । सादर तासों मुदित लिखायो ॥
 तेहि सुत युगलदास मम नामा । विश्वनाथ नृप ढिग अभिरामा ॥
 रह्यो बालते जे किय ग्रंथा । लिख्यो अहै जिनमें हरिपंथा ॥

दोहा-महाराज रघुराजके, अब निवसों नित पास ॥
 तासु हुकुम लहि ग्रंथ यह, विरच्यों सहित हुलास ॥ ९२ ॥
 नृपचरित्र यह ग्रंथको, कियो नाम अभिराम ॥
 बाँचि सुकवि सज्जन सुमति, लहैं सदा सुखधाम ॥ ९३ ॥
 ग्रंथ रामरसिकावली, रच्यों जो नृप रघुराज ॥
 तहैं कबीर इतिहास में, यहै ग्रंथहैं भ्राज ॥ ९४ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारी
 श्रीरघुराजसिंहजुदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां ग्रंथान्तर्गत श्रीयुगलदासकृत
 वधेलवंशवर्णन नाम आगम निर्देश ग्रंथसमाप्तः ॥



सूचना ।

बीज सूक्ष्म कारण जिसे, गावत हैं बुध वेद ।
 तेहि जानन को युक्तिसो, बीजक नाम अखेद ॥
 बीजक लीन्हा हाथमें, पाया धन सोइ शोध ।
 ताते बीजक नाम है, भया सवन को बोध ॥
 बीजक लीन्हे हाथमें, सूझे नहीं धन धाम ।
 मुक्ता धन पाये विना, बीजक सबै निकाम ॥
 याकी टीकानेकहैं, बहु विधि कथ्यो सिद्धान्त ।
 विश्वनाथ नृप रामरत, जान्यो यह वृत्तान्त ॥
 राम प्रत्यय टीका करी, बहु पाण्डित्य तेहि मांहि ।
 पढ़े विचारे जाहि को, राम भक्ति जन पाहिं ॥
 चिन्तामणि अरुकल्पतरु, शब्द जगतके मांहि ।
 अपनी अपनी भावना, सबही पावत जाँहि ॥
 राम उपासना दृढहुते, रीवाँ नरेश सुभूप ।
 अपनी मनकी भावना, वर्णन कीन्ह सुरूप ॥
 तेहि ग्रन्थको शुद्ध करि, कहुं २ टिप्पण दीन ।
 युगलानन्द मोहि कहत हैं, क्षमियो परम प्रवीन ॥
 संदिग्ध ठौर जेतें रहे, टिप्पणी करी बनाय ।
 बाकी अब कछु होयजो, लीजो संत सजाय ॥
 गुरु थल हाता जानिये, शिवहर जन्म स्थान ।
 भारत पथिक मोहि कहत हैं, पंथ कबीर न आन ॥
 श्रीवेङ्कटेश प्रेसवर, प्रसिद्ध सकल जहान ।
 तामें छप्यो या ग्रन्थ है, सबको सुखद समान ॥
 इति श्रीकबीर साहब कृत बीजककी पाखण्ड खण्डनी टीका
 रसीदपुर (शिवहर) वाले स्वामी युगलानन्द कबीर पंथी
 भारत पथिक द्वारा संशोधिता समाप्त हुई ।

क्रय्यपुस्तकें—(भाषा काव्य.)

नाम.	की. रु. आ.
रामरसायन रामायन-रसिकविहारिकृत	४-०
रसिकप्रिया सटीक	१-४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२-०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन....	१-४
जगदिनोद [पद्मकरकृत नायकाभेद]....	०-६
रसरज [मातिरामकृत नायकाभेद]	०-६
ब्रजविलास बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	५-०
ब्रजविलास मध्यमअक्षर टिप्पणी सहित विलायती जिल्द ग्लेज	२-०
तथा रफ् कागजका	१-८
ब्रजविलास छोटा अक्षर ग्लेज	१-०
" " रफ्....	०-१२
ब्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी सर्वलीला सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णित हैं)....	३-०
प्रेमसागर बड़ा ग्लेज कागजका....	१-८
प्रेमसागर बड़ा रफ्	१-४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं और यह द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत अत्युत्तम नई छपी है	४-०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजारघुराजसिंहकृत (काव्यदेखनेयोग्य)	४-८
रुक्मिणीपारिणय-महाराज श्रीरघुराजसिंहजुदेव प्रणीत	१-८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छन्दबद्ध)	१-४
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत—तुलसीदासजीके रामायणकी रीतिसे दोहा चौपाईमें १८ अठारहोंपर्व	३-८

नाम.	की. ह. भा.
तथा प्रथम भाग (३-आदि, सभा, वनपर्व)	१-०
तथा द्वितीय भाग (२-विराट, उद्योगपर्व) ...	१-०
तथा तृतीय भाग (८-भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्रीपर्व)	१-०
तथा चतुर्थ भाग (५-शान्ति, अश्वमेध, आश्रमवासिक, कुशल, स्वर्गो- रोहणवर्णन)	१-०
विजयमुक्तावली (महाभरतका सूक्ष्म वृत्तांत छंद बद्ध)	१-०
* परिहासदर्पण ...	०-६
अर्जुनगीता भाषा	०-४
शनिकथा कायस्थकी	०-१॥
शनिकथाराघवदासकृत ...	०-२
शनिकथा बड़ी पं० रामप्रतापजीकृत ...	०-८
रुक्मिणी मंगल बड़ा (पद्मभक्तकृत मारवाड़ी भाषा)	१-४
हनुमानवाहुक पंचमुखी कवच समेत मूल ...	०-१॥
नासिकेतपुराणभाषा (स्वर्गनरकका वर्णन) ...	०-६
नरसीमेहताका मामेरा बड़ा ...	०-५
विस्मिलपरिवारका स्वांग (इद्रकचमन) ...	०-८
सूर्यपुराणादि २२५ रत्न अतिउत्तमकागज और जिल्दबन्धा ...	०-८
सूर्यपुराणादि २२५ रत्न रफ् ...	०-६
ज्ञानमाला	०-२
मंगलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार... ..	०-१॥
दंपतिवाक्यविलास-जिसमें सब देशांतरकी यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खंडन किया है दोहा कवित्तोमें (सुभाषित) ...	०-१२
रसतरंग (ज्ञानभक्तिमार्गी अजबर्गीले पद्य कृष्णगढ़ महाराज प्रणीत) ...	०-८

नाम.	की. ह. भा.
दादूरामोदय संस्कृत-दादूपंथी साधुओंको	०-१०
श्यामकामकेलि	०-४
परमेश्वरशतक	०-६
भक्तिप्रबोध	०-२
भावपंचाशिका कविवृंदजीकृत	०-२
प्रेमशतक	०-४
मदनमुखचपेटिका भाषाटीका	०-४
प्रेमवाटिका भाषा (रोचक भजन)	०-२
हनुमत्पताका छन्दबद्ध (वीररसके रोचककवित्त)	०-३
नामप्रताप छन्दबद्ध (श्रीरामनाम माहात्म्य)	०-१॥
शृंगारांकुर भाषा-छन्दबद्ध (रसकाव्य)	०-२
जगन्नाथशतक-इसमें रघुराजसिंह रीवाँधिपतिके बनायेहुये १०० कवित्त विनयके हैं	०-३
नैषधकाव्य मनहरणछन्दोमें राजा नल दमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चरित्र सुन्दरीतिलक (शृंगाररसके चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी संगृहीत)	१-०
विक्रमविलास (छन्दबद्ध वैतालपचीसी)	०-६
मसलानामा (मसलोंके उदाहरणमें शिक्षावर्णन)	०-२
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०-८
काव्यरत्नाकर (एक २ समस्यामें रोचकता पूर्वक अनेक कवियोंकी चातुरीके कवित्त)	०-८
भारती संग्रह २९ आरतीका	०-१॥
हनुमानसाठिका (हनुमानजीके ओजवर्द्धक ६० कवित्त)	०-१॥
भाषाभूषण (नायकाभेद मधुर छंदबद्ध)	०-२
अनुरागरसभाषा (नारायणस्वामीकृत) पद्योंमें....	०-३

नाम.	की. रु. आ.
प्रेमपुष्पमंजरी (अच्छे २ भजन व पंजाबदेशके भी पद हैं....	०-२
कृष्णचरितावली (कृष्णकी छोटी२लीला)	०-४
प्रेमपचासा (चित्रकाव्य)	०-३
सुदामाचरित्र अत्युत्तम छंदबद्ध	०-३
होलीचौताल संग्रह	०-४
सुदामाकी बाराखड़ी	०-१
द्रौपदीकी बारामासी	०-१
दुर्गाचालीसी	०-१
माता पिता पूजनविधि	०-१
बारामासी संग्रह	०-१॥
हरदेवकी बाराखड़ी कलियुगका चरित्र	०-२
छन्दरत्नमाला [पिंगल]	०-२
गोपीवियोगकी बारहखड़ी [लालाशालिग्रामकृत दत्तलालकी बाराखड़ी सहित]	०-२
नशाखण्डनचालीसी ४० कवित्तोंमें सब नसोंका खण्डन... ..	०-२
मिलामदर्पण (मेलमिलाप शिक्षा)	०-२
श्राद्धदर्पण (श्राद्धमण्डन)	०-२
ब्रह्मज्ञानदर्पण	०-२
पंजाबपंकजपराग [महन्त रघुवीरदासकृत]	०-४
प्रेमपुष्पलता (उत्तमभजन)	०-८
कबीरउपासनापद्धति-(साधारणतःसर्वसाधारणको और विशेषतः कबीर पंथियोंको सदाचार बतानेवाली अद्वितीय पुस्तक) ...	०-१०
संपूर्ण पुस्तकोंका “ बड़ा सूचीपत्र ” अलग है मैंगालीजिये.	

पता-खेमराज श्रीकृष्णदास,
 “ श्रीवेङ्कटेश्वर ” (स्टीम्) प्रेस-बंबई.